Sambedsanghita (Uttarachik)

1878

Librarian.

Uttarpara Joykrishna Public Library
Govt. of West Bengal

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
२०—१२, १, २—१५, १, १३—१४—१, १०—	
१०, १, ५—८—१२, १, ९)	३४५
अयाश्चिग्नो (२, १, १०, १ = उ, इषाभयस्व)	३१४
अयभराय (१, १, १७, १ = उ, इन्द्रमच्छस्तुता)	१२१
अयापवस्वदेवयुर् (१, १,११,१ = उ १, १, १६—१७—६, १, १५—१६—९ १, १)	२८९
अरुषवदुषसः (२, १, १९, १ = उ ७, १, १—१२, १, २—१३, १, १)	४६१
अर्षासोमद्युमत्तमो (२, १, ११, १ = उ १, १, ५—६—७—८—८, १, ३— ...	
४—९, १, १३—१९, १, १—२०, १, १९—२०,—२०, १, १)	६१४
अवद्युतानः (१, १, १९, १ = उ, अभिप्रियाणि पवते)	१६७
अवोलपवस्वदो (२, १, ३, १ = उ ०)	२९८
असर्जिकल्पयां (१,१,१८,१ = उ १,१,१७—७,१,९—९,३, ४—१५, १, ११)	५२१
असाविसोमइन्द्र (१, १, २१, १ = उ ३, १, १८—१२, १, १८— ..	
२०, १, १८—१३, १, ४)	६५१
असाय्यग्ने (३, १, १६, १ = उ १, १, १३—७, १, १९—१६, १, ४— ..	
२०, १, १)	६४१
असिक्षिवीर (३, १, १४, १—१९, १, ४)	६३१
अस्मत्रजामतु (१, १, १६, १ = उ ९, १, ९—१, १—३, १०—११, १, ८— ...	
१४, १, १९—२०—१४, १, १—२—१—४) ..	१४९
अस्येदिन्द्रोमदेष्वा (१, १, १७, १ = उ, इन्द्रमच्छस्तुता)	१२२
आघाग्नमद् (१, १, १६, १ = उ १, १, ९)	१३०
आतिष्ठद्वनेषु (१, १, २१, १ = उ ३, १, १८—१२, १, १८—२१, १, ४)	६८४
आतूनइन्द्रक्षुमन्तं १, १, ९, १ = उ १, १, ४)	२१९
आतेवग्नइधीमहि (२, १, २१, १ = उ १, १, १६—१७, १, ६) ...	६७६
[illegible]ष्टया (३, १, २१, १ = उ १, १, १६—१७, १, ६) ..	६७७
[illegible]त्रायुजा (१, १, ६, १ = उ ०)	१८
[illegible]नाभिषीदत— (१, १, १७, १ = उ १, १, ८)	१२४

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
आदस्यधाम् (२, १, ७, १ = उ ०)	१८५
आदींद्रंसो (१, २, २१, २ = उ १, १, १४—११, १, १०)	१८७
आदीन्वितस्य (१, १, २१, १ = उ १, २, १४—११, १, १०)	१८७
आदीमघ्नं (३, १, १४, ३ = उ ३, १, १०—७, २, १९—१६, १, ४—१०, १, २)	६४१
आनरन्धो (२, २, २, १ = उ ०)	३७९
आनसुप्रेमसद्यो (२, ०, १, २ = उ ०)	३७९
आनीमिचावरुणा (१, १, ५, १ = उ ०)	१९
आपप्राथ २, २, ११ १ = उ २२, १, १९)	४३२
आपवमानसुष्टुतिं (३, १, ५, ३ = उ ५, १, १०—१९, २, १०) ...	४९६
आपवस्वमहौम् (३, १, ३, ४ = उ ०)	४८९
आपवस्वसुवीर्यम् (२, १, ४, २ = उ ०)	३००
आयाच्छिसुषुमा (१, १, ६, १ = उ ०)	१८
आयोनिमरुणो (३, १, १२, २ = उ १, १, १२—२३, २, ११—१२—१३)	५३३
आवंसते (१, २, १७, २ = उ २, १, ५)	४६७
आवक्षसुदक्ष (३, १, १४, २ = उ ३, १, ११—५, १, १—९, १, १३— १४, १, १४—१९, १, १३)	.. ६४६
आविवासन् (३, १, ४, ५ = उ ०)	४९४
आशुरर्षं (३, १, ४, १ = उ ०)	४९१
आसुर्यनोचर्जुनो (१, २, १०, १ = उ, प्रसीमदेववीतयं) ...	१७५
इक्ष्वाकिदेवाः (१, २, ३, १ = उ १, १, १०)	१०३
इक्षुम्नस्य (३, १, ८, १ = उ ०)	५०८
इदंवसोसुतं (१, २, ८, १ = उ १, २, ६)	२१७
इदमम्बोजसा (१, २, ९, १ = उ १, १, ७)	२२१
इन्दुरिन्द्रायपवते (२, २, १५, २ = उ २, २, १—४—७, १, २०—९, १, ८— १५, २, १—२—१६, १, २—२०, १, १२—१३—१२, २, ११)	.. ४५
इन्दुर्वाजीपवते (३, २, २०, १ = उ ३, १, १५—८, २, ५) ...	..
इन्द्रोयद्धातन (३, १, ५, १ = उ०)	६०

मन्त्रप्रतीकम्				पृष्ठम्
इन्दोयद्रिभिः (३, २, ३, ४ = उ ०)	...	...		५९५
इन्द्रद्दर्यो: (१, १, ८, २ = उ ०)	...	..	...	३०९
इन्द्रद्यो (१, २, १, ९ = उ १, १, १८)	...	..		१९७
इन्द्रं विश्वाअवीवृधन् (२, १, १९, १ = उ २, १, ११—१, १, ११,—११, १, २—२, ३)	...	..	.. ...	२६८
इन्द्रजठरं (३, १, १२, २ = उ ३, १, २)		...	...	५८३
इन्द्रजुषस्व (२, १, २१, १ = उ ३, १, २)		...	...	५८२
इन्द्रजंभ्रुभ (३, १, १५, २ = उ २, १, १४ -७, २, ७—१८, २, १२)				५४६
इन्द्रमग्निश्चविष्ठदा (१, १. ७, २ = उ ०)		...	...	२१
इन्द्रमच्छसुता (१, १, १७, १ = उ ९, १, ७—१०, १, १६—१३, १, १०— १, १, १०—६, १, १७,—६, २, ८—९, १, २०—१०, २, १— १२, २, १०—१३, १, १—१४, १, ११—१४, १, १७)			..	... ... १२६
इन्द्रमिन्नाधिनो (२, १, ८, १ = उ ०)		..	...	३०८
इन्द्रमिन्नरो (२, २, २३, २ = उ ७, १, १—१२, २, १८—११, २, १८— २३, १, ४)		...	.. .. ..	.. ६८५
इन्द्रवाजेषु (२, १, ८, ३ = उ ०)		...	... ...	३०९
इन्द्रसुतेषु (१, २, १२, १ = उ १, २, १०—१९, १, २)			..	२३२
इन्द्रसुराधामिन्वो (३, १, २०, ३ = उ ३, १, २)		...	...	५८३
इन्द्राग्नीआगतं (१, १, ७, १ = उ ०)		...	..	१९
इन्द्राग्नीजरितुः (१, १, ७, २ = उ ०)		...	...	२०
इन्द्राग्नीयुवां (३, २, १०, १ = उ ०)	...	...	...	६१२
इन्द्रायनूनं (१, १, २१, ३ = उ ३, १, १—२१, २, १७—२३, १, २)				५७८
इन्द्रायमद्वने (१, २, ४, १ = उ १, २, १)		..	...	२०४
इन्द्रायसाम (३, २, २२, १ = उ ३, १, ७)		..	...	६८०
इन्द्रियावन्ना (२, १, ९, १ = उ ०)	..	...	...	३११
इन्द्रियावंचि (२, २, ७, १ = उ ०)	...	...	...	३९२
इन्द्रोदधीचो (३, १, ८, १ = उ ०)		...	..	५०६

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
इन्द्रोदीर्घाय (२, १, ८, ४ = उ०)	३१०
इन्द्रोमहाधवाहवे (३, २, १४, १ = उ १९, २, ४) ...	६३९
इमामिन्द्रस्तुतं (२, १, २१, १ = उ २, १, १—२२, २, १७—२३, २, ३)	५७१
इमाउषांदिविष्टय (१, २, १५, १ = उ २१, २, १—१३—१६ ..	२४५
इयंवामस्य (३, १, ९, १ = उ ०)	५११
इषमूर्काय (३, २, ११, ३ = उ अर्षासोम)	६१९
इषंपर्वस्व (२, १, ४, १ = उ ०)	३८३
इहत्वागोपरीणसं (१, २, ७, ३ = उ १, २, ५)	२१६
ईङ्खयन्तीरपस्मा (३, २, १, ३ = उ ८, २, ७—२३, १, १८) ...	५८८
उग्राविघनिना (२, २,७, २ = उ ०)	३९९
उच्चानेजातम् (१, १, ८, १ = उ १, १, १—२, १, १३—६, १, ९—१०— ..	
७, १, १२—८, १, ११—१०. १, १०—११—११, १, १५— ..	
१२, १, १—२—१२, २, ७—१३, १, १७—१५, १, ३—४— ..	
५—१६, १, १९—१९, १, ११, १०, १, ६—७—८—९ — .	
२०, २, १४—२२, १, ४)	२२
उतनोगोविद् (३, २, ५, ३ = उ ०)	६०२
उत्तिष्ठन्नोजसा (३, २, ९, १ = उ ०)	६१०
उदुस्रियाःसृजते (१, २, १४, २ = उ २१, २, ९—१२—१५)	२११
उपवितस्य (३, २, १८, २ = उ प्राणाग्निभ्याम्)	६५०
उपत्वाकर्मन्नूतये (१, १, २२, २ = उ १, १, १६— २१, १, १५ ...	१८७
उपश्चिन्वापतस्युवी (१, २, १८, १ = उ ६, १, ५—१९, २, १—२१, १, २—११)	२६२
उपाप्तेः (१, १, १, १—१, २, १८, ३ = उ २१, १, ११—६, १, ४— ..	
१९, २, ११—२१, १ २—११)	४।२६३
उपोषुजातम् (१, २, १८, २ = उ ६, १, ५—१९, २, ११—२१, १, २—११	२६३
उभयतःपवमानस्य (३, १, १, २ = उ ८, २, २)	४८०
उरुशंसा (१, १, ५, २ = उ ०)	१६

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
ऋजीतिनपातंस (१, १, २०, २ = उ यज्ञायज्ञा)	१७६
ऋतस्यजिह्वापवते (१, १, १९, १ = उ अभिप्रियाणिपवते) ..	१६६
ऋतेनमित्रावरुणा (२, २, ६, २ = उ०)	२८०
ऋतेनयाहतावृधा (२, १, ७, २ उ = ०)	२०६
ऋतेनयाहतावृधा (२, १, ७, २ = उ०)	२०६
ऋधक्सोम (१, १, २, २ = उ ११, १, १२)	८
ऋषिर्विप्रः (१, १, १०, ३ = उ १, १, ४—१९, १, ७)	८०
एतेअसृग्रम् (२, २, १, १ = उ०)	२७६
एनाविश्वान्यर्यआ (१, १, ८, ३ = उ उद्वातेजा)	२३
एनावीश्वग्निं (१, २, १२, १ = उ ११, २, ८—२१, २, ११—२१, २, १४)	२२६
एवानःसोमपरि (२, २, १०, ३ = उ २, १, १७)	४२९
एवापवस्वमदिरो (७, १, ११, ३ = उ २, १, २—७, १, ६) ...	२२७
एवारात्रिम (२, १, १८, २ = उ २, १, ११—२१, २, २) ..	३६५
एवाह्यसिपीरयुर् (२, १, १८, १ = उ २, १, ११—२१, २, २) ...	३६५
एषप्रत्नेनजन्मना (१, २, १७, १ = उ०)	१६०
एषप्रत्नेनमन्मना (१, २, १७, २ = उ०)	१६१
एषुब्रह्मासुवाणि (१, १, २१, १ = उ १, १, १५—२३, १, १२) ...	१८३
ओमेसुवन्द्र (३, २, २१, ३ = उ २, २, २१, २—३, १, १६—१७, १, ६)	६७८
कण्वेभिर्धृष्णवा (२, २, १२, २ = उ २, १, १८—४, १, ८—९—१९, २, ७)	४३६
कयानश्चित्र (१, १, १२, १ = उ १, १, ५,—१०, १, ८) ...	८७
कवीनोमित्रावरुणा (२, २, ६, ३ = उ०)	३९१
कस्त्वासत्यो (१, १, १२, २ = उ १, १, ५—१०, १, ८) ..	८८
कायमानवरिवो (२, २, १, २ = उ०)	२७७
केतुकृण्वन्दिवस् (२, २, २, १ = उ०)	५९१
क्रीडुर्मघो (३, २, ४, ७ = उ०)	६००

[अ]

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
गृणानाजमदग्निना (१, १, ५, ३ = उ०) ...	१७
गोविप्पवस्व (१, २, १, १ = उ ८, २, ७—२३, १, १८) . :.	५८१
जह्नवृंत्रं (२, १, १५, २ = उ०)	३४४
जह्नानोवाचं (३, २, २, ३ = उ०)	५९०
जनस्यगोपा (३, १, ६, १ = उ १९, १, १५)	४९९
तंघेर्दंस (१, १, १३, १ = उ १, १, ६—६, २, १४—१३, १, ५—	...
१३, १, ८—१४, १, १०—२१, १, ४—२१, १, ९—२१, १, १७—	...
२२, १, १४)	९१
तदद्याचित्त (२, १, १८, ३ = उ २, १, ६—८, १, १३—१९, १, १९)	४७०
तन्नो मदं (२, २, १८, १ = उ २, २, ६—८, १, १३—१९, १, १९)	४६८
तन्नो यवंदधा (१, १, ८, ३ = उ १, १, ६)	२१९
तन्वाधर्णारं (२, १, १०, १ = उ इषापवस्व)	३१४
तन्वानरूणाणि (२, २, ३, १ = उ०) .:.	३८०
तन्वासमिद्भिर् (१, १, ४, १ = उ०)	१५
तन्दुरोषमभीनरः (१, १, १८, ३ = उ पुरोजितीवो) ...	९३२
तपोष्पवित्रं (२, २, १९, २ = उ ७, १, १—१२, १, ३—१५, १, १)	४९०
तमुष्टवाम (२, १, १९, ३ = उ १, २, ७—१३, १, १४) ..	४७५
तमुष्टवेवाजसातय (१, २, १२, १ = उ १, २, १०—१९, १, २) ..	२३४
तरणिरित्सिषासति (२, १, १३, १ = उ २, १, १९)	४४०
तरत्समुद्रं (२, २, ९, २ = उ अभिसोमासश्चायवः)	४०१
तरोभिर्वो (१, १, १४, १ = उ १, १, ७—१०, १, १५) ..	१०१
तवस्रियो (३, १, ७, १ = उ०)	६०५
तवाहंनक्तं (३, १, ११, २ = उ तवाहंसोम)	५१७
तवाहंसोम (३, १, ११, १ = उ १, १, ९—१०—११—८, १, १८—	...
९, १, १०— ९, १, १४—१३, १, १—२—१६, १, १५—	..
१६—१७—१८—१९, २, १—२०, १, १४—१५—१६) ..	५१७

मन्त्रप्रतीकम्				पृष्ठम्
नाधस्थनमसा (१, २, १५, १ = उ १०, १, ४)	...	...		६१९
नाधस्थपृश्नमायुधः (१, २, १५, १ = १०, १, ४)	...	...		६२८
नाभिरागंच्छतं (१, २, १०, १ = ०)	..	...	...	६१२
नावांसम्यग् (१, २, ८, १ = उ ०)	...	...	...	६०९
नावांगीर्भिर (२, १, ९, १ = उ ०)	...	..	...	३१२
नासूचाजाघृनास्तुती (१, १, ७, १ = उ०)		...	..	५०५
नाहिमग्रध्न (२, १, ९, १ = उ ०)		...	..	३११
नाडवेयधोर् (१, २, ८, १ = उ ०)		..	...	..	३९९
निखोर्दूरयति (२, १, १०, १ = उ २, १, १०,)		...	..	४१७
निखोवाचउद् (१, २, १४, १ = उ २, १, २०—७, १, १६—९, १, ७—१५, १, १९—२०, १, १०—११)		..	...	४४१
तुभ्येमाभुवना (२, १, १, १ = उ. ०)	...	...	...	१९४
चिकद्रुकेषुचेतनं (१, १, ४, १, = उ १, २, १)		...	...	२०५
चीणिचितस्य (१, २, १८, १ = उ प्राणाग्निमुर्)		..	...	६५०
त्वंराजेवसुव्रतो (१, २, ४, ५ = उ ०)		..	..	..	५९९
त्वंसमुद्रिया (२, १, १, १ = उ ०)		..	..	..	२९४
त्वंसोमनृमादनः (१, २, १, ५ = उ ०)		...	..	५९५
त्वंसोमपरिषव (१, २, ६, १ = उ ०)		...	..	६०४
त्वंह्याङ्गदैव्य (१, १, १०, १ = उ २, १, १६—५, १, १६—११, २, १८—१९, १, १२)		...	...	...	...	५५५
त्वन्द्राय (१, २, १९, १ = उ पवस्वबाजसातये)		...	...	६५९
त्वन्नरन्द्रवाजयुस् (१, १, १, १ = उ १, १, १९)		..	..	१००
त्वन्नृचक्षा (१, २, १, १ = उ ८, २, ७—२१, १, १८)			...	५८७
त्वमिन्द्राभिभूर् (१, १, २२, १ = १, १, १७)		..	...	६८१
त्वांरिहन्ति (१, २, १९, १ = उ पवस्वबाजसातये)			..	६५९
त्वामग्ने (१, १, ६, १ = उ १९, १, १५)		..	...	५०१
त्वामिदाह्वो (१, १, १४, १ = १, १. ४—१८, १, ८)			...	१०४

मन्त्रप्रतीकम् ... ४४म्

त्वामिद्धिवामहे (१, १, १९, १ = उ०) ३३०

इविद्युतत्यादधा (१, १, २, १ = उ २१, १, ११) ७

इुहानउधर् (१, १, ९, २ = पुनानःसोम) ४२

इुहानःप्रत्नमित् (१, २, १७, २ = उ०) १९१

सुचंइुहामु (१, १, १३, २ = उ मंवो०) ९२

धीभिर्मर्जयन्ति (२, १, १८, २ = उ १, २, १७—७, १, ९—९, १, ४—१५, २, ११) ५९०

नकिष्टु द्रथीतरी (२, १, २१, २ = उ ३, १, १—११, १, १७—२३, १, ३) ५७७

नवेमन्यद् (१, २, २, २ = उ १, १, २०) २०२

नवावांचन्यो (१, १, ११, २ = उ १९, १, १९—२२, १, १—१२, १, १२) ८४

नदुष्टु मित्रविरोदेषु (१, २, १३, २ = उ १, १, १९) ४४१

नयंदुग्रा (१, १, १४, २ = उ १, १, ७—१०, १, १५) १०१

नहिनेपूर्त्तम् (१, १, २१, ३ = उ १, १, १५—२३, १, १२) ... १८४

नहित्वामूर (१, १, ६, ३ = उ १, १, ४) २१३

नूनोरथिं (२, १, १३, ३ = उ २, २, १२—१३, २, ११—१२—१३) ५३४

नृभिर्धौतः (१, २, ८, २ = उ १, १, ६) २१८

नृभिर्यमाणो (२, २, ९, १ = उ अभिसोमासश्चायवः) ४०२

नेमिघ्नमस्मि (२, १, १४, २, = उ २, १, १३) ५४१

परिनःशर्मयन्त्या (२, १, ३, ६ = उ०) ४९०

परिप्रियादिवः (२, १, १६, १ = उ १, २, १५—७, २, ८—१५, २, १०—१६, १, ११—२०, १, १७) ५५०

परिविश्वानि (२, २, ४, ३ = उ०) ५९८

परिष्कृण्वन् (२, १, ४, २ = उ०) ४९२

पवतेहर्यतो (१, १, २१, १ = उ यथापवस्वदेवयू) ... २८९

पवमानधिया (२, १, १०, ३ = उ १, १, ८—१५, २, ९—१६, २, १) ५१४

पवमानरुक्मिण (३, १, २, २ = उ ३, १, १७) ४८४

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
पवयानश्चोदया (२, १, ५, २ = उ ५, १, १०—१५, २, १०) ..	४८६
पवमानस्यतेऽवे (१, १, २, १ = उ २१, १, १२)	१०
पवमानस्यतेरसो (२, १, २, २ = उ १, १, १७)	४८४
पवमानस्यतेवयं (२, १, ५, १ = उ ०)	३०१
पवमानस्यविध्रवित् (२, २, २, १ = उ ०)	५९१
पवमानोऽयजीजनद् (२, १, २, १ = उ २, १, १७) ...	४८३
पवस्वदक्षसाधनो (२, १. १०, १ = उ २, १, ८—१५, २, ९—१६, २, १)	५११
पवस्वमघुमत्तम (१, १, १६, १ = उ १, १, ९—१, १, ६—७, १, ८—	...
१०, १, ५—१२, १, ४—४ १, ८—९, २, ७—१०, २, ३—	...
१३, २, १८)	११५
पवस्ववाचा (२, १, १, १ = उ ०)	२९३
पवस्ववाजसातये (३, २, १९, १ = उ ३, १, १३—१४,—८, १, १—२, ६—	...
१५ २, १९—१०—११—१६, १, १०—२, ९—२०, २, ३—	..
२१, ३, २—२३, १, १२)	६५८
पवस्वविश्वचर्षणे (३, १, ३, ५ = उ ०)	४९०
पवस्वशवसस्पत (३, २, ३, ६ = उ ०)	५९६
पवस्वेन्दो (२, १, २, १ = उ ०)	२९५
पवित्रमेषितम् (२, २, १६, १ = उ ७, २, १—१२, २, २—१५, १, १)	४५९
पात्नीवतीमिमा (३, २, ८, ३ = ०)	६०९
पाप्मनावो (१, २, १, १ = उ १, १, १८)	१९५
पिबासोममिन्द्र (३, १, १३, १ = उ १९, २, १—३)	५३७
पुनानःसोमधारया (१, १, ९, १ = उ १, १, २—३—२, २०—२, १, १—	...
४, १, ४—५—६—९, १, ११—१२—१३—२, २—८, २,१३—१४—	...
१५—९, २, १६—१२, १, १२—१०, १, १३—२०—११, २, १६—	...
१३, १, ७—१९—२, १५—१६—१५, २, ३—४—१६, १, १०—	...
१७, १, १—१६—१८, १, ७—२०—२१—२, ३—१९, १, २०—	..
२, १२—२०, २, ११—१५—१६—१७—२१, २, ९—२२, १, ५—	..
८—२२, २, ८)	४१

मन्त्रप्रतीकम्	पृष्ठम्
पुनानोऽअक्रमीद् (३, १, १२, १ = उ १, २, १२—१९, २, ११—११—१३)	५३२
पुनानोदेववीतय (२, १, ४, ३ = उ ०)	२८४
पुनानोवरिवस्कृधि (२, १, ४, १ = उ ०)	१८४
पुरुकृतम्पुरुष्टुतं (१, २, १, २ = उ १, १, १८)	१९६
पुरुकृतम्पुरुणाम् (१, २, १०, २ = उ १, २, ८)	२२५
पुरुकृत्वाचिध्यत्क्रवो (३, २, ८, १ = उ ०)	६०८
पुरोजितीवोऽन्धसः (१, १, १८, १ = १, १, ११—१२—२, ६, १८—	...
४, १, १२—१४—६, २, ९—७, २, १०—८, २, १५—१६—१७—	...
१०, १, ३—१७—१२, १, ६—१९, २—१९—१२—१३—१४—	...
१९, १, ६—२, ६—१६, १, ३—८—९—१६, २, ६—१७, १, ३—	..
४—१७—२०, १, १८—१, १२—१३—२१, १, १—३, ३—	..
२२, १, ६—७—९—२, १३—१५—२३, १, ९)	१२१
पूर्वीरिन्द्रस्य (२, १, १९, ३ = उ १, १, ११—७, १, ११—२१, १, ३—२, ३)	३७०
प्रकविर्देववीतये (३, २, ४, १ = उ ०)	५९७
प्रतत्थाम्बिनी: (३, १, १, १ = उ ८, २, १)	४७९
प्रतुद्रव (१, १, १०, १ = उ १, १, ४ —१९, १, ७)	७८
प्रतेजन्नोतु (१, २, ९, ३ = उ १, २, ७)	१२२
प्रत्युषर्जर्भ्रा (१, २, १४, १ = उ २१, २, ९—१२—१५ ...	२४०
प्रधन्वानधन्वसि (३, २, ३, २ = उ ०)	५९४
प्रप्रक्षयायपन्यसे (३, १, १२, ३ = उ ९, २, १५—७, १, ८—१५, २, १०—	...
१९, १, ११—२०, १, १७)	५३१
प्रमंहिष्ठाय (२, २, १७, = उ २, २, ५)	४९९
प्रयद्भावोन (३, १, ३, १ = उ ०)	४८७
प्रयदिन्द्रायमादनं (१, २, २, १ = उ १, १, १९)	१९८
प्रयुज्वानाय (१, २, २२, ३ = उ यथापवस्वदेवयुः)	२९०
प्रयोमदे ववीतये (१, २, २०, १ = उ १, २, १३—६, २, १३—	
८, १, १३—९, २, १७—१८—११, १, १७—१४, १, १५— ...	

मन्त्रप्रतीकम् ..	पृष्ठम्
१८, १, ११—१३—१४—१९, २, १७—२२, १, ६) ..	२७४
प्रसोमासोऽधन्विषुः (२, २, २, १ = ङ ०)	५९२
प्रसोमासोमदच्युतः (१, २, २१, १ = ङ १, २, १४—११, १, २०)	१८६
प्रसोमासोविपश्चितः (१, १, १९, १ = ङ १, १, ११—१२—६, २, १२— ...	
११, २, ११—१४, १, १२—१३—१४—१८, १, ११—१९, २, १५—१६) ...	
प्राचाग्निम्मुर् (२, २, १८, १ = ङ २, १, १२—५, १, २—७, २, २०— ...	
७, २, २१—९, १, १४—९, ३, २—१२, १, ५—१५, २, ८—१६, २, ८)	६७९
प्रावीविपद्वाच (१, १, १९, १ = ङ २, २, १९—८, २, १—२३, १, १०— ...	
१६)	५६८
बोधासुमे (१, १, १३, १ = ङ २२, १, १—१)	५३८
ब्रह्मादेवानां (२, १, १९, २ = ङ २, २, १९—८, २, १—२३, १, १०—१६)	५६६
ब्रह्माणस्त्वायुजा (१, १, ६, २ = ङ ०)	१९०
मत्स्वासुप्रिप्रिम् (२, १, १४, १ = ङ २, १, ४—१८, २, ८) ...	३४०
मनीषिभिःपवते (२, १, १०, २ = ङ २, १, १०—९, १, ५—१६, १, १७)	३५९
मालाभूरा० (१, २, ७, १ = ङ १, २, ५)	२१५
मापापत्वाय (२, १, ९, १ = ङ ०)	५१२
मिचंवर्यंद्रवामहे (२, १, ७, १ = ङ ०)	१०५
मिचंद्रवे (२, २, ६, १ = ङ ०)	३८९
मेधाकारं (२, १, ७, २ = ङ ०)	६०७
मोषुब्रह्मेव (२, १, १८, २ = ङ २, १, ११—२१, २, २) ...	३६६
यच्चोजिष्ठसमः (२, १, १९, १ = ङ यत्मूषारथिर्)	३४७
यज्ञस्यकेतुं (२, १, ६, १ = ङ १९, १, १५)	५०१
यंत्रायन्नावो (१, १, २०, १ = ङ १, १, १४—१२, २, ५—१३, १, ११— ...	
२१, २, २०—२१—२३, १, ८)	१७५
यत्रकाच (१, १, २१, २ = ङ १, १, १५—१२, १, १२) ..	१८४
यत्सोमचित्रं (२, २, १३, १ = ङ २, १, ९)	६२९
यदद्भिःपरिषिच्यसे (२, १, ४, २ = ङ ०)	२९९

प्रथमप्रतीकम्				पृष्ठम्
यदुदीरत (१, १, १४, १ = उ १९, १, ४)	...	...		६३४
यथावदन्न (२, १, ११, १ = उ १९, १, १९)	..	...		४९१
यमंथवन्नो (२, १, ५, १ = उ ०)	...	...	...	६०१
यस्यदन्न (१, १, १९, १ = २, १, ७—१२, १, १४)			...	४७४
यस्मेयतु (१, १, ९, १ = उ १, १, ७)	...	...	...	२१९
यस्मेमदीयुजोषावद्य (२, १, १२, १ = उ ११, १, १—२)			..	५२८
यस्मेमदोवरेण्यं (१, १, १५, १ = उ ०)	...	...		२४२
यस्मेयुक्तासो (१, १, ५, २ = उ १, १, १—१, १, १)			..	२०९
यस्मिन्विश्वा (१, २, ४, १ = उ १, १, १)	...	..		२०५
यस्यनेपीला (१, १, १६, १ = उ यवस्यमधुमत्तम)	...	...		११९
यस्यनेषद्धे (२, १, १, १ = उ ०)	...	...	...	१९१
यानेमीमान्यायुधा (१, १, २, १ = उ ०)	...	...	...	१९६
यावांसन्नि (३, १, १०, १ = उ ०)	...	..	..	६१२
याश्चेधारा (३, १, ६, १ = उ ०)	...	...	...	६०१
युञ्जन्तिहरिः (१, १, २१, ३ = उ १, १, १७—१०, १, ८)			...	१९१
युवंदिवः (१, १, १५, १ = उ २१, १, १०—१२—१६)			...	२४२
युवंदिवः (३, १, १९, ३ = उ ३, १, ९)	...	...		६३०
येनपवित्रं (२, १, ५, १ = उ ०)	...	...	...	३०१
येनजग्रोनींषायवे (२, १, १८, १ = उ २, १, ६—८, १, १३— १९, १, १९)	...	...	.. ...	४६९
येनानवमा (३, १, १७, २ = उ १, १, १६—५, २, १६—११ २, १८— १९, १, १९)	...	...	...	५५६
योऽग्निंदेववीतये (२, १, ५, १ = उ ०)	...	...		१८७
योगेयोगेतवस्तरं (१, १, ११, १ = १, १, ९)	...	...		११८
योजिनाति (३, १, ५, १ = ०)	...	...	...	६०१

मन्त्रप्रतीकम्			पृष्ठम्
बोधारया (१, १, १८, १ = उ पुरोजिती)	...	...	१२१
बौराजाचर्षणीनां (१, १, १५, १ = उ १, १, १४—७, २, ७—१८, १, ११)			५४५
रक्षोहा (१, १, १५, १ = उ खादिष्ठयामदिष्ठया)	...	...	१०६
रक्षाघःपयसा) १, १, ११, १ = उ १, १, १—७, १, ६)		...	२१६
राजानावनभिद्रुहा (१, १, ७, १ = उ ०)	...	...	५०५
राजामेधाभिर् (१, १, १, १ = उ ०)	...	...	३७८
रायःसमुद्रांश्चतुरो (१, २, १४, १ = उ १, १, १०—७, १, १६—८, १, ७— १५, १, १९—२०, १, १०—११)	...	...	४४४
वयकृत्वा (२, १, ११, १ = उ १, १, १८—४, १, ८—९—१९ १, ७)			४१४
वयमुत्तामपूर्वं (१, १, ११, १ = उ १, १, १६—११, १, १०)		...	१८७
वयमुत्तामदिदर्था (१, १, १, १ = उ १, १, १०)	...	...	२०१
वरिवोधातमो (१, १, १५, १ = उ खादिष्ठयामदिष्ठया)		...	१०६
वरुणपाविना (१, १, ७, १ = उ ०)	...	...	...	२०७*
वाचमष्टापदीं (१, १, ९, १ = उ ०)	...	..	...	६११
वानोपजूत (१, १, ७, १ = उ ०)	...	...	..	६०६
वार्षत्तायव्याभिर् (१, १, १२, १ = उ १, १, १७—१०, १, ८)			...	१९०
विघ्नतोदुरिना (१, १, १, १ = उ ०)	...	...	...	२७७
विघ्नाद्विला (१, १, ६, १ = उ १, १, ४)		..	...	२१२
विघ्नाजघ्नोतिना (१, १, १२, १ = उ १, १, १७)		..	...	६८१
विघ्नस्मादस्वर्धमे (१, १, १, ५ = उ ०)		...	...	१८१
विघ्नःघृतना (१, १, १४, १ = उ १, १, १२)		...	...	५४१
विघ्नाधामानि (१, १, १, १ = उ ८, १, १)		...	...	४८१
वीतुविद्राव्यन्तुभिर् (१, १, ७, १ = उ ०)		..	..	१९७
इषाघमस (१, १, १०, १ = उ १, १, १९—४, १, १—१—१—६, १, १— ७, १, १—१—११, १, १४—१५—१८, १, १८— १९—२०, १, १—१, ९—१०)		....	..	..	...	..	२१३

तच्छब्दतीकम्	पृष्ठम्
तथापुनानः (२, १, १२, २ = उ १, १, ९)	६०९
तथामतीर्षां (२, १, १७, १ = उ २, १, १०—९, १, ५—१६, १, १७)	३५७
तथामोचो (२, १, ११, १ = उ १, १, २—७, १, ६)	२१५
तथासीम (२, १, ३, १ = उ ०)	२९७
तथाह्यसि (२, १, ४, १ = उ ०)	२९९
तथाह्येष्यां (२, १, ३, २ = उ ०)	२९८
तंसेदुक्थं (१, २, २, १ = उ १, १, १९)	१९९
तताकीकेव (२, १, १२, १ = उ १, १, ३—७, १, ७—१२, १, ११—१५)	३३५
ताचीगो (१, २, ५, २ = उ १, २, १—१, २, २)	२०८
तादिःपावक (२, २, ३, ७ = उ ०)	५९६
तादृशन्नो (२, २, १६, २= उ ३, १, १०—७, २, १९—१६, १, ४— २०, २, २)	.. ६४१
तृणुतंजरितुर् (२, १, ९, २ = उ ०)	५११
तृषवेदष्टेरिव (२, १, २, २ = उ ०)	४८८
तृधोऽवन्तिरत्या (२, २, १९, १ = उ २, १, ७—१३, १, १४) ...	४७३
तेंऽहसाद्ध्यां (२, १, ३, २ = उ ०)	२८१
तेऽग्ने नरन्द्र (२, १, १९, २ = उ २, १, १२—७, १, ११—११, १, ३—२, ३)	२९९
तेधानोयोग (१, २, १०, २ = उ १, २, ८)	२२९
तेवन्नश्चित्र (२, १, १२, १ = उ ०)	३३१
तेवदन्द्राय (१, १, ८, २ = उ तेधातेजातमन्धसो)	२२
तेवःप्रवन्त (१, १, १, ३ = उ २१. १, ११)	५
तेवःपुनान (२, १, ५, २ = उ ०)	२०२
तेवःसुषु (१, १, ४, २ = उ ०)	१५
तेष्वेवःशोभते (३, १, १०, २ = उ २, २, ८—१५, १, ९—१६, २, १)	५१३
तेप्रथमे (१, १, १२, २ = उ १, २, १०—१९, १, २) ..	२२२
तेमीचीनाधनूषत (२, १, ३, ६ = उ ०)	४९४

मन्त्रप्रतीकम्				पृष्ठम्
समुप्रियाचनूषतं (२, १, १६, २ = उ ० अथन्यूषारविर्भवः)			...	२४६
समुरेभाषी (२, १, १४, २ = उ २, १, १२)		...	...	५४२
सम्मिश्लोअरुषी (२, १, १५, २ = उ ०)		...	...	२४५
सयीजतेअरुषा (१, २, ११, २ = उ ११, २, ८—११—१४)			...	२२०
सवक्रिरप्सुद (२, २, ४, ६ = उ ०)		...	...	..	६०८
सवत्सुर्मातरा (२, १, १६, २ = उ २, १, १५—७, २, ८—१५, २, १०— १६, १, ११—१०, १, १७)		...	..	...	५५१
सवत्सधारःपवते (२, २, १५, २ = उ २, २, २—४—७, १, १०—९, १, ८— १५, २, २—२६, १, २—१०, १, १९—१२—११, २, ११)				...	४५०
सविभ्याजरिद्भ्यः (२. २, ४, २ = उ ०)		...	..	...	५९८
सुतपति (२, १, ४, ४ = उ ०)		...	...	..	४९२
सुताइन्द्राय (१, २, १९, २ = उ प्रसोमासोविपश्चितो)				...	२९८
सुतासोमधुमत्तमाः (२, २, १५, १ = उ २, २, २—४—७, १, १०— ९, १, ८—१५, २, १—२—१९, १, २—१०, १, १२—१३— २२, २, ११)		..	...	...	..	...	४४९
सुविनस्य (२, १, २, २ = उ ०)		..	...	...	४८८
सोअर्षेन्द्राय (२, २, ९, २ = उ ०)		..	...	...	६०४
सोमउक्थाः (२, २, १२, १ = उ २, १, २—४—७, २, १२— १९, २, २—१०, १, १९—११, १, १५)		..	...	...	४१९
सोमःपवते (३, १, १९, १ = उ २, २, १९—८, २, १—११, १, १०—१९)				..	
सोमःपुनानकार्ष्मणा (३, १, १८, १ = उ २, २, १७—७, २, ९— ९, ३, ४—१५, २, ११)		...	...	..	...	..	५९०
सोमस्तावो (२, २, १०, २ = उ २, १, १७)		...	..	४२८
स्वरन्तिवा (२ २, १२, २ = उ २, १, १८—४, १, ८—९—१९, २, ७)				४३५
स्वादिष्ठया (१, १, १५, १ = उ १, १, ८—८, १, २०—१०, २, १०— ११. २,१७—२, २, ४—१९, १, ९—१२, २,१२— १८, १, १५—१६—१९ २, १८—२०, २, २०—२१, १, ९)				...	..	...	१०५

अनुक्रमणीकम्				पृष्ठम्
आहोरित्था (२, २, १५, १ = उ १०, १, ४)	...	...	...	६२६
आसुधःपवते (१, १, १, २ = उ १, १. ४—१९, १, ७)			...	७९
उपोदघाताचार्या (२, १, ८, ३ = उ ०)	..	..	..	४००
ऋग्विधिसूत्रम् (३, १, ५, १ = उ ५, १, १०—१९, १, १०)			..	४९५
ऋग्वाग्वेदसमिट् (१, १, १, २ = उ ११, १, १२)	..	...		७

UTTARPARA
PUBLIC
LIBRARY
1859

॥ ॐ नमः सामवेदाय ॥

॥ सामवेदसंहिता ॥

तत्र

॥ उत्तरार्चिकः ॥

॥ अथ भाष्यावतरणिका ॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानाम् उपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥ १ ॥
यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्—
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ २ ॥
तत्कटाक्षेण तद्रूपं दधद् बुक्कमहीपतिः ।
आदिशत् सायणाचार्यं वेदार्थस्य प्रकाशने ॥ ३ ॥
ये पूर्वोत्तरमीमांसे ते व्याख्यायातिसङ्गतात् ।
कृपालुः सायणाचार्यो वेदार्थं वक्तुमुद्यतः ॥ ४ ॥
व्याख्याताङ्ग्यजुर्वेदौ सामवेदेऽपि संहिता ।
छन्दोभिधाभूद् व्याख्याता व्याख्यास्यत्युत्तराभिधाम् ॥ ५ ॥
छन्दस्येकैकशोऽधीता ऋचः सामोङ्गवाय हि ।
स्तोम-निष्पत्तये सूक्तान्युत्तराया मधीयते * ॥ ६ ॥

---

* छन्दसि पूर्वार्चिकपर्व्व एकैकशः ऋचः अधीताः, सङ्गति मनपेक्ष्येति भावः ; तत्र सामोङ्गवमात्रं प्रयोजनम्, सामोङ्गवन्तु एकस्या ऋचि भवितव्य एव ; परं स्तोम-निष्पत्तिस्तु तथा न भवेत् यत इह उत्तरायां सूक्तानि पृथक्-त्रयम् अपि अधीयते ।

स्तोमशब्देनोत्पत्तिषु स्तोमयागेषु प्रयुज्यमानास्त्रिवृत्पञ्चदशादयोऽभिधीयन्ते। अतएव तैत्तिरीयकाः प्रश्नोत्तराभ्या मिदमामनन्ति। तदाहुः—"कतमा वाव तानि ज्योतींषि य एतस्य स्तोमा इति? त्रिवृत्पञ्चदशः सप्तदश एकविंश एतानि वाव तानि ज्योतींषि यएतस्य स्तोमाः"—इति। छन्दोगाश्च त्रिवृद्-रादि-स्तोमानां स्वरूपं ब्राह्मण-द्वितीय-तृतीययोरध्याययोः * बहुधा समामनन्ति। ते च बहुभिरवान्तररूपोपेताः समाम्नाताः स्तोमा नवसङ्ख्याकास्तेषु पूर्वोक्तास्त्रिवृदादयश्चत्वारः त्रिणव-त्रयस्त्रिंशौ त्रिनवसङ्ख्योपेतः स्तोमस्त्रिणवइत्युच्यते। छन्दोमना-मका स्तोमास्त्रयस्तेषु चतुर्विंशाख्यस्तोमः प्रथमः। गायत्रीच्छन्द-सा चतुर्विंशत्यक्षरोपेतेन मीयतइति छन्दोमः। चतुस्त्रिंशश्चत्वा-रिंशाख्यो द्वितीयः। स च त्रिष्टुप्छन्दसा मीयते। अष्टाचत्वारिं-शाख्यस्तितीयः। सोऽपि जगतीच्छन्दसा मीयते॥ नन्वथ ये त्रयाम्नातलक्षणोपेतेभ्यस्त्रिवृदादिभ्योऽष्टादश-नवदशादि--नामका बहवः स्तोमा विद्यन्ते। तथाच तैत्तिरीयकाः केषुचिदिष्ट-कोपधान-मन्त्रेषु देवतावद्रूपेष्टकात्व-विवक्षया तान् स्तोमा-नामनन्ति—"आग्नास्त्रिवृद्ब्रान्तः पञ्चदशो व्योम सप्तदशः। प्रतू-र्त्तिरष्टादशस्तपोनवदशोऽभिवर्त्तस्त्रविंशो धरुण एकविंशो वर्चो-द्वाविंशः सम्भरणस्त्रयोविंशो योनिश्चतुर्विंशो गर्भः पञ्चविंश ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकविंशो ब्रध्नस्य विष्टपश्चतुस्त्रिंशो नाकषट्-त्रिंशोऽभिवर्त्तोऽष्टचत्वारिंशः"—इति। एवन्तर्हि सन्त्येव बह्वनि

---

* नाष्टमस्याध्यायस्येति।

स्तोमान्तराणि तेषां लक्षणानि तु ब्राह्मणान्तरानुसारेण सूत्रकारैर्व्युत्पादितानि ॥ ते च स्तोमाः सर्वेऽप्याज्यपृष्ठादि-स्तोत्रोपयुक्ताः "पञ्चदशान्याज्यानि, सप्तदशानि पृष्ठानि"—इत्यादि-श्रुतिभ्यः स्तोम-विषयाः स्तोत्रविषयास्तन्निष्पादक-साम-विषयाश्च । सर्वेऽपि विचारा अस्माभिस्छन्दोव्याख्यानावतारवेलाया मेव जैमिनीयान्यधिकरणान्युदाहृत्य प्रदर्शिताः * ॥ किं बहुना "एकं साम तृचे क्रियते स्तोत्रियम्"†—इत्यादि-वचनैः स्तोत्रनिष्पादकस्य सामस्तृच्प्रगाथादि-रूपाणि सूक्तान्याश्रयत्वेनोत्तराख्ये संहिता-ग्रन्थे समाम्नातानि । स च ग्रन्थ एकविंशति-सङ्ख्याते-रध्यायै रुपेतः ‡ ॥

---

* १ भा० २० पृ०—३८ पृ० द्रष्टव्यम् ।

† द्रष्टव्योऽस्यार्थः १भा० २० पृष्ठे ।

‡ मूलपुस्तकस्य तु अध्यायसङ्ख्या नवैव दृश्यते, पर मस्ति तत्र प्रत्यध्यायस्यार्द्धाध्यायः अध्यायद्वयेऽर्द्धाध्यायद्वयञ्च, पदग्रन्थे च तथा, विवरणादावप्येव मेव । सायणमते तु अर्द्धाध्यायानङ्गीकारस्तत्रैकविंशतिरेवं सुलभमिति । अध्यायेति व्यवहारश्च सायणीय एव, वस्तुतः सामवेदे प्रपाठकव्यवहारएव सर्वमूलपुस्तक-पदपुस्तक-गानपुस्तकादौ विवरणकारमते च प्रसिद्धः ।

तच, प्रथमाध्यायस्य प्रथमखण्डे, *

प्रथमसूक्ते तृचे, येयमृक् प्रथमा

सैव साम्नायते—

१ १ २ १२ २ १ १
उपास्मैगायतानरःपवमानायेन्दवे ।
२ २ ३ १ २२
अभिदेवाँइयक्षते ॥ १ ॥ †

हे "नरः" नेतारः ! यूयम्, "देवान्" इन्द्रादीन् "अभि इयक्षते" आभिमुख्येन यष्टु मिच्छते "पवमानाय" क्षरते "अस्मै" अभिषूयमाणाय "इन्दवे" सोमाय "उप गायत" उपगानं कुरुत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ २ २ १ १ १ १ २२
अभि नमधुनापयोथर्वाणोअश्विभ्यु: ।
१ २ ३ १ २ २२
देवन्देवायदेवयु: ॥ २ ॥

हे सोम ! "ते" तव "देवं" देवनशीलं "देवयुः" देव-कामं रसं ‡ "देवाय" देवनशीलायेन्द्राय "मधुना" ¶ "पयः" गव्येन

---

* अत्र ग्रन्थे खण्ड-व्यवहारोऽपि सायणेनाभिष्कृतः ।

† इयमेव ऋक् अथैव प्रपाठके द्वितीयार्धेऽपि दृश्यते (१८, ३)।

‡ 'देवयुः देवान् युनक्ति यः सोमेन स देवयुः'—इति वि०। 'देवयवः'—इति ऋत्विङ्नामसु अष्टमं नैघण्टुकम् (३, १८)।

¶ 'मधुना स्वादुना'—इति वि०।

पयसा * "अथर्वाणः" ऋषयः † "अभ्यशिश्रयुः" अभ्यशिश्रपन् समकुर्वन्निव्यर्थः ‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ ४ ३ १ १ २ १ २

सनःपवस्वशंगवेशंजनायशंमयते ।

१ २ ३ १ २

शंराजन्नोषधीभ्यः ॥ ३ ॥ १ ¶

हे "राजन्" दीप्यमान सोम ! "सः" प्रसिद्धस्त्वं "नः" अस्माकं § "गवे" ‖ "शं" सुखं "पवस्व" चर + "जनाय"

---

* 'पथः प्रथमैकवचनमिदं तृतीयैकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । पयसा सोमसिश्रणं कुर्वन्ति'—इति वि० ।

† 'सोमसिश्रणं कुर्वन्ति के ? अथर्वाणः ऋत्विजः । अथवा अथर्वा नाम ऋषिः आत्मीयान् पुत्रपौत्राननुलक्ष्य—हे अथर्वाणः !'—इति वि० ।

‡ 'अभीत्यय मुपसर्गः अभिश्रयुरित्याख्यातेन सह सम्बन्धयितव्यः । अभ्यशिश्रयु =आभिमुख्येन ते तव अभिश्रयुः=सिश्रणं कृतवन्तः'—इति वि० ।

¶ एतादृशवाक्यैः—ऋग्वेदे ९, ७, २६, १-२-३ अपि द्रष्टव्ये । अस्या ऋषिसन्देहस्य—"असितः काश्यपो देवलो वा"—इति ऋषि नै० । दैवत-सन्देहोऽपि यथा—"उत्तरास्तु रक्षोघ्न्याद्याश्च देवताः । पूर्वोक्ता ऋचु ता एवोत्तरासूपलभ्य तथा कृपाः । सौम्याः स सोमः पार्थिवः"—इति दैवत-नै० ॥

§ 'नः अस्मभ्यम्'—इति वि० ।

‖ 'चतुर्थैकवचनमिदं षष्ठवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् । गोभ्यो वृषभ्यः'—इति वि० ।

+ 'पवस्व गुध्यस्व'—इति वि० ।

पुत्राय च * "अं" पवस्व "अर्वते" अश्वाय † च "अं" पवस्व "ओषधीभ्यः" च ‡ अम्पवस्व ॥ ३ ॥ १

॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ उपाऽऽयसै। गाइयाइताना

रा:। पाइवामाइना। याइइआ। ङम्मायि। दाइवा

यि। आभिदेवाएइयाइत्ताउ ॥ ते (१)॥ आ। भिते

मा। धूइनापाइयाः। आथार्वा। णोआइइआ। ङ

म्मायि। आइयूः। दायिवन्देवायदाइयिवयाउ ॥ यू(२)॥

सा:। नःपवा। स्वाइआङ्गाइवायि। अङ्गाइना। य

आइइमा। ङम्मायि। वाइतायि। आएराजन्नोषधा

इयिभ्यआउ ॥ (३) ॥ ११ ¶ ॥ १

---

* 'अं जनाय सुख मत्विग्जनाय'—इति वि०।

† 'अ मर्वते यजमानजनाय'—इति वि०।

‡ 'ओषधीभ्यः व्रीहि यव-तिल-माषादिभ्यः'—इति वि०।

¶ सामेदमूहगानस्यैकविंशप्रपाठक-प्रथमार्द्धस्यैकादशम्।

अथ द्वितीयर्चे—प्रथमा

१ १ २ १ २ २ १ २ २ १
दविद्युतत्यारुचापरिष्टोभन्त्याक्षपा ।
१ २ २ १ २२
सोमाःशुक्रागवाशिरः ॥ १ ॥

"दविद्युतत्या रुचा" अतिशयदीप्त्या "परिष्टोभन्त्या" परितः शब्दायमानया "क्षपा" धारया च युक्ताः "सोमाः" "गवाशिरः" गवाशिराः भवन्ति गव्येन पयसा मिश्रिता भवन्ति इत्यर्थः* ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ २ १ २ २ १ २२ २क २२
हिन्वानोहेतृभिर्हितआवाजंवाज्यक्रमीत् ।
१ २ २ १ २
सीदन्तोवनुषोयथा ॥ २ ॥

"वाजी" बलवान् सोमः "हेतृभिः" प्रैरकैः† स्तोतृभिः "हिन्वानः" स्तोतृभिः स्तूयमानः "हितः" अभीष्टकारी सन् "वाजं" यागाख्यं युद्धम् "आ अक्रमीत्" आक्रामति । तत्र दृष्टान्तः—

---

* "दविद्युतत्या देदीप्यमानया रुचा । परिष्टोभन्त्या परि समन्तात् स्तोभन्त्या पुनः पुनः स्तोभः अभ्यासः अभ्यस्यमानया । क्षपा कान्त्या । सोमाः शुक्राः शुक्लवर्णाः । कथं शुक्लवर्णा भवन्ति ? गवाशिरः कारणे कार्यवदुपचारः गोक्षीराशिरः । आशिरं मिश्रम् ॥"—इति वि० ।

† "प्रहेतारं वधूनां प्रेरकम्"—इति ह० भा० १, १, ५, १ सा० द्रष्टव्यम् (१भा० ५८१प०) ।

यथा "वनुषः" हन्तारो भटाः * "सीदन्तः" युद्धं प्रविशन्तः आक्रामन्ति तद्वदित्यर्थः † ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ १ २
ऋधक्सोमस्वस्तयेसञ्जग्मानोदिवाकवे।
१ २ ३ १ १ ३ २
पवस्वसूर्योदृशे ॥ ३ ॥ २ ‡

हे "सोम"! "कवे" क्रान्तदर्शिन्! "सूर्य्यः" सुवीर्यः ¶ त्वं "ऋधक्" ऋध्नुवत्। तथाच यास्कः—"ऋधगिति पृथग्भावस्यानुप्रवचनं भवत्यथाप्यृध्नोत्यर्थे दृश्यते (निरु० नै० ४, २४)"—

---

* "वनुष्यति"—इति क्रुध्यतिकर्मसु षष्ठम नैघण्टुकम् २, १२। "वनुष्यति-र्हन्तिकर्मानवगतसंस्कारोभवति 'वनुयामवनुष्यत' इत्यपि निगमो भवति"—इत्यादि निरु० नै० ४, २।

† 'हिन्वानः नीयमानः पीयमानो वा। कैः हेतुभिः? स्वरूपभावैर्ऋत्विग्भिर्वा याजम्। ऋ शब्दः उपसर्गः। क्रमीदित्याख्यातेन सम्बन्धितव्यः ऋमुक्षेण क्रमीत् वाजं वाजी वाजमन्नं, पशुपुरोडाशादि-लक्षणस्यान्नस्य स्वामी अथवा वाजं द्रोणकलशम् आक्रमीत् सोमः। कथमाक्रमीत्? सीदन्नोवनुषोयथा। सीदन्तः उपविशन्तः वनुषः मनुषः एकवचनमिदं बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्। वनुषाः मनुषाः उच्यन्ते। यथा उपविशन्तो मनुषाः आसन मास्रमन्ति तद्वत् द्रोणकलशं सोमः'—इति वि०।

‡ ऋ० वै० ७, १, ४१, २-४ ५। ऋ० "कण्वो मारीचः" इति ऋषि-नै०। छन्दोदेवते पूर्ववत्।

¶ 'सूर्यः दृशे, सूर्यः (स्व शब्द माहृयते। दृशे दर्शनाय। यथा सूर्य उदेति विश्वस्य जगतो दर्शनाय तद्वत् त्वमपि पवस्वेत्यभिप्रायः'—इति वि०।

इति। "सञ्जग्मानः" सङ्गच्छमानः "स्वस्तये" "दृशे" दर्शनाय "दिवा" दिवः विभक्तिव्यत्ययः* ॥ "पवस्व"-"चर"—"दिवा-कवे"-"दिवाकविः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २

४ ३ ४ २ ४२ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ दवाऽ५यिद्यु। ताइतीइयारुचा।
२ १ २ २ १ २ १ २ १
पाइरायिष्टीइभा। ताइ२आ। ऊम्मायि। काइर्षा।
१ २ २ ३ २ १ २ १२ २ १
सोमाःशुक्रागवाइश्शिराउ ॥ रा(१)ह्वायि। न्वानोहोत्रू
१ २ १ १२ १ २ २ १
इभायिर्हाइयिताः। आवाइजम्। वाजाइया। ऊ
२ १ १ २ १ १ २ १
म्मायि। काइमीत्। सायिदन्तोवनुषोइयथाउ ॥ था(२)
२ १ २ २ १ २ १ १२
क्रू। धक्सोमा। हइवास्ताइयायि। सञ्जाइग्मा।
२ २ १ २ १ १५ २
नोहाइयिवा। ऊम्मायि। काइवायि। पावस्वहरियोइ
३ २
हशाउ (३) ॥ १२ † ॥ [१]२

---

* 'दिवा कवे अहन्यहनि हे मेधाविन्!'—इति वि०।

† ऋ० मा० २१ प्र०१ अ० १२ मं०।

तृतीय-ऋचे—प्रथमा ।

१ २ ३ २ १ १ २
पवमानस्यतेकवेवाजिन्त्सर्गाअसृक्षत ।

१ २ ३ १ १२ १ २
अर्वन्तोनश्रवस्यवः ॥ १ ॥

मार्जनप्रसङ्गादाह—हे "कवे" क्रान्तप्रज्ञ ! हे "वाजिन्" अन्नवन् सोम ! "पवमानस्य" दशापवित्रेण पूयमानस्य "ते" तव "सर्गाः" सृज्यन्ते इति सर्गा धाराः * । कीदृश्यः ? "अवस्यवः" ["छन्दसि परेच्छायां क्यच् (३,१,८वा०] यष्टृणा मन्त्रं कामयमानास्त्वदीया धारा "असृक्षत" विसृजन्ति निर्गच्छन्तीत्यर्थः । तत्र दृष्टान्तः—"अर्वन्तो न" यथा अश्वा मन्दुरातो निर्गच्छन्ति तद्वत् पवित्रान्निःसरन्तीत्यर्थः † । प्रयोगापेक्षं चात्र धारा-बाहुल्यम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ २ ३१ २ ३१ २ ३ १ २
अच्छाकोशंमधुश्चुतमसश्चंवारेअव्यये ।

१ २ ३ १ २
अवावशन्तधीतयः ॥ २ ॥

धारानिर्गमनप्रसङ्गादभिधीयते—"मधुश्चुतं" मधुररसस्य स्रावयितारं क्षारयितारं "कोशं" द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि-

---

* 'सर्गाः उदकस्य अन्योन्यजन्मानः सङ्घाताः'—इति वि० ।

† 'अर्वन्तः यज्ञमानाः'—इति वि० ।

लक्ष्य* "अव्यये" अवि-स्वभूते "वारे" वाले दशापवित्रे "अक्षरन्" सोमाः ऋत्विग्भिरभिरज्यन्ते [रञ्जेः कर्मणि तिङतिङो भवन्तीति टेरमादेशः]। किञ्च। "धीतयः" [अङ्गुलि नामैतत् † धयन्ति पिबन्त्याभिरिति] अस्मदीया अङ्गुलयः "अवावशन्त" तान् सोमान् न पुनः पुनर्मार्जनार्थं कामयन्ते‡॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३१७ २ २ १ १ ३ २ ३ १ २

अच्छासमुद्रमिन्दवोऽस्तङ्गावोनधेनवः।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २

अग्मन्नृतस्ययोनिमा॥ २॥ ३॥

"इन्दवः" क्षरन्तः सोमाः "समुद्रं" सोमाना मेकत्वेव सङ्गमनस्थानं द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि गच्छन्ति। तत्र दृष्टान्तः —"धेनवः" पयःप्रदानेन जनानां प्रीणयित्र्यो नवप्रसूतिका गावः "अस्तं" गृहं यथा अभि गच्छन्तीति तद्वत् §। किञ्च ते

---

* 'अच्छ आगमम्'—इति वि०।

† "धीतयः"—इति अङ्गुलिनामसु सप्तमं नघण्टुकम् २, ५।

‡ 'धीतयः धीतिः बुद्धिः बुद्धिमन्तः सोमाः। अथवा अवावशन्त कामयन्तु के धीतयः ऋत्विजः, किं कामयन्त? सोमस्य पावनं द्रोणकलशगमनञ्च'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ७, २, ८, ५—९, १, २। ऋ० "वैखानसा आङ्गिरसः"—इति ऋषि नै०।

§ 'कथमागमम्? अस्तं गावो न धेनवः। अस्तमनकाले गावो न गन्तु उत्सहन्ते

सोमाः "ऋतस्य योनिं" सत्यभूतस्य यज्ञस्य* योनिं स्थानम् "आ" अग्मन्" आभिमुख्येन गच्छन्ति। [गमेर्लुङि सिच्चो लुकि उपधालोपः ॥ ३ ॥ ३

४ ३ २ ४ २ ४२ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवाऽपूमा। नाऽस्याऽन्तेकावायि।

१ १ २ २ १ २ १ २ २
वाऽजायिन्त्साऽर्गाः। आ२३सा। ऊम्मायि। त्ता३ता।

१ २ २ १ २ १२ २
आर्वन्तोनश्वा२स्यवाउ ॥ वा(१)आ। च्छाकोशाम।

२ १ २ २ १ १ २ २ १
माऽधूऽ३ताम्। असा२र्यम्। वारे२३आ। ऊम्मायि

२ २ १ २ ३ २ १ २
व्याऽयायि। आवावशन्तधा२यितयाउ ॥ या(२)आ।

१ १ २ २ १ १२ २
च्छासम्। द्राऽमायिन्दाऽवाः। अस्ता२ङ्गा। वीना२

२ १ २ २ १ ३ २
ऽधे। ऊम्मायि। नाऽवाः। आग्मन्नृतस्ययो२निमाउ।

१ १ १ १
वाऽ४५ ३) ॥ १३ ॥ [१]३

दुपमार्थीव गावः इव धेनवः यथा अन्तमनकाले वत्सानतियन्ति स्म ता-दृढाः"—इति वि०।

* 'ऋतस्य यज्ञस्य प्रजापतेर्वा' – इति वि०।

† ऋ० मा० २१ प्र० १ च० १३ सा०।

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य प्रथमस्याध्यायस्य

प्रथमः खण्डः * ॥ १ ॥

---

* 'ज्योतिष्टोमिकं बर्हिष्यवमानं समाप्तम्'—इति वि०। "तदिदं मृक्तवय-गानसाध्यं स्तोत्रं बर्हिष्यवमानमित्युच्यते। तदावर्त्तितानां मृचां पवमानार्थत्वाद् बर्हिःसम्बन्धाच्च"—इति मी० द० जै० अ० ९ अधा० ४पा० ३ अधि०। न खल्विदं स्तोत्रम् इतरस्तोत्रवत् सदोनामकस्य मण्डपस्य मध्ये औदुम्बर्याः खन्यशाखायाः सन्निधौ प्रयुज्यते किन्तु सदसो बहिः प्रमर्पद्भि प्रयुज्यते। 'बर्हिष्यवमानं नाम वेदः, यच्चैतद्बर्हिष्यवमाननामनवर्क-साध्य-विवृत्तास्तोमपाठपर्वकं मार्जनं भवति; 'सा तु उदग्वंशानामशालान्तर्गत सदोमण्डपात् पश्चिमस्याः प्राचीनवंशानामशालान्तर्गत ऋत्विक्वेदेरुत्तरतो विद्यते. अस्य च बर्हिष्यवमानस्य प्रकृतियागेऽग्निष्टोमादौ विष्टुत्साम-कः स्तोभो भवति. एतद्विधायकं ब्राह्मणवाक्यं ताण्ड्यादितौयप्रपाठकारम्भे एव खण्डत्रयात्मकं द्रष्टव्यम् - तिसृभ्यो हिङ्करोतीत्यादि'। अत्र च विष्टुतित्रयमस्ति उद्यतौ, परिवर्त्तिनौ, कुलायिनीति, तास्च तत्रैव स्फुटाः। विकृतियागेऽतिरात्रादावेव एकविंशादि-स्तोमा विहिताः। बर्हिष्यवमाने चाच्च आदृत्तगाना-भावात् त्रिषु तृचेष्ववस्थिताभिर्नवभिर्ऋग्भिरेकविंशस्तोमपूरणाभावात् तत्पूरणाय चत्वारस्तृचा आगमयितव्याः, त्रिणवस्तोमपूरणाय षट् तृचाः, चयस्त्रिंशत्स्तोमपूरणाय चाष्टौ तृचाः। तत्रागमने च मानम्—"त्रीणि ह वै यज्ञस्योदराणि गायत्री"-इत्यादि ताण्ड्ये सप्तम तृतीये द्रष्टव्यम्। आगन्तुनाञ्च तासां मध्ये निवेशः। द्वादशाहे तु मध्ये एव निवेशः। तद्विचारस्य मीमांसाधिकरणमालायाः पञ्चम-तृतीयस्य चतुर्थे द्रष्टव्यः। प्राकृतानां बर्हिष्यवमानगतानां चयाणां तृचानां स्तोत्रियोऽनुरूपः पर्यायस्वेति यथा क्रमं त्रीणि नामानि। अत्र मानम् ताण्ड्यैकादशषष्ठे "स्तोत्रि-यानुरूपौ तृचौ भवतः" इत्यादि। गवामयनादिषु सत्रेषु पूर्वे चतुर्भिरासिन्नवकैः चतुर्विंशत्यहानि भवन्ति तत एकेन पृष्ठा षड़हेन भामः पूर्यते, तत्र प्रथमाहः त्रिष्टुत्स्तोमसाध्यः अतोऽयं स्तोम पृष्ठ्य इत्युच्यते। किन्त्वेकषष्ट्यधिकविंशत-दिनसाध्येषु सत्रेषु—पञ्चविंशदिने, पञ्चपञ्चाशदिने, पञ्चाशीतिदिने, पञ्चदशाधिक-शततमे दिने, पञ्चचत्वारिंशदधिकशतदिने, जनमप्तत्यधिकशतदिने, नवत्यधिक शतदिने, एकादशाधिकद्विशतदिने, एकचत्वारिंशदधिकद्विशतदिने, एकसप्तत्य

द्वितीयखण्डे,

प्रथमर्चे—प्रथमा।

१ २ १ २ ३ १ १ २ १ २ १ २
अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये।

१ १२ ३ १ २
निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ १ * ॥

हे "अग्ने" अङ्गनादिगुणविशिष्टं! त्वम् "आयाहि" अस्मद् यज्ञं प्रत्यागच्छ। किमर्थम्? "वीतये" हविषां चरुपुरोडाशादीनां भक्षणाय। कीदृशः सन्? "गृणानः" अस्माभिः स्तूयमानः [व्यत्ययेन: कर्मणि कर्तृ-प्रत्ययः]। पुनश्च किमर्थम्? "हव्यदातये" देवेभ्यो हविःप्रदानाय। आगत्य च "होता" देवाना माह्वाता सन् "बर्हिषि" आस्तीर्णे दर्भे "निषत्सि" निषीद [सदेः छान्दसः श्लपो लुक्॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ २ १ २ २ १ १
तम्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।

२ १ २
बृहच्छोचायविष्ठ्य ॥ २ † ॥

धिकद्विशतदिने, एकाधिकत्रिशततमे च दिने विनियुज्यते—इति दिक्। विस्तरस्तु नाण्डे ३ चतुर्थप्रपाठकादिके।

* ऋ० आ० १, १, १, १ (१भा० ९५ पृ०) = ऋ० वे० ४, ५, २१, ४।

† य० वे० ३, १ = ऋ० वे० ४, ५, २३, १।

हे "अङ्गिरः" अङ्गनादिगुणयुक्त! अङ्गिरसः पुत्र वा अग्ने! "तं" पूर्वोक्तगुणं "त्वा" त्वां "समिद्भिः" समिन्धन-हेतुभिः दारुभिः "घृतेन" आज्येन च "वर्धयामसि" वर्धयामः। अतो हे "यविष्ठ्य" युवतमाग्ने! * "बृहत्" महत् अत्यन्तं "शोच" दीप्यस्व ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १ ३ १ २
सनःपृथुश्रवाय्यमच्छादेवविवाससि।

३ १ २ ३ १ २
बृहदग्नसुवीर्यम्॥ ३ † ॥ ४ ‡

हे "देव" द्योतमानाग्ने! स पूर्वोक्तगुणस्त्वं "पृथु" विस्तीर्ण "श्रवाय्यं" श्रवणीयं प्रशस्यं "बृहत्" महत् "सुवीर्य्यं" शोभन-वीर्योपेतं धनं "नः" अस्मान्¶ "अच्छ" § "विवाससि" अभि-गमय+। अत्र वाजसनेयकम्—"अच्छादेवविवाससीति तन्नो ग्निमयेत्येवैतदाहेति॥ ३ ॥ ४

---

* 'यविष्ठ्य. अतिशयेन बलवान्'—इति वि०।

† ऋ० वे० ४, ५, २३, २। ‡ इदमाग्नेय माज्यम्।

¶ 'नः अस्मभ्यम्'—इति वि०। § 'अच्छ आप्तुम्'—इति वि०।

+ 'विवाससि . . . दीप्तिं करोषि'—इति वि०।

द्वितीयर्चे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २र
आनोमित्रावरुणाघृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्।
२ ३ १ २
मध्वारजाꣳसिसुक्रतू॥ १ *॥

"सुक्रतू" शोभनकर्माणौ, हे "मित्रावरुणौ"! "नः" अस्माकम् "गव्यूतिं" गवां मार्गं गोनिवासस्थानं "घृतै." क्षरणसाधनैः पयोभिरुदकैः "आ उक्षतं" समन्तात् सिञ्चतम्। अस्मभ्यं दोग्ध्रीः गाः प्रयच्छत मित्यर्थः। किञ्च "मध्वा" मधुरेण सुरसेन "रजांसि" पारलौकिकानि अस्मदावासस्थानानि "सिञ्चतम्"॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ १ ३ ११ २र
उरुशꣳसानमोवृधामङ्गादत्तस्यराजथः।
३ २
द्राघिष्ठाभिःशुचिव्रता॥ २†॥

"शुचिव्रता" परिशुद्धकर्माणौ‡ हे मित्रावरुणौ! "उरुशंसा" उरुभिः बहुभिः¶ शंसनीयौ। यद्वात्र बहच्छंसः शब्दो ययोस्तौ।

---

* क० आ० ३, २, ३, ७ (१भा० ४५९ पृ०) = ऋ० वे० ३, ५, ११, ५।

† ऋ० वे० ३, ५, ११, ६।

‡ 'हे शुचिव्रतौ शुचिर्यस्या मर्थे क्रियमाणं कर्म भवति तौ शुचिव्रतौ सत्यव्रतौ —इति वि०।

¶ 'उरु'- इति बहुनामस्वाद्यं निघण्टुकम् ३, १।

"नमोह्वधा" नमसा हविर्लक्षणेनान्नेन स्तोत्रेण वा वर्धमानौ*। "द्राघिष्ठाभिः" अत्यन्तदीर्घस्तुतिलक्षणाभियुक्तौ युवां "दक्षस्य" दक्षते समर्थो भवत्यनेनेति दक्षं धनं बलं वा तस्य† "मह्ना" महत्वेन "राजथः" ईष्टे ‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २
गृणानाजमदग्निनायोनावृतस्यसीदतम्।

३ १ २२
पातꣳसोमवृतावृधा ॥ ३ ॥ ५ §

हे मित्रावरुणौ! "जमदग्निना" एतन्नामकेन महर्षिणा. यद्वा जमदग्निना प्रज्वलिताग्निना विश्वामित्रेण "गृणाना" स्तूयमानौ युवां "ऋतस्य" यज्ञस्य "योनौ" देवयजनाख्ये देशे "सीदतं" उपविशतं "ऋतावृधा" ऋतस्य कर्मफलस्य वर्द्धयितारौ युवां + "सोमं" "पातम्" अस्माभिरभिषुतम् सोमं पिबतम् ॥ ३ ॥ ५

* 'नमस्कारैर्वृद्धौ'—इति वि०।

† 'दक्षस्य ऋषेः अथवा दक्षो यजमान उच्यते तस्य यजमानस्य बलेन दीप्यमानेन —इति वि०। दक्ष इति बलनामसु वयोदशं नैघण्टुकम् २, ९।

‡ 'राजथः दीप्यथः'—इति वि०।

¶ ऋ० वे २, ४, ११, ७। § इदं मैत्रावरुण माज्यम्।

+ 'ऋतावृधौ यज्ञेन वर्द्धितौ'—इति वि०।

द्वतीये द्वचे—प्रथमा।

१ २ २१उ २१३ २ १ १२२
आयाहिसुषुमाहितइन्द्रसोमम्पिबाइमम्।
२उ २ १ २ ३ २ २
एदम्बर्हिःसदोमम ॥ १ * ॥

हे "इन्द्र"! त्वम् "आ याहि" अस्मद्यज्ञं प्रत्यागच्छ, वयं "ते" त्वदर्थं "सुषुमा हि" सोम मभिषुतवन्तः खलु तम् "इम्" अभिषुतं सोमं त्वं "पिब" त्वदर्थं "मम" यमिदं "बर्हिः" वेद्या मास्तीर्णं दर्भम् "आ सदः" आसीद अभि निषीद ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २३ २३ १२ ३ १ २
आत्वाब्रह्मयुजाहरीवहतामिन्द्रकेशिना।
२ ३१ ३
उपब्रह्माणिनःशृणु ॥ २ † ॥

हे "इन्द्र"! "ब्रह्मयुजा" ब्रह्मणा मन्त्रेण युज्यमानौ "केशिना" केशिनौ केशवन्तौ "हरी" हरणशीलौ वा अश्वौ "त्वा" त्वाम् "अवहताम्" अभि प्रापयताम्। त्वं चास्मद्यज्ञ मुपेत्य "नः" अस्माकं "ब्रह्माणि" स्तोत्राणि "शृणु" सम्यक् चित्ते धारय ॥ २ ॥

---

* ऋ० आ० १, २, ५, ७ (१ भा० ४१७ पृ०) = ऋ० वे० ६, १, २२, १।

† ऋ० वे० ६, १, २२, २।

अथ तृतीया।

२ १ २ ३ २ २ १ २ ३ २ २ ३ १ २
ब्रह्माणस्त्वायुजावयꣳसोमपामिन्द्रसोमिनः।

२ १ २
सुतावन्तोहवामहे ॥ ३ * ॥ ६ †

हे "इन्द्र" "ब्रह्माणः" ब्राह्मणा वयं त्वां "त्वायुजा" योग्येन स्तोत्रेण "हवामहे" आह्वयामहे। कथम्भूतम्? "सोमपां" सोमस्य पातारम्। ईदृशा वयं "सोमिनः" सोमयुक्ताः "सुतावन्तः" अभिषुतैः सोमैरुपेताः॥ "ब्रह्माणस्त्वायुजावयं"-"ब्रह्माणस्त्वावयं युजा"—इति पाठौ॥ ३॥ ६

चतुर्थ ऋचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ २ २ ३ २उ १ २
इन्द्राग्नीआगतꣳसुतङ्गीर्भिर्नभोवरेण्यम्।

३ १ २ २ ३ ३ २
अस्यपातन्धियेषिता ॥ १ ‡ ॥

इन्द्रश्चाग्निश्च "इन्द्राग्नी" ¶ देवौ § "सुतम्" अभिषवा-

---

* ऋ० वे० ६, १, २२, ३। † इद मैन्द्र माज्यम्।

‡ य० वे० ७, २१ = ऋ० व० ३, १, ११, १। ऋ० "विश्वामित्रो गाथिनः"—इति ऋषि-नै०। दे० 'इन्द्राग्नी ऐन्द्राग्नम्'—इति देव-नै०। छ० गायत्री। एवमेवाग्नेयोत्तरत्र द्वयोः।

¶ ऋ० भा० ३, २, ४, ९, = अत्र तु १, १, ७, १ = १, १, ७, २ = २, २, ८, १ = २, २, ८, २ = २, १, ९, १ = ३, २, १०, १—इति सप्तसु ऋक्षु श्रूयते 'इन्द्राग्नी'।

§ "अथास्य संज्ञविका देवाः—अग्निः सोमो वरुणः पूषा बृहस्पतिर्ब्रह्मणस्पतिः पर्वतः कुत्सो विष्णुर्वायुः"—इति निरु० दै० १, १०।

दिभिः संस्कारैः संस्कृतम् अतएव "वरेण्य" वरणीयं सम्भजनीय मिमं सोमं प्रति "गोभिः" अस्मदीयाभिर्वाग्भिराहुतौ सन्तौ "नभः" नभसः स्वर्गाख्यात् स्थानात् "आगतम्" आगच्छतम्। आगत्य च "धिया" अस्माभिः क्रियमाणेन कर्मणा "इषिता" इषितौ प्रेरितौ युवाम् "अस्य" इमं सोमं "पातं" पिबतं। यद्वा "धिया" अस्मदीयया बुद्ध्या इषितौ प्राप्तौ * अस्मद्भक्त्या प्रेरितौ युवा मिमं सोमं पिबतम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ १ २
इन्द्राग्नीजरितुःसचायज्ञोजिगातिचेतनः।

२ १ २ ३ २ ३ २
अयापातमिमꣳसुतम् ॥ २† ॥

हे "इन्द्राग्नी" "जरितु" स्तोतुः‡ "सचा" स्वर्गादिलक्षण-प्राप्तौ सहायभूतौ "यज्ञः" ज्योतिष्टोमादि-यज्ञ-साधनभूतश्चेतनः इन्द्रियाणां चेतयिता आप्यायनकारी सन्नसौ सोमः "जिगाति" युवा मभिगच्छति¶। "अया" अस्मदीयया स्वतिलक्षणया अनया वाचा आहुतौ सन्तौ युवां "सुतम्" अभिषवादि-संस्कारोपेतम् "इमं" "पातं" पिबतम् ॥ २ ॥

---

* "इषता इषु इच्छायाम् इच्छन्त्या"—इति वि०।

† ऋ० वे० ३, १, ११, २। ‡ 'जरितुः स्तोतुः ऊर्ध्वातुः'—इति वि०

¶ 'जिगाति गायति चेतनः स्तुत्योपमान मिदं चेतन इव'—इति वि०।

अथ द्वितीया।

१ २ २ १ १ २ १ १ २ १ १ २ १ २
इन्द्रमग्निंकविच्छदायज्ञस्यजूत्यावृणे।
१ ० २८ २ १ २
तासोमस्येद्वृत्रहत्यमताम् ॥ २ * ॥ ६ †

"यज्ञस्य" यज्ञसाधनभूतस्य सोमस्य "जूत्या" जूतिः प्रेरणं सोमस्तावद्यजमानं प्रेरयति। साधन मुपलभ्य तत् साध्ये क्रतौ यजमानः प्रवर्त्ततइति हि तस्य प्रेरकत्वम्। तया प्रेरणरूपतया जूत्या ‡ प्रेरितोऽहं स्तोता "कविच्छदा" कवीनां स्तोतृणा मुचितफल-प्रदानेनोपच्छन्दको इन्द्र मग्निं च युवां "वृणे" सम्भजेत आगतौ च तावित्द्राग्नी "इह" अस्मदीये अस्मिन् कर्मणि "सोमस्य" सोमेन सोमयागेन "वृत्रहतां" वृत्रहत्यताम् ॥ २ ॥ ७

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चिकस्य प्रथमस्याध्यायस्य
द्वितीयः खण्डः ¶ ॥ २ ॥

● ऋ० वे० ३, १, ११, २।

† इद मैन्द्राग्न माज्यम्। 'प्रातः सवनं समाप्तम्'—इति वि०।

‡ 'जूत्या अभिप्रेरया निमित्तभूतया'—इति वि०।

¶ "तान्येतानि प्रातःसवने गायत्रसाम्ना गीयमानानि चत्वार्यार्ष्यस्तोत्राणीत्युक्तानि"—इति मी० द० जै० अ० ९ अध्या० ४ पा० ३ अधि०। 'यद्राजिमीयुस्तद्राज्याना माज्यत्वम्'—इति चैतन्निर्वचनम् ता० ब्रा० ७, २। एवाज्यस्तोत्रेषु पञ्चदशनामकः स्तोमो भवति; तद्विधायकं ब्राह्मणं ताण्ड्यम्, 'पञ्चभ्यो विष्टुरोति'—इत्यादि (२, ४-

तृतीयखण्डस्य,

प्रथमर्चे—प्रथमा।

३ १ २ ३ ११ २र ३ ११ २र
उच्चातेजातमन्धसोदिविसन्भूम्याददे।
३१र ३ २ ३ १ २
उग्रꣳशर्ममहिश्रवः॥ १ *॥

हे सोम! "ते" तव सम्बन्धिनः "अन्धसः" रसस्य "उच्चा" उपरि "जातं" जन्म अपिच "दिवि" द्युलोके "सत्" तव सम्बन्धि "उग्रम्" उद्गूर्णं "शर्म" सुखं "महि" महत्। "श्रवः" अन्नं "भूमि" भूमिष्ठैः यजमानैः "आ ददे" आदीयते॥ दिविसद्"-'दिविषद्"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सनद्इन्द्रायसुन्वेवरुणायमरुद्भ्यः।

५-६) तत्रैवैतद् विष्टुतित्रयञ्च परिस्फुटम्। सोमोऽयं द्वितीय पृष्ठ्य इत्यभिधीयते किञ्च सप्तेषु षड्विंशतितमे दिने, षट्पञ्चाशत्तमे दिने, षडशीतिदिने, षोडशाधिकशततदिने, षट्चत्वारिंशदधिकशततदिने, सप्तत्यधिकशततदिने, ननवत्यधिकशततदिने, दशाधिकद्विशतदिने, चत्वारिंशदधिकशततदिने, सप्तत्यधिकद्विशतदिने, त्रिंशत्तमे च दिने विनियुज्यते। विस्तरस्तु नाष्ट्र-चतुर्थप्रपाठकादिके।

* ऋ० आ० ५, २, ४, १ (२ भा० २ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, १९, ५। ऋ० 'वसिष्ठीयुः आङ्गिरसः'—इति ऋषिमे०। दे० 'पवमानः सोमः'—इति देव-मे०। छ० गायत्री। एवमेवाग्नेयस्य द्वयोः॥ इदानीं माध्यन्दिनः पवमानः। गायत्री बृहती चिष्टुबित्ते छन्दांसि। पुष्कलोऽग्निर्वामदेव्यवोऽग्निरधरिन्द्रीयुषाजीवउशनाःकाव्यः इति आर्षाणि। सोमः स्रोवदेवता साम-देवता विस्तरमत्राग्नेयवत्'—इति वि०।

२ ११ १८
वरिवोवित्परिस्रव ॥ २ * ॥

हे सोम "वरिवोवित्" धनस्य लम्भकः पवमानः † "नः" अस्माकं ‡ "यज्ञ्यवे" यष्टव्याय ¶ "इन्द्राय" "वरुणाय" च "मरुद्भ्यः" च "परि स्रव" धारया क्षर § ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३१ २८ ३२उ ३ १ ३१ २
एनाविश्वान्यर्यआद्युम्नानिमानुषाणाम्।

१ २
सिषासन्तोवनामहे ॥ ३ ** ॥ ८ ††

"मानुषाणां" मनुष्याणां लब्धव्यानि "एना" एनानि "विश्वा" विश्वानि सर्वाणि "द्युम्नानि" यज्ञसाधनानि धनानि‡‡ हे सोम! त्वत्प्रसादात् "आ" आभिमुख्येन "अर्य्यः" ¶¶ अभि-

---

* ऋ० आ० आर० १, ७ (२ भा० २५४ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, २०, २।

† 'वरिवः वरिष्ठः। वित् भक्षणीयः'—इति वि०।

‡ 'नः अस्मभ्यम्'—इति वि०।

¶ 'यज्ञ्यवे यजमानार्थं—इति वि०।

§ 'परिस्रव परि समन्तात् द्रप्सापविद्वात् स्रव'—इति वि०।

** ऋ० आ० आर० १, ८ (२ भा० २५६ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, २०, १।

†† इदं माध्यन्दिनपवमान माद्यम्।

‡‡ 'द्युम्नानि अन्नानि'—इति वि०।

¶¶ 'अर्यः यजमानः'—इति वि०।

गच्छन्तः वयं "सिषासन्तः" सम्भक्तं मिच्छन्तश्च * "वनामहे" त्वां सम्भजामहे † ॥ ३ ॥ ८

॥ आमहीयवम् ॥ उच्चाता३इजातमन्धसाः। दिवा इसाऽ१इ२। मिया२३ददाइ। उग्रःशर्मा। महा२३ इस्रवाउ। वा३ ॥(१) सनआ३इन्द्रायय्यवाइ। वरुणा ऽ१या२। मरु२३द्भिया:। वरिवोवाइत्। परा२३इस्र वाउ। वा३ ॥(२) एनावा३इस्थानिमर्यमा। द्युम्नाऽ१इ मा२। नुषा२३णाम्। सिषासन्ताः। वना२३महाउ। वा३। स्तौषे२३४५(३) ॥ १ ॥ [१]

॥ क्षुल्लकवैष्टम्भम् ॥ उच्चाऽ५ते। जा३तमन्धसाः। दायिवीसद्भू। मियादा१दे२३। होवा३हायि। उग्राःऽ

---

* 'सिषासन्तः साधयन्तः'—इति वि०।

† 'वनामहे याचयामः'—इति वि०।

‡ क० गा० १म० १अ० १सा०।

२ १२ १ १ ३ ५र
प्रा१र्म्मा२३। ह्वोवा३ह्वायि। मह्वि। आरवा२३४औ

१ २ ४ ३ ४ २ ३ ५ १ २र
ह्वोवा॥१) सनाऽ५इ। द्रा३ययज्यवायि। वारुणाय। म

१ २ १ २ २ १ २
रुद्भाया२३:। ह्वोवा३ह्वायि। वरायिवो१वी२३त्। ।

१ २ २ १ २ ५र र ४र ३
ह्वोवा३ह्वायि। परि। स्रारवा२३४औह्वोवा॥(२) एनाऽ५

४ २ ३ ५ १ र २ र १ २
वि। स्वा३निर्म्मर्य्यआ। द्यून्नानिमा। नूषा१णां२३म्।

१ २ २ १ २ १ २ २ १र
ह्वोवा३ह्वायि। सिषामा१न्ता२३:। ह्वोवा३ह्वायि। वना।

३ ५र र ३ ५
मारह्वा२३४औह्वोवा। दी२३४श्राः३)॥ १३ *॥ [२]

१ २ १ २ १
॥ आजिगम॥ उच्चातेजा। तमान्धासाः। दि

२र १ २ २ १ २ १
विसङ्। माया१दा२३दायि। उग्राश्शार्म्मा। मह्यिश्रा

२ १ २ १ २ १ २र
२३वा३४३: ॥(१) सनाआयिन्द्रा। ययाज्यावायि। वरुणा

१ ७ २ १ २ १ २
य। मारुह्वा२३याः। वरायिवोवीत्। परिस्रा२३वा३४

१र २ १ २ १ र २ र १
३॥(२) एनावायिस्वा। निआर्य्याआ। द्युम्नानिमा। नू

---

* ऋ० गा० २प्र० १अ० १२सा०।

२ १ २ १२ २
षा२३ष्ठाम्। सिषासान्ताः। वनामा२३ह्वा३४३यि।

१
ओ२३४५ई। डा (३) ॥ ८ * ॥ [३]

१ २२ २ २
॥ आभीकम् ॥ ऊ२३४ग्नातेजा५। तमौहोन्धा

१ २१ २ २ १ ५ १
साः। दिविसद्भूमिया१दा३दे। उग्रंग्रा२३४र्मा। मा

६ २ २ ५ १
ह्वा३उवा३४३। आ३४५वोऽहायि ॥(१) सा२३४नइन्द्रा५।

२ ४ ५ १ २ २ २ ३
ययौहोज्यावायि। वरूणायमरू१ह्मा३याः। वरिवो२३४

५ १ ६ २ २ ५ १
वीत्। पारा४उवा३४३। स्वा३४५वोऽहायि ॥(२) आ२३४

२ २ ४ ५ १ २ २ १२ २
यिनाविश्वा५। नियौहोर्य्यामा। द्युम्नानिमानू१षा३णा

२ ३ ५ १ ६ २ १
म्। सिषासा२३४न्ताः। वानाउवा३४२। मा३४५च्छो

५
ऽहायि(३) ॥ १० † ॥ [४]

२ १२ ५ २ १ २ २
॥ गायत्रीवैरूपम् ॥ उग्नाते२३४जा। तमान्धा३साः।

१ २ ५ १ २ १
दिवा२यिसा२३४ग्नू। मायाऽदादा२यि। उग्रा२३म्।

---

* ऋ० गा० ६प्र० १ख० ९सा०।

† ऋ० गा० ६प्र० १ख० १०सा०।

२ ५२ २ २ १ २ २१ १ १ १ २ १
यज्ञा३४ओहोवा। मद्भिरवा२३४५ः ॥(१) सनाषा२३४यि

१ २१ २ २ १ १७
न्द्रा। ययाज्या३वा३यि। वरू२णा२३४या। मारुद्भा

१ २ ५२ २ २ ११ २११
या२ः। वरा२३यि। वोवा३४ओहोवा। परिस्रवा२३

११ १२१२ ५ २१ २ २ १ ..
४५ ॥(२) एनावा२३४यिश्वा। निषार्य्या३आ३। द्युम्ना२

३ ५ १ २ १ २ २
ना२३४यिमा। मूषा१णा२म्। सिषा२३। सक्ता३४

५२ २ २१२३ १ १ १ १
ओहोवा। वनामहो२३४५यि(३) ॥ १२ * ॥ [५]

२ २ २ २
॥ सत्रासाहीयम् ॥ उद्धा३४। तेजातमन्धसः।

५ ५ १ २ २ १ १ १
ओ३ह्वा। दिविसद्भ्मियादा२दायि। ऊ२ग्याम्। श्रा

२ १ ऽ २ २ ३२ २ १ ५ ५
२३र्म्मा। मद्दौ३द्धो। वाद्धा३४३यि। श्रा२३४वो३ह्धा

२ २ २ २ ५ ५ १ २
यि ॥(१) सना३४ः। इन्द्रायय्ज्यवे। ओ३ह्वा। वरुणाय

१ १ २ १ ऽ २२
मरुद्भा२याः। वा२रायि। वो२३वीत्। परौ३द्धो।

२२ २ १ ५ ५ २२१ २
वाद्धा३४३यि। स्रा२३४वो३ह्धायि ॥(२) एना३४। विश्वान्य

● ऊ० गा० ७प्र० १अ० १२मा०।

र ५ ५ १ र र १ १
र्य्यआ। ओ३वा। द्युम्नानिमानुषा२णाम्। सा२यिषा।

२ १ ऽ २र २र१ १ ५
सा२३न्ताः। वनौ३ह्वो। वाहा३४५यि। मा२३४ह्वो३

५
ह्वायि(३) ॥ १२ * ॥ [६]

२ र र र २ ४ ३
॥ स्वारसौपर्णम्॥ उच्चातेजातमन्धाइसाः। दिवि

४र ५र १ ३ ५ १ २ २ १
सद्भूमिया। ह्वम्। दा२३४दायि। ऊग्या३उवा। शर्म।

२ १ ५ ४ ५ २ २ २
मह्वो२३४वा। आ५वोइ३ह्वायि ॥(१) सनद्द्रायययज्याइवा

३ ४ ५र र १ ३ ५ १ र
यि। वरूणायमरू। ऊम्। दभा२३४याः। वाराइउ

र र १ २ १ ५ ४ ५ ५रर
वा। वोवित्। परो२३४वा। आ५वोइ३ह्वायि ॥(२) एना

र २ ४ ३र ४ ५र र १ ३ ५
विश्वान्यर्य्याइआ। द्युम्नानिमानू। ऊम्। षा२३४णाम्।

१ २ २ १र २ १ ५ ४ ५
सायिषाइउवा। सन्ताः। वनो२३४वा। मा५ह्वोइ३ह्वा

यि(३) ॥ १० * ॥ [७]

२ १ र १र २ १ २ १
॥ शाक्करवर्णम्॥ उच्चा। तेजातमन्धसाः। दिवि

---

* ऋ० गा० ८प्र० २अ० १२सा०।

† ऋ० गा० १०प्र० १अ० १०सा०।

२ १२ २ ५ २१
सत। भूमिया२। ददा३१उवा२३। ऊ३४पा। उग्र

२ १ २ १ २ १२
ँशा२३र्मा। महिश्रवा३१उवा२३ ॥(१) साना:। इन्द्राय

२१ २१२ १ १ २
यज्यवायि। वरुणा। यमह२। दृभिया३१उवा२३।

२ ५ २१ २ १ २ १०
ऊ३४पा। वरिवो२३वीत्। परिस्रवा३१उवा२३ ॥(२) आ

२ १२ २१ २ १२ २ १२ १२ २
यिना। विश्वान्यर्यआ। द्युम्नानि। मानु२। षाणा३

१ २ ५ २१२ २ १२ २
माउवा२३। ऊ३४पा। सिषासा२३न्ता:। वनामहा३१

२ ५
उवा२३। ऊ३२३४पा३ ॥ ११ * ॥ [८]

२ २२ १ २ १ २ १
॥ जरावोधीयम् ॥ उच्चातेजोवा। तामन्धसा:।

२ १ २ २ १ २
दिवायिसा२३द्भू। मियादादायि। उग्राँशा१र्मा२३

४ ५ ३ २ २ १ २ १
मा। हि। श्रवो३४५ई। डा ॥(१) सनइन्द्रोवा। याय

२१ २१ २ १ २
ज्यवायि। वरुणा२३या। मरुद्भाया:। वरायिवो१वी

४ ५ ३ २ २२ २ १ २ १
२३त्या। रि। स्रवो३४५ई। डा ॥(२) एनाविश्वोवा। ना

---

* ऊ० गा० १०प्र० १ख० ११सा०।

२ १ २ १ २ १ २
अर्य्यआ। द्युम्नाना२३यिमा। नुषाणाम्। सिषासा

४ ५र ३ २
न्ता२३वा। ना। मही३४५ई। डा(३) ॥ १४* ॥ [९]

२र र र र
॥ ऋषभः पावमानम् ॥ ह्वाहाउ ह्वातेजा। ह्वा३।

२ १ २ ५ २१ र २ २
ह्वा३यि। तामार२न्धा२३४माः। दिविसद्भूमिया१दा३

२ ३ ५ १ २ ४ ५ ४
दे। उग्रंशा२३४र्म्मा। ओमो३। मदोवा। आ५

५ २र र २ १
वोऽहायि ॥(१) ह्वाहाउसनइन्द्रा। हा३। ह्वा३यि। या

३ ५ १ र २ २ २ ३
याज्या२३४वायि। वरुणायमरु१द्भा३याः। वरिवो

५ १ २ ४ ५ ४ ५ २र
२३४वीत्। ओमो३। परोवा। सा५वोऽहायि ॥(२)ह्वा

र र र २ १ ३ ५
ह्वावेनाविश्वा। हा३। ह्वा३यि। नाआर२र्य्या२३४आ।

१ र र २ २ २ २ ३ ५ १ २
द्युम्नानिमानू१षा३णाम्। सिषासा२३४न्ताः। ओमो३।

४ ५ ४ ५
वनोवा। मा५ह्वोऽहायि(३) ॥ १† ॥ [१०]

---

* ऋ० मा० ११प्र० १अ० १४सा०।

† ऋ० मा० १२प्र० १अ० १सा०।

॥ गौषूक्तम् ॥ उच्चातेजातमौ। ह्वोहोवाह्वायि।

धसाः। दिविसद्भूमियौ२। ऊवायि। ऊवा२यि।

दादा२यि। उग्रꣳशर्ममह्यौ२। ऊवायि। ऊवा२

यि। आवा२३:। ह्वो२वा२३४औह्वोवा ॥(१) सनइन्द्राय

यौ। ह्वोहोवाह्वायि। ज्यवायि। वरुणायमरौ२।

ऊवायि। ऊवा२यि। द्भाया२:। वरिवोवित्यरौ२।

ऊवाह्वि। ऊवा२यि। स्रावा२३। ह्वो२वा२३४औह्वो

वा ॥(२) एनाविश्वानियौ। ह्वोहोवाह्वा। र्यआ। द्युम्ना

निमानुषौ२। ऊवायि। ह्वुवा२यि। षाणा२म्।

सिषासन्तोवनौ२। ह्वुवायि। ह्वुवा२यि। माह्वा२३यि।

ह्वो२वा२३४औह्वोवा। अग्निराह्वुता२३४५:(३) ॥ २*॥ [११]

॥ स्वारसैन्धुक्षितम् ॥ उच्चातेजातमन्धासाः। दा

---

* ऋ० गा० १२प्र० १ऋ० २सा०।

२ १ २ ४ २ १
यिविसद्भू। मियादादौ। ह्वोवाऽहायि। ऊग्रा २७

१ २ १ ५ ४ ५ २ ४
शार्म्मा२३। महो२३४वा। आपुवोऽहायि ॥(१) सनइन्द्रा

१ २ १ २४ १ २४ ४ १
ययज्यावायि। वारुणाय। मरुद्भायौ। होवाऽहा

१ १ २१ ५ ४ ५
यि। वारा२यिवोवी२३त्। परो२३४वा। स्वापुवोऽहा

२४४ ४ १ २ १ ४ २ ४ १ २४
यि ॥(२) एनाविश्वानिअर्य्याआ। द्यून्नानिमा। नूषाणौ।

४ २ १ १ २१ ५ ४
ह्वोवाऽहायि। सायिषा२सान्ता२३:। वनो२३४वा। मा

५
पुह्वोऽहायि(३) ॥ ७ * ॥ [१२]

२ ४४ १ २ १ २ ३
॥ ऐडसौपर्णम् ॥ उच्चातेजोवा। तामन्सा२३४

५ १२ १ ७ ३ ३
सा:। दिवायिसद्भू। मिया२दा२३४दायि। ऊ२

१ २ १ २ १ २ ४ ५ २
ग्राम्। शा२३र्म्मा। माहिश्ववा। औ३होवा ॥(१)सन

१ ५ १२ ३ ५ २१ २४ १ ७ ३
इन्द्रोवा। यायज्या२३४वायि। वरुणाया। मरु२द्भा

५ १ २ १ २ १ २
२३४या:। वा२रायि। वो२३वीत्। पारिस्रवा। औ

---

* ऊ० गा० १प्र० २अ० ७सा०।

४ ५ २ ३ १ २ १ २ ३ ५ २ १
३होवा ॥(२) एनाविश्वोवा । नाअर्य्या२३४आ । द्युम्ना

२ १ २ ५ १ २
निमा । नू२षा२३४णाम् । सा२यिषा । सा२३न्ताः ।

१ २३ १ २ ४ ५ ४
वानामहा । औ३होवा । होप५ई । डा(३) ॥ १७* ॥ [१३]

२३ १३ १ २
॥ सुरूपोत्तरम् ॥ उच्चातेजौहो२ । इया । तम

१ १ १ २३ १
न्वासा२: । दिविसद्भौहो२ । इया । मियादंदा२

१ १ २ १ २
यि । उग्र॰ग्रम्मौंहो२ । इया । मह्यिआ२३वा३४३: ॥(१)

२ १ १ २ १ १३
मनइन्द्रौहो२ । इया । ययज्यावा२यि । वरुणायौहो

१ २ १ १३ १
२ । इया । मरुद्भाया२: । वरिवोवौहो२ । इया ।

२१ २ २३१ १ १ २ १
परिस्रा२३वा३४३ ॥(२) एनाविश्वौहो२ । इया । निऋर्या

३ १ १ २१
आ२ । द्युम्नानिमौहो२ । इया । नुषाणा२म् । सि

१ १ १ २१३ २ १
षासन्तौहो२ । इया । वनामा२३ह्वा३४३यि । ओ२३

४५ई । डा (३) ॥ ३ ॥ [१४]

---

* ऋ० मा० १३ म० १ ख० १७ मा० ।

। ऋ० मा० १४ म० १ ख० ३ मा० ।

॥ अदारदत् ॥ हाऊवातेजा। तमा२न्धासी२।
दिविसद्भूमिया२दादा२यि। उग्रा२ष्णार्मा२। मच्छि।
आ२वा२३४औहोवा ॥(१) हाउसनइन्द्रा। यया२ज्यावा।
२यि। वरुणायमरु२द्भाया२:। वरा२यिवोवी२त्।
परि। स्रा२वा२३४औहोवा ॥(२) हावेनाविश्वा। निआ
२र्य्याआ२। द्युम्नानिमानू२षाणा२म्। सिषा२सा
न्ता२:। वना। मा२हा२३४औहोवा। अस्मभ्यङ्गातु
वित्तमा२३४५म(३) ॥ ४ * ॥ [१५]

॥ इडानाऽसंस्कारः ॥ औहोयिद्वा३होयि। उ
ऊवातेजा३ता३मन्धसः। दिविमद्भूमी३यादृदायि।
उग्राऽष्णा२३४र्म्मा। मह्यिश्रवः। इडा२३ ॥(१) सनइन्द्रा३
याऽयज्यवायि। वरुणाया३मा३रुद्भियः। वरायिवो२३

* ऊ० गा० १५प्र० १ऋ० ४सा०।

४वीत्। परिस्रव। इडा२३॥(२) एनाविश्वा३नी३अर्य्यआ।
द्यु३म्नानिमा३नू३षाणाम्। औद्दोयिद्दुवा३होयि। सिषा
सा२३४न्ताः। वनामद्दे। इडा२३भा३। एद्दीडा।
द्दोऽई। डा३)॥ ५ *॥ [१६]

॥ आग्नेयभार्गवम्॥ उद्घाते। जातमन्धा३माः।
दायिविसद्भू३। मायाँ२दा२३४दायि। उग्राँ३ग्मा१
र्मा२। मद्दा३यि। आ२३४वोऽद्दायि॥(१) सनद्द। द्रा
ययज्या३वायि। वारुणाया३। माद्द२द्भा२३४याः।
वरायिवो१वी२त्। परा३यि। स्रा२३४वोऽद्दायि॥(२) ए
नाविश्वानि। अर्य्या३आ। द्यूम्नानी३। मानू२षा२३
४णाम्। सिषासा१न्ता२ः। वना३। मा२३४द्दोऽद्दा
यि(३)॥ ११ †॥ [१७]

* ऋ० मा० १४प्र० १अ० ५मा०।

† ऋ० मा० १८प्र० १अ० ११मा०

॥ सौमित्रम् ॥ उच्चातेजातमन्धसाइए। दिविस
२२ २ १ २ १
द्भूमि। आ२१२३। ददा३४३यि। ऊ२३ग्राम्। अ
१ ४ ५ ४ ५ २ २
र्मा२ओ२३। महोवा। आप्नुवोऽहायि ॥(१) सनइन्द्राय
२ १ २२ २
यज्यवा३ए। वरुणायम। रु२१२३। द्भियाइ४३:।
१ २ २ १ ४ ५ ४ ५
वा२३रायि। वोवा२ओ२३। परोवा। स्रापुवोऽहा
२२ २ २ १२ १ २२
यि ॥(२) एनाविश्वान्यर्य्यआइए। द्युम्नानिमा। नू२१२३।
२ २ १ २ १ ४
षाणाइ४३म्। सा२३यिषा। सन्ता२ओ२३। वनो
५ ४ ५
वा। मापुच्चोऽहायि(३) ॥ ६ * ॥ [१८]

॥ ऐटतम् ॥ उच्चा। एउच्चा। तेजातम्। आ
१ २ ५२ २ ३ ४ २ ३
३। जा२मा२३४ओच्चोवा। धा२३४साः। दिवायिसा
५ ३२ १ ३ ५२ २ ३ ५
२३४द्भू। मियाइ। मा२या२३४ओच्चोवा। दा२३४दे।
२ २ ५ ३२ १ ३ ५२ २
उग्राऽशा२३४र्म्मा। मच्चाइयि। मा२च्चा२४४ओच्चोवा।

---

* ऋ० गा० २०प्र० १च० ६सा०।

२ ५ १२ १ २ २
आ२३४वाः ॥(१) सनः। एमानाः। इन्द्राय। या। ३।

१ २ ५२२ २ ५ २ ३ ५
यार्व्या२३४ओहोवा। ज्या२३४वे। वरुणा२३४या।

३२ १ ३ ५२२ ३ ५ २ ३
मरु३। मा२रु२३४ओहोवा। दृभी२३४याः। वरायिवो

५ ३२ १ ३ ५२२ ३ ५
२३४वीत्। परा३यि। पा२रा२३४ओहोवा। स्वा२३४वा॥(२)

१२ १ २ २ १ ३ ५२२
एना। एम्यायिना। विश्वानि। आ३। ना२आ२३४ओहो

३ ५ २ ३ ५ ३२ २ १ २
वा। र्या२३४आ। द्यून्ना२३४नी। मानू३। मा२नू२३४

५२२ ३ ५ २ ३ ५ ३२
ओहोवा। षा२३४णाम्। सिषासा२३४न्ताः। वना३।

१ २ ५२२ ३ ५
वा२ना२३४ओहोवा। मा२३४हे(३)॥ ७ *॥ [१९]

१२२२ ५ २
॥ धुरासाकमश्वम्॥ उस्रातेजा३। हौ३हो३१।

२ ५ २ २ ५ २
तमन्धसा३ः। हौ३हो३१यि। दिविसद्भू३। हौ३हो

२२ ५२ २
३१यि। मियाददा३यि। हौ३हो३१यि। उग्रंशर्म्मा

५ २ २ ५ २
३। हौ३हो३१यि। मद्दिश्रवा३ः। हौ३हो३१२३४५ई।

---

* ऊ० गा० २०प्र० १अ० ७सा०।

डा ॥(१) मनइन्द्राइ३। ह्वौ३हो३१। ययज्यवाइयिं। ह्वौ ३ह्वो३१यि। वरुणायाइ३। ह्वौ३ह्वो३१यि। मरुद्भियाइ३ः। ह्वौ३ह्वो३१यि। वरिवोवीइत्। ह्वौ३ह्वो३१यि। प रिस्रवाइ३। ह्वौ३ह्वो३१२३४५ई। डा ॥(२) एनाविश्वाइ३। ह्वौ३ह्वौ३१। निऋर्त्याआ३। ह्वौ३ह्वो३१यि। द्युम्नानि मा३। ह्वौ३ह्वो३१यि। नुपाणाइम। ह्वौ३ह्वो३१यि। मिषामन्ताइः। ह्वौ३ह्वो३१यि। वनामह्वाइ३। ह्वौ३ह्वो ३१२३४५ई। डा(३) ॥ ८ * ॥ [२०]

॥ विलम्बसौपर्णम् ॥ उच्चातेजातमन्धसः। ईयइयाह्वायि। दूयाह्वायि। दिविसदभूमिया। ह्वाइह्वाइयि। दाइ३४ ऊग्याइउवाइ३। ग्राइर्म्माइ३४औहोवा। मह्वि श्रवाइ३४५ः ॥(१) सनइन्द्रायययज्यवे। ईयइयाह्वायि। व

* ऊ० गा० १०प्र० १ ख० ८सा०।

४२५२ २ १ १ १ ४ १ १
रुणायमरु। ह्वा३हा३यि। दंभा२३४या.। वारा३उ

१ १ ३ ५२२ २ ३ १११११ २२१२
वा३। वो२वा२३४औह्वोवा। परिस्रवा२३४५॥(२)एन।

२२१ १२ १२१ २ ४ ३२ ४२ ५२ २
विश्वान्यर्य्यमा। ईंयइयाह्वाहि। द्युम्नानिमानू। ह्वा३

२ १ ५ १ २ २ १ ३
ह्वा३यि। षा२३४णाम्। सायिषा३उवा३। सा२ल्ला

५२२ २ २ ३ १ १११२
२३४औह्वोवा। वनामहा२३४५यि(३)॥ ८ * ॥ [२१]

२२ १ २ १ ३२
॥ मार्गीयवाद्यम्॥ उच्चौह्वोवा। तेजा२। तमा

२ ५ १ २ २ १ २ १
न्धा२३४सा:। दिविसद्भू। मियादा१दा२यि। उग्र

२ २ ३ ५ १ ३
म्। ह्वा। औ३ह्वोयि। ग्रा२३४र्म्मा। मा२ह्वा२३४

५२२ २ १ १११ २ २ १ ५ १
औह्वोवा। ए३। अवा२३४५:॥(१) स्तनौह्वोवा। आयि

३ २ ३ ५ १ २२ १ २
न्द्रा२। ययाज्या२३४वायि। वरुणाय। मरुद्भा१

१२ २ २ ३ ५ १
या२:। वरा। ह्वा। औ३ह्वोयि। वो२३४वीत्। पा

---

* ऋ० गा० २०प्र० १अ० ८मा०।

२रा२३४औहोवा। ए३। स्ववा२३४५॥(२) एनौहोवा।

वायिश्वा२। निआर्य्या२३४आ। द्युम्नानिमा। नूषा१

णा२म्। सिषा। हा। औ३ह्वोयि। सा२३४न्ताः।

वा२ना२३४औहोवा। ए३। मह्वा२३४५यि(३)॥ १४*॥[२२]

॥ ऐडकौत्सम ॥ सनाह्वोन्द्रा२३। ययज्यवईया।

वरुणायमरुद्भियः। वारुणाय। मरुद्भा२३याः। वा

रा३यिह्वायि। वोवो३ह्वायि। परिस्वा२३वा३४३। ओ

२३४५इं। डा(२)॥ ४†॥ [२३]

॥ सौमित्रम्॥ एनाविश्वान्यर्य्यआ३ए। द्युम्नानि

मा। नू२१२३। षाणा३४३म्। सा२३यिषा। सन्ता

२ओ२३। वनोवा। माप्रुहोईह्वायि(३)॥ १८‡॥[२४] ८

---

* ऊ० गा० २०प्र० २अ० १४सा०।

† ऊ० गा० २२प्र० १अ० ४सा०। द्वितीयस्या ऋचोगानमेतत्।

‡ ऊ० गा० १६प्र० १अ० १८सा०। तृतीयस्या ऋचोगानमेतत्।

द्वितीय-सूक्तरूपे प्रगाथे* प्रथमा—

१ १ २ २१ २२ १ २२
पुनानःसोमधारयापोवसानोअर्षसि।

१ २२१ १ २२१२ २१ २ २१ २२१ २
पारत्नधायोनिम्रतस्यसीदस्युत्सोदेवोहिरण्ययः॥ १†॥

हे सोम। "पुनानः" पूयमानस्त्वम् "अपः" उदकानि वसतीवर्ष्याख्यानि "वसानः" आच्छादयन् "धारया" "अर्षसि" पवित्रं गच्छसि, ततो "रत्नधा" रत्नानां रमणीयानान्धनानां दाता च "ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "योनिं" स्थानम् "आसीदसि"। कीदृशस्त्वम्? "उत्सः" प्रस्यन्दनशीलः "देवः" द्योतमानः, "हिरण्ययः" हिरण्मयः सुवर्णोत्पत्तिस्थान मित्यर्थः॥

"उत्सोदेवः"—"उत्सोदेव"—इति पाठो॥ १॥

---

* "प्रकर्षेण पठनं यत्र स प्रगाथः। प्रकर्षो नाम आम्नाता दृक्पादा दाधिक्यम्" —इति सो० द० ख० ९, २, ६ अधि० १वर्णके माधवव्याख्यायाम्। एष च प्रगाथः—पादाभ्यास-पुरःसर मगम्भरसम्पादनेनोपजायते। अत्र च "पुनःपदा"—इति श्रौतोक्ति लिंङ्गम्। तथा च श्रूयते ताण्डे तृतीये —"एषा वै प्रतिष्ठिता बृहती या पुनः पदा तद् यत् पदं पुनरारभते तस्माद् वत्सो मातर मभिविक्रोशति"—इति। अस्यार्थः—या बृहती पुनः पदा भवति, सैषा प्रतिष्ठिता स्थिरा भवति; पदं चतुर्थः पादः सोऽयमम्भर-सम्पादनाय पुनः पठ्यते, ततः सा बृहती पुनः पदा; सेय मृङ्गाना, तस्याः पादो वत्सः; तथा सति यस्मादेव चतुर्थं पाद मृङ्गाना पुनरारभते तस्माद् वत्सो मातर मभि वीक्ष्य क्रि मिति शब्दं करोतीति।

† ऋ० आ० ९,१,३,१ (२भा० ७० पृ०)=ऋ० वे० ७, ४, १२, ४। ऋ० बृहती। दे० ऋ० पूर्ववत्।

षष्ठ द्वितीया।

२ १८ १८ ३ १८ १८ ३ २ १ २ २ २ १ २
दुहानऊधर्दिव्यम्मधुप्रियम्प्रत्नꣳसधस्थमासदत्।

२ २ १ ३ १ २ ३ १८ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आपृच्छ्यन्धरुणोवाज्यर्षसिनृभिर्धौतोविचक्षणः॥ २*॥ ८†

"मधु" मदकरं ‡ "प्रियं" प्रीणनकारि ¶ "दिव्यं" दिवि-भवम् "ऊधः" सोमवल्ली-लक्षणं "दुहानः" पवमानः § सोमो-देवः "प्रत्नं" पुरातनं "सधस्थं" सह तिष्ठत्यत्रेति सधस्थं स्थान मन्तरिक्षम् ‖ "आसदत्" आसीदति [सदेर्लुङि रूपं] तदनन्तरम् "आपृच्छ्य" कर्मणा प्रष्टव्यं "धरुणं" कर्मणो धारयितारं यजमानं "वाजी" अन्नवान्** सन् हे सोम त्वम् "अर्षसि" तस्मै अन्नं दातु मतिगच्छसि। कीदृशः? नृभिः कर्मनेतृभिर्ऋत्विग्भिः "धौतः" अदाभ्यग्रहे परिशोधितः

---

* ऋ० वे० ७, ५, १२, ५। † इदं माध्यन्दिनपवमानं द्वितीयम्।

‡ 'मधु स्वादु सोमाख्यम्'—इति वि०।

¶ 'प्रियं देवमनुष्याणाम्'—इति वि०।

§ 'दुहानः दुह्यमानः। ऊधः ऊधसः सकाशात् दशापवित्ररूपात्। अथवा ऊधउदकं यत्र स्रियते सोमस्य सकाशात् तद् दुह्यते'—इति वि०।

‖ 'सधस्थं स्थानं द्रोणकलशाख्यम्'—इति वि०।

** अन्नवान्—सोमः, चरुः, पशु, धानाः, करम्भः, पुरोडाशः, प्रतीवापः, पयः-सेति।

["तैरेनं* चतुराधूनोति पञ्च क्रत्वः सप्त क्रत्वो वा (१२, ५, १७)"—इत्यापस्तम्बेन सूचितम्] "विचक्षणः" सर्वस्य विद्रष्टा॥

"नृभिर्धौता"—"नृभिर्धूतः"—इति पाठो॥ २ ॥ ९

॥ रौरवम्॥ पुनानःसोमाऽधाराऽऽ३४या। आपो
वसानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृतस्यसाऽऽदमाइ। ओहा
३उवा। उत्सोदेवोहिराऽऽहाइ। ओहा३उवा। एयया।
औ३होवा॥(१) उत्सोदेवोहा३इरस्याऽऽ३४याः। उत्सोदे
वोहिरएयायोदुहानऊधर्हिवियन्मधूऽऽप्रियाम्। ओहा३उ
वा। प्रसएसधस्थमाऽऽ३हाइ। ओहा३उवा। सदात्।

---

* तैः निपाभ्य-सञ्ज्ञकाग्निः, एनं सोममित्यर्थः; अदाभ्यग्रहे इति सङ्गति-लभ्यः। अदाभ्यमिति पशुविशेषस्य नाम, तथाहि—'अदाभ्यं ग्रहात्यासिच्य निपाभ्याः पात्रे तस्मिंस्तूष्णीं चीनंशूनवधायाग्नये त्वा गायत्रच्छन्दसमिति प्रतिमन्त्र मुपधामः सर्वत्राविशेषात्'—इति का० श्रौ० सू० १२, ५, १३—१५। अस्यार्थः—यस्मिन्नौदुम्बरे पात्रे अंशुर्गृहीतः तस्मिन् होतृचमसस्था निपाभ्य-सञ्ज्ञा आप आनीय तस्मिंस्तिस्रः सोमलताः प्रक्षिप्याग्नयेत्वेत्यादिभिर्मन्त्रैः क्रमेणादाभ्यं पशुं ग्रहाति। मन्त्रैः सोमलता प्रक्षेपो वेति केचित्। उपधामग्रहीतोसीत्येतत् त्रिष्वपि मन्त्रेष्वादावनुषङ्गनीयं सर्वशेषत्वादाम्नासस्येति॥ किञ्च अभिषोतव्यस्य सोमस्य सेचनीया आपो निपाभ्या उच्यन्ते।

४ ५ २ १ ५ १
औ२३होवा ॥(२) प्रत्न॒एसधस्था३मासा२३४दात्। प्रत्न॒एस
२ २ २ ३ १ १ २
धस्थमासददापृच्छन्धरुणंवाजिया२र्षसाइ। ओहा३उवा।
१ २ १ १ १ २ १ १
नृभिर्जौतोविश्वा२३हाइ। ओहा२उवा। त्वणा। औ
४ ५ ४
३होवा। होऽ५इ। डा (३) ॥ २ * ॥ [१]

२ १ २ ४ ५ १
॥ यौधाजयम् ॥ पुना३१। ना३:सो। म। धा
३ ५ १ १ १ ३ १ १ ५
रा२३४या। आपो३। वसा२। नआ३४५। षा२३४सी।
१२ १ १ १ १२ १ ३ १ २
आरात्नधाः। यो। निम्नता२। स्यसा३४५इ। दा२३
५ २ १ ३ १ २ १
४सी। उत्सा२:। दाइवो२। हिरा३४५। एया२३४
२ ३ २ २ ४ ५ २ १ ५ १
याः ॥(१) उत्सो३१। देवो। हि। रण्या२३४याः। उ
२ १ २ १ २ ५ २ १ २
त्सो३। दाइवो२। हिरा३४५। एया२३४याः। दुहान
१ २ १ २ १ ५ २
ऊ। धः। दिविया२म्। मधू३४५। प्री२३४याम्। प्र
१ २ ३ २ ५ ३
ना२म्। साधा२। स्थमा३४५। सा२३४दात् ॥(२)प्र

* ऋ० गा० १प्र० १अ० २सा०।

१ १ ४ ५ २ ३ ५ १२
ना३१म्। सा३ध। स्थम्। आसा२३४दात्। प्रात्ना

१ ३ २ २ ५ २८१
३म्। सधा२। स्थमा३४५। सा२३४दात्। आपा

२१ २ १ २१ ० ५
र्छियाम्। ध। रुणवा२। जिया३४५। घा२३४सो।

१ १ २१ २ ५
नुभा२३ः। धौतो२। विचा ३४५। त्ता २ ३ ४ णा (३)

॥ ३ * ॥ [२]

१ १ १ ३ २८
॥ ऐडमायास्थम् ॥ आयिपुना। नाःसो। मधार

२ १ २१ १ १
या। आपोवसा३१। नौअर्षसी। आरत्नधा३१ः।

२ २१२ १ २ १
योनिम्रता। स्थसीदसी। ऊत्सोदेवा३१ः। हिरण्या२

२ १ १ १ २ १
३या३४३ ॥(१) आउत्साः। दायिवो। हिरण्ययाः। ऊ

१ २१ २ १
त्सोदेवा३१ः। हिरण्ययाः। दूहानऊ३१। धर्दिवियाम्।

२ १ २ २१२ २
मधुप्रियाम्। प्रात्नएसधा३१। स्थमासा२३दा३४३त् ॥(२)

१ २ १ २१२ २
आयिप्रत्नाम्। साधा। स्थमासदात्। प्रात्नएसधा

२ १२ २ २
३१। स्थमासदात्। आपृच्छियाा३१म्। धरुणंवा। जि

---

* ऋ० मा० १प्र० १ऋ० ७सा०।

१ २ २१ २ १
यर्षसायि। नृभिर्धौंता३१:। विचक्षा२३णा३४३:। ओ

२३४५ई। डा (३) ॥ २० * ॥ [३]

१२ २ २ २ १ २
॥ त्रिणिधनमायास्यम् ॥ पुनानःसोमधाद्धाउद्धोवा।

१ २ १२ ५ १ ३२ २ ५
रायाआ२३४पो। वसा२। नआ३४५। षा२३४सी।

१२२ ३२ ४२ ५ १ २ २ ३ २
आरा३४। औद्धोवा। लधायोनिम्हृता२। स्यसा३४५

३ ५ १ २ ३२ ४२ ५ १
ग्नि। दा२३४सी। उत्सा३४। औद्धोवा। दायिवो२

३ २ ३ ५ २ २ २ २ १ २
द्धिरा३४५। एया२३४याः ॥(१) उत्सोदेवोद्धिराद्धाउद्धोवा।

१ २ ३ ५ १० २ १ २
एयायाऊ२३३त्साः। दायिवो२। द्धिरा३४५। एया२३४

५ १ २ ३२ ४२ ५ १ २ २
याः। दुद्धा३४। औद्धोवा। नऊधर्द्विवियार्म्। मधू

२ ५ १ २ ३२ ४२ ५ १
३४५। प्रो२३४याम्। प्रत्ना३४। औद्धोवा। साधा

२ २ ३ ५ १ २ २
२। स्थमा३४५। सा२३४दान् ॥(२) प्रत्नꣳसधस्थमाद्धाउ

१ २ १ २ ३ ५ १ २ २
द्धोवा। सादंत्प्रा२३४त्नाम्। सधा२। स्थमा३४५।

• ऊ० गा० १प्र० २ख० १०सा०।

३ ५ १२१ ३२ ४२१ १
सा२३४दात्। आपा३४। औद्दोवा। कन्यरुणंवार्। ।

२२ ३ ५ १२ ३२ ४२५ १
जिया३४५। षा२३४सी। नृभा३४। औद्दोवा। धौ

२२ ३ ५
ताँ२। विचा३४५। द्वा२३४णाः(३)॥ १ * ॥ [४]

२२१ २२ १२१ २१२
॥ कण्वरथन्तरम्॥ पूनानःसोमधारया। अपोवमा।

२ १ २ २ २ २ २ ३ ५२
नोइआर्षाइमी। आरत्नधायोनिम्नतस्यसीदसा२३४ऐन्द्वी।

२ १२ ५ २ २ २ ३
उत्सोदा२३४यिवाः। ध्रिरा३१उवा२३। ए३। पयम

२ २ १२२२ १२१ २१२२ २ १
आ॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययाः। उत्सोदेवो। द्वा३यिरा

१ १ २ २ ३ ५२ २१
ण्याइयाः। दुहानऊधर्दिवियम्मधुप्रिया२३४मैन्द्वी। प्रत्नऽ

५ २ २ १३२ २
सा२३४धा। स्थमा३१उवा२३। ए३। सदा॥ (२) प्रात्नऽ

१२ १२१ २१ २१ १२ २ २
सधस्थमासदात्। प्रत्नऽसधा। स्था३मासा३दात्। आ

२ २ ५२ २१ ५ १
पृच्छन्यरुणंवाजियर्षसा२३४ऐन्द्वी। नृभिर्द्वौ२३४ताः। वि

२ २३२
चा३१उवा२३। ए३। द्वणआ (३)॥ ४ † ॥ [५]

---

* ऋ० मा० २प्र० १अ० १सा०।

† ऋ० मा० ४प्र० १अ० ४सा०।

॥ गौङ्गवम् ॥ पुनानोऽ३:सोमधारया। आपो२।
वसानोआ३। पासायि। आरत्नधायोनिमा२३र्त्ता२।
स्यसाऽ३थिदासायि। आरत्नधायोनिमृत। स्यसाऽ३यिदो
मायि। ऊत्मोई। वा। औ३ह्वो। हिरो२३४वा।
ण्याऽयोऽहायि ॥(१) उत्सोऽहाऽ३यिवोहिरण्यया:। ऊत्सो
२। देवोहिराऽ३। ण्याया:। दुहानऊधर्द्दिवा२३यार्२म्।
मधूऽ३प्रायाम्। दुहानऊधर्द्दिवियम्। मधूऽ३प्रायाम्।
प्रात्नऽएस। धा। औ३ह्वो। स्थमो२३४वा। साऽयदो
ऽहायि ॥(२) प्रत्नऽएसाऽ३धस्थमासदात्। प्रात्ना२म्।
सधस्थमाऽ३। सादात्। आपृक्षन्वरुणा२३वा२। जिया
ऽइर्षासायि। नृभिर्द्धौ। ता। औ३ह्वो। विचो२३४वा।
ऋाऽयुणोऽहायि(३) ॥ ५ * ॥ [६]

---

* ऊ० गा० ४५० १ ख० २ ऋ०।

॥ द्विनिधनमायास्यम्* ॥ पुनानःसोमधारया । एइ ।

औ३ह्वोप्वाऽऽ । आपो३ । वसा२ । नप्त्रा३४५ । षा

इसी२३४५ । आरत्नधाः । योनिम्मृता । स्यासा३आ ।

औ३ह्वो३ । दा२३४सी । उत्सौ३ह्वो । दायिवो२ ।

हिरा३४५ । ण्या३या२३४५ः ॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययः ।

एइ । औ३ह्वोप्वाऽऽ । उत्सो३ । दायिवो२ । हिरा

३४५ । ण्या३या२३४५ः । दूक्षान्नऊ । धार्द्दिवियाम् ।

माधू३आ । औ३ह्वो३ । प्रीर२३४याम् । प्रत्नौ३ह्वो ।

साधा२ । स्थमा३४५ । सा३दा२३४५त् ॥(२)प्रत्नएसधस्थ

मासदत् । एइ । औ३ह्वोप्वाऽऽ । प्रात्नाइम् । सधा२ ।

स्थमा३४५ । सा३दा२३४५त् । आपृच्छियाम् । धारु

---

* "निरधीन मायास्यम्"—इति ऋ० पु० ।

२१ २ १ ४ ४ ५. २१ २
णंवा। जायाइन्ना। औइहोइ। षा२३४सी। नृभान्नौ

२ १ २१ २ १ १ १ १
इन्द्रो। धौतोर। विचा ३ ४ ५। स्राइणा २ ३ ४ ५:(३)

॥ ६ * ॥ [७]

४ र ३ ४ र ३ र ४ ५ र २
॥ उत्सेधम् ॥ पुनानःसोमधारया। पः। वसा३४

३ र ४ र ५ २ र १ २ ५
औहोवा। नोअर्षसाऽयि। ह्वा३१उवा२३। ऊ३५पा।

३ र २ ४ ५ र ४ ५ १ २ १ २ र १
धाराइत्नधा। औहोवाह्वायि। योनिम्रृता। स्यसीदा

२ २ ५ ३ २ ४ र ५ र
सि। ह्वा३१उवा२३। ऊ३४पा। उत्सोइदेवः। औ

४ ५ २ २ ४ २ ४ र र ३ र ४
होवाहायि। हिराइण्या५याई५६ः ॥(१) उत्सोदेवोच्चिर

५ ३ र २ ४ र ४ र ५ २ १
ण्ययः। उत्सः। देवाइ४औहोवा। च्चिरण्ययाऽयः।

३ ५ ३ २ ४ ५ र ४ ५
ह्वा३१उवा२३। ऊ३४पा। दुह्वाइनऊ। औह्होवाह्वायि।

१ २ १ २ १ १ २ ५
धाद्दिवियाम्। मधुप्रायम्। ह्वा३१उवा२३। ऊ३४पा।

३ २ ४ ५ र ४ ५ ० २ १ ४
प्रत्नाइन्सध। औह्होवाह्वायि। स्यमाइसाप्रदाई५त्॥(२)

---

* ऋ० गा० ४प्र० १अ० ६खं०।

४ २ ४ १ ४ १२ ४ ५ २ १ २२ ४२ ५ २
प्रत्नऽएसधस्थमासदत्। प्रत्नम्। सधा३४स्थौवा। स्थ

५२ १ ५ १२ १ ४
मासदा३२त्। हा३१उवा२३। ऊ३४पा। आपा३र्च्छ

५२ ४ ५ १ १ १ २ १ २
याम्। औह्होवाद्दायि। धारूणंवा। जियर्वासि। द्दा

१ ५ २१ ४२ ५२ ४ ५
३१उवा२३। ऊ३४पा। नृभा३यिद्यौतः। औह्होवाद्दा

२ २ ४ २१११
यि। विचा३त्तापूणा३र्६५६ः। ऊ२३४५(३) ॥११*॥ [८]

४ २ ४ २ ४२ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पुनाऽ५नः। सो३मा३धारायो।

१ २ १ १ २ २ १२ १ २ २
आपोवसा। नो३आर्षा३सी। आरा२त्नधायोनिम्न।

२ १ २ २ १२ २ २
तस्या२३सा। ऊम्मायि। दा३साय। ऊत्सोदेवोद्धिरा

१ २ १ २ १ २ १ २ २
२ण्यवाउ ॥(१)ऊत्साः। दायिवो। द्दा३यिराण्या३याः।

१ १२ २ १ २ २
दुद्दा२नऊधर्हिवि। यम्मा२३धू। ऊम्मायि। प्रा३याम्।

१ २ २ १ २ १ २
प्रात्नऽएसधस्थमा२सदाउ ॥(२)प्रात्नाम्। साधा। स्था३

१ २ २ १ १ २ २
मासा३दात्। आपा२र्च्छन्धरुणम्। वाजा२३या।

---

* ऋ० गा० ६प्र० १अ० ११सा०।

१ २ २ १ २ २ १ २
ऊम्भायि। षाइसायि। नृभिर्धौतोविचा२क्षणाऽउ। वा
१ १ १
३४५ (३) ॥ १२* ॥ [८]

॥ निषेधम् ॥ २ २ २ २ १ २ १
पुनानःसोमाऽधारया। अपोवसा।
१२ १. १ २ १ २ ४ ५ २ ३
नोऽअर्षसा२यि। इहाऽ३। आराऽत्नाधाः। हाहो२३
५ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १
४हा। योनिम्ऋता। स्यमीदा२३साय। इहाऽ३। ऊ
२ ४ ५ २ ३ ५ ३ २ ४
त्सोऽदायिवाः। हाहो२३४हा। हिराऽण्याप्रुया६५६: ॥(१)
२ २ २ २ १ २ २ १ १ १
उत्सोदेवोहाऽयिरण्ययाः। उत्सोदेवो। हिरण्यया२:।
१ २ १ २ ४ ५ २ ३ ५ १ २ १
इहाऽ३। दूहाऽ३नाऊ। हाहो२३४हा। धाहिंवियाम्।
२ १ २ १ २ १ २ ४ ५ २ ३
मधुप्रा२३याम्। इहाऽ३। प्रात्नाऽ३ऽसाधा। हाहो२३
५ २ २ ४ १ १२
४हा। स्थमाऽसाप्रुदा६५६त् ॥(२) प्रत्नऽसधस्थाऽमासदा
१ १ २ २ १ १ २ १
त्। प्रत्नाऽसधा। स्थमासदा२त्। इहाऽ३। आ
२ ४ ५ २ ३ ५ १ २ १ २ १
पाऽर्च्छायाम्। हाहो२३४हा। धारुणंवा। जियर्षा

---

[1] ऊ० गा० ६प्र० १अ० १२सा०।

२ १ १ १ २ ४ ५ २ १ ५
२३साचि। इषा३। नृमा३यिंशौनाः। हाचो२३४हा।

१ २ ४ ३ १ १ १
चिचा३ष्णा५ष्णा६५६:। चि२३४५ (३) ॥ १ २ * ॥ [१०]

२ २ १ १२ १२ १ १ २ १२ १२ १
॥ समन्तम् ॥ पुनानःसोमधारया। अपोवसानोअ्र

२ १ १ १ १ २
र्षसाचि। आरत्ना२३धाः। योनिम्रृत। स्यसायिदामा।

१२ १ १२ १ १ १ १ १
औहो३४वाहायि। उत। सोदा२३यिवा३:। होवा३

१ १ १ २ १२ १२ २ १ १
हायि। हिरण्या२३या३४३:॥ १) उत्सोदेवोहिरण्यया:।

२ २ १ १ २ १ १ २
उत्सोदेवोऽहिरण्यया:। दुहाना२३अ। धार्हिवियम्।

१ १ १२ १ १२ १ १ २
मधूप्रायाम्। औहो३४वाहायि। प्र। ब्राण्सा२३धा

१ १ १ १२ १ २१ २१ २
३। होवा३हा। स्थमासा२३दा२४३त्॥(२)प्रत्नण्सधस्थ

१२ १ १ १ १ १२ २ १
मासदात्। प्रत्नण्सधास्थमासदात्। आपृच्छा२३याम्।

१ १ १२ १ १ १२ १ १ १
धारुणंवाजियार्षासा। औहो३४वाहायि। नृ। भायि

---

* ज० मा० ६म० १ख० ११वा०।

द्यौरि३ता३:। ह्वोवा३ह्वायि। विचक्षा२३णा३५३:। ओ

२३४५ई। डा (३) ॥ २ * ॥ [११]

॥ अभीवर्त्तम् ॥ पुना३नाऽ३:सोमधारयोवा। आपोव

सा। नोऽआर्षा१सा२यि। आरत्नधा३१२३४:। योनि

म्ऽत। स्यसायिदा१सा२यि। उत्सोदा१यिवा२:। हिरा

ण्या२३४५। या२३४५: ॥(१) उत्सोदे३वोऽहिरण्ययोवा।

ऽत्सोदेवः। हिराण्या१या२:। दूद्वानऊ३१२३४। ध'

ह्विंवियम्। मधुप्रा१या२म्। प्रत्नाएसा१धा२। स्थ

मा३। सा२३४५। दा२३४५त् ॥(२) प्रत्ना३एसा३धस्थमा

सदोवा। प्रात्नएसध। स्थमासा१दात्। आपृच्छिया

३१२३४म्। धरुणंवा। जियार्षा१सा२यि। नृभायि

द्यौ१ता२:। विचा३। द्वा२३४५। णा२३४५:(३)॥१३†॥[१२]

---

* ऊ० मा० ६प्र० २अ० २खा०।

† ऊ० मा० ८प्र० २अ० १३खा०।

॥ अभीवर्त्तम् ॥ उत्सो३देवोऽहिरण्ययोवा। उत्सो
देवः। हिराण्या१या२:। दूहानऊ३१२३४। धर्हिवि
यम्। मधूप्रा१या२म्।(२) प्रत्नाऽसा१धा२। स्थमा३।
सा२३४५। दा२३४५त्(३)॥ १४ * ॥ [१३]

॥ महाकालेयम् ॥ प्रत्नऽसा३धस्थमासदात्। प्रत्ना
ऽसधा। स्थमासदा२३त्। आपृच्छियाम्। धा२३४।
रुशंवाजिय। षा३सायि। नृभायिद्यौंती। वा३४३ओ
३४वा। विषा५क्षणाः। हो५ई। डा(३)॥ १५† ॥ [१४]

॥ वासिष्ठम् ॥ उत्सोदेवोहिर। ण्ययांओ२३४वा।
इयाहायि। ऊवेहो२यि। उत्सोदेवोहिराण्या१या२:।
दुहानऊधर्हिवियम्। मधूप्रा१या२म्। ई३या॥(२) प्रत्न

---

* ऋ० मा० ८म० १अ० १४सा०।

† ऋ० मा० ८म० १अ० १५सा०।

५ २ १४ १ १११
ए॒सा२३४धा। स्थमासा२३४५दा६ई५६त्। अवाꣳसा२३

११
४५धि ३) ॥ १६* ॥ [१५]

१ ८ २ १ २ ८ १ १
॥ मद्दावैष्टम्भम् ॥ पुनानःसोदायि। मधारयोवा।

१८ २ ८ ८ १ २ १ २ ८
आपोवसा। नोआर्षा१सा२३यि। होवा३दायि। आ

१ १ १ १
रत्नधायोनिमृत। स्यसायिदा१सा२३यि। होवा३दा

२ १ २ १ २ २ १
यि। उत्सोदा१यिवा२३ः। होवा३दायि। दिर। ण्या

२ ५८ ८ १ ८१८ १ २ १ २
२या२३४औदोवा ॥ (१) उत्सोदेवोदायि। दिरण्ययोवा।

१ ८ २८ १ २ १ २ २ ८
उत्सोदेवः। दिराण्या१या२३ः। होवा३दायि। दुदा

१ ८२ १ २ १ २ १ २ १ १
नऊधद्दिवियम्। मधूप्रा१या२३म्। होवा३दायि। प्र

२ १ २ २ १२ २
ला॒ए॒सा१धा२३। होवा३दा। स्थमा। सा२दा२३४

५८ ८ २ १ २ ८ १ २ १
औदोवा ॥(२) प्रला॒ए॒सधोदायि। स्थमासदोवा। प्रा

२ १ २ १ २ २ ८ १
ला॒ए॒सध। स्थमासा१दा२३त्। होवा३दायि। आपृ

---

* अ० मा० ९प० २अ० १६खं०।

१ ६ २ ८ १ १ १ २ १ १
क्रुन्धरुणंवा। जियार्षा१सा२३यि। ह्वोवा३ह्वायि। नृ

१ १ २ १ १ २
भायिद्वौ१ता२३:। ह्वोवा३ह्वायि। विच। क्षा२णा२३

५८ ८ ३ ५
४औह्वोवा। दी२३४ग्राः (३)॥ १२ * ॥ [१६]

५ ८ २ ४८ ५ ४८ ५ १ १ २ १
॥ कालेयम् † ॥ पुनानाऽ:सोमधारया। अपोवसा।

१८ ३ १ १ १८ २ १ १ ३ ४
नोअर्षसा२३यि। आरत्नधाऽः। यो२३४। निमृतस्व

५८ १ १ १ ३ ८ १ २ ५ ४
सी। दाऽमायि। उत्सोदेवौ। वा३४३ओ३४वा। छि

५ ८ १ ४८ ५ ४ ५ १ १ १८ १
रापुण्यया:॥(१) उत्सोदाऽयिवोछिरण्यया:। उत्सोदेवो।

२ ३ २ १ २ ३८ २ १ ३ ४ ५
छिरण्यया२३:। दुहानऊऽ। धा२३४:। दिवियम्मधु।

५ २ १ ३ १ १ २ ५ ४
प्राऽयाम्। पृत्नाऽसधौ। वा३४३ओ३४वा। स्थमा५

५ १ ४ ५ ४८ २ १ २ १
सदात्॥(२) पृत्नऽसाऽधस्थमासदात्। पृत्नाऽसधा।

१ ३८ २ १ १८ ३ २ १ १८ ८
स्थामासदा२३त्। आपृच्छियाऽम्। धा२३४। क्रुन्धंवा

---

* ऋ० मा० १२प्र० १ऋ० १२सा०।

† "मद्याकालेयम्"—इति ऋ० पु०।

५ २ २ १ ३र २ २ ५
जिय। षाइसायि। नृभायिद्यौंतौ। वा३४३ओ३४वा।

४ ४
विचा५क्षणाः। च्छो५ई। डा(३)॥ १२ *॥ [१७]

४ र ३ ४र ३र ४ ५र र २
॥ वषट्कारणिधनम्॥ पुनानःसोमधारया। पुनाना

४र ५ ४र ५ २र र र ऽ १ ७ र १ २
३ःसोमधारया। अपोवसानो३आर्षसा२यि। नोआर्षा

१र ऽ २ र र र १
१सा२३यि। ओमो३वा। आरत्नधायोनिमृतस्या३साधि

७ २ १ २ १र ऽ २ र
दसा२यि। स्यसायिदा१सा२३यि। ओमो३वा। उत्सो

र र १ ७ २ १ २ १र
ईवोच्छी३राण्य१या२ः। हिराण्या१या२३ः। ओम्। ओ२।

३ ५र र ३ ५
वा२३४। औहोवा॥ ऊ२३४पा(१)॥ २० †॥ [१८]

२ र र र र र र र र
॥ दैर्घश्रवसम्॥ पुनानःसोमधारयाओच्छाओच्छा३

२ १र २र र १ २ ऽ २ ऽ २ २
ए। अपोवसानोअर्षसि। ओ३च्छा। ओ३च्छा३ए३४।

२र २ ३ २ १ २ १ र २ ऽ
आरा३४त्नधाः। योनिमृ। तस्यासीदसायि। ओ३

---

* ऋ० गा० १०प्र० १अ० १३सा०।

† ऋ० गा० १०प्र० १अ० २०सा०।

१ ऽ २ २ ३ २ ३२ १ २ १ ५
ह्वा। ओ३ह्वाइ३ए३४। उत्सो३४देवाइः। हिरो२३४वा।

४ ५ २२ २ २ २ २ २ २
ण्या५यो६ह्वायि ॥(१) उत्सोदेवोहिरण्ययओहाओह्वाइए।

१२ २२ १२ २ १ १ ऽ २ ऽ २ २ ३ २
उत्सोदेवोहिरण्ययः। ओ३ह्वा। ओ३ह्वाए३४। दुह्वा

३ २ १ २ १ २ ऽ २ ऽ
३४नऊ। धार्हिवि। यम्माधुप्रियाम्। ओ३ह्वा। ओ

२ २ ३ २ ३ २ २ १ ५ ४
३ह्वाइ३ए३४। प्रत्ना३४ऽसधा३। स्थमो२३४वा। सा५

५ २ २ २ २ २ १
दोर्ह्वायि ॥(२) प्रत्नऽसधस्थमासदोह्वाओहाइए। प्रत्नऽ

१ १ २ १२ २ ऽ २ ऽ २ २ २२ २
सधस्थमासदत्। ओ३ह्वा। ओ३ह्वाइ३ए३४। आपा३४

३ २ १ २ २ १ २ ऽ २
र्च्छियाम्। धारुणम्। वाजायर्षसायि। ओ३ह्वा।

ऽ २ २ ३ २ ३२ २ १ ५ ४
ओ३ह्वाइ३ए३४। नृभा३४यिर्द्यौताइः। विचो२३४वा। ह्वा

५
५णोर्ह्वायि(३) ॥ १६ * ॥ [१९]

२ २ १ २ ३ २ ४ ५
॥ मैधातिथम् ॥ पुनानःसोह्वायि। मधा३राया।

२ १२ २ २ १ २ १ २
अपोवा२ह्वो१यि। साओ३ह्वो। नाआउवा। घासा

---

* ऋ० गा० ११प्र० २अ० १९सा०।

१२ २ २ ऽ १ १ १ १ १
उवा। आरत्नधायोनिमृताऽऔ३ह्वो। ख्षासाऽउवा। दा

२ १ २ २ २ १ १२ १ १२
साऽउवा। उत्सोदेवाऽऔ३ह्वो। हिरा। ऽओ३ह्वो। वा

५ ४ ५ २ २ १ २ ३
ह्वो२३४वा। सा५योऽ६हायि ॥(१) उदेवोऽहायि। हि

२ ४ ५ २ १२ २ १ १
रा३ण्यायाः। उत्सोदा२ह्वो१यि। वाऽऔ३ह्वो। ह्वायि

२ १ २ १ २ २ १ २
राऽउवा। ण्यायाऽउवा। दुह्वानऊधर्हिवियाऽऔ३ह्वो।

१ २ १ २ १ ३ २ १२
माधाऽउवा। प्रायाऽउवा। प्रत्नऽसधाऽऔ३ह्वो। स्थमा।

२१ १ ३२ ५ ४ ५ २ १
ऽओ३ह्वो। वाह्वो२३४वा। सा५दोऽ६हायि ॥(२) प्रत्नऽसधो

२ २ १ ४ ५ २ १ १
ह्वायि। स्थमा३सादात्। प्रत्नऽसा२ह्वो१यि। धाऽओ

२ १ २ १ २ १२
३ह्वो। स्थामाऽउवा। सादाऽउवा। आपृच्छऽन्धरुणंवा।

२ २ १ २ १ २ १ २
ऽओ३ह्वो। जायाऽउवा। षासाऽउवा। नृभिर्धीताऽओ३

२ १२ २१ १ ३२ ५ ४ ५
ह्वो। विचा। ऽओ३ह्वो। वाह्वो२३४वा। ह्वा५णोऽ६हा

यि(३) ॥ ७ * ॥ [२०]

---

* ऋ० मा० १३प्र० १अ० ७खा०।

॥ वरूणसाम ॥ पुनानःसोमधारयोवा। ओवा।
आपोवसा। नोआर्षीष्ठा२यि। आ२३रा। ल्ला२३
धाः। योनिमुत। स्यसा२३ह्वायि। दसा३आ। उत्सो
देवोहिरण्ययः। ऊ२३त्सा:। दायिवोहिरौ३। हो३१
२३४। वा। ण्याप्रयोऽह्वायि ॥(१)उत्सोदेवोहिरण्ययोवा।
ओवा। उत्सोदेवः। हिरास्या१या२:। दू२३ह्वा।
ना२३ऊ। धर्हिवियम्। मधू२३ह्वायि। प्रिया३मा।
प्रत्नꣳसधस्थमासदत्। प्रा२३त्नाम्। साधस्थमौ३।
ह्वो३१२३४। वा। साप्रदोऽह्वायि ॥ (२)प्रत्नꣳसधस्थमा
सदोवा: ओवा। प्रात्नꣳसध। स्थमासा१दा२त्।
आ२३पा। र्क्का२३याम्। धरूणंवाजिया२३ह्वा। षसा
३आ। नृभिर्द्धौतोविचक्षणः। नृ२३भीः। धौतोवि
चौ३। ह्वो३१२३४। वा। क्षाप्रणोऽह्वायि(३) ॥ १८* ॥[२१]

क० गा० १३प्र० १ख० १८सा०।

॥ वैयश्वम् ॥ पुनानःसोमधारयाऽए। अपोवसा२
नोऽअर्षसा२३यि। ह्वोवा३ह्वायि। आरत्नधायोनिमृता
२। स्यासा३ह्वायि। दा२३४साय। उत्सोदेवोह्विरा२
३ह्वो। ण्यया। औ३ह्वोवा। ह्वोपुड्। डा(१) ॥ १५* ॥[२२]

॥ वषट्कारणिधनम् ॥ उत्सोदेवोह्विरण्ययः। उ
त्सोदा३यिवोह्विरण्ययाः। उत्सोदेवोह्वी३राण्ययाः। ह्वि
राण्ययाऽ३:। ओमोवा। दुहानऊधर्हिवियम्मा३धू
ष्पिया२म्। मधप्रा१या२३म्। ओमो३वा ॥(२) पृक्षस्य
धस्थाऽ३मासदा२त्। स्थमासा१दा२३त्। ओम्। ओ
२। वा२३४। ओह्वोवा। ऊ२३४पा(३) ॥ १६† ॥[२३]

॥ पृश्नि ॥ पुनाना२३:सोमधारयाह्वाउ। अपोवसा

* ऊ० गा० १३प्र० २अ० १५सा०।

† ऊ० गा० १३प्र० २अ० २६सा०।

२ १ २ १२ २ १ २ २ १
नोऽवर्धसिऽ आरात्ता१धा२३ः। ह्वोवा३ह्वायि। योनि

२ १ २ १ २ २ १
मृत। स्यसायिदा१सा२३यि। ह्वोवा३ह्वायि। उत्सो

२ १ २ ० १ २ १
दा१यिवा२३ः। ह्वोवा३ह्वायि। ह्वायिरण्ययः। इडा

२ १२ ४२ २ ५ १ २ २१२ २
२३॥(१) उत्सोदा२३यिवोहिरण्ययोह्वाउ। उत्सोदे वोहिर

१ २ १ २ १ २ २ १ २
ण्ययः। दुह्वाना१ऊ२३। ह्वोवा३ह्वायि। धार्द्विवियम्।

१ २ १ २ २ १ २
मधूप्रा१या२३म्। ह्वोवा३ह्वायि। पृत्नाऽसा१धा२३।

१ २ २ १ २ २ १ २ १
ह्वोवा३ह्वा। स्थामासदत्। इडा२३॥(२) पृत्नाऽसा२३

४ २ ५ २ १ २ १ २ १२ २ १२ २
धस्थमासदद्वाउ। पृत्नऽमधस्थमासदत्। आपार्क्का१

१ २ २ १ २ २ १ २
या२३म्। ह्वोवा३ह्वायि। धारुणंवा। जियार्षा१सा

१ २ २ १ २ १ २
२३यि। ह्वोवा३ह्वायि। नृभायिद्वौ१ता२३ः। ह्वोवा३

२ १ २ १ २ १
ह्वायि। वायिचक्षणः। इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई।

डा(३)॥ ३ *॥ [२४]

---

* ऋ० गा० १५अ० २ख० १सा०।

॥ आभीशवोत्तरम् ॥ पुनानःसोमधारयाऽपा ए।

अपोवसाइनो अर्षसायि। आ२३४रा। हाइहा। त्नधा

योनिमृतस्यासी१दसायि। ऊ२३४त्सा:। हाइहायि।

दायिवोहिरो२३४वा। एया५योईहायि ॥(१) उत्सोदेवोहिर

एयए। ए। उत्सोदेवोइहायिरएयया:। दू२३४हा। हा

इहा। नऊधर्हिवियम्माधुपायम्। प्रा२३४त्नाम्। हा

इहायि। साधस्थमो२३४वा। सा५दोईहायि ॥(२) पृत्नएा

सधस्थमासदद्दे। ए। पृत्नएामधाइस्थामा१सदात्। आ

२३४पा। हाइहा। ह्यन्वरुणम्वाजायर्षासायि। न्हइ२३

४भी:। हाइहायि। धौतोविचो२३४वा। ह्वा५णोई

हायि(३) ॥ ४ * ॥ [२५]

---

* ऊ० गा० १५प्र० २ख० ४सा०।

॥ पौष्णमुक्थम् ॥ पुनानःसोमधारया। औहोवा। ए

ह्हिया। ह्हाउ। अपोवसा२नोअर्षसि। आराल्ला१धा

२:। योनिम्हृता३। स्थामायिद्दा२३४साथि। उत्सो।

दाधिवौवाओ२३४वा। ह्हा३ह्हायि। ह्हिराण्ययया:॥(१)

उत्सोदेवोह्हिरण्यय:। औहोवा। एह्हिया। ह्हाउ।

उत्सोदेवो२ह्हिरण्यय:। दुहानाउज२। धोर्दिवियाइम्।

माधुप्रा२३४याम्। प्रत्नाम्। साधौवाओ२३४वा। ह्हा

३ह्हा। स्थमाप्रमदात्॥(२) प्रत्नंसधस्थमासदत्। औ

ह्होवा। एह्हिया। ह्हाउ। प्रत्नंसधा२स्थमासदत्।

आपाक्र्हाया२म्। धारुणंवाइ। जायर्षा२३४साथि।

नृभायि:। धौतौवाओ२३४वा। ह्हा३ह्हायि। विचाप्रच्च

णा:। ह्हाप्रई। डा(३)॥१०*॥[२६]

---

* ऊ० गा० १७प्र० १ऋ० १०मा०।

॥ आग्नेयं काण्वम् ॥ पुनानाइःसोमऽधार

या। आपोवसा। नोआ२३र्षसाउ। वा३२। आर

धाः। योनिमृता। स्यसीदा२३४साय। ऊ२३त्साः।

देवोहि। रण्या२३४पुयाई५६ः ॥(१) उत्सोदा३यिवोहिऽर

ण्ययाः। ऊत्सोदेवः। हिरा२३ण्ययाउ। वा३२। दु

हानऊ। धर्हिवियाम्। मधुप्रा२३४याम्। प्रा२३ता

म्। सधस्थम्। आसा२३४५दाई५६त् ॥(२) प्रत्नएसा

३धस्थऽमासदात्। प्रात्नएसध। स्थमा२३सदाउ। वा

३२। आपृच्छियाम्। धरुणंवा। जियर्षा२३४साय।

नृ२३भीः। धौतोवि। चक्षा२३४५णाई५६ः। आ२३

४५ष(३) ॥ ११ * ॥ [२७]

॥ सोमसाम† ॥ पुनानःसो२मधारया। आपो२वा

---

* ऊ० गा० १७प्र० १अ० १सा०।

† "बृहतीसोमः"—इति ख० पु०।

सा२। नोऽवर्षसी। आरा२त्ताधा२:। योनिमार्त्ता
२। स्थसीदसी। उत्सो२दायिवा२:। हिरण्या२३या
३४३: ॥(१) उत्सोदेवो२हिरण्ययाः। उत्सो२दायिवो२।
हिरण्ययाः। दूहा२नाऊ२। धर्हिवाया२म्। मधु
प्रियाम्। प्रात्ता२७साधा२। स्थमासा२३दा३४३तं ॥(२)
प्रत्न७सधा२स्थमासदात्। प्रात्ता२७साधा२। स्थमा
सदात्। आपा२र्च्छाया२म्। धरुणांवा२। जियर्षं
सायि। नृभा२यिद्यौता२:। विचक्षा२३णा३४३:। ओ
२३४५ई। डा (३) ॥ १६ * ॥ [२८]

॥ बार्हदुक्थ्यम् ॥ पुनानःसोम। धा२रया। अपो
वसानोऽअर्षा२३सायि। आरत्ताधा२:। योनिमार्त्ता२।
स्थसीदसायि। उत्सोदा२३यिवाः। हिरण्या२३या३४

---

* क० गा० १७प्र० १अ० १६मा०।

१र २र१र २ १ र र र २१
३: ॥(१) उत्सोदेवोच्चि। रा२ण्ययाः। उत्सोद्देवोच्चिर
२ १ २ १ ७ १
ण्या२३याः। दूच्चा१नाऊ२। धाद्दिवाया२म्। मधु
२ १र २
प्रियाम्। प्रत्न॰सा२३धा। स्थमासा२३दा३४३त ॥(२)
२१ २ १ २ १ २ १र
प्रत्न॰सधस्थम्। आ२सदात्। प्रत्न॰सधस्थमासा२३
२ १ ७ १ ७ १
दात्। आपृच्छाया२म्। धारुणांवा२। जियसेसा
२ १ २ १
यि। नृभिर्द्यौ२३ताः। विचक्षा२३णा३४३:। ओ२३४५ई।

•डा (३) ॥ ७ * ॥ [२९]

५ ४ २ ३र ४ र ५ १ र र र
॥ पृष्ठम् ॥ पुनाऽन्वःसोम॰ रया। अपोवसानोऽऋ
१ २र १ र र र
र्षसा२३यिच्चोदया। आरत्नधा॰ निमृतस्यसीदसा२३यि
१ २ १र २ १ २
च्चोदया। उत्सोदा२३यिवाः। च्चिरण्या२३या३४३: ॥(१)
५ ४ २र ३र ४ ५ १ र र र १
उत्साऽद्देवोच्चिरण्ययाः। उत्सद्देवोच्चिरण्यया२३च्चोदया।
२ र १ र १ २१ २
दुच्चानऊधर्द्दिवियम्मधप्रिया२३य॰च्चोदया। प्रत्न॰सा२३धा।

---

* ऊ० गा० १८प्र० १अ० ७सा०।

१र २ ५ ४ २ ३ ४ र ५
स्थमासो२३दा३४३त ॥(२) प्रत्ना३ꣳसधस्थमासदात।

१ र १ १र १ र
प्रत्नꣳसधस्थमासदा२३ꣳवोहुया। आपृच्छन्धरुणं वाजियर्षं

१ २ १ २ १ २
सा२३यिष्ठोहुया। नृभिर्द्यौ२३ताः। विचक्षा२३णा३४३ः।

१
ओ२३४५ई। डा (३) ॥ २० * ॥ [३०]

५ ४ २ ४र ५र १
॥ कौल्मलबर्हिषम् ॥ पुना३ना३ःसोमधारयां। अ

र र र १ १र र र १ २ र
पोवसानोआ२र्षासा२३४यि। आरत्नधायोनिमार्त्ता। ऐ

१ १र र र र २ १
ह्वोयि। स्या२सीदसायि। उत्सदेवोहिरोवा३ओ२३·

५ ४ ५ ५ ४ २ ४र ५
४वा। एया५योई६ह्वोयि ॥(१) उत्सो३दा३यिवोहिरण्यया।

१र र र १ २र र १ २
उत्सोदेवोहिरा२ण्याया२३४ः। दुहानऊधर्दिवायाम्।

र १ १ २ १
ऐह्वोयि। मा२धुप्रियाम्। प्रत्नꣳसधस्थमोवा३ओ२३४

५ ४ ५ ५ ४ २ ४ ५र
वा। सा५दोई६ह्वायि ॥(२) प्रत्ना३ꣳसा३धस्थमासदात्।

१ १ २र १ २ र
प्रत्नꣳसधस्थमा२सादा२३४त्। आपृच्छन्धरुणांवा। ऐ

---

* ऊ० मा० १८प्र० १च० २०सा०।

१ १ २ २ १ १
ह्वोयि। जा२यर्षसायि। नृभिर्ह्वौतोविचोवाइ३षी२३४

५ ४ ४
वा। ह्वापृणी६ह्वायि (३)॥ २१ *॥ [३१]

२ २ १ २ १ २
॥ वाघ्रम ॥ पुनानःसो। मधारा१या२। अपोव

२ २ १२ २ २ २
सानोआर्षा१सा२यि। आरत्नधायोनिमृतस्यसायिदा१सा

१२ २ १ ३ ५२ २
२यि। उत्सदा२३यिवा३:। ह्वा२यिरा२३४औह्वोवा।

१ ५ २ २ २ १ २
स्या२३४णाः॥(१) उत्सदेवाः। ह्विराण्या१या१या२:।

१ २ २ २ २ १ २ २
उत्सदेवोह्विराण्या१या२:। दुह्वानऊधर्ह्वियम्मधूप्रा१या

१ १ २ ५२ २ ३
२म्। प्रन॰सा२३धा३। स्था२मा२३४औह्वोवा। सा

५ २ १ २ १
२३४दात्॥(२) प्रत्न॰सधा। स्थमासा१दा२त्। प्रत्न॰

२ २ १२ २ २
सधस्थमासा१दा२त्। आपृच्छन्धरुणंवाजियार्षा१सा२

१ २ १ ३ ५२ २ ३
थि। नृभिर्ह्वौ२३ताइ:। वा२यिचा२३४औह्वोवा। त्ता

५
२३४णाः(३)॥ ३ *॥ [३२]

* ऊ० गा० १८प्र० १अ० २१सा०।

† ऊ० गा० १८प्र० २अ० ३सा०।

॥ मोधुच्छन्दसम् ॥ पुनानःसो। होः। मधारयाई्ए।

अपोवसा। नोअर्षा२३४ऽसायि। आरत्नधायोनिम्हृत।

स्यसायिदासा। औद्दो३४वाद्दायि। उत्सोदायिवा।

औद्दो३४वाद्दायि। हिरण्या२३या३४३:। ओ२३४५ई।

डा (१) ॥ २० * ॥ [३३]

॥ गौरीवितम् † ॥ उत्सः। देवो३। हिरण्ययाः।

उत्सोदेवोहिरण्ययाः२३:। दूहानऊ३१२३। धर्हिवियम्म.

धूप्रियाम्। प्रात्नꣳसधा३१२३। स्थमोवा। सापदो

दृहायि(२) ॥ १२ ‡ ॥ [३४]

॥ उभयतस्तोभं गौतमम् ॥ हाउपुनानःसोमधारया

हाउ। आपोवसा। नोआर्षसा२३४यि। हाहोयि।

---

* ऋ० गा० १९प्र० १अ० २०सा०। † "महागौरीवितम्"—इति ख० पु०।

‡ ऋ० गा० १९प्र० ३अ० १२सा०।

र १ र २र १ २ १ र २ ३र २ १
आरत्नधायोनिम्हतास्यासोदसा३४यि। ह्वाहोयि। ज

र २ ३र २ २ १ ५ ४
त्सोदायिवा३४:। ह्वाहो३। हिरो२३४वा। ण्या५योई

५ २र र र र र १ र २र
ह्वायि ॥(१) ह्वाउत्सोदेवोहिरण्ययोहाउ। उत्सोदेवः।

१ ७ ३र २ र १ र २ १ २
हिराण्यया२३४:। ह्वाहोयि। दुहानऊधर्दिवियम्।

१ २ ३र २ १ २ ३र २
माधुप्रिया३४म्। ह्वाहोयि। प्रात्नꣳसाधा३४। ह्वाहो

२ १ ५ ५ २र
३। स्थमो२३४वा। सा५दो६ह्वायि ॥(२) ह्वाउप्रत्नꣳ

र १ २ १ ७
सधस्थमासदद्वाउ। प्रात्नꣳसध। स्थमासदा२३४त्।

३र २ र १ २१२ र १ २ ७र
ह्वाहोयि। आपृच्छ्यन्धरुणंवा। जायर्षसा३४यि। ह्वा

१ २ ३र २ २ १ ५
होयि। नृभिर्द्यौंता३४:। ह्वाहो३। विचो२३४वा।

४ ५
ह्वा५णो६ह्वायि (३) ॥ ११ * ॥ [३५]

२ १र ४र ५र
॥ हिङ्कारं वामदेव्यम्॥ पुनाना२३:सोमधारया।

१र र र र र र २ ३र २ १
आपोवसानोअर्षस्यारत्नधायोनिम्हताःस्यसौहो३। ऊम्भा

---

* ऊ० गा० २०प्र० २अ० ११सा०।

१ २ १ र र र १३र० १
२। दा२३सायि। उत्सोदेवोऽधिरौहो३। ऊम्मा २।

१ २ ४ ५ १ १र ४र ५
ण्यया। औ३हो३वा ॥(१) उत्सोदा२३यिवोधिरण्यया:।

१ र र र र र र २ ३र २ १
ऊत्सोदेवोधिरण्ययोदुहानऊधर्हिवियाम्मधौहो३। ऊम्मा

१ २ १ २ ३र० १
२। प्रा२३याम्। प्रत्नऽसधास्थमौहो३। ऊम्मा २।

१ ४ ५ २ १ ४ ५र
सदात। औ२३होवा ॥(२) प्रत्नऽसा२३धस्थमासदात्।

१ र र २ ३र २ १
प्रात्नऽसधस्थमासददापृक्षऋन्धरुणंवाऽजियौहो३। ऊम्मा

१ २ १ र २ ४र ३ १
२। षा२३सायि। नृभिर्द्यौनोऽविचौहो३। ऊम्मा २।

१ २ ४ ५ ४
क्षणा। औ३होवा। होपुई। ऽऽ ३) ॥ २ ५ ॥ [३६]

५ र २ ४र ५ ४र ५ १ र २ र
॥ द्वैगतम् ॥ पुनानाऽसोमधारया। आपोवमा।

र १ २ ३र २ १ २ १ र र
नोआर्षा१सा२यि। आराऽ३। हौ३हो३वा। त्नधायो

२ १ १ ३ ५र
निम्नतस्यासामी१ढमा२यि। उत्सो२३। दा२यिवा२३४औ

र २ ३ १ १ १ ५ र १
होवा। ए३। धिरा२ण्यया२३४५: ॥(१) उत्सोदा३यि

● ऊ० गा० २ व० ४ अ० १ मा० १।

४र५ ४ ५ १ र २र १ २ १ २
वोह्हिरण्ययाः। ऊत्सोदेवः। ह्हिराण्या१या२ः। दुहा३।

१ २ २ १ र ७ १
हौ३ह्होइवा। नऊधर्हि वियम्माधुप्राया२म्। प्रत्ना२३म्।

१ ३ ५र र २ १ ३ १ १ १ १
सा२धा२३४औह्हावा। ए३। स्थमा२सदा२३४५त्॥(२)

५ २ ४ ५ ४र ५ १ २ १ २
प्रत्न७सा३धस्थमासदात्। प्रात्न७सध। स्थमासा१दा

३र २ ५ २ २ १ र ७
२ग्। आपा३। हौ३ह्होइवा। क्षयन्वरुणंवाजायर्षा

१ १ ३ ५र र १
मा२यि। नृभा२३यिः। धौ२ता२३४औह्होवा। ए३।

१ ३ १ १ १ १
त्रिचा२त्तणा२३४५ः (३)॥१६*॥ [३७]

२ र १ १र १र २र १
॥ अर्वापुष्याद्यम्॥ पुनानःसोमधारया। ऊवे२३।

२ १र ३र र १ १ २ १र र २ १ २ र
अपोवमानोअर्षसि। ऊवे२३। आरत्नधायोनिमृतस्यसी

१ १ र २र १र १ २ १
दसि। ऊवे२३। उत्सोदेवांहिरण्ययः। ऊवे२३॥(१)

१ र २र १र २ १ २ १ १ र २र १र २ १ २
उत्सोदेवोहिरण्ययः। ऊवे२३। उत्सोदेवाहिरण्ययः।

१ २ र १ र २ १ २ १ २ १
ऊवे२३। दुहानऊधर्हिव्यम्मधुप्रियम्। ऊवे२३। प्रत्न७

* ऊ० मा० २०प्र० २अ० १६मा०।

२ १ १ १२ २ १ २१ १ २१०१२ १ २
मधस्थमासदत। ऊवे२३। आपृच्छ्यन्धरुणंवाज्यषसि।

२ १ १२१२०११ २ १ १
ऊवे२३। नृभिर्द्यौतोविचक्षणः। ऊवे२३। ऊवे२३।

१ २ २ २ ४२ २ ०१२२२ ऽ
ह्वोवा३ह्वा३। हा३४। औह्वोवा। अर्कोदिवानां२पर

१२ ३ १११ १
मेवियो२मा२३४५न (३) ॥ १० * ॥ [३८]

२ ऽ २ ऽ ४
॥ द्यौतानम ॥ हा३। ओ३ह्वा३। ओ३ह्वा३।

१ १२ २ ३२ ३ ५ १२ २
ह्वायि। उत्सोदेवा२। हिरण्या२३४याः। उत्सोदेवां

३२ ३ ५ १२ २ ३२
२। हिरण्या२३४याः। दुह्वानऊधर्दिवियार२म। मधु

३ ५ १ ३२ ३ ५ २
प्रा२३४याम। प्रत्नंसधा२। स्थमासा२३४दात। ह्वा

ऽ २ ऽ २ २ ४२ २ १
३। ओ३ह्वा३। ओ३ह्वा३। ह्वा३४। औह्वोवा। आ

१ १ १ १
ह्वो२३४५(२) ॥ ८ † ॥ [३९]

१ २१२ ४२ ५ ४ ५
॥ नौधसम ॥ ऊ२३४त। सोदेवोद्धिर। ण्यायाः।

• ऋ० गा० २०म० २अ० १७सा०

† ऋ० गा० २१म० २अ० ८सा०।

१ १२ २ २ १ २ २ १ २ १ २
उत्सोदेवो। ह्वाइयिराण्याइयाः। दू२३ह्वा। नाऊधः।

११ १ २ २ ३ ५ १ २ १
दिवि। याम्। माधुप्रा२३४याम्। प्रा२३त्नाम्। सा

२ १ ५ ३ ५
धस्थमो२३४वा। सा२३४दात्(२)॥ ५ *॥ [४०]

३ ४२ २ ३२ ४ ५ ३ २ ३२ ४२ ५
॥ श्येतम्॥ उत्सोदेवोद्धिर। ण्ययाइ२३४औह्होवा।

१ २ १२ १ ७ ५ ५ १ २ १ २
ऊत्सोदेवः। ह्विराण्ययाइ२३४ः। औ३ह्हा। दुह्हानऊ

३ १ २ १ ३ ५
धः। दाधिवाइ२३याम्। मधूइ२। प्राइ२३४याम्। प्रत्नए

२ १ १ ३ ५२ २ ३
सधास्थाइमा। ऊम्मायि। साइदा२३४औह्होवा। वा

५
२३४ह्व(२)॥ ८ †॥ [४१]

२२ २ २ १ १ १
॥ कण्वबृहत्॥ औह्होपुनानःसोइए। मधाराइयाइ

३२ २ १ २ २ २ १२ २
३४। ह्वाह्होयि। आपोवसानोअर्षसि। आरात्नाइधा

३२ २ १ १ १ २
२३४ः। ह्वाह्होयि। योनिम्रृत। स्यसायिदाइसा२३४

---

* ऊ० गा० २०प्र० १अ० ५सा०।

† ऊ० गा० १२प्र० १अ० ८सा०।

२र २ १ २ १र २ १
यि। ह्वाह्वोयि। उत्सोदा१यिवा२३४:। ह्वाह्वो। हि

२ १ ५ ५ १र २
रा३। ण्या२३४याः। उङ्ग्वा६ह्वाउ। वा॥(१) ओह्वो

१र २ २ १ ३र १ १ २
उत्सोद्वेवा३ए। हिराण्या१या२३४:। ह्वाह्वोयि। उत्सो

१र २ १ २ १र २ १ २
द्वेवोहिरण्ययः। दुह्वाना१ऊ२३४। ह्वाह्वो। धार्ह्विवि

१ २ १र २ १ २ १ २
यम्। मधूप्रा१या२३४म्। ह्वाह्वोयि। दूह्वानऊ।

१ २ १र २ १ २
धर्ह्वायिवा१या२३४म्। ह्वाह्वोयि। मधूप्रा१या२३४म्।

१र २ १ २ ३र २ ३ २ १
ह्वाह्वोयि। प्रत्नाञ्सा१धा२३४। ह्वाह्वो। स्थमा३। सा

५ ५ १र २
२३४दात्। उङ्ग्वा६ह्वाउ। वा॥(२) ओह्वोप्रत्नञ्सधा

१ २ १ २ १र २ १ २
३ए। स्थमासा१दा१दा२३४त्। ह्वाह्वोयि। प्रात्नञ्सध

१ २ १र २ ३र १ १
स्थमासदत्। आपाक्र्का१या२३४म्। ह्वाह्वोयि। धारु

१ २ १ २ १र १ १ २
णंवा। जियार्षा१सा२३४यि। ह्वाह्वोयि। आपृक्क्षम्।

१ २ ३र १ १ २
धरुणा१वा२३४। ह्वाह्वोयि। जियार्षा१सा२३४यि।

३र २ १ २ ४र २ ३. २
ह्वाहोयि। नृभायिद्यौरिना२३४:। ह्वाहो। विचा३।

१ ५ ५
ह्वा२३४णा:। उरुवा६ह्वाउ। वा (३) ॥ ८ * ॥ [४२] ९

तृतीय-तृचे—प्रथमा।

१ ७र ३ २ ४ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ४ १र २ र
प्रतुद्रवपरिकोशन्निषीदनृभिःपुनानोअभिवाजमर्ष।

२ ३ १ २ ४ १ २ ४ २ ३ १ २ ४ १ २ ४ १ २
अश्वन्नत्वावाजिनंमर्जयन्तोच्छावर्हीरशनाभिर्नयन्ति ॥१†॥

हे सोम! "तु" क्षिप्रं "प्रद्रव" अभिद्रवं प्रकर्षेणागच्छ। गत्वा च "कोशं" द्रोणकलशं "परि निषीद" निषण्णो भव। "नृभिः" नेतृभिः "पुनानः" पूयमानः सन् "वाजम्" अन्नं हवीरूपं त्वम् "अभ्यर्ष" अभिगच्छ। "वाजिनं" बलवन्तं "अश्वं न" अश्वमिव तं यथा मार्जयन्ति। तद्वद्वाजिनं त्वां "मर्जयन्तः" शोधयन्तः अध्वर्यु-प्रमुखा ऋत्विजः "बर्हिः" "अच्छ" अस्मदीयं यज्ञं प्रति "रशनाभिः" रशनावदाय ताभिरङ्गुलीभिः "नयन्ति" ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० २२प्र० २अ० ८मा०।

† ऋ० अ० ६, १, ४, १ (२मा० १०६ पृ०)=ऋ० ७, ३, २२, १। ऋ० त्रिष्टुप् एकस्वरोत्तरञ्च।

अथ द्वितीया ।

१ १ २ १ १ २ २ २ १ २ ३ १ २
स्वायुधःपवतेदेवइन्दुरशस्तिहावृजनारक्षमाणः ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ २
पितादेवानाञ्जनितासुदक्षो

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
विष्टम्भोदिवोधरुणःपृथिव्याः ॥ २ * ॥

"स्वायुधः" शोभनायुधः †· "इन्दुः" "सोमः" देवः "पवते" ‡ स च देवः "अशस्तिहा" रक्षोहा ¶ "वृजना" वृजनानि उपद्रवाणि परिहृत्येति शेषः, "रक्षमाणः" § "पिता" "पालकः" "देवानां" "तथा" "जनिता" उत्पादकः "सुदक्षः" शोभन-बलः "दिवः" "विष्टम्भः" विशेषेण स्तम्भयिता "पृथिव्याः" च "धरुणः" धारकः ‖ । एवं महानुभावः पवते । "वृजना"—"वृजन्" —इति पाठो ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७. ३, २२. २ ।

† 'स्वायुधः आसि खड्ग परशु प्रासादिभिरायुधैः स्वायुधः । अथवा वज्र-स्रुक् शस्त्राक्ष प्रभृतिभिर्दक्षायुधैः स्वायुधः' इति वि० ।

‡ 'पवते पूयते' इति वि० ।

¶ 'अशस्तिहा अशस्तयः शत्रवः । अथवा अशस्ता वाचः अशस्तानि वा कर्माणि ये कुर्वन्ति तेषां हन्ता'—इति वि० ।

§ 'वृजना रक्षमाण । वृजनं बलम अथवा वृजनं वशदं कुत्सितं कर्म तेभ्यो रक्षमाण'—इति वि० ।

अतएवोक्तं मनुना—'अग्नौ प्रास्ताऽऽहुतिः सम्यगादित्य मुपतिष्ठते । आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः (३अ० ७६श्लो०)"—इति ।

अथ तृतीया।

२ १ १ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ १
ऋषिर्विप्रःपुरएताजनानामृभुर्धीर उशनाकाव्येन।

१ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
मचिद्विवेदनिहितंयदासामपी

२ २ ३ २ . १ २
च्याऽऽङ्गूष्यन्नामगोनाम् ॥ ३ * ॥ १०

"ऋषिः", अतीन्द्रियद्रष्टा † "विप्रः" मेधावी "पुरएता" पुरतो गन्ता "जनानां" मनुष्याणां "ऋभुः" उरुभासमानः ‡ "धीरः" धीमान् § "उशनाः" एतन्नामकः ऋषिः यः "मचित्" स एव ‖ "काव्येन" स्तोत्रेण "विवेद" लभते। किमिति ?

---

* ऋ० वे० १, ३, २२, ३।

† "साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्तेऽवरेभ्य असाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान्सम्प्रादुरुपदेशाय ग्रायन्तोऽवरे विदमग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदश्च वेदाङ्गानि च। विदमिति मन्नाम विद्म मननमिति वा एतावन्तः समानकर्माणो धातवः"—इति निरु० नै० १, २०।

‡ "पुरएता जनानाम्। पुरत अग्रतः एति सोमः अथवा पुरत एता जनानां सखा। ऋभुर्विभुः"—इति वि०।

§ "धीर धीमत्तम"—इति वि०।

‖ "चित शब्द च शब्दस्यार्थे दृश्यः"—इति वि०। "चिदित्येषोऽनेककर्मा—आचार्यचिदिदं ब्रूयादिति पूजायाम्। ० ० ०। इधिचिदित्युपमार्थे। कुरुमाणं चिदाहरत्यवकुत्सिते ० ० ०।"—इति निरु० नै० १, ४।

उच्यते । "आसां" "गोनां" गवां सम्बन्धि * "यत्" "अपीच्यम्" [अन्तर्हितनामैतत् †] अन्तर्हितं "नाम" नामक मुदकं पयो-लक्षणम् । कीदृशम् ? "गुह्यं" गोपनीयम् ॥ २ ॥ १० ॐ

॥ औशनम् ‡ ॥ प्रात्र् । द्रवापरिकोशाम् । निषी३
दा । नृभाइ:पुना । नो३अभि । वाजमर्षा । अश्वन्न
त्वावाजिनम्मा । जया२३न्ता: । अच्छावर्हाइ: । रशना ।
भा३४३इ: । ना३याभुन्ता६५६इ ॥(१) स्रुवा । युधा:पं
वतेदाइ । वई३न्द्र । अशास्तिहा । वृजना । रश्मा
णा: । पितादेवानाञ्जनिता । सुदा२३त्ता: । विष्टम्भो
दाइ । वो३धरु । णा३४३: । पा३र्थाऽभुइव्या६५६: ॥(२)

---

* "आसां गोनां गवा मादित्यरश्मीनां वा"—इति वि० । "गोः पादान्ते (७. १, ५७)" इति नटि रूपम् ।

† "*. *. *. *. अपीच्यमिति निर्णीतान्तर्हितनामानि"—इति निघ० ३, २५ । "निर्णीतं कस्मान्निर्नीतं भवति"—इति यास्कस्तत् तस्मात्स्थानम् ३, १९ । "अपीच्य मपगत मपचित मपिहित मन्तर्हितं वा"—इति निरु० नै० ४, २५ ।

‡ इद माध्यन्दिनपवमानं तृतीयम् । 'उक्तोमाध्यन्दिनः पवमान' इति वि० ।

§ "विष्टबौशनम्"—इति ख० पु० ।

१ २ १ ८ २ २ १ २८ १
आर्षाः। विप्राःपुरएता। जनाइनाम्। ऋभूर्वीराः।
२ १ ८ २ ३ ४५ १ ८ ७
उश्मना। काव्येना। सचिद्विवेदनिहिताम्। यदाइइ
२ १ २ १ २ १ २
साम्। अपाइचियाम्। गुह्यम्। नाइ४३। माइ
४
गोऽपनाई५६म् (३) ॥ ४ * ॥ [१]

२ १ २ १ ८ २ ३ ४
॥ वैश्वज्योतिषाद्यम् ॥ प्रतुद्रवा। परिको। अन्निषो
५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५ २ १
दा। नृभिःपुना। नोइअभि। वाजमर्षा। अश्वन्त्वा।
२ १ २ ३ ४ ५ २ १८ २ १ ८
वाइजिनम्। मज्मयन्ताः। अच्छाबर्हायिः। रश्मना।
२ २ ४ २ १८ ३
भाइ४३यिः। नाइयापुन्ताई५६यि ॥(१) सुवायुधाः। प
१ ८ २ ३ ४ ५ २ १ २ १ ८ २ ३ ४ ५
वते। देवइन्द्रः। अशस्तिहा। वृजना। रक्षमाणः।
२ १ ८ ८ २ १ २ ३ ४ ५ २ १ ८
पितादेवा। नाइञ्जनि। तासुदत्ताः। विष्टम्भोदायि।
२ १ २ ४ २ १
धाइधरु। णाइ४३ः। पाइर्थापृथिव्याई५६ः ॥(२) ऋषि
२ १ २ २ ३ ४ ५ २ १ ८ २ १ ८
र्विप्राः। पुरएे। ताजनानाम्। ऋभुर्वीराः। उश्मना।

---

० ऊ० गा० १प्र० १अ० ४मा०।

२ २ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
काविधेना। सचिद्विवे। दा३निहि। तंयदासाम्।

२ १ २ २ १ २ ४
अपोचियाम्। गुह्यियम्। ना३४३। मा३गो५ना६५

६म् (३) ॥ ७ * ॥ [२] १०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरार्चस्य प्रथमस्याध्यायस्य तृतीयः† खण्डः।

अथ चतुर्थखण्डे,

प्रथम-सूक्ते—प्रथमा ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभित्वाशूरनोनुमोदुग्धाइवधेनवः।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ २ १ २ ३ १
इशानमस्यजगतःस्वर्दृशमीशानमिन्द्रतस्थुषः ॥ १‡ ॥

हे "शूर" विक्रान्तेन्द्र! "त्वा" त्वाम् "अभि नोनुमः" वयं भृशं मभिष्टुमः। तत्र दृष्टान्तः—"अदुग्धा इव धेनवः" अक्षतदोहा गावः आदरेण वत्सान् प्रति हम्भारवं कुर्वन्ति तद्वत् वयं स्तुमः

---

* ऊ० गा० १९प्र० १अ० ७सा०।

† अत्र सोमो न विद्यते। एषां सूक्तत्रयाणां यथाश्रुतएव पाठो व्यवहृयते।

‡ इ आ० ३, १, ५, १ (१ भा० ४७८ पृ०) = ऋ० वे० ५,३,२१,२। ऋ० अत्रिः। दे० इन्द्रः। एवमेवाचोत्तरत्र। 'इदानीं इशानादि इन्द्रस्य निष्केवल्यानि, वार्हतान्येव गायत्रकाणि'—इति वि०।

त्यर्थः। कीदृशम्? "अस्य" "जगतः" जङ्गमस्य "ईशानम्" ईश्वरं "तस्थुषः" स्थावरस्य "ईशान" "त्वदृग" सर्वदृशं सर्वज्ञ मित्यर्थः॥ १॥

अथ द्वितीया।

१र २र ३ २ १ ११ २र ३ २ ३ १र २र

नत्वावाँ२अन्योदिव्योनपार्थिवोनजातोनजनिष्यते॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

अश्वायन्तोमघवन्निन्द्रवाजिनोगव्यन्तस्त्वाहवामहे॥२*॥११†

हे "मघवन्निन्द्र!" "दिव्यः" दिवि भवः "त्वावान्" त्वत्सदृशः "अन्यः" न जायते। "पार्थिवः" पृथिव्यां भवोऽपि त्वावान् "न जातः" जायते दिव्यः पार्थिवो वा त्वावान् न जातः न च "जनिष्यते" नोत्पत्स्यते लोकद्वयेऽपि त्रिष्वपि कालेषु‡ त्वादृशः कश्चिन्नास्ति त्वमेव समर्थो भवसीत्यर्थः। "अश्वायन्तः" अश्वानिच्छन्तः "वाजिनः" वाज मन्न मिच्छन्तः [इच्छाया मिन् प्रत्ययः] हविष्मन्तो वा "गव्यन्तः" गाइच्छन्तश्च वयं हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "हवामहे" आह्वयामः॥ २॥ ११

* ऋ० वे० ५, २, २१, १। † 'रथन्तरं पृष्ठम्'—इति वि०।

‡ 'भूतभविष्ये उक्ते वर्त्तमान मपि लभ्यते'—इति वि०।

॥ कण्वरथन्तरम् ॥ आभित्वाशूरनोनुमाः। अदुग्धा
आयि। वाइधायिनाइवाः। ईशानमस्यजगतःस्वर्दृशं। ईशा
२३४मैन्द्रो। ईशाना२३४मी। दृशं३माउवा२३। ए३।
स्थुषमा ॥(१) आयिशानमिन्द्रसुस्थुषाः। ईशानमायि।
द्राइशंस्थु३षाः। नत्वावाँअन्योदिवियोनपार्थिवा२३४ऐ
न्द्रो। नजातो२३४ना। जनाइ१उवा२३। ए३। ष्यत.
आ ॥(२) नाजातोनजनिष्यतायि। नजातोना। जाइ.
नायिष्याइतायि। अस्वायन्तोमघवन्निन्द्रवाजिना२३४ऐ
न्द्रो। गव्यन्ता२३४त्वा। दृवाइ१उवा२३। ए३। म
दृमा(३) ॥ १९* ॥ [१]

॥ ककुबुत्तरेकण्वरथन्तरम् ॥ आभित्वाशूरनोनुमाः।
अदुग्धाआयि। वाइधायिनाइवाः। ईशानमस्यजगतः

* ऋ० मा० १२म० १अ० १९सा०।

सुवर्दृशा२३४मैन्द्रो। ईशांना२३४मो। द्रह३आउवा२३।
एइ। स्थुषआ॥(१) आयिशानमिन्द्रस्तुस्थुषाः। नाश्वा
वाइ॒आन्। योदिवियोनपार्थिवा२३४ऐन्द्रो। नजातो
२३४ना। जनाइ१उवा२३। एइ। ष्यतआ॥(२) ना
जातोनजनिष्यतायि। आइश्वायाइन्ताः। मघवन्निन्द्र
वाजिना२३४ऐन्द्रो। गव्यन्ता२३४स्त्वा। हवाइ१उवा२३।
एइ। मन्दआ (३)॥ १ *॥ [२]

॥ वारवन्तीयम्॥ अभित्वाशूआऔहोहायि। रानो
नू२३४माः। अदुग्धाइवधेनावो२३४हायि। ईशानमस्य
जगतःसुवर्दृ३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उक्थवा
२३४शाम्। ईशानम्। आयिन्द्रस्तुस्थू३४। औहो
वा। इहा२३४हायि। औहोवा। इहा२३४हायि।

---

* ऊ० गा० १२प्र० १अ० १खं०।

३र २ ५र ५ १र र र र
औहोइ१२३४। षाः। एह्यायेहा ॥(१) ईशानमाओ

१ १ ३ ५ २ १ ५
होहायि। द्रास्तुस्थू२३४षाः। नत्वावाꣳ२३४हायि।

१ र र र २ ३र ४र ५ १ ३ ५
अन्योदिवियोनपार्था३४। औहोवा। इहा२३४हायि।

२ ३ ५ ३ १र १ ७ २ ३र ४र ५
उरुवा२३४वाः। नजातः। नाजनिष्या३४। औहोवा।

१ ३ ५ ३र २ ५र
इहा२३४हायि। औहोइ१२३४। तायि। एह्यायेꣳ

५ २ र र र र १ २ ३ ५
हा ॥(२) नजातोनाओहोहायि। जानायिष्या२३४ता

२ १ ५ १र र २ ३र
यि। अस्वाया२३४हा। तोमघवन्निन्द्रवाजा३४। ओ

४र ५ १ ३ ५ २ ३ ५ २ १ २
होवा। इहा२३४हायि। उरुवा२३४। नाः। गव्यन्तः।

१ ७र २ ३र ४र ५ १ २ ५ ३र २
त्वाहवामा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहोइ

५र
१२३४। हायि। एह्यायेꣳहा (३) ॥ १२ * ॥ [३] ११

द्वितीय-ऋचे प्रथमा।

१ २ ३१र २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
कयानश्चित्रआभुवदूतीसदावृधःसखा।

२ ३ १ २ ३ २
कयाशचिष्ठयावृता ॥ १ ॥

* ऊ० गा० २२प्र० १अ० १२सा०।

† ऋ० आ०२,२,३.५ (१ भा० ३८४ पृ०) = ऋ० वे० ३. ६, २४, १। 'गायत्र'

"सदाहवः" सदा वर्द्धमानः "चित्रः" चायनीयः पूजनीयः "सखा" मित्रभूतः इन्द्रः "कया" "उती" ऊत्या तर्पणेन "नः" अस्मान् "आ भुवत्" आभिमुख्येन भवेत्? "ग्रचिष्ठया" प्रज्ञावत्तमया प्रज्ञासहितानुष्ठीयमानेन। "कयाहता?"—केन वर्त्तनेन कर्मणा च अभिमुखो भवेत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १२ २२ ३ १ २ ३ १ १

कस्त्वासत्योमदानाम्मꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः।

१ १ १ ३२३१२

हृढाचिदारुजेवसु ॥ २ ॥

"मंहिष्ठः" पूजनीयः "सत्यः" सत्यभूतः "मदानां" मादयितॄणां मध्ये "कः"‡ मदकरः? "अन्धसः" सोमलक्षणस्यान्नस्य रसः¶। "हृढाचित्" हृढमपि "वसु" गवादिकं

साम। सर्वदेवत्यं वामदेव्यं वा; यत्कवतीषु तेन प्राजापत्यं, कोहि प्रजापतिः। यदनिरुक्तासु तेन प्राजापत्यं, अनिरुक्तोहि प्रजापतिः; यद् गायत्रीषु तेनाग्नेयं गायत्रीछन्दोह्यग्निः, यत्पृष्ठेषु न्यदधु तेनैन्द्रम्; —एवं सर्वदेवत्यं वामदेव्यम्—इति वि० एवमेवावोचत्व।

† ऋ० वे० ७, ६, २४, २।

‡ 'कः प्रजापतिः —इति वि०।

¶ 'अन्नस्य चरु पुरोडाशादि-लक्षणस्य'—इति वि०।

धर्मं "आरुजे" आ समन्तात् भङ्क्तुं* हे इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "मघवन्" मादयेत् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ उ. २ ० ३ २ ३ २

अभीषूणःसखीनामविताजरितॄणाम्।

३ १ २ ३ १ १

शतम्भवास्यूतये ॥ ३ † ॥ १२ ‡

हे इन्द्र! "सखीनां" समानख्यातीनां "जरितॄणाम्" "अविता" रक्षिता त्वं "नः" अस्माकं "शतं" शत-सङ्ख्याकम् ऊतये रक्षायै ¶ "सु" सुष्टु "अभि भवासि" अभिमुखो भव §। "शतम्भवास्यूतये"—"शतम्भवास्यूतिभिः"—इति पाठौ ॥ ३ ॥१२॥

२ र ४ २ ४र

॥ महावामदेव्यम् ॥ काऽऽया। नश्चाऽइत्राऽआभु॰

५ १ र २ १र २ १ ५ र २

वात्। ऊ। तीसदावृधःस। खा। औऽहोदाइ।

१ २ ३ र २ १

कयाऽशचाइ। ष्ठयौहोऽ। ऊम्माऽ। वाऽर्त्तोऽऽ५

---

* 'दृढा दृढानि। चिदिति पूरणः। दृढानि यानि वस्तूनि तान्येव कृणु, कुरु भङ्क्ष्व। भङ्क्त्वा, तानि मम प्रयच्छ'—इति वि०।

+ ऋ० वे० ३, ६, १४, ३। ‡ 'मैत्रावरुणं पृष्ठम्'—इति वि०।

¶ 'ऊतये चतुर्थैकवचनमिदं तृतीया-बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् ऊतिभिः सह बहुभिः पालनैरित्यर्थः'—इति वि०।

§ 'शतम्भवासि शतशब्दो बहुवाची। एतस्मादेव यदात् यत् बहुदेवत्यं सूक्तं यदं तेन वैश्वदेव मित्युक्तम्। शतम्भवासि बहुभिः सह दीर्घतमम्—शतं भवसि'—इति वि०।

२ ३ ४ ५ २ ४५ १
ह्वाइ ॥(१) काऽ५स्त्वा। सत्योऽमा३दानाम्। मा।

२४ १ २ २ ४ १ १ २
हिष्ठोमात्सादन्ध। सा। औ३ह्वोह्वाइ। हढा२३चिदा।

३ ४ २ १ १ २ २
रुजौह्वोऽ३। ङम्मा२। वाऽ३सोऽ३ऽ५ह्वायि ॥(२) आऽ५

भ ४ २ ४५ १ २४ १ २४
भी। घृणा३:सा३खीनाम्। आ। विताजरायिढ्वं।

१ ४ १ १ २ २ ४ २
णाम्। औ२३होह्वायि। प्रता२३म्भवा। सियौह्वोऽ३।

१ २
ङम्मा२। ताऽ२योऽ३ऽ५ह्वायि ॥ ५ * ॥ [१]

२ ४ ४ २ ४
॥ खारसौपर्णम् ॥ कयानश्चित्रआ। भूवात्। ङ

३४ ४४५ ४ १ २ ५ १ १ १
तीसदावृधाः। ङम्। सा२३४खा। काया३उवा।

१ २१ ५ ४ ५ २ ४
ग्रचि। ष्टयो२३४बा। वा५र्त्तो६ह्वायि ॥(१) कस्त्वास

४ २ ३ ४४ ४ १ १
त्योमदा३नाम्। मण्हिष्टोमत्सदा। ङम्। धा२३४

५ १ १ २ १४ २१ ४ ४
साः। दार्ढा३उवा। चिदा। रुजो२३४वा। वा५सो

५ १ ४ २ ३ ४ ५४ ४
ईह्वायि ॥(२) अभिषुणःसखी३नाम्। अविताजरा।

● ऋ० गा० १म० १च० ४खा०।

१ २ ५ १ १ २ १२ ११
ऊम्। ढृ२३४णाम्। आताइउवा। भवा। सियो२
५ ४ ५
३४वा। ताप्योह्हायि ॥ ८ * ॥ [२] १२

अथ प्रगाथरूपे ढतीय सूक्ते—

प्रथमा।

१ १ २१ १ २ १ १ २ २ १ २ ३ १२ १२
तंवोदस्मृतीषहंवसोर्मन्दानमन्धसः।

१ १३१२ १२ १ १ १ १ १ १ १ १
अभिवत्सखखरेषुधेनवइन्द्रगीर्भिर्नवामहे ॥ १ † ॥

नोधा नाम ऋषिरिन्द्रं स्तौति। हे ऋत्विग्यजमानाः! "दस्मं" दर्शनीयं "ऋतीषहम्" ऋतयो बाधकाः शत्रवः तेषा मभिभवितारं; पुनः कीदृशम्? "वसोः" वासयितुर्दःखस्य विवासयितुर्निवारयितुः; यद्वा वसोः पाचे निवसतः स्थितस्य तादृशस्यान्धसः सोम-लक्षणस्यावस्य पानेन "मन्दानं" मन्द्यमानं मोदमानं "वः" यष्टव्यत्वेन युष्मत्सम्बन्धिनं तं द्वादश मिन्द्रं "गीर्भिः" स्तुतिलक्षणाभिर्वाग्भिः "नवामहे" [नु स्तवने, शब्देवा] अभिष्टुमः। कुत्रेति "खसरेषु"। [अत्र यास्कः—"खसराण्यहानि खयं सारीणि अपिवा खरादित्यो भवति स एतानि सारयतीति] (निरु० नै० ५, ४) सूर्य-नेतृकेषु दिवसेषु वयम् "अभिष्टुमः" अभितः

---

* ऋ० मा० १०प्र० १अ० ८सा०।

† ऋ० मा० २, १, ५, ४ (१मा० ४८५ पृ०) अ० वे० ९, ९, २, १। नोधाः काक्षीवत आर्षम्। इन्द्रो देवता।

शब्दयामः । तत्र दृष्टान्तः—"वत्सं न" यथा धेनवो नव-प्रसूतिका गावः स्वसरेषु सुष्ठु अस्यन्ते प्रेर्यन्ते गावोऽत्रेति स्वसराणि गोष्ठानि तेषु वत्स मभिलक्ष्य शब्दयन्ति तद्वत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ २ २ २ १ २ २ १ २ २ १ १ २ १ २ २ १ १ २

द्युक्षꣳसुदानुन्तविषीभिनावृतङ्गिरिन्नपुरुभोजसम् ।

३ २ ३ १ २ ३ २ १ १ ३ १ २ १ २ १ २

क्षुमन्तंवाजाꣳशतिनꣳसहस्रिणंमक्षूगोमन्तमीमहे॥२*॥१३†

"द्युक्षं" दीप्तिमन्तं निवासस्थानम् अतिशयितदीप्ति मित्यर्थः । यद्वा, द्युक्षं दिवि द्युलोके क्षियन्तं निवसन्तं "सुदानुं" शोभन-दानं "तविषीभिः" बलै"आवृतम्"आच्छादितम्‡ । पुनः कीदृशम् ? "पुरुभोजसं" सोमादि-हविः-प्रदानेन बहुभिर्यजमानैर्भोजयितव्यम् । यद्वा, बहूनां पालयितारम् इन्द्रम्¶ "क्षुमन्तम्" [टु क्षु क्षये] शब्दवन्तम् अनेन पुत्रादिकं लक्ष्यते ; स्तोत्रादीनि कुर्वाणं "शतिनं सहस्रिणं" शत-सहस्र-सङ्ख्याक-धन-युक्तं "गोमन्तम्" गवादि-युक्तं "वाजम्" अन्नं "मक्षु" शीघ्रं "ईमहे" याचामहे । यद्वा, पूर्वार्द्धो वाज-विशेषणत्वेन योजनीयः—प्रदीप्तं शोभन-दान-योग्यं बलादियुक्तं बहुभिः पुत्रमित्रादिभिर्भोक्तव्य-शब्दादि-युक्तम् अन्नम् इन्द्रं याचामहे इति ॥ २ ॥ १३

° ऋ० वे० ६, ६, २, २। † अत्र नौधसं साम।

‡ 'तविषीभिरावृतम्। तव इव इति वा नाम, बलवद्भिः सखायैरावृतम्। अथवा तविषीभिः स्तोतृभिरृद्धिभिः मनुष्यजातिभिरावृतम्'—इति वि० ।

¶ 'गिरिं न पुरुभोजसम् । न शब्द उपरिष्टादुपचारत्वादुपमार्थीयः, गिरिमिव बहुभोज्यम् । गिरौ पर्वते बहुभोजन-तृणकाष्ठान्युपजीवन्ति । अथवा गिरिर्मेघः तं सर्वं जगदुपजीवति'—इति वि० ।

॥ नौधसम् ॥ ता२३४म्। वोदस्मृतौ। षाडाम्।

वसोर्मन्दा। नाऽमान्धाऽसाः। आ२३भी। वात्सप्र।

स्वस। रायि। षूधेना२३४वाः। आ२३यिन्द्राम्। गा

यिर्भिर्नवो२३४वा। मा२३४च्छे ॥(१) आ२३४यि। इ

न्द्रीर्भिर्नवा। माहायि। इन्द्रगीर्भायिः। नाऽवामाऽ

च्छायि। द्यू२३क्षाम्। स्वदानुम्। तवि। षायि।

भायिरावा२३३र्त्ताम्। गा२३यिरीम्। नपुरुभो२३४वा।

जा२३४साम् ॥(२) गा२३४यि। रिन्नपुरुभो। जासास्।

गिरिन्नपू। रुऽभोजा३साम्। चू२३मा। तंवाजम्।

श्रुति। नाम्। साक्षा२३४ष्णाम्। मा२३चू। गो

मन्तमो२३४वा। मा२३४च्छे ॥ ६ * ॥ [१]

॥ अभीवर्त्तम् ॥ तंवो३दा३साऽम्तीषहोवा। वा

* ऋ० गा० १प्र० १अ० ६सा०

२ २ १ २ १ २
सोर्म्मन्दा। नमाधा१सा२:। आभिवत्सा३१२३४म्।
२ ४५२ २१ २ १ २ २
नस्वसरे। षुधायिना१वा२:। इन्द्राङ्गा१यिभि२:। न
२ १ ३ १११ ४ ४ २ ७ ५
वा३। मा२३४५। छा२३४५यि॥(१) इन्द्रा३ङ्गा३यिभि
५२ ४ ५ १ २२ १ २ १
र्न्नवामद्दोवा। आयिन्द्रगौर्भि:। नवामा१हा२यि। द्यू
२ २ ४५२ २ १ २
क्षुसुदा३१२३४। नुम्नविषी। भिरावा१न्ता२म्। गि
१ २ २ १ १२१११
रायिन्ना१र्पू२। रुभो३। जा२३४५। सा२३४५म॥(२)
५ ४ २ ४ ५२ ४ ५ १ १ १ २
गिरा३यिन्ना३पुरुभोजसोवा। गायिरिन्नपु। रुभोजा१
१ ४ ३ ४५ १ १
सा२म्। क्षूमन्तवा३१२३४। जघ्नतिनम्। सद्मा
२ १ २ २ १ १
सा१विणा२म। मक्षूगो१मा२। तमाह्यि। मा२३
२ १११ १
४५। छा२३४५यि॥ १४ *॥ [२]
५ २ २ ४ ४ ४२ ५ २ १
॥ जनिवाद्यम्॥ तंवोदा३सऽऽस्तीषहाम्। ऊवे
१ २ २ १ १
धो२यि। वसोर्म्मन्दानमान्धा१सा२:। अभिवत्सस्वस्व

---

* ऋ० गा० १प्र० २अ० १४सा०।

सरा२यि। घृधायिमा२३४वाः। इन्द्राइ्ह्योयि। गी
र्भाईयिर्ह्वो। नवा। मा२ह्वा२३४औह्वोवा॥(१) इन्द्रज्ञा
श्यिर्भिर्न्नवामह्वायि। ऊवेह्वो२यि। इन्द्रगीर्भिर्न्नवामा
१ह्वा२यि। द्युक्षुसुदानुन्तविषा२यि। भिरावा२३४
र्त्नाम्। गिरा३यिह्वोयि। नपू३ह्वो। रुभो। जा२
सा२३४औह्वोवा॥(२) गिरिन्ना३पुरुभोजसाम्। ऊवे
ह्वो२यि। गिरिन्नपुरुभो१जामा२म्। द्युमन्तंवाजं
प्रतिना२म्। सह्वासा२३४यिणाम्। मक्षू३ह्वोयि। गो
मा३ह्वो। तमी। मा२ह्वा२३४औह्वोवा। जनिवा२३
४५म्॥ ५ *॥ [३]

॥ प्रुड्वाप्रुड्वीयाद्यम्॥ तंवोदस्ममृतीषहाम्। वसो
र्मन्दानमन्धा२३सा:। अभिवत्सन्नस्वसरेषुधेना२३वा:।

● ऋ० गा० १९म० १ऋ० ५सा०।

इन्द्रङ्गा२३यिर्भा३यिः। ना२। वामा३४ओहोवा। हा
३२४५यि ॥(१) इन्द्रगौर्भिर्न्नवामहायि। इन्द्रगौर्भिर्न्नवा
मा२३हायि। द्युक्षꣳसुदानुन्तविषीभिरावा२३र्त्तम्। गि
रिन्ना२३पू३। हु२। भोजा२४ओहोवा। सा२३४५म् ॥(२)
गिरिन्नपुरुभोजसाम्। गिरिन्नपुरुभोजा२३साम्। क्षु
मन्तवाजꣳशतिनꣳसहस्रा२३यिणाम्। मक्षूगो२३मा३।
ता२म्। ईमा३४ओहोवा। हा२३४५यि ॥ ८ * ॥
॥ जनिञ्चोत्तरम्॥ तवोदस्तमृतौ। षहा३म्। वसो
र्म्मा। हो यि। हो यि। दानामन्धामा२३४:। अभि
वन्सन्नसस्परे। षुधा३यिनावाः। आयिन्द्रङ्गौर्भिर्नवौ३।
हो३यि। मा२हा२३४ओहोवा ॥(१) इन्द्रङ्गौर्भिन्नवा।
महा३यि। इन्द्रङ्गायि। हो यि। हो यि। भिर्न्नावा

---

* ऋ० मा० १अ० १अ० ८सा०।

१ ४ ४ ४ २ ४ ५ ३ २ ४ ५
१मा॒हा२३४यि । द्यु॒क्ष॒सु॒दानु॒न्त॒विषी । मिरा३त्रात्ताम् ।

१ २ ५ १ १ ४ ५ ४ ५
गायिरिन्नपुरुभौ३ । हो३यि । जा२सा२३४औहोवा ॥(२)

४ ३ ४ ५ ४ ३ २ ४ ५ १
गिरिन्नपुरुभो । जसा३म् । गिरिन्ना । होयि । होयि ।

४ ३ ४ ५ ४ ३ ४ ५ ३ २
पुरुभो१जासा२३४म् । क्षुमन्तँवाज२र्शतिनम् । सहा३

४ ५ १ ४ २ ४ ५ २ १
स्रायिणाम् । मात्तूगोमन्तमौ३ । हो३यि । मा२हा

५ ४ ४ २ १ १ १ १ १
२३४औहोवा । जनी३त्रा२३४५म् (३) ॥ १० * ॥ [५]

५ ५ २ ४ ५ ४ ५ १ ४
॥ सौभरम् ॥ तँवो३दा३स्माऽमृतीषहोवा । वसोर्म-

४ ४ १ ७ १ ३
न्दानमन्धसोभिवत्सन्नस्वसा२रायिषुधा२३ । हो३यि । ना

५ १ ४ ६ ३ १ ३
२३४वाः । इन्द्रङ्गीभिः । नवा३हा३यि । मा२हा२३४

५ ४ ४ ३ ४ ५ ४ ५ १ ४
औहोवा ॥(१) इन्द्रा३ङ्गा३यिर्भिर्न्नवामहोवा । इन्द्रङ्गी

४ ४ ४ १ ७ १
र्भिर्नवामहेयुक्षण्सुदानुन्तवा२यिषायिभिरा२३ । हो ।

३ ५ ६ ३ १ ४ ३
वा२३४र्त्तामि । गिरिन्नपु । रुभो३हा३यि । जा२सा२

* ऊ० गा० १५ प्र० १ अ० १० सा० ।

५ र र ५ ४ २ ४ ५ र ४ ५ १
३४ओहोवा ॥(२) गिराइविन्नाइपुरुभोजसोवा। गिरि

र र १ ० १
न्नपुरुभोजसंनुमन्तंवाजएश्रता२यिनाएसद्वा२३। हो।

२ ५ १ र र ऽ २ १ २
त्रा२३४यिणाम। मन्नूगोम। न्तमाइहाइयि। मा२हा

५ र र १ १ १ १ १
२३४ओहोवा। ऊ२३४५ (३) ॥ ४ * ॥ [६]

५ र २ ४ ५ र ४ ५
॥ आज्यकारणिधनं काण्वम्॥ तंवोदाइस्मसतीषहा

१ र २ र १ १ १ २ १
म्। वासोर्मन्दा। नमा२३न्धसाउ। वा३२। अभिवत्सम्।

२ १ १ १ २ १र ५ १ २ १र
नस्वसरायि। षुधेना२३४वाः। आ२३यिन्द्राम्। गौर्भि

२ १र ५ २ ४
र्न। वामा२३४५हा६५६यि ॥(१) इन्द्रङ्गाइयिर्भिर्न

५ र ४ ५ १ १र २ २
वामहायि। आयिन्द्रङ्गौर्भिः। नवा२३महाउ। वा३२।

१ २ १ २ ३ २ १ २ १र ५
द्युक्षंसुदा। नुन्तविषायि। भिरावा२३४र्त्तीम्।

१ २ १ २ १र
गा२३यिरीम्। नपुरु। भोजा२३४५सा६५६म् ॥(२)

१ २ ४ ५ र ४ ५ १ २ १ २
गिरिन्नाइपुरुभोजसाम्। गायिरिन्नपु। रुभो२३जसा

---

* ऊ० गा० २१प्र० १ऋ० ४सा०।

१ २ १ २ २१ २१
उ। वा३२। ह्वमन्तंवा। जंज्ञतिनाम्। सद्दस्रा

५ १ १ १८ २ १८
२३४यिणाम्। मा२३ह्व्। गोमन्तम्। ईमा२३४५ह्वा

२ १११ १
६५६यि। आ२३४५ष् (३) ॥ ९ * ॥ [७]

१ २५४५२
॥ ककुबुत्तरनौधसम् ॥ ता२३४म्। वोदस्मन्ती।

४५ २८ १ १२ १ ८१
षाह्वाम्। वसोर्म्मन्दा। नाइमान्धाइसाः। आ२३

० १ २ १२ ८१ २३ ५ १०
भी। वात्सस्य। स्वस। रायि। षूधेना२३४वाः। आ

२ १ २१ ५ २ ५
२३यिन्द्राम्। गायिर्भिर्न्नवो२३४वा। मा२३४ह्वे ॥(१)

१ ५२४५२ ४५ १ १२
आ२३४यि। न्द्रग्नीर्भिर्न्नवा। माह्वायि। द्यू३ह्वाएह्व

२ १ २ १ २३ ५
३दा। नू२३न्ता। वि। षायि। भायिरावा२३४र्त्ताम्।

१ २ १ २१ ५ ५ ५
गा२३यिरीम्। नपुरुभो२३४वा। जा२३४साम् ॥(२)

१ ५ ५२ ५ २ १२ २
गा२३४यि। रिन्नपुरुभो। जासाम्। ह्व३मान्ता३वा।

---

* ऋ० मा० २१प्र० १अ० ९सा०

१ २ १ २ ३ ५ ५
जा२३९शा। नि। नाम्। साद्वसा२३४यिणाम्। मा

२ १ ५ १ ५ ४ ५
२३चू। गोमन्तमो२३४वा। मा२३४द्वे(३)॥ १७* ॥ [८]

१ १ २ ५२
॥ वाड्धिनं क्रौञ्चम्॥ तंवोदासा३१२३४म्। चतो।

३ २ १ १२ २ ५ ३ २ २
षहा३म्। वसोर्म्मन्दा३१२३४। नम। धसा३:। अ

१ २ ३ ४५२ २ ३ २ २ १
भीवात्सा३१२३४म्। नखसरेषुधे। नवा३:। इन्द्राज्ञा

२ ४ २ १ २
यिर्भा३१२३यिः। नवा५मद्दाउ॥(१) इन्द्राज्ञायिर्भा३१

५२ ३ २ २ १ २ २
२३४यिः। नवा। मद्दा३यि। इन्द्रज्ञीर्भा३१२३४यिः।

५२ ३ १ २ १ २ ३ ४५२
नवा। मद्दा३यि। द्युक्षा९सूदा३१२३४। नुन्तविषी

२ ३ २ २ १ २ ४
भिरा। वृता३म्। गिरायिन्नापू३१२३। रुभो५जसा

२ १ २ ५२ ३ १
उ॥(२) गिरायिन्नापू३१२३४। रुभो। जसा३म्।

२ १ २ ५२ ३ २ २ १ २
गिरिन्नपू३१२३४। रुभो। जसा३म्। क्षुमान्तांवा

ऋ० गा० २१प्र० १अ० १०सा०।

२ ४५ २ २ २ १ १
३१२३४। ज॒ज्ञतिन॒म्हं। स्त्रिणाइम्। मच्छूगोमा
४
३१२३। तमापुयिमद्दाउ (३)॥ १४ *॥ [८] १३

चतुर्थं प्रगाथे—प्रथमा॥

१ १ ३१२३ १ १ ३१ २ ३१ २
तरोभिर्वोविद्दसुमिन्द्र॒ंसबाधऊतये।
३१र २र ३१२ ३२३२उ ३ २ ३ १ २
बृहद्गायन्तःसुतसोमेअध्वरेहुवेभरन्नकारिणम्॥ १†॥

हे ऋत्विजः! "वः" यूयं "तरोभिः" वेगैरश्वैरुपेतं वेगैरेव वा "विद्दसुं" वेदयद्दसुं धनावेदकम् "इन्द्रं" "सबाधः" बाधासहिताः "ऊतये" रक्षणाय "बृहद्गायन्तः" बृहत्साङ्गकं साम गायन्तः सन्तः परिचरतेति शेषः। कुत्र? इति, तदुच्यते—"सुतसोमे" अभिषुत-सोमके "अध्वरे" यज्ञे सोमयागे; अहञ्च स्तोता युष्मदर्थं "हुवे" आह्वयामि। कमिव? "भरं न" भरं भर्त्तारं कुटुम्बपोषकं "कारिणं" स्वहित-करण-शीलं यथा स्वहित-करणायाह्वयन्ति पुत्रादयस्तद्वत्, तथा भूतमिन्द्रं हुवद्दति॥ १॥

अथ द्वितीया।

२उ ३१र २र ३२ ३२उ ३ १२ ३१र १र
नयन्दुध्रावरन्तेनस्थिरामुरोमदेषुशिप्रमन्धसः।
१ ३ १२ ३ १ २ ३१र २र १ २ ३र २र
यआहत्याशुश्चमानायसुन्वतेदाताजरित्रउक्थ्यम्॥२ ‡॥१४¶

---

* ऊ० गा० २२प्र० १अ० १४मा०।

† ह० आ० १, १, ५, ५ (१भा० ४२९ पृ०)=ऋ० वे० ६, ४, ४७, १।

‡ ऋ० वे० ६, ४, ४७, २। ¶ "अत्र कालेयं साम"—इति वि०।

"सुशिप्रं" शोभन-हनुकं शोभन-नासिकं वा ["शिप्रे हनूनासिके वा (६,१०)—इति यास्कः] "यम्" इन्द्रं "दुध्राः" दुर्धराः असुरादयः "न वरन्ते" सङ्ग्रामे न वारयन्ति, तथा "स्थिराः" देवाः "न" वरन्ते, किञ्च "मुरः" मरणशीला मनुष्याः न वरन्ते, "यः" च इन्द्रः "अभ्वसः" सोमलक्षणस्यान्नस्य "मदे" मदाय सोमपानजनिताय* "आदृत्य"†, "शंसमानाय" शंसमानायः "सुन्वते" अभिषवं कुर्वते "जरित्रे" स्तोत्रे च ‖ "दाता" भवति। किम्? "उक्थ्यं" स्तुत्यं धनम् §, तं हुवे इति पूर्वेण सम्बन्धः॥

"मदेषुशिप्रं"--"मदेसुशिप्रम्"—इति षकार-सकारौ पाठौ॥ २॥ १४

---

* मूले "मदेषुशिप्रम्"—इति संहितापाठः, तत्र सायणेन 'मदे' इत्येकं पदं छित्वा सुशिप्रमिति द्वितीयं स्वीकृतं मत एव 'मदे' मदाय, 'सुशिप्रं शोभनहनुकमित्यादि व्याख्यानम्। विवरणकारस्तु "मदेषु" इति छित्वा शिप्रमिति द्वितीयं चिच्छेद, तथाहि—'मदेषु मदनीयेषु सोमेषु सन्निधानभूतेषु, सन्निधान-सप्तम्येषा, अथवा मदेषु पुरतोऽवस्थितेषु'—इति वि०। पदकारकृत-पदपाठोऽपि विवरणकार-नय-पोषकः।

† संहितापाठस्तु "आदृत्या"—इति, तत्र "द्व्यचोऽतस्तिङः (६, ३, १३५)"—इति दीर्घः। आदृत्य आदरं कृत्वेत्यर्थः।

‡, ¶ वैदिकी स्तुतिस्तु द्विधा भवति, अग्नेर्मन्त्रैः स्तोत्रैर्मन्त्रैश्च, तथा चाग्न अप्रगीतमन्त्रात्मक-मन्त्रैः स्तुतिं कुर्वाणः शंसमान उच्यते, तस्मै; किञ्च प्रगीतमन्त्रात्मक-स्तोत्रैः स्तुतिकारी स्तोता, तस्मा चेति विवेकः।

§ 'उक्थ्यो नाम क्रतुः, तमुक्थ्यम्; अथवा उक्थ्यानि सामानि तैर्यः सम्भजते स उक्थ्यः, तमुक्थ्य सामवन्तं क्रतु मित्यर्थः'—इति वि०।

५ २ १ ४२ ४ ४ ५ २ १
॥ मद्दाकालेयम् ॥ तरोभाऽइडर्वीविदद्वसुम् । इन्द्रा७

२ १ २ २२ २ १ २ २ २ १ २
सवा । धञ्जतया२३ड् । बृहद्गायाऽ । ना२३४ः । सुत

४२ ५२ २ १ १ ३ २ २ ५ ४
सोमेअ । ध्वाऽराड् । ऊवाइभरी । वाऽ४३ओ३४वा । न

५ २ १ ४ ५ ४२ ५ २ १ २
काऽपुरिणाम् ॥ १) ऊवेभाऽरन्नकारिणाम् । ऊवाइभ

१ २ ३२ २ १ १ २ १ १ २
राम् । नकारिणा२३म् । नयन्दुध्राऽः । वा२३४ । रन्ते

३ ४ ५२ २ २ १ २ १ २ ५
नस्थिराः । मूऽराः । मदाइषुधौ । वाऽ४३ओ३४वा ।

४ ५ २ ४ ५ ४ ५ १ १ २ १
प्रमाऽपन्धसाः ॥(२) मदेषूऽणाइप्रमन्धसाः । मदाइषुणा

२ ३ २ १ १ २२ २ १ २२
इ । प्रमन्धसा२३ः । यत्राहत्याऽ । णा२३४ । णमाना

४ २ ५ १२ ३ २ २ ५ ४
यस्तु । ध्वाऽनाइ । दानाजरी । वाऽ४३ओ३४वा । त्र

४
जऽपक्थियाम् । हौऽपइ । डा(३) ॥ ७ * ॥ [१]

२ २ २ १ २
॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ तरोभिर्वाज्रीहोहायि । वा

• अ० १मा० १प्र० १ख० ७सा०

३ ५ २ ३ २ १ ५ १
यिद्वा२३४ह्वम्। इन्द्र॰सबाधऊतायो२३४हायि। वृ

२ २ २ १ ३२ ४२ १ २ ५
हद्गायन्तःसुतसोमेअध्वा३४। औहोवा। इहा२३४हा

२ ३ ५ २ १२२ १ ७२ २ ३२
यि। उरुवा२३४रायि। ऊवेभ। रान्नकारा३४। औ

४२ ५ १ ३ ५ ३२ २ ५२
होवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४। णाम्। एहि

५ २२ २ २ १ २ ३ ५
याइहा॥(१) ऊवेभराऔहोहायि। नाकारा२३४यिणाम्।

२२ २ १ १ २ २ २
ऊवेभरन्नकारायिणो२३४हायि। नयन्दुध्रावरन्तेनस्थिरामू

३२ ४२ ५ १ ३ ५ २ ३ ५
३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उरुवा२३४राः।

२ १२ २ १ ७ २ ३२ ४२ ५ १ ३ ५
मदेषु। शायिप्रमन्धा३४। औहोवा। इहा२३४हायि।

३२ २ ५२ ५ २२ २२ १
औहो३१२३४। साः। एहियाइहा॥(२) मदेषुशाऔहो

२ ३ ५ २२ १ ५
हायि। प्रामन्धा२३४साः। मदेषुशिप्रमन्धासो२३४हायि।

१२ २ २ २ ३२ ४२ ५ १३२ ५ २
यआहत्याशुशुमानायसुन्वा३४औहोवा। इहा२हायि। उ

३ ५ २२ १२ २ १ ७ १ ३२ ४२
रुवा२३४तायि। दासाज। रायित्रउक्था३४। औहो

५ १ ३ ५ २ १ ५
वा। इ॒न्दा२३४न्दा॒यि। औ॒न्दो॒३१२३४। याम्। एन्दि
५ ४
या॒ई॒न्दा। न्दो॒५ई। डा३)॥ १५ *॥ [२] १४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायण्यस्य प्रथमस्याध्यायस्य
चतुर्थं खण्डः ॥ ४ ॥

पञ्चमं खण्डं †,

प्रथम ऋचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ . २ ३ २ १ २ ३
स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया।
१ २ ३ १ २ ३ १
इन्द्रायपातवेसुतः॥ १ ‡॥

हे "सोम!" "इन्द्राय" "पातवे" पातुं "सुतः" अभिषुतः त्वं "स्वादिष्ठया" स्वादुतमया "मदिष्ठया" अतिशयेन मादयित्र्या "धारया" "पवस्व" क्षर॥ १॥

---

* ऊ० गा० १० प्र० १ अ० १५ सा०।

† 'इदानीं मार्भवः पवमानः। तत्र बहूनि छन्दांसि—गायत्रीककुब्बृहतीनुष्टुबजगतीति छन्दांसि। पुष्कलोऽग्निः संहितः स्फः ष्ठावाष्ठः अन्नीगव इत्यार्षाणि। सोमः सोमदेवता। सामदेवता सोच्यते विस्तरभयात्'—इति वि०।

‡ 'उक्तो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि०।

‖ ऋ० आ० ५, १, ४, २ (२ भा० ७ पृ०) = ऋ० वे० ७, ७, १६, १।

अथ द्वितीया।

२ १ २१२ २२उ २१२
रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते।
१ १ १ २ २ १ २
द्रोणेसधस्थमासदत् ॥ २ * ॥

"रक्षोहाः" रक्षसां हन्ता "विश्वचर्षणिः" विश्वस्य द्रष्टा सोमः "अयोहते" अयसा हिरण्येन हते [तथा च श्रूयते—"हिरण्यपाणिरभिषुणोति"--इति] "द्रोणे" द्रोणकलशेन अधिषवण-फलकाभ्यां वा† "सधस्थं" सहस्थानं "योनिम्" अभिषवस्थानम् "अभ्यासदत्" आभिमुख्येनासीदति ॥

"अयोहते"—"अयोहत","द्रोणे"—"द्रुणा"—इति च पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ १२ २१ २ ३ १२
वरिवोधातमोभुवोमꣳहिष्ठोवृत्रहन्तमः।
१ १ १ २ ३ १ २
पर्षिराधोमघोनाम् ॥ ३ ‡ ॥ १५

---

* ऋ० वे० ७, ७, १६, १।

† सोमाभिषवे प्रथमं तावत् चतुष्कोणमुख × रत्याकारं फलकद्वयं स्थाप्यते, तदुपरि छिद्रयुक्तमधर्मं विन्यस्य तत्र सोमोऽभिषूयते। ये अधिकृत्य सूयते सोम ऋत्विग्भिः, ते अधिषवणे, अधिषवणे च ते फलके, ताभ्याम्; अधिषवणनामक-फलकाभ्या मित्यर्थः। सदयोमलक्षणेयं तृतीया।

‡ ऋ० वे० ७, ७, १६, १।

हे सोम ! त्वं "वरिवोधातमः" अतिशयेन धनानां दाता* "भुवः" भव † ['वेदः', 'वरिवः'—इति धननामसु (निघ०२, १०,४-५) पाठात्] "संहिष्ठः" दातृतमश्च ‡ भव [सर्वदातृत्व मत्रोच्यते इत्यपुनरुक्तिः] "हवनश्रुत्तमः" अतिशयेन यजूनां हन्ता च भव । किञ्च "मघोनां" धनवतां यजूंषां ¶ "राधः" धनञ्च "पर्षि" अस्मभ्यम् प्रयच्छ § ॥

"भुवः"-"भव"—इति पाठौ ॥ २ ॥ १५

॥ संऽहितम् ॥ स्वादिष्ठयाम । दा२दृष्ठया । पवा
२ । स्वा२दसो । मधा२राया । आ२दिन्द्रा । या२
पा । तवा२३ । हाउवा३ । ह२३४ताः ॥(१) रक्षोहा
विश्व । चा२र्षणीदृः । अभा२द्र । योऽ२ऽनीम् ।
अयो२दातादृ । द्रो२३णे । सा२धा । स्थमा२३ ।

---

* 'वरिव' वरिष्ठः भवः । धातमः धेट् पाने, पानतमः । एकः पानभूतः, एक पानकरः, अन्यः पानतमः । अथवा धाता दाता, स्थापिता वा'—इति वि० ।

† 'भुवः भूर्लोकस्य'—इति वि० ।

‡ 'संहिष्ठः संहनीयतमः'—इति वि० ।

¶ 'मघोनां धनवतां यजमानानाम्'—इति वि० ।

§ 'पर्षि परिपिपर्ति'—इति वि० ।

ह्राउवा३। सा २ ३ ४ दंात ॥(२) वरिवोधात। मो
२ १ २ १ ६ १ १
२ भुवाः। मंह्रा २इ। ष्ठो२३वा। च्चा २न्तामाः।
२ १ २
पा२३र्षी। रा २धो। मा२३। ह्राउवा३। घो२३४
५
नाम (३) ॥ ८ * ॥ [१]

४ २ ४ २ ३ ५
॥ क्षुल्लकवैष्टम्भम् ॥ स्वादाऽयुयिष्ठ। या३मदिष्ठया।
१ २ २ १ २ २ १
पावस्वसो। मधारा१या२३। ह्वोवा३ह्वायि। इन्द्राया
१ २ २ १ ३ ५ २ २
१पा२३। ह्वोवा३ह्वा। तवे। सू२ता२३४औह्वोवा ॥(१)
४ ३ २ ४ २ ४ ५ १ २
रह्वोऽयुह्वा। वा३यिश्चर्षणायिः। आभियोनिम्। अ
१ २ १ २ २ १ २
योह्वा१ता२३यि। ह्वोवा३ह्वायि। द्रोणंसा१धा२३।
१ २ २ १ ३ ५ २ ४ २
ह्वोवा३ह्वा। स्थमा। सा२दा२३४औह्वोवा ॥(२) वराऽ
४ २ ३ २ ५ १ २ २ १ २
युयिवः। धा३तमोभुवाः। मांह्विष्ठोवृ। च्चान्ता१
१ ० २ १ २ १ २
मा२३ः। ह्वोवा३ह्वायि। पर्षायिरा१धा२३ः। ह्वोवा३

---

* ऊ० गा० १प्र० १अ० ८सा०

१ १ ३ ५र र ३ ५
द्वायि। मघो२। ना२३४औंद्वोवा। दी२३४शाः (३)

॥ २० * ॥ [२]

॥ जरावोधीयम् ॥ १र १ २ १ २ १ २
स्वादिष्ठयोवा। मादिष्ठया। प

१ २ र १ २ ४ ५र
वास्वा२३सो। मधाराया। इन्द्रायाऽपा२३ताऽ। वे।

३ २ १ र र १ २ १ २ १
सुतो३४५ई। डा ॥(१) रक्षोद्वावोवा। श्वाचष॑णायिः।

२ १ २ र १ र २ ४
अभायियो२३नीम्। अयोद्वातायि। द्रोणेसा१धा२३स्था

५र ३ १ २ र १ २
म्। आ। सदो३४५ई। डा ॥(२) वरिवोधोवा।

१ र २ १ २ १ २ १
तामोभुवाः। मꣳहायिष्ठो२३वा। ऋद्वन्तामाः। पर्षा

२ ५ ३र २
यिरा१धा२३ः। म। घोनो३४५ई। डा(३)॥ १०॥ [३]

२र र र र १ २ १
॥ द्वाविष्कृतम् ॥ स्वादिष्ठयामदाद्वाउष्ठाया। पव

१ र २ १ २
स्वसो। मधारा२३या। इन्द्रा२द्वो१। या२३पा। त

१र ३ ५र र २ र र र १
वे। स्व२ता२३४औद्वोवा ॥(१) रक्षोद्वाविश्वचाद्वाउर्षा

ऊ० गा० ८प्र० २अ० २०सा०। ऊ० गा० १०प्र० २अ० १०सा०।

१ १ २ २ १२
णायिः। अभियोनायिमं। अयोहारुहतायि। द्रोणे१

२ १२ ३ ५१२ २
द्रोणि। सा२३धा। स्थमा। सा२दा२३४औहोवा ॥(२)

१ २ २ २ २ १ २ १ २
वरिवोधातमोहाउभूवाः। मण्हिष्ठोवा। चदन्ता२३

२ १ २ १
मा२३माः। पर्षा२द्रोणि। रा२३धाः। मघो२।

३ ५१२ २ २ १ १ १ १ १ १
ना२३४औहोवा। द्रविष्कृते२३४५ (३)॥ ७ * ॥ [४]

१२ १ २ १ २ १ २ १२
॥ दक्षिणिधनं मौक्षम्॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठया। पौ

१२ १ २ १ २ १ २
ष्टोवा। इन्द्रश्रुधायि। पवस्वा२३सो। मधारया। इन्द्रा

२ १ २ १ १२
या२३पा३। द्रोवा३द्रा। तवेसू२३४५ता६५६ः ॥(१)

२ २ १२ २ १ २ १२ १२ १ २ १
रक्षोहाविश्वचर्षणिः। औहोवा। इन्द्रश्रुधायि। अभि

२ १२ २ २ १ १ १
योनीम्। अयोहतायि। द्रोणेसा२३धा३। द्रोवा

१ १२ १ २ २ १२ १२
३द्रा। स्थमासा२३४५दा६५६त्॥(२) वरिवोधातमो

१२ १२ १ २ १ २
भुवः। औहोवा। इन्द्रश्रुधायि। मण्हिष्ठो२३वा।

---

* ऋ० मा० ११प्र० २ऋ० ७सा०।

१ २ १ २ १
चक्रन्नमाः। पर्षिरा२३धाः। होवाहवायि। मघो

१ १ १ १ १ १
२३४५नाहे५६म्। दत्ताइया२३४५ (२) ॥ ४ * ॥ [५]

१२ २ २ १२ २ १
॥ गौषूक्तम् ॥ स्वादिष्ठयामदौ। हौहोवाहवायि।

१ २ २ १ १
ष्ठया। पवस्वसोमधौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। रा

१ २ २ १ १ १
या२। इन्द्रायपातवौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। ह

१ ३ ५२ २ १ १२१ १ १
ता२३:। हो२वा२३४ औहोवा। अग्निराऊता२३

१ १
४५:(१)॥ ८ † ॥ [६]

२ २ १२ १ २ १
॥ सहपोत्तरम् ॥ रहोहावौहो२। इया। स्वचर्षा

१ १२ १ २ २ १
णा२यिः। अभियोनौहो२। इया। अयोहाता२यि।

२२ २ १ १ १२ १ १
द्रोणेसधौहो२। इया। स्यमासा२३दा३४३त्। ओ२

३४५ई। ऊ(२) ॥ १३ ‡ ॥ ७]

---

* उ० मा० २प्र० २अ० ४सा०। † ऊ० मा० १३प्र० १अ० ९सा०

‡ ऊ० मा० १३प्र० २अ० १२सा०।

५र २ ४र ५ २ १ २ १ १
॥ काक्षीवन्तम् ॥ स्वादिष्टाऽयामदिष्ठया। पवास्व

१र २ १ ऽ २ ३र २ १ २
सो। मधारयाऽ। ओऽ४। ह्वाहोयि। इन्द्रायाऽ२३पा।

२र २ ३र १ ५ ४ ५ ५ र
तवौहोयि। ओहोऽ२३४वा। सू५तोई६हायि ॥(१) रक्षो

२ ४ ५ २ १ २र १ २ र १ ऽ
ह्वाऽविश्वचर्षणायिः। अभाययोनिम्। अयोह्वताऽयि।

२ ३र २ १र ऽ २ ३र २
ओऽ४। ह्वाहोयि। द्रोणेसाऽ२३धा। स्यमौह्वोयि।

३र १ ५ ४ ५ ५ २ ४र ५र
ओहोऽ२३४वा। सा५दोई६हायि ॥(२) वरिवोऽ३धातमो

२ १ ५र १ २ १ ऽ २
भुवाः। मꣳह्वायिष्ठोवृ। वृहन्तमाऽः। ओऽ४।

३र २ १ २ ३र २ ३र १
ह्वाहोयि। पर्षायिराऽ२३धाः। मओह्वोयि। ओह्वोऽ२३

५ ४ ५
४वा। द्योऽ५नोई६हायि(३) ॥ १५ * ॥ [८]

५र २ ४ऽ ५ ४ ५ १
॥ भासम ॥ स्वादि। ष्ठाऽयामा। ईया। दायि

२ १ २ र ऽ ३र २ १
ष्ठाऽ१या२। पावस्वसो। म। धौऽ३द्यौ। वाहायि। र

१ १ ३ ५र र २ २ २
याऽ२। इन्द्राऽ२३। याऽ२पाऽ२३४ओह्वोवा। तवेसुनाऽ१ ॥(१)

---

* ऊ० गा० १८प्र० १अ० १५सा०।

५ २ ४ऽ ५ऽ ४ ५ १ २
रक्षः। ह्वाऽवायि। स्वा। ईया। चार्षाऽणा ऽयिः।

१ २र ऽ २र ३र २ १
आभियोनिम्। अ। यौऽह्वो। वाह्वायि। हता ऽर

१र १ ३ ५र र २ २ र ३ २
यि। द्रोणेऽर३। सा ऽधाऽ३४औह्वोवा। स्थमासदा

५ २ ४ऽ ५ऽ ४ ५ १ २
ऽत्॥(२) वरि। वोऽधा। ता। ईया। मोमू ऽवा ऽः।

१ २र ऽ २र ३र २ १ १
माऽच्छिष्ठावृ। त्र। ह्वौऽह्वो। वाह्वा। तमा ऽः। पर्षा

१ ३ ५र र २ ३र २
ऽयि। रा ऽधाऽ३४औह्वोवा। मघोना ऽम्(३)॥ १६*॥[९]

२र र १ १ १ र र
॥ शैशवम्॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठाया। पवस्वसोमधा.

२ १र ५ ३ २ ४
रया। इन्द्राया ऽ३४पा। तवाऽयिह्व५ता ६५६:॥(१)

२ र र १ १ १ र र २र
रक्षोह्वाविश्वचर्षाणायिः। अभियोनिमयोह्वतायि। द्रो

१र ५ १ २ ४ २ र र
णेसा ऽ३४धा। स्थमाऽसा५दा ६५६त्॥(२) वरिवोधात

र १ २ १ र २ १ ५
मोभुवाः। मच्छिष्ठोवृत्रहन्तमाः। पषिरा ऽ३४धाः।

२ ४
माऽघोपुना ६५६म्(३)॥ १८†॥[१०]

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ष० १६सा०। † ऊ० गा० १९प्र० २ष० १८सा०।

॥ आग्नसूक्तम् ॥ आग्नौहोवाहायि। स्वादिष्ठया। म
हायि। ष्ठया। ऐहीयैहौ१। पावस्वसोमधारया। ऐ
हीयैहौ१। आ२यि। आयिन्द्रा२यापा२। तवे। सू
२ना२३४ग्नौहोवा। शुक्रआहुता२३४५: (१) ॥ २०*॥[११]

॥ सचासाहीयम् ॥ वरा३४यि। वोधातमोभुवः।
ओ३वा। मण्डिष्ठीवृचद्धन्ता२मा:। पा२र्षायि। रा
२३धाः। मघौनो। वाहा३४२यि। घो२३४नोहचा
यि(३) ॥ ६ † ॥ [१२]

॥ स्वारकौत्सम् ‡॥ स्वादीष्ठा२३। यामदिष्ठयाई
या। पवस्वसोमधारया। पावस्वसो। मधारा२३या।
आयिन्द्रा३हा। यापा३हा। तवेसू२३ना३४३: ॥(१) रक्षो
हीहा२३। विश्वचर्षणिरीया। अभियोनिमयोहते। आ

---

* ऋ० मा० १०म० २अ० २०साम। † ऋ० मा० ११म० १अ० ६सा०।

‡ "ऐडकौत्सम्"—इति ऋ० पु०।

२र १र २ १ २ २ १ २
भियोनिम्। अयोहा२३तायि। द्रोणे३च्चायि। साधा
२ १र २ १र २र १ ४र
३हा। स्थमासा२३दा३४३त्॥(२) वरीव्हीवो२३। धा
र ५ १ २र १ २ १ २र
तमोभुवद्यया। म॒ज्ञिष्ठोवृत्रहन्तमः। मा॒ज्ञिष्ठोवृ।
१ २ १ २ २ १ २ २ १
त्रहन्ता२३माः। पार्षा३यिहायि। राधो३हायि। मघो
२ १
२३ना३४३म्। ओ२३४५ई। डा (३)॥ २० * ॥[१३]१५

अथ प्रगाथकृपे द्वितीय-सूक्ते—

प्रथमा।

१ २ २ १ २ २ १ २ २ १ २ ३ १ २
पवस्वमधुमत्तमइन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमदः।
१ २ २ १ २ ३ १ २
महिद्युक्षतमोमदः॥ १ †॥

हे "सोम!" "मधुमत्तमः" अतिशयेन माधुर्योपेतस्त्वम् "इन्द्राय" इन्द्रार्थं "मदः" मदकरः सन् "पवस्व" क्षर। कीदृशः? "क्रतुवित्तमः" अत्यन्तं प्रज्ञायाः कर्मणो वा लम्भकः, "महि" महनीयः "द्युक्षतमः" अत्यन्तं दीप्तः "मदः" मद-हेतुः॥ १॥

---

* ऋ० गा० २१प्र०१ऋ० २० सा०।

† ऋ० सा० ६, २, ४, १ (१भा० २२२५०)=ऋ० वे० ७, ५, १७, १।

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ १ २
यस्यतेपीत्वावृषभोवृषायतेस्यपीत्वास्वर्विदः।

२ ३ १ २ ३ क २ र ३ २ र ३ २ ३ १ २
ससुप्रकेतोअभ्यक्रमीदिषोच्कावाजन्नैतशः॥ २ *॥ १६

"वृषभः" कामानां वर्षकः इन्द्रः, हे सोम! "यस्य" यं †"ते" त्वां "पीत्वा" "वृषायते" वृषभ इवाचरति, किञ्च "स्वर्विदः" सर्वं जानतः "अस्य" तव † "पीत्वा" पाने सति "सु प्रकेतः" शोभन-प्रज्ञः ‡ "सः" इन्द्रः वृषभः शत्रूणाम् अन्नानि "अभ्यक्रमीत्" अभिक्रामति। तत्र दृष्टान्तः—"न" "एतशः" [—इत्यश्वनाम (निघ० १, १४, १०)] यथा अश्वः "वाजं" सङ्ग्रामम् अभि गच्छति तद्वत्॥

"स्वर्विदः"—"स्वर्दृशः"—इति पाठो ¶॥ २॥ १६

२ १ २ ४ ५ २ ३ ५ २ १ २
॥ सफम्॥ पवस्वाऽमधु। मत्ताऽरऽ३४माः। इन्द्राय

१ १ २ ४ २ ५ २ १
सोमा२। क्रतुवाइत्ताऽमोऽ३। माऽरऽ३४दाः। महाइ।

२ ४ २ ५ २ १ २ ४ ५
द्युत्ताताऽमोऽ३। माऽ३४५दोऽहाइ॥(१) महिद्यू३त्तत।

---

* ऋ० वे० ७, ५, १७, २। † 'अस्य सोमस्य'—इति वि०।

‡ 'सुप्रकेतः सुसृष्टः'—इति वि०।

¶ "पीता"—इति "सर्वतः"—इति, "स्वर्दृतः"—इति च ऋग्वेदीयपाठाः।

१ ३ ५ २ १ २ १ १ २ ४
मोमा२३४दाः। यस्यतेपाइत्वा२। वृषभोवा३र्षा३।

२ ५ २ १ ३ २ ४ २
या३२३४ताइ। अस्या। पीत्वाह्व३वा३ः। वा३४५इदो

५ १ १ २ ४ ५ २ ३ ५ २ १ २
ईंहाइ॥(२) अस्यपी३त्वास्तु। वर्वा२३४इदाः। सस्तुप्र

१ १ २ ४ २ ५
काइतो२। अभियाक्रा३मी३त्। आ३२३४इषाः।

२ १ ३ २ ४ २ ५
अच्छा। वाजान्ना३ए३। ता३४५शोईंहाइ(३)॥ ८* ॥[१]

१ २ १ २ १
॥ शङ्कुसाम॥ पवस्वमा। ए२। धुमा। तमाः।

३ ३ २ १ ३ २ १ १
इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमा२३दाः। माद्यो२द्यू ज्ञा२३।

२ १ ५ ४ ५ १ २ १ ३
तमो२३४वा। माइदोईंहायि (१)॥ ६† ॥[२]

१ २ १ २ १
॥ शङ्कु॥ पवस्वमा। ए२। धुमा। तमाः।

३ ३ २ १ ३ २ १ १
इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमा२३दाः। माद्यो२द्यू ज्ञा२३।

२ १ ५ ४ ५ १ २ १ ३
तमो२३४वा। माइदोईंहायि॥(१) मद्यु ज्ञा। ए२।

१ ३ ३ ३ ३ २ १ ३ २ १
तमाः। मदो। यस्यतेपीत्वावृषभोवृषाया२३ताये। आ

---

* ऊ० गा० १प्र० १अ० ८सा०। † ऊ० गा० २प्र० १अ० ६सा०।

१ २ १ ५ ४ ५
स्वा२पायित्वा२३। सुवो२३४वा। वापुयिदो६ह्वायि ॥(१)

२ १ १र १र १ र र
अस्यपीत्वा। ए२। सुवाः। विदाः। सस्तुप्रकेतोअ

१ १र २ १ १ २ १
भियक्रमीदा२३यिषाः। आच्छा२वाजा२३म्। नश्चो२३४

५ ४ ५
वा। ताप्रुश्चो६ह्वायि(३) ॥८*॥ [३]

२ २ ५
॥ सत्रासाह्वीयम् ॥ पवा३४। स्वमधुमत्तमः। ओ

५ १ र र र १ १
६वा। इन्द्रायसोमक्रतुवित्तमोमा२दाः। मा२ह्वायि।

२ १ ऽ १र, ३र २ १ ५
द्यू२३ह्वा। तमौ३ह्वो। वाह्वा३४३यि। मा२३४दो६

३ २ र ५ ५
ह्वायि ॥(१) महा३४यि। द्युह्वतमोमदः। ओ६वा।

१ र र र र र १ १
यस्यतेपीत्वावृषभोवृषाया२तायि। आ२स्वा। पा२३यि

२ १ ऽ १र, ३र २ १ ५ ५
त्वा। सुवौ३ह्वो। वाह्वा३४३यि। वा२३४यिदो६ह्वा

३ २ र र ५ ५ १
यि ॥(२) अस्वा३४। पीत्वासुवर्विदः। ओ६वा। सस्तु

र र र १ १ २
प्रकेतोअभियक्रमीदा२यिषा। आ२च्छा। वा२३जाम्।

---

* ऊ० गा० ७प्र० १ष० ८खा०।

१ ऽ २र् ३र २ १ ऽ २र् ३र २
नश्चौ३च्चो। वा२३जाम्। नश्चौ३च्चो। वाच्चा३४३यि।

१ ५ ५
ता२३४श्चो६च्चायि(३) ॥ ७ * ॥ [४]

२र र १ २
॥ इडानाꣳसङ्कारम् ॥ औच्चोयिङ्कवा३च्चोयि। पव

४ २ १५ २ २ ४ २र.३ ५
स्वमा३धू३मत्तमः। इन्द्रायसोमक्रतुवा३यित्ता३मोमदः।

२र र १ ३ २ ३ ५ २१र १
औच्चोयिङ्कवा३च्चोयि। मच्चायिद्यू२३४च्चा। तमोमदः।

१ २ ४ ५ ४
इडा२३भा३। एच्चीडा। च्चोऽ५ई। डा ॥ ५ † ॥ [५]

५ २ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १
॥ कालेयम् ‡ ॥ पवस्वा३मधुमत्तमाः। इन्द्रायसो।

२ १ ५ २ २
मा२३। क्रतू३। वा२३४यित्। तमः। मा३दाः।

१ ३ २ २ ५ ४ ५
मच्चायिद्यु२श्चौ। वा३४३श्चो३४वा। तमोऽ५मदाः ॥(१) म

२ ४ ५ ४र ५ २ २र १ २
च्चिद्यू३च्चतमोमदाः। यस्यतेपायि। त्वा२३। वृषा३।

१ ५र २ २ १ ३र २
भो२३४। वृषा। या३तायि। अस्यापीत्वौ। वा३४३

---

* ऋ० गा० ८प्र० २ऋ० ७ सा०। † ऋ० गा० १०प्र० ५सा०।

‡ "मच्चाकालेयम्"—इति ख० पु०।

२ ५ ४ ४ २ ४र १ ४ ५
अ॑ो३४वा । सुवा५र्विदाः ॥(२) अस्यपी३त्वासुवर्विदाः ।

२ १ २ १ २ १ ५र
ससुप्रकायि । तो२३ । अभा३यि । आ२३४ । क्रमीत् ।

२ २ १ ३र २ २ ५ ४
आ३यिषाः । अच्छावाजौ । वा३४३ओ३४वा । नए५त

४
ग्राः । ह्वो५इ डा(३) ॥ ५ * ॥ [६]

२ ५ २ ५
॥ च्यावनम् ॥ पवा२३४ । स्वम । धुमा२३४त्तमा

५ २ ३ ५ २ र १
ई:। ह्वाउ । आयिन्द्रा॑या२३४सो । मक्रतुवितमोमा

५ १ २ २ १ २
दो२३४ह्वायि । मह्वायिद्यू३त्ता३ । तामा२३ह्वा३४३यि ।

१ ५ ५
मा२३४दोई ह्वायि(१) ॥ ४ † ॥ [७]

१ २ १
॥ प्रतीचीनिडङ्काशीतम् ॥ पवस्वमधु । मा २त्तमाः ।

२ २ २ १ ७ ३र २
आयिन्द्रायसोमक्रतुवित् । तमोमदा२३४: । ह्वाह्वोयि ।

१ २ २ १ ४ ५ १ २
मह्विद्युत्ता३माः । मदा । औ३ह्वोवा ॥(१) मह्विद्युत्त ।

१ २र र र १ ७
मो २मदाः । यास्यतेपीत्वावृषभः । वृषायता२३४यि ।

---

* ऊ० गा० १०प्र० २ख० ५सा० । † ऊ० गा० १२प्र० १ख० ४सा० ।

२ २ १ २ २ १ २ ४ ५
ह्वाहोयि। अस्यपीत्वाह३वाः। विदा। औ३होवा॥(२)

२ १ २ २ १ २ १ २ २
अस्यपीत्वास्तु। वा२र्विदाः। सासुप्रकेतोअभिय। क्र

१ ७ ३ २ १ २ २ २ २
मायिदिषा२३४ः। हाहोयि। अच्छावाजान्ना३ए। त

१ ७ ५ ५ ४ ४
ग्ना। औ३होवा। ई डा (३)॥ १८ * ॥ [८]

१ २ ऽ २
॥ धुरासाकमश्वम्॥ पवस्वमा३। हौ३हो३१। धुम

२ ऽ २ २ २ ऽ २
त्तमा३ः। हौ३हो३१यि। इन्द्रायसो३। हौ३हो३१।

२ २ ऽ २ १ २
मक्रतुवित्तमोमदा३ः। हौ३हो३१यि। मद्विद्युक्षा३।

ऽ २ २ २ ऽ २
हौ३हो३१। तमोमदा३ः। हौ३हो३१२३ ४ ५ ई।

डा(३)॥ ८ † ॥ [९] १६

ऋचाग्नके तृतीयसूक्ते—

प्रथमा।

२ ११ २ ३ २ ११ २२ ३ १ २
इन्द्रमच्छसुताइमेवृषण्यन्तुहरयः।

३ २१ २ ३१ २ ३ १ २
शुष्नेजातासइन्दवःस्वर्विदः॥ १ ‡ ॥

---

* ऊ० गा० १३प्र० २ऋ० १८सा०। † ऊ० गा० १४प्र० १ऋ० ८सा०।

‡ ह० भा० ६. २, ३, १ (२भा०२०१पृ०)=ह० वे० ७, ५, ९. १।

"स्वष्टे" [स्वष्टीति क्षिप्रनाम (निघ० ६, १२)] क्षिप्रं "जातास:" जाता: "इन्दव:" पात्रेषु चरन्त: "स्वर्विद:" सर्वज्ञा: "हरय:" हरितवर्णा: "सुता:" अभिषुता: "इमे" सोमा: "हवणं" कामानां वेलायम् "इन्द्रम्" "अच्छ यन्तु" अभिगच्छन्तु ॥

"स्वष्टे"-"स्वष्टि"—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १ १२ ३ १ २८ २ २
अयम्भरायसानसिरिन्द्रायपवतेसुत:।

४ ३ १ १ २ १ १ २ २
सोमोजैत्रस्यचेततियथाविदे ॥ २ * ॥

"भराय" सङ्ग्रामाय "सानसि:" भजनीय:† "सुत:" अभिषुत: "अयं" "सोम:" "इन्द्रार्थं "पवते" चरति यज्ञादिषु चरति। तत: सोम: "जैत्रस्य" ["क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (१, २, २७५वा०)"—इति कर्मण: सम्प्रदान-सञ्ज्ञा, चतुर्थ्यर्थे षष्ठी (२, ३, ३६)] जयशील मिन्द्रं "चेतति" जानाति। "यथा" इन्द्र: "विदे" लोकैर्ज्ञायते तथा जानाति ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७, ५, ८, १।

† 'सानसि: सम्भजिता'—इति वि०

अथ तृतीया ।

२१उ २ २१२ २ २ २ १
अस्येदिन्द्रोमदेष्वाग्राभ्णातिसानसिम् ।
१ २ २१२ २१२ २ २
वज्रञ्चवृषणम्भरत्समप्सुजित् ॥ २ * ॥ १७

"अस्येत्" अस्य सोमस्यैव "मदेषु" सज्ञातिषु† "सानसिं" सर्वैः सम्भजनीयं‡ "ग्राभं" ग्रहीतव्यं धनुः "ग्रभ्णाति" गृह्णाति ["ग्रभ्णातिर्भ्रस्जन्तिसि"—इति भत्वम्] किञ्च "अप्सु-जित्" उदकार्थं हृषस्य जेता¶ । यद्वा, 'आपइत्यन्तरिक्षनाम (निघ० १,३,८) अन्तरिक्षे भवितामकस्य जेता "इन्द्रः" "वृषणं" वर्षितारं "वज्रं च" स्वकीय मायुधं "सम्भरत्" सम्बिभर्तु:§ [विभर्तेरड़ागमः ॥

"ग्रभ्णाति"—"ग्रहीत"—इति पाठो ॥ २ ॥ १७

२ १ २ ४ ५ २ ३ ५
॥ पौष्कलम् ॥ इन्द्रमाश्वस्त । तौई २ ३ ४ माहू ।
२ १ २ १ २ ३ ५ २ १ ८ ७ ;
वृषाणंया । ढ्वारा२३४याः । अुष्टाहूजाता । सहूं२

---

* ऋ० वे० ७, ५, ९, १ ।

† 'मदेषु निमित्तभूतेषु'—इति वि० ।

‡ 'सानसिं सार्वलक्षण्यम्'—इति वि० ।

¶ § विवरणकारस्तु यथाश्रुतं 'समप्सुजित्'—इत्येव पदं व्याख्यातवान्, न तु सनिमि मरहित्याख्यातेन अप्सुजिदिति पदमिति । तथाहि—'समप्सुजित् वज्रा मेषु जेता'—इति ।

३ २ १ ३ १ १ १ १ १
न्दा २ ३ ४ ५ वा ६ ५ ६ः। सुवर्विदा २ ३ ४ ५ः॥(१) अ

१ २ ४र ५ २ २ ५ २ १र २ १ २
यम्भाइराय। साना २ ३ ४ साइः। इन्द्रायपा। वाता

३ ५ २र १ र ७ २
इह्व २ ३ ४ ताः। सोमोजै। त्रा। सचाइहता २ ३ ४ ५

२र १ ३ १ १ १ २ १र २ ४र ५ २
ताई ५ ६ इ। यथाविदे २ ३ ४ ५॥(२) अस्येदीइन्द्रोम। दा

३ ५ २र १ २ १ २ २ ५
इषू २ ३ ४ वा। याभङ्गभणा। ताइसाना २ ३ ४ साइम्।

२ १ ७ ३ २ २ १ १
वज्राच्चवा। षणा २ भा २ ३ ४ ५ रा ई ५ ६ त्। समसुजी २ ३

१ १
४ ५ त (३) ॥ १० * ॥ [१]

२ २ १ २ १
॥ सुज्ञानम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमायि। वृषणं

१ २ २ १ १ २ १ ३
या २। तुहरयाः। अष्टे जाता २। सइ। दा २ वा २

५र २ १ २ १ १ १ १
३४ औहोवा। सुवविदए ३ उपा २ ३ ४ ५ (१) ॥ ७ † ॥ [२]

१ २ १ २ १र २
॥ रोहितकुलीयाद्यम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमे।

२ १र २ १ २ १ २
वृषणंयन्तुहरयःअष्टे जा २ ३ ता। सा २ ३ ई। दावःसुवा ३ १

---

* ऊ० गा० १प्र० १ख० १०सा०। † ऊ० गा० २प्र० १ख० ७सा०।

उवा२३। वी२३४दः॥(१) अंराम्भरा। यसानसिः।
इन्द्रायपवतेसुतःसोमोजा२३यिचा। स्या२३चे। तातियथा३१उवा२३। वी२३४दे॥(२) अस्येदिन्द्राः। मदेषा। ग्राभङ्गृभ्णतिसानसिंवज्रञ्चा२३वा। धा२३णाम्।
भारत्समा३१उवा२३। प्ह२३४जीत्(३)॥१७॥[३]

॥सुज्ञानम्॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमायि। वृषणं
या२। तुह्रयाः। श्रुष्टेजाता२। सह। दा२वा२३
४औह्योवा। सुवर्विदए३॥(१) अयम्भरा। यसानसा
यिः। इन्द्रायापा२। वतेसुताः। सोमोजायिचा२।
स्यचे। ता२ता२३४औह्योवा। यथाविदए३॥(२) अस्ये
दिन्द्राः। मदेषुवा। ग्राभङ्गाभृ्णा२। तिसानसायि

---

* ऋ० मा० ६प्र० १अ० १७सा०।

१ १ १ ० २ ५ ६
म्। वज्रश्चा२। घणम्। भार२रा२३४औहोवा।

१ १ १ १ १ १
समप्स्तुजिदे३उपा२३४५ (३)॥ ८ * ॥ [४]

१ ० १ २ १ २
॥ घ्नुध्यम्॥ इन्द्रमच्छा२ह। ताइमोवा। वृषणं

१ २ ३ २ १ २ १ २ १ १ २ १ २
या। तुह्रयाः। अुष्टेजातासइन्दवःसु। वा२३ः। वि

१ १२ १ २ १
दाउवा। अूधिया२॥(१) अयम्भरा२य। सानसोवा।

१ १ १ १ १ १२१ १ २ १२ १ २ १
इन्द्रायपा। वतेसुताः। सोमोजैचस्यचेतति य। था२३।

२ १२ १ २ २ १ २ १ २
विदाउवा। अुधिया२॥(२) अस्येदिन्द्रो२म। देष्णवोवा।

१२१ १ १ २ ३२ २ १ २ १ १
ग्राभङ्क्तभ्णा। तिसानसायिम्। वज्रश्चवृषणम्भरत्सम्।

२ १२ १ २
आ२३। प्स्तुजाउवा। अुधिया२। ए२३धिया३४३।

१
ओ२३४५हूई। डा (३)॥ २० †॥ [५]

१ १ १ २ १ २
॥ ऐउमायास्यम्॥ आइन्द्राम्। आच्छा। सुता

● ज० मा० ६प्र० २अ० ८खं०। † ज० मा० ८प्र० १अ० २० खं०।

इमायि। वार्षणंयाइ१। तुहरयाः। अूष्टाइ१यि। जा
ता। साइन्दवाइ१:। सवर्वा२३यिदाइ४३:(१) ॥ १६ † ॥[६]

॥ औपगवाद्यम् ॥ इन्द्रमच्छा। सुताइमायि। वृष
र्णा२३या। तुहरयःअुष्टेजाता। सइन्दा२३वाः। सुव
र्वा२३यिदाः ॥(१) अयम्भरा। यस्मानसायिः। इन्द्राया
२३पा। वतेसतःसोमोजैचा। स्यचेता२३तायि। यथा
वा२३यिदायि ॥(२) अस्येदिन्द्राः। मदेषुवा। ग्राभञ्जा
२३र्भ्णा। तिसानसिंवज्रञ्चवा। र्षणम्भा२३रात्। स
मप्द्व२३जीत्। ऐ। ह्रिया२यि। ह्रिया३४ओहोवा।
ए३। उपा३१२३४५ (२) ॥ १ * ॥ [७]

॥ दैवोदासम् ॥ इन्द्रा३१म्। मच्छा३१२३४। सु
ताः। आइविमायि। वृषा३१। णंया३१२३४। तुच।

---

* ऋ० मा० १०म० १ब० १६सा०। † ऋ० मा० १०म० २ब० १सा०।

२ २ ३ २ ३८ २ ५ २
रा३या:। अुष्टा३१यि। जाता३१२३४। सह्। हा३

२ ३ २ ३ २ १ ५ ३ २
वा:। सुवा३१। विदा३:। ओ२३४वा ॥(१) अया३१

३ २ ५८ २ २ ३ २
म्। भरा३१२३४। यसा। ना३सायि:। इन्द्रा३१।

२ २ ५८ २ २ ३८ २ ३८ २
यपा३१२३४। वते। स्व३र्ता:। सोमो३१। जैत्रा३१

४ ५८ २ २ ३ २ ३ २ १
२३४। स्यचे। ता३तायि। यथा३१। विदा३। ओ

५ ३ २ ३ २ ५८ २ २
२३४वा ॥(२) अस्ये३१त्। इन्द्रो३१२३४। मदे। पू३वा।

३८ २ २ ५८ २ २
ग्राभा३१म्। गृर्भ्णा३१२३४। तिसा। ना३सायिम्।

३ २ ३ २ ५ २ २ ३ २
वज्रा३१म्। चवा३१२३४। षणम्। भा३रात्। समा

३ २ १ ५ ३
३१। स्वजी३त्। ओ२३४वा। ऊ२३४पा(३) ॥१०*॥[८]

॥ विशोविशीयम् ॥ २ ८ २८ इन्द्रमच्छम्। स्व३ताइमा

१ २ २ १ २ १
यि। वा३र्षाणा३या। तुदर। य:शू२३ष्टायि। ऊम्मा

२ २ १ ५ १ ३ २
यि। जा३ता३। सा२३४इष्टायि। ओ। ऊवायि।

---

* ऊ० गा० १२प्र० १अ० १०सा०।

५ १ २ २ १
दा२३४वाः। ऊम्माचि। सू३वाः। वा२३४यिदाः।

५र ५ १ र र २र
एहियाहेहा ॥(१) अयम्भराइहम्। याइसानसायिः। आ

१ २ २ १ र २ १
३यिन्द्रायाइपा। वनेसु। तःसो२३माः। ऊम्माचि।

२ २ १ र ५ १ २ २ २
जाइयिचाइ। स्या२३४चेदायि। ओ। ऊवायि। ता

१ २ १
२३४साचि। ऊम्मायि। याइथाइ। वा२३४यिदांयि।

५र ५ २ र र र २र १ १
एहियाहेहा ॥(२) अस्येदिन्द्रोऊम्माइदेषुवा। ग्याइभाङ्गाइ

२ ४ र २ १ २
भ्रंणा। तिसान। सिंवा२३ग्राम्। ऊम्मायि। चाइ

२ १ ५ १ २ २ २
वाइ। षा२३४णेहायि। ओ। ऊवायि। भा२३४

५ १ २ २ १ ५र
रात्। ऊम्मायि। साइमाइ। सू२३४जीत्। एहिया

५
हेहा। हो५ई। डा(३) ॥ १ * ॥ [८]

२ ३र ४र ५
॥ आश्वद्धक्षम् ॥ आंआंओहोवाहायि। इन्द्रमच्छ।।

२ १ र २र २ ३र २ १ २ १
सुताः। इमे। ऐहौंयैहीं१। वार्षणंयन्तु हरयःश्रुष्टा

---

* ऋ० गा० ३प्र० १ब० १सा०।

र २र र ३र२ १
यिजाता। ऐच्छीयैच्छी१। आ२यि। साआ२यिन्दावा
१ ३ ५र र २१ र २ ३
२:। सुवः। वा२यिदा२३४औहोवा। शुक्राआङ्गता
१.१११
२३४५: (१) ॥ १० * ॥ [१०]

२ १ २ १ र २१
॥ जराबोधीयम् ॥ इन्द्रमच्छोवा। सुताइमायि।
१ १ २ र १र २
वृषाणां२३या। तुहरयःआइष्टेजाता। सआयिन्दा१वा२३:
५ ५ १ २ ● २ १ २ १
सू। वः। विदो३४५ई। डा ॥(१) अयम्मरोवा। या
र १ १ २ १ २ र र र १र
सानसायिः। इन्द्रया२३पा। वनेसुतःसोमोजैत्रा। स्य
२ ४ ५ ५र ३ २ २
चयिता१ता२३यिया। था। विदो३४५ई। डा ॥(२) अ
र २ १ २ १ र २१ २र १ १ र
स्येदिन्द्रोवा। मादेषुवा। ग्राभाङ्गा२३४र्भणा। तिसान
१ २ ४ ५ ३ २
सिंवज्रञ्चवा। षणाभ्रा१रा२३त्साम्। अ। सुजो३४५
ई। डा(३) ॥ ११ † ॥ [११]

५ १ २ २र ४
॥ आत्तारम् ॥ इन्द्रम्। अच्छा३४। औहो५सु

---

* ऊ० गा० १३प्र० १अ० १०मा०। † उ० गा० १४प्र० २अ० ११मा०।

२४ १ २ १ १ ३ २ २८
ताद्दमायि। वृषणंयन्तुहरा२३या३४:। अुष्टा३४यिजा

२ १ २ ४ ५ ३ १ १ १ १ ५
ना। सद्दन्द्रवाः। सू३वन्वि। दा२३४५: ॥(१) अयम्।

२ १ ३२ ४ २ ४ १ २ २ १२ २
भरा३४। औहो५यसानसायिः। इन्द्रायपवतेसु२३ता

३२ २ ३२ १ २ १ २ ४२५ २
३४:। सोमो३४जैत्रा। स्यचेततायि। या३थावि। दा

१ १ १ १ ५ २ ३ २ ३२ ४ २४
२३४५यि ॥(२) अस्तेत्। इन्द्रो३४। औहो५मदेषुवा।

१२ २ २ १२ २ ३ २ ३ २
ग्राभङ्क्ष्णातिसाना२३सा३४यिम्। वज्रा३४श्चवा। षण

१ ४ ४ ५ २ १ १ १ १
भरात्। सा३मपस्तु। जो२३४५त्(३) ॥ १७ * ॥[१२] ९७

अथ चतुर्थसूक्ते—प्रथमा ॥

३ १ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १ २
पुरोजितीवोअन्धसःसुतायमादयित्नवे।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २८
अपस्वानंस्प्रथिष्टनसखायोदीर्घजिह्वयम् ॥ १ † ॥

हे "सखायः" सखिभूताः समानख्याना वा हे स्तोतारः! "वः" यूयं "पुरोजितोः" [पूर्वसवर्णदीर्घः (७, १, ३८)] पुरः-

---

* ऋ० गा० १४प्र० १अ० १७सा०।

† ऋ० आ० ६, २, १, १ (२भा० १४१ पृ०)—ऋ० वे० ७, ४, १, १

स्थित-जयस्य "अन्धसः" अदनीयस्य सोमस्य स्वभूताय "सुताय" अभिषुताय "मादयित्नवे" अत्यन्तं मदकराय रसाय "दीर्घ-जिह्वा" दीर्घा जिह्वा यस्य सः ["दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि (४, १, ५९)"—इति ङीषन्तत्वेन निपातितः] तादृशं स्वानम् "अप ग्रथिष्टम" अपग्रथत अपबाध, यथा स्वा राक्षसा वा सुतं सोमं न लिह्नन्ति तथा कुरुतेत्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २२ ७ १ २ २ १ १ २ २

योधारयापावकयापरिप्रस्यन्दतेसुतः।

२ २ २ २ २२

इन्दुरश्वोनक्रत्व्यः ॥ २ * ॥

"सुतः" अभिषुतः "क्रत्व्यः" [क्रत्वीति कर्मनाम (निघ०२, १, २०)] कर्मणि साधुर्यः† इन्दुः सोमः "पावकया" पापानां शोधयित्र्या "धारया" "परि प्रस्यन्दते" परितः क्षरति। कथमिव ? "अश्वोन" यथा अश्वो वेगेन प्रगच्छति तद्वत् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ २ १ १ १ २२ १ १ १ २१ १ १ २

तन्दुरोषमभीनरःसोमंविश्वाच्याधिया।

१ १ २ १ १ २

यज्ञायसन्त्वद्रयः ॥ ३ ‡ ॥ १८

---

* ऋ० वे० ७, ५, १, २। † 'क्रत्व्यः क्रतुमान् वेगवानित्यर्थः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १, ३।

"नरः" कर्मनेतार ऋत्विजः "दुरेषं"* [रीषतेर्हिंसार्थस्य (भ्वा० प०) रेफलोपे दीर्घाभावे, ओषतेर्दाहार्थस्य (भ्वा० प०) वा षलि रूपमिति, सन्देहादनवग्रहः] "तन्दुः" बधं दुर्हं वा सोमम् "अभि" लक्ष्य "विश्वाच्या" सर्वान् कामानञ्चित्रया, कामान् प्रापयित्र्या† "धिया" बुद्धया "यज्ञाय" यज्ञार्थम् "अद्रयः सन्तु" अदारणयुक्ताश्च भवन्तु ॥

"यज्ञायसन्त्वद्रयः"-"यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः"—इति पाठो ॥३॥१८

॥ शावाश्वम् ॥ पुरो३१। जौ३तो। वेत्र। धाइसः।
एहिया। ह। तायमादा। यि। ल्लवा२इ। एहिया२।
अपस्वानाऽस्राइथौ३। ष्टा२३४ना। ऐहा२इ। एहि
या२। सखायोदाइर्घा३जो३। क्षा३४५योऽचाइ ॥(१)
सखा३१। योऽदो। घजि। क्षा३यम्। एहिया।
यो। धारयापा। व। कया२। एहिया२। परिप्र

---

* 'दुरोषम् अरोषमित्यर्थः'—इति वि०।

† 'विश्वाच्या विश्वमाभिन्या'—इति वि०।

‡ 'अद्रयः मेघाः पर्वतस्वभावाः, अथवा अद्रय. अभिषवग्राव्णः'—इति वि०।

स्यान्दाऽताऽइ। सू२३४ताः। ऐहा२इ। एहिया२।
इन्दुरश्वोनाऽकाऽ। त्वा३४५योऽहाइ ॥(२) इन्दू३१ः।
आ३श्वो। नक्ष। त्वाऽयः। एहिया। ताम्। दुरो
षमा। भी। नरा२ः। एहिया२। सोमंविश्वाचीऽया
३। धा२३४या। ऐहा२इ। एहिया२। यज्ञायसान्तू
ऽवाऽ। द्रा३४५योऽहाइ(३) ॥ ११ * ॥ [१]

॥ आन्धीगवम् ॥ पुरोजितीवोऽन्धासाः। सुताय।
माद्रा२३या। ऊम्मा२१ऽ२। लवेऽपस्वानेऽग्रथिष्टना२
३४५। साखाऽउवा। यो२दी। घा२३जी। क्रियाम्।
औ२३ह्वोवा ॥(१) सखायोदीर्घजाऽयिक्रायाम्। योधा
र। यापा२३वा। ऊम्मा२१ऽ२। कयापरिप्रस्यन्दतेसुताः।
आइन्दाऽउवा। आ२श्वो। ना२३का। त्विया। औ

* ऊ० गा० १प्र० १अ० ११सा०।

४ ५ २ २ २ १ २
३च्छोवा ॥(२) इन्दुरस्योनकाऽऽर्त्वायाः। तन्दुरो। षमा

२ १ २ १२ २१२ २२ ३ २
२३भी। ऊम्मा२ऽ१२। नरःसोमंविश्वाचियाधियाऽ१।

२ २ १ २ १ २ ४ ५
याज्ञाऽउवः। मा२स। त्व२३वा। द्रया। औ३च्छोवा।

४
होऽ५ड्ड। डा (३) ॥ १२ † ॥ [२]

४ १२ ४ ५२ २ ३ १ १
॥ नानन्दम् ॥ पुरोजितीवोऽअ। धसाऽः। सू२३४।

२ ५ २ ४ ५ २ ४ ३२४ ५ ३
नायमादयि। नावायि। अपस्वानऽग्नथि। ष्टनो२३

५ ४ ३२४ ५ ३ ५ १ २०
४च्छायि। अपस्वानऽग्नथि। ष्टनो२३४च्छायि। साखा

१ २ १ ५ ४ ५ ३ ४२ ५२ २
योदी। घजो२३४वा। क्षा५योऽ६च्छायि ॥(१) सखायोदी

३ २ १ २ ५ २ ४ ५
र्घजि। क्रियाऽम्। यो२३४। धारयापाव। काया।

३४ २ ४ ५ २ ३ ५ ४ ३ ४ ५२ १
परिप्रस्यन्दते। सुतो२३४च्छायि। परिप्रस्यन्दते। सुतो

५ १ २१ २ १ ५ ४
२३४च्छायि। आयिग्दूराश्वाः। नको२३४वा। त्वा

† ऊ० मा० १प्र० १अ० १२सा०।

५ २ ४ ३ ४र ५ २ २ १
५यो६ह्वायि ॥(२) इन्दुरश्वोनक्ष। त्वियाइः। ता२३४म्।

र ५ र ४ ५ ३र ४ ३ ४र ५ र १ ५
दुरोषमभी। नाराः। सोमंविश्वाचिया। धियो२३४ह्वा

४र ३र ४ ५र ३ ५ १ २ १ १
यि। सोम विश्वाचिया। धियो२३४ह्वायि। याह्यायास।

१ ५ ४
तुवो२३४वा। द्वा५यो६ह्वायि(३) ॥ १८ * ॥ [३]

५ २ २ ४र ५
॥ गौरीवितम् † ॥ पुरः। जिताइयि। वोअन्धसाः।

१ र र १ र २ ४
सुमायमादयित्नवा२३यि। आपश्वाना३१२३म्। अथा

१ र र २ ४ ५ ४
५यिष्टना। साखायोदा३१२३यि। घजोवा। ङ्वा५यो

५ ५ र ३र २ ४ ५ १र र
६ह्वायि ॥(१) सखा। योदा३यि। घजिङ्क्रियाम्। योधा

र १ २ ४
रयापावकया२३। पारिप्रस्था३१२३। दता५यिसुताः।

१ २ ४ ५ ४ ५
आयिन्दुरश्वा३१२३ः। नकोवा। त्वा५यो६ह्वायि ॥(२)

३ २ ४ ५ १ र र
इन्दुः। अश्वो३। नक्षत्वियाः। तन्दुरोषमभीनरा२३ः।

---

* ऋ० गा० २म० २ऋ० १८सा०। † 'मद्यागौरीवितम्'—इति ऋ० पु०।

१ २ ४ १ २ २
सोम विश्वा३१२३। चिया५धिया। याज्ञायसा३१२३।

४ ५ ४ ५
तुवोवा। द्रा५योऽहायि(३) ॥ १३ * ॥ [४]

२ २ २ ३ ५ २२
॥ कार्त्तयशम् ॥ पुरोहाहाउ। जा२३४यितो। वों

१ २ २ ४ ५ २ १ २ ४ ५
आओ३होइ। धासाः। सुताओ३होइ। यामाऽ।

५ २ १ १ २ १ २ २ २
हाउवा। दयित्नवे २। उपा। अपश्वान्श्नथा१यिष्टा

२ १ २ २ ४ ५ ५ २
३ना। सखाओ३होइ। योदाऽ। हाउवा। घजि

१ २ १ १ १ १ २ २ २ ३ ५
क्रियम्। उपा२३४५ ॥(१) सखाहाहाउ। यो२३४दो।

१ १ २ १ ४ ५ २२१ २ २ ५ ५
घजाओ३होइ। क्रायाम। योधाओ३होइ। रायाऽ।

५ २२ १ १ २ १ २ २
हाउवा। पावकया २। उपा। परिप्रस्यन्दनाऽयिहइ

२ १ २ २ ४ ५ ५ २
ताः। इन्दूरौ३होइयि। आस्वाऽः। हाउवा। नक्ष

१ २ १ १ १ १ १ २ ५
त्वियः। उपा२३४५ ॥(२) इन्दुर्हाहाउ। आ२३४स्वाः।

---

* ऊ० गा० ४अ० १ख० १३सा० ।

१ १ २ २ ४ ५ १ १ २ २ ४ ५
नकाऽऔ३ह्वो३। त्वायाः। तन्दूऽऔह्वो३। रोषाऽम्।

५ २ २ २ १ २ १२ २ २ २
ह्वाउवा। अभीमरा२ः। उपा। सोमंविश्वाचियाऽधा

२ १ २ २ ४ ५ ५ २ १
३या। यज्ञाऽऔ३ह्वो३। यासाऽ। ह्वाउवा। तुवद्र्यः।

१ १ १ १
उपा२३४५ (३) ॥ १४ * ॥ [५]

॥ तृतीयं त्रैचम् ॥ ४ २ २ ४ ५ २ ३ २ ४
पुरोजिता। ह्वायि। वोऽग्न

५ ५ १ १ ३ २ ३ ५
साऽए। सुता२यमा२। दयाऽ३४५यि। त्वा२३४वे।

१ २ १ २ ३ १ १ १ २ १ २ १
अपस्वानऽग्नथिष्टना२३४५। सखायो२३दी। घजिङ्का२

२ ३ ४ २ ५ २ २ १ ४ ५ ५
३या३४३म ॥(१) सखायोदा। ह्वो। घजिङ्कियाऽमे।

१ १ ३ २ २ ३ ५ १ १
योधा२रया२। पावा३४५। का२३४या। परिप्रस्यन्द

२ ३ २ २ १ १ १ २
न्तेसुताऽः। इन्दुरा२३श्वाः। नक्षत्वा२३या३४३ ॥(२)

३ ४ ५ २ २ १ ४ ५ ५ १ १२
इन्दुरश्वाः। ह्वो। नक्षत्वियाऽए। तान्दू२रोषा२म।

---

* ऋ० गा० ४प्र० १अ० १४खा०।

२ २ २ ५ १२ २।२ २२ २ १
अभा३४५यि। ना२३४राः। सोमंविश्वाचियाधिया१।

१।२ २ १ २ १
यज्ञायाः२३सा। तुवद्रा२३या३४३ः। ओ २ ३ ४ ५ ई।

डा(३) ॥ ८ * ॥ [६]

॥ ऊर्ङ्ग ड़्त्वाष्ट्रीमाम ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः। सूता

२ २ २ ५ १।१।२ २
२यमा२। दया३४५यि। ना२३४वे। अपस्वानꣳअ्रथि

२।१।१।१ ३ २ २।२ १ २।१ २
ष्टना२३४५। साखायोदा़यि। घर्जिक्का२३या३४३म ॥(१)

१ २ २।२ २ १ २।१ २२ २
सखायोदीर्घजिङ्क्रियाम। योधा२२या२। पात्रा३४५।

३ ५ २ १ २।३ २ ३ २।१ २।१
का२३४या। परिप्रस्यन्दते सुता१ः। इन्दुरस्वाः। नक्ष

२ १।२।१।२ १ २।१ १२
त्वा२३या३४३ः ॥(२) इन्दुरस्वोनक्षत्रियाः। तान्दू२रोषा

२ २ ३ ५ १२ २।१२ २२।२
२म्। अभा३४५यि। ना२३४राः। सोमंविश्वाचियाधि

२ ३।२ २।१ २।१ १ २ १
या१। यज्ञायसा। तुवद्रा२३या३४३ः। ओ२३४५ई।

डा(२) ॥ १० ॥ [७]

---

* ऋ० गा० ६प्र० २अ० ८सा०। † ऋ० गा० ७प्र० २अ० १०सा०।

॥ मधुश्चुतन्निधनम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसाऽए । सुता
यमाऽदायिन्नवाऽ । हाऽहा । औऽहोऽवा । आयिह्वी
२ । अपस्वानाएऽस्माथिष्टनाऽ । हाऽहा । औऽहोऽ
वा । आयिह्वी २ । साखायोदाऽ । हाऽहायि । औ
ऽहोऽवा । आयिह्वी २ । घजि । क्राऽयाऽ३४औह्वो
वा ॥(१) सखायोदीर्घजिह्वियाऽमे । योधारयाऽपावकया
ऽ३ । हाऽहा । औऽहोऽवा । आयिह्वी २ । परिप्रस्या
ऽन्दातेसुताऽः । हाऽहा । औऽहोऽवा । आयिह्वी २ ।
आयिन्दुरस्वाऽः । हाऽहायि । औऽहोऽवा । आयि
ह्वी २ । नक्ष । त्वाऽयाऽ३४औह्वोवा ॥(२) इन्दुरस्वीन
क्षत्वियाऽए । नन्दुरोषाऽमाभोगराऽः । हाऽहा । औ
ऽहोऽवा । आयिह्वी २ । सोमंविश्वाऽधायाधियाऽ ।

१ २ ऽ २ २ १ १ २
ह्वाइह्वा। औइह्वोइवा। आंयिह्वी२। याज्ञायसाइ।

१ २ ऽ ३ २ १ १
ह्वाइह्वायि। औइह्वोइवा। आयिह्वी२। तुव। द्रा·

३ ४५ २ २ १ ३ १ १ १ १
२या२३४औह्वोवा। मधश्चयता२३४५:(३)॥ १५ *॥ [८]

४ ३ ४ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ पुरोऽनुजि। ताइयिवोइश्नन्धा

५ १ २ २ १ २ १ १२
साः। हृतायमा। दाइयायित्नाइवे। अपा२श्वा। नꣳ

२ १ २ २ १ २ २ २
श्वाइथा। ऊम्मायि। ष्टाइना। साखायोदीर्घजाए

१ २ १ २ १२ २ २ २
यिङ्कियाउ॥(१) साखा। योदीर्घजिङ्कायोधारया। पा

१ १ २ १ १ २ १
इवाकाइया। परा२यिप्र। स्यन्दाइइना। ऊम्मायि।

१ २ १ २ २ १ २
ह्वइताः। आयिन्दुरश्वोनका२र्त्वियाउ॥(२) आयिन्दूः।

१ २ २ १ २ २ १२
अश्वोनक्रत्व्यस्तन्दुरोषाम्। आइभायिनाइराः। सोमा

१ २ २ १ २ २ १ २
२ंवि। श्वाचाइइया। ऊम्मायि। धाइया। याज्ञाय

२ २ १ १ १
सन्तुवा२द्र्याउ। वाइ४५ (३)॥ १६ *॥ [९]

---

* ऋ० मा० ८म० २अ० १५मा०। † ऋ० मा० ८म० २अ० १६मा०।

॥ बृहदाग्नेयम् ॥ पुरोजितीवोऽन्धसः। ईयदुयाहा

यि। सुताय। मा। दायित्नाऽ२३४वायि। आऽऔ३४

ह्वो। इयाहायि। अपस्वा। नाम्। अथाऽयिष्टाऽ३

४ना। आऽऔ३४ह्वो। इयाहायि। साखाऽउवा। यः।

दायि। घाजिक्काऽ२३४याम्। आऽऔ३४ह्वो। इयाहा ॥(१)

सखायोदीर्घजिङ्क्रियम्। ईयदुयाहायि। योधार।

या। पावकाऽ२३४या। आऽऔ३४ह्वो। इयाहायि।

परिप्र। स्या। दताऽयिष्टाऽ२३४ताः। आऽऔ३४ह्वो।

इयाहायि। आयिन्दाऽउवा। अ। श्वो। नाक्तवाऽ२

३४याः। आऽऔ३४ह्वो। इयाहा ॥(२) इन्दुरश्वोनक्ष

त्वियः। ईयदुयाहायि। तन्दुरो। षाम्। आभायि

ना२३४राः। आऽऔ३४ह्वो। इयाहायि। सोमंवि। श्वा।

७ २ ५ १ २ ५ ४ ५ १ २
चियार्धा२३४या। आग्नौ३४हो। इयाहायि। याज्ञा

२ १ २३ ५ १२ ५ ४
इउवा। य। सा। त्वद्रा२३४याः। आग्नौ३४हो। इया

५ ४
हा। होऽई। डा(३)॥१७*॥ [१०]

१२र १ २ २
॥ औदुम्बरम्॥ पुरोजितायि। वोआर्न्धसाः। सु

१र २ १ २ ३ ५ १२ र १
तायमाऽ३। दायित्ना२३४वायि। अपस्वानाम्। अथा

१ २१र १० १ ४ २
र्यिष्टना। सखायो२३दी३। घा२३जा३यि। क्ता३४५

५ १ २र र १ १
योऽहायि॥(१) सखायोदायि। घाजार्यिक्रियाम्।

२र१र २ १ २ ३ ५ १२ १
योधार्या३। पावका२३४या। परिप्रस्रा। दातार्

१ २ १ २ १ ४ २
यिसुताः। इन्दुरा२३स्वा३ः। ना२३का३। त्वा३४५यो

५ १२ १ १ २ १ १ र २
ऽहायि॥(२) इन्दुरस्वाः। नाकार्त्विंयाः। तन्दरोषा

१ २ ३ ५ १र२ १
ऽम्। आभोयिना२३४राः। सोमंविश्वा। चार्या

ऊ० गा० पञ्च० २अ० १७सा०।

१ २१२ १ १ ४ २
धिया। यज्ञाया२३साꣳ। त्व२३वाꣳ। द्रा३४५योꣳ
५
त्वायि(३)॥ ३ *॥ [११]

१ २ १ २१
॥ ऐड़मायास्यम्॥ आयिपुराः। जायितायि। वोअन्य
२ २ २ १ २ २
साः। त्वनायमा३१। दयित्नवायि। आपस्वाना३१म्।

२१ २ २ २१ २
अथिष्टना। साखायोदा१यि। घजिङ्का२३या३४३म॥(१)

१ २१ २१ २ २
आयिसखा। योदायि। घजिङ्कियाम्। योधारया३१।

'२२१ २ २११२ २
पावकया। पारिप्रस्या३१। दतेसुताः। आयिन्दुरस्वा

२१ २ १२१ २
३१ः। नक्षत्वा२३या३४३॥(२) आइन्दूः। अस्वो। न

१ २ २ १२१ १
क्रत्वियाः। तान्दुरोषा३१म्। अभीनराः। सोमंविश्वा

२१२ २ २ २१ १
३१। चियाधिया। याज्ञायसा३१। तुवद्रा२३या३४३ः।

१
ओ२३४५ई। डा(३)॥ १७ *॥ [१२]

---

* ऋ० गा० १०प्र० १अ० ३सा०। † ऋ० गा० १०प्र० १अ० १७सा०।

॥ निषेधम् ॥ पुरोजितोवोऽअन्धसाः। सुतायमा।
दयित्नवेऽयि। इहाऽ। आपाऽस्वानाम्। हाहोऽ
४हा। शुथिष्टाऽऽना। इहाऽ। साखाऽयोदायि।
हाहोऽ३४हा। घजाऽयिह्वापुयाऽ५ईम् ॥(१) सखायो
दीर्घाऽजिह्वियाम्। योधारया। पावकयाऽ। इहाऽ।
पाराऽयिप्रास्या। हाहोऽ३४हा। दतेहऽऽताः। इहा
३। आयिन्दुराश्वाः। हाहोऽ३४हा। नक्षाऽर्त्वा
याऽ५ईः ॥(२) इन्दुरश्वोनाऽक्तुयाः। तन्दुरोषाम्।
अभीनराऽः। इहाऽ। सोमाऽंवायिश्वा। हाहोऽ३४
हा। चियाधाऽऽया। इहाऽ। याज्ञाऽयासा। हाहो
२३४हा। तुवाऽद्राऽ५याऽ५ईः। हेऽ३४५ (३) ॥ ६ * ॥ [१३]
॥ आनूपवाध्रस्वम् ॥ पुराःपुराः। जितोवोऽआ

---

* ऋ० गा० १२प्र० १च० ६सा०।

२ १ २ २ १ २ २
न्ना१सा२: । सूतायमा । दयायिन्ना१वा२यि । आपा

१ १ २ २ १ २
२यि । आपा२स्थाना२म् । अधिष्ठा२३ना । सखायो

२ १ ४ २ ५ १ २
३दी३ । घा२३जा३यि । इ्का३४५योऽहायिं ॥(१) सखा

१ २ २ २ १ २ १ २ २ २
सखा । योदीर्घा३जायिङ्का१या२म् । योधारया । पा

१ २ १ १ १२ २ १
वाका१या२ । पारा२यिष्णा२ । दतेसू२३ताः । इ

२ २ १ ४ २ ५
न्दूरा३श्वा३: । ना२३का३ । त्वा३४५योऽहायि ॥(२)

१ २ १ २ २ १ २ १ ५२
इन्दूरिन्दूः । अश्वोना३कार्त्वा१या२: । तान्दुरोषम् ।

१ २ १ १ १२
अभायिना१रा२: । सोमा२ंवायिश्वा२ । चियाधा२३

१ १ २ २ १ ४ २ ५
या । यज्ञाया३सा३ । त्व२३वा३ । द्रा३४५योऽहायि(३)

॥ ११ * ॥ [१४]

३ २ ४ २
॥ वैतच्छव्यमोकोनिधनम् ॥ पू३५रोजि । ता३यिवो

४ ५ १ २ ७ १ ३ ५ १
३अन्धसाः । सूतायमा । दया२यिन्ना२३४वायि । अ

* ज० गा० १२प्र० २अ० ११खं० ।

२ ५ २ १ १ १ १ २ २
पारश्वा२३४नाम। आ३थायिष्टा३ना। साखायोंदीघं।
१ ३ ५२ २ ३ २ ४
जायि। ष्टा२या२३४औहोवा॥(१) सा५५खायः। दा
२ ४ ५ २ २ २ ३ ५
३यिर्घा३जिङ्किया म्। योधारया। पावा२का२३४या।
७ ३ ५ २ १ २ २ १ २ १ २
परा२यिप्रा२३४स्या। दा३तायिस३ताः। आयिन्दुरश्वो
१ १ ३ ५२ २ ३
न। का। त्वा२या२३४औहोवा॥(२) आ५५यिन्दुर।
४ २ ४ ५ १ २ ७ ३
श्वो३ना३क्रत्विया:। तान्दुरोषाम्। अभा२यिना२३४
५ १२ ३ ५ २ १ २ २ १ २
राः। सोमा२ंवा२३४यिश्वा। चा३याधा३या। याञ्चा
२ १ ३ ५२ २ १ १ १
यसन्तु। आ। द्रा२या२३४औहोवा। ओ३का२३
१ १
४ ५:(३)॥ १२ * ॥ [१५]

१ २ २ १
॥ सोमसाम† ॥ पुरोजिता२यिवोअन्धसाः। सुता२
१ १ १ १
यामा२। दयिन्नवायि। आपा२श्नाना२म्। अधि
१ १ २
ष्टना। साखा२योदा२यि। र्घजिङ्का२३या३४३म्॥(१)

● ऋ० गा० १२म० २अ० १२सा०। † 'बृहत्सोम साम'—इति ख० पु०।

१ २ २ १ १ २ १
सखायोदा२यिर्घाजिङ्क्रियाम । योधा२राया२ । पाव

१ १२
कया । पारा२यिप्रास्या२ । दतेसुताः । आयिन्दू२

१ २ २ १ १
रास्वा२: । नक्तवा२३या३४३: ॥(२) इन्दुरस्वो२नक्तवि-

१ १२ १
याः । तान्दू२रोषा२म । अभीनराः । सोमा२ंवा

१२ १ १
यिस्वा२ । चियाधिया । याज्ञा२यासा२ । तुवद्रा२३

२ १
या३४३: । ओ२३४५ई । डा (३) ॥ १३ * ॥ [१६]

१ ५ २
॥ त्रामदस्यवम ॥ पू२३४ । र: । जिताये । वो

१ १ २ ५ २१ १
अन्धसा२३: । सू२३४ । ता । यमा । दायिन्नवा२३

१ २ ५ २१ १ १
यि । आ२३४ । प । स्थानाम । आर्थिष्टना२३ । सा२

२ २ ५ २१ १ २ १ १
३४ । खा । योदायि । घाजिङ्क्रिया३माउ ॥(१) सा

२ २ ५ २१ १ १
२३४ । खा । योदायि । घाजिङ्क्रिया२३म । यो२३४ ।

२ ५ २१ १ १ ५
धा । रया । पावकया२३ । पा२३४ । रि । प्रस्या ।

† ऋ० गा० १२५० २अ० १३सा० ।

१र १र १ ५ १र १
दातेषुता२३:। आ२३४यि। दुः। अस्वाः। नाक्ष

२ १ २ ५ २र १र
त्रिया२३:। ता२३४म्। दु। रोषाम्। आभीनरा

१ ५ २र १र १
२३:। सो२३४। मम्। विश्वा। चौयाधिया२३। यां

र ५ २र१ २ १ १ १ १
२३४। ज्ञा। यसा। त्वद्रया३१उ। वा२३४५(३)॥१४*॥[१७]

४ ३र ४ ५र र ३ २ ४
॥ जनित्रोत्तरम्॥ पुरोजितीवोम्र। धसाइ:। सु

र ५ १ र ७ ३
ताया। होयि। होयि। मादायित्नावा२३४यि। अं

४ ५र २ २ ४ ५ र २र र ऽर १
पस्वानम्। अथा२र्यिष्टाना। साखायोदीर्घजौ३। हो

३ ५र र ३ ४र ५र र
३१यि। क्रा२या२३४औहोवा॥(१) सखायोदीर्घजि।

२ २ ४र र ५ १ र ७
क्रियाइम्। योधारा। होयि। २। यापावकाया२३४।

३ ४ ५ ३ २ ४ ५ १ २ १२र ऽर २
परिप्रस्य। दृता३यिहृता:। आयिन्दुरस्त्रोनकौ३। हो

३ ५र र ३ ४ ३ ४र ५ ३
३१। त्वा२या२३४औहोवा॥(२) इन्दरस्त्रोनक्ष। त्वि

२ ४ ५र १ र २
याइ:। तन्दुरो। होयि। होयि। षामाभी१नारा२३

---

* ऋ० गा० १२प्र० २अ० १४मा०।

३२ ४ ५ २ २ २ ४ ५ १ २ १ ५
४ः । सोमंविश्वा । चियाइधाया । याज्ञायसन्तुवौ३ ।
२ ३ ५२ २ २ १ १ १
ह्वो ३ १ । द्रा २ या २ ३ ४ औहोवा । जनी ३ चा २ ३
१ १
४५म् (३) ॥ ६ * ॥ [१८]

५ ८ २ ४२ ५२ ४ ५
॥ जागतꣳसोमसाम ॥ पुरोजा ३ यितीवोऽन्धसाः ।
१ २ १ २ १ ७ २ ३२ २
सुतायामा २ । दायायित्नवे । ओ३४ । हाहोयि । अ
२ १ ७ १ ३२ २ २ २
पश्चानꣳश्नाउथायिष्टन । ओ३४ । हाहोयि । सखायो
२ १ ३ २ ५२ २ ५
दीर्घजिङ्क्रियम् । दुरा २ । तिना३४औहोवा ॥(१) स
२ २ ४२ ५ ४ ५ १२ २ १ २ १ ७
खायो३दीर्घाजिह्वियाम् । योधाराया २ । पावाकया ।
१ ३२ २ १ ७ २
ओ३४ । हाहोयि । परिप्रस्यन्दा३तायिसुतः । ओ३४ ।
३२ १ २ १ ३ १ ५२
हाहोयि । इन्द्र स्वोनक्रत्वियः । दुरा २ । तिना३४औ
२ ५ २ ४२ ५ ४ ५ २ १२
होवा ॥(२) इन्दु रा३स्वोनक्रत्विया: । तन्दु रोषा २म् ।
२ १ ७ १ ३२ २ २
आभायिनरः । ओ३४ । हाहोयि । यज्ञायसन्त्वद्रयः ।
१ ३ २ ५२ २ ३ ५
दुरा २ । तिना३४औहोवा । उ२३३पा(३) ॥ ६ † ॥ [१९]

* ऊ० गा० १२प्र० १अ० ६सा० । † ऊ० गा० १३प्र० २अ० ६सा० ।

॥ प्रुड्वाप्रुद्वीयाद्यम * ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः। सु

तायमादधित्नाऽवायि। अपस्वानेनाऽनथिष्टाऽना। स

खायोऽदीऽघाऽजिह्वाऽओहोवा। याऽमऽ॥(१) सखायोदीर्घजिह्वियाम्। योधाऽयापावकाऽ

याऽपरिप्रस्यन्दतेह्वाऽताः। इन्दुराऽस्वाऽनाऽ

ह्वाऽओहोवा। याऽयुः॥(२) इन्दुरस्वोनष्टोवि

याः। तन्दुरोषमभीनाऽराः। सोमंविस्वाचियाधाऽ

याऽपावकाऽसाऽढाऽअद्राऽओहोवा। याऽ

युः(३)॥ ३*॥ [२०]

॥ आकूपारम्॥ पुरोजाऽईतीवः। अन्धाऽसाः।

सुताऽयमा। दधित्नवायि। अपस्वानाऽम्। ग्रथिष्ट

नाऽसखायोदीऽघाऽजाऽयि। काऽयुयोऽहा

---

* 'पदान्तः प्रुड्वाप्रुद्वीयम्'—इति ख० पु०। † ऋ० गा० १६म० १ख० २सा०।

२ १र ४र५ २ १ ५ १र
यि ॥(१) सखायो३दौर्घं। जिङ्का२३४याम्। योधा२
१ २र १ २ १ *र १ २
रया। पावकया। परिप्रास्या२। दतेसुताः। इन्द्
१ १ ४ २ ५ २ १
राश्वा२३:। ना२३का३। त्वा३४५योऽहांयि ॥(२) इन्द्
४र५ २ १ ५ १ १र २ र १
रा३श्वीन। कृत्वा२३४याः। तन्द्रा२रीषाम्। अभीनराः।
१र १ र १ १ र १ १
सोमंवायिश्वा२। चियाधिया। यज्ञायासा२३। ह्वर
४ २ ५
३वा३। द्रा३४५योऽहायि(३) ॥ ८ *॥ [२१]
५ र २ ४र ५र ४ ५ २ १ १ १
॥ साध्रम्॥ पुरोजा३यितीवोऽन्धसाः। सुतायमा
३ २ ३ ५ १ २ ३ २ १ १
२। द्याा३४५यि। त्ना२३४वे। अपस्वानश्ग्रथिष्टना२३
२ १ १ २ ३ ५ १ २ ३ ५ ४
४५। साखाओ२३४वा। यादाओ२३४वा। घजा५यि
५ र २ ४र ५ ४ ५ २र १ २ १
ह्वियाम्॥(१) सखायो३दौर्घजिह्वियाम्। योधारया२।
३र २ २ ५ २ १ २र ३ २
पावा३४५। का२३४या। परिप्रस्यन्दतेसुता१:। आयि
२ २ ५ १ २ ३ ५ ४
न्दाओ२३४वा। आस्वाओ २ ३ ४ वा। नका५त्वि

* ऊ० गा० १६प्र० १ख० ८सा०।

५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ २र १ ३
याः ॥(२) इन्दुराइश्वोनक्रात्वियाः। तन्दुरोषाइम्। अ

२ ३ ५ १र २ १र ९र ३ १
भाइ४५यि। नाइ३४राः। सोभंविश्वाचिया। धिया१।

२ ३ ५ १ ९ ३ ५ ४
याज्ञाओ२३४वा। यासाओ२३४वा। तुवा ५ द्रयाः।

४
चोऽईं। डा (३) ॥ ८ * ॥ [२२]

२ र र १ २ र
॥ क्षुल्लकाकालेयम् ॥ पुरोजितोवो१न्धासाः। सुता

१ ३ ५ २ १ २
यमाइ। दयाइयित्नाइ३४वायि। अपा। अपाइ१उ।

१र २ ३ १ १ १ १ २ १र २
वाऽइ। स्वानश्चस्रथिष्टनाइ३४५। सखाहोयियोइ३दौ।

१ २ १ २ र र र
घाजिङ्क्रियम्। इडा २ ३ ॥(१) सखायोदीर्घजा १ यिङ्का

२ र र १र ३ ५ २ १
याम्। योधारयाइ। पावाऽकाइ३४या। परायि।

१ १र १ २ १ १
पराऽइउ। वाऽइ। प्रस्यन्दतेसुताः। इन्दुर्हीआइ३

१ १ २ १ ५ र
स्वाः। नाक्रात्वियः। इडाइ३ ॥(२) इन्दुरश्वोनकाऽर्वा

२ र १ ३ ५ २र १
याः। तन्दुरोषाइम्। अभाऽयिनाइ३४राः। सोमाम्।

---

* ऋ० गा० १६म० १ अ० ९मा०।

२र १र २र ३ २ २ १र
सोमाऽ३१उ। वा२। विश्वाचियाधिया१। यज्ञाहोयि

२ १ २ १ २ १
याऽ२३सा। त्ववद्रयः। इडाऽ२३भाऽ३४३। ओऽ२३४५ई।

डा (३) ॥ ६ * ॥ [२३]

१र १ र २र १
॥ कौच्छाद्यम् ॥ पुरोजितीहोयि। वोअन्धसाः।

१ र १ २ ४ २ १र र
सुतायमाऽ३। दायाऽयिन्नाऽ५वाऽ६५६यि ॥(१) अपस्वानौ

२र १ २ र र १ २ ४
ह्वो। आधिष्टना। सखायोदाऽयि। घाजाऽयिङ्काऽ५या

२ र १र र २र १ २र र
ऽ६५६म् ॥(१) सखायोदौह्वो। घाजिङ्कियाम्। योधा

१ २ ४ २ १ र २र १र
रयाऽ३। पावाऽङ्काऽ५याऽ६५६। परिप्रस्यौह्वो। दानेसु

२ १ २ ४ २
ताः। इन्दुरस्वोऽ३। नाकाऽर्वाऽ५याऽ६५६ः ॥ (२) इन्दु

१ र २र १ २ र १ २
रस्वौह्वो। नाङ्कव्याः। तन्दुरोषाऽ३म्। आभाऽयि

४ २र १ र २र १र ९ र
नाऽ५राऽ६५६ः। सोमंविश्वौह्वो। चीयाधिया। यज्ञाय

१ २ ४
साऽ३। तूवाऽद्राऽ५याऽ६५६ः (३) ॥ ३ * ॥ [२४]

---

* ऊ० गा० १६म० २ख० ६साम। † ऊ० गा० १७म० १ख० २सा०।

५ २ ३ २ ३ २ ४ ५ २ १ २ १
॥ गौतमम् ॥ पुरोजितीवोअन्धसाः । सुतायमा ।

१ १ २ २ ३ ५ १२ २
दयित्नवा२यि । अपा । औह्वो२३४वा । स्वानञ्स्थि

२ १ १ १ १ २ २ ३ ५ ३२ २ ३२
ष्टना२३४५ । सखा । औह्वो२३४वा । योदा । औह्वो

५ ४ ५ २ ३२ २ ३ ५
२३४वा । घजा५यिङ्क्रियाम् ॥(१) सखायोदीर्घजिङ्क्रिया

२२ १ २ १ २२ १ ३ २ ३२ ४
म् । योधारया । पावकया२ । परा । औह्वो२३४वा ।

२ १ २२ ३ २ ३ २ ३ ५ ३ २ ३२
प्रस्यन्दनेसुता१: । इन्दा । औह्वो२३४वा । अश्वा । औ

५ ४ ५ ३ २२ ३ ४ ५
ह्वो२३४वा । नका५र्व्विया: ॥(२) इन्दुरश्वोनक्षत्रिया: ।

२ १ २२ १ २ २ १ ३२ २ ३२ ४
तन्दूरोषाम् । अभीनरा२: । सोमा । औह्वो२३४वा ।

२ १२ २२ ३ २ ३२ ४ ३ २
विश्वाचियाधिया१ । यज्ञा । औह्वो२३४वा । यसा ।

३२ ५ ४ ५
औह्वो२३४वा । तुवा५द्रया: । ह्वो५ई । डा (३) ॥ ४*॥[२५]

२ २ २१ १ १
॥ आत्रेयम् ॥ पुरोजिताये । वोअन्धा२३सा: । ह्व

२ २१२ २ १ २ १ २ ३
तायमा । दयित्ना२३वायि । अपस्वानम् । स्थाथिष्टा

* ऋ० गा० १७अ० १अ० ४सा ।

१ २ ० ४ ५ ४ ५
ना२ । सखायो३दी३ । घजोवा । ङ्गा५यो६ऽहायि ॥(१)

२ २ २ १ २ १२ २ २ २ १२ २
सखायोदायि । घजिङ्गा२३याम् । योधारयापा । व

१ २ १ ७२ १ २ २
का२३या । परिप्रस्य । दातेऽहता२: । इन्दूरा३स्वा३: ।

४ ५ ४ ५ २ १
नकोवा । त्वा५यो६ऽहायि ॥(२) इन्दुरस्वाः । नक्तुवा२३

२ १ २२१ २१२ २ १२ २
याः । तान्दुरोषम् । अभीना२३राः । सोमविश्वा ।

७२ १ २ २ ४ ५ ४ ५
ङ्गायाधाया२ । यज्ञाया३साउ३ । तुवोवा । द्रा५यो६ऽहा

यि (३) ॥ १७ * ॥ [२६]

२ २ २ २
॥ प्रुड्वाप्रुड्वीयाद्यम् ॥ पुरोजितोवोऽन्धा३सा: । सु

१२ २ १ १ २ २
तायमा । दयि । त्नावा२यि । अपाश्वा३ना३म् ।

१ ३ ५ २ १२ २ १ २
अथा२यिष्टा२३४ना । सखायो२३दी । घाजिङ्गियम् ।

२ २ २ २ २ २ १२ १
इडा२३ ॥(१) सखायोदीर्घजिह्वा३याम् । योधारया ।

२ १ १ २ २ १ ३
पाव । काया२ । परायिप्रा३स्या३ । दता२यिह २ ३ ४

ऋ० गा० १७प्र० १ऋ० १७सा०

५ २ १ २ १ २ १ २
ताः । इन्दुरा२३स्वाः । नाक्रत्वियः । इडा२३ ॥(२) इन्दु

२ ० १ २ १ २ १
रस्मोनक्षत्वा३याः । तन्दूरोषाम् । अभी । नारा२ः ।

१२ २ २ १ ३ ५ २ १२ २
सोमांवा३यिस्वा३ । चिया२धा२३४या । यज्ञाया२३सा ।

१ २ १ २ १
तूवद्रयः । इडा२३भा३४३ । ओ२३४५ई ।डा(३ ॥१८*॥[२७]

५ ४ २ २
॥ द्विरभ्यस्तत्वाष्ट्रीसाम ॥ पुरः । जिता३यि । ह्वा३

२ ४२ २ १ ५२ ३ १ ५ २
ह्वायि । वोअन्धासा२३४ः । सुता । यमा३ । ह्वा३ह्वा ।

३ २ १ ५ ४२ १ २ २ ३
दयित्नावा२३४यि । अप । स्वाना३म् । ह्वा३ह्वा । अ

२ १ ५२ ३२ १ २ २ ३ १
ग्निष्टाना२३४ । सखा । योदा३ । ह्वा३ह्वायि । घजा३

१ ५ ४ ५ ५ २ ३२ १
ह्वो२३४ । वा । ह्वा५योऽह्वायि ॥(१) सखा । योदा३ ।

२ २ ४ २ १ ४ ५२ ४ २ २
ह्वा३ह्वायि । घजिह्वाया२३४म् । योधा । रया३ । ह्वा३

२ ४२ २ १ ५ ३ २ २ २ २
ह्वा । पावकाया२३४ । परि । प्रस्या३ । ह्वा३ह्वा । द

२२ १ ५ ४ २ २ ४ २ १
तेह्वता२३४ः । इन्दुः । अस्वा३ः । ह्वा३ह्वा । नकाश्चो

---

* ऊ० गा० २० प्र० १ च० १८ सा० ।

५ ४ ५ ५ २ २
२३४। षा। त्वा५योई३हायि ॥(२) इन्दुः। अस्वाइः।

२ २ ३२१ ५ ३२ १ १ १
इाइहा। नक्षत्वाया२३४ः। तन्दु। रोषाइम्। इाइहा

३२२१ २ ५ ३ २ २ २
यि। अभीनारा२३४ः। सोमम्। विस्वाइ। हाइहा।

३२२१ ५२ ३२ २ २ ३२
चियाधाया२३४। यज्ञा। यसाइ। इाइहा। तुवाइ

१ ५ ४ ५
होइ२३४। वा। द्रा५योई३हायि(३) ॥ १२ * ॥ [२८]

२१२ २२ २ १ २ १
॥ आ॒निधनत्वाष्ट्रीसाम्॥ पुरोजितीवोअन्धसः। सु

२ ३ २ १ ७
ताइाउ। यमाइदायित्नावा२यि। यमाइहो। दया

३ ५ १ २ १ ७ ३२ २
२यित्ना२३४वायि। अपस्वानाइ॒स्माधिष्टाना२। स्वाना

१ ७ ३ ५ २ २ २ ३ १ ७
इ॒हो। दथा२यिष्टा२३४ना। सखायोदीइर्घाजिक्राया

२ २ १ २ ३ ५ १ ३
२म्। सखाइहोयि। योदो२३४हायि। घा२जा२३४

५२ २ २ १ १ १ १ १ २ २ १
औहोवा। क्रियाइमा२३४५॥(१) सखायोदीर्घजिक्रि

२ १२ २३ २ १ ७ ३ २ १
यम्। योधाहाउ। रयाइपावकाया२। रयाइहो।

---

* ऋ० गा० २०प्र० २अ० १२सा०।

७र ३ ५ १ १ ७र ३१ १
पावा२का२३४या। परिप्रस्या३न्दातेऽता२ः। प्रस्या३हो।
७ ३ ५ २ ४ १७ ३ २
दता२यिऽह२३४ताः। इन्दुरस्रो३नाऽत्वाया२ः। इन्दू.
१ ३ ५ १ ३ ५र र २
३र्वीयि। अस्रो२३४हायि। ना२का२३४औहोवा। त्वि
१ १११ १ २१२र१ २ १ १ र
याऽआ२३४५॥ २) इन्दुरस्रोनऽत्वियः। तन्दूहाउ। रो
४ १ २ ३र २ १ ७ ३
षाऽमाभो१नारा२ः। रोषा३ऽहोयि। अभा२यिना२३
५ २र ४ १ ७र ३ २ १ ७
४राः। सोमंविस्वा३चायाधाया२। विस्वा३हायि। चि
८ ५ २ १७ ३ २ १
या२धा२३४या। यज्ञायसा३न्त्ववद्राया२ः। यज्ञा३हो
३ ५ १ ३ ५र र २ १
यि। यसो२३४हा। त्वा२वा२३४औहोवा। द्रया३आ
१ १११
२३४५ ३) ॥ १३ * ॥ [२९]

२ र र र र
॥ क्रौञ्चम् ॥ सखायोदायि। सखायोदायि। घजि
१ २र र १ र १ २ १
ङ्क्रियाम्। योधारायाऽ२। पावकया। परिप्रास्याऽ२।
१ २ १ २ १ २
ओन्दाता१यिऽहताऽ२ः। ओइन्दुरा२३स्वाः। नाऽत्वियः।
१ २ १
इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई। डा.२) ॥ १ † ॥ [३०]

---

* ऊ० गा० २०प्र० २अ० १३सा०। † ऊ० गा० २१प्र० २अ० १सा०।

ककुब्त्तरंयज्ञायज्ञीयम्॥ पुरोऽ५जि। ताइयिवोइ
४ ५ १८ २ १ २ २ १
अन्धासाः। हूतायमा। दाइयायित्नाइवे। अपा२
१८ २ १ २ २ १५ ८ ८
स्वा। नऽस्राइइथा। ऊम्मायि। ष्टाइना। सास्वायो
८ ३ २ १ २ १८ २ १
दीर्घजाइयिङ्क्रियाउ॥(१) यांयाः। धारया। पाइवा
२ २ १ १ २ १ २
काइया। परा२यिप्र। स्यन्दाइइता। ऊम्मायि। ह
२ १ ८ ३ ५ १ ५
इताः। आयिन्दुरस्वोनकाइर्वियाउ॥(२) यास्ताम्।
१ ८ २ १ २ २ १८ १ ८
धुरोषाम्। आइभायिनाइराः। सोमाइवि। स्वाचा
५ १ २ २ १५ ८ ५ २
२इया। ऊम्मायि। धाइया। याऊंयासन्तुवाइद्रया
११
उ। वाइ४५(५)॥ ३ *॥ [३१]

४ ५८ ४ ८ ८ ५ १
॥ अभ्यामाकूपारम्॥ पुरोजितीवोअन्धसः। पू२३४।
८ ८ ८ ४ ३ ८ ४ ८ १८ १
रोजितौह्योऽयिवोअन्धमाः। सुतायमादयित्नवे। ह२३४।
८ ८ ४ ५ ४ ३८ ४ ५ १
तायमौह्योऽदयित्नवायि। अपस्वान२ऽग्नथिष्टनम्। आ

---

* ऊ० गा० २१प्र० ३अ० ३मा०।

२ २ ४ ३ २ ४२ २ ५
२३४। पश्वानीच्होऽग्रथिष्टना। सखायोदीर्घजिङ्क्रियम्।

१ २ २ २ ४ ५ २ २
सा२३४। खायोदीच्होऽर्घजि। ङ्क्राऽयोऽहायि॥(१) सखा

४२ २ ५ १ २ २ २ ४
योदीर्घजिङ्क्रियम्। सा२३४। खायोदीच्होऽर्घजिङ्क्रिया

३२ २ ४ २ २ ५२ १ २ २ २
म्। योधारयापावकया। यो२३४। धारयोच्होऽप्रा

४ ४ ३ ४ २ ५ १ २
वकया। परिप्रस्यन्दतेसुतः। पा२३४। रिप्रस्योच्होऽन्द

२ ४ ३ ४ ३ ४२ ५ १ २
तेसुताः। इन्दुरस्योनक्षत्रियः। आ२३४यि। दुरस्यो

४ ५ ३ ४ ३ ४ ५
च्होऽनक्ष। त्वाऽयोऽहायि॥(२) इन्दुरस्योनक्षत्रियः।

१ २ ४ ३ ४ ३२ ४ २ ५
आ२३४यि। दुरस्योच्होऽनक्षत्रियाः। तन्दुरोषमभीनरः।

१ २ २ २ ४ ३२ ४३२ २ ४
ता२३४म्। दुरोषोच्होऽअभीनराः। सोमंविश्वाच्याधि

५२ १ २ २ ४ ३२ ४
या। सो२३४। मंविश्वोच्होऽचियाधिया। यज्ञायस्वज्व

५ १ २ २ ४ ५
द्रयः। या२३४। ज्ञायस्योच्होऽन्त्वव। द्राऽयोऽहा

यि(३)॥ ६ * ॥ [३२]

---

* ऋ० मा० २१अ० १व० ६सा०।

४ १र ४ ५र र २ २ ३र ४र ५ १
॥ श्यैतम् ॥ पुरोजितीवोम। धसा३४ओद्दोवा। सू
र २ र १ ७ ५ ५ १
तायमा। दयायिल्लवा२३४यि। ओर्ह्वा। अ। पाश्वा
२ १ २ ५ १ र र २
२ृनाम्। अथा२यि। ष्टा२३४ना। सखायोदायिर्घा३
२ १ २ ५र र
जा। ङम्मायि। कार्या२३४ओद्दोवा(३) ॥ ७ * ॥[३३]

१ र ५र र ४ ५
॥ नौधसम् ॥ पू२३४। रोजितीवोम। धासाः।
१ १र २ १ २ १ १ २ १र
सुतायमा। दा३यायित्ना३वे। आ२३पा। स्वा। नाम्।
२ ३ ५ १ २ १ २ १ ५ ३
श्रायिष्टा२३४ना। सा२३खा। योदीर्घजो२३४वा। क्री
५
२३४याम्(३) ॥ ८ * ॥ [३४]

१ २ १ ३र १
॥ मद्दादैर्घतमसम् ॥ ह्याउपुराः। जायिती। वो। अन्ध
२ १ २ १ र र र र
साः। अन्धसाः। सुतायमादयित्नवेऽपस्वानꣳश्रथा
२ १ १ र र २
यि। ष्टा१ना२। ष्टाना२। सखायो। दीर्घजाः३यि।
१ ३ ५र र १ २ १ २र १
ह्वा२या२३४ओद्दोवा ॥(१) ह्याउसखा। योदी। घा।

* ज० गा० ११म० १ख० ७सा०। † ज० गा० ११म० १ख० ८सा०।

जिह्वियाऽम् । जिह्वियाम् । योधारयापावकयापरिप्र
स्यन्दतायि । सू१ता२ः । सूता२ः । इन्दुरा । स्वोनका
३ । स्वोनकाऽ । त्वा२या२३४औचोवा ॥(२) ह्वाविन्दूः ।
आश्वः । ना । ह्वात्वियाऽः । ह्वात्वियाः । नन्दुरोषम
भौनरस्सोमंबिश्वाचिया । धा१या२ । धाया२ । यज्ञा
या । सन्तुवाऽ । सन्तुवाऽ । द्वा२या२३४औचोवा ।
ई२३४५(३) ॥ १२ * ॥ [३५]

॥ मरायम् ॥ पूराः । जायितोवोमन्भसः । सः । सः । सः ।
सूता । यमा । दयित्नवेऽपस्वानऽग्रभिष्टननन । सा
खा । योदीर्घजिह्वियम् । यम् । यम् ॥(१) साखा ।
योदीर्घजिह्वियम् । यम् । यम् । योधा । रया ।
पावकयापरिप्रस्यन्दतेस्रुतः । तः । तः । आयिन्दूः । अ

* ऋ० मा० २१प्र० २अ० १२सा०

१ २ १ २ १
ग्नो। नक्षत्रियः। यः। यः ॥(२) पायिन्दूः। अग्नो।

२ १ २ १ २ २ २ २
नक्षत्रियः। यः। यः। तान्दू। रोषमभीमरस्सोमंविश्वा

२ २ २ २ १ २ १ २
च्याधिया। या। या। याज्ञा। यसा। तुवद्रयः। यः।

ऽ ऽ ऽ १ १ १ १
यः। हाउद्दाउद्दाउ। वाइ। ई२३४५(३) ॥ १५ * ॥ [३६]

२ २ २ १
॥ महावात्सप्रम् ॥ हाउद्दाउद्दाउ। ओ। द्दोद्दो

२ १ २ १ २ २
षा। (एवन्त्रिः)। पुरोजितायि। वो। अन्धसो। धसो।

२ २ २१ १ २ २
धमः। सुतायेमा। दा। यित्नवे। यित्नवे। यित्न

२ २ *२१ १
वे। अपस्वानम्। आ। यिष्टन। यिष्टन। यिष्टन।

२ २ २ २१ १
सखायोदी। घा। जिङ्क्रियम्। जिङ्क्रियम्। जिङ्क

२ २ २ २१ १
यम् ॥(१) सखायोदी। घा। जिङ्क्रियम्। जिङ्क्रि

२ २ २ २१ १ २
यम्। जिङ्क्रियम्। योधारया। पा। वकया। वक

२ २ २१ १२ २ २
या। वकया। परिप्रस्य। दा। तेसुतः। तेसुतः। ते

---

* ऋ० गा० २२म० २अ० १५मा०।

१ २ १
स्तः। इन्दुरस्वः। ना। ह्वंत्वियः। ह्वात्वियः। ह्वात्वि
१ २ १
यः ॥(२) इन्दुरस्वः। ना। कृत्वियः। कृत्वियः। कृ
२ २ १२ २ २
त्वियः। तन्दुरोषम्। आ। भीनरः। भीनरः। भी
२ २ २ १२ २ २
नरः। सोमंविश्वा। चा। याधिया। याधिया। या
२ २ १ २ २
धिया। यज्ञायस्य। ह्व। अद्रयो। द्रयो। द्रयः। ह्वा
१ २ १ १
उ३। ओ। ह्वोह्वोवा। २। ओ। ह्वो। ह्वोर्२। वा२
५२ २ ३ १ १ १ १
३४। औह्वोवा। ई२३४५(३)॥ ८ * ॥[३७] १८

अथ पञ्चमसूक्ते—

प्रथमा।

३ २ ३ १ २ ३ १ ० ३
अभिप्रियाणिपवतेचनोह्वितो
१ २ ३ १उ २ १ २ १ २
नामानियह्वोअधियेषुवर्धते।
१ १२ २ १ २ १उ २
आसूर्यस्यबृहतोबृहन्नधि
२ ३ १ २ ६ २
रथंविष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः॥ १ †॥

---

* उ० मा० २३प्र० १अ० ८खा०।

† ह० खा० ६, १, १, १ (२ भा० १७१ प०) = ऋ० वे० ७, २, २२, १।

"घनोहितः" [घन इत्यन्ननाम, घायतेरसुनि घन इत्योणादिक-सूत्रेण निपातितः] घनसे अन्नाय हितः, यद्वा आहिताग्निः सोमः "प्रियाणि" जगतः प्रीणयितॄणि "नामानि" नमनशीलानि, तान्युदकानि "अभि पवते" अभितः करोति। "येषु" अन्तरिक्षस्थितेषु उदकेषु "यह्वः" महानयं सोमः "अधिवर्धते"। अधिकं प्रवृद्धो भवति, अपां मध्ये सोमो वसति खलु। ततः "बृहत्" महान् सोमः "बृहतः" महतः परिवृढस्य "सूर्य्यस्य" विष्वञ्च" विष्वग् गमनम् "अधि रथम्" उपरि रथं "विचक्षणः" सर्वस्य विद्रष्टा "अरुहत्" आरोहति "अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्य मुपतिष्ठते (मनु०३अ०७६श्लो०)"-इति॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १ १ २ १ २ १ २ २ १
घृतस्यजिह्वापवतेमधुप्रियं

२ १ २ १ २ १ २ १
वक्तापतिर्धियोअस्याअदाभ्यः।

१ १ २ १ २ १ २ २ १ २
दधातिपुत्रःपित्रोरपीच्याऽ३न्नाम-

३ १ १ २ १ २ १ २ २
तृतीयमधिरोचन्दिवः॥ २ *॥

---

* ऋ० वे० ७, २, ३२, २।

"ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "जिह्वा" मुखत्वेन जिह्वास्थानीयः सोमः "प्रियं" प्रियकरं "मधु" मदकरं रसं * "पवते" क्षरति। कीदृशः? "वक्ता" शब्दकृत्; यद्वा, स्तोतृभिः क्रियमाणाः स्तुतयः साधीयस्य इति प्रतिश्रवणस्य कर्त्ता "अस्या धियः" एतस्य कर्म्मणः "पतिः" पालयिता "अदाभ्यः" रक्षोभिर्हिंसितु मशक्यः "पुत्रः" यजमानः "पित्रोः" पिता माता उभयोः † "अपीच्यम्" अन्तर्हितं यत् "नाम" तौ न जानीते नाम कर्मवेलायां तस्मात्तयोरपरिज्ञायमानं "दिवः" द्युलोकस्य "रोचनं" दीप्यमानं "तृतीयं" नाम सोमेऽभिषूयमाणे हिरण्मयेति "अधि दधाति" अत्यन्तं धारयति; "नक्षत्र-व्यावहारिक-नाम्नो प्रभाष्य सोमयाजी तृतीय मस्य नाम"—इति भगवता बौधायनेनोक्तम्॥

"अधिरोचनम्"--"अधिरोचने"—इति पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ ४ ३ १ २ ३
अवद्युतानःकलशाँ२अचिक्रद

१ २ ३ २ ३ ३ १ २ १ २
नृभिर्येमाणःकोशआहिरण्यये।

---

* 'मधु स्वादुतमं द्रव्यम'—इति वि०।

† 'मातापित्रोर्नाम, अथवा मातापित्रोः पृथिव्यन्तरिक्षयोः'—इति वि०।

३ २ १ १ २ ३ १ २ २ १ २
अभीकृतस्य दोहनाअनूषताधि
१ २ ३ २ २ १ २
त्रिपृष्ठउषसोविराजसि ॥ ३ * ॥ १९

"द्युतानः" [द्युतदीप्तौ (भ्वा० आ०)] दीप्यमानो "नृभिः" कर्म्मनेतृभिर्ऋत्विग्भिः "हिरण्यये" हिरण्मयकोशे अधिषवण-चर्म्मणि; तस्य हिरण्मयत्वं "हिरण्यपाणिरभिषुणोति"—इति हिरण्य-सम्बन्धात्; तादृशे "कोशे" "येमानः" [छान्दसे कर्म्मणि लिटि कानचि रूपम्] नियम्यमानः सोमः † "कलशान्" द्रोणाभिधान् प्रति "अवाचिक्रदत्" अवक्रदति शब्दायते। ततः "ऋतस्य" सत्यभूतस्य यज्ञस्य "दोहनाः" दोग्धार ऋत्विजः "इमं" सोमम् "अभ्यनूषत" अभिष्टुवन्ति ["यावाणो वत्सा ऋत्विजो दुहन्ति"—इति तैत्तिरीयक-ब्राह्मणे एषां दोग्धृत्व मभिहितम्] "त्रिपृष्ठः" त्रीणि सवनानि तान्येव पृष्ठानि यस्य स तथोक्तः ‡ [त्रिषु च सवनेषु सोमस्य विद्यमानत्वात्। त्रिवक्रादित्वादुत्तरपदान्तोदात्तत्वम्] हे सोम! तादृशस्त्वम् "उषसः अधि" यागाहनि "विराजसि" ["अधिगीङ्स्थासाम्

---

* ऋ० वे० ७, २, २२, ३।

† 'येमानः क्रियमाणः'—इति वि०।

‡ 'त्रिपृष्ठः त्रिस्थाने त्रिलोकावस्थानः; अथवा त्रिपृष्ठः ऋग्यजुःसामभिः; अथवा त्रिभिर्गीर्देवैः; सवनैर्वा'—इति वि०।

(१,४,४६)"—इति द्वितीया] तेष्वहस्तु विशेषेण दीप्यसे। यद्वा राजिरन्तर्णीतिरर्थः; अहानि प्रकाशयसि॥

"येमाणः"-"येमान"—इति, "अभीक्षतस्य"-"अभीक्षतस्य"—इति, "विराजसि"-"विराजति"—इति पाठाः॥ ३॥ १९

॥ कावम*॥ अभ्योवा। प्रियाणिपवनाइ। चनोधा
इता२:। नामानियच्छोअधियाइ। षुवर्ह्वाना२इ। आ
सूर्य्यस्यबृहतो। बृहन्नाधो२३। राथाइंवाइस्वा। चमङ्
धा२३त। वाइचाउच्चाऽ५ऽणा६५६:॥(१) कृतोवा। स्यन्ना
धापवनाइ। मधुप्राया२म्। वक्षापनिर्ह्रियोअस्याः।
अदाभाया२:। दधानिपुत्रःपित्रोः। अपीचाया२३म्।
नामाउनार्त्तौ। यमधाइरो२३। चानाउन्दाऽ५यिवा६५
६:॥(२) अवोवा। द्युतानःकलशा२। अचिक्रादा२
न। नभिर्य्योमाणा कोशआ। हिरण्यायाइ। अभीक्ष

---

*'खारकावम्'—इति ख॰ पु॰।

२ २ २ १ २ २ ४ ५ २ १
तस्यदोहनाः। अनूषाता२३। षाधी३षाहूषा। ष्ठउषा

१ २ ४
सो२३। वाइरा३जाऽ५साई५ई३ई(३)॥ १३ *॥ [१]

४ ४ ५ ३ ४ ५
॥ ऐडकावम_॥ ए५। अभिप्रिया२। णिपवताये।

४ ४ २ ५ ४ ४२ २ ५ ३२ ४ ५
ए५। चनोहिताः। ए५। नामानिया२। द्वोषधिया

४ ४ ५ ४ ४२ २ ५ ३ ४
यि। ए५। षुवर्ङ्गताये। ए५। आसूरिया२। स्रवृ

५ ४ ४ ५ ४ ४ ५ ३ ५
हताः। ए५। बृहन्नधी। ए५। रथंविश्वा२। चमरु

५ ४ ४ ५ ४ ५ ३२
द्धात_। ए५। विचक्षणाः॥(१) कृतस्रजा२यिः। द्वा

४ ५ ४ ४ ५ ४ ४२ ५
पवताये। ए५। मधुप्रियाम_। ए५। वक्षापता२यिः।

३ ४२ ६ ४ ४ २ ५ ४ ४ २ ५
धियोअस्याः। ए५। अदाभियाः। ए५। दधातिपू२त_।

२ ४ ५ ४ ४ २ ५ ४ ४२ ५
त्रःपित्रोः। ए५। अपीचियाम_। ए५। नामदृता२

३ ४ ५ ४ ५ ४ ४ ५
यि। यमधिरा। ए५। चनन्दिवाः॥(२) ए५। अवद्य

* ज० गा० १प्र० १अ० १२सा०।

४ ४ ५ ४ ४ ५ ४ ४
ता२। नःकलशाए। ए५। अचिक्रदात्। ए५। नृभि

५र २ ४र ५ ४ ४ ५ ४ ४
र्यमा२। णःकोशमा। ए५। हिरण्ययायि। ए५। अ

५ २ ४र ५ ४ ४ र ५ ४ ४
भिक्षता२। स्तोतृनाः। ए५। अनूषता। ए५। अ

५ २ ४ ५ ४ ४ र ५ ४
धिचिपा२। ष्टउषसाः। ए५। विराजसायि। हो५

ई। डा(३) ॥ २ * ॥ [२]

५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ २
॥ वैखानसम् ॥ अभिप्रीइयाणिपवतायि। चनोधिं

१ २र ३र २ १ २र १ २ १ २ १
ताः। नामानिया२३। हो३अधियायि। ध्रुवार्द्रतायि।

२र १ २ १ ७ १ २ ३ २ १
आसूरिया। स्वबृ२हतो२३। बृहन्नधायि। रयांवि

१ २ ३ २ १ २ ३ २ ५ १
ष्ठा। चमरुद्धा२३त्। विचक्षणा३४३: ॥(१) चतस्रा३

४ ५र ४ ५ २ १ २ १ २ ३र २ १ २ ३र
जिह्वापवतायि। मधूप्रियाम्। वक्तापता२३यिः। धियो

२ १ २ १ ६ ३र २ १ ७ १
अस्याः। अदाभियाः। दधातिपूत्। चःपा२यिचो२३:।

---

* ज० गा० ८प्र० १ख० २सा०

२ ३र २ र १ २ १ २ १ २ १ २ २
अपोचियाम्। नामाहतंायि। यमधिरो२३। चनन्दि

२ ५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ २ १
वा३४३: ॥(२) अवद्यू३तानःकलशान्। अचायिकदात्।

२ १ २र १ २ ३र २ १ २ १ २ ३र १
नृभिर्य्येमा२३। णःकोशआ। चिराण्ययायि। अभीऋ

१ ७ १ २ ३र १ १ २ १ १
ता। स्यदो२दना२३:। अनूषता। अधायित्रिपा। ष्ठ

३ २ १ २ ३र २ १
उषसो२३। विराजसा३४३यि। ओ२३४५ई।

ङा(३) ॥ १८ * ॥ [३]

४ ३ ४ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ अभाऽ५यिप्रि। याइणा३यिपव

५ १ र र र र र २ १
तायि। चाऽनोदितोनामानियाद्वोअधियायि। षू३वा

२ २ १र १ २ र १
र्ध्वाइतायि। आसू२र्यस्यबृहतोबृहन्न। धिरा२३थाम्।

१ २ २ १ ३ २ १
ऊम्नायि। वाइयिश्वा। च। मरुद्दिचा२क्षणाउ॥(१) णा

२ १ र र र र १
आ। तस्यजिघ्रेपवतेमधुप्रियंवक्वापतिर्हियोअस्याः। आ

---

* ऋ० गा० १४प्र० १अ० १८खं०।

१ १ २ १ १ २ २
द्दाभाइयाः। दधा२तिपुत्रःपित्रोरपीचि। यन्ना२३

२ १ २ २ १ २ २ ३ २
मा। ऊम्मायि। ता३र्त्ता। यामधिरोचना२न्दिवाउ ॥(२)

१ २ १ २ २ २ २ २
वाभा। वद्युतानःकलशाँअचिक्रदन्नृभिर्यमाणःकोशआ।

२ १ २ २ १ १ २ २ २
ङा३यिराण्या३यायि। अभी२ऋतस्यदोहनाअनूष। त

२ १ २ २ १ २ ३
आ२३धा। ऊम्मायि। चा३यिपा। ष्टाउषसोविरा२ज

२ १ १ १ १
साउ। वा२३४५ (३) ॥ १५ * ॥ [४]

१ २ १ १
॥ वैधृतवासिष्ठम् ॥ अभिप्रियाणी२। प। वता२यि।

३ २ ३ ५ २ २ १ २ १ १
चनोद्दा२३४यिताः। नामानियाह्वो२। अ। धियार

३ २ ३ ५ २ २ १ २ १ १ १
यि। षुवर्द्धा२३४तायि। आसूरियास्या२। वृ। हतो

२ १ २ १ ५ २ १ २ १ १ १
२। वृद्धन्ना२३४धायि। रथंविष्वाञ्चा२म्। अ। रुद्दा

२ १ २ १
२वृत्। विचा३त्ता५णाँ६ ५ ६: ॥(१) ऋतस्यजायिद्दा२।

● ऋ० मा० १६५० १अ० १५मा०।

१ १ २ २ ३ ५ २ १ २ १
प। वता२यि। मधुप्रा२३४याम्। वक्तापतायिन्वी२।

१ १ २ २ ३ ५ २ १ २ १
यः। अस्या२:। अदाभा२३४याः। दधातिपूक्त्वा२:।

१ १ २ २ ३ ५ १ २ १ १
पि। त्वो२:। अपायिचा२३४याम्। नामदतायिया२

१ २ ४ २
म्। अ। धिरो२३। चनाइन्दा५यिवा६५६:॥(२) अ

१ १ २ २ ३ ५
वद्युताना२:। क। लम्णा१२। अचायिक्रा२३४दात्।

२ १ २ २ १ २ १ १ २ ३ ५
नृभिर्य्यमाणा२:। को। ग्रभ्रा२। हिरण्या२३४यायि।

२ १ २ २ १ २ १ २ ३ ५ २
अभीक्षतास्या२। दो। हना२:। अनूषा२३४ता। अ

१ २ १ १ २ ४
धित्विपार्ष्ठा२:। उ। षसो२३। विराइजा ५ सा ६ ५ ६

यि(३)॥ १४ *॥ [५]

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरार्चस्य प्रथमस्याध्यायस्य
पञ्चमः खण्डः †॥ ५॥

---

* ज० गा० १९प्र० १अ० १४खा०। † 'उत्तरार्चभवः'—इति वि०।

अथ षष्ठे खण्डे,

प्रथमसूक्ते प्रगाथे—प्रथमा ।

२ १ २ ३ १ २ २१ २ ३ १ २
यज्ञायज्ञावोऽग्नये गिरागिराचदक्षसे ।

१२१२३१२३ १२ ३२ २१ २२
प्रप्रवयममृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रन्नशꣳसिषम् ॥१*॥

हे स्तोतारः ! "वः" यूयं "यज्ञायज्ञा" यज्ञे यज्ञे सर्व्वेषु यागेषु "दक्षसे अग्नये" प्रवृद्धाग्नये "गिरा गिरा" स्तुतिरूपया वाचावाचा स्तोत्रं कुरुतेति शेषः । च शब्दो भिन्नक्रमो वः-इत्यस्मात् परो द्रष्टव्यः । यूयं "च" स्तोत्रं कुरुत । "वयम्" अपि "प्रप्रशंसिषम्" ["प्रसमुपोदः पादपूरणे (८, १, ६०)"—इति प्र-शब्दस्य द्विरुक्तिः पादपूरणार्था ; व्यत्ययेनैकवचनम् (२, ४, ९८) ; छान्दसोलुक् (७, १, ३९)] प्रशंसाम कीर्त्तयम् ? "अमृतम्" मरणरहितं "जातवेदसम्" जातानां वेदितारं जातधनं वा "मित्रं न" सखिभूतमिव "प्रियम्" अनुकूलम् । यद्वा, व्यत्ययेन (२, ४, ९८) त्वमित्यस्य वसादेशः ; अग्नय इति च कर्म्मणि चतुर्थी, "क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम्"—इति कर्म्मणः सम्प्रदानत्वात् ; च-शब्दश्च चणिति निपातः, चेदर्थे वर्त्तते ; दक्षस इति च दक्षेर्वृद्धिकर्म्मणः (भ्वा० आ०) अन्त-

---

* ऋ० आ० १, १, ४, १ (१ मा० १४ पृ०) = ऋ० वे० ४, ८, १, १ । 'अग्निर्वैश्वानरश्चार्ष मग्निः स्तोत्रदेवता'—इति वि० ।

भाविनस्यर्थस्याभिधानं रूपम्; चण्-योगात् "निपातैर्यद्यदिहन्त० (८, १, ३०)"—इति निघात-प्रतिषेधः। तस्याय मर्थः—हे स्तोतः! त्वं यत्र यत्र इमं मग्निं गिरा गिरा स्तुत्या स्तुत्या च दक्षसे च वर्द्धयसि चेत् वयमपि अमृतत्वादिगुणकं तं प्रशंसामः॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १र २र३ २ ३ १र २र३ १र २र ७ १ २
ऊर्ज्जोनपात॰ स्हिनायमस्मयुर्दाशेमहव्यदातये।

२३१ १ ३१र २र३ २ ३ १ ३ २ ३ १ २
भुवद्वाजेष्वविताभुवद्वृधउतत्रातातनूनाम्॥२*॥२०†

"ऊर्जः" अन्नस्य बलस्य "नपातं" पुत्रं प्रशंसिष मित्यनुषङ्गात् प्रशंसामेत्यर्थः ‡। "हिना" [—इति निपात-द्वय-समुदायो हीत्यस्यार्थे ¶] "सः" खलु "अयम्" अग्निः § "अस्मयुः" अस्मान् कामयमानो भवति। वयञ्च "हव्यदातये" हव्यानां हविषां देवेभ्यो दात्रे तस्मा अग्नये "दाशेम" हवींषि दद्याम।

---

* ऋ० वे० ४, ८, १, २। † 'अत अग्निष्टोम साम'—इति वि०।

‡ 'ऊर्जः अन्नानि। न पातं, न रक्ष उपमार्थीयः यथा, अन्नानि। पिबन्तं पालयन्तं भक्षयन्तं वा'—इति वि०।

¶ 'हिनः, हिनो मनुष्यः; हीनायुर्वा नमस्कर्तीनप्रज्ञो वा'—इति वि०।

§ 'अयं यजमानः'—इति वि०।

तम् "उत" अपिच "तनूनाम्" .तनयाना मस्मत्पुत्राणाञ्च* "त्राता" रक्षिता "भुवत्" भवतु ॥ २ ॥ २०

४ ३ ४ २ ५ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ यज्ञाऽऽयज्ञा३वो३ग्नायाइ।
१ २ २ १ २ २ १ १
आइराइरा। चाऽदाचा३साइ। पप्रीऽवयममृतम्।
२ २ १ १ २ १
जाता२३वा। ऊम्माइ। दा३साम्। प्रायम्मित्रꣳसुशा
३ २ १ २ १ १ २
२ꣳसिषाउ ॥(१) प्रायाम्। माइत्राम्। सू३शाꣳसी
१ २ १२ १ २ २ १
३षाम्। ऊर्ज्जीनपा२तꣳसहि। नाया२३मा। ऊम्मा
२ २ १२ ३२ १ २ १
इ। स्माऽयूः। दाशेमहव्यदा२तयाउ ॥(२) दाशे। मा
२ १ २ २ १ २ १ २ २
हा। व्या३दाताऽयाइ। भुवद्वाजे२षवि। ताभू२३वा
१ २ २ १ २ २
न्। ऊम्माइ। वा३र्ध्वाइ। ऊतत्रातातन२नाउ। वा
१ १ १
३४५(३) ॥ १४ † ॥ [१]

२ २ २ २
॥ विश्वोविश्वीयम् ॥ यज्ञायज्ञाहम्। वो३अग्नयायि।

---

* 'तनूनां शरीरिणाम्'—इति वि०।

† ऊ० गा० १अ० १ख० १४सा०।

१२ २ १ २ २ १ १ २
इराइरा। चाइदाक्षाइसायि। पप्रो२वयमम्तम्। जा
२ १ २ २ १ ५
ता२३वा। ऊम्मायि। दाइसाइम्। प्रा२३४यंच्चायि।
१ ३२ २ ५ २ २
ओ। ऊवायि। मा२३४यित्राम्। ऊम्मायि। सू३
२ १ ५२ ५ २
श्राइ। सा२३४यिषाम्। एच्चियाईच्चा॥(१) प्रियम्मित्रम्।
२ २ १ २ १ १ २
ऊम्। सू३श्शंसिषाम्। ऊ३र्ज्जोनाइपा। तंसच्चि। ना
२ १ २ २ १ २५
या२३मा। ऊम्मायि। स्मा३यू३ः। दा२३४श्रेच्चायि।
१ ३२ २ ५ १ २ २
ओ। ऊवायि। मा२३४च्चा। ऊम्मायि। व्या३दा३।
१ ५२ ५ २२२ २ २
ता२३४यायि। एच्चियाईच्चा॥(२) दाश्रेमच्चाऊम्। व्या३
५२ १ २ २ १ २ १ १
दातयायि। भू३वाद्वाइजे। ष्वि। ताभू२३वात्। ऊ
२ २ १ ५ १ ३२
म्मायि। वाइर्ह्वाइयि। ऊ२३४तच्चायि। ओ। ऊवा
३ ५ १ २ ३
यि। चा२३४ता। ऊम्मायि। ता३नू३१२३४नाम्।
५२ ५ ४
एच्चियाईच्चा। च्चोऽ५ई। डा(३)॥ ५ *॥ [२]

• ऊ० गा० १२प्र० २च० ५सा०।

॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ यज्ञायज्ञाऔहोहायि। वो

अग्ना२३४याय। इराइराचदत्तासो२३४हायि। पग्नी

वयमम्रतज्ञातवेदा३४। औहोवा। इहा२३४हायि।

उरुवा२३४साम्। प्रियम्मि। त्राꣳसुशꣳसा३४। औ

होवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४५। षाम्। ए

हियाईहा ॥(१) प्रियम्मित्राऔहोहायि। सूशꣳसा२३४

यिषाम्। ऊर्ज्जीना२३४हा। पातꣳसहिनायमस्मा३४।

औहोवा। इहा२३४हायि। उरुवा२३४यः। दाशेम।

ह्वाव्यदाता२३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औ

हो३१२३४। यायि। एहियाईहा ॥(२) दाशेमहाऔहो

हायि। व्यादाता२३४यायि। भुवाद्वा२३४हा। जेष

विताभुवद्वा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उरुवा

५ १ १ २र १ २ ३र ४र ५ १ ३
२३४ह्वायि। उतत्वा। 'तातन्॰३४। औहोवा। इहा

५ ३र २ ५र ५
२३४ह्वायि। औहो३१२३४। नाम्। एहियाइहा ३)

॥ ११ * ॥ [३]

२ ४ ५ ४
॥ महावैश्वामित्रम्॥ हयायि। हया३। ओहाओ

५ २ ४ ५ ४ ५ २
हा। हयायि। हया३। ओहाओहा। हयायि। ह

४ ५ ४ ५ २ र ३र २ १
या३। ओहाओहा। यज्ञायज्ञा। वोअग्नाया२यि।

र ३ २ १ र ३ २र
इराइरा। चदत्तासा२यि। पप्रीवयममृतज्ञा। तवे

१ ३ २ १
दासा२म्। प्रियम्मित्रा म्। सुश्रुस्सायिषा२म्॥(१)

२ ३ २ १ र १
प्रियम्मित्रा म्। सुश्रुस्सायिषा२म्। ऊर्ज्जः। नापा

२ ३ २ १ र र
२। नापा२। तस्सहिना। यमस्माय्व२:। दाशेम

१ २र १ र र ३ २र १
ह्वा। व्यदाताया२यि॥२) दाशेमहा। व्यदाताया२

१ ३ २ १
यि। भुवत्। वाजा२यि। ध्वितो। भुवद्वार्ज्जा२यि।

---

* ऋ० गा० १३प्र० १अ० ११म०।

र र १ ३ २ १
उतत्राता। तनूनाꣳम्। उतत्रा। तातनूनाꣳम्।

४ ५ ४ ५ २
ह्वयायि। ह्वयाऽ३। ओहाओहा। ह्वयायि। ह्वयाऽ३।

४ ५ ४ ५ २ ४ ५ ४ ५
ओहाओहा। ह्वयाहि। ह्वयाऽ३। ओहाओहा।

३ ५ ३ ५ ३
ह्वो४इडा। ह्वो४इडा। ह्वो२३४५ई। डा(ऽ३) ॥ २० * ॥[४]

२ र र र र र र २
॥ दैर्घश्रवसम् ॥ यज्ञायज्ञावोअग्नयओहाओहाऽ३ए।

१र २र १ २र ऽ २ ऽ २ २ ३ २
इराइराचदत्तमे। ओऽह्वा। ओऽह्वाऽ३ए३४। पप्रौ ३४

३ २ १ऽ २ र १ र २ ऽ २
वयाम्। आमृतम्। जातावेदसाम्। ओऽह्वा।

ऽ २ २ ३ २ ३ २ २ १ ५
ओऽह्वाऽ३ए३४। प्रियाऽ३४म्मित्राऽ३म्। सुश्रोऽ२३४५वा।

४ ५ २ र र र
सापूयिषोऽह्वायि ॥(१) प्रियाम्मित्रꣳसुश्रꣳसिषमोह्वाओ

२ ऽ १र २ ऽ २ ऽ २ २ ३
ह्वाऽ३ए। ऊर्ज्जीनपा। ओऽह्वा। ओऽह्वाऽ३ए३४। तꣳ

२ ३ २ १ २ ऽ २ ऽ २ २
साऽ३४ह्विना। यामस्मयुः। ओऽह्वा। ओऽह्वाऽ३ए३४।

३र २ ३ २ २ १ ५ ४ ५
दाशाऽ३४यिमह्वाऽ३। व्यदोऽ२३४वा। तापूयोऽह्वायि ॥(२)

---

* ऊ० गा० २१प्र० २च० २०सा० ।

२र र र र र र १ १ र २ ऽ
दाशेमहव्यदातयओहाओहाइए। भुवद्वाजायि। ओ

२ ऽ २ २ ३ २ ३ १ १ २र ऽ
३हा। ओ३हाइए३४। षुवा३४विता। भुवद्वृधे। ओ

२ ऽ २ २ ३ २ ३ २ १ ५
३हा। ओ३हाइए३४। उता३४त्नाता३। तो२३४वा।

४ ५
नू५नोऽहायि(३)॥ २१ *॥[५]

२र र र २ र १ २
॥ कण्वबृहत्॥ ओहोयज्ञायज्ञाइए। वोआग्नाया

३र २ १ र २ र र १ २
२३४यि। हाहोयि। आयिराद्वराचदन्तसे। पप्रीवा१

३र र ३ २ १ ५
या२३४म्। हाहो। सुशा३। सा२३४यिषाम्। उ

५ २र र २ १ २
ऊवाऽहाउ॥(१) ओहोप्रियमित्राइमे। सुशाꣳसा१यि

३र २ १ र २ र १ २
षा२३४म्। हाहोयि। ऊर्ज्जीनपा। तꣳसाहा१यिना

३र २ १ २ ३र २ १र
२३४। हाहोयि। यमास्मा१यू२३४ः। हाहोयि। दा

३र २ ३ २ १
शायिमा१हा२३४। हाहो। व्यदा३। ता२३४यायि।

५ ५ २र र र र २ १
उऊवाऽहाउ। वा॥(२) ओहोदाशेमहाइए। व्यदा

---

* ऊ० गा० २१प्र० २ऋ० २१सा०।

ता१या२३४यि। ह्वाह्वोयि। भूवद्वाजे। षुत्रात्रा१यिता
२३४। ह्वाह्वोयि। भुवाद्वा१र्द्धा२३४यि। ह्वाह्वोयि। उ
तान्त्रा१ता२३४। हाहो। तनू३१२३४नाम्। उङ्क्षवा६
हाउ। वा(३) ॥ ८ * ॥ [६] २०

अथ ऋचात्मक-द्वितीये सूक्ते†—प्रथमा।

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २
एह्यूषुब्रवाणितेग्नइत्येतरागिरः।

६ १ २ ३ १ २
एभिर्वर्द्धासइन्दुभिः ॥ १ ‡ ॥

हे "अग्ने!" "एहि" आगच्छ "ते" तुभ्यं च तदर्थं "गिरः" स्तुतीः "इत्था" इत्थ मनेन प्रकारेण "सु ब्रवाणि" सुष्ठु ब्रवाणीत्याशास्यते। ताः स्तुतीः शृण्वित्यर्थः। "ऊ"—इत्येतत् पूरकम्। "इतराः" असुरैः कृताः स्तुतीः शृण्वति शेषः। तथा च ब्राह्मणम्—"अग्निरित्येतरागिर इत्यसुराहि वा इतरागिरः"—इति। अपिच आगतस्त्वम् "एभिः" एतैः इन्दुभिः सोमैः "वर्द्धसे" वर्द्धस्व ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० २३प्र० १अ० ८सा०।

† 'उक्थोऽग्निष्टोम इदानी मुक्थोऽभिधीयते'—इति वि०।

‡ ह० आ० १, १, १, ७ (१ भा० १०४ पृ०) = ह० वे० ४, ५, २४, १। ह० साकमश्वः। ह० गाथी। एवमेवोत्तरत्र।

अथ द्वितीया ।

१ २क १र २ २ ३ १ २ ३ १ २
यत्रक्वचतेमनोदक्षन्दधसउत्तरम् ।

२ ३ १ २
तत्रयोनिङ्कृणवसे ॥ २ * ॥

हे अग्ने ! "ते" तव "मनः" अनुग्रहात्मक मन्तःकरणं "यत्र" यस्मिन् देशे "क्वच" कस्मिंश्चिद् यजमाने वर्त्तते, "तत्र" तस्मिन् यजमाने वर्त्तमाने "उत्तरम्" उन्नततरं श्रेष्ठं "दक्षं" बलकरमन्नं वा "दधसे" धारयसि तथा "योनिं" स्थानं च "कृणवसे" तस्मिन् यजमाने करोषि ।

"तत्र योनिं"-"तत्रासदः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २र३ १ २ ३ १ २र ३
नहितेपूर्त्तमक्षिपङ्गवन्नेमानाम्यते ।

२ ३ १ २
अथादुवोवनवसे ॥ ३ † ॥ २१

हे अग्ने ! "तं" त्वदीयं "पूर्त्तं" पूरकं तेजः ‡ "अक्षिपत" अक्ष्णोः पातकं विनाशकं "न हि भुवत्" न भवतु सर्व्वदा

---

* ऋ० वे० ४, ५, २४, २ । † ऋ० वे० ४, ५, २४, ३ ।

‡ विवरणनये "पूतम्"—इति पाठः । अतएव 'पूतं पावनात्मकम्'—इति व्याख्यातम् ।

अस्माकं दर्शनसामर्थ्यं करोतु। हे "नेमानां पते" नेमशब्दो-ऽल्पवाची, मनुष्याणां मध्ये कतिपयानां यजमानानां * पते पालक! "अथ" अतः कारणात् "दुवः" [दुवस्यतिः परिचरण-कर्मा (निघ०. ३, ५, ५)] अस्माभिर्यजमानैः कृतं परिचरणं "वनवसे" सम्भजस्व ॥ ३ ॥ २१

॥ साकमश्वम् ॥ एह्यूषू३ब्रवाणा६इताइ। अग्मइत्थे
२ १ २२ १ २ १
तरागा२इराः। एभा२इर्वर्डा। मया२३हा३४३इ। दू२
५ ५ ५ २ ४ २ ५ ५ १
३४भो६हाइ। यत्रकू३वचतेमा६नाः। दक्षन्दधसउक्ता
१ २ १र ० २ २
२राम्। तत्रा२यानाइम्। कृणा२३हा३४३इ। वा२३
५ ५ ५ २ ४र ५ ५ १ २
४सो६हाइ ॥(२) नहिता३इपूर्त्तमत्ता६इपात्। भुवन्ने
२ २ १ २ १ १
मानाम्या२ताइ। अथा२दुवाः। वना२३हा३४३इ। वा
५ ५
२३४सो६हाइ(३) ॥ १५ ॥ [१]

॥ साकमश्वम् ॥ एहियूषाओहोहायि। ब्रावाणा२
५ २ १ ५ १२ २ २ २
३४यिताथि। अग्राआ२३४यिहायि। थेतरागा३४। औ

---

* 'नेमानां नरो रणाम इन्द्रियाणां वा'—इति वि०।

† ऋ० गा० १अ० १अ० १५सा०।

४र ५ १ ३ ५ २ ३ ५ २र१ २
ह्वोवा। इह्वा२३४ह्वायि। उङ्कवा२३४राः। एभिर्व।

१ ७ २ ३र ४र ५ १ २ ५ ३र २
र्धसद्दून्दू३४। औहोवा। इह्वा२३४ह्वायि। औह्वो३१२

५र ५ २ र र १ २
३४। भोः। एह्वियाऽह्वा ॥(१) यन्नकुवाऔह्वोहायि।

१ २ ५ २ १ ५ १ २
वातायिमा२३४नाः। दक्षान्दा२३४ह्वा। धसउक्षा३४।

३र ४र ५ १ ३ ५ १ २ ५ २ १
औह्वोवा। इह्वा२३४ह्वायि। उङ्कवा२३४राम्। तन्

३र १ ७ २ ३र ४र ५ १ ३ ५
यो। नायिङ्कणवा३४। औह्वोवा। इह्वा२३४ह्वायि।

३र २ ५र ५ २ र र र
औह्वो३१२३४। साय। एह्वियाऽह्वा ॥(२) नह्वितेपूऔ

१ २ ३ ५ २ १ ५
ह्वोहायि। तामक्षा२३४यिप्पात्। भुवान्ना२३४यिह्वायि।

१र र २ ३र ४र ५ १ ३ ५ २ ३
मानापा३४। औह्वोवा। इह्वा२३४ह्वायि। उङ्कवा२३

५ २ १र २ १ ७ २ ३र ४र ५ १ ३
४ताय। अथादु। वोवमक्षा३४। औह्वोवा। इह्वा

५ ३र २ ५र
२३४ ह्वायि। औह्वो ३१२४५। साई। एह्वियाऽ

५
ह्वा(३) ॥ १२ * ॥ [२] २१

---

* ऋ० गा० ३प्र० १अ० १२सा०।

अथ तृतीयसूक्ते, प्रगाथे—

प्रथमा ।

३ २ २ १. २ २ १उ २ १ २ २ १ २
वयमुत्वामपूर्व्यस्थरन्नक्षन्नभरन्तोवस्यवः ।

१ २ २ १ २
वजिञ्चित्रंहवामहे ॥ १ * ॥

हे "अपूर्व्य" त्रिषु सवनेषु प्रादुर्भूतत्वादभिनव ! हे "वजिन्" वज्रवन्निन्द्र ! "भरन्तः" सोमलक्षणैरन्नैस्त्वां पोषयन्तः "वयम्" "चित्रं" चायनीयं विविधरूपं वा "त्वामु" त्वामेव "अवस्यवः रक्षण मात्मन इच्छन्तः सन्तः "हवामहे" आह्वयामः । तत्र दृष्टान्तः—"स्थूरं न" यथा भरन्तः व्रीह्यादिभिर्भृंहं पश्यन्तो जनानां स्थूरं स्थूलं गुणाधिकं "कञ्चित्" कञ्चित् पुरुषं यथाह्वयन्ति तद्वत् ।

"वजिन्"-"बाजः"—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ २ १ १ २ १ २ २ १ २ २ १ २ २ १ २ २ १
उपत्वाकर्मन्नूतयेसनोयुवोग्रश्चक्रामयोधृषत् ।

१ २ २ १ २ १ १ २ २ १ २ २ १
त्वामिद्वृत्रवितारंववृमहेसखायइन्द्रसानसिम् ॥२†॥२२

---

* ऋ० आ० ५, १, २, १ (१ भा० ८३० पृ० १ = ऋ० वे० ८, २, १, १ ।

† ऋ० वे० ८, २, १, २ ।

प्रथमपादः प्रत्यचकृतः। हे "इन्द्र!" "कर्मन्" अग्निष्टोमादि कर्मणि * "ऊतये" रक्षणाय "त्वा" त्वाम् "उप" गच्छामः† । द्वितीयः पादः परोचकृतः। "यः" इन्द्रः "धृषत्" धृष्णोति शत्रूनभिभवति ["ञि धृषा प्रागल्भ्ये (स्वा० प०), "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शप्रत्ययः] "युवा" तरुणः "उग्रः" उद्गूर्णः स इन्द्रः "नः" अस्मान् प्रति "चक्राम" आगच्छतु; यद्वा, चक्राम अस्मासुत्साहयुक्तान् करोतु [क्रमतेः सर्गार्थे व्यत्ययेन परस्मैपदम्]॥ परोऽर्द्धर्चः प्रत्यचकृतः। "सखायः" समानख्याना बन्धुभूता वा वयं "सानसिं" ["वनषण सम्भक्तौ (भ्वा० प०] सम्भजनीयम् "अवितारं" सर्वस्य रक्षितारं "त्वामित्" त्वामेव "वृणीमहे" वृणीमहे सम्भजामहे। "हि" प्रसिद्धौ [हि-प्रयोगादनिघातः (८, १, ३४)॥ २॥ २२

५ ४ २ ४ ५२ ४ ५ २२ १
॥ सौभरम् ॥ वयाऽमूऽत्वामपूर्वियोवा। स्थूरन्नक

७ १ ७ १ ३ ५ १
च्छिद्ररा२न्ताऽश्वा२३। हो। स्या२३४वाः। वज्रिञ्चित्रम्।

६ २ १ ३ ५२ २ ४ १
हवाऽहाऽइ। मारहा२३४ऽओहोवा॥(१) वज्राऽइच्चाऽ

४ ५२ ४ ५ १ २ २ १ ७
इन्द्रऽहवामहोवा। उपत्वाकर्म्मन्नूता२याइसना २ ३ः।

१ २ ५ १ २ ६ २ १ ४
होइ। यू२३४वा। उग्रश्चक्रा। मयोऽहाऽइ। धार

---

* 'कर्मन्, कर्मणा यः सम्भजते तस्य सम्बोधनं हे कर्मन्'—इति वि०।

† 'उप, समीपं स्थित्वा'—इति वि०।

२ ५२ २ ५ ४ २ ४ ५२ ४ ५ १२
र्षा२३४औहोवा ॥(२) उग्रा३श्चां३क्रामयोधृषोवा। त्वा

१ १ २ ५ २ २
मिध्यविता २रांववा२३। हो। मा२३४हाइ। सखाय

ऽ २ १ २ ५२ २ १ १ १
इ। द्रसा३च्चा३इ। नार्सा२३४औहोवा। ज २ ३

१ १
४ ५(३) ॥ १६ * ॥ [१]

५ २ ४२५४२ ५ २२ १ २ १
॥ कालेयम् ॥ वयमू३त्वामपूर्विया। खूरान्नकात्।

२ १ २ १ ५ २ २ १
चिङ्गरा२३। ताइः। आ२३४। व। स्या३वाः। वज्रा

२ २ २ ५ ४ ५
यिञ्चितौ। वा ३ ४ ३ ओ३४वा। हवा५महायि ॥(१) व

२ ४ ५ ४२ ५ २ १ २२ १ २२ १
ज्रिञ्चा३यिञ्ञ्हवामहायि। उपात्वाका। मन्नूता२३।

२ १ ५ २ २ १ २ २
याइयि। सा२३४:। नः। यू३वा। उग्राश्चकौ। वा

२ ५ ४ ५ २ ४२५ ४
३४३ओ३४वा। मयो५धषात् ॥(२) उग्रश्चा३क्रामयो

५ २ १ २ १ २ १ २ १
धृषात्। तुवामिञ्चायि। अविता२३। रा३म्। वा

५ २ २ १ २ २ २
२३४। वृ। मा३हायि। सखायओ। वा३४३ओ ३ ४

५ ४ ४
वा। द्रसा५नसायिम्। हो५ई। डा(३) ॥ १० † ॥[२]२२

---

* ऋ० गा० १५० १च० १६मा०। † ऋ० गा० २१म० १च० १०मा०।

अथ चतुर्थर्चे—प्रथमा।

२ ३क २र २ १ २ २ १ २ २ १ २ २ १ २
अधाहीद्रगिर्वणउपत्वाकामइमहेसछगमहे।

१२ ३ १ १ ३ २ २
उदेवग्मन्तउदभिः॥ १ *॥

"अधाहि" सम्मति हि "त्वा" त्वां "कामे" काम मभिलषित-मर्थम् "ईमहे"। यद्वा, "कामे" कामान् कमनीयान् स्तोमान् "उपसछगमहे" उपसृजामः त्वां प्रापयाम इत्यर्थः। तत्र दृष्टान्त माह—"उदेव" यथा उदकेन "गमन्तः" गच्छन्तः पुरुषाः "उदभिः" अञ्जलिनोत्क्षिप्योदकैः समीपस्थान् पुरुषान् क्रीडार्थं संसृजति तद्वदित्यर्थः॥

"कामईमहेससृग्महे"-"कामाग्महस्सस्रुजमहे"—इति च पाठाः। "उदेवग्मन्तः"-"उदेवयन्तः"—इति च पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वार्णत्वायव्याभिर्वर्ङ्क्तिभ्रूरब्रह्माणि।

३ १ २ ३ १ २
वावृध्वाꣳसच्चिदद्रिवोदिवेदिवे॥ २ †॥

---

* ऋ० आ० ५, १, २, ८ (१ भा० ८२६ पृ०) = ऋ० वे० ६, ७, २, १।

† ऋ० वे० ६, ७, २, १।

हे "अद्रिवः" वज्रिन्! "शूर" इन्द्र! "वार्णे" यद्योदक-मुदकस्थानं "यव्याभिः" नदीभिः ['अवनयः', 'यव्या'—इति (निघ० १,१३, १-२) नदीनामसु पाठात्] "वर्द्धन्ति" वर्द्धयन्ति, तथा "ब्रह्माणि" स्तोत्रैः * "वावृध्वांसं" "चित्" यथा निरुदकं देशं नदीभिः तथा न किन्तु प्रहृष्टमेव "त्वा" त्वां "दिवेदिवे" अन्वहं वर्द्धयन्ति स्तोतारः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ २ २१२ ३१३१ २३ १ ११२१२ ३ १ २
युञ्जन्तिहरीइषिरस्यगाथयोरौरथउरुयुगेवचोयुजा ।

३ १२ २ १ २
इन्द्रवाहास्वर्विदा ॥ ३ † ॥ २३ ‡

"इषिरस्य" गमनशीलस्येन्द्रस्य "उरुयुगे" महायुगे "उरौ" महति "रथे" "इन्द्रवाहा" इन्द्रस्य वाहनभूतौ "वचोयुजा" वचनमात्रेणैव युज्यमानौ "स्वर्विदा" स्वर्गाख्य मिन्द्रस्य स्थानं जानन्तौ "हरी" एतन्नामकावश्वौ "गाथया" ¶ स्तोत्रेण स्तोतारः "युञ्जन्ति" योजयन्ति ॥

---

* 'ब्रह्माणि अन्नानि, वैविध्यलक्षणानि वा, स्तोत्र-लक्षणानि कर्माणि वा'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, ७, २, ३ । ‡ "अत्र नामेधम्"—इति वि० ।

¶ 'गाथया, एकवचनं बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, गाथाभिः'—इति वि० ।

"उरुयुगेवचोयुजाइन्द्रस्यवाहास्वर्विदा"-"इन्द्रवाहावचोयुजा"
—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २३

॥ नार्म्मेधम् ॥ अधाहीन्द्रगिर्वणाइए। उपात्वाइका।
मईंइमाइ२३४ह्वाईं। सद्दममाद्दा। औहोहो२३४वा।
ज२३४देहाइ। वम्मान्ताज। औहोहो२३४वा। दा२
३४भीः। एहियाइहा ॥(१) वार्णत्वायव्याभी३रे। वर्द्धा
न्ती३ग्रह्। रब्रार२ह्मा२३४णी। वावृध्वाꣳसा। औहोहो
२३४वा। चा२३४इदहाइ। द्रिवोदाइवा। औहोहो
२३४वाइ। एहियाꣳहा ॥(२) युञ्जन्तिहरीइषिराइए।
स्य। गा। थ। या। उरौरा३थाइ। उरु३यू२३४
गाइ। वचोयूजा। औहोहो२३४वा। आ२३४इन्द्रहा
इ। वाहास्ववा। औहोहो२३४वा। वा २ ३ ४ इदा।
एहियाइहा। हो३५ईं। डा(३) ॥ १७ * ॥ [१]

* ज० गा० १प्र० १अ० १७खण्ड।

॥ द्यौतानम् ॥ हाइ। ओ३ह्वाइ। ओ३हाइ। ह्वा
यि। अधाह्वियाइयि। द्रगिर्वा२३४णाः। उपत्वाकाइ।
मईमाइ३४ह्वायि। साइ। ह्वम्माइ३४ह्वायि। उदेवग्मा
इ। तऊदाइ३४भायिः ॥(१) वार्णत्वाइ। यवीयाइ३४
भीः। वर्द्धन्तिमूइ। रन्नाह्नाइ३४णी। वाइ। वृध्वा
इ३४ष्सामा। चिदद्रिवोइ। दिवदाइ३४यिवायि ॥(२)
युञ्जन्तिह्वाइ। रीआयिषाइ३४यिरा। स्यगाथयाइ
उरौराइ३४थायि। उरुयुगेइ। वचोयूइ३४जा। इन्द्र
वाह्वाइ। सुवर्वाइ३४यिदा। ह्वाइ। ओ३ह्वाइ। ओ
३ह्वा३। ह्वा३४। ओहोवा। आओ३हो२३
४५॥८*॥[२]२३

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरग्रन्थस्य प्रथमस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः †।

---

* ऊ० गा० १०प्र० २अ० ८सा०।

† 'अग्निष्टोम उक्थ्योक्तः। षोडशी च ब्राह्मण-समाम्नायेन ऋक्-समाम्नायेन चान्वितः। इदानीं मतिराजो वक्तव्यः'—इति वि०।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
पुमर्थांश्चतुरोदेयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ १ ॥

॥ इत्युत्तरार्चिके प्रथमस्यार्द्ध-प्रपाठकः ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक
श्रीवीरबुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धूरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तरार्चे प्रथमोऽध्यायः* ॥

---

* मूले त्वत्रार्द्धप्रपाठकः समाप्तः, नतु प्रपाठकः ; विवरणेऽप्यत्रैवेऽपि नैव ।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थं-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयाध्याय आरभ्यते ॥

तव,

पान्तमाव इति प्रथम-खण्डे—

ऋचाक्षरे प्रथमे सूक्ते,

प्रथमा ।

२ १ २ ३ १ १ २ १ २ ३ १ २ १ २
पान्तमावोऽन्धसइन्द्रमभिप्रगायत ।

१ १ २ ३ १ २ १ १ २ ३ २
विश्वासाहꣳशतक्रतुम्मꣳक्षिप्रꣳश्वर्णीनाम् ॥ १* ॥

हे ऋत्विजः ! "वः" युष्मदीयं "अन्धसः" सोमलक्षणमन्नं "आ पान्तम्" आभिमुख्येन पिबन्तं [पा पाने (भ्वा० प०) ; छान्दसः शपोलुक् (२, ४, ७३) ; 'सर्वे विधयश्छन्दसि विकल्प्यन्ते'—इति "न लोकाव्यय (२, ३, ६५)"—इति षष्ठी-प्रतिषेधाभावः ; ततोऽन्धस इत्यस्य "कर्तृकर्मणोः (२, ३,

---

* ऋ० वा० २, १, २, १ (६ भा० १५५ पृ०) = ऋ० वे० ६, ६, १५, १ ।

६५)"—इति षष्ठी। षष्ठी] सोम माभिमुख्येन पिबन्त मेतादृशम् "इन्द्रम्" "अभि प्रगायत" प्रकर्षेण अभिष्टुत। कीदृशम्? "विश्वासाहं" सर्वेषां शत्रूणामभिभवितारं सर्वेषां भूतजातानां वा, अतएव "शतक्रतुं" बहुविधप्रज्ञानं बहुविधकर्माणं वा "चर्षणीनां" मनुष्याणां "मंहिष्ठं" धनस्य दाढतमम्। यद्वा, यजमानानां यष्टृत्वेन पूजनीय मिन्द्रं प्रगायतेत्यर्थः॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १२ ३१२ ३ २ १२
पुरुह्नतम्पुरुष्टुतङ्गाथान्याऽ३ऽ॰सनश्रुतम्।
२३१२
इन्द्रइतिब्रवीतन॥२*॥

हे ऋत्विग्यजमानाः! "पुरुह्नतं" यज्ञेषु बहुभि राह्वतं "पुरुष्टुतं" बहुभिः स्तोत्रशस्त्रादिभिः स्तुत मतएव "गाथान्यं" गानयोग्यं गातव्यं† "सनश्रुतं" सनातनया प्रसिद्धम्,‡ एवंविधं देवम् "इन्द्रइति" यूयं "ब्रवीतन" ब्रुवीध्वम् ['ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा० उ०)'—इत्यस्य लङि व्यत्ययेन (३, ४, ८८) ध्वमस्तनबादेशः, अतएव गुणः॥ २॥

---

* ऋ० वे० ६, ६, १५, २।

† 'गाथानि स्तोत्र-शस्त्र मन्त्राणि, ताभिः स्तोयते यः स गाथान्यः तं गाथान्यम्'—इति वि०।

‡ 'सनश्रुतः सदाश्रावी, सदैव विश्रुतम्'—इति वि०।

अथ तृतीया।

२ ३ १ १ ३१ २ ३ १२ २२ २ १
इन्द्रइन्नोमहोनान्दातावाजानान्नृतुः।
२ १. २ ३ १ २
महाꣳअभिज्ञायमत्॥ ३* ॥ १

"इन्द्रइत्" पूर्वोक्तलक्षण इन्द्रएव "नः" अस्मभ्यं "महोनां" मघोनां धनवतां पश्वादि-लक्षण-धन-युक्तानां "वाजानाम्" अन्नानां "दाता" भवतु। कीदृशम्? "नृतुः" ["नृतिश्रद्धोः क्तूः" —इति क्तूप्रत्ययः, ङ्कित्स्वच्छान्दसः] सर्वस्य नर्त्तयिता*; यद्वा [नृ नये, (क्रया० पु० प०) औणादिक-तु-प्रत्ययः, धातोर्ङ्कित्स्वच्छान्दसः] स्तोतृभ्यो गवादिनेता; अतएव "महान्" स इन्द्रः "अभिज्ञु" अभिगत-जानुकम्† अस्मभ्यम् "आ यम त्" आयच्छतु ददातु‖। यद्वा स इन्द्रः अभिज्ञु अस्मदभिमुखं मागच्छत धनं स्वहस्तयोः परिगृह्य अस्मान् नयतु,—धनं गृहीत्वा अस्मभ्यं ददात्वित्यर्थः॥

"मघोनाम्"-"महोनाम्"—इति पाठौ॥ ३॥ १

२ ४ २
॥ वैतहव्यमोकोनिधनम्॥ पाऽपून्तम्। आ३वो
४ ५ १२ ७ ३ ५ १
३अन्धसाः। आइन्द्रामभाइ। प्रगाऽया२३४ता। विश्वा

---

* ऋ० वे० ६, ६, १५, २।

† 'नृतुः नृभ्योचितः'—इति वि०।

‡ 'अभिज्ञु सर्वं ज्ञाता'—इति वि०।

‖ 'आयमत्—यमु वन्धने, सर्वं जगत् कर्मभिः पाशैर्बध्नाति'—इति वि०।

२ ५ ३ १ २ २ १ ३ १ २
२सा२३४हाम्। ग्राइनाक्रा३त्वम्। मꣳहिष्ठच्चर्षे।

१ २ ५३ २ ३ २ ४ २
णाइ। ना२मा२३४औहोवा ॥(१) पू५३रुहूइ। ता३म्यू३

४ ५ १ २ ७ २ ५ १२
ह्वष्टुताम्। पूरुहूताम्। पुरु२ष्टू२३४ताम्। गाथा

२ ५ २ १ २ २ १ १ १ १
२ना२३४याम्। सा३नाम्रू३ताम्। आइन्द्रइतिब्र। वा

२ ५३ २ ३ ४
इ। ता२ना२३४औहोवा ॥(२) आ५३इन्द्रइत्। नो३

२ ४ ५ १ ३ ५ १२
माइहोनाम्। आइन्द्रइन्नो। मा२हो२३४नाम्। दा

२ ५ २ २ २ १ २२ १ २ १२
ता२वा२३४जा। ना३१न्ना३र्त्नूः। माहाꣳअभिज्रु। आ।

२ ५३ २ १ १ १ १
या२मा२३४औहोवा। ओ३का२३४५ः ॥ १८* ॥ [१] १

अथ द्वितीयऋचे, प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रवइन्द्रायमादनꣳहर्यश्वायगायत।

१ २ ३ १ २
सखायःसोमपावे ॥ १९† ॥

---

* ज० मा० १प्र० १ख० १८पाद।

† ह० चा० २, २, २, २ (१भा० ३५८पृ०)—ह० वे० ५, २, १५, १।

हे "सखायः" स्तोतारः ! "वः" यूयं "हर्यश्वाय" हरिनामकाश्वोपेतायेन्द्राय "सोमपावने" सोमानां पात्रे "मादनं" मदकरं हर्षकरं स्तोत्रं प्रगायत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१उ २ २ १ १ २ १ १ २ २उ ३ १ २
प्रꣳसेदुक्थꣳसुदानवउतद्यꣳयथानरः ।
२ ० ३ १ २
चक्रमासत्यराधसे ॥ २* ॥

"उत" अपिच हे स्तोतः ! "सुदानवे" शोभनदानाय "सत्यराधसे" सत्यधनायेन्द्राय† "उक्थं" स्तोमं‡ "यथा नरः" अन्ये स्तोतारः ¶ "द्युक्षं" दीप्तेः साधनभूतं स्तोत्रं शंसति, तद्वत् त्वमपि "शंस" उच्चारय । इदिति पूरणः§ । वयमपि "चक्रम" स्तोत्रं कुर्वाम ॥ २ ॥

---

* ऋ० वं० ५, ३, १५, १ ।

† 'सत्यराधसे—राधः अन्नं धनं वा, सत्यं वा । सत्यान्नाय, सत्यधनाय, सत्यसत्याय वा'—इति वि० ।

‡ 'उक्थं—उक्थानि सामानि, हे उद्गातः ! गायस्व सामानि । अथवा उक्थं अस्मदुच्चने मच्छंस हे स्तोतः ! एकवचनं जात्यपेक्षम्, उक्थजातिं शंस ।'—इति वि० ।

¶ 'यथा नरः—यथा मनुष्याः । प्रथमैषा षष्ठीस्थाने द्रष्टव्या यथा मनुष्यस्य स्तुतिः क्रियते'—इति वि० ।

§ "अथ ये प्रष्टभेऽर्धेऽभिनाक्षरेषु मन्त्रेषु वाक्य-पूरणा आगच्छन्ति पद-पूरणास्ते मिनाक्षरेष्वनर्थकाः कमीमिदिति"—इति नि० नै० १, ९ ।

अथ तृतीया।

१ १ २१उ ३ १ २
त्वन्नइन्द्र वाजयुस्त्वज्रव्युःशतक्रतो।

१ २ ३ १२
त्वंहिरण्ययुर्वसो॥ ३ * ॥ २ †

हे "इन्द्र!" "त्वं" "नः" अस्माकं "वाजयुः" अन्नकामो भव। हे "शतक्रतो" बहुविध-कर्म्मवन्निन्द्र! ‡ "त्वं" "नः" अस्माकं "गव्युः" गोकामो भव। हे "वसो" वासयितरिन्द्र! त्वं "हिरण्ययुः" हिरण्यकामोऽपि भव। ["छन्दसि परेच्छायामपि दृश्यते (वा० ३, ३, ८)"—इति क्यच्॥ ३॥ २

१ ३२१ ५ १
॥ शाक्त्यम्॥ प्रवइन्द्रा२। यमादा२३४नाम्। प्रवा

१ २ २ ३ ५ २ २
२इन्द्रा। औ३हो। या२३४मा। दा३नाम्। हरा

१ २ २ ३ ५ २ २
२अश्वा। औ३हो। या२३४गा। या३ना। सखा२

१ २ २ १ ५ ४ ५
यास्नो। औ३हो३। मायों२३४वा। आ५वो३ह्वा

१ ८ २१२ ५ २
इ॥(१) शंसेदुक्थ्या२म्। सुदाना२३४वाइ। शंसा

● ऋ० वे० ५, ३, १५, १।

† 'गौरीवितेः तदेवार्षम्'—इति वि०।

‡ 'शतक्रतो—बहुभिः क्रतुभिरिष्टवान् यः स शतक्रतुः। अथवा क्रतुरिति कर्मनाम प्रज्ञानाम वा, बहुकर्मा बहुप्रज्ञोवा'—इति वि०।

१ २ १ ३ ५ २ २
२इदुक्था। औ३हो३इ। हू२३४दा। ना३वाइ। उ
१ २ २ ३ ५ २ २ १
ता२द्युत्ता। औ३हो३ई। या२३४था। ना३राः। च
१ २ २ १ ५ ४ ५
क्रमे। सा। औ३हो३। त्यारो२३४वा। धा५सो६हा
१ ३ २ २ ५ २ १
इ ॥(२) तुवन्नआ२इ। इवाजा२३४यूः। तुवा२न्नआ।
१ २ ३ ५ २ २ १ २
औ३हो३इ। द्रा२३४वा। जा३यूः। तुवा२ङ्क्व्यूः। औ
२ ३ ५ २ २ १ २
३हो३इ। ग्रा२३४न। क्रा३ताउ। तुवा२ँहिरा। औ
२ १ ५ ४ ५
३हो३। एयायो२३४वा। वा५मो६हाइ(३) ॥१८*॥[१]२

अथ तृतीयऋचे, प्रथमा।

३१२ ३ १२३१ २३ २१ १२
वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रत्वायन्तःसखायः।
१२ ३२ ३१२
कण्वाउक्थेभिर्जरन्ते ॥ ९ † ॥

हे "इन्द्र!" "त्वायन्तः" त्वामात्मनइच्छन्तः "सखायः" समानख्याना वयं "तदिदर्थाः" यद्विषयं स्तोत्रं तत्तदित्, तदेवार्थः

---

* ऋ० गा० १प्र० १अ० १८सा०।

† ह० आ० २, २, २, ३ (१मा० ८३० पृ०)=ह० वे० ५, ७, २०, १।

प्रयोजनं येषां ; तादृशाः सन्तः "त्वा" त्वां "जरामहे" स्तुमहे। "उ"—इति पूरणः। "कण्वाः" कण्वगोत्रोत्पन्नाः अस्मदीयाः पुत्रादयश्च "उक्थेभिः" उक्थैः शस्त्रैः "जरन्ते" त्वां स्तुवन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १२ २२ २ १ १ ३ २ २ २ १ १
नघेमन्यदापपनवज्रिन्नपसोनविष्ठौ।

२७ ३२ १ २
तवेदुस्तोमैश्चिकेत ॥ २ * ॥

हे "वज्रिन्" वज्रवन्निन्द्र ! "अपसः" अपस्विनः कर्म्मवतः† "तव" सम्बन्धिनिः "नविष्ठौ" अभिनवे यागे वर्त्तमानोऽहं "अन्यत्" त्वद्विषयादन्यत् स्तोत्रं "नघेम्"¶ नैव "आपपन" अभिष्टौमि [पनतेः स्तुतिकर्म्मणः (भ्वा० आ०) उत्तमे णलि रूपम्] ; "तवेदु" तवैव "स्तोमैः"§ स्तोमं स्तोत्रं "चिकेत" अभि जानामि ‖ त्वामेव सर्वदा स्तौमीत्यर्थः ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ५, ७, २०, २।

† "अपस्"—इति कर्मनामसु पठितं निघण्टुकम् (२, १, १)।

‡ 'तव—षष्ठ्येषा द्वितीयार्थे द्रष्टव्या त्वां ० ० ० चिकेत'—इति वि०।

¶ 'न, घ, ईम्'—इति त्रयोऽप्येते उपसर्गाः'—इति वि०।

§ 'स्तोमैः—क्रतुभिः'—इति वि०।

‖ 'चिकेत—चेतनां कुर्म्मः'—इति वि०।

अथ तृतीया।

२ १ २ २ २ २ १ २ १ २
इच्छन्तिदेवाःसुन्वन्तंनस्वप्नायस्पृहयन्ति।

१ २ ३ २ ३ १ १
यन्तिप्रमादमतन्द्राः ॥ ३ * ॥ ३ †

"सुन्वन्तं" सोमाभिषवं कुर्वन्तं यजमानं "देवाः" इन्द्रादयः सर्वे "इच्छन्ति" रक्षितुम्, "स्वप्नाय न स्पृहयन्ति" स्वप्नावस्थान्तस्य सुन्वतो नेच्छन्ति सर्वदा प्रबुद्धमेव कुर्वन्तीत्यर्थः ["स्पृहेरीप्सितः (१, ४, ३६)"—इति कर्मणि चतुर्थी; स्पृहईप्सायां चुरादिरदन्तः]। यतएव मतः कारणात् "अतन्द्राः" अनलसा देवाः "प्रमादं" प्रकर्षेण मदकरं‡ तदीयं सोमं "यन्ति" शीघ्रं प्राप्नुवन्ति ॥ ३ ॥ ३

५ २ ४२ ५ १२
॥ काण्वम् ॥ वयमू३त्वातदिदर्थाः। ऐहिहा२
१ २ २ २ २१ २ ३
इ। वयमुत्वातदिदर्थाइन्द्रत्वायन्तःसखा२३याः। का२
५ १ २ १ ५ १
३४णवाः। उ। क्याइ। भिज्जौ२३४वा। रन्ता३या
१११ १ ५२ १ ४ २ ५ १२ १२
२३४५॥(१) नघेमा३न्यदापपना। ऐहिहा२इ। नघे

---

* ऋ० वे० ५, ७, २०, ३।

† 'अत्र काण्वं साम। कण्वस्यार्षम्'—इति वि०।

‡ 'प्रमादं—मदमोदनप्रापित्यस्येदं रूपम्। प्रकर्षेण तप्यम्'—इति वि०।

र र २१ २ ३ ५
मन्यद्दापपनवज्रिन्नपसोनवा२३इष्टाउ। ता२३४वेत्।

१ र २र१ ५ २र १११ १
ऊ। स्तो। मैश्वो२३४वा। वीता३या२३४५॥(२)

५ २ ४र र ५ १र १ र र
इच्छन्ता३इदेवाःसुन्वन्ताम्। ऐहिहा२इ। इच्छन्तिदेवाः

र २१ २ ३ ५ १ र
सुन्वन्तन्नसप्नायस्पृहया२३न्ती। या२३४न्ती। प्रा। मा।

२१ ५ २ १११ १
दमो२३४वा। तन्द्रा३या२३४५(३)॥ २०*॥ [१] ३

अथ चतुर्थर्चे, प्रथमा।

१ १ ३१२ ३१र २र ३ १ र
इन्द्रायमद्वनेसुतम्परिष्टोभन्तुनोगिरः।

३१२ ३ १२
अर्कमर्चन्तुकारवः॥ १ †॥

"मद्वने" [माद्यतेः (दि०, प०) क्वनिप्] मदनशीलाय "इन्द्राय" तदर्थं "सुतं" सोमं "नः" अस्मदीयाः "गिरः" स्तुतिलक्षणा वाचः परिष्टोभन्तु [स्तोभतिः स्तुतिकर्म्मा (निघ० ३, १४, ४)] सोमं स्तुवन्तु। ततः "कारवः" स्तुतिकारिणः स्तोतारश्च "अर्कं" सर्वैरर्च्चनीयं सोमम् "अर्चन्तु" पूजयन्तु॥ १॥

---

* ऊ० गा० १प्र० १अ० २० सा०।

† ऋ० सा० २, २. २. ४ (१भा० ३६२ पृ०)=ऋ० वे० ६, ६. १८, ४।

अथ द्वितीया।

२ १ २ १ २ १ २ १ १ ३ १ ३ १ २
यस्मिन्विश्वा अधिश्रियोरण्न्तिसप्तसꣳसदः।

१ २ ३ १ २ २
इन्द्रꣳसुतेहवामहे ॥ २ * ॥

"यस्मिन्" इन्द्रे "विश्वाः" सर्वाः "श्रियः" कान्तयः "अधि" अधिकं भवन्ति अतिशयेन तेजस्वीत्यर्थः*। किञ्च "सप्त" सप्तसङ्ख्याकाः "संसदः" सम्यग् यज्ञेषु कर्मकरणार्थं सीदन्तीति संसदो होत्रकाः† यस्मिन् "रण्न्ति" सोमप्रदानार्थं रमन्ते; यद्वा यं शब्दयन्ति स्तुवन्ति तं पूर्वोक्तलक्षणम् "इन्द्रं" "सुते" सोमेऽभिषुते सति "हवामहे" वयं सोमपानायाह्वयामः ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिकद्रुकेषुचेतनन्देवासोयज्ञमत्नत।

१ २ ३ १ २ १ २
तमिद्वर्द्धन्तुनोगिरः ॥ ३ ¶ ॥ ४ §

---

* ऋ० वे० ६, ६, १८, ५।

† 'अधिश्रियः—ये अधिश्रिताः मनुजाः'—इति वि०।

‡ 'सप्तसंसदः—सप्तऋत्विजः; अथ उद्गातारः, होता, मैत्रावरुणः, ब्राह्मणाच्छंसि, अच्छावाकः—एते ऋत्विजः'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ६, ६, १९, १।

§ 'अत्र यौतंकक्षं साम'—इति वि०।

"देवासः" देवाः इन्द्रादयः "त्रिकद्रुकेषु" आभिप्लविकेष्वहःसु ज्योतिर्गौरायुरिति त्रिकद्रुकाः, * तेषु "चेतन" [चितौ संज्ज्ञाने (भ्वा०, प०)] चेतन्ति जानन्ति अनेन स्वर्गादिकमिति चेतनो ज्ञानसाधनो यज्ञः तम् "मतत" मतत्वत स्वैः स्वैः कर्म्मभिः पालनैश्च विस्तारितवन्तः [तनु विस्तारे (तना०, उ०) लङि "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति विकरणस्य लुक्, "तनिपत्योश्छन्दसि (६, ४, ९९)"—इति उपधालोपः "तमित्" तमेव यज्ञं "नः" अस्माकं "गिरः" स्तुतिलक्षणा वाचः "वर्द्धन्तु" वर्द्धयन्तु ॥ ३ ॥ ४

१ २ २ १ २२ १ २ २ १ १
॥ शौतकक्षम् ॥ इन्द्रायमद्वनेसुतम्। इन्द्रायमोवा।
१ २ २ १ २२ १ २ २
द्वा३नायिद्व३ताम्। परिष्टो। भा२३। द्वा३द्वा३।
१ २ ५ १ २ २ १ १२
द्व्नो२गा२३४द्रराः। आमच्चर्का३। हा३द्वा। तुका
१ १ २ १ २ १ २ १
रा२३वा३४३: ॥(१) यस्मिन्विश्वाअधिश्रियः। यस्मिन्विश्वो

* ज्योतिर्मौरायुरितीति चतुर्थ-पञ्चम-षष्ठाना माभिप्लविकाना मङ्गां मात्रां प्रतीकमाचम्। अस्ति मवामयनादिकं सत्रम्; तच्च, एकषष्ट्युत्तरविंशतिदिननिर्वर्त्यं भवति। तच्च, प्रायणीयोऽतिरात्रनाम प्रथममहः, चतुर्विंशनाम द्वितीयमहः, उक्थनाम तृतीयम्, ज्योतिर्गौः चतुर्थमहः, आयुर्गौः पञ्चममहः, आयुर्ज्योतिरितिनामकं षष्ठमहः, एतान्येव षड्डानि आभिप्लविकान्युच्यन्ते; तेष्वेव एषाण्यहानि चतुर्थादीनि त्रीणि त्रिकद्रुकाणीति।

१ १ १ २ १ २ १ २ १
वा। आ३धायिस्रा३याः। रण्न्ति। सा२३। ह्वा३ह्वा

१ २ ५ १ २ १ २
३। म्नासा२ꣳसा२३४दाः। आइन्द्रꣳसुते३। हा३हा

१र २ १ १र १र२
यि। त्वामा२३हा३४३यि ॥(२) त्वकदुकेषुचेतनम्*।

१ १ २ १ १ २ १रर २ १
त्वक्कदुकोवा। षू३चायिता३नाम्। देवासः। या२३।

२ २ १ २ ५ १ २ २
ह्वा३ह्वा३। आमा२ल्ला२३४ता। तामिद्ध्वा३। ह्वा३

१र २ १
ह्वा। तुनोगा२३यिरा३४३:। ओ२३४५३। डा(३)॥१॥[१]४

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरार्चस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

प्रथमः ¶ खण्डः ॥ १ ॥

°, † "वि"—इति ख० पु० पाठः।

‡ ऋ० मा० २म० १ख० १सा०।

¶ 'उक्तः प्रथमपर्य्यायः'—इति वि०।

अथ द्वितीयखण्डस्य*—

प्रथम-ऋचे, प्रथमा ।

३१ २ ३ २ ३ १२३ १ २१ १ २
अयन्तइन्द्रसोमोनिपूतोअधिबर्हिषि ।

१ २ ३ १उ २ १ २
एहीमस्यद्रवापिब ॥ १ † ॥

हे "इन्द्र !" "ते" तुभ्यं त्वदर्थम् "अयं सोमः" "बर्हिषि अधि" वेद्यामास्तीर्णे दर्भे "निपूतः" नितरां दशापवित्रेण शोधितः अभिषवादिसंस्कारैः संस्कृत इत्यर्थः । "ईम्" इदानीम् "अस्य" इमं सोमं प्रति "एहि" आगच्छ । आगत्य च यत्र रसात्मकः सोमो ह्रियते तं देशं "परिद्रव" शीघ्रं गच्छ, तदनन्तरं सोमं "पिब" ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २३ १ १ ३ १२ २२ ६२
शाचिगोशाचिपूजनायꣳरणायतेसुतः ।

१ २ २१२
आखण्डलप्रहूयसे ॥ २ ‡ ॥

"शाचिगो" [शाचयः शक्ता गावो यस्यासौ शाचिगुः ; यद्वा, शच् व्यक्तायां वाचि (भ्वा०,आ०), अस्मादौणादिक इञ् प्रत्ययः]

---

* 'इदानीं मध्यमोऽभिधीयते'—इति वि० ।

† ऋ० आ० २, १; २, ५ (१भा० ३६५पृ०)=ऋ० वे० ६, १, २४, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, १, २४, २ ।

ग्राचयः व्यक्ताः प्रख्याता गावो रश्मयो वा यस्य तादृश ! *
हे "ग्राचिपूजन" [पूज्यतेऽनेनेति पूजनम्] स्तोत्रादि-प्रख्यात-
पूजन ! † "ते" तव "रणाय" रमणाय सुखजननाय "अयं"
सोमः "सुतः" अभिषुतः ; अतः कारणात् हे "आखण्डल"
अचूणामाखण्डयितः इन्द्र ! ‡ "प्रह्वयसे" प्रकृष्टाभिः स्तुतिभि-
राह्वयसे । इत आगत्य इमं सोमं पिबेत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ २ १ २ २ १ २
यस्तेशृङ्गवृषोणपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः ।
२ २ ३ १ २ २ २
न्यस्मिन्दध्रआमनः ॥ ३ ॥ ५ §

हे "शृङ्गवृषोणपात्" [शृङ्गवृषामा कश्चित् ऋषिः तस्य चेन्द्रः स्वयमेव पुत्रतया जज्ञे—इत्याख्यायिका । नपादित्व-पत्यनाम] हे शृङ्गवृष-पुत्र ! [शृणन्ति हिंसन्तीति शृङ्गाणि-रश्मयः, तैर्वर्षतीति शृङ्गवृड़ादित्यः, तस्य न पातयितः स्वकीये ऽवस्थानेऽवस्थापयितः ! । "सुवामन्त्रिते (२, १, २)"—इति षष्ठ्यन्तस्य पराङ्गवद्भावेनामन्त्रितानुप्रवेशात् समुदायस्याष्टमिकं

---

* 'ग्रचीति कर्मनाम, कर्मणि प्रयुक्ते गावः प्रदीयन्ते यस्य असौ ग्राचिगुः'—इति वि० ।

† 'ग्राचिपूजनः—कर्मणि पूज्यते ग्राचिपूजनः'—इति वि० ।

‡ 'आखण्डलः—इन्द्रस्य नामैतत्'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ६, १, २४, २ ।

§ 'अत्र देवोदासौर्वृसमनौ । देवोदासनरोर्ने, और्वृसद्मनं सने एकाहे । —इति वि० ।

सर्वानुदात्तत्वम्। ईट्टश!] हे इन्द्र! "ते" तव सम्बन्धि "प्रणपात्" प्रकर्षेण नपातयिता रक्षिता, "कुण्डपाय्यः" [कुण्डैः पीयते अस्मिन् सोम इति कुण्डपाय्यः क्रतुविशेषः। "क्रतौ कुण्डपाय्य-सत्त्राय्यौ (३, १, १३०)"—इति पिबतेरधिकरणे यत्-प्रत्ययो युगागमश्च निपात्यते—एतत्सञ्ज्ञो यः] क्रतुरस्ति; "अस्मिन्" कुण्डपाय्य-क्रतौ "मनः" स्वान्तं "आ नि दधे" अभितो वर्द्धमानाः कुण्डपायिनामान ऋषयः पुरा निदधिरे सम्यक् त्वदैवत्यं क्रतुमनुष्ठितवन्त इत्यर्थः। [दधातेर्लिटि "दधयोरे (६, ४, ७६)"—इति रे-भावः]* ॥ ३ ॥ ५

॥ राचिदैवोदासम् † ॥ अयन्तइन्द्रसोऽ४मः। ना२३ ४यि। पूतोअधिबर्हिषी। निपूतोअधिबर्हा २ ३ यिषी। ऐच्चोयिमा२३स्या। द्रवापा२३४५यिबाई५६ ॥(१) ग्राचि गोग्राचिपू। जनाइ। आ२३४। यꣳरणायतेसुताः।

---

* अत्रैवं व्याचष्टे विवरणकार-माधवः—"यः" "ते" तव हे सोम! "नपात्" न पिबति तस्य इयं जन्म; "प्रणपात्" प्रक्षिपत्य त्वदर्थं पातव्यः। "कुण्डपाय्यः" अत्र कुण्डाश्वमसाः कुण्डप्रतिकृतयः तैः पीयते कुण्डपाय्यः। अथवैतान्मन्त्र-विशेषणानि। पूरुरत्र ऋषिः प्रधानभूतो गौः, तादृग् इन्द्रः; तस्य यः प्रकर्षेण सोमपानं कल्पयति कुण्डाकारेश्वमसैरितरैश्च। नि अस्मिन् दधे, नि-शब्दो न-शब्दस्यार्थे द्रष्टव्यः; न अस्मिन् यजमाने दधे धारयति इन्द्रः आत्मीयं मनः अनुग्रहाय?"—इति।

† 'अत्रीरुवदैवोदासम्'—इति ख० पु० पाठः।

अयꣳरणायतेहꣳवा३ताः । आखण्डाꣳवा३ला । प्रꣳहयाꣳवा३४५
साꣳ५ꣳयि ॥(२) यस्तेभ्रꣳवृषः । नपाꣳवा३त् । प्राꣳवा३४ ।
णपात्कुण्डपायियाः । प्रणपात्कुण्डपायाꣳवा३याः । नियꣳ
स्मा२३यिन्दा । ध्रꣳआमा२३४५ नाꣳ५ꣳः । ईꣳ२
३४ हा३) ॥ २ * ॥ [१]

॥ और्ध्वसद्मनम् ॥ अयन्तइन्द्रसोमः । उवाꣳहायि ।
निपूतोअधिबर्हिष्युवा२३ꣳहोयि । निपूतोअधिबर्हिष्युवा२३
ꣳहोयि । आयिꣳहोमस्या । द्रावापा२३४५यिवाꣳ५ꣳ ॥(१)
शाचिगोशाचिपूजन । उवाꣳहायि । अयꣳरणायतेसुत
उवा२३ꣳहोयि । (वार२) । आखण्डला । प्राꣳहया२३४५
साꣳ५ꣳयि ॥(२) यस्तेभ्रꣳवृषोणपात् । उवाꣳहार्य । प्रण
पात्कुण्डपाय्यउवा२३ꣳहोयि । (वार२) । नायस्मिन्दा ।

° ऋ० मा० १म० २अ० २सा०

१, ३ २ १ १ १र २ १२
ध्रा॒ऽआमा२३४५ना६५६: । सु॒वृ॒क्तिभि॑र्मादन॒म्भरे॑२ऽधुवा

१ऽ(३) ॥ ३ * ॥ [२] ५

अथ द्वितीयऋचे, प्रथमा।

१र २र २ १ २ ३ २ १ १र २र
आ॒ह॒नइ॒न्द्र॒क्षु॒म॒न्त॒च्चि॒त्र॒ङ्ग्रा॒भंस॒ङ्गृ॒भा॒य।

१ २र २र
म॒हा॒ह॒स्तीद॑क्षि॒णेन॥ १ †॥

हे "इन्द्र!" त्वं "महाहस्तो" महाहस्तवान्, तदानीमेव "नः" अस्मदर्थं "क्षुमन्तं" शब्दवन्तं स्तुत्यमित्यर्थः। "चित्र" चायनीयं "ग्राभं" ग्राहकं ग्रहणार्हं वा धनं "दक्षिणेन" हस्तेन "नु" क्षिप्रं "आ सङ्गृभाय" आभिमुख्येन सङ्गृहाण॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १र २र ३ २ १ १२ ७ २ २
वि॒श्मा॒हि॒त्वातु॒वि॒कू॒मिं॑न्तु॒वि॒दे॒ष॒ण॒न्तु॒वी॒म॒घम्।

३ १र २र
तु॒वि॒मा॒त्रम॑वो॒भिः॥ २ ‡॥

---

* ऊ० गा० १प्र० २अ० ३सा०।

† ऊ० आ० २, २, १, ३ (१भा० ३०९ पृ०)=ऋ० वे० ६, ५, ३७, १।

‡ ऋ० वे० ६, ५, ३७, २।

हे इन्द्र! "त्वा" त्वां "विद्म हि" जानीमः खलु। कीदृशम्?—इति, "तुविकूर्मिं" बहुकर्माणं, * "तुविदेष्णं" बहुप्रदेयं, † "तुविमघं" बहुधनं "तुविमात्रं" बहुप्रमाणम्, "अवोभिः" रक्षणैर्युक्तम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ १२ ३ १२ २ ३ १ २
नहित्वाशूरदेवाममर्त्तासोदित्सन्तम्।
२ १३ ३ १ २
भीमन्नगांवारयन्ते ॥ ३ ‡ ॥ ६ ¶

हे "शूर!" "दित्सन्तं" दातुमिच्छन्तं "त्वा" त्वां "देवाः" "न हि वारयन्ते" न निवारयन्ति खलु; तथा "मर्त्तासः" मनुष्या अपि न वारयन्ते "भीमं न गां" भयजनकं वृषभं यज्ञे प्रदत्तमिव, तं यथा वारयितुं न शक्नुवन्ति तद्वत् ॥ ३ ॥ ६

१२ २१ २ २
॥ आकूपारम् § ॥ आवृनङ्। द्रष्टुमाइन्ताम्। चि

---

* 'तुविकूर्मिं' तुविशब्दो बहुवाची, कूर्मिशब्दो मनुष्यवाची कर्मवाची वा इति वि०। "तुवि"—इति निघण्टौ बहुनामसु द्वितीयं पदम् (३,१)। कूर्मिशब्दस्तु मनुष्यनामसु कर्मनामसु वा पठितो न दृश्यते।

† 'तुविदेष्णं—देष्णं दानं बहुदानम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ६, ५, ३७, ३।

¶ 'अवाकूपारं साम। आकूपाराङ्गिरसो गोषा च आर्षम्'—इति वि०।

§ 'राज्याकूपारम्'—इति ख० पु० पाठः।

१ २ १ २ १ २
त्रङ्ग्राभ॰सङ्गृभा२या। चित्रङ्ग्राभ॰सम्। गृ। औ३

२ ३ ५ २ १ २ १
होयि। भा२३४या। ऐद्होयि। महाहस्तीदत्ता२३द्हो

२ १ ३ ५ ४ ५
यि। औद्हो। वाद्हो२३४वा। णा३५यिनो६द्हायि॥(१)

२ १ २ २ १ २ १
विद्माहित्वातुवि। कू३र्मीम्। तुविदेष्णुन्तुवीमा२घाम्।

२ १ २ २ ३ ५
तुविदेष्णुन्तु। वा। औ३द्होयि। मा२३४घाम्। ऐ

१ २ १ २ १
द्होयि। तुविमात्रमार३द्होयि। औद्हो। वाद्हो२३

५ ४ ५ १ २ २ २
४वा। वो३५भो६द्हायि॥(२) नहित्वाशूर। दा३यि

२ १ २ २ १ २ १
वाः। नमर्त्तासोदित्सा२न्ताम्। नमर्त्तासः। दा। औ

२ ३ ५ २ १ २ २
३द्होयि। त्सा२३४न्ताम्। ऐद्होयि। भीमन्नगांवारा२

१ २ १ २ ५ ४
३ द्होयि। औद्हो। वाद्हो२३४वा। या३५न्तो६

५
द्हायि(३)॥ ४ *॥ [१] ६

---

* ऊ० गा० १प्र० २ष० ४सा०।

अथ तृतीयर्चे, प्रथमा ।

२ १ १ ३ २ ३ १ १ ३ १ २
अभित्वावृषभा सुते सुतꣳ ऋजामि पीतये ।

२ १ १ ३ १ २
तृम्पा व्यश्नुहीमदम् ॥ १ * ॥

हे "वृषभ" हे इन्द्र ! "त्वा" त्वां "सुते" सोमेऽभिषुते सति "सुतम्" अभिषुतं सोमं "पीतये" पानाय "अभिऋजामि" । "तृम्प" तृप्य । "मदं" मदकरं सोमं "व्यश्नुहि" च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ १ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ २ ३ १ २
मात्वामूरा अविष्यवो मोपहस्वान आदभन् ।

१ २ ३ १ २
माकीं ब्रह्मद्विषं वनः ॥ २ † ॥

हे इन्द्र । "त्वा" त्वां "मूराः" मूर्खा मूढाः, मनुष्याणामधः "अविष्यवः पालनकामाः "मा दभन्" मा हिंसन्तु । "उपहस्वानः" उपहसनपराश्च "मा" भवन्तु । "ब्रह्मद्विषं" ब्राह्मणानां द्वेष्टारं "मा कीं वनः" मा भजेथाः ¶ ॥

"ब्रह्मद्विषं"-"ब्रह्मद्विषः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० प्रा० २, २, २, ७ (१भा० ३३८ पृ०)=ऋ० वे० ६, ३, ४६, १ ।

† ऋ० वे० ६, ३, ४६, २ । ‡ आत्मपरिवारमात्राणामिति भावः ।

¶ 'वनः—यद्यपि वनतिः स्तुति-कर्मा तथाप्यत्र सम्भजने द्रष्टव्यः ; मा यज्ञेन सम्भज्यताम्'—इति वि० ।

अथ तृतीया।

२ २ १ १ २ २ १ २ ३ १ १
इन्द्रत्वागोपरीणसम्मन्दे मन्दन्तुराधसे।

१ २ १ १र २र
सरोगौरोयथापिब ॥ ३ * ॥ ७ †

हे इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "इह" अस्मिन् यज्ञे "गोपरीणसं" गव्येन पयसा सम्भिन्नं सोमं ‡ "मन्दे" मन्दते "राधसे" धनाय ¶ "मन्दन्तु" मनुष्या मादयन्तु। त्वञ्च सोमं "यथा" "गौरः" मृगः "सरः" § पिबति, तथा "पिब" ॥ ॥

"परीणसं"-"परीणसा"—इति पाठो ॥ ३ ॥ ७

२ १ २र र १र २ १ १
॥ आर्षभम् ॥ अभित्वावृषभास्तुते। सुतञ्जोषा।

र १ १ २र १र २ १
मिपीतायाऽयि। सुतञ्जजामि। पीताऽयायि। चा

* ऋ० वे० ६, ३, ४६, ४। † 'अथ आर्षभं साम'—इति वि०।

‡ 'गोपरीणसम्—गावः परि समन्तात् नीयन्ते दक्षिणा यस्य स गोपरीणस इन्द्रः'—इति वि०।

¶ राधसे—राधः अन्नं सोमलक्षणं तस्मिन् सन्निधानभूते सोमे—इति वि०।

§ 'सरः सरणं कृत्वा'—इति वि०। "सरः"—इति निघण्टौ उदकनामसु अष्ट चिंशत्तमं पदम् (१, १२)।

॥ 'गौरः यथापिब—तथाच ब्राह्मणे—"गौरमृगो ह वा अन्ना अरण्यादाजानं पिबति"—इति'—इति वि०।

२ २ २ ५ ६ २ २ १ १ १ १ १ १
२३म्या३। वा२या२३४औहोवा। श्रुष्टीमदा२३४५म्॥(१)

१२ २ १२ १२ २ १ २२ १ १ ४ १
मात्वामूराअविष्यवः। मोपहस्वोवा। नआदाभा२न्।

१२ १ १ १२ १२ २ १ २ १
मोपहस्वानः। आदा२३भान्। मा२३कीं३म्। ब्रा२

२ ५२ २ २ १३१११ २ १ १२ १२ १२
ह्मा२३४औहोवा। द्विषवना२३४५:॥(२) इन्द्वागोपरो

२ १ १ २ १ १२ २
णसम्। मन्दमन्दोवा। तुराधासा२यि। मन्दमंन्दन्तु।

१२ २ १ १ १ २ ५२ २
राधा२३सायि। सा२३रा३:। गौ२रा२३४औहोवा।

२ २ १ ३ १ १ १ १
यथापिबा२३४५(३)॥ ५ * ॥ [१] ७

अथ चतुर्थऽर्चे—प्रथमा।

३ १ १ १२३ ३ २ ३ १ १ ३ १ १
इदंवसोसुतमन्धःपिबासुपूर्णमुदरम्।

१ १ २ १ ३
अनाभयिन्नरिमाते॥ १॥

हे "वसो" वासयितरिन्द्र! "इदं" पुरोवर्त्तमानं "सुतम्" अभिषुतम् "अन्धः" अन्नं सोमलक्षणं "पिब"। यथा—"उदरं"

---

* ऋ० गा० १प्र० २अ० ५खा०।

† ऋ० खा० २, १, ३, १० (१मा० २०५ पृ०)=ऋ० वै० ३, ७, १७, १।

"त्वदीयं" जठरं "सुपूर्णम्" अतिशयेन सम्पूर्णं भवति तथेत्यर्थः। हे "अनाभयिन्" [आ समन्ताद् बिभेति—इत्याभयी; बिभेतेरौणादिक इनिः; न आभयी अनाभयी तादृश!] हे इन्द्र! "ते" तुभ्यं त्वदर्थं "ररिम" उक्तलक्षणं सोमं दद्मः [रादाने (अदा०, प०) छान्दसो (३,२,१०५) लिट्॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २ २ २उ ३ २ २ २ २ १ १
नृभिर्धौतःसुतोअश्मैरव्यावारैःपरिपूतः।

२ २ ५ ३ २ २ १ २
अश्वोननिक्तोनदीषु॥ २ *॥

"नृभिः" अध्वरस्य नेतृभिः ऋत्विग्भिः "धौतः" तृणाद्यपनयनेन शोधितः [यद्वा; धौतः धूतः आधूतः, अदाभ्यग्रहे† आधूननेन संस्कृतः, तदनन्तरम् "अश्मैः" अश्मभिर्गवभिः करणभूतैः "सुतः" अध्वर्युभिष्टुतः ततः "अव्यावारैः" अविमेषः

---

* ऋ० वे० ५, ७, १७, २।

† ग्रहः=गृह्यतेसोमं सोमपानपात्रम्। ते च प्रातःसवने उपांशुग्रभृतयः, माध्यन्दिने सवने मरुत्वतीयाद्यः, तृतीयसवने त्वादित्यादयः। किञ्चैतदतिरिक्ताः षोडश्यादि-यागविशेषे नियुक्ताश्च सन्ति बहवः षोडशीत्यादयः। तत्सर्वानतिरिक्त एकोऽदाभ्यनामकः; स च यस्मिन्नौदुम्बरे पात्रे अंशुर्गृह्यतेतस्मिन् सोमसंस्थामियाभ्यासभ्रान्नाभ्य आनीय तस्मिंस्तिस्रः सोमलताः प्रक्षिप्याग्नये त्वेत्यादिविधिमन्त्रैः क्रमेण गृह्यते विहितश्चैतत् कात्यायनेन "अदाभ्यं गृह्णात्यासिच्य सोमाभ्याः पात्रे तस्मिंस्तूष्णीं त्रीनंशून्नृधायाग्नये त्वा गायत्रच्छन्दसेति (य० वा० ८, ४७) प्रतिमन्त्रमुपयामः सर्वत्राभिषेषात्" (१२, ५, १२-१५)"—इति।

तत्सम्बन्धिभिः वारैः "परिपूतः" शोधितः, दशापवित्रस्य नाभिपूततया ऊर्णास्तुकया हि सोमः परिपूयते ; तदुक्तम् भगवता आपस्तम्बेन—"शुक्लामूर्णास्तुकां यजमानाय प्रयच्छति तां ग्रन्थिं दशापवित्रस्य नाभिं कुरुते शुक्लत्वं लक्ष्याः पवित्र मीतं भवति"—इति *। "नदीषु" नदनास्वप्सु † "अक्षीन" अक्षइव "निक्तः" निर्णिक्तः शोधितः ‡ ; यथा अप्सु स्नातो अक्षः अपगतमलः सन् दीप्तो भवति, एवं वसतीवर्याख्याभिरद्भिरभिषुतः सोमो दीप्तो भवतीत्यर्थः । ईदृशो यः सोमः "तन्तेयवम्" —इत्युत्तरया सम्बन्धः ॥

"धौतः"-"धूतः"—इति पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ १ २ २ ३ १ २ ३ १ १ ३ १ २
तन्तेयवंयथागोभिःस्वादुमकर्मश्रीणन्तः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ १
इन्द्रत्वास्मिन्त्सधमादे ॥ ३ ¶ ॥ ८ §

"तं" पूर्वोक्तगुणं सोमं हे इन्द्र ! "ते" त्वदर्थं "यवं यथा" यवमयं सवनीय-पुरोडाशमिव "गोभिः" गवि भवैः क्षीरादिभिः

---

* स्पष्टचैतत् षष्ठं यजुर्वाजसनेयि-संहितायां सप्तमाष्टकाध्यायचतुष्टये ।

† 'नदीष—अधिकरणभूतासु'—इति वि० ।

‡ 'निक्तः—स्नातः'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ५, ७, १७, २ । § 'अव सारंसाम'—इति वि० ।

अपघद्व्यैः "श्रीणन्तः" मिश्रीकुर्वन्तः "स्वादु" रसवत्त्वेनास्वाद-नीयम् "अकर्म्म" अकार्षं * [करोतेर्लुङि "मन्त्रे घस (२, ४,८०)"—इति च्लेर्लुक्] । यस्मादेवं तस्मात् हे "इन्द्र!" "त्वा" त्वां तादृशं सोमं पातुम् "अस्मिन्" वर्त्तमाने "सधमादे" सहमादने यज्ञे आह्वयामीति शेषः ॥ ३ ॥ ८

॥ गारम् ॥ इदंवसोसुतमन्धाइए। पिबासुपूइर्णा

मुदरौ। ह्वोइवा। पिबासुपूर्णामुदरौ। ह्वोइवा। आ

नाभाइयोन्। ररिमाता। औइह्वोवा ॥(१) नृभिर्द्वौं

तःसुतोअस्माइयिरे। अव्यावारैइःपारिपूतौ। ह्वोइवा।

अव्यावारैःपारिपूतौ। ह्वोइवा। आस्वोनाइनौ! क्तो

नदीषू। औइह्वोवा ॥(२) तन्तेवयंयथागोभीइरे। स्वा

दुमकाइर्माश्रीणन्तौ। ह्वोइवा। स्वादुमकर्म्माश्रीणन्तौ।

---

* 'यवं यथा गोभिः स्वादुम् अकर्म क्षतवन्तः। गोभि रिति तृतीया-बहुवचनं चतुर्थी-बहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्। गोभ्यः यवं यथा, गोभ्यः स्वादुमुत्पादयन्ति तद्वत् तथापि सोमम् अकर्म्म करवाम। श्रीणन्तः प्रीणयन्तः, अथवा ० ० ०।'—इति वि०।

१ १ २ २ १ २१ १ ४
ओ३वा। आ३इन्द्रात्वा३इमीन्। सधमादा। ओ३ओ
५ ४
वा। ओ३५इ। डा ॥ ६ * ॥ [१]८

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरार्चिकस्य प्रथमस्याध्यायस्य-
द्वितीयः खण्डः ॥ २ ॥

अथ तृतीय-खण्डे —

प्रथमतृचे, प्रथमा।

१ १२ २२ १ १ २
इदꣳह्यन्वोजसासुतꣳराधानाम्पते।

२ ३ २ १ ३
पिबात्वाऽ३स्यगिर्वणः ॥ १ † ॥

हे "राधानां पते" धनानां स्वामिन्! "गिर्वणः" गीर्भिः स्तुतिभिः वननीय! हे इन्द्र! "ओजसा" बलेनावहितः त्वम् "इदम् अनु" अनेनानुक्रमेण उद्देशानुक्रमेणेत्यर्थः; "सुतम्" अभिषुतम् "अस्य" इमं सोमं "नु" क्षिप्रं "पिबहि" ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १प्र० २अ० ६सा०।

† ऋ० अ० २, २, ३, १ (१भा० ३७५ पृ०)=ऋ० वे० १, ३, १६. ५।

अथ द्वितीया।

१ २ १ ३ २ १२ १२ २ १२ १२ २क १२
यस्तेअनुस्वधामसत्सुनियक्षतन्वम्।

१ २
सत्वाममत्तुसोम्य* ॥ २ † ॥

हे इन्द्र! "ते" त्वदर्थं "यः" सोमः "स्वधाम्" अन्नम् "अनु" लक्ष्य द्यावभिः अभिषुतः "असत्" भवेत् [अस्तेर्लेटाडागमः। यद्वृत्तयोगान्न निघातः (८,१,६६), आगमस्यानुदात्तत्वे धातुस्वरः (६,१,१६२)]। "सुते" तस्मिन् सोमे "तन्वं" ‡ स्वकीयं शरीरं "नियच्छ" प्रेरय "सः" सोमः हे "सोम्य" सोमार्ह ¶! "त्वा" त्वां "ममत्तु" मादयतु ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ १ २ २उ २ १ २ ३ १ २
प्रतेअश्नोतुकुक्ष्योःप्रेन्द्रब्रह्मणाशिरः।

१ ३ १ २ ३ २
प्रबाहूशूरराधसा ॥ २ § ॥ ९ ॥

---

* "सोम्यम्"—इति ऋ-पाठः। † ऋ० वे० ३, ७, १६, ६।

‡ "छन्दसुभया (६, ४, ८६)"—इति सूत्रेण "तन्वादीनां छन्दसि बहुलम्"—इति वार्त्तिकवचनेनोवङादेशाभावः साधुः।

¶ "सोम्य—सोमानां स्वामिन् पते!"—इति वि०। "सोमसर्हति यः (४, ४, १३७)" "छान्दसो योऽत्र सायणमते सङ्गच्छते।

§ ऋ० वे० ३, ३. १६, ७।

॥ 'अत्र घनश्चाग्निधनं साम'—इति वि०।

हे "इन्द्र!" "सः" सोमः "ते" तव "कुक्ष्योः" कुक्ष्योरुभयोः पार्श्वयोः "प्राप्नोतु" प्रकर्षेण व्याप्नोतु [अपू व्याप्ता वित्यस्य (स्वा०,आ०) लोटि व्यत्ययेन परस्मैपदम् (३,१,८५) निघातः (८,१,७०)] तथा "ब्रह्मणा" स्तोत्रेण संहितः * स सोमः "शिरः" शरीरम् [अवयविना अवयवो लक्ष्यते] त्वच्छरीरं प्राप्नोतु। हे "शूर" विक्रान्तेन्द्र! "राधसा" धनेन निमित्तेन तव "बाहू" अपि प्राप्नोतु॥

"राधसा"-"राधसः"—इति पाठौ॥ ३॥ ९

॥ घृतच्युन्निधनम्॥ इदꣳह्यन्३ओजसा। सुतꣳ
२ १ २र र २ १ २ १
राधा। नाम्यातौ। होवा३हायि। पिबातुवा। स्यगा
२र र २ १ २र र २
यिर्वाणौ। होवा३हायि। पिबातुवौ। होवा३हा।
१ २ ५र र १ र २
स्यगायिः। वा२ना२३४ओहोवा॥(१) यस्ते३अनुस्वा३धा
१ २ १ २र र २
मसात्। सुतायिनिय। क्तानुवमौ। होवा३हायि।

---

* 'ब्रह्मणा अन्नेन, शिरः; अथवा ब्रह्मणा वैविद्यलक्षणेन शिरः। ० ० ०। बाहू ० ० ०। व्याप्नोतु ० ० ०। एतदुक्तं भवति समश्नात् मदीयेन यज्ञेन'—इति वि०।

१ १ १ २र र २ १ २र
सत्वाममा। तुसोमायौ। हीवाइहायि। सत्वाममौ।

र १ १र २ ५र र २ र
हीवाइहा। तुसो। मा२या२३४औहीवा ॥(२) प्रतेअ

र १ १ २ १ २र र
श्रोष्ठइकुश्चियोः। प्रायिन्द्रब्र। ह्मणाशायिरौ। ह्वीवा

२ १ २ १ २र र १
इहायि। प्रवाहुश्च। रराधामौ। हीवाइहायि। प्र

१ २र र १ १र २ ५र र
वाहुश्चौ। हीवाइहा। रररा। धा२मा२३४औहीवा।

२ १ ३ १ १ १ १
घृतश्चुताइ३४५ः(३) ॥ ७ * ॥ [१] ९

अथ द्वितीय-ऋचे, प्रथमा।

२३ ३ १ १ ३ १ २ ३ १र २र
आत्वेतानिषीदतेन्द्रमभिप्रगायत।

१ १ ३ १ २
सखायस्तोमवाहसः ॥ १ † ॥

"तु"[-शब्दः क्षिप्रार्थो निपातः, द्वाभ्या माङ्भ्याम् एतमिति शब्दोऽभ्यसनीयः]। हे "सखायः" ऋत्विजः! क्षिप्रम् अस्मिन्

---

* ऋ० गा० १प्र० २ऋ० ७सा०।

† ऋ० सा० २, २, २, १० (१भा० २७२ पृ०)=ऋ० वे० १, १, १९, १।

कर्मणि आगच्छत आगच्छत [आदरार्थोऽभ्यासः]। आगत्य च "निषीदत" उपविशत। उपविश्य च "इन्द्रम्" "अभिप्रगायत" सर्वतः प्रकर्षेण स्तुत। कीदृशाः सखायः ? "स्तोमवाहसः" स्तुत्यच्छदगादिस्तोमानस्मिन् कर्मणि वहन्ति प्रापयन्तीति॥ ["अर्त्ति-स्तु-सु-हु-सृ धृ-क्षि-क्षु-भा-या-वा-पदि-यक्षि-नीभ्यो मन् (उ०,१,१३७)"—इति स्तौतेर्मन्-प्रत्ययान्तः स्तोमशब्दो नित्वादाद्युदात्तः (६,१,१८७)। स्तोमं वहन्तीति स्तोमवाहसः "वहि-हा-धाञ्-हृभ्यश्छन्दसि"-इत्यसुन् प्रत्ययः, तत्र णिदित्यनुवृत्तेः "अत उपधायाः (७,२,११६)"-इत्युपधाया वृद्धिः; छदुत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वे (६, २, १३९) प्राप्ते "गतिकारकयोरपि पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वञ्च (उ०, ४, २२६)"—इत्यौणादिकसूत्रात् समासस्याद्युदात्तः॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १ २ ३ १२ २२ ३ १ २
पुरुतमम्पुरुणामीशानंवार्य्याणाम्।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २
इन्द्रꣳसोमेसचासुते॥ २॥*

सखायोऽभिप्रगायतेति पदद्वयमत्रानुवर्त्तते। हे "सखायः" ऋत्विजः! "सचा" यूयं सर्वे सह यद्वा सचा परस्परसमवायेन

---

* ऋ० वे० १, १, १९, २।

"सुते" अभिषुते सोमे प्रवृत्ते सति "इन्द्रम्" अभिप्रगायत। कीदृशमिन्द्रम्? "पुरूतमं" पुरून् बहून् शत्रून् तामयति ग्लापयतीति पुरूतमः [तमु ग्लानौ (दि०,प०)—इति धातोर्ण्यन्तात् पचाद्यचि चित्वादन्तोदात्तेऽपि (६, १, १६३) क्रादुत्तरपद-प्रकृतिस्वरं (६, २, १३) बाधित्वा "परादिश्छन्दसि बहुलम्* (६, २, १८८)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्], "पुरूणां" बहूनां "वार्याणां" वरणीयानां धनानाम्† "ईशानं" स्वामिनम्॥ २॥

अथ दृतीया।

१ २ ७ २ ३ १ २ ३ २ ३ १८ २८
सघानोयोगआभुवत्सरायेसपुरन्ध्या।

२ ३ १ २ ३ १८ २८
गमद्वाजेभिरासनः॥ ३ ॥ १० ¶

घ-शब्दोऽवधारणार्थोनिपातः,§ सर्वैस्तच्छब्दैः सम्बध्यते। "स घ" स एवेन्द्रः पूर्वमन्त्रोक्तगुणविशिष्टः "नः" अस्माकं‖ "योगे" पूर्वमप्राप्तपुरुषार्थस्य सम्बन्धे**"आ भुवत्" आभिमुख्येन

---

* अनेन सूत्रेण तु सकथ-शब्दस्यैवायुदात्तो विकल्प्यते, परमत्र पठितवार्त्तिक-श्लोकेनैवान्यत्रापि सर्वत्र दृष्टानुविधयः कल्प्यन्ते। तथाच—"परादिश्च परान्तश्च पूर्वान्तश्चापि दृश्यते। पूर्वादयश्च दृश्यन्ते व्यत्ययो बहुतन्त्रतः"—इति।

† 'वार्याणाम् उदकानाम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, १, १८, ३।

¶ 'अत्र दैवतिथं साम'—इति वि०।

§ 'घ—इति पदपूरणः'—इति वि०।

‖ 'नः—अस्माभ्यम्'—इति वि०।

** 'योगे—यत्र देवता युध्यते असौ योगः, यज्ञे'—इति वि०।

भवतु पुरुषार्थं साधयत्वित्यर्थः [भवते राय्यौर्लिङि परतो "लिङ्याशिष्यङ् (३, १, ८६)"—इत्यङ् प्रत्ययः, तस्य ङित्वेन गुणाभावात् उवङादेशः], स एव "राये" धनार्थम् "आभुवत्" आभवतु ; स एव "पुरन्ध्या" योषित्या * भुवत् [यद्वा, बहुविधायां बुद्धावाभुवत् "पुरन्धिर्बहुधीः"—इति यास्कः (६, १२)] स एव "वाजेभिः" देवैः अन्नैः सह "नः" अस्मान् † "आगमत्" आगच्छतु [गमेर्लेट् तिप्, "इतश्चलोपः परस्मैपदेषु (३, ४, ८७)"—इति इकार-लोपः, "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शपोलुक्, "लेटोडाटौ (३, ४, ८४)"—इत्यडागमः, आगमाअनुदात्ताः इति तस्यानुदात्तत्वे धातुस्वरएव (६, १, १६२) गिष्यते ॥ ३ ॥ १०

॥ दैवातिथम् ॥ आढ३४। एतानि। षोदाईता।
इन्द्रमभायि। प्रगायता। साखायस्तोम। वा। औ
३ह्वो। वा३ह्वा२३४साः। ह्वयायि। साखायःस्तोम।
वा। औ३ह्वो। ऊम्मा२३। ह्वा३४५सोईह्वायि ॥(१)

---

* 'पुरन्ध्या—रण्या'—इति वि०। "पुरन्धिर्बहुधीस्तत्कः पुरन्धिर्भगः पुरस्तान्नस्माद्यत्येक मिन्द्र इत्यपरं स बहुकर्मनमः पुराह दारयितृतमो वरुण इत्यपरम्"—इति निरु० मै० ६, १६।

† 'नः—अस्मभ्यम्'—इति वि०।

२१ ५ ५ १२२१ २१२
पुरू३४। नम्पु। रूर्णाम्। ईशानंवा। रियाणा

२ १२१२१ २ २ १ ३
म्। इन्द्र्ꣳसोमेस। चा। औ३ह्वो। वावा२ ह्व२

५ २१ २ १२१२१ २ १
३४तायि। ह्वयायि। इन्द्र्ꣳसोमेस। चा। औ३ह्वो।

१ २ ५ ३२ २२२
ऊम्मा२३। ह्व३४५तो६ह्वायि॥(२) सघा३४। नोयोगे।

५२ ५ २२१२ २ १ २१२५२१
आभू६वात्। सरायेसाः। पुरन्धिया। गमद्वाजेभिः।

२ २ १ ३ ५ २१ २
आ। औ३ह्वो। वावा२सा२३४नाः। ह्वयायि। गम

१२२१ २ १ २
द्वाजेभिः। आ। औ३ह्वो। ऊम्मा२३। सा३४५

५
नो६ह्वायि(३)॥८*॥[१]१०

अथ तृतीयऽर्चे, प्रथमा।

१ २ २ १२३१२
योगेयोगेतवस्तरंवाजेवाजेह्वामहे।

१२ ३१२ २१२
सखायइन्द्रमूतये॥१†॥

---

* ऊ० गा० १प्र० २अ० ८सा०।

† ह्व० आ० १, २, २, ९ (१भा० ३७१ पृ०)=य० वे० ११, १४ = ऋ० वे० १, १, २९, २।

"योगेयोगे" प्रवेशे प्रवेशे तत्तत्कर्मोपक्रमे [युजिर् योगे (रु०, उ०) "हलश्च (३, ३, १२१)"—इति घञ्, "चजोः कुघिण्यतोः (७, ३, ५२)"—इति कुत्वम्, घञादिवादाद्युदात्तत्वम् (६, २, १८७), "नित्यवीप्सयोः (८, १, ४)"—इति वीप्सायां द्विर्भावे सति, आम्रेडितानुदात्तम् (८, १, २)] "वाजे वाजे" कर्मविघातिनि तस्मिन् सङ्ग्रामे "तवस्तरं" अतिशयेन बलिनम् "इन्द्रम्" "ऊतये" रक्षार्थं "सखायः" सखिवत् प्रियाः वयं "हवामहे" आह्वयामः* ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २ २ २
अनुप्रत्नस्यौकसोऽवे तुविप्रतिन्नरम् ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २
यन्तेपूर्वमिताऊवे ॥ २ † ॥

---

* कात्यायनेन त्वयं मन्त्रोऽग्नेयनेऽजाभिमन्त्रणे नियुक्तः (१९, २, १०) महीधरस्त्वेवं व्याचख्यौ—"अजदेवत्या गायत्री भुजः शेषदृष्टा, अजं मन्त्रयते। "सखायः" परस्परसख्यं प्राप्ता ऋत्विग्यजमाना वयम् "इन्द्रम्" इन्द्रियवन्तं वीर्यवन्तमिन्द्रियप्रदं वा अजम् "ऊतये" अवनाय रक्षणाय "हवामहे" आह्वयामः कः अपि सम्भारणम् (९, १, २४)। क्व सति? "वाजे-वाजे" तत्तदन्ने मनुष्याणां देवानाञ्च दानत्वे सति तत्तदन्नप्राप्तिनिमित्तं वा। किम्भूतमजम्? "योगे-योगे तवस्तरं" युज्यत अनुष्ठीयत इति योगः कर्म, तस्मिन् तत्तत्कर्मणि तवस्तरं बलवत्तरमुत्साहवन्तम। तव इति बलनाम (निघ० २, ९, ४,)। तवीबलमस्यास्तीति तवस्वी। अस्यार्थेत्यादिना विन् (५, २, १२१)। अयमस्य तवस्वी तवस्तरस्तम् अतिशयेन तरप्-विन्मतोर्लुगिति (५, ३, ६५) तरपि विनो लुक्॥"—इति ॥

† ऋ० वे० १, ९, २९, २।

"प्रत्नस्य" पुरातनस्य "ओकसः" स्थानस्य स्वर्गरूपस्य * सकाशात् "तुवि प्रतिं" बहून् यजमानान् प्रतिगन्तारम्† [अथ प्रतिगन्ता भीमसेनो भीमइतिवत् प्रतिगन्तृ-शब्दं लक्षयित्वा तद्द्वारा तदर्थं लक्षयति, अतः प्रति प्रतिनिधि-प्रतिदानयोरिति-वत् सत्ववचनत्वेनानिपातत्वादनवायत्वे "पूरणगुणेत्यादिना (२, २, ११) न षष्ठी-समास-निषेधः]। "नरं" पुरुष-मिन्द्रम् "अनुहुवे" अनुक्रमेण कर्मस्वाह्वयामि [ह्वेर्यालिटि "बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति पूर्ववत्। सम्प्रसारण-पर-पूर्वत्वे द्विर्वचन-प्रकरणे "छन्दसि वा (६, १, १ वा०)"—इति वक्ष्यमिति द्विर्वचनाभावः। "यङ्लुक्तयोगादनिघातः (८, १, ६६)]। "यं" "ते" त्वामिन्द्रं "पिता" अस्मदीयो जनकः "पूर्वे" पुरा स्वकीयानुष्ठानकाले "हुवे" आह्वतवान्, तमाह्वया-मीति पूर्वेणान्वयः‡॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

आघागमद्वृषभिरवत्सरुक्मिणीभिरूतिभिः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २

वाजेभिरुपनोहवम्॥ ३॥ ११§

---

* 'ओकसः—गृहस्य, उदकस्य, बलसाधनस्य वा'—इति वि०।

† 'तुविप्रतिं—तुविपुरिति बहुनाम, बहुप्रतिम्, प्रतिशब्देनात्र प्रथमो गृह्यते, बहुप्रथमिन्द्रम्'—इति वि०।

‡ 'यं ते पूर्वं पिता हुवे—अस्मदात्मनस्त्वदम् हे महोयान्नरात्मन्! तम् इन्द्रं हुवे, यं ते तव पूर्वतने काले त्वदीयः पिता आहूयते।'—इति वि०।

॥ ऋ० वे० १, २, २९, ४। § 'अत्र सौमधं साम'—इति वि०।

"यदि श्रवत्" यद्यप्ययमिन्द्रो "नः" अस्मदीयं "हवम्" आह्वानं शृणुयात्, तदानीं स्वयमेव "सहस्रिणीभिः ऊतिभिः" बहुभिः पालनैः "वाजेभिः" अन्नैश्च "उप" समीपे "आ घ" अवश्यम्* "आगमत्" आगच्छेत् ॥ ३ ॥ ११

॥ सौमेधम् ॥ योगेयोगेतवाहाउस्तारम्। वाजे वाजे। हवा२माहायि। हूवायि।। औ३हो२३४वा।
साखायइ। द्रमू२तायायि। हूवायि। औ३हो२३४
वा। सखायआ। हूवा२यि। औ३हो२३४५वाइ५इ।
द्रमू३तये२३४५ ॥(१) अनुप्रत्नस्यौहाउक्रासाः। हूवेतु
वि। पृता२यिन्नाराम्। हूवायि। औ३हो२३४वा।
यान्तेपूर्वम्। पिता२हूवायि। हूवायि। औ३हो२३४
वा। यन्तेपूर्वाम्। हूवा२यि। औ३हो२३४५वाइ५इ।
पिताहूवे २३४५ ॥(२) आघागमद्यदीहाउश्रावान्।

---

* 'आ घा—इति पदपूरणौ'—इति वि०। मन्त्रे "घा"—इति दीर्घपाठः। तथा "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति दीर्घः।

१ २ १ १ २ १ १ २
साह्वाँसो। भिरु२त्ताभिर्भायिः। हुवायि। औ३हो
५ १ २ १ १ १ १
२३४वा। वाजेभिरु। पनो२ह्वावाम्। हुवायि। औ
५ ३ २ १ १ १
३ह्वो२३४वा। वाजेभिरु। हुवा२यि। औ३हो२३४५
२ १ १ १ १ १
वा६५६। पनो३ह्वा२३४५म्॥ (३) ८ * ॥ [१] ११

अथ चतुर्थर्चे, प्रथमा।

१ २ ३ १ ३ २ २ ३ १ २ ३ क ३ २
इन्द्रसुतेषुसोमेषुक्रतुम्पुनीषउक्थ्यम्।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
विद्वृधस्यदत्तस्यमहाँ३हिषः॥ १०॥

"सोमेषु" "सुतेषु" अभिषुतेषु सत्सु हे "इन्द्र!" त्वं तान् पीत्वा "क्रतुं" कर्मणां कर्त्तारम् "उक्थ्यम्" स्तोतारञ्च "पुनीषे" शोधयसि। यद्वा सोमेष्वभिषुतेषु उक्थाख्यं "क्रतुं" यागं तैः सोमैः पुनीषे यजमानैः पूतं कारयसि। किमर्थम्? "वृधस्य" वर्द्धकस्य "दत्तस्य" बलस्य "विदे" लाभाय "सः" तादृशस्त्वं "महान्" "हि" खलु; अतएवं कर्तुं शक्नोषीत्यर्थः॥

"इन्द्रसुतेषु"-"इन्द्रःसुतेषु"—इति, "पुनीषे"-"पुनीते"—इति, "दत्तस्यमहाँ३हिषः"—"दत्तसोमहान्हिषः"—इति च पाठौ॥ १॥

---

* ऋ० गा० १प्र० २अ० ९सा०।

† ह० चा० ४, २, ५, १ (१ भा० ७८२ पृ०) = ह० वे० ६, १, ७, १।

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
सप्रथमेव्योमनिदेवानाꣳसदनेवृधः ।

३ १ ३ १ २ ७ १ २ ६ ५
सुपारःसुश्रवस्तमःसमप्सुजित् ॥ २* ॥

"सः" इन्द्रः "प्रथमे" प्रथिते विस्तीर्णे मुख्ये वा † "व्योमनि" विशेषेण रक्षके च "देवानां" "सदने" सीदन्त्यस्मिन्निति सदनं स्थानं स्वर्गाख्यं तत्र ‡ स्थितः सन् "वृधः" यजमानानां वर्द्धयिता च भवति । तथा "सुपारः" सुष्ठु पारयिता प्रारब्धस्य सम्यक् परिसमापयिता ¶ "सुश्रवस्तमः" अतिशयेन शोभनं श्रवोऽन्नं यशोवा यस्य स तथोक्तः, "समप्सुजित्" सम्यक् अप्सूदकेषु प्राप्येषु सत्सु यत् तद्विघातनो वृत्रादेर्जेता ; यद्वा, आप इत्यन्तरिक्षनाम (निघ० १, ३, ८) अन्तरिक्षे वर्त्तमानानामसुराणां जेता § तमु हुवे इत्युत्तरत्र सम्बन्धः ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ६, १, ७, २ ।

† 'प्रथमे यज्ञे'—इति वि० ।

‡ 'देवानां सदने स्थाने यज्ञे'—इति वि० ।

¶ 'सुखेन पार्यते यष्टृ यः सः सुपारः'—इति वि० ।

§ 'समप्सुजित्—सङ्ग्रामेषु जेता'—इति वि० । "समत्सु"—इति सङ्ग्रामनामसु निघण्टौ दृश्यते (२, १७, २१) तदेव पाठभेदात् समप्सु—इत्यत्राऽविवक्षितमदाम्नयः ।

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २ १ २ १ २
तमुङ्ग्वेवाजसातयइन्द्रम्भरायशुष्मिणम्।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २ ३ २
भवानःसुम्नेअन्तमःसखाबुधे ॥ ३* ॥ १२ †

"तमु" पूर्वोक्तगुणमेव "शुष्मिणं" बलवन्तम् "इन्द्रं" वाजः सातये" बलानां मन्त्राणां वा साति र्लाभो यस्मिन् तादृशाय "भराय" सङ्ग्रामाय ; यद्वा, [धियन्ते तस्मिन् हवींषीति भरो यज्ञः, प्रायेण सङ्ग्रामनामानि यज्ञनामत्वेन च दृश्यन्ते] भराय यज्ञार्थं "हुवे" आह्वयामि। हे इन्द्र ! त्वं "सुम्ने" सुखे धने वा लिप्सिते सति "नः" अस्माकम् "अन्तमः" अन्तिकतमः सन्निकृष्टतमो भव [तमेतादेशेति अन्तिकशब्दस्यतादि लोपः] ; "बुधे" वर्द्धनार्थञ्च "सखा" समानख्यानो मित्रभूतो भव ॥

"तमुहुवे"—"तमुह्वे"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १२

१ २ २ १ १ १ १
॥ कौत्सम् ॥ इन्द्रसुतेषुसोमेषू। क्रतुंसम्पुनायि। ष

१ २ १ १ २ १
उक्थियाम्। विदेवार्ह्वा२। स्यदन्त्या। मह्ह्वा

१ २ २ २ १
यिषा२ः। महाꣳ२३ह्विषा३४३ः ॥(१) सप्रथमेवियोमा

---

* ऋ० वे० ६, १, ७, १।

† 'अत्र कौत्सं साम'—इति वि०।

२ १८ १८ १८१ १८१
नो। देवा२ना७सा। दनवृधाः। सुपाराःसु२। अ

१ २१ १ २
वस्तमाः। समस्मूजो२त्। समा२३स्मुजो३४३त ॥(२)

१ ८८ ८१२ १ २ १
तमुङ्वेवाजसातायायि। इन्द्रा२भरा। यस्मुक्थिणाम्।

२८१ ८ १ २८१ १
भवानाःह्व२। म्नेअन्तमाः। सखावार्द्वा२यि। स

८ १ १ २ १
खावार्द्वा२यि। सखा२३वृधा३४३यि। ओ२३४५ई।

डा(३)॥ १० *॥ [१]

१ २१८२ १८ २८१ ८
॥ उद्व७श्वीयम्॥ इन्द्रसुतेषुसोमेष्वा। क्रतुम्पुनीषउक्थ्या

१ १ २ १ १ २
२३याम्। विदा२हो१यि। वा२३र्द्वा। स्यदा१न्ता३

२ ८ ३ ५ १ ऽ २ २
स्वा। मद्दा७द्दा२३४यिषाः। माद्दा३उवा३। उप्।

१ १ १ १८८ २ १ ८८ ८
द्दा३२यिषो३५द्दायि॥(१) सप्रथमेव्योमनिया। देवाना७

८ २ १ २ १ १ २
सदनेवा२३र्द्वाः। सुपा२द्दो१। रा२३ःह्व। अवा१स्ता

१ ३ ५ १ ऽ १ १ १
३माः। समप्ह२३४जौत्। सामा३उवा३। उप्। प्ह्व

क० गा० १म० २ख० १०सा०।

२ १ २ १ २ १ १ १ २
ऽ२जो३५ह्वायि ॥(२) तमुऽवेवाजसातयश्रा। इन्द्रभरा

२ १ २ १ २ १ २
यशुष्मा२३यिणाम्। भवा२ह्वो१ ना२३:ह्व। म्रेत्रा

२ २ २ ३ ५ १ ऽ २
ऽन्ता३माः। सखावा २ ३ ४ ह्वायि। साखा३उवा३।

२ १ २
उप्। वाऽ२ह्वी३५ह्वायि(३) ॥ २ * ॥ [२] १२

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरार्चस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

तृतीय-खण्डः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थं खण्डे, प्रगाथरूपे—

प्रथममृक्के, प्रथमा।

३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ २ ३ १ २
एनावोऽग्निन्नमसोर्जीनपातमाऽहवे।

३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
प्रियञ्चेतिष्ठमरतिꣳस्वध्वरंविश्वस्यदूतममृतम्॥ १ †॥

• ऋ० गा० १९प्र० १च० २सा०।

† ऋ० चा० १, १, ५, १ (१ भा० १९७ पृ०) = ऋ० वे० ५, २, २१, १ 'इदानीं मन्त्रिर्वक्तव्यः, स च ऋ-देवत्यः अग्निरश्विनाविति'—इति वि०।

"जर्जः" बलस्य "नपातं" [नपादित्यपत्यनाम (निघ०२, २,१३)] पुत्रं "प्रियम्" अस्माकम् "चेतिष्ठम्" अतिशयेन ज्ञातारं प्रज्ञापकं वा "अरति" गन्तारं स्वामिनं वा. "स्वध्वरं" शोभन यज्ञं "विश्वस्य" सर्वस्य यजमानस्य "दूतम्" "अमृतं" नित्यम् "अग्निम्" "एना" एतेन "नमसा" स्तोत्रेण हे ऋत्विग्यजमानाः ! "वः" युष्मदर्थम् "आहुवे" आह्वयामि ॥१॥

अथ द्वितीया।

१ १ ३ २ ३ १ १ ३ १ २ ३क २ र
सयोजतेअरुषाविश्वभोजसासदुद्रवत्स्वाहुतः।

७ १ २ ३ २ ७ १ ३ १ २ ३ २उ ३ १ १
सुब्रह्मायज्ञःसुशमीवसूनान्देवꣳराधोजनानाम् ॥२*॥१३†

"सः" अग्निः "अरुषा" आरोचमानो "विश्वभोजसा" विश्वस्य पालयितारा वश्वौ "योजते" स्वकीये रथे "युनक्तु" [यद्वा, "विश्वभोजसा" विश्वस्य रक्षकेण "अरुषा" आरोचमानेन तेजसा "योजते" अयुज्यत]। तदनन्तरं यः अग्निः "स्वाहुतः" स्तोतृभिः सुष्ठु आहुतः सन् "दुद्रवत्" आनेतुं देवान् प्रति भृशं द्रवतु गच्छतु। कीदृशः ? सुब्रह्मा शोभनस्तुतिकः शोभनान्नोवा "यज्ञः" यष्टव्यः "सुशमी" शोभनकर्मा च भवति ; ततः "वसूनां" वासकानां "जनानां" यजमानानां सम्बन्धि "राधः" हविर्लक्षणं धनं "देव" द्योतमान मग्निमिति गच्छतिशेषः ॥ २ ॥ १३

---

* ऋ० वे० ५,२,२१,२। † 'अत्र वारवन्तीयम्'— इति वि०।

॥ वारवन्तीयम् ॥ एनावोऽ। औहोहायि। आ

यिन्नामा२३४सा। ऊर्ज्जोनिपातमाऽऊवो२३४हायि। प्रिय

ऋेतिष्ठमरतिꣳसुवध्वा३४। औहोवा। इहा२३४हायि।

उऽऊवा२३४राम्। विश्वस्य। दूतममा३४। औहोवा।

इहा२३४हायि। ऑहो३१२३४। ताम्। एहियाꣳ

हा ॥(१) विश्वस्यदूऑहोहायि। तामामा२३४र्त्ताम्।

सयोजा२३४हा। तेऽअरुषाविश्वभोजा३४। औहोवा।

इहा२३४हायि। उऽऊवा२३४सा। सदुद्र। वात्सुवाऽऽ

३४। औहोवा। इहा२३४हायि। ऑहो३१२३४। ताः।

एहियाꣳहा ॥(२) समुद्रवाऑहोहायि। हवाऽऽ२३४ताः।

सुब्राह्मा२३४हायि। यज्ञःसुशमीवसू३४। औहोवा।

इहा२३४हायि। उऽऊवा२३४नाम्। देवꣳरा। धोज

२ ३र ४र ५ १ ३ ५ ३र २
ना३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४।

५ऽ र ५
नाम्। एहियाईहा(३) ॥ ८ * ॥ [१]

४ र र ४ २ ४
॥ महावामदेव्यम † ॥ आऽयिना। वोआ३ग्रा३यिन्न

५ १ र र र र १ २ १
मसा। ज। जोनपातमाऽवेप्रियश्चेनिष्ठमरतिऽसुवध्व।

र २ १ २ ३ र २
राम्। औ२३होहायि। विश्वा२३स्यदू। तमौहो३।

१ १ २ ३ ४ २
ऊम्मा२। माऽर्त्ता३५हायि ॥(१) वाऽयिस्व। स्यदू३ता

४ ५ १ र र र २र १
३मस्तताम्। साः। योजनेअरुषाविश्वभोज। सा।

२ र २ १ २ ३ र २ १
औ३होहायि। सदू२३द्रवात्। सुवौहो३। ऊम्मा२।

१ २ ३ ४ २ ४र ५
ह्वऽनो३५हायि ॥(२) सापऽदु। द्रवा३त्सू३वाऽताः।

१ र र २र १ र २
ह। ब्रह्मायज्ञःसुशमीवसू। नाम्। औ२३होहायि।

१र र २ ३ र २ १ १
देवा२३ऽराधाः। जनौहो३। ऊम्मा२। नाऽर्मो३५

२
हायि ॥ ११ ‡ ॥ [२]

---

* ऋ० मा० २१म० २ब० ८सा०। † 'वामदेव्यम्—इति ब० पु० पाठः।
‡ ऋ० मा० २१म० २ब० ११ सा०।

॥ शुध्यम् ॥ एनावोऽग्निम्। नमसोवा। ऊर्ज्जो
नपा। तमाऽहवायि। प्रियश्चेतिष्ठमरतिꣳस्वध्वरं विश्व
स्यदूतम्। आ२३। मृताऽउवा। धूधिया२॥(१) वि
स्वस्यदू२तम्। अमृतोवा। सयोजते। अरुषावायि।
स्वभोजसासन्दूद्रवत्सु। आ२३। ऊताऽउवा। धूधिया
२॥(१) सदुद्रवा२त्सु। आऽऊतोवा। सुब्रह्मायाः
सुशमायि। वसूनान्देवꣳराधोज। ना२३। नाऽउवा।
धूधिया२॥ १४ *॥ [३] १३

अथ द्वितीय-प्रगाथे—

प्रथमा।

प्रत्यु अदर्श्यायत्यूऽ३ऽच्छन्तीदुहितादिवः।
अपोमहीवृणुतेचक्षुषातमोज्योतिष्कृणोतिसूनरी॥ १ †॥

---

* ऊ० मा० २१प्र० १अ० १४सा०।

† ऋ० मा० ४, १, २, १ (१भा० ६११ प०)=ऋ० वे० ५, ६, १, १।

"आयती" आगच्छती "उच्छन्ती" तमांसि विवासयन्ती वर्जयन्ती "दिवः" द्युलोकस्य सूर्यस्य वा "दुहिता" पुत्री, एवम्भूता उषाः "प्रति अदर्शि" सर्वैः प्रति दृश्यते ; "उ"—इति पूरणः ; सैषा "महो" महत् "तमः" नैशमन्धकारं "चक्षुषा" दर्शनेन "अप उ" [—इति निपातद्वय समुदायः अपेत्यस्यार्थे] "हणुते" निवारयति । एवं कृत्वा "सुनरी" जनानां सुष्ठु नेत्री उषाः "ज्योतिः" प्रकाशं "कृणोति" करोति ॥

"हणुतेचक्षुषा"-"व्ययतिचक्षुषे"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ १ ३ १ २ २ २ १
उदुस्रियाःसृजतेसूर्यस्यसचाउद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।

१ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ १
तवेदुषोव्युषिसूर्यस्यचसम्भक्तेनगमेमहि ॥ २ * ॥ १४ †

"सूर्यः" सर्वस्य प्रेरकआदित्यः "उस्रियाः" रश्मीन् "सचा" सह युगपदेव "उत्सृज्यते" उद्गमयति । तथा "उद्यत्" उद्गच्छत् प्रादुर्भवन् "नक्षत्रं" नभसि दृश्यमानं ग्रहनक्षत्रादिकम् "अर्चिवत्" दीप्तिमत् करोति ; ["सौरेण तेजसा हि नक्तं चन्द्रप्रभृतयो नक्षत्राणि भासन्ते", "सुषुम्नः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः"—इति हि निगमान्तरम् । एवञ्च सति हे "उषः"

---

* ऋ० वे० ५, ६, १, २। † त्रयोदशसूक्ते यन्नामसामानि दृष्टापितन्नाभान्येव।

उषोदेवते ! "तव" "सूर्यस्य" च "व्युषि" विवासने प्रकाशने सति "भक्तेन" अन्नेन "सङ्गसेमहि" वयं गच्छेमहि। "इत्"-शब्दः पूरकः ॥ २ ॥ १४

॥ वारवन्तीयम् ॥ प्रत्युवदाऽऽऽ

२ ५ १२ ५ १२
यि। त्रामर्च्छा२३४यिवात्। तवेदू२३४ह्वावि। घोक्यु

२ १ ३२ ४२ ५ १ ३ ५ २
षिसूरियस्या३४। औहोवा। इह्वा२३४ह्वायि। उङ

३ ५ २ १ १२ १ ७ २ २ ४२ ५ १
वा२३४चा। सम्भक्ते। नागमेमा३४। औहोवा। इ

३ ५ ३२ २ ५२
ह्वा२३४ह्वायि। औहो ३ १ २ ३ ४। ह्वायि। एह्विया६

५
ह्वा(३) ॥ ९ * ॥ [१]

२ ४ २ ४२ ५ १
॥ वामदेव्यम् ॥ प्राऽ५त्यु। अदा३र्ण्ा३आयताये। ऊ।

२ २ २ २ २ २ २१ १ २
क्रन्तीदुहितादिवोअपोमह्वीबृणुतेचक्षुषात। मा। औ३

२ २ १२ २ ३ २ २ १
ह्वोह्वायि। ज्योता२३यिष्कृणो। तिसौह्वो३। ऊम्मा

१ २ ३ ४ ५
२। नाऽ२रो३५ह्वायि ॥(१) ज्योऽ५तिः। कृणोऽता३यि

४२ ५ १ २ २ २ १ २
सूनरायि। ऊत्। उस्रियाःह्वजतेसूरियस्माचा। औ

२ २ १ २ २ २ २ १
३ह्वोह्वायि। उद्या२३न्नक्षा। त्वमौह्वो३। ऊम्मा २।

१ २ ३ ४ २ ४ ५
चाऽ२यिवो३५ह्वायि ॥(२) ऊऽ५द्यत्। नक्षा३त्रा३मर्च्छिवात्।

---

* ऊ० गा० २१प्र० २अ० ९सा०।

१ २ २ २ २ १ १ २ २ १
ता । वेऽऊषोवियुषिसू रियस्य । चा । औ३होचायि ।

१ २ २ ३ २ २ १ १
सम्भा२३क्तेना । गमौहो३ । ऊम्मा२ । माऽ२हो३५

२
क्षयि(३) ॥ १२ * ॥ [२]

१ २ १ २ १
॥ शुध्यम् ॥ प्रत्युवदा२ग्निं । आयतोवा । उच्छ

२२ १ २ २२ २ १ २ २ १२ २ १ १२ १ १२ १२
न्तीदू । क्षितादिवाः । अपोमक्षीवृणुतेचक्षुषातमोज्यो

१ २ १ २ १२
तिष्कृणोति । सू२३ । नराउवा । ऊधिया२ ॥(१)

१२ २ १ २१ २ १ २ २ १२
ज्योतिष्कृणोऽति । सूनरोवा । उदुस्रियाः । क्षजते

१ २२ १ २१ २
सू । रियःसचाउद्यन्नक्तम् । आ२३ । विवाउवा ।

१२ १ १ २१२ १
ऊधिया२ ॥ उद्यन्नक्ता२क्तम् । अर्क्विवोवा । तवेदुषो ।

२ ३२ २ १ २ १ २२ १ २
वियुषिसू । रियश्चसश्चक्तेनग । मा२३यि । महाउ

१२
वा । ऊधिया२(३) ॥ १५ † ॥ [३] १४

---

* ऋ० गा० २१प्र० २अ० १२सा० ।

† ऋ० गा० २१प्र० २अ० १५ सा० ।

अथ तृतीये प्रपाठे—

प्रथमा ।

३१ २ ० १२ ३१ १
इमाउवान्दिविष्टयउस्राहवन्त अश्विना ।

३१२ ३१२ ३१२ ३ १८ २८
अयंवामह्वेवसेशचीवसूविशंविशंहिगच्छथः ॥ १ * ॥

"इमाः" "दिविष्टयः" दिवमिच्छन्त्यः प्रजा ऋत्विजोऽपि "उ"—इति चार्थे ; हे "अश्विना !" "उस्राः" वासको उस्रौ वा "हवन्ते" आह्वयन्ति "अयं" स्तोतापि हे "शचीवसो" कर्मधन ! "वां" युवाम् "अवसे" अस्मद्रक्षणाय युवयोस्तर्पणाय वा "अह्वे" आह्वयामि । किमर्थम् ? एवं प्रजा अपि, अयमपीत्यादरोक्ति-रिति "विशं विशं हि गच्छथः" सर्वाः स्तुतिकर्त्रीः प्रजाः प्रति युवां गच्छतः खलु, तस्मादेवमुच्यत इति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२२ १० २ २१ २ २१ २ २१ २
युवञ्चिन्नन्ददथुर्भोजनन्नराचोदेथाꣳसूनृतावते ।

३ २उ ३ १२ ३ १२ ३ १२ ३ १ २८
अर्वाग्रथꣳसमनसानियच्छतम्पिबतꣳसोम्यम्मधु॥२॥१५॥

---

* ऋ० आ० ४, १, १, २ (१मा० ६१३प०)=ऋ० वे० ५, ५, २१, १ ।

† ऋ० वे० ५, ५, २१, २ । ‡ त्रयोदश-चतुर्दशस्तृतीयोर्यन्नाम्नि सामनि दृष्टापि तन्नामान्येव ।

हे "नरा" नेतारावश्विनौ ! "युवं" युवां "चित्रं" चायनीयं "भोजनं" धनं "ददथुः" धारयेथे, तद्धनं "सूनृतावते" स्तुतिमते स्तोत्रे "चोदेथां" प्रेरयतम्, * तदर्थं "समनसा" समानमनस्कौ सन्तौ "रथं" युवयोः सम्बन्धिनम् "अर्वाग्" अस्मदभिमुखं "नियच्छतं" नियमतम्, तथा कृत्वा "सोम्यं" सोमसम्बन्धिनं "मधु" मधुरसञ्च † "पिबतम्" ॥ २ ॥ १५

॥ वारवन्तीयम् ॥ इमाउवाऽओहोहायि। दायिविष्टा२
३४याः। उस्राहवन्तेऽश्वायिनो२३४हायि। अयंवामह्वे
अवसेशचीवा३४। ओहोवा। इहा२३४हायि। उऊ
वा२३४सू। विशंवि। शाऽहिगच्छा३४। ओहोवा।
इहा२३४हायि। ओहो३१२३४। थाः। एहियाऽहा ॥ (१)
विशंविशाऽओहोहायि। हायिगच्छा२३४थाः। युवाच्चा

---

* 'चोदेथां सूनृतावते—एवं चोदनां कुरुतां यथा सूनृता वयं भवेम!'—इति वि०।

† 'सोम्यं मधु—सोमे भवं स्वादुद्रव्यम्'—इति वि०। "मये च (४, ४, १२८)—इति पा०। "सोमशब्दाद्यः स्यान्मयडर्थे। सोम्यं मध सोममयमित्यर्थः॥"—इति च तत्र दीक्षितः।

५ १ २ २ ३२ ४२ ५ १ २
२३४यिच्चायि। त्रन्ददथुर्भोजनन्ना३४। औहोवा। इच्चा

५ २ ३ ५ २२१२२ १७२ २
२३४च्चायि। उङ्गवा२३४रा। चोदेथाम्। सुन्वतावा३४।

३२ ४२ ५ १ २ ५ ३२ २ ५२
औहोवा। इच्चा२३४च्चायि। औच्चो३१२३४। नायि। एच्चि

५ २२२ २ १ २ ३ ५
याईच्चा॥(२) चोदेथाꣳसूऔच्चौच्चायि। नार्त्तोवा२३४तायि।

२ १ ५ १ २ ३२ ४२ ५
त्रर्वाग्या२३४च्चा। थꣳसमनसानियच्छा३४। औहोवा।

१ २ ५ २ ३ ५ २ १ २ १ ७
इच्चा२३४च्चायि। उङ्गवा२३४ताम्। पिबतम्। सोमि

२ ३२ ४२ ५ १ २ ५ ३२ २
यम्मा३४। औहोवा। इच्चा२३४च्चायि। औच्चो३१२३

४२ ५ ४
४। धू। एच्चियाईच्चा। होऽ३ई। डा(३)॥१०*॥ [१]

२ २ ४ २ ४ ५
॥ वामदेव्यम्॥ त्रा३ऽ५यिमाः। उवाइन्दाइयिविष्टयाः।

१ २ २ २ २ २ २ २११
ऊ। साच्चवन्तेअश्विनात्रयंवामङ्गे त्रवसेशचीव। च्च।

२ २ २ १ २ ३२ २ १
औ३च्चोच्चायि। विशा२३ंविशाम्। च्चिगौच्चो३। ऊम्मा

१ २ ३ ४
२। ङ्काऽ२थो३५च्चायि॥(१) वाऽ५यियशम्। विशा३ए

---

* ऊ० मा० २१म० २ख० १०सा०।

ह्वाऽ३यिगच्छथाः। यू। वञ्चित्रन्ददथुर्भोजनम्। रा।
ओ३ह्वोह्वायि। चोदे२३थाꣳसू। नृतौह्वो३। ऊम्मा
२। वाऽ२तो३५ह्वायि॥(२) चोऽ५दे। थाꣳसू३नाऽ
त्तावताये। आ। बाग्रथꣳसमनसानियच्छ। ताम्।
ओ२३ह्वोह्वायि। पिबा२३तꣳसो। मियौह्वो३। ऊम्मा
२। मा२धो३५ह्वायि ३॥ १२ *॥ [२]
॥ शुध्यम्॥ इमाउवा२न्दि। विष्टयोवा। उस्रा
ह्वा। तेअश्विना। अयवामङ्केवसेशचीवद्भविशंविशꣳ
हि। गा२३। च्छथाउ। वा। अूधिया२॥(१) वि
शंविशा२ꣳहि। गच्छथोवा। युवच्चित्राम्। ददथुर्भो।
जनन्नराचोदेथांꣳसन्। ता२३। वताउवा। अूधिया
२॥(२) चोदेथाꣳसू२न्। तावतोवा। अर्वाग्रथाम्।

* ऋ० गा० २१प्र० २अ० १२मा०।

२ २ १ १ २ १ २ ३ १ २
समनसा । नियच्छतम्पिबतꣳसोमि । या२३म् । मधा
१२ १ १ १
उवा । ऊधिया२ । ए२३हिया ३ ४ ३ । ओ२३४५ई ।
डा ॥ १६ * ॥ [३] १५

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरायण्यस्य द्वितीयस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः † ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डे ‡—

अस्यप्रत्नेति नवर्चसूक्ते, प्रथमा ।

२ १ ३ २ उ २ १ १ २ १ २ ३ १ २
अस्यप्रत्नामनुद्युतꣳशुक्रन्दुदुह्रे अह्रयः ।
१ २ ३ १ २ २ २
पयःसहस्रसामृषिम् ॥ १ ¶ ॥

"अस्य" सोमस्य "प्रत्नां" पुरातनां "द्युतं" द्योतमानां तनुम् "अनु" "शुक्रं" दीप्तं "सहस्रसां" अभिलषितस्यापरि-

---

* ऊ० गा० १ प्र० २ च० १६ सा० ।

† 'समाप्ता सन्धिः । अथ षोडशिकोऽतिरात्रो ब्राह्मण-समाम्नायेऽथ ऋक्समाम्नाये न तथा कल्पकारः क्रतवो ज्योतिष्टोमोऽतिरात्रः षोडशिकः । तथा च लक्षण-कारः—अतिरात्रो ० ० ०'—इति वि० ।

‡ 'इदानीं द्वादशाहस्य प्रथममहरस्य वक्ष्यमानम्'—इति वि० ।

¶ य० सा० २, १६=ऋ० वे० ७, १, २, १ ।

मितस्य फलस्य दातारम् "ऋषिम्" अतीन्द्रियकर्म्मफल-द्रष्टारं "पयः" पातव्यं * "अङ्गयः" कवयः † "दुह्रे" दुहन्ति ‡ ॥ १ ॥

---

* 'पयः—क्षीरम्'—इति वि०।

† 'अङ्गयः—अङ्गाकाराः'—इति वि०।

‡ अत्र महीधरः—"गायत्र्यावत्सारद्रष्टा गोऽग्निपयोदेवत्या। अस्याग्नेः पत्नां चिरन्तनकालभवां द्युतमनु दीप्तिमनुलक्ष्य। अङ्गयः नास्ति क्षीर्येषामीदृशा लज्जारहिता दोग्धारः ऋषिं गां शुक्रं शुद्धं पयो दुदुह्रे दुदुहिरे। दुहेर्लिटि इरबो रे इति रे चादेशे रूपम्। ऋष गतौ। अर्षति दोहनस्थाने गच्छतीति ऋषिगाः। तां क्षीमार्थं दुग्धवन्तः। मायं दोहनकालेऽग्निप्रकाशाभावे दुह्यमानं पयो भूमौ पतिष्यतीति अङ्गया दोग्धृणां लज्जा भवति। सत्यामग्निदीप्तौ स्कन्दङ्गादुदयाल्लज्जाभावादङ्गयो दोग्धारः। किंभूतामृषिं सहस्रसाम्। षोऽन्तकर्म्मणि। सहस्रसङ्ख्याकानि कर्म्माणि स्यति समापयति क्षीरदध्याज्यहविःप्रदानेनेति सहस्रसा नाम्। स्यतेः क्विप्। तद्वत्या ऋचोऽर्थान्तरम्। गामग्निकृत्याग्निहोत्रब्राह्मणे श्रूयते। तामु हाग्निरभिदध्यौ मिथुन्येऽनया स्यामिति तांसम्बभूव तस्यां रेतः प्रासिञ्चत्तत्पयोऽभवदित्यादि (२.२,४,१५)। तदभिप्रायमेषा ऋग्वदति। अङ्गयः गावः माऽस्मि क्षीर्लज्जा यासां ता अङ्गयः सलज्जा उज्ज्वलाः प्रशस्या इत्यर्थः। मलिनो हि लज्जते। अङ्गयो गावोऽग्नेः प्रभां चिरन्तनीमात्मानुपक्तां द्युतं दीप्तिं शुक्रं शुक्ररूपापन्नां द्युतमेव पयो दुग्धं दुदुह्रे दुहन्ति स्रवन्ति। अग्निना शुक्ररूपेण सिक्तां स्वकान्तिमेव गावो दुग्धरूपेण स्रवन्तीत्यर्थः। सहस्रसामृषिमिति विशेषणद्वयं पयसः। सहस्रं सनोति सहस्रसाम्नम्। चातुर्मास्यपशुसोमानां सम्भक्तारम्। पुंस्त्वमार्षम्। जनसनखनक्रमगमो विडिति विट्प्रत्यये विड्नोरनुनासिकस्यादित्याकारे वेर्लोपे सहस्रसा इति रूपम्। तथा ऋषिं द्रष्टारम्। गवि वर्त्तमानं दृष्ट्वा पयस्युपचर्यत। सा हैनामुद्दोह्य हिङ्कारेत्युपक्रम्य ते देवा विदाञ्चक्रुरेष साम्नो हिङ्कार इत्यादिना मन्त्रेण गोभिर्हिङ्कारो दृष्ट इति प्रत्यपादि। यद्वा सहस्रसामृषिमिति विभक्तिलिङ्गवचनव्यत्ययेन अङ्गय इत्यस्य विशेषणद्वयम्। किंभूता अङ्गयः सहस्रसाः ऋषयः। पूर्ववदर्थो वा"—इति ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ १ २ २ २ २ १ २ २ २

अयꣳ सूर्य इवोपदृगयꣳ सरा꣡ꣳसि धावति ।

३ २ ३ २ २ ३ १ २ २ २

सप्त प्रवत आदिवम् ॥ २* ॥

"अयं" सोमः "सूर्य इव" यथा सूर्यः सर्वस्य लोकस्योपद्रष्टा, तथा कर्म्मणाम् "उपदृक्" उपद्रष्टा ; अपिच "अयं" सोमः "सरांसि" त्रिंशत् उक्थपात्राणि [—इति केचिद् वदन्ति, अपरेतु त्रिंशदहोरात्राणि सरांसीति], तानि "धावति" प्रति गच्छति [तथाच यास्कः—"तचैतद् याज्ञिका वेदयन्ते त्रिंशदुक्थपात्राणि, माध्यन्दिने सवने एकदेवतानि, तान्येतस्मिन् काले एकेन प्रतिधानेन पिबन्ति, तान्यत्र सरांस्युच्यन्ते—त्रिंशदपरपक्षस्याहोरात्राः त्रिंशत् पूर्वपक्षस्येति नैरुक्ताः (५, ११) इति †]। अपिचायं सोमः "दिवम्" अधिकृत्य "सप्त प्रवत" सप्त नदीरातिष्ठतिः ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७, १, २, २ ।

† "तथा एतावान्वमस्य आगामिन्य आपो भवन्ति रश्मयस्ता अपरपक्षे पिबन्ति । तथापि निगमो भवति । यमक्षितिमक्षितयः पिबन्तीति तं पर्वपक्ष आप्यायन्ति । तथापि निगमो भवति । यथा वा अंशुमाप्याययन्तीति"—इति च तच्छेषांशः ।

‡ 'सप्त प्रवत—सप्त लोकान् प्रवत । अथवा सप्त छन्दांसि'—इति वि० ।

अथ तृतीया ।

० १र २र ० १र २र३१२
अयंविश्वानितिष्ठतिपुनानोभुवनोपरि ।

१ २ ३१र २र
सोमोदेवोनसूर्यः ॥ ३* ॥ १६ †

"पुनानः" पूयमानः "अयं" "सोमः" "विश्वानि" सर्वाणि "भुवना" भुवनानि सर्वेषां भुवनानाम् "उपरि" "तिष्ठति"। तत्र दृष्टान्तमाह—"देवो न सूर्यः" यथा सूर्यो देवः सर्वेषां भुवनानामुपरि तिष्ठति तद्वदयं सोमोऽपीत्यर्थः ॥ ३ ॥ १६

३ २ र
॥ सत्रासाह्वीयम् ॥ अस्या३। प्रत्नामनुद्युतम्।

५ ५ १ र १ १
ओ३वा। भ्रुक्रन्दुदुह्रेअह्रा२याः। पा२याः। सा२३

२ १ ऽ २र २र २ १ ५ ५
हा। ससौ३हो वाच्हा३४३यि। आ२३४र्षी३ह्रायि॥

२ २ र र ५ ५ १
(१) अया३४म्। सूर्य्यइवोपदृक्। ओ३वा। अय॰

र र १ १ २ १ ऽ
सराँ३सिधावा२ताय। सा२ना। प्रा२३वा। तमौ

२र २र २ १ ५ ५ २ २
३ह्रो। वाच्हा३४३यि। दा२३४यिवो३ह्रायि॥(२) अया

---

* ऋ० व० ०, १, २, ३।

† मूलेत्येतदन्त मेव षोड़शं सूक्तम्, विवरणादि-मतेऽष्टमेव। 'उक्तः प्रथमपर्य्यायः'—इति वि०।

३४म्। विश्वानितिष्ठति। ओ६वा। पुनानोभुवनो
पा२रायि। सो२मो। दा२३यिवाः। नसौ३च्छो। वा
ह्वा३४३यि। रा२३४योई६च्छायि(३) ॥ ८ * ॥ [१]

॥ आमच्छीयवम् ॥ अस्यप्रा३त्नामनुद्यताम्। ध्रु
क्रान्दू१दू२। ह्रे आ२३ह्रयाः। पयःसच्छा। स्रंसा२३
मृषाउ। वा३ ॥(१) अयंस्रू३र्य्यदूवोपदक्। अयंस्रा
१रा२। सिधा२३वतायि। सप्तप्रवा। तआ२३दिवाउ।
वा३ ॥(२) अयंवा३यिस्वानितिष्ठनायि। पुनानो१भू२। व
नो२३परायि। सोमोदेवाः। नसू२३रियाउ। वा३।
स्तोषे३४५ (३) ॥ ३ † ॥ [२]

॥ जराबोधीयम् ॥ अस्यप्रत्नोवा। आनुद्युताम्।
ध्रुक्रान्दू२३दू। ह्रे याःसा१च्छा२३स्रा। साम्। कृषो३

* ऊ० गा० ८म० १अ० ८सा०। † ऊ० गा० ८म० १अ० ३सा०।

१ २ १ २ १ २ १ १
ऽ५५ई। डा ॥(१) अयꣳसूर्य्योवा। आयिवोपदृक्।
२ १ २ २ १ २ ४
अयाꣳसा२३रा। सिधावातायि। सप्ताप्रा१वा२३ताः।
५२ २ २ २ १ २ १
आ। दिवो३४५ई। डा ॥(२) अयंविश्वोवा। नायि
२ १ २ १ २ २ १ २ २
तिष्ठतायि पुनानो२३भू। वनोपारायि। सोमोदा१
४ ५२ ३ ०
यिवा२३ना। सू। रियो३४५ई। डा(३) ॥ १० ॥* [३]
२२ २ १
॥ हाविश्पतम् ॥ हावस्यप्रजामनुद्यतꣳहाउ। भुक्त
२ १ २ २ ५ २ २ १
न्दुदू३। क्ष अह्वा२३४याः। ऐ२ हो१आ२३यिच्ही। प
२ २ १२ ३ ५२ २ २२
याःसा३ह्वा। स्वसाम्। आ२र्षा२३४औह्होवा ॥(१) ह्वा
२ २ १ २ १ २ ३
वयꣳस्वर्य्यꣳवोपदृग्घाउ। अयꣳसरा३। सायिधावा२३
५ २ १ २ २ १२
४तायि। ऐ२ हो१आ२३यिच्ही। सप्ताप्रा३वा। तमा।
२ ५२ २ २२ २
दा२यिवा२३४औह्होवा ॥(२) ह्वावयंविश्वानितिष्ठतिच्हाउ।
२२ २ २ १ २ २ ५ २
पुमानोभु३। वानोपा२३४रायि। ऐ२ हो१आ२३यिच्ही।

---

* ज० गा० ८प्र० २च० १०सा०।

१र २ २ १र ३ ५र र २ १
सोमोदाइयिवाः। नह्। रा२या२३४औहोवा। ह्वि
२ १ १ १ १
यते२३४५ ॥ ८ * ॥ [४]

२ १ २ १र ९ ९
॥ आग्नुभार्गवम् ॥ अस्यप्रत्नाम। नुद्यू३ताम्-।
१ २ १ ३ ५ ५ २
ग्नुक्रन्दुदू३। ह्वेआर२ह्वा२३४याः। पयासा१ह्वा२।
१ २ १ ५ ५ २ १ र २ र
स्वसाइम्। आर२३४षीई६ह्वायि ॥(१) अयंस्हूर्यः। इवो
२ १ २ १ ३ ५ १
पाइहक्। आयंसराइ। सायिधार्वार२३४तायि। म
२ ३ २ १ ५ ५ २ १
नाप्रा१वा२। तआइ। दार२३४यिवोई६ह्वायि ॥(२) अर्य
र २ २ १ र र २ १ ३
विश्वानि। तिष्ठाइतायि। पूनानोमू३। वानो२पार२३
५ १र २ ३ २ १ ५ ५
४रायि। सोमोदा१यिवार२ः। नह्व३। रा२३४योई६ह्वा
यि ॥ १८ † ॥ [५]

२ र १ २ १
॥ मार्गीयवाद्यम् ॥ अस्यौहोवा। प्रात्नार२म्। अ
१ २ ५ १ १ २ र १ २ १
नूद्यू२३४ताम्। ग्नुक्रन्दुदू। ह्वेआह्वा१यार२ः। पयः।

* ऋ० गा० ११प्र० २अ० ८सा०। † ऋ० गा० १४प्र० २अ० १८सा०।

१ २ ३ ५ १ २ ४५ ८
हा। औ३ह्वोयि। सा२३४हा। सा२सा२३४औह्वो

२ १ १११११ २ ८ १ २ १
वा। ए३। ऋषा२३४५यिम्॥(१) अयौह्वोवा। सू

३ २ ३ ५ १ १ २८ १ २
र्य्या२:। इवोपा२३४हक्। अय॰सरा। सिधाबा१ंता२

१ २ २ ३ ५ १ १
यि। सप्त। हा। औ३ह्वोयि। प्रा२३४वा। ता२आ

५८ ८ २ १ ११११ २ २ १ १
२३४औह्वोवा। ए३। दिवा२३४५म्॥(२) औयौह्वोवा।

१ ३ २ ३ ५ १ ८ २८ १
वायिश्वा२। नितांयिष्ठा२३४तायि। पुनानोभु। बनो

२ १८ २ २ ३
पा१रा२यि। सोमः। हा। औ३ह्वोयि। दा२३४यि

५ १ १ ५८ ८ २ १ १ १
वाः। ना२स२३४औह्वोवा। ए३। रिया२३

१ १
४५:(३)॥ २०*॥ [६]

१ ८ २ १
॥ सौमिचम्॥ अस्यप्रत्नामनुद्युता३मे। शुक्रन्दु

१ ८ २ १ १
दुह्रे। आ२१ऽ२३। ह्रया३४३:। पा२३याः। सहा

१ ४ ५ ४ ५ २ ८
२ओ२३। स्रमोवा। आपूर्षीईहायि॥(१) अय॰म्र्य

* ऊ० गा० १४प्र० १अ० २०सा०।

इवोपह३गे। अयꣳसराꣳसि। धा२१ऽ२३। वता३४

३यि। सा२३ग्ना। प्रवा२ओ२३। तओवा। दा५युविवो

६ष्टायि ॥(२) अयंविश्वानितिष्ठता३ए। पुनानोभुव।

नो२१ऽ२३। परा३४३यि। सो२३माः। देवा२ओ२

३। नसोवा। रा५योईष्टायि(३) ॥ १ * ॥ [७]

॥ ऐटतम् ॥ अस्य। एआसया। प्रत्नाम। नू३।

आ२नू२३४औहोवा। द्यू३३४ताम्। शुक्रान्दू२३४दू।

ष्टे आ३। ष्टे२आ२३४औहोवा। ष्ट्रा२३४याः। पयाः

सा२३४ष्टा। सुसा३। सा२सा२३४औहोवा। आ२३

४षीमि ॥(१) अयम्। एआयाम्। सूर्य्यइ। वा३।

आ२यिवा२३४औहोवा। पा२३४ष्टक्। अयाꣳसा२३४

ऋ० मा० १४प्र० २च० १सा०।

२१ १ २ ५ २ २
रा। मिधा३। साऽयिधा२३४औहोवा। वा२३४ती।

२ ३ ५ २ १ १ ५ २ २ १
सन्नाप्रा२३४वा। तमा३। ता२आ२३४औहोवा। दी

५ १ २ १ २ २
२३४वाम्॥(२) अयम्। एआयाम्। विश्वानि। ता

१ २ ५ २ २ ३ ५ २ ३
यि। नाऽयिता२३४औहोवा। ष्ठा२३४ती। पुनानो

५ ३ २ १ ३ ५ २ ३ ५
२३४भू। वनो३। वा२नो२३४औहोवा। पा२३४री।

२ १ ५ २ १ ३ ५ २ २ १
सोमोदा२३४यिवाः। नसू३। ना२मू२३४औहोवा।

३ ५
री२३४याः॥ २ *॥ [८]

१ २ ५ २
॥ धुरासाक्मश्वम्॥ अस्यप्रक्षा३म्। ह्वो३ह्वो३१यि।

२ ५ २ २ ५ २
अनुद्यु ता३म्। ह्वो३ह्वो३१यि। प्रुकन्दुदू३। ह्वो३ह्वो

२ २ ५ २ २ ५ २
३१। द्रि अह्रयाः३। ह्वो३ह्वो३१यि। पयःसहा३। ह्वो

२ २ १ ५ २
३ह्वो३१। सासाम्नृषाःयिम्। ह्वो३ह्वो३१२३४५ई। ड़ा॥(१)

• ऊ० गा० १४प्र० १अ० २सा०।

१ ८ २ ऽ २ ८ १ ऽ २
अयꣳसूर्य्याइः । हौ३ह्वो३१यि । द्रवोपदृ३क् । हौ३ह्वो

२ ऽ १ ८ २
३१ । यि । अयꣳसरा३ । हौ३ह्वो३१ । सिधावता३

४ ३ ४८ ५ ८ २ २ १ ५
यि । अयꣳसराꣳसिधा । ह्वा३ह्वा३यि । वा२३४ना

१ २ २ १ ३ ५८ ८ २ २
यि । साप्ना३उवा३ । प्रा२वा२३४औह्वोवा । तआदि

ऽ २ १ ऽ २ ८
यि । ह्वौ३ह्वो३१यि । सप्तप्रवा३ । हौ३ह्वो३१ । तआ

२ ऽ २ १ २
दिवा३म् । हौ३ह्वो३१२३४५ई । डा ॥(२) अयंविश्वा३ ।

ऽ २ २ ऽ २ १८ ८ २
ह्वौ३हो३१ । नितिष्ठता३यि । हौ३ह्वोयि । पुनानोभू

ऽ २ ८ २ ऽ १ ८
३ । हौ३ह्वो३१ । वनोपरा३यि । ह्वौ३ह्वो३१यि । सो

८ ८ १ ऽ २ ८ २ ऽ २
मोदेवा३ः । ह्वौ३हो३१ । नसूरिया३ः । हौ३ह्वो३१२

३४५ई । डा ॥ ३ * ॥ [८]

२ १ २ १८ २ १ २ १
॥ विलम्बसौपर्णम् ॥ अस्यप्रत्नामनुद्युतम् । ईयद्

२ ४ ३ ४ ५८ ८ २ २ १
याह्यावि । प्रुक्रन्दुदुच्छुना । ह्वा३ हा३ । ह्वा २ ३ ४

• ऋ० मा० १४प्र० २ऋ० २सा० ।

५ १ २ २ १ ३ ५२ २ २ २
याः। पाया३उवा३। सा२द्वा२३४औहोवा। त्वसाम्ह

२ १ १ १ १ २ १ २ २ १ २ १ २
षा२३४५यिम्॥(१) अयꣳसूर्य्यइवोपदृक्। ईयइयाद्वा

४ ३ ४२ ५ २ २ १ ५
यि। अयꣳसराꣳसिधा। द्वा३द्वा३यि। वा२३४तायि।

१ २ २ १ ३ ५२ २ २ २
सात्ता ३ उवा ३। प्रा २ वा २ ३ ४ औहोवा। तत्त्वादि

२ १ १ १ १ २ १ २ १ १ १ २
वा२३४५म्॥(२) अयंविश्वानितिष्ठति। ईयइयाद्वायि।

४ २ २२ ४ ५२ २ २ १ ५ १ २
पुनानोभुवनो। द्वा३द्वा३यि। पा२३४रायि। सोमा३

२ १ ३ ५२ २ २ २ १
उवा ३। दा २ यिवा २ ३ ४ औहोवा। नसूरिया २ ३

४ ५ः॥ ४*॥ [१०] १६

अथ चतुर्थी†।

२ २ २ २ २ १ २ २ २ २ १ २ ५ २
एषप्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यःसुतः।

१ २ ३ १ २
हरिःपवित्रेअर्षति॥ १‡॥

---

* ऊ० गा० १४प्रा० २ष० ४सा०।

† मूलेत्वियं चतुर्दशसूक्तस्य प्रथमा, विवरणादि-मतेष्वेवमेव। तथैवात्रोत्तरत्र बोध्यम्।

‡ इयमृचमेव पुनः स्मरिष्यमाणा पञ्चम-द्वितीय-द्वितीय-नवमे। ऋ० वे०९, ७, २१, ४।

"हरिः" हरितवर्णः "देवः" द्योतमानः "एषः" सोमः "प्रत्नेन" पुराणेन "जन्मना" जननेन * "देवेभ्यः" देवार्थं "सुतः" अभिषुतः सन् "पवित्रे" "अर्षति" आरोचते ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी।

३ १२ २१ २ २ १ २ ३ २ २ २ १ २
एषप्रत्नेनमन्मनादेवोदेवेभ्यस्परि।

३ १२ २२
कविर्विप्रेणवावृधे ॥ २ ॥

"प्रत्नेन" पुराणेन "मन्मना" साधनेन स्तोत्रेण युक्त इति शेषः† "देवः" द्योतमानः "एषः" सोमः "देवेभ्यः" देवार्थं "कविः" मेधावी सन् "विप्रेण" मेधाविना यजमानेन ऋत्विजा "परिवावृधे" परिवर्धते ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी‡।

३ २ ३ १२ २२ ३ ३ २ १ २
दुहानःप्रत्नमित्पयःपवित्रे परिषिच्यसे।

१ २ ३ १ २०
क्रन्दन्देवाँअजीजनः ॥ ३ ॥ १७

---

* 'जन्मना—कर्मणा, नाम्ना वा'—इति वि०।

† 'मन्मना—मन्म बलमभिधीयते, बलेन'—इति वि०।

‡ मूले त्वेतदन्तमेव सप्तदशं सूक्तम्, विवरणादि-नयेऽप्येव मेव।

¶ ऋ० मे० ६, ८, १२, ४।

"प्रवमित्" पुराणमेव "पयः" रसं * "दुहानः" हे सोम! पवित्रे परिषिच्यसे। हे सोम! त्वं "क्रन्दन्" शब्दं कुर्वन् "देवान्" इन्द्रादीन् "अजीजनः" स्वसमीपे जनयति। यत्र सोमोऽभिषुते तत्र देवा नियतं प्रादुर्भवन्तीत्यर्थः॥

"अजीजनः"-"अजीजनत्"—इति पाठो †॥ ६॥ १७

अथ सप्तमी ‡।

१ २ २ १ २ ३ २ २ १ २ ३ १ १
उपश्चिच्चापतस्थुषोभियसमाधेह्यञ्चवे।

१ २ ३ २ ३ १
पवमानविदारयिम्॥ १ ¶॥

हे "पवमान" सोम! "उपश्चित्च" त्वं समीपे कुरु। कान्? "उपतस्थुषः" उपक्रम्य स्थितानस्मदभिमतानित्यर्थः। "अञ्चवे" अञ्चनु अस्मद्विरोधिषु "भियसं" भयम् "आधेहि" कुरु जय। किञ्च तेषां अञ्चूनां "रयिं" धनं "विदाः" § अस्मभ्यं विद्धि देहीत्यर्थः॥ ७॥

* 'पयः—स्वादु-द्रव्यम्, यथा पय उदकं क्षीरं वा'—इति वि०।

† "षिच्यम"-"षिच्यते"—इत्यपि पाठभेदः।

‡ मूले त्रियमष्टादशमृक्तस्य प्रथमा, विवरणादिमतेऽप्येव मेव। तथैवात्रोत्तरत्र बोध्यम्।

¶ ऋ० वे० ६, ८, ९, ५।

§ 'विदृज्ञाने, विद्लृलाभे, विदसत्तायामित्यस्येदं रूपम्'—इति वि०।

अथ अष्टमी-नवम्योर्ऋचोः प्रतीकमेव आम्नातम्—"उपोषु-जातमप्तुरम्"—इति, "उपास्मैगायतानरः"—इति च ॥

तेष्वष्टमी प्रदेशान्तरे* आम्नाता—

२ ३ २ ३ १ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
उपोषुजातमप्तुरं(गोभिर्भङ्गम्परिष्कृतम् ।
१ २ ३ १ २
इन्दुन्देवाअयासिषुः) ॥ २† ॥

"जातं" सम्यक् प्रादुर्भूतम् "अप्तुरम्" वसतीवरीभिः अद्भिः प्रेरितं "भङ्गं" शत्रूणां भञ्जकं "गोभिः" गोविकारैः पयोभिः "परिष्कृतम्" अलङ्कृतं संस्कृतम् "इन्दुं" सोमं "देवाः" इन्द्रादयः "उप उ"—इति निपातद्वयसमुदायः उपेत्यस्यार्थे वर्त्तते सुष्ठु "उप अयासिषुः" उपागच्छन्ति ॥ ८ ॥

नवमीत्वेव मन्त्रमाम्नासीत्‡—

१ २ ३ १ २ १ २
उपास्मैगायतानरः(पवमानायेन्दवे ।
३ २ ३ १ २र
अभिदेवाँइयक्षते) ॥ ३¶ ॥ १८

* अत्रैव पञ्चमे इति बोध्यम्। परमार्थस्तु—भविष्यत्पाठस्य पूर्वस्मिन्नेवैक-पदत्वमिति।

† ह० आ० ६, १, १, १ (२भा० ४२ पृ०)—अत्रैव ५, २, १०, १—ऋ० वे० ७, १, २०, २।

‡ उत्तरग्रन्थारम्भे एव।

¶ अत्रैव १, १, १, १ (२भा० ४५ पृ०)—ऋ० वे० ६, ७, ३९, १।

हे "नरः" नेतारः! यज्ञस्य "देवान्" इन्द्रादीन् "अभि इयक्षते" आभिमुख्येन यष्टुमिच्छते यजमानाय यूयं "अस्मै" अभिषूयमाणाय "इन्दवे" सोमाय "उप गायत" उपगानं कुरुत ॥ ९ ॥ १८

॥ अध्वम् ॥ उपोषुजा२तम्। अप्नुरोवा। गोभि
भंङ्गाम्। परिष्कृताम्। इन्दुदेवाँअ। या२३। सि
षाउवा। अधिया२ ॥(१) तमिद्वर्धा२न्तु। नोगिरो
वा। वत्सꣳसꣳशायि। स्वरीरिवा। यद्इन्द्रस्यद्रा। दा
२३म्। सनाउवा। अधिया२ ॥(२) अर्षानःसो२म।
शङ्गवोवा। धुश्चस्वपायि। प्युषीमिषाम्। वर्द्धाममु
द्रम्। ऊ२३। क्रियाउवा। अधिया२। ए२३क्रिया
३४३। ओ२३४५ई। डा॥ ५ * ॥ [१]

॥ प्रतीचीनेडङ्काशी॥ उपोषुजातम्। आ२प्न,

* ऊ० मा० १प्र० १ष० ५सा०।

१ २ १ ७ ३८ २
राम्। गोभिर्भङ्गम्। परासिष्क्तां२३४म्। ह्वाहो
१ ८ २ २ १ ४ ५
यि। इन्दुन्देवाआ३या। मिषू। औ २ ३ होवा॥(१)
१ २ १ २ १
तमिद्वर्द्धन्तु। नो२गिराः। वात्स्यंस्शि। श्वरायि
७ ३८ १ १ २ १
रिवा२३४। ह्वाहोयि। यइन्द्रस्याह्वा३र्हाम्। सनायिः।
४ ५ १ ८ ८ ८ १
औ२३होवा॥(२) अर्षानःसोम। शा२ङ्गवायि। धू
२ १ ७ ३८ २ १ ८ २
त्स्वपि। प्युषायिमिषा२३४म्। ह्वाहोयि। वर्द्धास मूद्रा
२ १ २ ४ ५ ४ ५
३मू। क्थ्या। औ३होवा। ईंडा(३)॥ ११॥[२]
४ २ ८ ५ २ ४८ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ उपाऽयंस्मै। गा३या३तानाराः।
२ १ २ २ १ २ १ २ २
पा३वामा३ना। या२३त्मा। ज्ञम्मायि। दा३वायि।
१ ८८ ३२ १ २ १८ २
आभिदेवा३इया२त्तताउ॥ ते(१)आ। भितेमा। धू३
१ २ २ १ १८ ८ २ १
नापा३याः। आथा२र्वा। णोआ२३ग्ना। ज्ञम्मायि।
२ २ १ ८ ८ ३ २ १ २ १
आ३यूः। दायिवन्देवायदा२यिवयाउ॥ यू(२)स्माः। नः

---

* ऋ० गा० १९प्र० २ऋ० ११सा०।

२ १ २ २ १ १८ २
पवा। स्वाऽग्नाऽवायि। शञ्जाऽना। यशाऽसा।

१ २ २ १ ८ ८ २ १
ऊम्मायि। वाऽत्तायि। ग्राँऽराजन्नोषधाऽयिभ्यऽग्राउ।

॥ ११ * ॥ [३]

२ १ २ ४८५ २ २ ५ २ १
॥ सफम् ॥ उपश्रीऽत्तापा। तस्थू२३४षाः। भिया

८ १ २ ४ २ ५ २ १
साऽम्। आधायिहीऽग्नाऽ। चाऽ२२३४वायि। पवा।

८ २ ४ २ ५
मानावीऽदाऽः। राऽ३४५योऽहाभि ॥ २ † ॥ [४] १८

*इति सामविदार्थ-प्रकाशे उत्तरार्चस्य द्वितीयस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

---

* ऋ० मा० २१प्र० २ष० ११सा०।

† ऋ० मा० २१प्र० १ष० २सा०।

‡ 'प्रथमस्याऽकोवदित्थवमानमुक्तम्। मृष्टलौमिकवेदमन्त्रः प्रजावतीभिश्चोपवतीभिश्च कर्त्तव्यमानम्'—इति वि०।

षष्ठे खण्डे *—

प्रथमतृचे, प्रथमा ।

१ २२ २ १ १ १ २ २ १ २

प्रसोमासोविपश्चितोपोनयन्तऊर्मयः ।

१ १ २ १ १

वनानिमहिषाइव ॥ १† ॥

"विपश्चितः" मेधाविनः "ऊर्मयः" प्रहृष्टाः "सोमासः" सोमाः "अपः" वसतीवर्याख्याः "प्र नयन्ति" प्रापयन्ति । तत्र दृष्टान्तः— "वनानि महिषा इव" यथा प्रहृष्टा मृगा वनानि प्रापयन्ति तद्वत् ॥

"अपोनयन्ते"-"अपांनयन्ति"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १ २२ १ १ २ २ १ २ २ ३ १ २

अभिद्रोणानिबभ्रवःशुक्रासःशुक्रयाधिया ।

२ ३ १ २

वाजङ्गोमन्तमक्षरन् ॥ २‡ ॥

---

* 'इदानीं माध्यन्दिनः पवमानो वक्तव्यः, स च विच्छिन्ना उक्तः । स च उच्यते— प्रसोमास इति'—इति वि० ।

† ऋ० आ० ५, २, ५, २ (२मा० २१ पृ०)=ऋ० वे० ६, ८, २३, १ ।

‡ ऋ० वे० ६, ८, २३, २ ।

"अभि" क्षरन्तीति शेषः अभि शब्दश्रुतेरुचित-क्रियाध्याहारः। किम्प्रति? "द्रोणानि" द्रोणकलशान् * [यद्यपि द्रोणकलशएकएव तथापि तत्प्राधान्यादितराण्यपि पात्राणि द्रोणानीत्युच्यन्ते। अथवैकस्मिन्नेव पूजार्थं बहुवचनम्। के "बभ्रवः" बभ्रुवर्णाः सोमाः "शुक्राः" दीप्ताः। केन प्रकारेण? "धारया" धाराकारेण। कस्मै प्रयोजनाय? †] ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ १ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सुताइन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यः।

१ ५ ३ १ २
सोमाअर्षन्तुविष्णवे ॥ ३ ‡ ॥ १९ ¶

"सुताः" अभिषुताः सोमाः इन्द्रादिदेवार्थम् "अर्षन्तु" गच्छन्तु§ ॥

"अर्षन्तु"-'अर्षन्ति"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १९

---

* 'द्रोणानि—द्रोणकलश सम्बन्धानि ग्रह-चमसादीनि पात्राणि, तानि'—इति वि०।

† परोक्षान्वयः। ‡ ऋ० वे० ६, ८, २२, २।

¶ 'अथ गायत्री भवति'—इति वि०। § पूर्वार्चिकान्वयः।

१ २ १ २ १
॥ आश्वम * ॥ अभिद्रोणा २निषद्भवाः। घृतश्चुतस्य

२ १ २१२ २ १ ऽ १
धारा २या। वाजङ्गोमा२३न्ताम्। आत्ता३उवा३।

१११ १
रा२३४५न्(२) ॥ ११ † ॥ [१]

१ २ ऽ ३ २ १
॥ सोममाम ‡ ॥ सुताइन्द्रा। यवायवायि। वाहु

२ २ २३२ १ २ ५ ५
णाया३मा३। रुद्रियाः। सोमाआर्षा३४। ह्वाउ। तु

४
वायविण्वायि। ह्वोयुं। डा(३) ॥ १२ ¶ ॥ [२]

१२ २ १ २१२
॥ आश्वम ॥ प्रसोमासो २विपश्चिताः। अपोनयन्त

२ १ २१२ २ ऽ २ ११
ऊर्म्मा २याः। घनानिमा२३ह्वी। षा३उवा३। वा२३

११ १ २ १ ३ १२ २
४५ ॥(१) अभिद्रोणा २निषद्भवाः। घृतश्चुतस्यधारा

१ १२१२ २ १ ऽ २ १
२या। वाजङ्गोमा२३न्ताम्। आत्ता३उवा३। रा२

१११ १ २ २१ २
३४५न् ॥(२) सुताइन्द्रा २यवायवायि। वरुणायमरुद्भा

* "आश्वस्तुतम्"—इति ख० पु० पाठः। † ऊ० गा० १म० २च० ११सा०।
‡ "आयवोसोममाम"—इति ख० पु० पाठः। ¶ ऊ० गा० १म० २च० १२सा०।

१ २ १ २ १ २ १ १
२याः । सोमाअर्षा२३ह्व । वायिष्णाउवाउ । वा२३
१ १
४५यि३) ॥ १२ * ॥ [३]

॥ आग्नेयभार्गवम् ॥ १ २ १ २ १ २ १
प्रसोमासोवि । पस्वा३यिंताः ।
१ २ २ १ ३ ५ १ २
आपोनयाउ । ताऊ२र्म्मा२३४याः । वनाना१यिमा२ ।
१ २ १ ५ ५ १ १ २ २
हिषाउः । आ२३४यिवो६ह्वायि ॥(१) अभिद्रोणानि ।
१ २ १ २ २ १ ३ ५ १२
बभ्राउवाः । शुक्राऋताउ । स्याधा२रा२३४या । वाजा
२ ३ १ १ ५ ५ २ १ २ २
क्षो१मा२ । तमाउ । ह्वा२३४रो६ह्वायि ॥ सुताइन्द्रा
२ २ १ २ १ १ ३ ५
य । वायाउवायि । वारुणायाउ । मारु२द्वा२३४याः ।
१ २ ३ २ १ ५
सोमाआ१र्षा२ । तुवाउयि । ष्णा२३४वो६ह्वायि(३)॥ ११ †॥[४]

१ २ २ १ २ १ २ १ २ १
॥ जरावोधीयम् ॥ प्रसोमासोवा । वायिपश्चिताः । अपो
२ २ १ २ ४ ५ ५ २
ना२३या । तऊर्म्मायाः । वनाना१यिमा२३ह्वायि । षाः ।

---

* ऊ० मा० ६प्र० २अ० १२सा० ।

† ऊ० मा० ११प्र० १अ० ११सा० ।

२१ २ २ १ २ १ २ १
इवोइ४५ई। डा ॥(१) अभिद्रोणेवा। नायिवभ्रवाः।

२ १ २ २१ २ २ ४
पुक्काआ२३र्त्ता। स्यधाराया। वाजाङ्गो१मा२३न्ताम्।

५ २१ २ २ १ २ १ २ २
अ। ग्रोइ४५ई। डा ॥(२) सुताइन्द्रोवा। यावायं

१ २१ २ १ २ २
वायि। वरुणा२३या। मरुद्भायाः। सोमाआ१र्षी

४ ५ ३ २
२३न्तू। वि। ष्णवो२३४ई। डा(३) ॥ १२ * ॥ [५]

१ २२ ३ २ १
॥ सोमसाम† ॥ प्रसोमासाः। विपाश्चिताः। आपो

२ २ २२ ३ २ १ २ ५
नायाइन्ताइयि। ऊर्म्मयः। वानानायिमा३४। हाउ।

५ १ २२ ३ २ १
हिषा५इवा ॥(१) अभायिद्रोणा। निबाभ्रवाः। पूक्रा

२ १ २२ ३ २ १ २ ५
आर्त्ताइस्या३। धारया। वाजाङ्गोमा३४। हाउ।

२ १ २ ३ २ १
तमा५ग्ग्रान् ॥(२) सुताइन्द्रा। यवायवायि। वाहू

२ १ २ ३ २ १ २ ४ ४
षायाइमा३। रुद्रियाः। सोमाआर्षी३४। हाउ। तु

४
वा५यिष्णवायि। हो५ई। डा(३) ॥ १२ * ॥ [६]

* उ० मा० १४प्र० १अ० १२खा०। † "गायत्रीसोमसाम"—इति अ० पु० पाठः।
‡ उ० मा० १४प्र० १अ० १३खा०।

॥ रौहितकुलीयम * ॥ प्रसोमासोविपाः। चितार्२:।
अपोनयन्तऊर्म्मार्२३याः। वानार्२नायिमार्२३। हिषो२
३४वा। आ५यिवोई्हायि ॥(१) अभिद्रोणानिबा। भ्रवा
२:। शुक्राऋतस्यधारार्२३या। वाजार्२ङ्गोमार्२३।
तमोर्२३४वा। त्ता५रोई्हायि ॥(२) सुताइन्द्रायवा।
यवार्२यि। वरुणायमरुद्भार्२३याः। सोमार्२आर्षार्२३।
तुवोर्२३४वा। ष्णा५वोई्हायि ॥ १४ † ॥ [७]

॥ मार्गीयवाद्यम ॥ प्रसौहोवा। मासोर्२। विपा
स्वार्२३४यिताः। अपोनय। तऊर्म्मार्१याः। वना।
हा। औ३होयि। नार्२३४यिमा। हार्२यिषार्२३४औ
होवा। ए३। इवार्२३४५ ॥(१) अभौहोवा। द्रोणा
२। निबाभ्रार्२३४वाः। शुक्राऋत। स्याधार्१रायार्२।

* "रोहित कुलीयोत्तरम्"—इति ख०पु०पाठः। † उ० गा० १४प्र० १अ० १ऋ० साठ।

१२ २ २ ३ ५ १ ३
वाजम्। हा। औ३ह्वोयि। गो२३४मा। ता२मा२

५२ २ २ १ १११२ २ २ १ २
३४औह्वोवा। ए३। त्रा२३४५न्॥(२) सुतौह्वोवा।

१ ३ २ ३ ५ १ २२ १ २
सायिन्द्रा२। यवाया२३४वायि। वरुणाय। मरुद्भ्या१

१२ ४ २ २ ३ ५
याः। सोमाः। हा। औ३ह्वोयि। आ२३४र्षा।

१ ३ ५२ २ २ १ १११
त्व२वा२३४औहोवा। ए३। षणुवा२३४५यि (३)॥ ११*॥[८]

१ २ २ २ ४
॥ आभीकम्॥ प्रा२३४सोमासो५। विपौह्वोस्वायि

५ १ २ २ २ २ ३ ५
ताः। अपोनयन्तऊ१र्म्मा३याः। वनामा २ ३ ४ यिमा।

१ ऽ २ २ ५ १
ह्वायिषा३उवा३४३। आ३४५यिवो६ह्वायि॥(१) आ२३४

२ २ ४ ५ १ २ २ २
भिद्रोणा५। निबौह्वोभ्रावाः। शुक्रातस्यधा१रा३या।

२ ३ ५ १ ऽ २ २
वाज२ग्नो२ ३ ४ मा। तामा३उवा३४३। त्रा३४५रो६ह्वा

५
यि (२)॥ १५†॥ [९]

२ २ २ १ २ १ २ ३
॥ ऐडसौपर्णम्॥ प्रसोमासोवा। वायिपश्चा२३४यि

---

* ऊ० गा० १८प्र० १ऋ० ११सा०। † ऊ० गा० १९प्र० २ऋ० १५सा०।

५ १ १ २ १ ७ ३ ५ १
ताः। अपोनया। तऊर्म्मा२३४याः। वा२ना। ना

१ १ २र १ २ ४ ५ २ र १
२३यिमा। हायिषाइवा। औ३होवा ॥(१) अभिद्रोणे

२ १ २ ३ ५ २ १ २ १ ७ ३
वा। नायिबभ्रा२३४वाः। प्रुक्षाक्षता। स्यधा२रा२३

५ १ २ १ २ १
४या। वा२जाम्। गो२३मा। तामक्षरान्। औ२

४ ५ २ र १ २ १ २ ३ ५ २१
३क्षोवा ॥(२) सुताइन्द्रोवा। यावायाया२३४वायि। वरु

१ १ ७ ३ ५ १ २
णाया। मरु२ङ्गा२३४याः। सो२माः। आ२३र्षा।

१ १ १ २ ४ ५
ढविष्णवा। औ३क्षोवा। क्षोपुई। डा (३)॥१६*॥[१०]१८

अथ प्रगाथात्मके—

द्वितीयमूक्ते, प्रथमा।

१ १ ३१ २ २ २ १ १ ३ १ १
प्रसोमदेववीतयेसिन्धुर्नपिप्येअर्णसा।

७ १र २र ३ १र २र ३१ ३ १ १ ३ १ १
अꣳशोःपयसामदिरोनजागृविरच्छाकोशम्मधुश्चुतम्॥१॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० २अ० १६सा०।

† ब० आ० ६, १, ३, ४ (२भा० ८६पृ०)=ब० वे० ७, ५, १४, २।

हे "सोम!" त्वं "देववीतये" देवानां पानाय तदर्थम् "अर्षसा" वसतीवर्याख्येन "प्रपित्वे" प्राप्यायसे। तत्र दृष्टान्तः—"सिन्धुः न" यथा सिन्धुः उदकेन प्रपित्वे प्रप्यायते तद्वत् [प्यायतेर्लिटि "लिङाशीष्य(६,१,२८)"—इति पी-भावः], स त्वं "मदिरो न" मदकरः सुरादिरिव "जागृविः" जागरणशीलः। यद्वा, नेति सम्प्रत्यर्थे। इदानीं मदकरी जागरणशीलस्त्वम्। "अंशोः" लताखण्डस्य "पयसा" रसेन "मधुश्चुतं" मधुर-रसस्य स्रावयितारं "कोशं" द्रोणकलशम् "अच्छ" अभि गच्छसि ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १र २र
आहर्यतोअर्जुनोअत्केअव्यतप्रियःसूनुर्नमर्ज्यः।

१ २ ३ २ ३ १ ३ १ २ ३ १र १र
तमीꣳहिन्वन्त्यपसोयथारथन्नदीष्वागभस्त्योः ॥ २*॥ २०†

"हर्यतः" स्पृहणीयः "प्रियः" प्रीणयिता "सूनुर्न" सूनुरिव "मर्ज्यः" मार्जनीयः "अर्जुनः" श्वेतवर्णः‡ सोमः "अत्के" रूपे विचित्रे¶ "आ अव्यत" आवृणोति "तम्" "ईम्" §

---

* ऋ० वे० ७, ५, १४, ३।

† 'अत्र यौवाजयं साम'—इति वि०।

‡ 'अर्जुनः—तृणसवर्णः। "एतानि अर्जुनानि सोमप्रतिनिधौ" तस्मादर्जुन इत्युक्तम्'—इति वि०।

¶ 'अत्के—नित्ये, सोमप्रक्षालिते'—इति वि०।

§ 'तम् ईम्—इति पदपूरणः'—इति वि०।

एनं सोमम् अङ्गुलयः "नदीषु" नदमानासु वसतीवरीषु "गभस्त्योः" बाह्वोः "आ" आभिमुख्येन "हिन्वन्ति" प्रेरयन्ति। तत्र दृष्टान्तः—"अपसः यथा" वेगवन्तः शूराः जनाः "रथे" सङ्ग्रामेषु प्रेरयन्ति तद्वत्॥

"अर्जुनः"-"अर्जुने"—इति पाठौ॥ २॥ २०

॥ यौधाजयम्॥ प्रसो३१। मा३दे। व। वायि
ता२३४यायि। सायिन्धू३:। नपा२यि। पेआ३४५।
णा२३४सा। अंशोःपया। सा। मदिरो२। नजा
३४५। गृ२३४वीः। अक्रा२। कोशा२म्। मधू३४५।
स्यू२३४ताम्॥(१) अच्छा३१। को३शम्। म। धूस्यू२
३४ताम्। आच्छा३। कोशा२म्। मधू३४५। स्यू२
३४ताम्। आच्छार्यता। अ। जुनोआ२। त्केआ३
४५। व्या२३४ता। प्रिया२:। हनू२:। नमा३४५।
जी२३४याः॥(२) प्रिया३१:। हनुः। न। मार्ज्मा

५ १२ १२ १२ ३
२३४याः। प्रायाइः। स्हनू२ः१ नमाइ४५। जीर२३४

५ २१ २१ २ १ २१
याः। तमायिंहिन्वा। ति। अपसोर२। यथाइ४५।

३ ५ २ १ २१ ३
राइ३४थाम्। नदाइयि। षूवार२। गभाइ४५। स्तो

२३४योः(३) ॥ १३ * ॥ [१]

४३ ५ ३ ५र २१
॥ वज्रम् ॥ प्रसोा४म। दा४यिवो। तयाइयि।

४ ५ २ र १ २ १ र २
सायिन्धूः। नपायि। प्येआर्णासाइ। आंश्नोःपया

१र २ ४ र ३१ २ ५
३। सामाइदाइ३४यिराः। नजा। गृवौबाओ२३४वा।

र १र२ ३ ५ ४ ४
अक्का। कोशौवाओ२३४वा। मधूश्चुताम्॥(१) अ

३ ५र ३ ५ ३ २ ४ ५ २र
च्छा४को। शा४न्मधु। श्चुताइम्। आच्छा। कोशाम्।

१ २ १ २ १
मधूश्चूताइम्। आहर्यजौइ। अर्जू२नो२३४आ। त्के

३ २ १ ५ ३र २ ३ ५
अ। व्यजौवाओ२३४वा। प्रियः। स्हनौवाओ२३४वा।

४ ४३ ५र ३ ५ ३ २
नमाइ५र्जियाः॥(२) प्रियाइ४:स्हू। नू४न्नंम। जियाइः।

* ऊ० गा० १प्र० २ख० १२सा०।

४ ५ २र १ २ १ र
प्रायाः। प्रायाः। स्वनूः। नमाऽर्जायाइः। जामीए

२ १ ३ ५ र २१ ३
ह्विन्वाइ। तियाऽपाऽइ४साः। यथा। रथौवाऽओऽइ

५ र ३१ २ ५ ४ ४
४वा। नदी। षुवौवाऽओऽ२४वा। गभाऽस्तियोः। द्वो

५ई। डा (३)॥ १२ * ॥ [२]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तः ॥ प्रसोइमाइदेववीतयोवा। सायिन्धु

२ र १ ३ १ र २ २र
र्नपि। प्येऽआर्णा१सा२। आऽशोःपयाइ१२२३४। सा

४ ५ २ १ २ १ ३ २ १
मद्विरः। नजागृ१वी२:। अच्छाको१शाइम्। मधुइ।

१ ३ १ १ १ १
ऊ२३४५। ता२३४५म्(१) ॥ १२ † ॥ [३]

५ र २ ४र ५ ४र ५ १
॥ गौगवम् ॥ प्रसोमाइदेववीतयायि। सायिन्धूः।

१ र २ ४ ५ २ १र ८ १
नपिप्येऽआइ। णासा। अऽशोःपयसामदाइयिरोः।

३ २ ४ ५ २ १र ३ १ ४ ५
नजाइगृवीः। अऽशोःपयसामदिरः। नजाइगृवीः।

---

* ऊ० मा० ६प्र० २अ० १२सा०।

† ऊ० मा० ८प्र० १अ० १३सा०।

१ र २र १ २ २ १ ५ ४
आच्छाको। ग्ना। औ३ह्वो। मधो२३४वा। स्यू५तो

६ह्वायि(१)॥ १७*॥ [४]

१ र १ २ १ र २ १
॥ ग्रुड्वाग्रुड्वीयाद्यम्†॥ प्रसोमदेववीतयायि। सि

१र १ २ १ र र २ १र
न्धुर्न पिप्ये अर्णा२३सा। अ॒ग्नीपयसामदिरोनजाग्रु२३.

२ १र २ १ ३२ ५र र
वीः। अच्छाको२३ग्ना३म्। मा२। धुस्यू३४औह्वोवा।

३ १ १ १ १
ता२३४५म्(१)॥ १८‡॥ [५]

५ र २ ४र ५ ४र ५ १
॥ गौङ्गवम्॥ प्रसोमा३देववीतयायि। सायिन्धू

१ १र २ ४ ५ २ १र र
२ः। नपिप्ये आ३। णासा। अ॒ग्नीपयसामदा२३यिं

१ २ २ ४ ५ २ १र र ३ १
रो२। नजा३ग्रुवो। अ॒ग्नीःपयसामदिरः। नजा३

४ ५ १ र २र १ २ १ ५
ग्रुवीः। आच्छाको। ग्ना। औ३ह्वो। मधो२३४वा।

४ ५ ५ र २ ४ ४ ४ ५ १
स्यू५तोह्वायि॥(१) अच्छाको३ग्नमधुस्युताम्। आच्छा

१र २ २ ४ ५ २र १ र
२। कोग्नमधु३। स्युताम। आहर्य्यतोअर्जुनोर३

---

* ऋ०गा० ९५० २अ० १७मा०। † "परान्यग्रुड्वीयम्"—इति ख०पु० पाठः।

‡ ऋ० गा० ९५० २अ० १८ मा०।

१ २र २ ४ ५ २र १ र र ३
आ२। त्के आ३व्याजा। आहर्य्यतौ अज्जु नोअ। त्के
२ ४ ५ १ १र १ २ २ १
आ३व्याता। प्रायःह्व। ना। औ३हो। नमो२ ३ ४
५ ४ ५ ५ २ ४ ५ ४ ५ १
वा। जाप्रयोई्हायि॥(२) प्रियःह्व३नुर्न्नमर्जियाः। पा
१र ३ २ ४ ५ २१र
या२ः। ह्नुर्न्नमा३। जायाः। तमीण्ह्विन्वन्त्यपार३
१ ३ २ ४ ५ २ १र ३ २
सो२। यथा३राथाम्। तमीण्ह्विन्वन्त्यपसः। यथा३
४ ५ १ र २ १ २ २ १ ५
थाम्। नादीघु। आ। औ३हो। गमो२३४वा।
४ ५
स्ताप्रयोई्हायि३)॥ १७ *॥ [६]
२ १ २ ४ ५
॥ यौधाजये ह्वारान्तम्॥ प्रसो३१। मा३दे। व।
२ ४ ५ १ २ १ र
वायिता२३४याथि। सायिन्धू३ः। नपा३२यि। प्येत्र
३ १ १ १ २ १ २ १ २र १
र्णा३४५। सा२३४५। त्रण्शोःपया। सा। मदिरा३२।
र ३ १ १ १ २ १
नजागृ३४५। वी२३४५ः। अच्छा२। कोशा३२म्।
२ १ १ १ १ ३ २ २ ४
मधुश्चू३४५। ता२३४५म्॥(१) अच्छा३१। को३शम्।

* उ० गा० ११प्र० १अ० १७मा०।

५ २ १ ५ १ १ १२
म। धुक्षू२३४ताम्। आच्छा३। कोशाऽ२स्म्। मधु

३ १ १ १ १ १२ १ २ १ २ १ २
क्षू३४५। ता२३४५म्। आहार्य्यतो। अ। जुनोआ

२ ३ १ १ १ १ २ १
ऽर्२। त्के अव्या३४५। ता२३४५। प्रिया२:। सूनू ऽ२:।

३ १ १ १ १ ३ २ २ ४ ५
नमर्ज्जा३४५। या२३४५: ॥(२) प्रिया३१:। सू३नुः। न।

२ ३ ५ १ २ १२
मार्ज्जा२३४या:। पाया३:। सूनू ऽ२:। नमर्ज्जा३४५।

३ १ १ १ १ २ १ २ १ १ १ २
या२३४५:। तमायिंक्ष्वन्वा। ति। अपसो ऽ२। यथा

३ १ १ १ १ १ १ २
रा३४५। था२३४५म्। नदा२यि। षूवा ऽ२। गभ

३ १ १ १ १
स्ता३४५। यो२३४५:(३) ॥ १५ * ॥ [७]

५ २ २ ४५ ४२ ५ १ २
॥ द्वैगतम् ॥ प्रसोमा३देववीतयायि। सायिन्धुन्न

२ १ २ ३ २ ६ २ २ १
पि। पेआर्णा१सा२। अ२ग्नी३:। हौ३ह्वो३वा। पय

२ २ २ १ १ ३ ५२
सामदिरोनजागृ१वी२:। अक्का२३। को२शा२३४ची

ऋ० मा० १४प्र० १अ० १५सा०।

२ १ ३ १ १ १ ५ ४ २
होवा। ए३। मधू२सुता२३४५म् ॥(१) अच्छाकोऽ२

४ ५ ४ ५ १ ४ २ १ २
३शन्मधुश्चुताम्। आच्छाकोशम्। मधूश्चू१ता२म्।

२ २ ऽ २ २ १ ४ २ ०
आहा३। हौ३हौ३। वा। र्यतोअजुनोयत्के अव्याता

१ १ २ ५ ४ २ २ १
२। प्रिया२३:। हृ२ना२३४औहोवा। ए३। नमा२

१ २ १ १ १ १ ५ २ ४ ५ ५ १ २
र्जिया२३४५: ॥(२) प्रियःहृ२नुर्नमर्जियाः। प्रायःहनुः।

१ २ २ २ ऽ १ २ १
नमाऽर्जी१या२:। तमा३यिम्। हौ३हो३वा। हिन्व

४ २ १ १ २ ५ ४
न्त्यपसोयथारा१था२म्। नदा२३यि। षू२वा२३४औ

४ २ १ ३ १ १ १ १
होवा। ए३। गभा२स्तियो२३४५:(३) ॥ १२ * ॥ [८]

५ ४ २ ४ ५ ४ ५ १
॥ पौरुहन्मनम्॥ प्रसोमा३देववीतयायि। सायि

१ ४ १ २ १ १ ५ १
न्वनंपि। प्येआर्णी१सा२। णासा२। आ॰शोःपय।

१५ २ १ २ १ १ ३ ५ १
सा। मद्रिरो३। मद्रिरो३। नाजागृ२३४वी। आ

• ऋ० गा० १८प्र० १सा० १२ऋ०।

१ ८ १० १२ ५ ४
च्छाकोशाम्। माधुश्चू२३४ताम्। मधूयुश्चुताम् ॥(१)

५ ८ २ ४ ५४ ५ १ ८ २८ १२
चच्छाकोऽशम्माधुश्चुताम्। आच्छाकोशम्। मधूश्चू

१ १ १ १५ ८
१ताँ२म्। श्चूताँ२म्। आहर्व्यतः। आ। जुनो

१ १ ८ १ १ १ ५ १ २८ १
आ३। जुनोआ३। त्केचव्या२३४ता। प्रायःसूनूः।

१ १ १ ५ ४ ५ १ ४ ५
नमाऽर्जा२३४याः। नमा५र्ज्जिर्जयाः ॥(२) प्रियःसू३नुर्न

४ ५ १ २८ १ १ १
र्ज्जिर्जयाः। प्रायःसूनुः। नमाऽर्जा१याँ२ः। जायाँ२ः।

१ ८ २ १५ २ १ १ १ २
तामीऽद्धिन्व। ताधि। अपसो३। अपसो३। यायां

३ ५ १ २८ १ १ ३ ५ ४
रा२३४थाम्। नादीषुवा। गाभस्ता२३४योः। गभा

४
५स्तियोः। च्चो५ई। डा(३) ॥ १३ * ॥ [८]

१ ८ ८ ८ १
॥ क्षारायणम् ॥ प्रसोमदौच्चो२यिववीतयायि। सा

८ ८ २ २ १२
यिन्धुर्न्नपिप्येऽर्णसा। शोःपा३या। सामद्विरो। न

• ऋ० गा० १८म० १अ० १२सा०।

२ १ १ र र २ र ५
आ३ह्वा। गृवी२:। अच्छाकोशम्मधोवा३ओ२३४वा।

४ ५ १ र र १
सूतोऽहायि ॥(१) अच्छाकोशोहो२यिमधुश्चुताम्। आ

र र र १ १ र
च्छाकोशम्मधश्चुतम्। आहार्य्याऽइतो। अर्ज्जनोआ।

र २ २ १ १ र २ १ ५
त्कोआ३ह्वा। व्याता२। प्रियःसूनुर्न्नमोवा३ओ२३४वा।

४ ५ १ २ र १
जाऽयेऽहायि ॥(२) प्रियःसूनोहो२यिनमर्ज्जयाः। प्रा

र १ १ १
यःसूनुर्न्नमर्ज्जयः। तमायिंह्वा३यिन्वा। तियपसो।

'२ १ १ १ र र २ १ ५
यथाऽहायि। राया२म्। नदोषुवागभोवा३ओ२३४वा।

४ ५
स्ताऽयोऽहायि(३) ॥ १४ * ॥ [१०]

२ १र ४र ५र
॥ हिंहिङ्कारंवामदेव्यम् ॥ प्रसोमा२३देववीतयायि।

१ र र र २ ३र २
सायिन्धुर्न्नपिप्येवर्णसाऽग्नोः पयसामदिरोऽनजीहो ३।

१ १ १ १ र र २ ३र २ १
ऊम्मा२। गृ२३वीः। अच्छाकोशाम्मधोहो३। ऊम्मा

---

* ऋ० मा० १८म० १अ० १४सा०।

१ ४ ५ २ १र ४
२। श्रुताम। औ२३होवा ॥(१) अच्छाको ३ २ ३ म

५ १ र र र र र
मधुश्रुताम्। आच्छाकोममधुश्रुतमाहर्य्यतोअर्जुनो

१ २ ३र २ १ १ १ १ १ ३र
आत्कऔहोइ। ऊम्मा२। व्या२३ता। प्रियस्कनुर्नमौ

२ १ १० २ ४ ५ २ १
होइ। ऊम्मा२। जिया। औ३होवा ॥(२) प्रियःक्र२

४ ५ १ र र
नुर्नमर्ज्जियाः। प्रायःक्रनुर्नमर्ज्जियस्तमीहिन्वन्त्यपसो

२ ३र २ १ १ २ १र २ ३र
यथौहोइ। ऊम्मा२। रा२३थाम्। नद्दीषुवाऽगभौ

२ १ १ ४ ५ ४
होइ। ऊम्मा२। स्तियोः। औ२३होवा। होः५

ई। डा(३)॥१७॥ [११]

२र र १ २र १र १ १ १ २ १
॥ काण्वरथतरं ॥ प्रासोमदेववीतयायि। सिन्धुर्न

२ १ २ २ र र र र
पायि। ष्यइआर्णाइसा। अंशोःपयसामदिरोनजागृ

१ ४र २ १र ५ २
वा२३४ऐहि। अच्छाको२३४श्याम्। मधा३१उवा२३।

१ २ ३ २ २र र १र २ १ १ १ २ १र
ए३। श्रुतमा ॥(१) आच्छाकोश्रम्मधुश्रुताम्। अच्छा

---

० ऊ० गा० १९५० २अ० १७सा०।

कोशाम्। माधुश्चूतम्। आद्दर्य्यतोअर्जुनोअत्के
अव्यताऽ३४ऐद्दी। आ३द्दार्य्या३तो। अर्जुनोअत्केअ
व्यताऽ३४ऐद्दी। पियःस्ऽ३४नूः। ममा३१उवाऽ३। ए३।
जियआ॥(२) प्रायःसूनुर्नर्मर्जियाः। प्रियःसूनूः। ना
३माज्जा३याः। तमीएद्दिन्वन्त्यपसोयथाऽ३४मैद्दी। ना
३मायिएद्दा३यिन्वा। तियपसोयथारथाऽ३४मैद्दी। नदौ
षूऽ३४वा। गभा३१उवाऽ३। ए३। स्तियोवा ॥६*॥[१२]२०

अथ तृतीयतृचे, † प्रथमा।

प्रसोमासोमदच्युतःश्रवसेनोमधोनाम्।
सुताविदथेअक्रमुः॥ १ ‡॥

---

० ऊ० मा० २२प्र० २अ० ६सा०।

† 'उक्तोमाध्यन्दिनः पवमानः, उक्तानि गायत्राणि ० ० ०। आर्भवः पवमानो यक्तव्यः तस्य ज्योतिष्टोमवत् छन्दांसि साम्नाद्यानामधेयैरित्युच्यते'—इति वि०।

‡ ह० आ० ५, २, १ (१भा० २०पृ०)=ऋ० वे० ६, ८, २२, १।

"सोमासः" सोमाः "मदच्युतः" मदस्राविणः "सुताः" अभिषुताः सन्तः "विदथे" यज्ञे "मघोनां" हविष्मतां "नः" अस्माकं "अवसे" अन्नाय कीर्त्तये वा "प्र अक्रमुः" प्र गच्छन्ति ॥

"मघोनां"-"मघोनः"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ १२ ३ १ २ ३ २
आदीꣳहꣳसोयथागणंविश्वस्याविवशन्मतिम्।

२ ३ १ २१
अत्योनगोभिरज्यते ॥ २ * ॥

"आत्" अपिच "ईम्" अयं सोमः "हंसो† यथा" "गणं" जनसङ्घं स्वगतिविशेषेण स्वनेन वा प्रविशति, तद्वत् "विश्वस्य" सर्वस्य स्तोतृजनस्य "मतिं" स्तुतिं बुद्धिं वा "अवीवशत्" वशं नयति; स च सोमः "अत्यो न" अश्व इव "गोभिः" गव्यैरदकै र्वा "अज्यते" सिच्यते स्निग्धीक्रियते ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ १ १ २ १ १ २ १ २ ३ १ २
आदीन्वितस्यपोषणोहरिꣳहिन्वन्त्यद्रिभिः।

१ २ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रायपीतये ॥ ३ ‡ ॥ २१

---

* ऋ० वे० ९, ८, २२, २।

† 'हंसः—आदित्यः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ९, ८, २२, २। अथैव च पुनः ५, २, ४, २। परं तत्र तु "धनञ्जय सख"—इति पाठः।

"आत्" अभिष्व "ईम्" एनं "हरिं" हरितवर्णम् "इन्दुम्" सोमं "क्षितस्य" ऋषेः "योषणाः"* अङ्गुलयः "अद्रिभिः" ग्रावभिः "हिन्वन्ति"। किमर्थम्? इन्द्राय इन्द्रस्य "पीतये" पानार्थम् ॥ ३ ॥ २१

१ र २ र र १ २
॥ सꣳहितम् ॥ प्रसोमासोम । दा२च्युताः । अ

१ २ १ २
वा२ । सा२३यिनो । मा२घोनाम् । सू२३ताः ।

१ ७र २
वा२यिदा । धेआ२३ । हाउवा३ । का २३४

५
मूः (१) ॥ १४ ॥ [१]

१ र २र १र १ २
॥ आग्नुभार्गवम् ॥ प्रसोमासोम । दच्यू३ताः ।

१ र २ १ ३ ५ १ २
आवसिनोइ । मा२घो२३४नाम् । सुतावा१यि । दा२ ।

३र २ १ ५ ५
धेआइ । का२३४मोहाय(१) ॥ २० ॥ [२] २१

---

* 'योषणाः—युमिश्रणे, मिश्रणकर्त्तारः ऋत्विजः,—दनि वि०।

† छ० मा० १प्र० २अ० १४सा०।

‡ ऊ० मा० ११५० १अ० २०सा०।

अथैकत्रिंशे चतुर्थसूक्ते*—प्रथमा।

३ १ २ ३१२ २२१२ ३ १ २
अयापवस्वदेवयूरेभन्पर्येषिविश्वतः।

२ ३ १ २
मधोर्धारामसृक्षत ॥ १ ॥†

हे सोम! "देवयुः" देवान् कामयमानः त्वम् "अया" अनया धारया "पवस्व" क्षर। ततः "रेभन्" शब्दायमानः "पवित्रं" "विश्वतः" "पर्येषि" परिगच्छसि। अनन्तरं "मधोः" मदकरस्य तव "धाराः" आत्मीयाः "असृक्षत" सृज्यन्ते ॥

अत्र द्वितीय-तृतीय-पादौ व्यत्ययेन ‡ पाठौ ॥ १ ॥

अथैकत्रिंशे पञ्चमे—प्रथमा ¶।

१ २ ३ १३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पवतेहर्यतोहरिरतिक्रराॅंसिरᳬह्या।

१क २२ ३ १ २ ३ २१ १ २
अभ्यर्षंस्तोत्रभ्योवीरवद्यशः ॥ २ ॥§

---

* मूले, गानग्रन्थे, षट्कारनये, विवरणमते चेदमपि सूक्तं तृचं; तथाचेदमेव सूक्तमस्य प्रपाठकस्यान्त्यमिति।

† ऋ० वे० ७, ५, ११, ४।

‡ तथाच—"अयापवस्वदेवयुर्मधोर्धारामसृक्षत। रेभन्पर्येषिविश्वतः"—इति ऋ० पाठः।

¶ मूलादिमते त्रियस्तक् द्वाविंशति-सूक्तस्य द्वितीयेति।

§ ऋ० आ० ६, २, ३, ११ (२ भा० २२० पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, ११, ३।

"हर्य्यतः" स्पृहणीयः "हरिः" हरितवर्णः सोमः "रंह्या" हतीयाया आकारः साधुवेगेन "ह्वरांसि" कुटिलानि अनृजूनि पवित्राणि "अति पवते" अतीत्य गच्छति। किं कुर्व्वन्? स्तोतृभ्यः "वीरवत्" पुत्रयुक्तं "यशः" "अभ्यर्षन्" अभिगमयन् पवते ॥ २ ॥

अथैकत्रिंशे षष्ठे प्रथमा *।

१ २ ३ १र २र ३ २ २ ३ १ २ ३ १र ३र

प्रसुन्वानायान्धसोमर्त्तीनवष्टतद्वचः।

३ १ २ ३ १ १ ३ २ ३ १र २र

अपस्वानमराधस॰ हतामखन्नभृगवः ॥ ३ † ॥ २२

॥ इति प्रथमः प्रपाठकः ॥

"सुन्वानाय" [षष्ठ्यर्थे चतुर्थी (२,३,६२वा०)] सुन्वानस्य अभिषूयमाणस्य "अन्धसः" अदनीयस्य सोमस्य "तत्" प्रसिद्धं "वचः" वचनं घोषं "मर्त्तः" मारकः कर्मविघ्नकारी "न प्रवष्ट" न भजतां न शृणोत्विति यावत्। तथा हे स्तोतारः! "अराधसं" साधकर्म-रहितं "ध्वानम्" "अपहत"। तत्र दृष्टान्तः—"मखं न" यथा पुरा अपराद्धं मखम् एतन्नामानं "भृगवः" अपहृतवन्तः तथा अपहतेत्यर्थः ॥

"प्रसुन्वानाय"-"सुन्वानस्य","वष्ट"-"हृत"—इति पाठौ ॥१॥२२

---

* मूलादिनये त्रियष्टक् द्वाविंशति-सूक्तस्य तृतीयेति।

† ऋ० आ० ६, २, १, ९ (२भा० १६८ पृ०) ८ ऋ० वे० ७, ५, १, १८= अत्रैवोत्तरायां पुनः ६, २, ३, १।

॥ आह्वारम् ॥ पव। तेद्वा३४। औद्वोपुर्य्यतोद्वरा यिः। अतिक्षराण्सिरण्। द्वा२३या३४। अर्षा। स्तो तभ्योवायि। रा३वद्य। ष्णा२३४५:(३) ॥ १६ * ॥[१]

॥ गौरोवितम् ॥ प्रस्तु। ष्वाना ३। यअन्धसाः। म त्तीनवष्टतद्वचा२३:। आपस्वाना३१२३म्। अरा५धमा म्। द्वातामखा३१२३म्। नभोवा। गा५वोर्द्वायि ॥

(३)॥ १७ † ॥[२]

॥ सुज्ञानम् ॥ पवतेद्वा। र्य्यतोद्वरायिः। अजिक्रा रा२। सिरण्द्विया। अभियार्षा२। स्तोतृ। भ्यो र्वा२३४औद्वोव्रा। रवद्यण्यय३उपा२३४५(२) ॥१५ ‡॥[३]

॥ काश्यीजम् ॥ पवतेद्वा। र्य्यतोद्वा२३रा३४यिः।

---

* ऊ० गा० १६प्र० २ऋ० १६सा०।

† ऊ० गा० १प्र० २ऋ० १७सा०।

‡ ऊ० गा० ६प्र० २ऋ० १५सा०।

२ २ २ २ २ २
अजिङ्करा। सिरञ्ह्रा२३या३४। अभियर्षा। स्तोतृभ्यो

२ १ ३ ५२ २ २
वीरवत्। या२। श्रा २ ३ ४। औहोवा। ज २ ३ ४

५
पा(२) ॥ १६ * ॥ [४]

२ १ २ ४ ५ ५ २ ३
॥ पौष्कलम् ॥ पवति३ह्यर्य्य। तोह्रा २ ३ ४रायिः।

२ १ २ १ २ ३ ५ २ १ ७२
अतिङ्करा। मायिरञ्ह्रा२३४या। अभाअर्षा। स्तोतृ

३ २ १ २ १ १ १ १
भ्यो२३४५वा६५६यि। रवद्यश्रा२३४५: ॥ २ † ॥ [५]२२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य द्वितीयस्याध्यायस्य
षष्ठः खण्डः ॥ ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरोदेयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ १ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे द्वितीयोऽध्यायः ¶ ॥

---

* ऊ० गा० ६प्र० २अ० १६सा०।

† ऊ० गा० ६प्र० २अ० २सा०।

‡ 'विष्टल्लौमिकं प्रथममण्डः समाप्तम्'—इति वि०।

¶ 'समाप्तश्च प्रथमः प्रपाठकः'—इति वि० मूलादित्सर्वसम्मतञ्चैतदिति शम्।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः आरभ्यते * ॥

तत्र,

पवस्ववाचइति पञ्चर्चात्मके प्रथमखण्डे—

प्रथमर्चे—प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३।४ २४ २ १ २ ३ १ २
पवस्ववाचोअग्नियःसोमचित्राभिरूतिभिः ।

३ १ १४ ३ १ २
अभिविश्वानिकाव्या ॥ १ ॥ †

हे "सोम !" "अग्नियः" मुख्यः‡ त्वं "चित्राभिः" पूजनीयैः¶ "ऊतिभिः" रक्षणीयैः सह "वाचः" अस्मदीयाः स्तुतीः

---

* 'इदानीं द्वितीयमहरारभ्यते द्वितीयश्च प्रपाठकः । पञ्चदशस्तोमिकं द्वितीयमहः'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७, १, २८, ५ ।

‡ 'अग्नियः प्रधानभूताः'—इति वि० । अग्निय शब्दमेवं व्याचष्टो भगवान् यास्कः—"अयगमनेनेति वायुगरणेनेति वायुसम्पादिन इति वा । अपिवायमित्येतदनर्थकमुपबन्धमाददीत"—इति ६, १५ ।

¶ 'चित्राभिः विचित्राभिः नानाप्रकारैः'—इति वि० ।

प्रति "पवस्व"। [उत्तरार्द्धे उक्तमेवार्थं विशदयति—] "विश्वानि" सर्वाणि "काव्या" काव्यानि स्तुत्यात्मकानि वाक्यानि "अभि" पवस्वेति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ ५ ३ १ १ ३ २ २ १ १ २ १ २ ३ १ १
त्व꣡ꣳसमु꣡द्रिया अपोऽग्रियोवाचईरयन्।

१ २
पवस्वविश्वचर्षणे ॥ २ ॥ *

हे "विश्वचर्षणे" सर्वस्य द्रष्टः सोम! "अग्रियः" मुख्यः त्वं "वाचः" † "ईरयन्" प्रेरयन् "समुद्रियाः" आन्तरिक्षाणि‡ "अपः" उदकानि¶ "पवस्व" धारया क्षर ॥

"विश्वचर्षणे"-"विश्वमेजय"—इति छन्दोग-ब्राह्मणानां पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ २ ३ १ २
तुभ्येमाभुवनाकवेमहिम्नेसोमतस्थिरे।

१ २ ३ १ २
तुभ्यन्धावन्तिधेनवः ॥ २ § ॥ १

---

* ऋ० वे० ७, १, २९, १।

† 'अग्रियो वाचः—प्रधानभूताः ऋग्यजुःसामलक्षणाः'—इति वि०।

‡ "समुद्रः"—इत्यन्तरिक्षनामसु निघण्टौ पञ्चदशं पदम् (१, ३)।

¶ 'समुद्रिया अपः—समुद्रे भवाः आपः समुद्रियाः। द्रोणकलशः समुद्रः'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, २९, २।

हे "कवे" क्रान्तकर्म्मन् सोम ! "तुभ्यं" तव "महिम्ने" "इमा" इमानि "भुवना" भुवनानि "तस्थिरे" तिष्ठन्ति त्वामेव पुरस्कुर्वन्तीत्यर्थः । किञ्च "धेनवः" नवप्रसूतिकाः देवानां हविःप्रदानेन प्रीणयित्र्यो गावः * "तुभ्यं" त्वदर्थमेव 'आशिरं प्रयस्व मे'—इति "धावन्ति" आगच्छन्ति ॥

"धावन्तिधेनवः"—इति छन्दोगाः, "अर्धन्तिधेनवः"—इति बह्वृचाः ॥ ३ ॥ १

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

पवस्वेन्दोवृषासुतःक्षुधीनोयशसोजने ।

२ ३ २ ३ १ २

विश्वाअपद्विषोजहि ॥ १ ॥ †

हे "इन्दो" सोम ! "सुतः अभिषुतः "वृषा" कामानां वर्षिता "पवस्व" धारया क्षर "जने" जनपदे "नः" अस्मान् "यशसः" यशस्विनः "कृधि" कुरु ; "विश्वा" विश्वान् सर्वान् "द्विषः" द्वेष्टॄन् शत्रून् "अपजहि" मारय त्व ॥ १ ॥

* 'धेनवः—गावः । अथवा धेनव आदित्यरश्मयः'—इति वि० ।

† ऋ० आ० ५, १, ५, २ (२भा० ३२अ०) = ऋ० वे० ७, १, २३, १ ।

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २
यस्यतेसख्येवयꣳसासह्यामपृतन्यतः।

१ २ ३ १ २ ३ १
तवेन्दोद्युम्नउत्तमे ॥ २ ॥ *

हे "इन्दो" सोम! "अस्य" † अस्मिन् यागे वर्त्तमानस्य "ते" तव "सख्ये" सखित्वे मति वयं स्तोतारः "तव" त्वदीये "उत्तमे" श्रेष्ठे "द्युम्ने" अन्ने तृप्तिं प्राप्ताः [तथाच यास्कः—"द्युम्नं द्योततेर्यशो वान्नं वा (निरु० नै० ५, ५)"—इति] "पृतन्यतः" युद्धमितः शत्रून् ‡ः "सासह्याम" अभिभवेम ¶ ॥

द्वितीय-तृतीयपादौ व्यत्ययेन पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १२ २२ ३ २ ३ २ ३ १ २
यातेभीमान्यायुधातिग्मानिसन्तिधूर्वणे।

१ २ ३ २
रक्षाममस्यनोनिदः ॥ ३ § ॥ २

* ऋ० वे० ७, १, २३, ४।

† मूलपाठस्तु "यस्य"—इति; विवरणस्थतापि तथैव स्वीकृतम्, पदपाठ-गान-ग्रन्थादावपि तथैव श्रूयते।

‡ 'पृतन्यतः—पृतनाः सेनाः, ताभिर्यं योद्धुमिच्छन्ति ते स्थिताः वीरपुरुषाः'—इति वि०। "पृतनाः"—इति सङ्ग्रामनामसु निघण्टौ अष्टादशं पदम् (२, १७।

¶ 'सासह्याम—सहेम'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, २३, ५,।

हे "सोम!" "ते" तव "या" यानि "भीमानि" अत्यूर्जां भयङ्कराणि "तिग्मानि" तीक्ष्णानि "आयुधा" आयुधानि * "धुर्वणे" अन्नवधार्थं सन्ति तैः "आयुधैः" "समस्य" सर्वस्य अघोः "निदः" निन्दायै† "नः" अस्मान् "रक्ष" पालय ॥३॥ २

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा।

१२ १२ १ २ १२ ३१२
वृषासोमद्युमाँ असिवृषादेववृषव्रतः।
२ २ १ १
वृषाधर्म्माणिदध्रिषे ॥ १ ॥ ‡

हे "सोम!" "वृषा" कामानां वर्षिता त्वं "द्युमान्" दीप्तिमान् "असि"। अपिच हे "देव" द्योतमान सोम! "वृषा" त्वं "वृषव्रतः" वर्षणशीलकर्मासि। किञ्च हे सोम! "वृषा" त्वं "धर्माणि" देवानां मनुष्याणाञ्च हितानि कर्माणि "दध्रिषे" धारयसि ॥

"दध्रिषे"-"दधिषे"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'अत्यन्तदृष्टिप्रासतोमरादीनि'—इति वि०।

† 'निदः—नितरां दहति निदः, तस्य सम्बोधनं निदः'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ऋ० ६, १, २, ८ (२भा० ६१ ४०) = ऋ० वे० ७, १, १९, १।

अथ द्वितीया ।

१ १ ३ १ ३ २ २ १ ३ १ ३ १ २ १ २
वृष्णस्तेवृष्णश्शवोवृषावनंवृषासुतः ।
१ २ २ १ १ २ २
सत्वंवृषन्वृषेदसि ॥ २ ॥ *

हे "वृषन्" कामानां वर्षक सोम ! "वृष्णोः" वर्षितुः † "ते" तव "शवः" बलं ‡ "वृषणं" वर्षणशीलं भवति "वनं" तव भजनमपि, "वृषा" वर्षणशीलं "सुतः" अभिषुतः तव रसोऽपि "वृषा" वर्षणशीलः "स त्वं" "वृषेदसि" वर्षणशील एवासि भवसि ॥

"सुतोमदः"—इति, "सत्वंसत्यम्"—इति च पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ ३ १ १ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
अश्वोनचक्रदोवृषासङ्गाइन्दोसमर्वतः ।
१ २ ३ १ २
विनोरायेदुरोवृधि ॥ २ ¶ ॥ ३

हे "इन्दो" सोम ! "वृषा" त्वं "अश्वोन" अश्ववत् "सचक्रदः" सङ्क्रन्दसे । अपिच "गाः" पशून् "अर्वतः" अश्वांश्च अस्मभ्यं

---

* ऋ० वे० ७, १, २९, २ ।

† 'वृष्णोः —वृषु सेचने (भ्वा० पर०) सेचन-समर्थस्य ते'—इति वि० ।

‡ "शवः"—इति बलनामसु निघण्टौ तृतीयं पदम् (२, ९) ।

¶ ऋ० वे० ७, १, २९, ३ ।

सम्प्रयच्छसीति शेषः । किञ्च "नः" अस्माकं * "राये" धनाय "दुरः" द्वाराणि "विहधि" विहतानि कुरु ॥ १ ॥ २

अथ चतुर्थतृचे—प्रथमा ।

२ २ १ २ २ १ १ २ १ २
वृषाह्यसिभानुनाद्युमन्तन्त्वाहवामहे ।
१ २ २ १ २
पवमानस्वर्दृशम् ॥ १ ॥ †

हे सोम ! त्वं "वृषासि हि" अभिमत-फलानां वर्षिता भवसि खलु । तस्मात् हे "पवमान" पूयमान वा सोम ! "स्वर्दृशं" सर्वस्य [सूर्यस्य वा] द्रष्टारं [सर्वैर्देवैर्द्रष्टव्यं वा] "भानुना" तेजसा "द्युमन्तं" दीप्तिमन्तम् अतिशयेन तेजस्विनमित्यर्थः [स्तुतिमन्तं वा], "त्वा" त्वां वयं "हवामहे" यज्ञेषु आह्वयामहे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १ २ १ २ १ २ १ २ २ १ २
यदद्भिःपरिषिच्यसेमर्ज्यमानआयुभिः ।
१ २ २ १ २ १ २
द्रोणेसधस्थमश्नुषे ॥ २ ॥ ‡

---

* 'नः-अस्माभ्यम्'—इति वि० ।

† ऋ० आ० ५, २, ५, ४ (२भा० ३३पृ०) = ऋ० वे० ७, २, १, ४ ।

‡ ऋ० वे० ७, २, १, १ ।

हे सोम! त्वम् "आयुभिः" मनुष्यैः * ऋत्विग्भिः "मृज्यमानः" अतिशयेन शोध्यमानः सन् "अद्रिः" वसतीवर्याख्याभिः "यद्" यदा "परि सिच्यसे" परितः सिच्यमानो भवसि, तदानीं "द्रोणे" द्रोणकलशेन गृह्यमाणः सन् "सधस्थं" सह तिष्ठन्त्यत्रेति सधस्थं स्थानं ग्रहचमसादिकम् "अशुषे" व्याप्नोषि॥

"मृज्यमानआयुभिः"-"मृज्यमानोगभस्त्योः"—इति, "द्रोणे"-"द्रुणा"—इति च पाठो॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १ २
आपवस्वसुवीर्य्यम्मन्दमानःस्वायुधः।

३ १ २ ३ १ २
इन्होषिन्दवागहि॥ ३ †॥ ४

हे "स्वायुध"! यज्ञे 'स्फ्य-कपालादीनि दशायुधानि-इत्यभिधीयन्ते, शोभनानि तानि यस्य स तथोक्तः। यद्वा धनुरादीन्यायुधानि यस्य सः, तादृश हे सोम! त्वं "मन्दमानः" मोदमानः सन् [अन्तर्णीतण्यर्थः] देवान् स्वयं मादयन् ‡ "सुवीर्यं" शोभनवीर्योपेतं पुत्रादिकमस्माकम् "आ पवस्व" पवतिर्गत्यर्थः, आ प्रापय। किञ्च हे इन्दो! ग्रहेषु चमसेषु रक्षणशील सोम!

---

* "आयवः"—इति निघण्टौ मनुष्यनामसु सप्तदशं पदम् (२ ३)।

† ऋ० वे० ७, २, १, ५।

‡ 'मन्दमानः—शोध्यमानः तप्यमानोवा'—इति वि०।

"दृह उ" दृहैव * अस्मदीये यज्ञे "सु आगहि" सुष्ठु † आगच्छ ॥ ३ ॥ ४

अथ पञ्चमतृचे—प्रथमा ।

१२ २२११२ ३२
पवमानस्यतेवयम्पवित्रमभ्युन्दतः ।
२ १ २८
सखित्वमावृणीमहे ॥ १ ॥ ‡

हे सोम ! "पवित्रम् अभ्युन्दतः" पवित्रमभिदयतः ¶ "पवमानस्य" क्षरतस्य "ते" तव "सखित्वं" सख्यं वयम् अमहीयवः आङ्गिरसाः स्तोतारः "आ वृणीमहे" प्रार्थयामहे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१२३१२२१ २ ३ १२ २१ २
येतेपवित्रमूमयोभिक्षरन्तिधारया ।
१ २
तेभिर्नःसोमम्मृडय ॥ २ ॥ §

हे सोम ! "ते" तव "ये" ऊर्मयः तरङ्गाः ‖ "पवित्र"

---

*,† 'उ, सु—इति द्वावपि पदपूरणौ,—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, १८, ४ ।

¶ 'अभ्युन्दतः—आर्द्रं कुर्वन्—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, १८, ५ ।

‖ 'ऊर्मयः—लहरीयाः, सोमसङ्घाताः —इति वि० ।

"धारया" "अभि क्षरन्ति" तेभिः तैः ऊर्मिभिः "नः" अस्मान् "मृड़य" सुखय ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १८ २८ १ २ २ १ १ २ १ २

सनःपुनानआभररयिंवीरवतीमिषम्।

१ २ ३ १ २

ईशानःसोमविश्वतः ॥ ३ * ॥ ५

हे सोम ! "विश्वतः" सर्वस्य जगतः "ईशानः" ईश्वरः "सः" अभिषुतः "पुनानः" पूयमानः त्वं "नः" अस्मभ्यं "रयिं" धनं "वीरवतीं" पुत्राद्युपेतम् "इषम्" † तम् "आभर" आहर ॥ ३ ॥ ५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य तृतीयस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः ‡ ॥ १ ॥

———000———

* ऋ० वे० ७, १, १९, १।

† 'इषं—इष्टिमन्नं वा—इति वि०।

‡ 'उन्नं वर्द्धिष्यमाणम्'—इति वि०।

अथ द्वितीयखण्डे *—

प्रथमतृचे—प्रथमा।

२ २ २१ २ १ २ २१२
अग्निन्दुतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदसम्।
२ २३१२ २१२
अस्ययज्ञस्यसुक्रतुम्॥ १॥ †

[अग्नेर्दूतत्वमेतन्मन्त्रव्याख्याने तैत्तिरीयब्राह्मणे समाम्नायते—'अग्निर्देवानां दूत आसीदुशनाकाव्योऽसुराणाम्'—इति] तादृशं देवं "दूतम्" अग्निम् अस्मिन् कर्म्मणि हवीमहे भजामः। कीदृशं "होतारं" देवानामाह्वातारं "विश्ववेदसं" सर्वधनोपेतं [बहुव्रीहौ विश्वं सञ्ज्ञायाम् (६, २, १०६)"—इति पूर्वपदान्तोदात्तत्वम्] "अस्य" प्रवर्त्तमानस्य यज्ञस्य निदानत्वेन "सुक्रतु" शोभन-कर्माणं शोभन-प्रज्ञं वा॥ १॥

अथ द्वितीया।

२१२ २ १२ २१२ ३ १२
अग्निमग्निꣳहवीमभिःसदाहवन्तविश्पतिम्।
३ १२ ३२
हव्यवाहम्पुरुप्रियम्॥ २॥ ‡

---

* 'हवामीमाख्यानि'—इति वि०।

† ह० मा० १, १, १, २ (१भा० ९७ पृ०) = ऋ० वे० १, १, २१, १।

‡ ऋ० वे० १, १, २२, २।

[यद्यप्यग्निः स्वरूपेणैक एव तथापि प्रयोगभेदादाहवनीयादिस्थानभेदाद्वा बहुविधत्वमभिप्रेत्य] "अग्निम्-अग्निम्"—इति वीप्सा तं "हवीमभिः" आह्वानकरणैर्मन्त्रैः "सदा हवन्त" निरन्तरमनुष्ठातार आह्वयन्ति *। कीदृशम्? "विश्पतिं" विशां प्रजानां होत्रादीनां पालकं "हव्यवाहं" यजमान-समर्पितस्य हविषः देवान् प्रति वोढारम् अतएव "पुरुप्रियं" बहूनां देवानां प्रीत्यास्पदम्॥ [अग्निमग्निम्—"नित्यवीप्सयोः (८, १, ४)"—इति वीप्सायां द्विर्भावः; "तस्य परमाम्रेडितम् (८, १,२)"—इत्युत्तरस्य आम्रेडित-संज्ञायाम् "अनुदात्तञ्च (८, १, ३)"—इत्यनुदात्तत्वम्। हवीमभिः—'ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०, उभ०); आह्वानकरणभूतेषु मन्त्रेषु स्वव्यापार-स्वातन्त्र्यात् कर्तृत्वविवक्षया "अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते (३, २, ७५)"—इति कर्तरि मनिन्; तस्य छान्दस ईड़ागमः; बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति धातोः सम्प्रसारणम्; पर-पूर्वत्वं; गुणावादेशौ; नित्त्वादाद्युदात्तत्वं (६, १, १८)। सदा—"सर्वैकान्येत्यादिना (५, ३, १५)" सर्वशब्दाद्दाप्रत्ययः "सर्वस्य सोऽन्यतरस्याम् (५, ३, ६)"—इति सभावः; व्यत्ययेनाद्युदात्तत्वम् (३, १, ८५)। हवन्त—ह्वेञो लट् झस्य अन्तादेशः (७,१,३); टेरेभावश्छान्दसः (६, ४, ७६) अपि "बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"—इति सम्प्रसारणम्; "तिङ-

---

* 'हवीमभिः—होतव्यैः सदा हवन्तः आह्वयन्तः; यानि होतव्यानि हवींषि, तैः पुरतोऽवस्थितैः सदाह्वयन्त इति वि०।

तिङः (८, १, २८)"—इति निघातः। विश्पतिं—"पत्यावैश्वर्ये (६, २, १८)"—इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरे प्राप्ते, "पराद्यिश्छन्दसि (६, २, १९९)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्। हव्यवाहम्—'वह प्रापणे (भ्वा०, उभ०), "वहश्च (३, २, ६४)"—इति णिव प्रत्ययः ; कृदुत्तरप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १३९)। पुरूणां प्रियं—समासान्तोदात्तत्वम् (८, १, २२३) ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ १ २ ३ १ २ ४ २ ३ १ २
अग्नेदेवाꣳइहावहजज्ञानोवृक्तबर्हिषे।
२ ३ १ १ २ १ २
असिहोतानईड्यः ॥ ३ * ॥ ६ †

हे "अग्ने !" "जज्ञानः"‡ अरण्योरुत्पन्नः त्वं "वृक्तबर्हिषे" आस्तरणार्थं छिन्नेन बर्हिषा युक्ताय। तं 'यजमान मनुग्रहीतुम् "इह" कर्मणि हविर्भुजो देवानाह—"नः" अस्मदर्थं "होता" देवानामाह्वाता त्वम् "ईड्योसि" स्तुत्यो भवसि ॥ ३ ॥ ६

द्वितीयतृचेऽग्न—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मित्रंवयꣳहवामहेवरुणꣳसोमपीतये।
२ ३ २ ३ १ २
याजातापूतदक्षसा ॥ १ ॥ §

* ऋ० वे० १, १. २२. ३। † "आग्नेय माज्यमुक्थम्"—इति वि०।
‡ 'जज्ञानः—जायमानः. अथवा यजमानः'—इति वि०।
¶ 'इदानीं मैत्रावरुणमृच्यते—इति वि० आज्यमिति शेषः।
§ य० वे० ३३, ४९=ऋ० वे० १, २. ८. ४।

"वयम्" अनुष्ठातारः "सोमपीतये" * सोमपानार्थं ["दासीभारादित्वात् पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्] "मित्र" "वरुण" च उभावाह्वयामः। कीदृशावुभौ ? "या जाता" यौ जातौ सन्तौ प्रदेशं प्रादुर्भवन्तौ, "पूतदक्षसा" शुद्धबलौ †। [पूञ् पवने (क्रया०, उभ०) ; "निष्ठा (३, २, १०२)"—इति क्तः, स्युकः किति (७, २, ११)"—इति इट् प्रतिषेधः। पूतं दक्षो ययोस्तौ "बहुव्रीहौ प्रकृत्या (६, २, १)"—इति पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम् ॥

"याजाता"-"जज्ञाना"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ २ १ १ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ऋतेनयावृतावृधावृतस्यज्योतिषस्पती।

२ ३ १ २ २
तामित्रावरुणाहुवे ॥ २ ‡ ॥

"यौ" मित्रावरुणौ "ऋतेन" सत्यवचनेन¶ यजमानानुग्रह-कारिणा "ऋतावृधौ" ऋतमवश्यम्भावितया सत्यं कर्मफलं तस्य वर्द्धकौ "ऋतस्य" सत्यस्य प्रशस्तस्य "ज्योतिषः" प्रकाशस्य "पती" पालकौ § [श्रुत्यन्तरे मित्रावरुणयोरदिति-पुत्रत्वेन श्रुतत्वात्

* "मन्त्रे घसह्वरणशवृदहादृचः कृगमिजनिभ्यो ले:"—इति पा० २। ३। ६६।

† "पूतदक्षौ—पूतत्वेन दक्षत्वेन च सम्पन्नौ"—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, २, ८, ५।

¶ "ऋतेन—यज्ञेन—इति वि०।

§ "ज्योतिषः नक्षत्रजातस्य ज्योतिष्टोमस्य वा पती"—इति वि०।

दादयादित्येष्वन्तर्भूतत्वेन ज्योतिषः पालकत्वं युक्तम्, श्रुत्यन्तरे च अष्टौ पुत्रासो अदितेरित्युपक्रम्य मित्रश्च वरुणश्चेत्यादिकमाम्नातम् तौ मित्रावरुणौ। तथाविधैर्मित्रावरुणैः "सुपां सुलुगिति (७, १, ३९) पूर्वसवर्णदीर्घ आकारः] "हुवे" आह्वयामि। [ह्वेञ आत्मनेपदोत्तमपुरुषैकवचने सम्प्रसारणे (६, १, ३४) पूर्वरूपत्वे च (६, १, १०८) "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति श्लपोलुक्; टेरित्त्वम् (२, ४, ३९); "गुणे प्राप्ते "क्ङिति च (१,१,५)"—इति प्रतिषेधः; उवङादेशः (६, ४, ७७); "तिङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातः॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ २ १र २र ३ १ १
वरुणःप्राविताभुवन्मित्रोविश्वाभिरूतिभिः।

१ २ ३ १ १
करतान्नःसुराधसः॥ ३ *॥ ७

अयं "वरुणः" देवः अस्माकं "प्राविता भुवत्" प्रकर्षेण रक्षको भवतु। "मित्रः" च "विश्वाभिः ऊतिभिः" सर्वाभिः प्राविता भुवत्। तावुभावपि "नः" अस्मान् "सुराधसः" प्रभूतधनयुक्तान् "करतां" कुरुताम्। [डुकृञ् करणे (उभ०) भौवादिकः, लोटस्तस्, तसस्ताम्, अकर्त्तरि शप्, गुणोरपरत्वम्,

* ऋ० वे० १, २, ८, ६।

ग्पः पित्त्वादनुदात्तत्वम् (२, १, ४); तिङश्च लसार्वधातुक-स्वरेण (६, १, १८६) धातुस्वरं (६,१, १६२) शिष्यते ॥३॥ ७

इन्द्रमिन्नाथिनइति चतुर्ऋचं तृतीयं सूक्तम् *,

तत्र प्रथमा।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रमिन्नाथिनोबृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः।
२ ३ १ २
इन्द्रंवाणीरनूषत ॥ १ † ॥

"गाथिनः" गीयमान-सामयुक्ता उद्गातारः "इन्द्रमित्" इन्द्रमेव "बृहत्" "त्वामिद्धवामहे (क्षु० आ० ३, १, ५, २)" —इत्यस्यामृच्युत्पन्नेन बृहन्नामकेन (आ० गा० १, १, २७) सान्ना "अनूषत" स्तुतवन्तः। [णु स्तुतौ (तु०, प०); "णो नः (६, १, ६५)"—इति नत्वम्; स्तुङि व्यत्ययेनात्मनेपदम् (३, १, ८५); झस्य अदादेशः (७, १, ५); सिच इड्भावः उकारस्य दीर्घत्वं छान्दसम् (६, १, १३३); धातोः कुटादित्वात् सिचो ङित्त्वेन (१, २, १) गुणाभावः (१, १, ५)] "अर्किणः" अर्चन-हेतु-मन्त्रोपेता होतारः "अर्केभिः" उक्थ-रूपैर्मन्त्रैरनूषत। ये त्ववशिष्टा अध्वर्यवः ते "वाणीः" वाग्भिः" यजूरूपाभिः इन्द्रम् अनूषत [अर्कस्य मन्त्रपरत्वं यास्केनोक्तम् (५, ४) 'अर्कोमन्त्रोयदनेनार्चन्तीति'] ॥ १ ॥

* 'ऐन्द्रमाग्नेयमिदं'—इति वि०।

† ऋ० आ० ३, १. १, ५ (१भा० ४१० पृ०) = ऋ० वे० १, १, १३, १।

अथ द्वितीया।

१ २२७ २ २ २ १ २ ३ १ २ ३ १ १
इन्द्रद्धर्य्योस्सचासम्मिश्लआवचोयुजा।

१ २ १ १ १ ३ १ १
इन्द्रोवज्रीहिरण्ययः ॥ २ * ॥

"इन्द्रद्धत्" इन्द्रएव "हर्य्योः" हरिनामकयोरश्वयोः "सचा" सह युगपत् "आ सम्मिश्लः" सर्वतः सम्यक् मिश्रयिता। कीदृशयोर्हर्य्योः? "वचोयुजा" इन्द्रस्य वचनमात्रेण रथे युज्यमानयोः सुशिक्षितयोरित्यर्थः। अयम् "इन्द्रः" "वज्री" वज्रयुक्तः "हिरण्यय" सर्वाभरणभूषितइत्यर्थः ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रवाजेषुनोवसहस्रप्रधनेषुच।

३१ ३१ २ २ १ २
उग्रउग्राभिरूतिभिः ॥ २ † ॥

हे "इन्द्र!" "उग्रः" शत्रुभिरप्रधृष्यः त्वम् "उग्राभिः" अप्रधृष्याभिः "ऊतिभिः" अस्मद्द्वेष्यपरपक्षाभिः "वाजेषु" युद्धेषु "नः" अस्मान् "अव" रक्ष। तथा "सहस्रप्रधनेषु च" सहस्र-सङ्ख्याक-गजाश्वादि-लाभयुक्तेषु महायुद्धेष्वपि रक्ष ॥ २ ॥

---

* ऋ० आ० प० १, २, २ (२भा० २६० पृ०) = ऋ० वे० १, १, १३, २।

† ऋ० आ० प० १, २, ४ (२भा० २६० पृ०) = ऋ० वे० १, १, १३, ३।

अथ चतुर्थी।

१ २ ३ २ ३ १ १ ३ १८ १२ २१
इन्द्रोदीर्घायचक्षसआसूर्यꣳरोहयद्दिवि।

२७ २१ ३
विगोभिरद्रिमैरयत्॥ ४ *॥ ८ †

अयम् "इन्द्रः" "दीर्घाय" प्रौढाय निरन्तराय "चक्षसे" दर्शनाय "दिवि" द्युलोके "सूर्यमारोहयत्" पुरा हत्वासुरेण जगति यदापादितं तमस्तन्निवारणेन प्राणिनां दृष्टिसिध्यर्थम् आदित्यं द्युलोके स्थापितवानित्यर्थः। स च सूर्य्यः "गोभिः" स्वकीय-रश्मिभिः "अद्रिम्" मेघम् "व्यैरयन्" विशेषेण दर्शनार्थं प्रेरितवान् प्रकाशितवानित्यर्थः[अथवा इन्द्रएव "गोभिः" जलैर्निमित्तभूतैः "अद्रिं" मेघं "व्यैरयन्" विशेषेण प्रेरितवान्। पञ्चदश-सङ्ख्याकेषु रश्मि-नामसु 'खेदयः' (१) 'किरणाः' (२) 'गावः' (३)—इति पठन्ति (निघ० १, ५); विंशतिसङ्ख्याकेषु मेघनामसु 'अद्रिः'(१) 'गावा'(२)—इति पठितम् (निघ० १, १०)॥ ४॥ ८

---

* ऋ० मं० १, १, १३, ४।

† 'इदानीमैन्द्राग्नभाज्यम्'—इति वि०।

अथ तृचात्मके चतुर्थसूक्ते—

प्रथमा।

१ २ ३ १र २र २१ १ २ १र २र

इन्द्रेअग्नानमोबृहत्सुवृक्तिमेरयामहे।

१ १र २र ३१२

धियाधेनाअवस्यवः॥ १ *॥

"अवस्यवः" रक्षणकामाः वयम् "इन्द्रे" देवे "अग्ना" अग्नौ च "बृहत्" महत्† "नमः" हविर्लक्षणमन्नं ‡ "सुवृक्तिं" सुप्रवृत्तां स्तुतिञ्च ¶ "आदीरयामहे" प्रेरयामः। तथाच "धिया" कर्मणा युक्ता § "धेनाः" ‖ [वाङ्नामैतत् (निघ० १, ११, ३८)] स्तुतिरूपा वाचश्च अभिप्रेरयामः॥ १॥

अथ द्वितीया।

१र २र१२ ३ १र २र ३१२

नाहिप्रभ्वन्तईडतइत्थाविप्रामऊतये।

३ २ १ १ १

सबाधावाजसातय॥ २ **॥

---

* ऋ० वे० ५, ६, १७, ४।

† 'बृहत्—महत्'—इति वि०।

‡ 'नमः—नमस्कारम्'—इति वि०।

¶ 'सुवृक्तिं—शोभनां वृक्तिं वरणम्'—इति वि०।

§ 'धिया बुद्ध्या'—इति वि०। "धीः"—इति कर्मनामसु निघण्टौ एकविंशतिनमं पदम् (२, १)।

‖ 'धेनाः—धेट् पाने (भ्वा० प०), पानधर्माः'—इति वि०।

** ऋ० वे० ५, ६, १७, ५।

"ता हि" तौ खलु * इन्द्राग्नी "यज्ञमन्तः" बहवः "विप्रासः" मेधाविनः जनाः "ऊतये" रक्षणाय "इत्थम्" अनेन प्रकारेण "ईड़ते" स्तुवन्ति। तथा "सबाधः" समानं परस्परं बाध्यमाना जनाः "वाजसातये" अन्नसातये अन्नलाभाय ताविन्द्राग्नी ईड़ते। यद्वा 'वाजसातिः'—इति सङ्ग्रामनाम (निघ० २, १७, ३६) सङ्ग्रामार्थम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २१२३१२
तावाङ्गीर्भिर्विपन्यवःप्रयस्वन्तोहवामहे।

३१२ ३१२
मेधसातासनिष्यवः ॥ २ † ॥ ९

"विपन्यवः" स्तोत्रमिच्छन्तः "प्रयस्वन्तः" हविर्लक्षणेनान्वे-नोपेताः ‡ "सनिष्यवः" सनिं धनमात्मन इच्छन्तः वयं "मेध-साता" मेधानां यागानां ¶ "सातौ" सम्भजने निमित्तभूते

---

* 'द्यौति यस्मादर्थे'—इति वि०।

† ऋ० वे० ५, ६, १०, ६।

‡ 'प्रयस्वन्तः—प्रकर्षेण यजमानम् ऋत्विजम् प्रति गच्छन्तः'—इति वि०।

¶ "मेधः"—इति निघण्टौ यज्ञनामसु चतुर्थं पदम् (३, १७)।

सति हे इन्द्राग्नी ! "ता" तौ "वां" युवां "गीर्भिः" स्तुतिभिः "हवामहे" ॥

"विपन्यवः"-"विपन्यवे"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ ९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः * ॥ २ ॥

वृषापवस्वेति तृतीयखण्डे †—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

१ १ ३ १२ ३ १ १ ३ १
वृषापवस्वधारयामरुत्वतेचमत्सरः ।
२ १ १ १ १ १ १
विश्वादधानओजसा ॥ १ ‡ ॥

हे सोम ! त्वं "वृषा" स्तोतृणामभिमत-फलस्य वर्षकः सन् "धारया" त्वदीयया "पवस्व" द्रोणकलशमागच्छ [पवतिर्गतिकर्मा (निघ० २, १४, १०८) जागतस्त्वं यदा अस्माभिः इन्द्राय दीयसे तदा "मरुत्वते" सहाया मरुतो यस्य सन्ति तस्मै इन्द्राय "मत्सरः" मदकरश्च भव । कीदृशः ? "विश्वा" विश्वानि सर्वाणि व्याप्तानि वा धनानि "ओजसा" आत्मीयेन बलेन

---

* 'उक्तं प्रातःसवनम्'—इति वि० ।

† 'इदानीं माध्यन्दिनं सवनमभिधीयते'—इति वि० ।

‡ ऋ० आ० ५, २, ४, ३ (२मा० १०ऋ०) ऋ० वे० ७, १, २, ४ ।

युक्तः सन् स्तोतृभ्यः तानि "दधानः" प्रयच्छंस्त्वं मादयिता भवेति समन्वयः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३ २ १ २ २ १ २
तञ्चाधर्त्तारमोण्योऽ३ऽध्यवमानꣳसदृङ्ङम्।

३ १ २ २ १ १
हिन्वेवाजेषुवाजिनम्॥ २ * ॥

हे "पवमान" पूयमान पुनान वा सोम! "ओण्योः" [द्यावापृथिवी नामैतत् (निघ० ४, ३०, १५)] तयोः "धर्त्तारं" धारकम् अतएव "सदृङ्ङं" सर्वस्य सूर्यवद् द्रष्टारं, सर्वैर्दृष्टव्यं वा। "वाजिनं" बलवन्तं तं पूर्वोक्तगुणं प्रसिद्धञ्च "त्वा" त्वां "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु त्वां प्रेरयामि [यद्वा "वाजेषु" विषयेषु प्रेरयामि, अन्नादिकं प्रयच्छेत्यर्थः †॥ २॥

अथ तृतीया।

२ २ ३ १ ३ २उ ३ १ १ ३ १ १
अयाचित्तोविपानयाहरिःपवस्वधारया।

२ ३ १ २
युजंवाजेषुचोदय॥ ३ ‡॥ १० ¶॥

---

* ऋ० वे० ७, २, ३, १।

† 'वाजेषु—अन्नेषु। सप्तम्येषा, अधिकरणभूतेषु। वाजिनं अन्नवन्तं वेगवन्तं वा'—इति वि०।

‡ ऋ० वे०७, २, ३, २।

¶ 'इह यौक्ताश्वं साम'—इति वि०। 'यौक्ताश्व-प्रभृतीनि सामानि तेषां नाम्नैवार्षप्रतिपत्तिः'—इति च वि०।

हे "पवमान" सोम ! "अया" * [अय पय गतौ (भ्वा०, आ०) पचाद्यच् (२, १, १२४), इतौयाया आकारः (७, १, ३९)] कर्मार्थमितस्ततो गच्छन्तीभिः "विपा" [विप प्रेरणे (चु०, उभ०) हवींष्यग्नौ प्रेरयन्तीति विपा अङ्गुलयः । एकवचनं छान्दसं प्रत्येक-विवक्षया वा] एताभिर्मदीयाभिरङ्गुलिभिः "चितः" ज्ञातः निर्गतः अभिषुतः "हरिः" हरितवर्णः त्वं "धारया" सन्ततया "पवस्व" द्रोणकलशं महांश्च गच्छ । किञ्च "युजं" † सखायम् इन्द्रं "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु ‡ "चोदय" प्रेरय । यदास्माभिरिन्द्रार्थं सोमा दीयन्ते तदानीमिन्द्रः स्तुत्यानेन हृष्टः सन् शत्रून् हन्तीत्यर्थः ॥ ३ ॥ १०

॥ यौक्ताश्वम् ॥ औहोहोहायि । वृषा । पवस्वा३ धारायाऽ३ । मारुऽरुत्वा२३४तायि । ओयि । चमां२३ । चमारुत्सा२३४राः । औहोहोहायि । विश्वा । दधा२ ना२३४ओ । जासा२३४औहोवा ॥(१) औहोहोहायि । तन्त्वा । धर्त्तारा३मोणायोऽः । पावा२ मा २ ३ ४ ना ।

---

* 'अया—अनया धिया विश्वस्य पालयित्र्या'—इति वि० ।

† 'युजं—योक्तृम्'—इति वि० ।

‡ 'वाजेषु—अन्नेषु'—इति वि० ।

ओयि । स्तुवा२३ । स्तुवा२ह्वं२३४शाम् । औहोहोवा

यि । हिन्वायि । वाजा२यिषू२३४वा । जायिना२३४

औहोवा ॥(२) औहोहोहायि । अया । चित्तोवी३पा

नाया३ । हारा२यिः । पा२३४वा । ओ । स्वधा२३ ।

स्वधा२रा२३४या । औहोहोहायि । युजाम् । वाजा२यि

षू२३४चो । दाया२३४औहोवा । ओयि । ज्वर

आ(३) ॥ १८ * ॥ [१]

॥ सन्तनि ॥ वृषाहाउ । पावस्वधा३१उवा२३ । रा

२३४या । मरुत्वतेचमत्सरा१: । विश्वाहाउ । दाधान

ओ३आउवा२३ । जा२३४सा ॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमोण्योः

पवमानस्तुवर्ह्वा२३४५म् । हिन्वेहाउ । वाजेषुवा३

१उवा२३ । जा२३४यिनाम् ॥(२) अयाचित्तोविपानया

---

* ऋ० गा० १म० २ऋ० १९सा० ।

१ १ १ २ १ १ १ १ १ १ २ १ १
हरिःपवस्वधारया२३४५। युजाण्ऽहाउ। वाजेषुचोऽया

५
उवा२३। दा२३४या(३) ॥ १ * ॥ [२]

२ १ १ १ २ १ ५
॥ ऐडसौपर्णम् ॥ वृषापवोवा। स्वाधारा२३४या।

१ १ २ १ ० १ ५ १
मरुत्वतायि। चमा२त्मा२३४राः। वा२यिश्वा। दा२.

२ १ २ १ २ ४ ५ १ २ १ २
३धा। नाभोजसा। औ३ह्होवा ॥(१) तन्त्वाधर्तोवा।

१ २ १ ५ २ १ २ १ ७ ३ ५
रामोणा२३४योः। पवामाना। सुवा२र्ऽ२३४ग्राम्।

२ १ २ १ ४ ५
दा२यिन्वे। वा२३जायि। षूवाजिनाम्। औ३ह्होवा ॥(२)

१ २ १ १ १ २ ३ ५ १ १ १ १
अयाचिष्टोवा। वायिपा२३४या। हरायिःपवा।

७ ३ ५ १ २ १ २ १
स्वधा२रा२३४या। यू२जाम्। वा२३जायि। षूचोदया।

२ ४ ५ ४
औ३ह्होवा। ह्वोषूई। डा(३) ॥ २ † ॥ [३]

१ १ २ १ १ १ २
॥ रोहितकुलीयोत्तरम् ॥ वृषाँपवस्वधा। रया२।

१ २ १ १ २ १ १ २ २
मरुत्वतेचमत्मा२३राः। वायिश्वा२दाधा२३। नभ्रो२३४

* ऊ० गा० ४प्र० १अ० १खा०। † ऊ० गा० ४प्र० १अ० २खा०।

५ ४ ५ १ २ २१२१ २
वा। जाऽसोऽच्छायि ॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमो। णियो

१ २ २१ २ १ १
२:। पवमानसुवर्ह्२३शाम्। हायिन्वे२वाजा२३यि।

२१ ५ ४ ५ २१२ २ १ १
षुवो२३४वा। जाऽयिनोऽच्छायि ॥(२) अयाचित्तोविपा।

२ १ २१२ २ १ १
नया२। हरिःपवस्वधारा२३या। यूजा२वाजा२३यि।

२ १ ५ ४ ५
षुचो२३४वा। दाऽयोऽच्छायि(३) ॥ ३ * ॥[४]

५ २ १ ४ ५२ २१ २
॥ आमच्छीयवम् ॥ वृषोपा३वस्वधारया। मरुत्वा१

२ १२ २ १ २
जा२यि। यमा२३त्मराः। विश्वादधा। नओ२३जसा

५ २ २ ४२ ५२ २ १
उ। वा३ ॥(१) तन्त्वाधा३र्त्तारमोणियोः। पवामा१

१ २ १२ २ १ १
ना२। सुवा२३र्हंशाम्। हिन्ववाजायि। षुवा २ ३

२ ५ २ ४२ ५२ २ १
जिनाउ। वा३ ॥(२) अयाचा३यित्तोविपानया। च्छरा

२ १ २ १ २ १
यिःपा१वा२। स्वधा२३रया। युजंवाजायि। षुचो२

२ २२ १ १ १ २
३दयाउ। वा३। स्तौषे२३४५(३) ॥ १ † ॥ [५]

---

* ऊ० गा० ४प्र० १ष० ३सा०। † ऊ० गा० ६प्र० २ष० १सा०।

॥ हाविष्मतम् ॥ हाउवृषापवस्वधारयाहाउ। मरु

त्वताइयि। चामत्सा२३४राः। ऐ२ह्वो१आ २ ३ यिह्वी।

विश्वादाइधा। नओ। जा २ सा २ ३ ४ औह्वोवा ॥(१)

ह्वाउतन्त्वाधर्त्तारमोण्योर्ह्वाउ। पवमानाइ। सूवर्ह २३

४ग्राम्। ऐ२ह्वो१आ२३यिह्वी। हिन्वेवाइजायि। षु

वा। जा२यिना२३४औह्वोवा ॥(२) ह्वावयाचित्तीविपान

याह्वाउ। हरिःपवाइ। स्वाधारा२३४या। ऐ२ह्वो१आ

२३यिह्वी। युजांवाइजायि। षुचो। दा२या२३४औह्वो

वा। ह्वविष्मते२३४५(३) ॥ १ * ॥ [६]

॥ यौक्ताश्वोत्तरम् ॥ वृषाऔह्वोह्वोह्वायि। पवा ३

स्वाधा१रायाइ। मारु२त्वा२३४तायि। चमाइ। ओयि।

चमा२त्सा२३४राः। विश्वाऔह्वोह्वोह्वायि। दधा२ना

---

* ऋ० मा० ७अ० १ख० १सा०।

५ १ ३ ५ ४ ४ २ ४ ४ १
२३४ओ । जा२सा२३४ओहोवा ॥(१) तन्त्वाओहोहो

२ २ १ २ २ १ ३ ५
हायि । धर्त्ता३रामो१णायो३: । पावा२मा२३४ना ।

३ २ १ ७ १ ५ २ ४ ४ १
सुवा३ । ओयि । सुवा२र्हं २३४शाम् । हिन्वाओहो

२ १ २ ३ ५ १ ३ ५ ४ ४
होहायि । वाजा२यिषू२३४वा । जा२यिना२३४ओहो

४ ४ १ २ ४ ५ १ २
वा ॥(२) अयाओहोहोहायि । चित्ता३वायिपा१ना

२ १ २ ५ २ १ ७
या३ । हारा२यि:पा२३४वा । स्वधा३ । ओ । स्वधा

३ ५ ४ ४ १ २ १ २
२रा२३४या । युजाओहोहोहायि । वाजा२यिषू२३४

५ १ ३ ५ ४ २ २
चो । दा२या२३४ओहोवा । ओयि । जू२३४

५
वा(३) ॥ २ * ॥ [७]

१ २ १ २ १
॥ आजिगम् ॥ वृषापावा । स्वधाराया । मरुत्व

१ ७ २ १ २ १ २
ते । चामत्सा२३रा: । विश्वादाधा । नओजा२३सा३

१ २ १ २ १ २ १ ७
४३ ॥(१) तन्त्वाधार्त्ता । रमोणायो: । पवमान । स्व

---

* ऋ० गा० ७म० १अ० २सा० ।

१ २ १२ २
ह्ँ२३शाम्। हिन्वेवाजायि। षुवाजा२३यिना३४३म्॥(२)

१ २ १ २ १ २ १ २
ऋयाचायिस्तो। विपानाया। हरिःपव। स्वाधा१रा२

२ १ २ १२ २ १
३या। युजांवाजायि। षुचोदा२३या३४३। ओ२३४५

ई। डा(३)॥ १४ *॥ [८]

२ २ २ ४३ ४२५
॥ स्वारसौपर्णम्॥ वृषापवस्वधारा३या। मरुत्वतेच्च

२ १ ३ ५ १ २ २ १२
मा। ङम्। त्सा२३४रा:। वायिश्वा३उवा। दधा।

२ १ ५ ४ ५ २ २ २ २
नओ२३४वा। जा५सोई्हायि॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमोणा

२ ३४५२ २ १ ३ ५ १
३या३योः। पवमानस्तुवा। ङम्। ह२३४शास्। हायि

० २ २१२ २१ ५ ४ ५
न्वा३उवा। वाजे। षुवो२३४वा। जा५यिनोई्हायि॥(२)

२ २ २ २ ३४ ३४५२ १ ३
ऋयाचित्तोविपाना३र्या। हरिःपवस्वधा। ङम्। रा२

५ १२ २ २१२ २१ ५ ४
३४या। यूजा३उवा। वाजे। षुचो२३४वा। दा५

५
योई्हायि(३)॥ १५ †॥ [९]

---

* उ० गा० ११प्र० २ख० १४सा०। † ऊ० गा० ११प्र० २ख० १५सा०।

॥ सुरूपोत्तरम् ॥ वृषापवौहो२ । इया । स्वधारा
या२ । मरुत्वतौहो२ । इया । चमत्सारा२: । विश्वा
दधौहो२ । इया । नओजा२३सा३ ४ ३ ॥(१) तन्त्वा
धत्ताहो२ । इया । रमाणायो२: । पवमानौहो२ ।
इया । सुवर्ग्या२म । हिन्वेवाजौहो२ । इया । षु
वाजा२३यिना ३ ४ ३म् ॥(२) अयाचित्तौहो२ । इया ।
विपानाया२ । हरिःपवौहो२ । इया । स्वधाराया२ ।
युजंवाजौहो२ । इया । षुचोदा२३या३४३ । ओ २ ३
४५ई । डा(३) ॥ १८ * ॥ [१०]

॥ सुरभःपावमानम् ॥ हाहाउवृषापवा । हा३ । हा
इयि । स्वाधा२रा २ ३ ४ या । मरुत्वतेचमा१त्सा३रा: ।
विश्वादा२३४धा । ओमो३ । नओवा । जापुसोई३हा

---

* ऊ० गा० १८प्र० १अ० १८सा०

१ ३ ५ १ २ २ २ १
बि ॥(१) रामो२णा२३४योः। पवमानसुवा१र्द२ग्राम्।

२ ३ ५ १ २ ४ ५ ४
ह्विन्ववा२३४जायि। ओमो३। षुवोवा। आप्ययिनो६

५ २२ २ २ २ १
हायिं ॥(२) हाहावयाचित्ताः। हा३। हाइयि। वा

२ ३ ५ १ २ ५ १ २
यिपा२ना२३४या। हरिःपवस्वधा१राया। युजंवा२३४

५ १ २ ४ ५ ४ ५
जायि। ओमो३। षुचोवा। दाप्ययो६हायि(३)॥१८*॥[११]

१ २२ १ २ १२ २२ १ २२ १
॥ हरिश्रीनिधनम्॥ वृषापवस्वधारया। वृषापवा।

२ १ २ २ १ १ २ ३
स्वधारया२। मरुत्वतेचमाहो२। त्मारा२३:। हाउ

१ २ १२ ३ ५ २ २ ४
वा। विश्वादा२३धा। नओ। जा२सा२३४ओहोवा॥(१)

१ २ १ २ २ १२ २२ १ २२ १ २
तन्त्वाधर्त्तारमोणियोः। तन्त्वाधर्त्ता। रमोणियो२:।

१ २ २ १ १ २ १
पवमानसुवाहो२। हशा२३म्। हाउवा। ह्विन्वेवा

२ १२ २ ५ २ २ १
२३जायि। षुवा। जा२यि। ना२३४ओहोवा॥(२) अ

१२ २ १२ २ १२ २२ १ २२ १ २ १
यात्तोविपानया। अयाचित्ताः। विपानया२। हरिः

---

* ऋ० गा० १८५ऋ० १ख० १९मा०।

२ १ १ २ १ २
पवस्वधाह्हो२। राया२३। ह्हाउवा। युजांवा२३जा

१२ ३ ५ २ २ १ १ १
यि। षुचो। दा२या२३४औह्होवा। ह्हरी३स्त्री२३

१ १
४ ५:(३)॥ १ *॥ [१२]

१ २२ १ २ १२ २ २ १
॥ गौषूक्तम् ॥ वृषापवस्वधौ। हौह्होवाह्हायि। रया।

२ १ १ १
मरुत्वतेचमौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। त्सारा२:। वि

२ २ २ १ १
श्वादधानऔ२। ऊवायि। ऊवा२यि। जासा२३।

१ १ ५२ २ १ २ १ २ १२ २
हो२वा२३४औह्होवा॥(१) तन्त्वाधर्त्तारमौ। ह्हौह्होवा

२ १ २ १
ह्हायि। णियोः। पवमानसुवौ२। ऊवायि। ऊवा२

१ १ २ २ १ १
यि। दृशा२म्। ह्हिन्वेवाजेषुवौ२। ऊवायि। ऊवा

१ १ ३ ५२ २ २ १२
२यि। जासा२३। ह्हो२वा२३४औह्होवा॥(२) अया

२ १२ १ १२ २ २ १ २
चित्तोविपौ। ह्हौह्होवाह्हायि। नया। ह्हरिःपवस्वधौ

१ १ २ २ २
२। ऊवायि। ऊवा२यि। राया२। युजंवाजेष्

---

* ऊ० गा० २०प्र० १अ० १सा०।

१ १ १ १ ३
चौ२। ऊवायि। ऊवा२यि। दाया२३। ह्वा२वा२

५ २ २ १ १ २ १ १ १ १ १
३४औहोवा। अग्निराऊता२३४५:(३) ॥ ६ * ॥ [१३]

१ २ २ १ २ १
॥ श्राकलम् ॥ वृषापवा२स्वधारया। मरुत्वतीचमत्सा

२ १ १ २ १ २ १ २
२३राः। वायिश्वा२। दाधानओ२३। ऊम्। जा३

५ १ २ २ १ २
४ ५ सोऽहायि ॥(१) तन्त्वाधर्त्ता२रमोणियोः। पवमान

२ १ ० १ १ १ २ १
सुवह२ ३ग्राम्। हायिन्वे२। वाजेषुवा २ ३। ऊम्।

२ ५ १ २ २ १
जा३४५यिनोऽहायि ॥(२) अयाचित्ता२विपानया। हरि

२ १२ २ १ १ २ २ १
रिःपवस्वधारा२३या। यूजा२म्। वाजेषुचो२३। ऊम्।

२ ५
दा३४३योऽहायि(३) ॥ १० † ॥ [१४] १०

अथ द्वितीयर्चे—प्रथमा।

२ ३ १ २ २ १ २ ३
वृषाशोणोअभिकनिक्रदद्गा

३ १ २ २ २ ३ २
नदयन्नेषिपृथिवीमुतद्याम्।

---

* ऊ० गा० २१प्र० २अ० ८सा०। † ऊ० गा० २०प्र० २अ० १०सा०।

१ २ ३ १२ २२ ३ १
इन्द्रस्येववग्नुरा शृण्वआजौ
१२ १ २ ३ १ ३ २
प्रचोदयन्नर्षसिवाचमेमाम् ॥ १ * ॥

"शोणः" शोणवर्णः † "वृषा" कश्चिद् वृषभः "गाः" पशून् "अभि" लक्ष्य "कनिक्रदत्" ‡ शब्दं करोति [एवं "गाः" स्तुतीः "अभि कनिक्रदत्" अभिशब्दायमानः]। तदेवाह— "नदयन्" शब्दमुत्पादयन् हे सोम ! त्वं "पृथिवीम्" "उत" अपिच "द्याम्" एतौ लोकौ "एषि" गच्छसि । किञ्च "वग्नुः" [वग्नु वाङ्नामैतत् (निघ० १, ११, २५) तस्य] वाक्सु शब्दः "आजौ" सङ्ग्रामे "इन्द्रस्येव" इन्द्रशब्द इव "शृण्वे" सर्वैः श्रूयते । ततः "प्रचेतयन्" आत्मानं सर्वेषां प्रज्ञापयन् "इमां" "वाचम्" "अर्षसि" समन्तादागमयसि उच्चैः शब्दायत इत्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२२ १ १२३१२
रसाय्यःपयसापिन्वमान
३१२ ३१२२ १ २
ईरयन्नेषिमधुमन्तमꣳशुम् ।

---

* ऋ० वे० ७, ४, १३, १ । † 'शोणः—वज्रवर्णः'—इति वि० ।

‡ "दाधर्त्ति-दर्द्धर्त्ति-दर्द्धर्षि--बोभूतु--तेतिक्ते-ऽलर्क्या--ऽऽपनीफणत्--संसनिष्यदत् कनिक्रत्-कनिक्रदद्-भरिभद्-दरिध्वतो-दविद्युतत्-तरित्रतः—सरीसृपतं—वरीवृजन्. मर्ज्यया-ऽऽगनीगन्तीति च (७, ४, ९५)"—इति पाणिनिस्मरणात् क्रन्दे र्लुङि च्लेरङ्

११ ३१२ ३१
पवमानसन्तनिमेषिक्षण्वन्

१२ ३१२
निन्द्रायसोमपरिषिच्यमानः ॥ २ * ॥

हे सोम ! "रसाय्यः" [रसेरोणादिक आय्य-प्रत्ययः (उ०, ३, ८६)] आस्वाद्यः † "पयसा" "पिन्वमानः" क्षरंस्त्वम् "ईरयन्" "मधुमन्तं" माधुर्योपेतम् "अंशुम्" रसभावम् "एषि" प्राप्नोषि ["अंशुमष्टमात्रो भवति"—इति यास्कः (निरु० ,)]। अनेन सोमरसोऽभिधीयते। किञ्च हे सोम। "परिषिच्यमानः" अद्भिः परिषिक्तो भवंस्त्वं "पवमानः" पवित्रे पूयमानः सन् "सन्तनिं" [तनु विस्तारे (त०, प०) इ-प्रत्ययः] सन्ततां धारां "क्षण्वन्" कुर्वन् "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "एषि" गच्छसि ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२१२ ३१२ २२
एवापवस्वमदिरोमदायो

३१२३१२ ३२
दग्राभस्यनमयन्वधस्नुम् ।

२१२३१२ ३१२
परिवर्णम्भरमाणोरुशन्तं

२१२ २१२ ३२
गव्युर्नीषर्षपरिसोमसिक्तः ॥ ३ * ॥ ११

द्विर्वचनमभ्यासस्य चुत्वाभावो निगागमश्च। लुङ् यास्य "छन्दसि लुङ्-लुङ्-लिटः (३, ४, ६)"—इति धात्वर्थ-सम्बन्धमात्रे सार्वकालिकः।

* ऋ० वे० ७, ४, १३, ४। † 'रसाय्यः—रसवान्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १२, ४।

हे सोम! "मदिरः" मदकरः त्वम् "उदग्राभस्य" * ["क्रिया ग्रहणं कर्त्तव्यम्"—इति कर्मणः सम्प्रदानसञ्ज्ञा। चतुर्थ्यर्थे बहुलमिति षष्ठी] उदग्राभम् उदकग्राहिणं मेघं "नमयन्" हृष्टयर्थं प्रह्वीकुर्वन्। कीदृशम्? "वधस्नुम्"† हन्तबधेन प्रस्रवन्तम् "मदाय" मदार्थमेव "पवस्व" पात्रेषु क्षर। किञ्च "रुशन्तम्" आरोचमानं श्वेतं "वर्ष" "परि भरमाणः" परितो बिभ्रत् "सिक्तः" पवित्रे सिच्यमानः त्वं "गव्ययुः" अस्माकं गा इच्छन् "पर्येषि" परिगच्छ॥

"वधस्नुं"-"वधस्नैः"—इति पाठौ। ३॥११

॥ इक्षवदाग्निष्ठम्॥ औक्षोवाहा ३ क्षोयि। इक्षा।
वृषाग्नीणो। अभिक। निक्रदद्गाः। नदयन्नायि। षौ
३ पृथि। वीमुतद्याम्। इन्द्रस्येवा। वग्नुरा। शृण्व
आजाउ। प्रचोदयान्। अर्षसि। वा३४३। चा३मा
५ यिमा ६५६म्॥(१) रसायियाः। पयसा। पिन्वसा
ना:। ईरयन्नायिषी३मधु। मन्तमꣳशूम्। पवमाना।

---

* 'उदग्राभस्य—उदक-सङ्घातस्य वधस्नुम्, उदकसङ्घातस्य वधः येन क्रियते भवति परिवर्त्तः सोमेन स वधस्नुः'—इति वि०।

† मन्त्रे तु प्रायो वधोऽन्त्यस्यवकारादिर्दृश्यते।

२ १ २ ४ ५ २ १र २ १ २
सन्तनिम्। एषिक्षण्वान्। इन्द्रायसो। मा३परि। षा

२ ४ २र १र १
३४३यि। च्या३मा५ना६५६ः॥(२) एवापवा। स्वा ३

१ २ ३ ४ ५ २ १ र २ १ २ र २
मदि। रोमदाया। उदग्याभा। स्या ३ नम। यन्वध

५ २ १ २ १ र २ ३ ४ ५ २ १र
स्नुम्। परिवर्णाम्। भरमा। णोरुशन्ताम्। ओहो

१ २ १ ३ २ १ र २ १ ४
वा ह्वा३ हो३यि। इह्वा। गव्युर्न्नीआ। षा३परि। सो३

२ ४
४३। मा५सा५यिक्ता६५६ः(३) ॥ २ * ॥ [१]

२ १ २ २ १र २ १
॥ पार्थम् ॥ ओ३हो३ह्वोयि। वृषाशोणो। अभिक।

१ २ ३ ४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ ५
निक्कदङ्गाः। नदयन्नायि। षी३पृथि। वीमुतद्याम्।

२ १र २ १ र २ २ ४ ५ २ र १ २
इन्द्रस्येवा। वग्नुरा। शृण्वञ्राजाउ। प्रचोदयान्। अ

१ २ २ ४ २ र १
र्षसि। वा३४३। च्या३मा ५ यिमा६५६म्॥(१) रसायि

२ १ र १ २ ३ ४ ५ २र १ २ १
याः। पयसा। पिन्वमानाः। ईरयन्नायि। षी३मधु।

१ २ ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५
मन्तमꣳशूम्। पवमाना। सन्तनिम्। एषिक्षण्वान्।

---

* उ० गा० २प्र० १च० ९सा०।

२ २ १ २ १ २ २ ४
इन्द्रायसो । माऽपरि । षाऽ४ऽयि । च्याऽमाऽ५ऽनाऽ६

२ २ ४ १ २ १ २ ३ ४ ५ १
५६: ॥(२) एवापवा । स्वाऽमदि । रोमऽशया । उद

१ २ २ १ २ ३ ५ २ १ २ १
याभा । स्याऽनम । यन्वधस्नूम् । परिषणाम् । भर

२ २ ३ ४ ५ २ १ २ १ २
मा । णोरुशताम् । ओ३ हो३ होयि । गव्युत्रोंआ ।

२ १ २ १ ४
षाऽपरि । सो३ऽ४ऽ । माऽसाऽ५ऽयिक्ताऽ६ऽ५६:(३) ॥ ६* ॥[२]११

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य तृतीयस्याध्यायस्य
तृतीय: खण्ड: † ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ खण्डे ‡ प्रगाथरूपे —

प्रथमसप्तौ—प्रथमा ।

१ २ १ २ २ १ १ २ ३ १ १
त्वामिद्धिहवामहेसातौवाजस्यकारव: ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ ७ ३ १ २
त्वांवृत्रेष्विन्द्रमत्यतिन्नरस्त्वाङ्काष्ठास्वर्वत: ॥ १ ¶ ॥

---

* ऊ० गा० ७प्र० १अ० ६सा० ।

† "उक्तोमाध्यन्दिन:"—इति वि० ।

‡ 'या ज्योतिष्टोमे देवता परिभाषा साम्नां सैवात्रापि"—इति वि० ।

¶ ह० आ० ३, १, ५, २ (१भा० ४८१ पृ०)=ऋ० वे० ४, ७, १७, १ ।

"कारवः" स्तोतारो वयं "वाजस्य" अन्नस्य "सातौ" सम्भजने निमित्तभूते सति, हे "इन्द्र!" "त्वाम् इत् हि" त्वामेव "हवामहे" स्तुतिभिराह्वयामहे। हे इन्द्र! "सत्पतिं" सतां पालयितारं श्रेष्ठं त्वां "नरः" अन्येऽपि मनुष्याः "हव्येषु" आवरकेषु शत्रुषु सत्सु "हवन्ते" आह्वयन्ति, तज्जयार्थम्। अपिच "अर्वतः" अश्वस्य सम्बन्धिनीषु "काष्ठासु" यथा अश्वः काष्ठया तिष्ठति तासु "काष्ठासु" सङ्ग्रामेषु युद्धकामास्त्वामेवाह्वयन्ति, अतो वयं त्वामेवाह्वयाम इत्यर्थः॥

"सातौ"-"साता"—इति पाठो॥ १॥

अथ द्वितीया।

१२।१ ३ २ २१ २ ३ १ २
सत्वन्नश्चित्रवज्रहस्तधृष्णुयामहस्तवानोऽद्रिवः।

१ १८ ३ १२ ३ १ २ ३ १३ ३ २ ३ १ २
गामश्वंरथ्यमिन्द्रसंक्षितंसहावाजंन्नजिग्युषे॥२*॥ १२

हे "चित्र" चायनीय! "वज्रहस्त" वज्रबाहो! "अद्रिवः" वज्रवत्† [यद्वा आदृणात्यनेनेत्यद्रिरयमिन्द्रस्तद्वत्] एवम्भूत हे इन्द्र! "धृष्णुया" धृष्णुः शत्रूणां धर्षयिता‡ "महः" महान्

---

* ऋ० वे० ४, ०, २७, २।

† 'अद्रिवः—वज्रवन्। अथवा अद्रय' पर्वताः। अथवा अभिषवपाषाण'। ते अद्रिव'—इति वि०। अत्र "मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि (८, ३, १)"—इति रुत्वम्।

‡ 'धृष्णुया -धारणशीलया बुद्ध्या प्रज्ञया वा—इति वि०।

म तादृशस्त्वं "स्तवानः" अस्माभिः स्तूयमानः सन् "गाम्" "रथ्य"" रथवाहम् "अश्व"" च "सं किर" सम्यक् प्रयच्छ। "जिग्युषे" जितवते पुरुषाय भोगार्थं "सत्वा" महत् प्रभूतं * "वाजं न" अश्वमिव यथा शत्रून् जितवते भोगार्थं बहु प्रयच्छसि तद्वत् †॥ २॥ १२

॥ वारवन्तीयम्॥ तुवामिद्वाओहोहायि। हावामा२३
५ २ र र र १ ५ १र र
४हायि। सातौवाजस्यकारावो२३४हायि। त्वांवृत्रेषि
१ ४र ४र ५ १ ३ ५ २
न्द्रमत्यतिन्नाश४। ओहोवा। इहा२३४हायि। उरु
१ ५ २१र २र १ ७ १ ४र ४र ५
वांश२३४राः। तुवाङ्का। ष्ठासुअर्वा ३ ४। ओहोवा।
१ ३ ५ ४र २ ५र ५
इहा२३४हायि। ओहो३१२३४। ताः। एह्यावहा।(१)
२ र र र १ २ १ ५
तुवाङ्काओहोहायि। सूअर्वा२३४ताः। सत्वान्ना२ ३ ४
५ १ २ ४र ४र ५ १ ३
हायि। चित्रवज्रहस्तधृष्णू३४। ओहोवा। इहा२३४
५ २ ३ ५ २ १ १ १०र २
हायि। उरुवा२३४या। महस्त। वानोअद्रा ३ ४।

---

* 'सत्वा—सदा'—इति वि०।

† 'वाजम्—अन्नम्। न जिग्युषे—न शब्द उपमार्थीयः, यथा जिग्युषे; गमनशीलाय वणिजि यथा धनमुत्पद्यते तद्वत् त्वमस्मासु देहीत्यर्थः।

३र ४र ५ १ ३ ५ ३र १
औहोवा। इहा २ ३ ४ हायि। औहो३१२३४। वाः।

५र ५ २ र र १ २ १
एहियाइहा ॥(२) महस्तवाऔहोहायि। नोअद्रा२३४

५ २र १ ५ १ १
यिवाः। गामाश्वा२३४इहायि। रथियमिन्द्रसङ्का३४।

३र ४र ५ १ ३ ५ २ ३ र २ १र २र
औहोवा। इहा२३४हायि। उरुवा२३४रा। सत्रावा।

१ ७ २ ३र ४र ५ १ ३ ५ ३र २
जान्नजिग्यू३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो

५र ५ ४
३१२३४। षायि। एहियांइहा। होपूर्ई। डा(३) ॥१ ३*॥[१]

२र र र १ १ २
॥ कण्वबृहत् ॥ औहोतुवामिद्वा३ए। हवामा१हो

३र २ १ र २र र १ २
२३४यि। हाहोयि। सातौवाजस्यकारवः। तुवांवा१

३र २ १ २ १ २
र्वा२३४। हाहोयि। षूइन्द्रसत्। पतायिन्ना१रा२३४ः।

३र २ १ २ ३र २ १ १ १
हाहोयि। तुवाङ्गा१ष्ठा२३४। हाहो। सुआ३। वा

५ ५ २र र र र
२३४ताः। उरुवाइहाउ। वा ॥(१) औहोतुवाङ्गाष्ठा

२ १ २ ३र २ १ १
३ए। सुआर्वा१ता२३४ः। हाहोयि। सात्वन्नृषि। त्र

* ऋ० गा० २२५० १अ० १२मा०।

१ २ ३ २ १ १ ३ २
वाज्रा१हा२३४। हाहो। स्तधाष्णू१या२३४। हाहो

१ १ ३ २ ३ २ १
यि। महास्ता१वा२३४। हाहो। नोआ३। ट्टा२३४

५ ५ ३ २ २ १
यिवाः। उऊवा६हाउ। वा॥(२) औहोमहस्तवां३ए।

२ १ १ ३ २ १ १ १
नोआद्रा१यिवा२३४ः। हाहोयि। गामश्नवम्। रथा

२ ३ २ १ २ ३
यिया१मा२३४। हाहोयि। द्रसाङ्का१यिरा२३४। हा

२ १ २ ३ २ २ ३ २ १
होयि। सत्रावा१जा२३४म्। हाहो। नजा३यि। म्यू

५ ५
२३४षायि। उऊवा६हाउ। वा(३)॥१७*॥[२]१२

अथ द्वितीयसूक्ते प्रगाथे—

प्रथमा।

२ १२ २१३ १ १ ३ १ २ २१२ ३ २
अभिप्रवःसुराधसमिन्द्रमर्च यथाविदे।

१ २ ३ १ २ २१२ ३१२ ३१२ २ १ २
योजरित्भ्योमघवापुरुवसुस्सहस्रेणेवशिक्षति॥१ ॥

„पुरुवसुः" पश्वादिबहुधनोपेतः, यज्ञबाहुल्यात् बहुनि वासको वा "मघवा" धनवान् "यः" इन्द्रः "जरित्भ्यः"

---

* ऊ० गा० २२प्र० १अ० १७सा०।

† ऋ० मा० २, १, ५, २ (१मा० ४८१ पृ०)=ऋ० वे० ६, ४, १४, १।

स्तोतृभ्यः अस्मभ्यं "सहस्रेणेव" सहस्रसङ्ख्याकेन धनेनेव "शिक्षति" [शिक्षतिर्दानकर्मा (निघं० ३, २०, ८)], पश्वादि-बहु-धनम् अस्मभ्यं प्रयच्छतीत्यर्थः। स इन्द्रः "यथाविदे" यथा-स्माभिर्विज्ञायते तथा हे ऋत्विजः! "वः" यूयं "सुराधसं" शोभनधनोपेतम् "इन्द्रम्" ऐश्वर्य्ययुक्तं देवम् "अभि" आभि-मुख्येन "प्र अर्च" प्रकर्षेणार्चत ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ १ २ २ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ २ १ २
शतानीकेवप्रजिगातिधृष्णुयाहन्तिवृत्राणिदाशुषे।

३ १ २ ३ १ २ २ २ १ २ ३ १ २
गिरेरिवप्ररसास्यपिन्विरेदत्राणिपुरुभोजसः॥ २* ॥१३॥

"धृष्णुया" ‡ धृष्णुः धर्षणशीलः पुरुषः "शतानीकेव" यथा शतसङ्ख्याकानि शत्रुसैन्यानि "प्रजिगाति" जयार्थं प्रक-र्षेण गच्छति, तद्वत्; इन्द्रः "दाशुषे" यजमानार्थं "वृत्राणि" यज्ञविघातकान् शत्रून् प्र जिगाति ततस्तान् "हन्ति"। किञ्च "पुरुभोजसः" बहुधनस्य "अस्य" इन्द्रस्य सम्बन्धीनि "दत्राणि" दत्तानि धनानि "प्र पिन्विरे" यजमानार्थं प्रकर्षेण वर्त्तन्ते। तत्र दृष्टान्तः—"गिरेरिव" यथा गिरेः सकाशात् "रसाः" उदकानि पिन्विरे प्रवर्त्तन्ते तद्वत्॥ २ ॥ १३

---

* ऋ० वे० ६, ४, १४, २।

† 'वामदेव्यं, मैत्रावरुणं साम। मैत्र्यं, अत्रिसामं'—इति वि०।

‡ 'धृष्णुया—धारणस्वभावया'—इति वि०।

४ २ ४ ५ २ ६ २ ३२ ४ २ ५
॥ श्यैतम् ॥ अभिप्रवःसुरा। धमा ३ ४ ओहोवा।

१ २ १ ७ ५ ५ १२ २
आयिन्द्रमर्च्च। यथाविदा३३४यि। ओ३ह्वा। योजरि

१ २ १ २ १ ३ ५ २ १ २
तृभ्यः। माघा२३वा। पुरू२। वा२३४सूः। सहस्तेणा

२ २ १ ३ ५ २ २
यिवा३शा। ऊम्मायि। त्वा २ ता २ ३ ४ ओहोवा ॥(१)

४ २ २ ४ २ ५ ३ ३ ३ २ ४ २ ५ १ ३ २ २ १
सहस्तेणेवशि। क्षता३४ओहोवा। सहस्तेणे। वशा

७ ५ ५ २ १ २ २ १
यित्वता२३४यि। ओ३ह्वा। शतानीकेव। प्राजा २ ३

२ १ ३ ५ १ २ २
यिगा। तिधा२। षण् २ ३ ४ या। हन्तिवृत्राणी३दा।

१ २ ४ २ २ ३ ५ ३ २ ४ ५ २
ऊम्मायि। शूरषा२३४ओहोवा ॥(२) हतिवृत्राणिदा।

३ २ ३ २ ४ २ ५ १ २ २ १ ७
शुषा३४ओहोवा। हान्तिवृत्रा। णिदाशुषा२ ३ ४ यि।

५ ५ २ १ २ २ १ २ १
ओ३ह्वा। गिरेरिवप्र। रासा२३आ। स्यपा २ यि।

३ ५ १ २ २ २ १
न्वा२३४यिरायि। दत्राणिशूरा३भो। ऊम्मायि। जा २

३ ४ २ २ २ ५
सा२३४ओहोवा। वा२३४सू(३) ॥ ३* ॥ [१]

---

* ऊ० गा० २प्र० १अ० ३सा०।

॥ अभीवर्त्तः ॥ अभा३यिप्रा३ वःसुराधसोवा। आ
यिन्द्रमर्च। यथावा १ यिदा २यि। योजरितृ३१२३४।
भ्योमघवा। पुरूवा१सू२:। सहास्रे१णा२यि। वज्रा
३यि। त्रा२३४५। जा२३४५यि॥ १) सहा३स्रे३णेव
शिक्षतोवा। सात्वमेणे। वशायित्रा१ता२यि। आता
नीका३१२३४यि। वप्रंजिगा। तिधार्ण्यू१या२। हन्ता
यिवा१र्त्ता २। णिदा ३। भू२३४५। षा२३४५यि॥(२)
हन्ता३यिवा३र्त्ताणिदा३मुषोवा। हान्तिवृत्रा। णिदा३मू
१षा२यि। गायिरे१रिवा३१२३४। प्ररमात्र। स्यपायिन्वा १
यिरा२यि। दत्राणा१यिपू २। रुभो ३। जा२३४५।
सा२३४५:(३)॥ ०॥ [२]

॥ ध्यैवनौधसम्॥ अभिप्रवःसुरा। धमा३४त्रौद्धोवा।

१ १ १ ७ ५ ५ २
आयिन्द्रमर्वा। यथाविदा२३४यि। ओ६ह्वा। यो २ ३
२ १ २ १२ १ १३ ५ १
जा। रीतृभ्यः। मघ। वा। पूरुषा२३४सूः। सा २ ३
२ १ र२ १ ५ ३ ५ ४ ३र ४र५
ष्टा। सेणेवशो२३वा। ष्टा२३४ती ॥(१) सहस्रेणे वशि।
३ २ ७र ४र ५ १ ९र र १ ७
ऋता३४औहोवा। साहस्रेणे। वशायिऋता २ ३ ४ यि।
५ ५ १ २ १र २ १ २ १
ओ६ह्वा। ष्टा२३ता। नोकेव। प्रजि। गा। तायि
२ ३ ५ १ २ १र २ २ ५
धाष्णु२३४या। ह्वा२३न्तायि। वार्त्राणिदो २ ३ ४ वा।
३ ५ ३ ४ ३र ४ ५र ३ २ ७र ४र ५
ष्टु२३४षे ॥(२) हन्तिवृत्राणिदा। ष्टुषा ३ ४ औहोवा।
१ २ र १ ७ ५ ५ १
ह्वान्तिवृत्रा। णिदाष्टुषा२३४यि। ओं६ह्वा। गा२३यि
२ १ २ १ २ १ २ ३ ५
रेः। आयिव। प्रर। साः। आ। स्थापिन्वा२ ३ ४ यिरा
१ २ १ २ १ ५ ३
यि। दा२३त्रा। णायिपुरुभो २ ३ ४ वा। जा २ ३ ४
५
साः(३) ॥ ११ * ॥ [३]

२ १ २ १र
॥ वाङ्निधनं क्रौञ्चम् ॥ अभायिप्रावा३१२३४:। स्तुरा।

* ऊ० गा० २१प्र० १अ० ११सा०।

२ १ २ १ १ २ ५ २ २ ५ २ १
धसाइम्। इन्द्रमर्वा३१२३४। यथा। विदा३यि। योजा

१ २ ४ ५ २ २ २ १ २
रितू३१२३४। भ्योमघवापुरु। वज्र३:। सहस्रे णा३

५ २ १ २ १
१२३यि। वशा५यिच्छताउ ॥(१) सहस्रे णा३१२३४यि।

५ २ १ २ ५ २ १
वशि। च्छता३यि। सहस्रे णा३१२३४यि। वशि। च्छता

२ १ २ ३ ५ ५२ २ १
३यि। शतानीका३१२३४यि। वप्रजिगातिधृ। ष्णु या

२ १ २ ४ २ १
३। हन्तायिवार्चा३१२३। णिदा५म्रुषाउ ॥(२) हन्ता

२ ५२ ३ १ २ १ २
यिवाचा३१२३४। णि। दा। म्रुषा३यि। हन्तिवृंचा

५२ २ २ २ १ २
३१२३४। णिदा। म्रुषा३यि। गिरेरायिवा३१२३४।

२ ४२ ५ २ १ २ १ २ ४
प्ररसाम्रस्यपि। न्विरा३यिद्चाणायिपू३१२३। रुभो५ज

साउ। वा ॥(३) ॥ १५ ॥ [४] १३

---

* ऋ० मा० २१अ० १ ख० ५ सा०।

अथ तृतीयप्रगाथे—

प्रथमा ।

२ ३१२ २२ ३ १ २
त्वामिदाह्योनरोपीप्यन्वज्रिन्भूर्णयः ।

१२३ १ ५ ३२ २१ ३१२३१२
सइन्द्रस्तोमवाहसइहश्रुध्युपस्वसरमागहि ॥ १ * ॥

हे "वज्रिन्" वज्रवन्निन्द्र ! यं "त्वाम्" "भूर्णयः" हविर्भरण-शीलाः "नरः" कर्मणां नेतारो यजमानाः "इदा" अद्य "ह्यः" पूर्वेद्युश्च "अपीप्यन्" सोममपाययन्। हे इन्द्र ! "सः" त्वं "स्तोमवाहसः" स्तोत्रवाहकस्य मम स्तोत्रम् "इह" यज्ञे "श्रुधि" शृणु "सस्वरं" गृहञ्च ["दुर्याः"(९) "स्वसराणि"(१०)—इति (निघ० ३, ४) गृहनामसु पाठात्] "उपागहि" उपागच्छ ॥

"स्तोमवाहसः"—इति छन्दोगाः, "स्तोमवाहसाम्"†—इति बह्वृचाः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मन्त्वासुशिप्रिन्हरिवस्तमोमहेत्वयाभूषन्तिवेधसः ।

२३१२ ३ १ २ २ १ २
तवश्रवाꣳस्युपमान्युक्थ्यासतेषिन्द्रगिर्वणः ॥ २ ‡ ॥ १४

---

* ऋ० सा० ४, १, १, १० (१भा० ६१० ४०) ऋ० वे० ६, ७, ३, १ ।

† अतएव छन्दआर्चिक व्याख्यावसरे 'अस्माकम्'—इति वक्तव्यवचनान्त व्याख्यातम् ।

‡ ऋ० वे० ६, ७, ३, २ ।

हे "सुशिप्रिन्" शोभनहनो ! "हरिवः" हरिनामकाश्वो-पेतः !" "गिर्वणः" गीर्भिर्वननीयेन्द्र ! "त्वया" त्वयि "विधस्तः" परिचारकाः "आ भूषन्ति" * आभवन्ति, "मत्सव" सोमेन मादय आत्मानम् किञ्च "तम्" त्वा वयम् "ईमहे" याचामहे । किं वाच्यम् ? इत्यत्राह—"सूतेषु" सोमेषु अभिषुतेषु सत्सु "तव" "अवांसि" अन्नानि † "उपमानि" उपमानभूतानि, हे "उक्थ्य" प्रशस्य ! ‡ तव प्रसादात् मन्विति ॥

"सशिप्रिन्"-"सशिप्र"—इति पाठौ ॥ २ ॥ १४

॥ माधुच्छन्दसम् ¶ ॥ त्वामिदा । ह्वोयि । ह्वियोनं
५ ५ २ १ ० १ २ ३ ५ १
राईए । अपायिष्यन्वा । ज्ञायिन्भूर्णा२ ३ ४ याः । स
२ १र २र १ २ ३र २ ३र २
इन्द्रस्तोमवाहसः । इहाश्धा । औह्वो ३ ४ वाह्वांयि ।
१ २ ३र २ ३र २ १र २
उपास्वासा । औह्वो३४वाह्वा । रमागा२३ह्वा३४३यि ॥(१)
३ ४ ५ र २ ३ ४र ५ ५ २ १ २ १ २
उपस्वसा । हो । रमागह्वीए । उपास्वसा । रामा
२ ५ १ र २ १ २
गा २ ३ ४ ह्वो । मश्वासुशिप्रिन्हरिवः । तमायिमाह्वा ।

---

* 'श्लाघां कुर्वन्ति'—इति वि० ।

† 'अवांसि—अन्नानि पयांसि वा'—इति वि० ।

‡ 'उक्थ्य—उक्थैः मन्त्रजनीय'—इति वि० ।

¶ 'माधुच्छन्दसं मामाच्छावाकस्य'—इति वि० ।

औहोइ४वाहायि। त्वयाभूषा। औहोइ४वाहा। ति
वेधाइ३साइ४३: ॥(२) त्वयाभूषा। हो। तिवेधसाइ६ए।
त्वयाभूषा। तिवेधाइ३४साः। तवश्रवाऽस्युपमा। नि
यूथ्याया। औहो २ ३४वाहायि। सुतायिषूवा। औ
होइ४वाहायि। द्रगिर्वाइ३णा ३ ४ ३:। ओइ३ ४ ५ई।

डा (३) ॥ ४ * ॥ [१]

॥ मानवोत्तरम् ॥ हौवायि। त्वामिदाह्योनरः। हो
वायि। आपीप्यन्वज्रिन्भूर्णयः। साइन्द्रस्तो। मावा
ह्वसाइ१:। इहाइ२३४ऽधायि। उपास्वाइ३साइ। राइ
माइ३४औहोवा। गाइ३४ह्वी ॥(१) हौवायि। उपस्व
सरमागहि। हौवायि। ऊपस्वसरमागहि। मात्खासु
ग्नि। प्रायिन्हरिवाइ१:। तमाइयिमाइ३४हायि। त्वया

* ऊ० गा० २प्र० १अ० ४सा०।

१ ० ० १ ३ ४५ २ ७ ५
भू२३षाइ। ता२यिवे२३४औहोवा। धा२३४सा:॥(२)

१ २ २१ २१ १ १ २ २
ह्वोवायि। त्वयाभूषन्तिवेधसः। ह्वोवायि। त्वायाभूष

२ ७ १ २ १ ७ २ ७ १
न्तिवेधसः। तावश्रवा। साउपमा३१। नियू२क्षा२३४

५ २ १ २ १ ३ ५ २ २ ३
या। सुतायिषू२३वाइयि। द्रा२गा२३४औहोवा। वा२

५
३४धाः (३)॥ ८ * ॥ [२] १४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरग्रन्थस्य तृतीयाध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः† ॥ ४ ॥

पञ्चमखण्डेः—

प्रथमर्चे—प्रथमा ।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यस्तेमदोवरेण्यस्तेनापवस्वान्धसा ।

३ १ २ ३ २
देवावीरघशꣳसहा ॥ १ ¶ ॥

---

* ऋ० मा० १८प्र० २अ० ८सा० ।

† 'उक्थं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि० ।

‡ 'तृतीयसवनमभिधीयते'—इति वि० ।

¶ ऋ० मा० ५, २, ४, ४ (२मा० १४ ४०)=ऋ० वे० ८, १, २१, ४ ।

हे सोम ! "ते" तव "देवावीः" देवकामः "अघशंसहा" राक्षसानां हन्ता "वरेण्यः" सर्ववरणीयः "मदः" मदकरः "यः" रसः विद्यते, "तेन" "अश्वमा" अदनीयेन "पवस्व" क्षर ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २३ १२३ २३ २ ३१ २ ३ १ २
जघ्निर्वृत्रमभित्रियꣳसस्निर्वाजन्दिवेदिवे।

१ २ ३१ २
गोषातिरश्वसाअसि ॥ २ * ॥

हे सोम ! त्वम् "अभित्रियं" अभित्रभवं † "वृत्रं" शत्रुं "जघ्निः असि" हन्ता भवसि। किञ्च "दिवे दिवे" प्रतिदिनं "वाजं" ‡ सङ्ग्रामं "सस्निः" सम्भक्तोऽसि ¶। अपिच "गोषातिः" गवां सातिर्दातासि, "अश्वसाः" अश्वानां दाता चासि।

"गोषातिः"--"गोषाउ"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ८, १, २१, ५।

† 'अभित्रियम्—अभित्रकर्मकर्त्तारम्'—इति वि०।

‡ 'वाजमिति द्वितीयैकवचनम्, षष्ठ्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् ; वाजस्य अन्नस्य'—इति वि०।

¶ 'सस्निः—साधनस्वभावः'—इति वि०।

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ १ २ ३ २३ १ २
सम्मिश्लोअरुषोभुवःसूपस्थाभिर्न्नधेनुभिः ।

१ २ ३ २उ २ २
सीदन्छ्येनोननयोनिमा ॥ ३ * ॥ १५ †

हे सोम ! त्वं "सूपस्थाभिः" शोभनोपस्थानाभिः "धेनुभिः" गोभिः [गोर्विकारैः पयोभिरित्यर्थः] "सम्मिश्लः" सम्मिश्रितः "श्येनः न" यथा श्येनः शीघ्रमागत्य स्थानमासीदति तद्वत् "योनिं" स्वकीयं स्थानम् "आसोदन्", "न" [—इति सम्प्रत्यर्थे] इदानीम् "अरुषः भुवः" आरोचमानो भव ॥

"भुवः"-"भवः"—इति वा पाठो ॥ ३ ॥ १५

अथ द्वितीयर्चे—प्रथमा ।

३ २ ३ १ ३ २उ ३ १ २ २ १ ०
अयम्पूषारयिर्भगस्सोमःपुनानोअर्षति ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र ३ १ २ ३ २
पतिर्विश्वस्यभूमनोव्यख्यद्रोदसीउभे ॥ १ ‡ ॥

"पूषा" पोषकः सर्वेषां "भगः" भजनीयः "रयिः" धनहेतुः "अयं" सोमः "पुनानः" पवित्रे पूयमानः सन् "अर्षति" कलश-

---

* ऋ० वे० ८, १, २२, १ । † 'उक्था गायत्रौ'—इति वि० ।

‡ ऋ० सा० ९, २, १. २ (२भा० १५२ऋ०)=ऋ० वे० ७, ५, २. २ ।

मभिगच्छति। तथा "विश्वस्य" सर्वस्य "भूमनः" भूतजातस्य "पतिः" पालयिता "सोमः" "उभे रोदसी" द्यावापृथिव्यौ "अक्षत्" स्वतेजसा प्रकाशयति। अनेन लोकद्वयवर्त्तित्वं सूचितम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ १ १ १ २ २ २ १ १ १ २
समुप्रियास्रनूषतगावोमदायघृष्वयः।

१ २ २ १२ २२ २ १ २
सोमासःकृण्वतेपथःपवमानासइन्दवः ॥ २ * ॥

"प्रियाः" प्रियतमाः "घृष्वयः" अत्यन्तदीप्ताः, [यद्वा 'अहं प्रथमतः स्तौमि', 'अहं पुरस्तात् स्तौमि'—इति परस्परं स्पर्द्धमानाः] "गावः" स्तुति-लक्षणा वाचः † "मदाय" सोमस्य मदार्थं "समनूषत" संस्तुवन्ति; "उ" प्रसिद्धौ ‡ [यद्वा गावो धेनवः सोमस्य मदाय शब्दायन्ते]। ततः "पवमानासः" पूयमानाः "इन्दवः" दीप्ताः "सोमासः" सोमाः पथः मार्गान् "कृण्वते" चरणार्थं कुर्वन्ति ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७, ५, २, २।

† 'गावः—० ० ०सोमसम्बन्धीनि स्तोत्राणि उदकानि वा'—इति वि०।

‡ 'उ—इति पदपूरणः —इति वि०।

अथ तृतीया।

१ २८ १ १८ १८ २ १ १ २ १ २

यत्र्ओजिष्ठस्तमाभरपवमानश्रवाय्यम्।

१ १८ २ २ २ १ १ ८७ १ १ २

यःपञ्चचर्षणीरभिरयिंयेनवनामहे ॥ २ * ॥ १६ †

"ओजिष्ठः" ओजस्वितमः "यः" तृतीयो रसोऽस्ति तं "श्रवाय्यं" श्रवणीयं रसम् "आभर" अस्मभ्यमाहर। किञ्च "यः" रसः "पञ्च चर्षणीः" ‡ पञ्चजनान् निषादपञ्चमान् चतुरो-वर्णान् "अभि तिष्ठति"। अपिच "येन" रसेन वयं "रयिं" धनं च "वनामहे" सम्भजामहे ¶ [यद्वा येन त्वां रयिं याचा-महे] तमाभर ॥ २ ॥ १६

५ ३८ २ ४ ५ ३८

॥ गौरीवितम् § ॥ अयम्। पूषा ३। रयिर्मगाः। सो

२ २ १ २ ४

मःपुनानोऽवर्षताऽयि। पातिर्विश्वा३१ २ ३। स्वभूमम

१ २ ४ ५ ४ ५

माः। वायव्यद्रो३१२३। दसोवा। ऊमोऽहायि।(३)

॥ ८ ॥ ॥ [१]

* ऋ॰ वे॰ ७, ५, २, ४। † "ओजिष्ठौ ककुभिष्ठौ"—इति वि॰।

‡ 'पञ्चचर्षणीः—चर्षणयोमनुष्याः। चत्वारोमनुर्निजः, पञ्चमो यज्ञियः।

¶ 'रयि—धनं। येन वनामहे—येन सोमेन हविषा रयिं धनं लभामः। वनति र्यत्रापि कृत्यर्थे तथाप्यत्र लाभार्थे द्रष्टव्यः—इति वि॰।

§ 'तथागौरीवितम्'—इति ऋ॰ पु॰। ॥ ऋ॰ गा॰ १२म॰ १ऋ॰ ८ऋच॰।

॥ तृतीयंक्रौञ्चम् ॥ अयम्पूषा। ह्वो। रयिर्भगा ६ ए। सोमा२:पुना२। नआ३४५। षा२३४ती। पतिर्वि स्वसंभूमना२३४५:। वियख्या२३द्रो। दसीऊ२३भां३४ ३यि ॥(१) समुप्रियाः। ह्वो। अनूषता ६ ए। गावो२ मदा२। यघा३४५। षा२३४याः। सोमास:क्रणवतेप थाऽ१:। पवमा२३ना। मन्दा२३वा३४३: ॥(२) यओ जिष्ठाः। ह्वो। तमाभरा६ए। पावा२मानाः। अवा ३४५। यो२३४याम्। यःपञ्चचर्षणीरभीऽ१। रयिंया२ ३यिना। वनामा२३ह्वा ३ ४ ३ यि। ओ२३४५ई। डा।(३)

॥ ६ * ॥ [२]

॥ गौरीवितम्† ॥ अयम्। पूषा३। रयिर्भगाः। सो मःपुनानोअर्षतार३यि। पातिर्विश्वा३१२३। स्वभू५मनाः।

---

* ऋ० गा० २प्र० १अ० ६सा०। † 'महागौरीवितम्'—इति ख० पु०।

१ ३ ४ ५ ४ ५
वायव्याद्रो ३१२३। दसोवा। ज५भो६हायि ॥(१)

५ ३२ ५२५ १२२ २
समु। प्रियाइः। अनूषता। गावोमदायधुष्वया२३ः।

२ २ ४ १ २२
सोमांसःका३१२३। एवता५यिपथाः। पावमाना३१२३।

४ ५ ४ ५ ५२ ३२ ४२
सञ्ओवा। दा५वो६हायि ॥(२) यञ्ओ। जिष्ठाइः। तमा

५ १२ २ १ २
भरा। पवमानश्रवायिया२३म्। याःपच्चा ३ १ २ ३।

१ २२ ४ ५ ५
षणा५यिरभायि। रायिंयेना३१२३। वनोवा। मा५

५
द्रो६हायि(३) ॥ ८ * ॥ [३]

३२ २ ४२ ५ २ ४
॥ ग्नावाश्वम् ॥ अया३१म्। पू३षा। रयिः। भा३गः।

१ १ २ २ १ १ २
एह्िया। सो। मःपुनानो। अ। षता२यि। ऐहि

१ २ ४ ५ २२ १
या२। पतिर्विश्वास्या३भू३। मा२३४नाः। ऐहा२यि।

२ १ २ ४ २ ५
एह्िया२। वियख्यद्रोदा३सी३। ज३४५भो६हायि ॥(१)

३ २ ४२ ५२ २ ४ ५ १
सम्३१। प्रो३याः। अनू। षा३त। एह्िया। गा।

---

० ज० गा० ७प्र० १अ० ८सा०।

र र २ १ १र र र १
सोमदाया । घृ । षयार्२: । एद्दियार्२ । सोमास:का

२ ४ ५ २र १र
र्वाइताइयि । पा२३४था: । ऐहार्२यि । एद्दियार्२ ।

१र २ ४ २ ५ २ १
पवमानासाइआइयि । दा३४५वोऽहायि ॥(२) यंसो३

२ ४ ५र २ ४ ५ १
१.। जाइयिष्ठ: । तमा । भाइर । एद्दिया । पा । व

र २र १ १र १ १
मानआ । वा । यियार्२म् । एद्दियार्२ । य:पच्चार्षा३

४ ५ २र १र
षीइ: । आ२३४भायि । ऐहार्२यि । एद्दियार्२ । रयिं

१र २ ४ २ ५
र्येनावाइनाइ । मा२३४५हीऽहायि(३) ॥ १०* ॥ [४]

२ १ १र र १ र
॥ आसिताद्यम् ॥ अयम्पूषारयायि: । भगा: । सो

र र २ १ १र
म:पुनानोअर्षा२इतायि । पातार्२यिस्वार्२ । सुभूमना: ।

१ १ २ १ ५ ४ ५
वायार्२ख्याद्रोर्२ । दसोवाइओ२३४वा । ऊ५भोऽहा

१ २ १र २ १ र र र
यि ॥(१) समुप्रियाअनू । षता । गावोमदायघृषा२इ

२ १ १र १
या: । सोमार्२सा:कार्२ । एवतेपथा: । पावार्२माना

---

* ऋ० मा० ११प्र० २अ० १०सा०

ई। सखीवाइयो२३४वा। दा५योई३हायि ॥(२) यज्ञो
जिष्ठस्तमा। भरा। पवमानस्यबाम्रा२३याम्। याःपा
ई३म्बाम्बा२। षणीरभायि। रायी३यायिना२। वनो
वाइओ२३४वा। मा५होई३हायि(३) ॥ २० * ॥ [५]

॥ निषेधम् † ॥ अयम्पूषारा ३ यिर्भगाः। सोमाःपुना।
सोअर्षता२यि। इहाइ। पाताइयिर्वायिस्वा। हाडो
२३४हा। स्वभूमा२३नाः। इहा ३। वाया ३ ख्याद्रिं।
हाडो२३४हा। दसी३ऊ५भा६५६यि ॥(१) समुप्रियाम्रा
३नूषता। गावोमदा। यघृषया२ः। इहा ३। सो
माइसाःका। हाडो२३४हा। एवतेपा२३थाः। इहाइ।
पावाइमाना। हाडो २ ३ ४ हा। सम्राइयिन्दा५वा ६
५६ः ॥(२) यम्रोजिष्ठस्ताइमाभरा। पवामाना। अवा

* ऋ० मा० ११म० ३ख० २०सा०। † "निषेध.'—इति ख० पु०।

१ १२ १ २ ४५ २ ३ ५
यिया२म्। इहा३। याःपा३स्वाचा। हाहोर२३४हा।

२ ३ १ २ १२ १ २ ४ ५ २ ३
षणीरा२३४भायि। इहा३। रायी३यायिना। हाहोर२३

५ ३२ ४ ३१ १
४हार२३४हा। वना३मा५हा६५६यि। हे२३

१.१
४५(३)॥ २ *॥ [६]

४ ३ २ ४ २ ४ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ अयाऽ५म्। षाइराइयिर्भागाः।

१ २ १ २ २ १ १
सोमःपुना। नो३आर्षा३तायि। पता२यिर्वि। स्वस्या

२ १ २ २ १ २ ३२
२३भू। ऊम्मायि। मा३नाः। वायव्यद्रोदसी २ उभा

१ २ १ २ २ २ २
उ॥(१) भायिसाम्। उप्रियाअनूषतगावोमदा। या

१ २ २ १२ १ २ १
३घार्ष्वा३याः। सोमा२सः। क्ण्वा२३ता। ऊम्मायि।

२ २ १ २ २ ३२ १ २ १२
पा३थाः। पावमानास आ२यिन्दवाउ॥(२) वायाः। ओ

२ २ २ ३ २ १ १ १
जिष्ठस्तमाभरपवमाना। आ३वाआ३याम्। यःपा२च्च।

---

* ऋ० गा० १३५० १अ० २सा०।

१ १ २ २ १ २
चर्षा२३णा। ऊम्मायि। आ३भायि। रायिंयेनवना२

२ २ १ १ १
मद्दाउ। वा३४५(३) ॥ १३ * ॥ [७]

२ १ २र १र २र १ २ र १ २
॥ यद्दाङ्ष्ठीयम् ॥ अयम्पूषारयिर्भगः। अयम्पूषोवा।

१ २ २ २
रयिर्भगाः। सोमःपू२३ना। नोऽर्षतायि। पतिर्वा२३

२ १र २ १र २
यिश्वा। स्वभूमनाः। वियख्या२३द्रो। दसीऊ२३भा३

१ २१र २र १ २ १र
४३यि ॥(१) समुप्रियाअनूषत। समुप्रियोवा। अनूष

र र २ १ र र २
ता। गावोमा२३दा। यघृष्वयाः। सोमासा२३:कां।

१र १ १ २ १
एवतेपथाः। पवमा२३ना। सइन्दा२३वा३४३: ॥(२) य

र २ १र २ र १ २ १र
ओजिष्ठस्तमाभर। यओजिष्ठोवा। तमाभरा। पवमां

२ १र २ १र
२३ना। अवायियाम्। यःपच्चा२३चा। षणीरभायि।

२ १र २ १
रयिंमा२३यिना। वनामा२३च्चा३४३यि। ओ२३४५ई।

डा (३)॥ १४ † ॥ [८]

• ऊ० गा० १५प्र० १अ० १९सा०। † ऊं० गा० २२प्र० १अ० १७सा०।

॥ क्रौञ्चाद्यम् ॥ अयम्पूषौच्छो। रायिर्भगाः। सो
मःपुनाइ। नोआइर्षापूताई ५ ६ यि। पतिविश्वौच्छो।
स्थाभूमनाः। वियख्यद्रोइ। दासीइजपूभाइ५ईयि ॥(१)
समुप्रियौच्छो। आनूषता। गावोमदाइ। याघाइर्षापू
षाइ५ईः। सोमासःकौच्छो। एवातेपथाः। पवमानाइ।
साआइयिन्दापूवाइ५ईः ॥(२) यओजिष्ठौच्छो। तामाभ
रा॰। पवमानाइ। आवाइआपूयाई५ईम्। यःपच्चचौ
च्छो। पाणीरभायि। रयिंयेनाइ। वानाइमापूहाई५
ईयि (३)॥ १७ * ॥ [८]

॥ ऐडकौत्सम् ॥ अयंच्छौपू२३। पारयिर्भगईया।
सोमःपुनानोअर्षति। पातिर्विश्व। स्वभूमा२३नाः। वा
याइच्छा। स्वाद्रोइच्छा। दसीऊ२३भाइ४३यि ॥(१) स

ऋ० गा० १५प्र० १ऋ० १७सा०

२ १ ४२ २ ५ १२ २२ १ २ १ २ १
मूर्द्धिप्रीर२३। याश्चनूषतईया। गावोमदायघृष्वयः। सो

२ २ १२ २ १ २ २ १ २ २
मासःछ। एवतेपा२३थाः। पावाइछा। मानाइछा।

१ २ ३ २ २ १ ४ २
सइन्दा२३वा३४३: ॥(२) यश्चोहीजा२३यि। छस्तमाभर

५ १ २२ १२ २ १ २ १२
इया। पवमानश्रवायियम्। याःपञ्चच। षणीरा२३

१ १ २ २ १ २ २ १२
भायि। रायी३ंछायि। यायिनाइछायि। वनामा२.

२ १
३छा३५३यि। ओ२३४५ईं। डा (३)॥ ५ * ॥ [१०]

२ २ २ २ २
॥ मधुश्चुन्निधनम्॥ अयम्पूषारयिर्भगाइण। सोमःपु

१ २ २ २ ऽ २ २ १
नाइनोअर्षताइयि। छाइछा। औ३छो३ वा। आयि

१ २ २ २ ऽ २
छी२। पतिर्विश्वाइस्याभूमनाइः। छाइछा। औ३छो

२ १ १ २ २ १ ऽ
३षा। आयिछी२। वायव्यछो३। छाइछायि। औ

२ २ १ १२ ३ ५२ २
३छो३वा। आयिछी२। दसी। ऊर्भा२३४ औछो

२ २ २ २ ऽ १७ २
वा ॥(१) समुप्रियाअनूषताइ। गावोमदाइयाघृष्वयाइः।

---

* ऊ० गा० २०प्र० १अ० ५मा०।

२ २ ऽ २ २ १ २ २ १
हाइ३ह्वा। औइ३होइ३वा। आयिह्वी२। सोमासःकृ२ण्वा

२ २ २ २ ऽ २ २ १ १
तिपथाइः। हाइ३ह्वा। औइ३होइ३वा। आयिह्वी२। पा

२ २ २ २ ऽ २ २ १
वमानाइ३। ह्वाइ३हायि। औइ३होइ३वा। आयिह्वी२।

१ ३ ५२ २ २ २ २
सद्। दा२वा२३४औ३होवा ॥(२) यमोजिष्ठ्त्वमाभरा

२ २ १ २ २ २ ऽ २
३ए। पवमानाइ३आवायियाइ३म्। ह्वाइ३हा। औइ३होइ

२ १ १ २ २
वा। आयिह्वी२। यःपञ्चचाइ३र्षणीरभाइ३यि। ह्वाइ

२ ऽ २ २ १ १ २ २ २
३ह्वा। औइ३होइ३वा। आयिह्वी२। रायियेनाइ३। ह्वा

२ ऽ १ २ १ १२ ३
३ह्वायि। औइ३होइ३वा। आयिह्वी२। वना। माइ३ह्वा

५२ २ २ १ ३ १ १ १ १
२३४औ३होवा। मधुश्चुतां२३४५ः(३) ॥ १८ * ॥ [११]

१२ २ २ २ १ २
॥ कण्वबृहत् ॥ औ३होअयम्पूषाइ३ए। रयायिर्भा१गा२

३२ २ १२ २२ १२ २ १ २
३४ः। ह्वाइ३होयि। सोमःपुनानोअषतिं। पतायिर्वा१यि

३२ २ १ २ ४२ २ १ २
स्वा२३४। होइ३होअभूमा१ना२३४ः। ह्वाइ३होयि। वियाख्या

* ऋ० मा० २०म० २अ० १८सा० ।

१ह्वो२३४। ह्वावो। दसौ३। ज२३४भायि। उ ऊवा
ऽह्वाउ। वा ॥(१) औह्वोसमुप्रियाइए। अनूषा१ता२
३४। ह्वाह्वोयि। गावोमदायघृष्वयः। सोमासा१:कां२
३४। ह्वाह्वो। एवतायिपा१था२३४:। ह्वाह्वोयि। पवा
मा१ना२३४। ह्वाह्वो। सम्राइयि। दा२३४वाः। उ
ऊवाऽह्वाउ। वा ॥(२) औह्वोयओजिष्ठाइए। तमाभा
१रा२३४। ह्वाह्वोयि। पावमानअवायियम्। यःपाञ्चां
१चा२३४। ह्वाह्वो। षणायिरा१भा२३४यि। ह्वाह्वोयि
रयार्यंया१यिना२३४। ह्वाह्वो। वनाइ। मा२३४ह्वायि।
उऊवाऽह्वाउ। वा(३) ॥ ९ * ॥ [१२] १९

अथ तृतीयतृचे—प्रथमा।

वृषामतीनाम्पवतेविचक्षणः
सोमोअह्नाम्प्रतरीतोषसान्दिवः।

---

* ऋ० गा० २१प्र० २अ० ९सा०।

३ १२ २१ २ १ २ ३
प्राणासिन्धूनाङ्कलशाँ२अचिक्रद
१ २ २ २ २ २१ २ २ १ २
दिन्द्रस्यहार्द्यावि३शन्मनीषिभिः ॥ १ * ॥

अयं "सोमः" "पवते" अभिषूयते। कीदृशः सोमः? "मतीनां" मतयः स्तोतारः तेषां "वृषा" वर्षकः, "कामानां" "विचक्षणः" विद्रष्टा, "अङ्काम्" उषसां "दिवः" द्युलोकस्य आदित्यस्य वा "प्रतरीता" प्रवर्द्धयिता किञ्च "सिन्धूनां" स्यन्दमानानाम् उदकानां "प्राणा" प्राणयिता चेष्टयिता [अनितेः (अदा० प०) शानचि, "बहुलं छन्दसि (२, ४, ७३)"—इति शप्विकरणस्य लुक्, सुपां सुलुगित्याकारः (७, १, ३९)] "कलशान्" "अचिक्रदत्" शब्दं करोति प्रवेष्टुम्। किं कुर्वन्? "इन्द्रस्य" "हार्दि" हृदयम् "आविशन्" प्रविशन् "मनीषिभिः" मनसेषितृभिः स्तुतिभिः स्तुत इति शेषः। व्यवहित मपि मनीषिभिरित्येतत् पवतइत्यनेन सम्बध्यते ॥

"अङ्काम्"-"अङ्कः"—इति, "उषसाम्"-"उषसः"—इति, "प्राणा"-"क्राणा"—इति, "अचिक्रदत्"-"अवीवशत्"—इति च पाठाः ॥ १ ॥

---

* ऋ० आ०९, २, २, ६ (२भा० १८५ पृ०)=ऋ० वे० ७, २, १५, ४।

अथ द्वितीया।

२ १ २ २ २ २ १
मनीषिभिःपवतेपूर्व्यष्कवि*नृ-

२२१२उ २ १ २
भिर्यतःपरिकोशाँअसिष्यदत्।

३ २ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३ २ ३
वितस्यनामजनयन्मधुक्षर--

१ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
न्निन्द्रस्यवायुँसख्यायवर्द्धयन्॥ २†॥

अयं सोमः "मनीषिभिः" मेधाविभिः अध्वर्यादिभिः "पवते" पूयते। यद्वा अयं मनीषिभिर्द्धाराभिः "पवते" क्षरति। कौदृशोऽयम्? "पूर्व्यः" पुराणः "कविः" मेधावी "नृभिः" नेतृभिः अध्वर्यादिभिः "यतः" सन् "कोशान्" कलशान् प्रति "परि असिष्यदत्" परितः स्यन्दते स्रवति। "वितस्य" विषु स्थानेषु लोकेषु विस्तृतस्य "इन्द्रस्य" यजमानस्य सम्बन्धि "नाम" नामकमुदकं "जनयन्" उत्पादयन् "मधु" मधुरं रसं "क्षरन्" क्षरति। किं कुर्वन्? इन्द्रस्य "सख्याय" सखित्वाय "वायुं" "वर्द्धयन्" प्रहर्षं कुर्वन्॥

"असिष्यदत्"-"अचिक्रदत्"—इति पाठौ, "युवां"-"वायोः"—इति च, "वर्द्धयन्"--कर्त्तवे"—इति च॥ २॥

---

* "पूर्व्यः कवि"—इति मु० पाठः। † ऋ० वे० ७, ३, १६, १।

अथ तृतीया।

२१ २ २ २ २ १ २
अयमपुनानउषसोअरोचय

२२१ २२ २२
दयꣳसिन्धुभ्योअभवदुलोककृत्।

२२उ २१२ १ २ २ २२
अयन्निःसम्नदुदुहानआशिरꣳ

१ २ ३१२ ३१ १ २२
सोमोह्रदेपवतेचारुमत्सरः॥ २ * ॥ १७ †

"अयं" सोमः "पुनानः" पूयमानः "उषसः" "अरोचयत्" अदीपयत्। अयं "सिन्धुभ्यः" स्यन्दमानेभ्यः वसतीवरीभ्यः ‡ "अभवत्" समृद्धो भवति। "उ"—इति पूरणः। कीदृशो-ऽयम्? "लोककृत्" लोकानां कर्त्ता [वर्षकर्त्तृत्वाद्रेतोधारकत्वाच्चास्य लोककर्त्तृत्वम्]। "अयं" सोमः "त्रिःसप्त" एकविंशतिं गाः ¶ कक्षमुखेन "आशिरं" "दुदुहानः" दुहानः [दोहस्य प्रयोजकत्वात् कर्त्तोपचारः] "मत्सरः" मदकरः "चारु" रमणीयं "पवते" चरति। किमर्थम्? "ह्रदे" ह्रदाय ह्रदय-गमनाय॥

"अरोचयत्"-"विरोचयत्"—इति पाठो॥ २॥ १७

---

* ऋ० वे० ७, २, १६, २। † 'यामं साम'—इति वि०

‡ 'समुद्रेभ्यो वा'—इत्यधिकं वि०।

¶ 'प्रतिसवनं सप्तसप्त गावः ०'०'—इति वि०।

॥ याममम् ॥ आ२यि। इया। वृषामतायिना१म्प
४ २३५ १२ ४ ७ २
वता२३यि। वा३यिचक्षणः। सोमोअक्षाम्प्रतरीतो२३।
४ २२ ३४ १२ ४ ७ ४ २
षा३सान्दिवः। प्राणासिन्धूना१ङ्कल्गा७२३। आ३च्चि
३५ १ ७ २ ४
क्रदत्। इन्द्रस्यहार्दियाविशा२३न्। मनाइयिषा५यिभा
१२ ७ २ ४ २३५
६५६यिः ॥(१) मनीषिभायिःपवतेपू२३। वी३यःकवि।
१ ७ २ ४ २३५ १ -
नृभिर्यताःपरिकोशा७२३। आ३सिष्यदत्। चितस्यना
७ ४ २३५ १ ७
मजनया२३न्। मा३धुश्चरन्। इन्द्रस्यवायु७सखिया२
२ ५ १ ७
३। यवा३र्द्धा५या६५६न् ॥(२) अयम्पुनानउषसो२३।
४ २८ ३५ १ २ ४ २८
आ३रोचयत्। अय७मिन्धूभ्यो१अभवा२३त्। ऊ३र्णो
३५ १ ७ ४ २८ ३५
कक्षात्। अयन्त्रिस्साप्तदुहा२३। ना३आंशिरम्। आ
१ २ २ ७ २ २ ४
२यि। इया। सोमोहृदायिपवतेचा२३। रुमा३त्मा
५रा६५६:(३) ॥ १० * ॥ [१]

---

० ऋ० २प्र० १अ० १०सा०।

॥ ऐडयामम् ॥ वृषा॒मातीं२३। नाम्यवाता२३ यि।

ए३। विचक्षणए३। सोमोऽआक्षा२३म्। प्रतरायिता२

३। ए३। उषसान्दिवए३। प्राणासायिन्धू२३। नाङ्क

लाश्णा॒ए२३। ए३। अचिक्रदद ३। इन्द्रस्याहा २ ३।

द्रियावायिश्णा२३न्। ए३। मनीषिभिरे३४३ ॥(१) मनी

षायिभा२३यिः। पवतायिपू२३। ए३। विंयःकविरे३।

नृभिर्याता२३ः। परिकोश्णा॒ए २ ३। ए३। असिष्यदद

३। चितस्याना२३। मजनाया२३न्। ए३। मधुच्च

रन्ते३। इन्द्रस्यावा२३। यु॒ए॒सखीया२३। ए३। यव

र्द्धयन्ने३४३ ॥(२) अयम्पूना२३। नउषासा२३ः। ए३।

अरोचयदे३। अय॒ए॒सायिन्धू२३। भ्योअभावा२३ त्।

ए३। उलोकछदे३। अयन्तायिःसा२३। मदुदूढा२३।

१ २ २ २२ २ १ १ १
ए३। नआशिरमे३। सोमोऽहार्ह २ ३ यि। पवताय्यि

२ १
चा२३। ए३। हमत्सरए३४३। ओ २३४५ई। डा(३)॥

॥ ५ * ॥ [२]

४ २ ४ ९ ४ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम्। वृषाऽ५म। ता३यिना३पवताय्यि।

१ २ २ २ २ १ २ २
वायिचक्षणःसोमोऽन्हाम्प्रतरीतो। षा३मान्दा३यिवाः।

१२ १ २ २ २ २ १
प्राणा२सिन्धूनाङ्कलशाꣳअचिक्र। ददा२३यिन्द्रा। ङ्क

२ २ १ २ ३ २
म्मायि। स्या ३ हा। दीयाविघ्नन्मना २ र्यिषिभाउ॥(१)

१ १ १२ २ २ २
भायिर्म्मा। नीषिभिःपवतेपूर्व्यःकविर्न्नृभिर्यतःपरिकोशाꣳ।

२ १ २ २ १ १ २
षा३साय्यिष्या३दात्। त्रिता२स्यनामजनयन्मधुक्षं। रत्नं

२ १ २ २ १ २
२३यिन्द्रा। ङ्कम्मायि। स्या३वा। यूꣳसखियायवा२

३ २ १ २ १ २ २ २
र्ह्यया३उ॥(२) याना। यम्पुनानउषसोऽरोचयदयꣳसि

२ १ २ १ १
न्धुभ्योऽभवात्। ज३लोका ३ कृत्। अया२न्निःसन्नदुदु

---

* ऊ० गा० ८म० १अ० ५सा०।

३ २ २ १ २ २
ह्वानआगि । रण्सो२३माः । ऊम्मायि । वा३ हीयि ।

१ २२ १२ १११२
पावतेचारुमा२त्सराउ । वा२३४५(३) ॥ १७* ॥ [३] १७

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य तृतीयस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः ॥ ५ ॥

एवाहीति-षष्ठे खण्डे ‡:—

प्रथमतृचे—प्रथमा ।

३ १ २२ ३ २ ३ १ २२३,२ ३ २
एवाह्यसिवीरयुरेवाशूरउतस्थिरः ।

३ २ ३ २ ३ १ २
एवातेराध्यम्मनः ॥ १ ¶ ॥

हे इन्द्र ! त्वं "वीरयुः" वीरान् युद्ध-कर्मणि समर्थान् शत्रून् हन्तुं कामयमानः "एव असि" भवसि खलु । "हि" प्रसिद्धौ अतएव त्वं "शूरः" सामर्थ्यवान् "एव" भवसि । "उत" अपिच "स्थिरः" सङ्ग्रामे धैर्यवान् भवसि, एकत्र स्थित्वैव शत्रून् संहरसीत्यर्थः । एवं सति "ते" तव "मनः" "राध्य"

---

* ऊ० गा० १६प्र० १अ० १७सा० ।

‡ 'यन्नाग्नेयीयमग्निष्टोमसाम । एष्वाकमुक्थ्यम् । एवाह्यसि वामदेवीयवं द्वितीयमुक्थ्यम्'—इति वि० अवेति शेषः ।

¶ ऋ० आ० ३, १, ४, १० (१भा० ४७५पृ०) ऋ० सं० ६, ६, २०, २ ।

स्तुतिभिः आराधनीयम् "एव"। यतोऽनेन मनसा त्वं अत्रबधं सङ्ग्रामे धैर्यादिकं करोषीति तव मन एव सर्वैः स्तुत्यमित्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ २ ३ १ २ ३ १२ २ १ १
एवारातिस्तुवीमघविश्वेभिर्द्धायिधातृभिः।

१ १ ३ १ २
अधाचिदिन्द्रनस्सचा ॥ २* ॥

हे "तुविमघ !" [तुविरिति बहु-नाम (निघ०२,१,१)] बहुधन इन्द्र ! "विश्वेभिः" सर्वैः "धात्रभिः" कर्मधारकैः [यद्वा, देवानां हविर्दानेन पोषयित्रभिः सर्वैः यजमानैः] तव "रातिः" गवाश्वादि-दानं "धायि" तैर्धार्यत एव [दधातेर्लुङि कर्मणि रूपम्]। "चित्" एवार्थे†। "अध"‡ अनन्तरमेव हे इन्द्र ! एवंविधस्त्वं "नः" अस्माकं यष्टॄणामपि "सचा"¶ धनादि-दानेन कर्म-सहायो भव ॥

"इन्द्रनस्सचा"--"इन्द्रमेसचा"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ६, २०,३।

†, ‡ 'अधा चित्—इति पद पूरणः'—इति वि०। सायणमते तु अधेत्यव्यय मधेत्यर्थे, "निपातस्य च (६,३,१३६)"—इति दीर्घे भवति "अधा"—इति।

¶ 'अथवा सचा सखा'—इत्यधिकं वि०।

अथ तृतीया।

२उ ७ १ २ ३१८ २८
मोषुब्रह्मेवतन्द्रयुर्भुवोवाजानाम्पते।
१ २ ३ २ ३ १ २
मत्स्वासुतस्यगोमतः॥ ३ *॥ १८

हे "वाजानाम्पते" अन्नानाम्पते! बलानां वा, हे इन्द्र! "तन्द्रयुः" † निष्कारणं निवृत्तकर्मवत्त्वादालस्ययुक्तः "ब्रह्मेव" ब्राह्मणइव त्वं "मा उ षु भुवः"‡ सुष्ठु मा भव, सर्वदास्मत्-कर्म-रतो भवेत्याशासनम् ¶। तदेवाह—"सुतस्य" अभिषुतस्य, ततः "गोमतः" गव्येन क्षीरेण दध्ना वा मिश्रणवतः सोमस्य पात्रेण "मत्स्व" माद्य हृष्टो भव॥ ३॥ १८

५८ ८ २ ४ ५८ २८ १
॥ उक्थामद्वीयवम्॥ एवाहो ३ अस्मिवीरयूः। एवा
२ १ २ १ २८ ८ १
पशू१रा२ः। उता२३स्थिराः। आयिवातेरा। धिया
२ ५८ ८ २ ४ ५८ २ १
२३म्मनाउ। वा३॥(१) एवारा३तिस्तुवीमघा। विश्वा

---

* ऋ० वे० ६, ६, २०, ४।

† "उ षु"—इति पदपूरणौ। मा इति प्रतिषेधः, तन्द्रयुरित्याख्यातेन सम्बन्धितव्यः; मा तन्द्रयुः मालस्यं कुरु'—इति वि०।

‡ "भुवः वाजानां पते'—भुवर्लोकस्य अन्नानां धनानां चाधिपते भुवर्ग्रहणञ्च प्रदर्शनार्थं सर्वेषां लोकानां पते'—इति वि०।

¶ अत्रच। अस्यामृचि ब्राह्मणानामालस्य-स्वभावो वर्णितः।

२ १ २ १ २ १ २ १
यिभा१यिद्वा२। यिधा२३तृभायिः। आधाचिदायि।
२ ५ २ ४ ५
द्रना२३:सचाउ। वा३ ॥(२) मोषुब्रा३ह्मे वतन्द्रयूः।
२ १ २ १ २ १ २ १
भुवोवा१जा२। नार३म्यतायि। मात्स्वासुता। स्वगो
२ २ १ २ १ २ १
२३मताउ। वा३। स्तोषे२३४५(३) ॥ ११ * ॥ [१]

५ २ २ ४ ५ ४ ५ १ २ १
॥ सौभरम् ॥ एवा३ह्वो३असिवीरयोवा। एवांशू२
१ ७ १ ६ ५ १ २ २ २
राउता२३। ह्वो। स्था२३४यिराः। एवातेरा। धिया
ऽ २ १ ३ ५ २ ५ ४ ६ ४
३ऽह्वा३यि। मा२ना२३४औह्वोवा ॥(१) एवा३रा ३ ति
५ ४ ५ २ १ २ १ ७ १ ३
स्तुवीमघोवा। विश्वेभा२यिद्वायिधा२३। ह्वो। तू२
५ १ २ ऽ २ १ २
३४भायिः। अधाचिदि। द्रना३ह्वा३यि। सा२च्चा२३४
५ २ ५ ४ २ ४ ५ ५ ४ २ १ २
औह्वोवा ॥(२) मोषू३ब्रा३ह्मे वतन्द्रयोवा। भुवोवा२
१ १ २ ५ १ २
जाना२३म्। ह्वो। पा२३४तायि। मत्स्वासुत। स्व

---

* ऋ० गा० २म० १अ० ११सा० ।

ऽ १ १ ३ ५२ २ २ १ १
गो३ह्वा३यि। मा२ता २ ३ ४ औदोवा। ऊ २ ३ ४ ५

(३) ॥ २ * ॥ [२] १८

द्वितीयतृचे—प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसङ्गिरः।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २
रथीतमꣳरथीनांवाजानाꣳसत्पतिम्पतिम् ॥ १† ॥

"विश्वाः" सर्वाः "गिरः" अस्मदीयाः स्तुतयः "इन्द्रम्" "अवीवृधन्" वर्द्धितवत्यः [वृधेर्ष्णिचि चङि "उर्ऋत् (७, ४, ७)" —इत्यनुवृत्तौ "नित्यं छन्दसि (७, ४, ८)"—इति ऋकारस्य ऋकार-विधानात् लघूपधगुणाभावः, निपातस्वरः (८, १ २८)] कीदृशमिन्द्रम् ? "समुद्रव्यचसं" समुद्रवद् व्याप्तवन्तं, "रथीनां" रथ-युक्तानां योद्धृणां मध्ये "रथीतमम्" अतिशयेन रथ-युक्तं, "वाजानाम्" अन्नानां "पतिं" स्वामिनं, "सत्पतिं" सतां सन्मार्ग-वर्त्तिनां पालकं ["पत्यावैश्वर्ये (६,२, १८)"—इति पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम्] ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० २१प्र० २अ० २सा०।

† ह० आ० ४, २, १, २ (१भा० ६९७ पृ०)=ऋ० वे० १, १, २१, १।

अथ द्वितीया ।

३ १ २ ३ १ ३ १ २
सख्येतदिन्द्रवाजिनोमाभेमशवस्पते ।

२ ३ १ २र १ १ २ १ १ २
त्वामभिप्रनोनुमोजेतारमपराजितम् ॥ २ * ॥

हे "शवस्पते" † बलस्य पालकेन्द्र ! "ते" तव "सख्ये" अनुग्रहप्रयुक्ते सखित्वे वर्त्तमाना वयं "वाजिनः" अन्नवन्तः भूत्वा "मा भेम" शत्रुभ्यो भीतिं प्राप्ता मा भूम । अतः "त्वाम्" अभयहेतुम् "अभि प्र नोनुमः" सर्वतः प्रकर्षेण स्तुमः [णु स्तुतौ (अदा०, प०), "णोनः (६, १, ६५)"—इति नत्वम्, यङोलुक् (२, ४, ७४), प्रत्ययलक्षणेन (१, १, ६२), "सन्यङोः (६, १, ९)"—इति द्विर्भावः, "गुणो यङ्लुकोः (७, ४, ८२)"—इत्यभ्यासस्य गुणः, प्रत्ययलक्षणेन धातुसञ्ज्ञायां (३, १, ३२) लटोमस् (३, ४, ७८), अदादिवद्भावात् शपोलुक् (२, ४, ७२)] । कीदृशं त्वाम् ? "जेतारं" युद्धेषु जयशीलं अपराजितं क्वापि पराजय-रहितम् ॥

"प्रनोनुमः"-"प्रणोनुमः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० १, १, २१, २ ।

† 'अन्नस्य यज्ञसोवाधिपते' - इति वि०

अथ तृतीया ।

३ १२ २२ ३ २ ३ १ १२ ३ १ २
पूर्वीरिन्द्रस्यरातयोनविदस्रुन्ध्यूतयः ।

३ १२ १२३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १
यदावाजस्यगोमतस्तोतृभ्योमꣳहतेमघम् ॥ ३ * ॥ १९†

॥ इति द्वितीयस्यार्द्धः प्रपाठकः ॥

"इन्द्रस्य" सम्बधिन्यः "रातयः" धन-दानानि "पूर्वीः" अनादि-काल-सिद्धाः, अस्येन्द्रस्य सर्वदा यष्टृभ्यो धनदानमेव स्वभाव इत्यर्थः ; एवं सति इदानीन्तनोऽपि यजमानः "स्तोतृभ्यः" ऋत्विग्भ्यः "गोमतः" गो सहितस्य "वाजस्य" अन्नस्य पर्याप्तं "मघं" धनं "यदा" "मंहते" दक्षिणारूपेण ददाति, तदानीं "रातयः" बहु-धन-दान-पूर्वकाणीन्द्रस्यात्म-विषयाणि रक्षणानि "न वि दस्यन्ति" विशेषेण नोपक्षीयन्ते । ["यदा"-"यदि"—इति पाठौ । "मघ"", "रेक्णः", "रिक्थं"—इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेषु धननामसु (निघ० २, १०) मघशब्दः पठितः । "दाति"-"दाशति"—इत्यादिषु दशस्तु दानकर्मसु "मंहते"—इति पठितम् (निघ० ३, २०, १०) । पूर्वीः—पुरु शब्दस्य "वोतोगुणवचनात् (४, १, ४४)"—इति ङीष्, आद्योकारस्य दौर्घस्छान्दसः, जसि "दीर्घाज्जसिच (६, १, १०५)"—इति निषेधं बाधित्वा "वा छन्दसि (६, १, १०६)"—इति पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्, ङीषः प्रत्ययस्वरेणोदात्त-

---

* ऋ० वे० १, १, २१, ३ । † 'आष्टादंष्ट्रकमुख्यम्'—इति वि० ।

त्वम्। मंहते—मघः पित्वादनुदात्तत्वम्, तिङश्च त-सार्वधातुक-स्वरेण "तिङतिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "निपातैर्यद्यदिहन्त (८,१,३०)"—इति निषेधात् ॥३॥१९

॥ आष्टादशर्चमाद्यम् ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्। ऐया
ह्यायि। समुद्राऽ१व्या २। चसाङ्गा१यिरा२३ः। ऐया
२३ह्यायि। रथायिता१मा २म्। रथायिन१३म्। ऐया
२३ह्यायि। वाजाना१ंसा २त्। पतायिम्पा१ती२३म्।
ऐया२३ह्या३४३यि ॥(१) सख्ये तइन्द्रवाजिनः। ऐयाह्वा
यि। माभायिमा१श्वा २। वसास्पा१ता२३यि। ऐया२
३ह्यायि। तुवामा१भी २। प्रनोनू१मा२३ः। ऐया २ ३
ह्यायि। जेतारा१मा २। पराजा१यिता२३म्। ऐया२
३ह्या३४३यि ॥(२) पूर्वीरिन्द्रस्यरातयः। ऐयाह्यायि। न
वायिदा१स्या २। तियूता१या२३ः। ऐया २ ३ ह्यायि।
यदावा१जा २। स्वगोमा१ता २३ः। ऐया २ ३ ह्यायि।

२ १ २ १ २ १२ १
स्तोतृभ्यो१मा २ । घृतायिमा१घा२३म् । ऐया२३घाऽऽ

१
३यि । ओ२३४५ई । डा(३) ॥ १२ * ॥ [१]

१ १ १ २२ २ १२ २२ १२
॥ अष्टादशोत्तरम् ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्नैयादौ ।

२ २ १ २ १ १२
ह्वे३वा । समुद्रव्यचसम् । गायिरा२३ । ऐया २ ३ त् ।

१ २ २ १ २ १ १२
औ२३ह्वोवा । रथायितमꣳर । थायिना२३म् । ऐया

१ २ २ १२ २ १ २ १
२३त् । औ२३ह्वोवा । वाजानाꣳसत्पतिम् । पातो २

१२ १ २ २ २ १२१
३मं । ऐया२३त् । औ२३ह्वोवा३४३ ॥(१) सख्ये तइन्द्र

२ १ २ १२२१२ २ २ १२ २ २ १
वाजिनऐयादौ । ह्वो३वा माभेमशवसः । पाता२ ३

१२ १ २ १२ १२ २ १ २ १
यि । ऐया२३त् । औ२३ह्वोवा । त्वामभिप्रनो । नूमा

१२ १ २ १२ २ १ २ १
२३ः । ऐया२३त् । औ२३ह्वोवा । जेतारमपरा । जा

१२ १ २ २ १२१२
यिता२३त् । ऐया२३ । औ२३ह्वोवा३४३ ॥(२) पूर्वीरि

२ २ १ १ १२ २२ १२ २ २ १ १२ १
न्द्रक्षरातयऐयादौ । ह्वो३वा । नविदस्यन्तियू । ता

---

* ऋ० गा० २प्र० १अ० १२सा० ।

१२ १ २ १२ २ २
या२३: । ऐया२३त् । औ२३होवा । यदावाजस्यगो ।

१ १२ १ २ १ २ १ १२ १
माता२३: । ऐया२३त् । औ२३होवा । स्तोतृभ्योम ए

१२ १ १२ १ २ २
धतें । माघा२३म् । ऐया२३त् । औ२३होवा३ ४ ३ ।

१
औ२३४५ई । डा(३) ॥ ११ * ॥ [२]

५ २ ४२ ५ ४२ ५● २ १ २
॥ कालेयम्† ॥ इन्द्र वा३यिश्वाश्ववीवृधान् । समूद्र

१ १ १ २ १ २ ५
व्या । चसङ्गिरा२३: । रथा३यि । ता२ ३ ४ । मएर ।

२ २ १२ ३२ १ २ ५ ४
था३यिनाम् । वाजानाएसौ । वा३४३ओ३४वा । पतो

५ २ १ ४ ५ ४२ ५ २२ १
५ यिम्पतायिम् ॥(१) सख्ये ता३इन्द्रवाजिनाः । माभा

२ १ २ ३ ० १ २ १
यिमशा । वसस्पता२३यि । तुवा३म् । आ२३४ । भिं

५२ २ १ १२ ३ १ २ ५ ४
प्रनो । नू३माः । जेतारमौ । वा३४३ओ३४वा । परा

५ २ १ ४ ५ ४२ ५ १ १ १
५ जिताम् ॥(२) पूर्वीरा३यिन्द्रस्यरातयाः । नवायिद्

१ २ ३२ २ १ १ १ ५२
स्या । तियूतया२३: । यदा३ । वा२३४ । जस्यगो ।

● ऊ० गा० ७प्र० १अ० ११सा० । †'मद्राकालेयम्'—इति ख० पु० ।

२ २ १र ३र २ ५र ५ ४
मा३ताः। स्तोतभ्योमौ। वा३४३ओ३४वा। क्रताइवि
४
मघाम्। ह्वोपुई। डा(३)॥ ३ *॥[३]

१ र र १ १ १
॥ नार्मधम्॥ इन्द्र विश्वाअवीवृधाइने। स। मू। द्र
१ २ १ २ २ १ ३ ५ २ १
व्या। चसाङ्गाइयिराः। रथाइयिता२३४माम्। रथा
२ र ५ १ र ५ २र
यिनाम्। औहौह्वो२३४वा। वा२३४जाहायि। नाए्
१ २ ३र र ५ १ ५र
सात्पाता। औह्वौह्वो२३४वा। पा२३४तीम्। एह्विया
५ २ र र २ र १ २
ईहा॥(१) सख्येतइन्द्रवाजिनाइए। मा। भायि। म।
१ २१ २ २ १ ३ ५ २१ २
घा। वसास्याइताये। तुवाइमा२३४भौ। प्रनोनूमा।
३र र ५ १ ५ २१ २ ३र
औहौह्वो२३४वा। जा२३४यितहायि। रमापारा। औ
र ५ १ ५र ५
ह्वौह्वो२३४वा। जा२३४यिताम्। एह्विया ई हा॥(२)
१र र र २ १ २ २ २
पूर्वीरिन्द्रस्यरातयाइए। न। वायि। द्। स्या। ति
१ २ २ १ ६ ५ २ १ २ ३र र
यूताइयाः। यद्वा२वा२३४जा। स्यगोमाता। औह्वौ

---

० ऋ० गा० २१५० १ च० ३मा०

५ १ ५ २१ १ २ २१
ह्वोरवा । स्तोरवतृहायि । भ्योमाऽहाता । ओ

२ ५ १ ५२ ५ ४
हौहोरवा । मारवघाम । एहयाईहा । होवुई ।

डा(३) ॥ २ * ॥ [४] १९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य तृतीयस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः † ॥ ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।

पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ३ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तरायन्ये तृतीयोऽध्यायः ‡ ॥

---

* उ० मा० २१प्र० २ख० १सा० । † 'इति द्वितीयमहः'—इति वि० ।

‡ "अत्र द्वितीयप्रपाठकस्यार्द्धः समाप्तः"—इत्येव मूल-पद-विवरणादि-सम्मतः न तु "तृतीयो" नापि "अध्यायः"—इति ।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ २ ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्याय आरभ्यते* ॥

तत्र,

प्रथम-खण्डे—

एतेअसृग्रमिति प्रथमतृचे—प्रथमा ।

३ १ २ ७ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २
एतेअसृग्रमिन्दवस्तिरःपविचमाशवः ।

१ २ ३ १ २२
विश्वान्यभिसौभगा ॥ १† ॥

"तिरः पविचं"‡ तिर्यग् गच्छन्तं द्रुतापवित्रं प्रति "आशवः" शीघ्रगामिनः "एते" पवमाना "इन्दवः", सोमाः "विश्वानि" सर्वाणि "सौभगा" सौभगानि धनानि ¶ "अभि" लक्ष्य "असृग्रम्" ऋत्विग्भिः सृज्यन्ते ॥ १ ॥

---

* 'इदानीं चतुर्थमध्यारभ्यते'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७, १, १४, १ । ‡ 'तिरः=अधः'—इति वि० ।

¶ 'विश्वानि अभिसौभगा—विश्वानि सर्वाण्यभिसौभाग्यानि'—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

२ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ १ २
विघ्नन्तोदुरितापुरुसुगातोकायवाजिनः ।

१ २ ३ २ ३ १ २
त्मनाकृणवन्तोअर्वतः ॥ २* ॥

"वाजिनः" बलवन्तः† सोमाः "पुरु" बहूनि "दुरिता" दुरितानि "वि घ्नन्तः" विशेषेण नाशयन्तः "तोकाय" अस्माकं पुत्रायः‡ "सुगा" अतिसुखरूपाणि धनानि¶ "अर्वतः" अश्वांश्च "त्मना" आत्मना स्वयमेव "कृणवन्तः" ददत इत्यर्थः । ऋत्विग्भिः सृज्यन्त इति पूर्वेण सम्बन्धः ॥

"त्मना"-"तना"इति—इति पाठौ, "अर्वतः"-"अर्वते"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ क २ र २ २
कृणवन्तोवरिवोगवेभ्यर्षन्तिसुष्टुतिम् ।

१ २ ३ १ १ ३ १ २
इडामस्मभ्यंसंयतम् ॥ २ § ॥ १

---

* ऋ० वे० ७, १, २४, २ ।

† 'वाजिनः--अन्नवन्तः'—इति वि० ।

‡, ¶ 'सुगातोकाय—सुखाय पुत्रपौत्राय'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ७, १, २५, ३ ।

सोमाः अस्माकं "मवे" "अस्मभ्यं" च "संयत्त" यद्यस्मात् संयच्छति। तद् "वरिवः" धनम् "इडाम्" अन्नञ्च "जघ्वन्तः" कुर्वन्तः "सुष्टुतिम्" अस्मदीयां शोभनां स्तुतिम् * "अभ्यर्षन्ति" आभिमुख्येन गच्छन्ति ॥ २ ॥ १

अथ द्वितीयतृचे—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३१२ ३१२ १२

राजामेधाभिरीयतेपवमानोमनावधि।

३१ २ २१२

अन्तरिक्षेणयातवे ॥ १ † ॥

"मनो अधि" मनुष्ये यागं कुर्वाणे सति‡। यद्वा मनावधि मनुर्मन्तव्यो यज्ञस्तस्मिन् "पवमानः" पूयमानः पुनानो वा "राजा" [राज-शब्देन सोमोऽभिधीयते "सोमं राजानमकृण्वन् (य० मा० २८, ७२)"—इत्यादिषु दृष्टत्वात्. स राजा] सोमः "मेधाभिः" स्तुतिभिः¶ सह "ईयते" गच्छति। कुत्र? "अन्तरिक्षेण" आकाशमार्गेण द्रोणकलशं प्रति "यातवे" यातुम्। द्रोणाभिगमन-कालेहि स्तोतृभिः स्तूयते खलु ॥ १ ॥

---

* 'सुष्टुति—सुष्ठु स्तुतिम्'—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, १,४, १।

‡ 'मनौ अधि—मनुष्ये यजमाने निमित्तभूते'—इति वि०।

¶ 'मेधाभिः ईयते—ऋत्विग्यजमानानां प्रज्ञाभि'—इति वि०।

अथ द्वितीया ।

१ १ १ १ १ १ २ १ १ २
आनस्सोमसहोजुवोरूपन्नवर्चसेभर ।

३ १ १ १ २
सुष्वाणोदेववीतये ॥ २ * ॥

हे "सोम !" "देववीतये" देवानां पानाय देवानां कामाय वा † "सुष्वाणः" अभिषुतो वा त्वं "सहः" शत्रुभिर्भवन-समर्थं बलं "जुवः" [जु—इति गत्यर्थः ‡] शत्रून् प्रति शीघ्र-गमनं ¶ यद्वा सर्वतो गमनशीलं बलं । किञ्च ["न"—इति चार्थे §] "वर्चसे" [वर्च दीप्तौ (भ्वा०, आ०) दीप्त्यै सर्वत्र प्रका-शनाय रूपञ्च "नः" अस्मभ्यम् "आ भर" आहर प्रयच्छ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
आनइन्दोशतग्विनङ्गवाम्पोषꣳस्वश्वयम ।

२ २ १ १ ३ १ २
वहाभगत्तिमूतये ॥ ३ ॥ ॥ २

---

* ऋ० वे० ७, २, ४, २ ।

† 'देववीतये ० ० ०—देवानां दानाय भक्षणाय वा'—इति वि० ।

‡ निघण्टौ गतिकर्मसु षष्ठीचतुर्थ्यन्तमत्वेन पठितम् (२, १४) ।

¶, § 'जुवः—रूपम् । न—न शब्द उपमार्थीय रूपमिव'—इति वि० ।

॥ ऋ० वे० ७, २, ४, २ ।

हे "इन्दो" पात्रेषु क्षरणशील ! दीपनशील ! वा हे सोम "शातग्विनं"* शतसहस्रसङ्ख्याकाभिः गीर्भिः युक्तं "गवां पोषं" गवादीनां पुष्टिवर्द्धनं "रयिं" शोभनाश्व-सङ्ग-सहितं "भगत्तिं" भगदत्तिं भजनीय-धन-दानञ्च † "ऊतये" रक्षणाय "नः" अस्माकम् "आवह" प्रापय । गवादीश्च तेषां हृदिं प्रयच्छेत्यर्थः ॥ ३ ॥ २

‡ तन्त्वानृम्णानीति पञ्चर्चं तृतीयं सूक्तम् ।

तत्र प्रथमा ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २

तन्त्वानृम्णानिबिभ्रतꣳसधस्थेषुमहोदिवः ।

१ २ ३ १ २

चारुꣳसुकृत्ययेमहे ॥ १ ॥

"महोदिवः" महतोद्यलोकस्य¶ "सधस्थेषु" सहस्थानेषु स्थितं, "नृम्णानि" धनानि § "बिभ्रन्तं" अस्मदर्थं धारयन्तं "चारु" कल्याणं ‖ हे सोम ! "तं" तादृशं पवमान-लक्षणं "त्वा" त्वां "सुकृत्यया" शोभन-क्रियया "ईमहे" धनानि याचामहे** ॥ १ ॥

---

* 'शातग्विनं—शतसङ्ख्यातम्'—इति वि० ।

† 'भगत्तिं—शोभमानप्रतिपत्तिम्'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, ५, १ ।

¶ 'महोदिवः—सकाशात्'—इति वि० ।

§ 'नृम्णानि—धनानि बलानि वा'—इति वि० ।

‖ 'चारु'—शोभनम्'—इति वि० ।

** "ईमहे"—इति याच्ञाकर्मसु निघण्टौ । प्रथमं पदम् (३, १९) ।

अथ द्वितीया।

१ २ २क २र ३ १ १ ३ १ २
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यम्महामहिव्रतम्मदम्।
३ १ २र ३ १ २
शतम्पुरोरुरुक्षणिम्॥ २*॥

हे सोम! "संवृक्तधृष्णु" संवृक्ताः सञ्छिन्नाः धृष्णवो धर्षण-शीलाः शत्रवो येनासौ संवृक्तधृष्णुः, तम्†, "उक्थ्यं" उक्थार्हं प्रशस्यम्, ‡ "महामहिव्रतं" महीय-बहु-कर्माणं, ¶ "मदं" मदकरं "शतं" बहूनि "पुरः" शत्रूणां पुराणि "रुरुक्षणिं" विनाशयन्तम्; त्वां धनानाम् ईमहे इति § सम्बन्धः॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ २ २ ३क२र ३ १ १ ३ २
अतस्त्वारयिरभ्ययद्राजानꣳसुक्रतोदिवः।
३ १ २ ३ १ २
सुपर्णोअव्यथीभरत्॥ ३ ॥॥

---

० ऋ० वे० ७, १, ५, २।

† 'संवृक्तधृष्णुम्—अतिशयेन संवर्त्तकं धृष्णुं धारणात्मकम्'—इति वि०।

‡ 'उक्थ्यम्—उक्थानि स्तोत्राणि यत्र विद्यन्ते स उक्थ्यः, तम् उक्थ्यं शंसम्'—इति वि०।

¶ 'महामहिव्रतं—महेति महान्तं व्रतमन्नं कर्म वा यत्र, स महिव्रतः, तं महिव्रतम्'—इति वि०। महदर्थशब्दद्वयस्यातिशयत्वं गम्यतइति भावः।

§ पूर्वचर्चि श्रुतम्।

॥ ऋ० वे० ७, १, ५, ३। "रश्मिमभिराज"—इति च तत्र पाठः।

हे "सुक्रतो" शोभनकर्मन् * पवमान सोम! "रयिः" रयिम् धनम्प्रति "अभि अयत्" † अभिगमयति "राजानं" ‡ "त्वा" त्वाम् "अतः दिवः" अमुष्मात् द्युलोकात् "अव्यथी" व्यथा-रहितः "सुपर्णः" श्येनवत् ¶ "भरत्" आहरत्। तथाच श्रूयते—'आदाय श्येनोऽभरत् सोमम् (ता० ब्रा०)'—इति॥

"अव्यथी"-"अव्यथिः"—इति पाठौ॥ ३॥

अथ चतुर्थी।

१ १ ३ १२ ३ १ २८ ३१ २
अधाह्हिन्वानइन्द्रियञ्ज्यायोमह्हित्वमानशे।

३ १ २८
अभिष्टिक्रद्विचर्षणिः॥ ४ §॥

"अधा" अथ "विचर्षणिः" कर्मणां विद्रष्टा॥ "अभिष्टि-क्रत्" यजमानानाम् अभीष्ट-फलस्य कर्त्ता सोमः** "इन्द्रियं" स्वकीयं फलं †† "ह्हिन्वानः" प्रेरयन् "ज्यायः" प्रशस्यतरं "मह्हित्वं" महत्वम् "आनशे" प्राप्नोति‡‡॥ ४॥

---

* 'सुक्रतो—सुक्रतु शोभनकर्म'—इति वि०।

† 'अयत्—आनयत्'—इति वि०।

‡ 'राजानं—सोमम्'—इति वि०।

¶ 'सुपर्णः—पक्षीभूत्वा'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, १, ५, ४।

॥ 'विचर्षणिः—विविधानां पुरुषाणां स्वामी'—इति वि०।

** 'अभिष्टिक्रत्—अभिष्टिः यजमानः तं यः करोति स अभिष्टिक्रत्'—इति वि०।

†† 'इन्द्रियम्—इन्द्रस्य रूपं सोमम्'—इति वि०।

‡‡ 'आनशे—अश्नुते प्राप्नोति'—इति वि०।

अथ पञ्चमी ।

२ २ १ २ १ २ १ २
विश्वस्माइत्स्वर्दृशे साधारणꣳरजस्तुरम् ।

२ २ १ २ २ १ १
गोपामृतस्यविर्भरत् ॥ ५ * ॥ ३

"रजस्तुरम्" † उदकस्य प्रेरकम् "ऋतस्य" यज्ञस्य "गोपां" गोपयितारꣳ‡ "विश्वस्मै" सर्वस्मै "स्वर्दृशे" देवाय ¶. "साधारणम् इत्" समानम् § आवसन्तं सोमं "विः" पक्षौ ‖ श्येनो "भरत्" स्वर्गादाहरत् ॥ ५ ॥ ३

अथ ऋचात्मके चतुर्थसूक्ते—

प्रथमा ।

२ १ २ २ १ २ १ १ २ १ २
इषेपवस्वधारयाम्मृज्यमानोमनीषिभिः ।

१ २ २ १ २८
इन्दोरुचाभिगाइहि ॥ १ * * ॥

---

* ऋ० वे० ७, १, ५, ५ । "विश्वस्माइत्स्व०"—इति ख० पु० पाठः । "विश्व-स्माइत्स्व०"—इति मु० पाठः ।

† 'रजस्तुर—रज.-सयुक्तम्'—इति वि० ।

‡ गोपां—गमयाध्वानसयुतम्'—इति वि० ।

¶ 'स्वर्दृशे—स्वः स्वर्गलोकस्य, दृशे दर्शनाय'—इति वि० ।

§ 'इत्—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

‖ 'विः—भक्षणीयम्'—इति वि० ।

** ऋ० आ० ६, १, २, ८ (२ भा० ६४ पृ०) = ऋ० वे० ७, १, ३८, २ ।

हे "इन्द्रे" सोम! "मनीषिभिः" ऋत्विग्भिः "मृज्यमानः" शोध्यमानः त्वम् "इषे" अस्माकमन्नाय "धारया" "पवस्व" क्षर। "रुचा" रोचमानेनान्धसा "गाः" पशून् "अभीहि" अभिगच्छ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ १ १२ ३ २ ३ १ २
पुनानोवरिवस्कृध्यूर्ज्जनायगिर्वणः।
१ २ २ २ ३ १ २
हरेसृजानआशिरम् ॥ २ * ॥

हे "गिर्वणः" गीर्भिर्वननीय! "हरे" हरितवर्ण सोम! "आशिरं" † क्षीरं प्रति "सृजानः" विसृज्यमानः "पुनानः" पूयमानः त्वं "जनाय" ‡ जनार्थं "वरिवः" ¶ धनम् "ऊर्जम्" § अन्नञ्च "कृधि" कुरु ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ २ २ १ २ २ १ २ ३ २
पुनानोदेववीतयइन्द्रस्ययाहिनिष्कृतम्।
३ २ ३ १ २ ३ २
द्युतानोवाजिभिर्हितः ॥ ३ ॥ ४

---

* ऋ० वे० ७, १, ३८, ४।

† 'आशिरं—क्षीरं दधि वा'—इति वि०।

‡ 'जनाय—यजमानार्थम्'—इति वि०।

¶ 'वरिवः—वरिष्ठम्'—इति वि०।

§ 'ऊर्जम्—अन्नं यशो बलं वा'—इति वि०।

‖ ऋ० वे० ७, १, ३८, ५।

हे सोम! "वाजिभिः" हविर्लक्षणान्नयुक्तैर्यजमानैः सह* "द्युतानः" दीप्यमानः "देववीतये" यज्ञार्थं "पुनानः" पूयमानः "हितः" हितकरः † त्वम् "इन्द्रस्य" "निष्कृतं" स्थानं "याहि" गच्छ ॥

"हितः"-"यतः"—इति पाठो ॥ ३ ॥ ४

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायण्यस्य चतुर्थस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

द्वितीय-खण्डेण—

प्रथमर्चे—प्रथमा।

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २

अग्निनाग्निःसमिध्यतेकविर्गृहपतिर्युवा।

२ २ ३क २र

हव्यवाड्जुह्वास्यः ॥ १ § ॥

---

* 'वाजिभिः—वाजसन्नश्च पुरोडाशादि-लक्षणं, तद्येषामस्ति ते वाजिनः ऋत्विग्यजमानाः तैर्वाजिभिः; अथवा वाजसनेयैः वाजिभिः अध्वर्युभिः'—इति वि०।

† 'हितः—निहितः स्थापित इत्यर्थः—इति वि०।

‡ 'वक्ष्यमाणमुक्थम्'—इति वि०।

¶ 'सप्तदशस्तोमिकं भेदमाह। इदानीमाज्यानि। आग्नेयम्—इति वि०।

§ ऋ० वे० १, १, २२, ६।

"अग्निः" आहवनीयाख्यः तस्मिन् प्रक्षिप्यमाणेन "अग्निना" निर्मथ्यन-प्रक्षीतेन वा सह "समिध्यते" सम्यग् दीप्यते*। "कौह्यो ऽग्निः? "कविः" मेधावी "गृहपतिः" यजमान-गृहस्य पालकः "युवा" नित्य-तरुणः "हव्यवाट्" हविषोवोढा [वहतेः "वहश्च (३, २, ६४)"—इति णिव-प्रत्ययः; णिस्वादुपधा-वृद्धिः (७, २, ११५) 'गतिकारकोपपदात् कृत् (६,२,१३९)"—इत्युत्तर-पद-प्रकृति-स्वरत्वम्] "जुह्वास्यः" जुह्वरूपेण मुखेन युक्तः† [हूयते अनयेति जुहूः "हुवः श्नुवश्च (उ०, २, ६१)" —इति क्विप्; तत्सन्नियोगाद् (३, २, १७८ वा०) दीर्घश्च; श्नुवद्भावात् द्विर्भावः; चुत्व-जश्त्वे; प्रातिपदिक-स्वरेणान्तो-दात्तः (फि०१, १); जुह्वास्यं यस्येति बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृति-स्वरत्वेन स एव शिष्यते (८, २, १); शेष-निपातः; यणादेशे "उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य (८, २, ४)"—इत्या-कारः स्वरितः] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २८ २१२ ३ १२ २१ २
यस्त्वामग्ने हविष्यतिर्दूतन्देवसपर्यति।
१ २ ३१२
तस्यसम्प्राविताभव ॥ २ ॥

---

* अग्निनाग्निः समिध्यते—अग्नोनां वेवेत्याहोन्याकरोति। तेन निर्मथ्याग्निना अग्निः समिध्यते सवनीयः'—इति वि०।

† 'जुह्वास्यः—अहुते आस्ये यस्य जुह्वास्यः। अथ जुहोति क्रिया यस्य आस्ये क्रियते। अथवा अहुनामा शुक्र आस्ये मुखे यस्य स जुह्वास्यः'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, १, १२, २।

हे "अग्ने!" "देव!" "यः" "हविष्मतिः" यजमानः "दूतं" "त्वाम्" "सपर्यति" * परिचरति। तस्य यजमानस्य "पाविता" "भव त्र" अवश्यं रक्षको भव। [हूयत इति हविः "अर्ति-ह्वचि (उ०,२,१०७)"—इत्यादिना इसिः, प्रत्यय-स्वरेण इकार उदात्तः (३, १, ३), हविषः पतिः हविष्मतिः, "नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य (८, ३, ४५)"—इति षत्वम्, "पत्यावैश्वर्ये (६, २, १८)"—इति पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम्। सपर्यति—सपर-शब्दात् "कण्ड्वादिभ्यो यक् (३, १, २७)"—इति यक्, धातुप्रकरणात् गुणप्रतिषेधार्थात् यकः किच्चाच्च सपरशब्दस्य धातुत्वात्ततोविहितस्य यक आर्धधातुकत्वे सति "अतोलोपः(६,४,४८)"—इति लोपः, "सनाद्यन्ता धातवः (३,१, ३२)"—इति धातुसञ्ज्ञायां तिप्, "कर्त्तरि शप् (३,१,६८)", तस्मिन् पूर्वस्य "अतोगुणे (६, १, ८६)"—इति परपूर्वत्वम्, यकः प्रत्यय-स्वरेणोदात्तत्वम् (३, १, ३), शपा सह एकादेशस्य "एकादेशउदात्त० (८, २, ५)"—इत्युदात्तत्वम्, "तिङतिङः (८, २, २८)"—इति निघातो न भवति "यद्वृत्तान्नित्यम् (८, १, ६६)"—इति प्रतिषेधात्] ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ २ २ ३ १ २ २ १ २ २ १ २
योऽअग्निन्देववीतयेहविष्माऽआविवासति।

१ २
तस्मैपावकम्मृडय ॥ २ † ॥ ५

---

* "सपर्यति"—इति परिचरणकर्मसु तृतीयं नैघण्टुकम् (२, ५)।

† ऋ० वे० १, १, २२, २।

"हविष्मान्" हविर्युक्तो "यः" यजमानः "देववीतये" देवानां हविर्लक्षणहेतुयागार्थम् "अग्निम्" "आविवासति" अग्नेः समीपे विशेषेणागत्य परिचर्यां करोति *। हे "पावक" अग्ने! "तस्मै"† "सृज़य" तं यजमानं सुखय। [देववीतये—'वी गति-प्रजन-कान्त्यसन-खादनेषु (अदा०, उभ०)'—इत्यस्मादन्नार्थात् क्तिन्, देवानां वीति र्यस्मिन् यागे स देववीतिः, "बहुलाधो पूर्वपद-प्रकृतिस्वरत्वम्, "नञ्विषयस्थानिसन्तस्य (फि०, २, ३)"—इति पर्य्युदासाद्धविः-शब्दोदात्तः, मतुपः सर्वानुदात्तत्वात् स एव ग्रिह्यते। आविवासति—'वा गति-गन्धनयोः (अदा० प०)'—अस्मादन्तर्भावित-ण्यर्थादागमयितुमिच्छतीत्यर्थे सन्, आह्वानेच्छा; परिचर्यायां पर्यवस्यतीति विवासति-शब्दः परिचर्यार्थे निघण्टौ (३, ५, १०) पठितः, द्विर्भावः, अभ्यासस्य ह्रस्वः (७, ४, ५९), "सन्यतः (७, ४, ७९)"—इति इत्वम्, "अनित्यादिर्नित्यम् (६, १, १९७)"—इत्याद्युदात्तत्वम्, "तिङ तिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "यङ्लुग्लुग्वि-त्यम् (८, १, ६६)"—इति प्रतिषेधात्. "तिङि चोदात्तवती (८, १, ७१)"—इत्याङो "सहसुपेत्यत्र (२, १, ४) सहेति योगविभागादाङस्तिङा सह समासे समासान्तोदात्तत्वे प्राप्ते (८, १, २२३) "परादिश्छन्दसि बहुलम् (६, २, १९९)"—इत्युत्तर-पदाद्युदात्तत्वम्। तस्मै—"क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (२, ३, १२ वा०)"—इति सम्प्रदानत्वाच्चतुर्थी ॥ ३ ॥ ५

---

* 'आविवासति—दीपयति'—इति वि०।

† 'तस्मै पावक—चतुर्थ्यर्थे वा द्वितीया-स्थाने भवति, तं पावकम्'—इति वि०।

अथ द्वितीयऽर्चे*—प्रथमा ।

२ १ २ २१,१ २ १ १ २ १ २

मित्रꣳहुवेपूतदक्षंवरुणञ्चरिशादसम् ।

१ १ १ २ २ ३ १ २

धियञ्घृताचीꣳसाधन्ता ॥ १ † ॥

अहमस्मिन् कर्म्मणि हविः-प्रदानाय "पूतदक्षं" ‡ पवित्रबलं "मित्रं" "हुवे" आह्वयामि [ह्वयतेः "बहुलञ्छन्दसि (२, ४, ७३)"--इति शपोलुकि सति "ह्वः सम्प्रसारणम् (६, १, ३२)"--इत्यनुवृत्तौ 'बहुलं छन्दसि (६, १, ३४)"--इति सम्प्रसारणे उवङादेशः, "विङतिङः (८, १, २८)"--इति निघातः]। तथा "रिशादसं" रिशानां हिंसकानाम् अदस्मत्तारम् ¶ "वरुणञ्च" हुवे । कीदृशौ मित्रावरुणौ ? "घृताचीं" § घृतमुदकमञ्चति भूमिं प्रापयति या धी यैन कर्म्मणा तां घृताचीं "धियम्" "साधन्ता" साधयन्तौ ‖ ['राध साध संसिद्धौ

---

* 'मैत्रावरुणमाज्यम्'—इति वि० ।

† य० वे० २३, ५७ = ऋ० वे० १, १, ४, २ ।

‡ 'पूतदक्षं'—पूतं मेध्यं, दक्षं क्षीघ्रम्'—इति वि० ।

¶ रिशादसं—अन्यूना हिंसकम्'—इति वि० ।

§ 'घृताचीं—'घृतमुदकमस्य प्रदानसमर्थाम्'—इति वि० ।

‖ महीधरस्त्वेवमिमां व्याचष्टे—'द्वे मधुच्छन्दोदृषी गायत्र्यौ आद्या लिङ्गोक्तदेवत्या । मित्रं वरुणञ्चाहं ऊवे आकरयामि । कीदृशम्? पूतदक्षम् पूतं पवित्रं सदाचारं दक्षयति धन पुत्रादिभिर्वर्द्धयति पूतदक्षस्तम् दक्षकर्मण्योरित्यसाधिजन्मात् कर्मणण् । रिशादसम रिशन्ति हि सर्वान् रिशा दुष्टाः तान् समन्ताद्यति नाशयति रिशादस. तम् । रिश हिंसायाम् दस उपक्षये । द्वयोर्विशेषणे । कीदृशा

(दि०,प०)'—इत्यस्मादन्तर्भावितण्यर्थाच्चटः शत्रादेशे (६,१, १६१), अनु बाधित्वा व्यत्ययेन (३,१,८५) शप्, अदुपदेशत्वात् उपरि शह-प्रत्ययस्य ल-सार्वधातुकानुदात्तत्वम्, द्वितीयाद्विवचनस्य शपश्च "अनुदात्तौ सुपितौ (३,१,४)"—इत्यनुदात्तत्वे, "धातोः (६, १, १६२)"—इति धातुस्वर एव शिष्यते, "सुपां सु-लुक्० (७, १, ३९)"—इत्यादिना विभक्तेराकाराद्देशः ॥१॥

अथ द्वितीया।

३ १ २
ऋतेनमित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा।
१ २ ३ १ २
क्रतुम्बृहन्तमाशाथे ॥ २ * ॥

हे "मित्रावरुणौ!" [मित्रश्च वरुणश्चेति मित्रावरुणौ "देवता द्वन्द्वे च (६, ३, २६)"—इति पूर्वपदस्यानङादेशः, तादृशौ] युवां "क्रतुं" प्रवर्त्तमानमिमं सोमयागम् "आशाथे" आनशाथे व्याप्नुवन्तौ ["छन्दसि लुङ् लङ्-लिटः (३, ४, ६)"—इति वर्त्तमाने लिट्, नुड़भावश्छान्दसः]। केन? "ऋतेन" अवश्यम्भावितया सत्येन फलेन अस्मभ्यं फलं दातुमित्यर्थः। कीदृशौ युवाम्? "ऋतावृधौ" ['ऋतमित्युदक-नाम (निघ० १, १२, ६), सत्यं वा यज्ञं वा'—इति यास्कः†] उदकादीना-

---

युभौ? क्रियं कर्म साधयन्तौ साधयन्तौ। कीदृशीं क्रियम्? घृताचीं घृतमञ्चते क्षरते यत्र तत्'—इति।

* ऋ० वे० १, १, ४, २।

† 'ऋतमित्युदकनाम'—इत्यंशस्तु द्वितीय-पक्षविषये, 'सत्यं वा यज्ञं वा'—इति तु चतुर्थीनविषये इति विवेक्तव्यम्।

मन्यतमस्य वर्द्धयितारौ*। अतएव 'ऋतसृग्भा' उदकादीन् सृजन्तौ†। कीदृशं क्रतुम्? "हविष्मन्तम्" अङ्गैरुपाङ्गैश्चाति-प्रौढम्॥ २॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १ २८ ७ १ २३१ २
कवीनोमित्रावरुणातुविजाताउरुक्षया।
१ २ ३ १ २
दक्षन्दधातेअपसम्॥ ३ ॥ ६

"मित्रावरुणा" मित्रावरुणौ एतौ देवौ "नः" अस्माकं "दक्षं" बलम् "अपसं"¶ कर्म्म च "दधाते" पोषयतः, कीदृशौ? "कवी" मेधाविनौ, "तुवि-जाता" तुविजातौ बह्वनामुपकारक-तया समुत्पन्नौ, "उरुक्षया" बहु निवासौ [मित्रावरुणौ—मित्र: शब्दः प्रातिपदिक-स्वरेणान्तोदात्तः (फि० १, १), वरुण-शब्दो नित्स्वरेणाद्युदात्तः (६, १, १९७)। तुविजातौ—बह्वना-मुपकारकतया तत्सम्बन्धित्वेन जाता विति षष्ठीसमासे समासा-न्तोदात्तत्वम् (८, १, २२३), चतुर्थीसमासे हि "क्रौ च (६, २, ४५)"—इति क्वचित् पूर्वपदप्रकृतिस्वरः स्यात्। उरूणां बह्वनां क्षयौ उरुक्षयौ, 'क्षि निवास-गत्योः (तु० प०)'—इति धातोः क्षियन्त्यस्मिन्निति क्षय इत्यधिकरणे एव अच् प्रत्ययान्तस्य "क्षितः

---

* 'ऋताहवौ—ऋतमग्न तद् वर्द्धयतः'—इति वि०।

† 'अग्निष्टोमादिकम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० १, १, ४, ४।

¶ 'अपसं—कर्म'—इति वि०।

(६, १, १६२)"—इत्यन्तोदात्तत्वे प्राप्ते "चयो निवाचे (६, १, २०१)"—इत्याद्युदात्तत्वं विहितम्, समासे तु "समासस्य (८, १, २२३)"—इत्यन्तोदात्तत्वं बाधित्वा क्षदुत्तरप्रकृति-स्वरेण (६, २, १३९) प्राप्तमुत्तरपदाद्युदात्तत्वम् यद्यपि याचादि-स्वरेणान्तोदात्तत्वेन बाध्यते तथापि "परादिश्छन्दसि बहुलम् (६, २, १९९)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वं द्रष्टव्यम्। दक्षः—दक्षतेरुत्साहकर्मणो जित्वादाद्युदात्तः (६, १, १९७)। आप्यते फलमनेनेत्यपः कर्म, "आपः कर्माख्यायां क्त्वो नुट् च वा (उ० ४, १०९ दी० बृ०)"—इत्यन्नन्तस्य अपसम्भारेइत्यादौ निक्षा (६, १, १९७) दाद्युदात्तस्यापस्-शब्दस्यात्र व्यत्ययेन प्रत्ययाद्युदात्तत्वम् (३, १, ३)] ॥ ३ ॥ ६

अथ तृतीयतृचे*—प्रथमा।

१ २ १ ३ २ ८ ३ १ २ ८
इन्द्रेणसꣳहिदृक्षसेसञ्जग्मानोअबिभ्युषा।
३ १ २ ३ १ २
मन्दूसमानवर्चसा ॥ १ † ॥

हे मरुद्गण! त्वम् "इन्द्रेण" "सञ्जग्मानः" सङ्गच्छमानः "सं दृक्षसे हि" सम्यग् दृश्येथाः खलु, अवश्यमस्माभिर्द्रष्टव्य-

---

* 'ऐन्द्रमाज्यम्'—इति वि०।

† ऋ० वे० १, १, १२, २।

मित्यर्थः *। कीदृशेनेन्द्रेण ? "अबिभ्युषा" भीति-रहितेन कीदृशाविन्द्रमरुतौ ? "मन्दू" नित्य-प्रमुदितौ, † "समान-वर्चसा" तुल्य-दीप्ती ['पुरा कदाचित् हत्र-वध-दशायाम् इन्द्रस्य सखायः सर्वे देवा हत्र-खासेनाभिसारितास्तदानीमिन्द्रस्य हत्र-सम्बन्धि-सकल-सेना-जयार्थं मरुद्भिः सङ्गमी भूतः'—सोऽयमर्थो "हत्रस्यखसखाय (ऋ० आ० ४, १, ४, २, ६५६ पृ०)"—इति मन्त्रे सङ्गृहीतः ; 'इन्द्रो वै हत्रं हनिष्यन्'—इति ब्राह्मणे (ता०) प्रपञ्चितश्च ; इन्द्रशब्दः परमैश्वर्यवन्तं मरुद्गणञ्चाभिधत्ते, तदानीमिन्द्रस्य सम्बोधनं बहिरेवाध्याहर्त्तव्यम्। तथाचेयमृक् यास्केनैवं व्याख्याता—"इन्द्रेण हि सन्दृश्यमे सङ्गच्छमानोऽबिभ्युषा गणेन मन्दू मदिष्णू युवां स्थोऽपि वा मन्दुना तेनेति स्यात्, समानवर्चसेत्येतेन व्याख्यातम् (४, १२)"—इति। सन्दृश्यसे—सम्पश्येथाः "दृशेश्चेति वक्तव्यम् (७, १, ७ वा०)"—इत्यात्मनेपदम्, दृशेः "लिङर्थे लेट् (३, ४, ७)"—इति प्रार्थनायां लेट्, थासस्से (३, ४, ८०), "लेटोऽडाटौ (३, ४, ९४)"—इत्यड़ागमः, "सिबबहुलं लेटि (३, १, ३४)"—इति सिप्, "सत्र्ग्रा-पूर्वको विधिरनित्यः (प० शे० ९३)"—इति गुणाभावः, व्रश्चादिना (८, २, ३६) षत्वम्, "षढोः कः सि (८, २, ४१)"

* 'इन्द्रेण स हि दृश्यसे मरुद्गण इति वाक्यशेषः। अथवा व्यत्ययेन आख्यायिषसे—मरुद्गणेन दृश्यसे इन्द्रः। अथवा आदित्य इन्द्रोऽभिधीयते, मरुद्गणा रश्मिगणाश्चेति: सह दृश्यसे। अथवा इन्द्रेण आदित्येन, सङ्गच्छमानः सङ्गच्छमानः'—इति वि०।

† 'मन्दू—मदन-स्वभावेन'-इति वि०।

—इति वत्वम्, "आदेश-प्रत्यययोः (८, ३, ५९)"—इति सिपः षत्वम्, बहुल-ग्रहणात् सिपः परस्ताच्छबपि भवति, सिपा व्यवधानात् पञ्चम्यादेशो न भवति, अपः पित्त्वादनुदात्तत्वम् (३, १, ४), उकारस्य ल-सार्वधातुकत्वाद् ङित्त्वम् (६, १, १८६), धातु-स्वर एव शिष्यते (६, १, १६२), हि-शब्द-योगात् "तिङ-तिङः (८, १, २८)"—इति निघातो न भवति "हि च (८, १, ३४)"—इति प्रतिषेधात्। सञ्जमानः—गमेः सम्पूर्वात् छन्दसि लुङ्लङ्लिटः (३, ४, ६)"—इति वर्त्तमाने लिट्, "समोगम्यृच्छि० (१, ३, २९)"—इत्यात्मनेपद-निघातात् लिटः कानजादेशः (३, २, १०६), द्विर्भावः (६, १, ८), हलादि-शेषः (७, ४, ६०), अभ्यासस्य चुत्वम् (७, ४, ६१), "गमहन० (६, ४, ९८)"—इत्युपधा-लोपः, कानचश्चित्त्वा-दन्तोदात्तत्वम्, गति समासे (२, २, १८), कृदुत्तरपदप्रकृति-स्वरत्वम् (६, २, १३९)। अभिष्युषा—'ञि भी भये (जु०, प०), पूर्ववल्लिट् (३, ४, ६), "शेषात् कर्त्तरि० (१, ३, ७८)" —इति परस्मैपदम्, "क्वसुश्च (३, २, १०७)"—इति लिटः क्वसुरादेशः, तस्य कित्त्वाद् गुणाभावः (१, १, ५), अभ्यासस्य कुत्व-जश्त्वे (७, ४, ६८)—(८, ४, ५४) क्वादिनियमात् प्राप्तइट् (७, २, १३) "वस्वेकाजाद्धसाम् (७, २, ६७)"—इति नियमात् निवर्त्तते नञ्समासे तृतीयैकवचने भत्वाद् "वसोः सम्प्रसारणम् (६, १, १३१)"—इति वकारस्य उकारा-देशः, "सम्प्रसारणाच्च (६, १, १०८)"—इति पूर्वरूपत्वं बाधित्वा "एरनेकाच (६, ४, ८२)"—इति यणादेशः, अव्यय-

पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १६८), पूर्वेण सह संहिताया मोकारस्य "एङः पदान्तादति (६, १, १०९)"—इति पररूपत्वे प्राप्ते "प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे (६, १, ११५)"—इति प्रकृतिभावः । मन्द—'मद स्वप्न-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गतिषु' (भ्वा०, आ०.), "इदितो नुम् धातोः (७, १, ८५)"—इति नुमागमः, कुरित्यनुवृत्तौ "खरु-घसु-पीयु-नीलसु-खिगु (उ० १, ३६)"—इत्यत्राविभक्तिक-निर्देशादन्तेर्हिकुरितिपदात्त्वन्तरादुणि कुरित्युत्तम्, प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः (३, १, ३), द्विवचने सौ "प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (६, २, १०४), लृतोयैकवचने च "सुपां सु लुक्० (७, १, ३९)"—इत्यादिना पूर्वसवर्णदीर्घत्वम्, समानं वर्चो ययोरिति वा यस्येति बहुव्रीहिः, द्विवचने "सुपां सु-लुक्० (७, १, ३९)"—इत्याकारः, समान-पदस्य प्रातिपदिकान्तोदात्तत्वम् (फि० १, १), बहुव्रीहौ पूर्वपद-प्रकृति-स्वरेण (८, २, १), तदेवावशिष्यते ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २८१ २७ ३ १ २ १ १ २ ३ १

आदह स्वधा मनुपुनर्गर्भत्वमेरिरे ।

१ १ ३ १ २ १ १ ६

दधानानामयज्ञियम् ॥ २ * ॥

अहेत्यवधारणार्थः†] । "आत् अह" वर्णात्तीरनन्तरमेव "स्वधामनु" इतःपरं जनिष्यमाणमन्त्रमुदकं वा अनुलक्ष्य महतो

---

* ऋ० वे० १, १, ११, ४ ।

† "आदहेति च ह इति च विनिग्रहार्थौ धौ पूर्वेण सम्प्रयुज्यते । अथमहेदं करो त्वयमिद ह करिष्यतीति"—इति निरु० १, ४ .

देवाः "पुनः गर्भत्वम् या ईरिरे" मेघ-मध्ये जातस्य गर्भत्वं प्रेरितवन्तः* [प्रतिसवत्सर मेवं कुर्वन्तीति दर्शयितुं पुनः-शब्दः प्रयुक्तः]। कीदृशा मरुतः ? "यन्नियं" यन्नार्हं "नाम" "दधानाः" धारयन्तः। [सप्तसु गणेषु मरुतामौदृक् वातानामौदृक् चेत्यादीनि यज्ञ-योग्यानि नामान्यन्यत्राम्नातानि। "यज्ञः" —इत्यादिष्वष्टाविंशति-सङ्ख्याकेष्वन्ननामसु "उर्क्" (१५), "रसः" (१६), "स्वधा" (१७)—इति पठितम्, (निघ० २, ७) "अर्चिः"—इत्यादिष्वेकशत-सङ्ख्याकेषूदक-नामसु च "तेजः" (९६), "स्वधा" (९७), "अक्षरम्" (९८)—इति पठितम् (निघ० १, १२)। "आत्"-"अह"-निपातावाद्युदात्तौ (फि० ४, १२)। स्वधा—स्वं लोकं दधाति पुष्णातीति स्वधा, "आतोऽनुपसर्गेकः (३, २, ३), कृदुत्तरप्रकृतिस्वरत्वम् (६, २, १६९)। अनु-पुनः-शब्दौ निपातावाद्युदात्तौ (फि०, ४, १२)। गर्भस्य भावो गर्भत्वं प्रत्ययस्वरः (३, १, ३)। ईरिरे—अन्तर्भावितण्यर्थात् 'इण् गतौ (अदा०, प०)'—इत्यस्मादनुदात्तेतः परस्य लिटो झस्य इरेच्, चित्त्वादन्तोदात्तः (६, १, १६२), "सह सुपा (२, १, ४)"—इत्यत्र "सुपा" योगविभागादाङा सह तिङः "समासस्य (८, १, २२३)"—इत्यन्तोदात्तत्वम्, "इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः (३, १, ३६)"—इत्याम् न भवति मन्त्रत्वात् † अह-शब्द-योगाविघातोभावः "तु-पश्य-

---

* 'आदित्य-रश्मय उत्पद्यन्ते, सविता सह गच्छन्ति, नै. पुनरस्तमिते सवितरि गर्भत्वं यान्ति'—इति वि०।

† "कास्प्रत्ययादाममन्ते लिटि (३, १, ३५)"—इति सूत्रादिदं 'अमन्ते'—इत्यनुवर्तते रिति भावः।

प्रस्तावैः पूजायात् (८,१,२८)"—इति निषेधात्। दधान्नः—मानबन्धित्वादन्तोदात्तत्वे प्राप्ते (६, १, १६२) "अभ्यस्तानामादिः (६, १, १८९)"—इत्याद्युदात्तत्वत्। यन्नमर्हति यन्निः यम्, "यन्नर्त्विग्भ्यां घ-खञौ (५, १, ७१)"—इति घ-प्रत्ययः "प्राग्वतेयौनौयियः फ-ढ-ख-छ-घां प्रत्ययादीनाम् (७,१,२)"—इतीयादेयः प्रत्ययस्वरेण इकार उदात्तः (२, १, २)]॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ १ ५ २ १ २
वीड़ चिदारुजत्नभिर्गुहा चिदिन्द्रवह्निभिः।
१ २ ३ २ ३ १ २
अविन्दउस्रिया अनु॥ ३ *॥ ७

अस्ति किञ्चिदुपाख्यानम्—'पणिभिर्देवलोकाद् गावोऽपहृताः, अन्धकारे प्रक्षिप्ताः ताश्चेन्द्रो मरुद्भिः सहाजयत'—इति। एतच्च बह्वृचानुक्रमणिकायां सूचितम्—"पणिभिरसुरैर्निगूढा गा अन्वेष्टुं सरसादेत शुनौन्द्रेण प्रेषिता ता ऋग्भिः पणयोऽमित्रीयन्तः प्रोचुः"—इति। मन्त्रान्तरेऽपि दृष्टान्ततया सूचितम्—"निरुद्धा आपः पणिनेव गावः"—इति] तदेव उपाख्यान मभिप्रेत्योच्यते—हे "इन्द्र।" "वीडु चित्"† दृढमपि दुर्गमस्थानम् "आरुजत्नुभिः"‡ अभिभञ्जनशीलैः "वह्निभिः" वोढृभिः अन्यत्र

---

* ऋ० वे० १, १, ११, ५।

† 'चित्—इति पदपूरणः। वीडु अवस्रंसिषु स्थित'—इति वि०।

‡ 'अवस्रंसिषु स्थिता अगच्छोऽपयन्ति आरुजत्नव —इति वि०।

¶ दृढनामकैरस्त्रैभि —इति वि०।

नेतुं समर्थैः मरुद्भिः सहितस्त्वं "गुहा चित्" गुंहायामपि स्थापिता "उस्रियाः" गाः "अन्वविन्दः † अन्विष्य लब्धवानसि । ["ओजः" (१), "पाजः"(२)—इत्यादिषष्टाविंशति-सङ्ख्याकेषु बल-नामसु "दक्षः"(१३) "वोलु"(१४) "क्षोभम्" (१५)—इति पठितम् । (८, ९) नव-सङ्ख्याकेषु गो-नामसु "अघ्न्या"(१), "उस्रा" (२), "उस्रिया" (३)—इति पठितम् निघ० (२, ११)। वोडु—प्रातिपदिक स्वरः (फि० १, १)। चित्—आदिरुदात्तः । आरुजद्भिः—'रुजो भङ्गे (तु० प०) इत्यस्मादौणादिकः कत्नुच् प्रत्ययः, कित्त्वाद् (१, १, ५) गुणाभावः, चित्त्वादन्तोदात्तत्वम् (६, १, १६) समासे ऽङ्गुत्तर-पदप्रकृतिस्वरत्वञ्च (६, २, १६०)। गुहा—सप्तम्यां डादेशः (७, १, ३९), "ग्रामादीनाञ्च (फि०, २, १५)"—इत्याद्युदात्तः । वङ्क्षभिः—"वह्नि-प्रि-यु-स्यु-ग्ला-हा-त्वरिभ्योनिः (उ० ४, ५१)"—इति नि-प्रत्ययः, नित्त्वादाद्युदात्तः । अविन्दः—'श्नेमुचादीनाम् (७, १, १९)"—इति नुमागमः, लुङ्-लङ्-लृङ् क्षुड्दात्तः (६, ४, ७१)। वसन्तीति उस्रियाः वसोः कर्त्तरि यक् प्रत्ययः, षत्वाभावश्च बाहुलकादृहणीयः (३, १, ८५), उक्तं हि 'यत्र पदार्थविशेष मुक्तं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तद् ग्राह्यम् (३, १, ८५ भा०)'—इति, इकारः प्रत्ययस्वरेणान्तोदात्तः (३, १ ३) ॥ २ ॥ ७

---

० 'उस्रिया.—आदित्यरश्मय.—इति वि० ।

† 'अविन्द. विदज्ञानं (अदा० प०) —इत्यस्यैदं रूपम् —इति, 'अतु—आतुपूर्वश्च' इति च वि० ।

अथ चतुर्थं हृचे* प्रथमा ।

१२३१ २२ ०३१ २२३२ ३२
ताऊवेययोरिदम्यप्ने विश्वम्युराकृतम् ।

३ १ ०२ १
इन्द्राग्नीनमर्डतः ॥ १† ॥

"ता" तौ तादृशौ "इन्द्राग्नी" "हुवे" आह्वये । "ययोः" इन्द्राग्न्योः "पुरा" पूर्वस्मिन् काले "कृतं" "विश्व" सर्वम् "इदं" पूर्वासृक्षु कीर्त्तितं वीर्यं "पप्ने" पन्यते ऋषिभिः स्तूयते;—ताविन्द्राग्नी हुवे इत्यन्वयः । तौ चेन्द्राग्नी न "मर्डतः" [मर्डतिः हिंसाकर्मा (निघ०२, १९, १४)] स्तोतॄन् अहिंस्रः । अतोऽस्मान् आहुतौ रक्षतामिति भावः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२१ २३ २३ १२ ३१२
उग्राविघनिनाम्रधइन्द्राग्नीहवामहे ।

१ २ ३१२
तानोम्रडातईदृशे ॥ २‡ ॥

"उग्रा" उग्रौ उद्गूर्ण-बलौ अतएव "मृधः" शत्रून् "विघनिना" विघनितौ विशेषेण हतवन्तौ "इन्द्राग्नी" "हवामहे" आह्वयामहे । तौ चेन्द्राग्नी "ईदृशे" अस्मिन् सङ्ग्रामे "नः"

---

* 'ऐन्द्राग्नमाज्यम्'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ४, ८, २७, ४ ।

‡ ऋ० वे० ४, ८, २७, ५ ।

अस्मान् "मृळातः" सुखयताम् [यद्वा मृळातिः उपदंयाकर्मा ; नोऽस्माकं मृळातः उपदयां कुरुताम्] ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ १ २ १ २८ २ १ १ २८

हथोवृत्राण्यार्य्याहथोदासानिसत्पती।

१ २८ ३ २ ३ १ २

हथोविश्वाअपद्विषः ॥ २* ॥ ८

हे इन्द्राग्नी! "आर्या" आर्यैः कर्मानुष्ठातृभिः कृतानि "वृत्राणि" उपद्रवजातानि "हथः" हिंस्थः। तथा "सत्पती" सतां पालयितारौ सन्तौ "दासानि" दासाः कर्महीनाः† शत्रवः, तैः कृतानि चोपद्रवजातानि हथः। अपि च "विश्वाः" सर्वाः "द्विषः" द्वेष्ट्रीः शत्रुभूताः प्रजाः "अप हथः" विनाशयथः अतोऽस्माकमध्येव मेव कुरुता मिति भावः॥

"हथः"-"हनः"—इति पाठो ॥ २ ॥ ८

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य तृतीयस्याध्यायस्य

द्वितीयः खण्डः ‡ ॥ ४ ॥

---

* ऋ० वे० ४, ८, २८, १।

† 'दासानि—यादादीनि रक्षः-पिशाचादीनि'—इति वि०।

‡ 'उक्ता प्रातःसवनम'—इति वि०।

अथ तृतीयखण्डे*

प्रथमतृचे—प्रथमा।

३ १ २८ ३१२३१२३२३१२
अभिसोमासआयवःपवन्तेमद्यमन्दम्।

३ १ ३८ ३१२ ३१२ ३१२ ३१२
समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणोमत्सरासोमदच्युतः॥ १†॥

"आयवः" गमन-शीलाः "सोमासः" सोमाः "मद्य" मद्-करं मदम् आत्मीयं रसम् "अभियवन्ते" अभितो निर्गमयन्ति। कुत्रेत्युच्यते "समुद्रस्य" अन्तरिक्षस्य "अधिविष्टपे" अधिकं समुच्छ्रिते पवित्रे यद्वा समुद्रस्य यस्मात् समुद्द्रवन्ति रसास्तस्य कलशस्य "अधि" उपरि "विष्टपे" स्थाने पवित्रे निर्गमयन्ति। कीदृशाः? "मनीषिणः" मनस ईशितारो "मत्सासः" मदकराः "मदच्युतः" मदस्राविणः॥

"विष्टपे"-"विष्टपि"—इति पाठो, "मदच्युतः"-"स्रविदः" इति च॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ १ २८ ३ २ ३१ २ ३१३२३ २
तरत्समुद्रम्पवमानऊर्मिणाराजादेवऋतम्बृहत्।

३ २ ३१ ३१२ ३१ २३ १२ ३२०३१२
अर्षामित्रस्यवरुणस्यधर्मणाप्रहिन्वानऋतवृहत्॥२‡॥

---

* 'इदानीं माध्यन्दिनं सवनमुच्यते। ऋचोऽत्यन्ते—गायत्री वैष्टम्भादीनि सामानि, सान्तां नामत आर्षेयमुक्तम्'—इति षि०।

† ऋ० मा० ६, १, ३, ८ (२भा० ९६पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १४, ४।

‡ ऋ० वे० ७, ५, १५, १। "समुद्रिय."—इति च तत्र पाठः।

"पवमानः" पूयमानः "देवः" द्योतमानः "बृहत्" अत्यन्तम् * "ऋतम्" सत्यभूतः † "राजा" सोमः "समुद्रम्" अन्तरिक्षं कलशं वा "ऊर्मिणा" धारया ‡ "तरत्" तरति "हिन्वानः" प्रेयमाणः। "ऋतम्बृहत्" अत्यन्तं सत्यभूतः स सोमः "मित्रस्य वरुणस्य" मित्रावरुणयोः "धर्मणा" धारणार्थं "प्रार्षति" प्रार्षति प्रकर्षेण गच्छति ¶॥

"अर्षा"-"अर्षन्"—इति पाठौ॥ २॥

अथ अध्यास्यारूपा तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
नृभिर्यमाणोहर्यतोविचक्षणोराजादेवःसमुद्रियः॥ ३ §॥ ८

"नृभिः" कर्म-नेतृभिः ऋत्विग्भिः "यैमानः" नियम्यमानः "हर्यतः" स्पृहणीयो "विचक्षणः" विद्रष्टा "देवः" दीप्यमानः "समुद्रियः" अन्तरिक्षे भवः॥ "राजा" सोमः इन्द्रार्थं पवते इति शेषः॥

"यैमाणः"-"यैमानः" इति पाठौ॥ ३॥ ९

---

* 'बृहत्—महत् अथवा बृहत्साम'—इति वि०।

† 'ऋतं—सत्यम् अन्नम् प्रजापतिः यज्ञं वा'—इति वि०।

‡ 'ऊर्मिणा—उदकसङ्घातेन'—इति वि०।

¶ 'अर्षा—द्रष्टा'—इति वि०।

§ ऋ० मा० ९, १, ४, ३ (२मा० ११२पृ०)=ऋ० वे० ७, ४, १७, ४।

॥ "समुद्रः"—इत्यन्तरिक्ष नामसु पञ्चदशं नैघण्टुकम् (१, ३)। 'समुद्रियः—समुद्रात्मकः'—इति वि०।

॥ पौरुमद्गम् ॥ अभिसोमासश्चायवः। औहोवा।
एह्यिया। हाउ। पवन्तेमा२दियम्मदम्। समुद्रा१
स्या२। धायिविष्टपा३यि। मानौषा२३४यिणाः। मत्सा।
रासौवाओ२३४वा। हा३हायि। मदाय्च्युताः ॥(१)
मत्सरासोमदच्युतः। औहोवा। एह्यिया। हाउ। म
त्सरासो२मदच्युतः। तरात्मा१म्२। द्राम्यवमा३। ना
ऊर्म्मा२३४यिणा। राजा। दायिवौवाओ२३४वा। हा
३हायि। ऋताय्म्बृहात् ॥(२) राजादेवऋतम्बृहत्। औ
होवा। एह्यिया। हाउ। राजादेवा२ऋतम्बृहत्। अ
र्षामा१यिचा२। स्यावरुणा३। स्याधर्म्मा२३४णा। प्र
धायि। क्वानौवाओ२३४वा। हा३हायि। ऋताय्म्बृ
हात्। होय्इ। डा(३) ॥ १४ * ॥ [१]

* ऊ० गा० २प्र० १अ० १४सा०।

॥ उभयतःस्तोभं गौतमम् ॥ हावभिसोमासस्त्रायवो

हाउ। पावन्तेम। दियाम्मदा२३४म्। हाद्दोयि। सु

मुद्रस्याधिविष्टपे। मानीषिणा३४:। हाद्दोयि। मांस

रासा३४:। हाद्दो३। मदो२३४वा। च्यु५तो६हायि ॥(१)

हाउमत्सरासोमदच्युतोद्दाउ। मात्सरासः। मदाच्यु

ता२३४:। हाद्दोयि। तरत्समुद्रम्पवमा। नाऊर्म्मि

णो३४। हाद्दोयि। राजादायिवा३४:। हाद्दो३यि।

क्रतो२३४वा। बृ५द्दो६ हायि ॥(२) हाउराजादेवक्रत

म्बृहद्दाउ। राजादेवः। क्रतम्बृहा२३४त्। हाद्दोयि।

अर्षामित्रस्यवरुण। स्याधर्मणा३४। हाद्दोयि। प्रा

च्छिन्वाना३४:। हाद्दो३यि। क्रतो२३४वा। बृ५द्दो६

हायि(३) ॥ १५ * ॥ [२]

● ऋ० मा० १म० १अ० १५सा०।

॥ हिङ्कारं वामदेव्यम् ॥ अभिसो२३मास आयवः।

पाऽवन्ते मघम्मद ओ३ समुद्रस्याधिविष्टपाऽयिमनौ ह्वोइ। ऊ

म्मा२। पा२३यिणाः। मत्सरासोमदौ ह्वोइ। ऊम्मा२।

ऽच्युता। औ३ह्वोवा ॥(१) मत्सरा २ ३ सोमदच्युताः।

मात्सरासोमदच्युतन्तरत्समुद्रम्यवमाऽनऔ ह्वोइ। ऊम्मा

२। मा२३यिणा। राजादेवाऽऋतौ ह्वोइ। ऊम्मा२।

बृहात्। औ२३ह्वोवा ॥(२) राजादा २ ३ यिवऋतम्बृ

हात्। राऽजादेवऋतम्बृहादर्षामित्रस्यवरुणाऽस्यधी ह्वोइ।

ऊम्मा२। मा२३णा। प्रहिन्वानाऽऋतौ ह्वोइ। ऊम्मा

२। बृहात्। औ२३ह्वोवा। ह्वोइ। डा(३) ॥ ७ * ॥ [३]

॥ गायत्रपार्श्वम् ॥ आभौ। सोमास आ३१उवा२३।

या२३४वाः। पवन्ते मदियम्मद ओ३ समुद्राधिविष्टपेमनीषि

---

* ऋ० गा० ४प्र० २अ० ७सा०।

२ १ १ १ १ २ १ २ ७ २ १ ४ १
ग्ना२३४५ः। मत्सारा१सा२ः। मदा३। ऊं२३वा३। ष्यू

१ १ १ १ १ २ १ २ १
ता२३४५ः॥(१) मात्सा। रासामदा३१उवा२३। ष्यू

५ ० १ २ १ १ २ १ २ १ २ ८ १
२ ३४ताः। मत्सरासोमदच्युत्तरत्समुद्रम्पवमानऊर्मि

२ १ १ १ १ २ २ १ २ २ १ ४
ग्ना२३४५। राजादा१यिवा२ः। कृता३म्। ऊं२३वा

१ १ १ १ १ २ २ १ २ १
३। बृहा२३४५त्॥(२) राजा। दायिवकृता३१उवा२

५ १ २ २ १ २ १ २ १ २ १ २ १
३। बृ२३४हात्। राजादेवकृतम्बृहदर्षामित्रस्यवरुण

१ २ १ १ १ १ २ १ २ २ १
स्यधर्म्मणा२३४५। प्रहायिन्वा१नाः। कृता३म्। ऊं

४ १ १ १ १ १
२३वा३। बृहा२३४५त(३)॥ ८ * ॥ [४]

५ २ ४ २ ५ ४ २ ५ १ २ २
॥ पौरुहन्मनम्॥ अभिसो३मास्रायवाः। पावन्ते

१ १ १ २ २ १
म। दियाम्मा१दा२म्। मादा२म्। सामुद्रस्या। धा

२ १ २ १ २ ३ ५
यि। विष्टपा३यि। विष्टपा३यि। मानीषा२३४यिषाः।

१ २ २ १ २ ३ ५ ४
मात्सरासो। मादच्यु२३४ताः। मदा ५ च्युताः॥(१)

---

* ऊ० मा० ४प्र० १ख० ८सा०।

५ २र १ २ १ १ २
मत्सरासः। मदाच्यू१ता२:। च्यूता२:। तारन्तमु।

१ २ १ २ १ १ १ ५ २
ग्राम्। पवमा३। पवमा३। नाऊर्मा२३४यिष्णा। रा

२र २ १ २ ३ ५ ४ ५र २
जादेवा:। आर्त्तम्बृ२३४हात्। ऋतापुम्बृहात्॥(२) राजा

२ ४५ ४ ५ १ २ २र १ २ १
दा३यिवऋतम्बृहात्। राजादेवः। ऋतांबृ१हा२त्। आ

२ १ १ २ १ २ १ १ १
र्षामित्र। स्या। वरुणा३। वरुणा३। स्याधर्मा २ ३

५ १ २ ३ १ २ ३ ५ ४
४णा। प्राहिन्वानाः। आर्त्तंबृ२३४हात्। ऋतापुम्बृहा

४
त्। होऽ५ई। डा(३)॥ ८ *॥ [५]

५ २ ४२५ ४२ ५ १ २र
॥ द्वैगतम्॥ अभिसो३मासआयवा:। पावस्ति म।

१ २ ३ २ ६ २ १ २ १ २
दियाम्मा१दा२म्। समू३। द्यौ३द्यो३वा। द्रस्याधिवि

२ २ १ १ ३ ५२ २
षयेमानी१षिषा२:। मत्सा२३। रा२सा२३४औद्योवा।

२ १ ३१११ ५ २ ४२५४ ५
एइ। मदा२च्युता२३४५:॥(१) मत्सरा३सोमदच्युता:।

१ २२ १ २ ३ २ ६ २ १
मात्सरासः। मदाच्यू१ता२:। तरा३त्। द्यौ३द्यो३वा।

---

* ऊ० मा० ४प्र० २च० ८सा०।

१ २ २ १२ १ २
समुद्रम्यवमानाऊ१र्मिणा२। राजा२३। दा२धिवा२३

५२२ २ १ ३१११ ५२२
४औहोवा। ए३। कृता२म्बृहा२३४५त्॥(२) राजा

१ ४५४ ५ १२२ १ २
हा३यिवकृतंबृहात्। राजादेवः। कृतांबृ१हा२न्त्।

२१ ६ २ २ १ ७
अर्षा३। हौ३। हो३वा। मित्रस्यवरुणस्याधर्माणा२।

१ १ ३ ५२ २ १ १ ३
प्रहा२३यि। न्वा२ना२३४औहोवा। ए३। कृता२म्ब हा

११ ११
२३४५त्३) ॥ १० * ॥ [६]

१ २२ २ १
॥ हारायणम् ॥ अभिसोमौहो२यिमआयवाः। पा

२ २ १ २
वन्तेमद्यमदम्। समूद्रा३स्या। धिविष्टपायि। मना

२ १ १ २२ २ १ ५
३हायि। पायिणा२ः। मत्सरासोमदोवा३ओ२३४वा।

४ ५ २२ १
च्यूतोहहायि ॥(१) मत्सरासोहो२यिमदच्युताः। मा

२२ २ २
त्सरासोमदच्युतः। तरात्सा३मू। द्रपवमा। नऊ३

२ १२ २ २ १ ५ ४
हा। मायिणा२। राजादेवकृतोवा३ओ२३४वा। बृ

* ऊ० गा० ४प्र० २ख० १०सा० ।

५ १ २ २ २ १ २ २
५ष्ठोऽयायि ॥(२) राजादेवौष्ठो २ऽयंवृषात्। राजादे

२ २ १ २
वक्षतंवृषात्। अर्षामा३यित्रा। सयवरुणा। स्यधाइ

२ १ १ २ २ १ ५ ४
हा। माणा२। प्रहिन्वानक्षतोवा३ओ२३४वा। वृ५ष्टो

५
ऽयायि(३) ॥ ११ * ॥ [७]

२ २ १
॥ अक्षिद्रम्॥ अभिमोमा। सखा३१उवा२३। या

५ १ २१ १ २ १ ३ १ १ ११ २ २
२३४वाः। पवन्तेमदियम्मदा२३४५म्। पवन्तेमा। दि

५ २ १ २ २१ २ २ २
या३१उवा२३। मा२३४दाम्। समुद्रस्याधिविष्टपेमनी

१ ३ १ १ १ १ २ १ २ २
षिणा२३४५ः। समुद्रस्या। धिवि। ष्टा। पेमना३१उ

५ २ १ २ २ १ २ १ १ १ १
वा२३यि। षौ२३४णाः। मत्सरासोमद्च्युता२३४५ः।

२ २ ५ २
मत्सरासाः। मदा३१उवा२३। च्यू२३४ताः ॥(१) मत्स

२ ५ २ १ २ २
रासाः। मदा३१उवा२३। च्यू२३४ताः। मत्सरासो

२ १ ३ १ १ १ १ २ २
मदच्युता२३४५ः। मत्सरासाः। मदा३१उवा२३। च्यू

---

* ऋ० मा० ४प्र० २अ० ११सा०।

५ १ २ १ २र र १ ३ १ १ १ २
२३४ताः। तरत्समुद्रम्ववमानजमिंणा२३४५। तरत्स

१ २ १ ५
मू। द्रम्यव। मा। नज३आउवा२३। मो२३४णा।

१र र २१ २ १ २ २र र र
राजादेवक्षतंबृहा१त्। राजादेवाः। क्षता३१उवा२३।

५ २र र र१ २ १ ३ २र र र
बृ२३४हात्। राजादेवक्षतंबृहा१त्। राजादेवाः। क्ष

५
ता३१उवा२३। बृ२३४हात्। राजादेवक्षतंबृहा१त्।

१र २ १ २
राजादेवाः। क्षता३१उवा२३। बृहात्। अर्षामित्रस्य

१ २ १ ३ १ १ १ र र १ २
वरुणस्यधर्मणा२३४५। अर्षामित्रा। स्यवरु। णा। स्य

५ १ २र १ १ १ २
धा३१उवा२३। मा २ ३४णा। प्रहिन्वानक्षतंबृहा१त्।

२ र ५
प्रहिन्वानाः। क्षता३१उवा२३। बृ२३४हात्(३) ॥१२*॥[८]

२ र र १ ५ १
॥ रौरवम् ॥ अभिसोमासा३आया२३४वाः। पाव

र र र ३ २ १ २
न्तेमद्यम्मद०समुद्रस्याधिविष्टपेमना२यिषिणाः। ओद्रा

२ १ र र २ १ २ २
३उवा। मत्सरासोमदा२३द्रायि। ओद्रा३उवा। च्यु

ऊ० गा० ४प्र० २ष० १२सा०।

२ २ ४ ५ २ ३ ३ १ ५
ता। औ३ होवा ॥(१) मत्सरासोमाइदच्यू२३४ताः।

१ ३ ३ ३ २ १
माउत्सरासोमदच्युतस्त्वरत्समुद्रम्यवमानऊर्म्मिणा। ओ

२ २ १३३३ ३ २ १ २
हाइउवा। राजादेवक्रतां२३ए्हायि। ओहा३उवा।

१ ४ ५ २३३ ३ १ ५
बृहात्। औ२३होवा ॥(२) राजादेवमाइर्त्तंव२३४धा

१ ३ ३ ३ ३ ३
त्। राजादेवक्रतंबृहदर्षामित्रस्यवरुणस्यधा २र्म्मणा।

१ २ २ १ ३ २ १
ओहा३उवा। प्रहिन्वानक्रता२३ए्हायि। ओहा३उ

२ १ ४ ५ ४
वा। बृहात्। औ२३होवा। हो५ई। डा(३) ॥१३॥[८]

१ २ २३ ३ २३१२
॥ मानवोत्तरम् ॥ होवायि। अभिसोमासआयवः।

१ ३ ७१ ३ १
होवायि। पावन्तेमद्यम्मदम्। सामुद्रस्या। धायि

७ १ ७ ३ ५ २ १
विष्टया३१यि। मनार्२यिषा२३४यिणाः। मत्सारा २ ३

२ २ ३ ५३ ३ ३ ५ १
साः। मार्२दा२३४औहोवा। च्यू२३४ताः ॥(१) होवा

२ १३३ ३ २ १ २ १ ३ ३
यि। मत्सरासोमदच्युतः। होवायि। मात्सरासोम

---

* ऋ० मा० ७म० १अ० १२सा०।

१० २ १७ २ ७ ४ ३
इन्द्युतः । आरत्समु । द्राम्यवमा३१ । नजरन्ना२३४यि

५ १८ १ २ १ ४ ३ ५८ २
ष्वा । राजादा२३यिवाइः । आ२र्त्ता २ ३ ४ औहोवा ।

३ ५ १ ८ २ २१ १ २ १
व२३४ह्वात् ॥(२) होवायि । राजादेवक्रतम्बृहत् । हो

८ २ ७८ २ १ ७ १
वायि । राजादेवक्रतंबृहत् । आर्षाभित्र । स्यावरुणा

७ ४ ३ ५ १ १ २ १ ३
३१ । स्यधार्म्मा२३४णा । प्रहायिन्वा२३नाइः । आर्त्ता

५८ २ ३ ५
२३४औहोवा । बृ२३४ह्वात्(३) ॥ १४ * ॥ [१०]

१ २ १ २ ८ २ १ २
॥ आनूपबाध्यश्वम् ॥ अभीअभी । सोमासाइआया

१ २८ १ ७ १
१वाइः । पावन्तेम । दियाम्मा १ दाइम् । साम्मू२

१ १ ८ २१ २ १ ८ २
द्रास्याइ । धिविष्टपेमनीषा२३यिणाः । मत्सारा३ सा

१ ४ २ ५ १ १ १ २
३ः । मा२३दा३ । च्यू३४५तो६ह्वायि ॥(१) मत्सामत्सा ।

८ २ १ २ १ १ १ ८ २
रासोमाइदाच्यू१ताइः । तारा२त्साम्मू२ । द्रप्वमान

१८ २ १८ २ २ १ ४
ऊम्मा२३यिणा । राजादा३यिवाइः । आ २३ त्ताइम् ।

---

* ज० गा० ७प्र० २ष० १४सा० ।

२ ४ ५ १८ १ १८ २ ८ १ २
व॒३४५हो३ह्वायि ॥(२) राजाराज्ञ । देवक्ष३तांव॒३रा

१ ८ २८ १ २ १ १
२ल्। राजादेवः। क्षतांव १रा२त्। आर्षा २ मा

१ २ १ २ १ २ २
त्रा२। स्यवरुणस्यधर्मा२३णा । प्रहायिन्वा ३ ना ३म

१ ४ २ ५
आर२३र्त्ताा३म्। व॒३४५हो३ह्वायि(३) ॥ १५ ॥[११]

४ ३ ८ ४८ ५ ८ २ २ १
॥ वात्रम् ॥ अभिसोमासत्रा । ह्वाइह्वाइयि । आर२

८ ५ १ १८ १०
३४। वायवोवा। पवाह्वो२ं। तेमाह्वो२। दायव्या

१ २ ८ १ २ ३१ २
दा२म्। सामुद्रस्या। धिवायिष्टापेमनाउवा३। ऊ

५ १ १ १ १
३४पा। षिणा२ः। मात्सा२रासा२ः। मद। च्यू

३ ५८ ८ ४ ३८ ४८ ५ ८ २ १
२ता२३४औह्वोवा ॥(१) मत्सरामोमदा। ह्वाइह्वाइयि।

१ ५ १ १८
च्यू२३४। तच्युतोवा। मत्साह्वो२यि। रासाह्वो२।

१ ७ १ २ १ २ ३ १
मादच्युता२ः। तारत्समु। द्रम्यावामा। नव्याउवा३।

२ ५ १ १ १ १
ऊ३४पा। षिणा२। राजा२दायिवा२ः। क्षतम्।

---

* ऊ० मा० ७म० २ष० १५सा०।

३ ५र र ३र ४र र २ ४ ५ २ २
वृ२ङ्हा२३४ओहोवा ॥(२) राजादेवकृतम्। ङ्हाङ्हाइयि।

१ ५ १र १र २
वृ२३४। ङ्हृङ्हृहोवा। राजाङ्हो२यि। देवाङ्हो२। आ

० १ र २ १ १ ५
सौंवङ्हा२त्। आर्षाभित्र। स्वधाउवा३। ऊ३४पा।

१ १ १ १ ३
मंणा२। प्राहा२यिन्वाना२:। कृतम। वृ२ङ्हा२३४

५र र २ ५
ओहोवा। ऊ३२३४पा(३) ॥ १६ ॥ [१२]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तम् ॥ अभा३यिसो३माऽसआयवोवा। पा

१र १ २ १ ३
वन्तेम। दियाम्मा१दा३म्। सामुद्रस्या३१२३४। धि

४ ५र २ १ २ १ १ २ २
विष्टपे। मनायिषा१यिणा२:। म२पारा१सा२:। मदा

१ ३ १ १ १ १
३। च्यू२३४५। ता२३४५:(१) ॥ १६* ॥ [१३]

५ २ ४र ५ ४ ५ २ १ १र १
॥ कालेयम्†॥ मत्सरा३सोमद्च्यूता:। मत्सारासो।

२ ३ १ १ २ ३ २ १ १ ४र ५र
मद्च्यूता२३:। तरत्समू३। द्रा२३४म्। पवमानऊ।

---

* ऊ० गा० ७प्र० २ष्टा० १६सा० । † "मद्राकालेयम्"—इति वि० ।

१ २ १२ २ ८ १ ४
माऽयिणा। राजादेवौ। वा३४३वा। ऋतापुभ्बृहात्।
५
घोपुई। ङा(२)॥ १७ * ॥ [१४]

५ २ ४८ ५ ४८ ५ १ १८
॥ गौङ्गवम्॥ अभिसो३मासआयवाः। पावा२। ते
३ २ ४ ५ २ १ ८
मदिया३म्। मादाम्। समुद्रस्याधिविष्टां२३पा२ यि।
२ २ ४ ५ २ १ ८ ८ २ १. ४
मनाऽयिषायिणाः। समुद्रस्याधिविष्टये। मनाऽयिषा
५ १ २८ १ २ २ १ ५
यिणाः। मात्सरा। सा। औ३ह्वो। मदो२३४वा।
४ ५ ५ २ ४८५४ ५ १
च्यू५तोईहायि॥१) मत्सरा३सोमदच्युताः। मात्सा२।
१८ ८ ३ २ ४ ५ १ २ १ १ ३ २
रासोमदा३। च्यूताः। तरत्समुद्रम्यवा२३मा३। नऊ
४ ५ १ २ १ ८ १२ ४ ५ १
३र्मायिणा। तरत्समुद्रम्पवमा। नऊ३र्मायिणा। रा
८ २८ १ २ २ १ ५ ४ ५
जाढे। वा। औ३ह्वो। ऋतो२३४वा। बृ५ह्वोईहा
५८ ८ २ ४ ५८ ५ १ १८ २
यि॥(२) राजादा३यिवऋतंबृहात्। राजा२। देवऋ
१ ४ ५ १८ २ १ २ १ १ ३ २
ताम्। बृहात्। अर्षामित्रस्यवरू२३णा२। स्यधा३

---

* ऊ० मा० ७अ० २आ० १७मा०।

४ ५ १ ~ २ १ २ २ २ ४ ५ १ ० २८
र्माणा। अर्षाभिचक्षवरुण। स्यधाऽर्माणा। प्राक्षिन्वा।

१ २ २ १ ५ ४ ५
ना। औ३ह्वो। क्षतो२३४वा। वृ५ह्वो६हायि(३)॥१८*॥[१५]

२ २ १ २
॥ भारद्वाजम्॥ अभिसोमा। सम्राया १ वा २:।

१ २८ १ २ १ २८
पावन्ता मद्यमदम्। समूद्रा१स्या २। धायिविष्टपे। म

१ २ १ २ १ २ ५२
नायिषा१यिणा २:। मत्सारा१सा२३:। मा२दा२३४औ

८ ३ ५
ह्वोवा। च्यू२३४ताः(१)॥१५†॥[१६]

२ ८ १ २ ३ २ ४ ५
॥ मैधातिथम्॥ अभिसोमोह्वायि। सम्राऽयावाः।

१ २ २ १ २ १ २
पवन्ता २ह्वो१यि। माऽौ३ह्वो। दायाउवा। मादाउ

१ ८ २ २ १ २ १
बा। समुद्रस्याधिविष्टपाऽौ३ह्वो। मानाउवा। षा

२ १ ८ २ २ १ २८ १ २८
यिणाउवा। मत्सरासाऽौ३ह्वो। मदा। औह्वो। वा

५ ४ ५ १ ८ १ २ २
ह्वो२३४वा। च्यू५तो६ह्वायि॥(१) मत्सरासोह्वायि। म

२ ४ ५ १ २ २ १ २
दा३च्यूताः। मत्सरा २ह्वो१यि। साऽौ३ह्वो। मादा

---

* ऋ० मा० ८प्र० २ऋ० १८सा०। † ऋ० मा० ९प्र० २ऋ० १५सा०।

उक्ष। ऽ. च्यूताउवा। तरत्समुद्रम्पवमाऔहचो। ना

आउवा। मायिणाउवा। राजादेवाऔहो। क्षता।

औहो। वाहो२३४वा। ब५ह्चोहाय्यि ॥(२) राजादेवो

हायि। क्षताऽम्बहात्। राजादा२ह्चो१यि। वाऔ२

हा। आर्त्ताउवा। बृहाउवा। अर्षामित्रसवरुणा

औ३हो। स्याधाउवा। माणाउवा। प्रहिन्वानाऔ३

ह्चो। क्षता। औह्चो। वाह्चो२३४वा। ब५ह्चोहा

यि(३) ॥ ६ ॥ [१७]

॥ उत्सेधम् ॥ अभिमामासआयवः। पव। तेमा

३४औह्चोवा। दियम्मदा२म्। ह्चा३१उवा२३। ऊ३४

पा। समू३द्रस्या। औह्चोवाह्चायि। धायिविष्टपायि।

भनीषायिणाः। ह्चा३१उवा२३। ऊ३४पा। मत्सा३रा

---

* ऊ॰ मा॰ ९प्र॰ ३च॰ ६सा॰। † "उत्सेध"—इति च॰ पु॰।

५ ४ ३ १ ४ ५ ३
* सः। औद्दोवायि। मदाऽच्यूऽताऽऽऽ

२ २ २ २ २ १ २१ १ २ १ ऽ २
ए। औहोओहोइवा। पवन्तेमद्दियम्मदम्। ओइहा।

१ २ २१२१२ १ २ ऽ २ १ २ ०
समुद्रस्याधिविष्टपेमनीषिणः। ओइहा। मत्सारा१सा

ऽ २ ऽ २ ० ऽ २ ऽ २
२:। ओइहा। ओइहाइए। औइहोयि। औइहो

२ १ ३ ५२ २ २ २ ४
इवा। मद। च्यू२ता२३४औहोवा॥(१) मत्सरासी.

२ २ २ २ २ २ २ २ १२
मद्च्युतओहाओहा३ए। औहोओहोइवा। मत्मरा

२ १ १ १ ऽ २ १ २ १ १२ १२ १२
सोमद्च्युतः। ओइहा। तरत्समुद्रम्यवमानऊर्म्मिणा।

ऽ २ १२ २ ऽ २ ऽ २ २
ओइहा। राजादा१यिवा२:। ओइहा। ओइहाइए।

ऽ २ ऽ २ २ १ ३ ऽ
औइहोयि। औइहोइवा। कृतम्। बृ२हा२३४औ

२ १२ २ १२ २ २ २ २ ६ ६
होवा॥(२) राजादेवकृतंबृहदोहाओहा३ए। औहो

२ २ १२ २ १२ १ २ १ १ १ ऽ २ १ २
औहोइवा। राजादेवकृतंबृहत्। ओइहा। अर्षा।

२ १ २ १ २ १ १२ ऽ २ १ २
मित्रस्यवरुणस्यधर्म्मणा। ओइहा। प्रहायिन्वा१ना२:।

ऽ १ ऽ २ २ ऽ २ ऽ २ २
ओइहा। ओइहाइए। औइहोयि। औइहो२वा।

१ ३ ५र र २ र १ २ १ २
ऋतम् । बृ २ हा २ ३ ४ ओहोवा । सदोविद्या २ ३

१ १
४ ५:(३) ॥ १६ * ॥ [१८]

५ २ ५र ५ ४र ५ २ १
॥ जनित्राद्यम् ॥ अभिमो३मासत्रायवाः । ऊवेहो

१ र २ १ र
२यि । पवन्तेमदियाम्मा१दा२म् । ममुद्रस्याधिविष्टपा

३ २ ३ ५ १ २ १ र २
२यि । मनार२यिषा२३४यिणाः । मत्मा३होयि । रामा

१ २ १ ३ ५र र ५ २ ४र
३हो । मद । च्यू२ता२३४ओहोवा ॥(१) मत्सरा३सो

५ ४ ५ २ १ १ र र २
मद्च्युताः । ऊवेहो२यि । मत्सरासोमदाच्यू१ता२: ।

१ ३ २ ३ ५ १र २ १
तरत्समुद्रम्पवमा२ । नऊर्म्मा२३४यिणा । राजा३होयि ।

र २ १ २ १ ३ ५र र ५र र
देवा३हो । ऋतम् । बृ२हा२३४ओहोवा ॥ २) राजा

२ ५ ५ ४ ५ २ १ १र र र १
दा३यिवऋतंबृहात् । ऊवेहो२यि । राजादेवऋतंबृ

१ र ३ २ ३ ५ १
हा२त् । अर्षामित्रस्यवरुणा२ । स्यधार्म्मा२३४णा । प्र

---

* ऋ० गा० १२प्र० २अ० १६सा० ।

ह्वाऽयिह्वोयि । म्वानाऽहो । कृतम् । व२ऽहा२३४ओ
होवा । जनित्रा२३४५म्(३) ॥ ९ * ॥ [२०]

॥ दैर्घश्रवसम् ॥ अभिसोमास आयवऽओहा । ओऽम३
ए । पवन्तेमदिय्यमदम् । ओऽहा । ओंऽहाऽए३४ ।
सम्ऽ३४द्रप्या । धायिविष्ट । पेमानीषिणाः । ओऽहा ।
ओऽहाऽए३४ । मत्साऽ४रासाऽः । मदो २ ३ ४ वा ।
च्यूऽतोऽहायि ॥(१) मत्सरासोमदच्यु,तओहाओहाऽए ।
मत्सरासोमदच्यूतः । ओऽहा । ओऽहाऽए३४ । तरा
३४सम्ऽ । द्राम्यव । मानाऊर्म्मिणा । ओऽहा । ओ
ऽहाऽए३४ । राजाजाऽ४देवाऽः । कृतो२३४वा । बृ
ऽहोऽहायि ॥(२) राजादेवकृतंबृहदोहाओहाऽए । रा
जादेवकृतंबृहात् । ओऽहा । ओऽहाऽए३४ । अर्षा

* ऋ० मा० १४प्र० १ऋ० ९सा० ।

२ १ २ १ २ ३ ४ ५
२४मिन्वा। स्यावरु। णस्याधर्म्मणा। ओइवा। ओ
२ २ ३ १ ३२ २ २ १ ५ ४
३ह्वा३ए३४। प्रह्वा३४यिन्वाना३:। क्रतो२३४वा। बृ
५
५ह्वा६ह्वायि(३) ॥ ५ * ॥ [२१]

१ २ १ २ २
॥ सन्तनि ॥ अभौह्वाउ। सोमामआ३१उवा २ ३।
५ १ २२१ १ १ २ २१२२
या२३४वाः। पवन्तेमदियम्मदंत्समुद्रस्याधिविष्टपेमनी
१ ३ १११ १ २ १ २ २
षिणा२३४५:। मत्साह्वाउ। रासोमदा३१उवा २ ३।
५ १ २२ २ १ २ २ १२ २ १ २
च्यू२३४ताः ॥(१) मत्सरासोमदच्यूतोमत्सरासोमदच्युत
१ २ १ २२ २ १ ३ १११ १२ २ १
स्तरत्समुद्रम्पवमानऊर्म्मिणा२३४५। राजाह्वाउ। दा
१ ५ १२ २ १२ १ १
यिवक्षता३१उवा२३। बृ२३४ह्वात् ॥(२) राजादेवक्षतं
१ १ २ २ २२१ २ १ २ १ १ २ १ १ १ १
बृहद्राजादेवक्षतंबृहदर्षामित्रस्यवरुणस्यधर्म्मणा२३४५।
१ २ १ २ २ ५
प्रह्वायिह्वाउ। न्वानक्षता३१उवा२३। बृ२३४ह्वात्(३) ॥

॥ ७ † ॥ [२२]

---

* ज० गा० १४प्र० २अ० ७खा०'। † ज० गा० १४प्र० २अ० ७खा०।

॥ आष्टादशोत्तरम् ॥ अभिसोमास आयवेऽयादौ ।

ओ३वा । पवन्ते मदियम् । मादा२३म् । ऐया२३त् ।

औ२३होवा । समुद्रस्याधिविष्टपेमनो । षायिणा२३: । ऐया

२३त् । औ२३होवा । मत्सरासोमद । च्यूता २ ३:॰ ।

ऐया२३त् । औ२३होवा३४३ । ओ२३४५ई । डा ३) ॥

॥ २ * ॥ [२२]

॥ आभीशवोत्तरम् ॥ अभिसोमास आयवए । ए । पव

न्ते माऽदायम्मादम् । सा२३५म् । हा३हा । द्रस्याधि

विष्टपेमानी१षिणाः । मा२३४त्सा । हा३हायि । रासो

मदो२३४वा । च्यू५तो६हायि ॥(१) मत्सरासोमदच्युत

ए । ए । मत्सरासोऽमादच्यूतः । ता२३४रात् । हाऽ

यि । समुद्रम्यवमानाऊ१र्म्मिणा । रा२३४जा । हा

* ऊ० गा० १६प्र० २अ० २मा० ।

२ १ २१ ५ ४ ५
३ हायि। दायिवक्षतोरइ४वा। बृ५हो ६ हायि ॥(२)

२२२ २ २ २ १ २
राजादेवक्षतंबृहदे। ए। राजादेवाइआत्तंबृहात्।

३ ५ २ २ १ ० २
आरइ३४र्षा। हा ३ हायि। मित्रस्यवरुणस्याधर्म्माणा।

२ ५ २ २ १ २१ ५ ४
प्रारइ३४हायि। हाइहायि। न्वानक्षतोरइ३४वा। बृ५

५
हो६हायि(३) ॥ ३ ॥ [२३]

५ २ ४२ ५२४५ १
॥ आष्कारनिधनम्† ॥ अभिसोइमासऽआयवाः। पा।

२२ १ २ १२१ ०
वन्तेम। दियारइम्मदाउ। वाइर। समुद्रस्या। धि

३२१ २१२ ५ १ २ १५२ २
विष्टपायि। मनोषारइ४यिणाः। मारइत्मा। रासोम।

१ ५ २ ४२ ५४ ५ १ २२
द्रच्यूरइ४५ताई५६ः ॥(१)मत्सराइसोमऽद्रच्युताः। मात्सरा

१ २ १२१ २ १२
सः। मदारइच्युताउ। वारइ। तरत्समू। द्रम्यव

१ २१२ ५ १ २ १२ २ १
मा। नजम्मारइ४यिणा। राइजा। देवक्ष। तंबृ

५२ २ २ ४ ५४ ५ १ २
रइ४५हाई५६त् ॥(२) राजादाइयिवक्षऽतंबृहात्। राजा

• ऋ० गा० १६म० १अ० ३सा०। † "आष्कारनिधन कार्यम्"—इति ब० पु०।

२२ १ २ १२ २ १ २ २
हे वः। अहा२३वृहाउ। वा३२। अर्वामिचा। ह्व
२ १ २ १ ५ १ २ १२ २ १
त्वा। ह्यधर्मा२३४णा। प्रा२३हायि। ल्वानक्ष। तं
२ १ १ १ १
वृ२३४५हाई५६त्। आ२३४५ष्(३) ॥ २* ॥ [२४]
२ २ २ ५
॥ मानवाद्यम् ॥ अभिसोमा। सत्रायाः२३४वाः। २।
१ २५ १ २ १ २ २
पावन्तेम। दियाममा१दा२म्। सम्। ऊ। द्रक्षाः
१ ७ २ १ ३ ५ १२ २ १
धायिविष्टपा३यि। मनाःयिषा२३४यिणाः। मत्सरासा
१ २ ५२ २ २ ५ २
२३ः। मा२दा२३४औहोवा। च्यू२३४ ताः ॥(१) मत्स
२ ३ ५ २ ३ ५ १ २२
रासाः। मदच्यू२३४ताः। मदाच्यू२३४ताः। मात्सरा
१ ३ १ २ १ ७ २
सः। मदाच्य१ताः। त। रत्। समु। द्राव्यवमा
२ ३ ५ १२ २२ २ १ १ २
३। नऊ२म्मा२३४यिणा। राजादेवा२३ः। आर्षा
५२ २ ७ ५ २ २ २
२३४औहोवा। वृ२३४हात् ॥(२) राजादेवाः। क्षतं
२ ५ २ ३ ५ १ २ २२ १ २
वृ२३४हात्। क्षतांवृ२३४हात्। राजादेवः। क्षतांव

● ज० गा० १८प्र० २अ० २खा०।

१ २ १ १ २ १
१ह्वा२त्। अ। घा। मित्र। स्व। वरुणा३। स्वधा

२ ३ १ २ ३ १ १ ३ ५३ ३
२म्मा२३४णा। प्रहिन्वाना२३:। आ२र्त्ता२३४ओहोवा।

३ ५
वृ२३४ह्वात्(३) ॥ १० * ॥ [२५]

१ २३ १ २३ १ १ २
॥ महावैष्टम्भम् ॥ अभिसोमोह्वायि। सम्रायवोवा।

१ २३ १ २ १ २ २
पावस्तेम। दियाम्मा१दा२३म्। ह्वोवा३ह्वायि समु

१ ३ २१३ २ १ १ १ २ २
द्रस्याधिविष्टपे। मनायिषा १ यिणा२३:। ह्वोवा३ह्वा

१ २ १ २ २ १
यि। मत्सारा१सा२३: †। ह्वोवा३ह्वायि। मद्। च्यू२

३ ५३ ३ १ २३ १ २ १ २
ता२३४ओहोवा ॥ १) मत्सरासोह्वायि। मद्च्युतोवा।

१ २३ १ २ १ १ २ १
मात्सरासः। मदाच्यू १ ता२३:। ह्वोवा३ह्वायि। तर

२ १ २३ १ २ १ २ १
त्समुद्रम्यवमा। नऊर्म्मा१यिणा २ ३। ह्वोवा ३ ह्वायि।

१३ २ १ २ १ १ ३
राजादा१यिवा२३:। ह्वोवा३ह्वायि। कृतम्। बृ२ह्वा२

५३ ३ १३ ३ २३ १ २ १ २ १
३४ओहोवा ॥(२) राजादेवोह्वायि। कृतंबृहोवा। रा

---

* ऋ० गा० १८प्र० २भ० १०सा०। † "मत्सारासा१२"—इति ख० पु० पाठः।

२ १२ १ १ १ १ १ १ १ १ १
जादेवः। ऋतांबृ१हा२३त्। होवा३हायि। वर्धामि
१ १ १ १ १ १ १ १ १ १
मखवद्भ्य। स्वधार्मा१णा२३। होवा३हायि। प्रद्वा
१ १ १ २ १ २
यिन्वा१ना२३। होवा३हायि। ऋतम्। वृ२हा२३४
५ २
औहोवा(३) ॥ १० * ॥ [२९] ९

अथ द्वितीयऽर्चे—प्रथमा।

३ १ २ २ १ २
तिस्रोवाचईरयतिप्रवक्ति
३ १ २ ३ १ २ २ २
र्ऋतस्यधीतिम्ब्रह्मणोमनीषाम्।
१ २ २ १ १ ३ १ २ १
गावोयन्तिगोपतिम्पृच्छमानाः
१ २ २ १ १ ३ २
सोमंयन्तिमतयोवावशानाः ॥ १† ॥

"वक्तिः" वोढा यजमानः "तिस्रोवाचः" ऋग्यजुःसामाभिकाः स्तुतीः प्रेरयति। तथा "ऋतस्य" यज्ञस्य "धीतिं" धारयित्रीं "ब्रह्मणः" परिवृढस्य सोमस्य "मनीषां" मनसईषयित्रीं कल्याणीं वाचं प्रेरयति। किञ्च "गोपतिं" वृषभं यथा गावोऽभिगच्छन्ति तद्वत् गवां स्वामिनं सोमं "गावः"

* ज० मा० १२प्र० २ख० १०सा०।

† ह० मा० ६, १, ४, १ (२भा० ११९पृ०) = ऋ० वे० ७, ४, १७, ४।

"पृच्छमानाः" पृच्छ्यः सत्यः यन्ति स्व-पयसा मिंश्रयितुम् अभिगच्छन्ति। तथा "वावशानाः" कामयमानाः "मतयः" स्तोतारश्च "सोमं" "यन्ति" स्तोतुमभिगच्छन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ १ २ ३ १ २ ३ २उ
सोमङ्गावोधेनवोवावशानाः

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमंविप्रामतिभिः पृच्छमानाः ।

१ २ ३ १ १ ३ १ २ ३
सोमःसुतऋच्यतेपूयमानः

१ २ ३ २ ३ २ १ १ २
सोमेअर्कास्त्रिष्टुभःसन्नवन्ते ॥ २* ॥

"धेनवः" † प्रीणयित्र्यो "गावः" "सोमं" "वावशानाः" कामयमाना भवन्ति, "विप्राः" मेधाविनः स्तोतारः ‡ "सोमं" "मतिभिः" स्तुतिभिः ¶ "पृच्छमानाः" पृच्छन्तो भवन्ति "सुतः" अभिषुतः "सोमः" "पूयमानः" ऋत्विग्भिः "ऋच्यते"

---

* ऋ० वे० ७, ४, १७, ५।

† 'आदित्यरश्मयो धेनवः'—इति वि०।

‡ 'विप्राः—ब्राह्मणा . . . अथवा विप्रा आदित्यरश्मयः'—इति वि०।

¶ 'मतिभिः—प्रज्ञाभिः'—इति वि०।

चरति *। तथा "त्रिष्टुभः" त्रिष्टुब्रूपाः † "धर्काः" अस्माभि. क्रियमाणा एते मन्त्राः "सोमे" "सचवन्ते" सङ्गच्छन्ते ॥

"सोससुतश्चटचतेपूयमान."—इति छन्दोगाः, "सोमःसुतः पूयतेअद्यमानः"—इति बह्वृचाः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ २ ३ १ २ ३
एवानःसोमपरिषिच्यमान

१ २ ३१९ ३ २
आपवस्वपूयमानःस्वस्ति ।

२ ३ १ १ ३ १८ २८
इन्द्रमाविशन्नृक्षतामदे न

३ २ ३ १ १ ३ ९ ३ १ २
वर्द्धयावाचञ्जनयापुरन्धिम् ॥ २४ ॥ १०

से "सोम !" "परिषिच्यमानः" परितः पात्रेषु सिच्यमानः पूयमानः त्वं "नः एवा" अस्माकमेव "स्वस्ति" ¶ अविनाशम् आ पवस्व प्रापय । किञ्च "ऋक्षता" महता "मदेन" मदकर-रसेन अहम् "इन्द्रम्" "आविश" प्रविश । तथा "वर्द्धया" "वाचं" स्तुति-लक्षणां § प्रसिद्धां कुरु । किञ्च

---

* 'चरते—चर् गतौ । गच्छति'—इति वि० ।

† 'त्रिष्टुप्छन्दस्काः अथवा त्रिष्टुभः त्रयी विद्यां लोभयन्ति'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ४, १८, १ । "रवेण"—इति च तत्र पाठः ।

¶ 'स्वस्ति—क्षेम कुरु'—इति वि० ।

§ 'वाचम्—ऋग्यजुःसामलक्षणम्'—इति वि० ।

"पुरम्धिं" बहुधियं प्रज्ञानं * "जनया" † अस्मभ्यमुत्पादय। वाक्यभेदादनिघातः ‡ ॥ ३ ॥ १०

॥ सङ्क्रोशम् ॥ हो॒यि। हो। हा३॒हो॒यि। तिस्रो
वा॒चाः। ई३॒रय। तिप्रवक्षी॒:। ऋ॒तस्यधायि। तौ३
म्न॒क्ष। सोमनीषाम्। गावोयन्तायि। गो३ पतिम्।
पृ॒च्छमानाः। सोमंयन्तायि। मतयः। वा३४३। वा
३४३। वा३ग्रा५ना६५६॒: ॥(२) सोमङ्गावो। धे३नवः।
वावशानाः। सोमंविप्राः। मतिभिः। पृ॒च्छमानाः।
सोमःसुताः। ऋ॒च्यते। पूयमानाः। सोमेअर्काः।
त्रिष्टुभः। सा३४३म्। ना३वा५ऽपूता६५६यि ॥(२) एवा

---

* 'पुरम्धिं'—पुष्टिम्'—इति वि०।

† 'ऋ॒ मन्ने एवेत्यादौ बहुत्र छान्दसं दीर्घत्वम्। तथाच—"एवा"—इत्यत्र "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति दीर्घः, "वर्द्धया"—"जनया"—इत्यनयोस्तु "ह्रस्वोऽनङ्णिङः (६, ३, १३५)"—इत्यत्र "णिङः"—इति, योगविभागाद्दीर्घः।

‡ "तिङतिङः (८, १, २८)"—इति प्राप्तो निघातः "छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् (८, १, २५)"—इति तदभावश्चार्थः।

२ १ १ २ ३ ४ ५ २१ १ २ १
नःसो। माऽपरि। षिच्यमानाः। आपवस्वा। पूऽय

२ २ ३ ४ ५ २ १ २ २ १ २ ३ ४ ५
मा। नःसुवस्ती। इन्द्रमावाय। शाऽबृ ह। तामदेना।

१ २ १ १२ २ १
होयि। हो। हाऽहोयि। वर्द्धयावा। चाऽच्छन।

२ २ ४
याऽ४३। पूऽराऽधाऽ६ऽ६यिम(३) ॥ १७ * ॥ [१] १०

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य चतुर्थस्याध्यायस्य
तृतीयः खण्डः † ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थखण्डे, ‡ प्रगाथरूपे—
प्रथमसूक्ते—प्रथमा।

१ २२ २ २२ २ १ २२ २ १
यद्यावइन्द्रतेशतꣳशतम्भूमीरुतस्युः।

१ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ १ २
नत्वावञ्जिन्त्सहस्रꣳसूर्य्यानुनजातमष्टरोदसी ॥ १ § ॥

---

* उ० मा० १प्र० १अ० १७सा०। † 'उक्तो माध्यन्दिन'—इति वि०।

‡ 'इदानीं पृष्ठान्युच्यन्ते। रथन्तर बृहत्, विरूप वैराज, शाक्वर, रैवतश्चेति पृष्ठ षडह, तस्य पृष्ठानि सधर्माकानि भवन्ति—इति वि०। 'रथघोषं, दुन्दुभ्याख्यानम्, उपवाजनम्, उरोऽग्निमन्थनम्, आर्याघोष, गवां घोषः इति पृष्ठधर्मा अभ्यासङ्गं पृष्ठ षडहे अहन्यहनि गौरीवित यावत्'—इति च वि०।

¶ ऋ० आ० १, २, ४, ६ (१ मा० ५०२५०, =ऋ० वे० ६, ५, ८, ४।

हे "इन्द्र!" "ते" तव प्रतिमानार्थं "यद्" यदि "द्यावः" द्युलोकाः "शतं" शत-सङ्ख्याकाः "स्युः" तथापि नाप्नुवन्ति। "उत" अपिच "भूमीः" भूम्यः "ते" तव मूर्त्ति-प्रतिबिम्बाय "शतं" स्युः तथापि "न" आप्नुवन्ति। हे "वज्रिन्" "त्वा" त्वाम् "सहस्रं" "सूर्याः" अगणिता अपि सूर्याः "न" "अनु" भवन्ति न प्रकाशयन्तीत्यर्थः। "न तत्र सूर्यो भाति (इ०उप०)" —इति श्रुतेः। किं बहुना जातं पूर्वमुत्पन्नं किञ्चित् त्वामनु "नाष्ट" नाप्नुते तथा "रोदसी" द्यावापृथिव्यौ नाप्नुवाते सर्वेभ्योऽतिरिच्यसे इत्यर्थः। "ज्यायान् पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षाद् दिवो ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः"—इति (इ० उप०) श्रुतेः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ १ २ १ २ र २ १ २ ३ १ २

आपप्राथमहिनावृष्ण्यावृषन्विश्वाशविष्ठशवसा।

३ १ २ २ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

अस्माꣳअवमघवन्गोमतिव्रजेवज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः॥२*॥११

हे "वृषन्" अभिमतवर्षकेन्द्र! त्वम् "आ पप्राथ" आ पूरयसि व्याप्नोषि। कानि? "विश्वा" सर्व्वाणि "वृष्ण्या" वर्षकाणि बलानि शत्रु-सम्बन्धीनि। केन साधनेन? "महिना" महता "शवसा" बलेन स्वीयेन अथवा वृष्णोऽत्येतच्छवो विशेषणम्। तथा सति अभिमतवर्षकेण महता बलेन अस्मदीयानि बलानि पूरयसीत्यर्थः। अथ तथाज्ञात्वा हे "अविष्ठ" बल-

---

* ऋ० वे० ६, ५, ८, १।

वस्तम ! "गोमति" बहुभिः गोभिर्युक्ते "व्रजे" शत्रु-सम्बन्धि-निमित्ते सति "मक्षान्" "अव" रक्ष । हे "मघवन्" धनवन् ! "वज्रिन्" वज्रयुक्तेन्द्र ! कैः साधनैः ? "चित्राभिः" नानाविधैः "ऊतिभिः" रक्षणैरिति ॥ २ ॥

॥ महावैष्टम्भम् ॥ यद्यावओहायि। ष्टुतश्चतोवा।

१ २ २ १ २ २ १ २
शातम्भूमीः। उतासी१यू२३ः। होवा३हायि। नत्वा

२ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १
वज्रिन्सहस्रम्। रियाआ१नू२३। होवा३हायि। न

२ १ २ २ १ ४ ५ २
जाता१मा२३। होवा३हा। ष्टरो। दा२सी२३४ओहो

१ २ २ १ २ २ १ २ २
वा ॥(१) नजातमोहा। ष्टरोदसोवा। नाजातम।

१ २ १ २ २ १ २ २
ष्टरोदा१सा२३यि। होवा३हायि। आपप्राथमहिनाः।

१ २ १ २ २ १ २
ष्णियावा१र्षा२३न्। होवा३हायि। विश्वाशा१वा२३।

१ २ २ १ ३ ५ २ २ १ २
होवा३हा। ष्टश। वा२सा२३४ओहोवा ॥(२) विश्वा

२ १ २ १ २ १ २ २ १ २
शवोह्यायि। ष्टशसोवा। वायिश्वाशवि। ष्टशावा१सा

१ २ २ १२ २ २ १
२३। होवा ३ हायि। अस्माꣳअवमघवन्गो। मतायि

२ १ १ २ १ २
ब्रा१जा२३यि। होवा३हायि। वज्रायिञ्चा१यिचा २ ३।

१ १ २ १२ ३ ५ २ २
होवा ३ हायि। भिहि। ता २ यिभा २ ३ ४ औहोवा॥

॥ १८ * ॥ [१] ११

अथ द्वितीयऋचे†—प्रथमा।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ ०
वयङ्त्वात्सुतावन्त आपोनवृक्तबर्हिषः।

२ १ २ २ १ १ २ १ २ ३ १ १
पवित्रस्यप्रस्रवणेषुवृत्रहन्परिस्तोतारआसते॥ १ ‡॥

हे "वृत्रहन्" इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "वयं घ" वयं खलु "सुतवन्तः" "आपः न" आप इव प्रवणमभिगच्छामः। "पवित्रस्य" सोमानां प्रस्रवणेषु "वृक्तबर्हिषः" तीर्णबर्हिषः स्तोतारश्च त्वां पर्युपासते॥ १॥

---

* ऋ० गा० २२प्र० १अ० १९सा०।

† 'वामदेव्यं मैत्रावरुणं साम, वैरूपं ब्राह्मणाच्छंसि, रौरवमच्छावाक साम'—इति त्रि०।

‡ ऋ० आ० ३, २, २, ९ (१ भा० ५४० ५०) = ऋ० वे० ६, ३, ७, १।

अथ द्वितीया ।

१ १ २ २उ २ १ १ २ २ २ १ १
स्वरन्तित्वासुतेनरोवसोनिरेकउक्थिनः ।

२·१ २ १ २ ३ २उ २ १ २ ३ १ १ २ २ ३ १ २
कदासुतन्तृषाणओकआगमदिन्द्रस्वर्दीववृसगः ॥ २* ॥

हे "वसो" वासयितरिन्द्र । † "त्वा" त्वां "सुते" अभिषुते सोमे "निरेके" निर्गमे ‡ "उक्थिनः" ¶ "नरः" नेतारः "स्वरन्ति" शब्दायन्ते §। अपिचेन्द्रः "सुतं" सोमं प्रति "तृषाणः" तृषन् "स्वर्दीव" स्वभूत-शब्दो इव ‖ "वसगः" वननीय-गमनो** वृषभः शब्दं कुर्वन् "कदा" "ओकः" स्थानम् "आगमत्" आगच्छेत् ॥ २ ॥

● ऋ० वे० ६, ३, ७, २ । "गमदिन्द्र"—इति मु० पाठः सायण-सम्मतश्च ।

† 'वसो निरेके—हे वसो ! प्रशस्तधन !'—इति वि० ।

‡ 'निरेके—दानवति यज्ञे । अथवा वसोनिरेक इत्येकं पदम्, तथा सति षष्ठी श्रियते—वसुनः वस्यश्च निरेके'—इति वि० ।

¶ 'उक्थिनः—उक्थानि सामानि, तेनद्धन्त'—इति वि० ।

§ 'स्वरन्ति सामभिः'—इति वि० ।

‖ 'स्वर्दी इन्द्र । शोभनशब्द करोति, पर्जन्यीभूत्वा वृष्टिद्वारेण'—इति वि० ।

** 'वृसगः—अन्तरीक्षगः'—इति वि० ।

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ २र २म ३ १ १
कण्वेभिर्धृष्णवाधृषद्वाजन्दर्षि सहस्रिणम्।

३ १ ० ३ १र २र
पिशङ्गरूपम्मघवन्विचर्षणेमच्छ्गोमन्तमीमहे ॥ ३ * ॥ १२

हे "धृष्णो" धर्षकेन्द्र। † "कण्वेभिः" कण्वान् मेधाविनः स्तोतॄन् अनुशिष्य [विभक्ति-व्यत्ययः (३, १, ८५)] "सहस्रिणं सहस्र-सङ्ख्याकं "वाजम्" "आदर्षि" प्रयच्छसि। हे "मघवन्" धनवन्! "विचर्षणे" विद्रष्टरिन्द्र! ‡ "धृषत्" धृष्टं "पिशङ्ग-रूपं" ¶ "गोमन्तम्" वाजं § "मच्छ" शीघ्रम् ‖ "ईमहे" याचामहे, त्वामिति शेषः ॥ ३ ॥ १२

३ १ २ १ ३ र १ १
॥ महावैष्टभ्मम् ॥ वयङ्त्वोद्दायि। सुतावन्तोवा।

१ र १ १ २ १ २ २ १
आपोनवृ। क्तबार्हा१यिषा२३:। द्दोवा३द्दायि। पवि

---

* ऋ० वे० ६, २, ७, २।

† 'धृष्णो—धारणशील।'—इति वि०।

‡ 'विचर्षणे—विविधाश्चर्षणयः पुरुषाः यस्य स विचर्षणिः, अथवा विश्वस्य द्रष्टा'—इति वि०।

¶ 'पिशङ्गरूपं—सुवर्णवर्णम्'—इति वि०।

§ 'गोमन्त'—गोक्षीरयुक्तम्'—इति वि०।

‖ 'मघु—मघवनीयम्'—इति वि०। "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति दीर्घः।

२ १ २र १ २ १ २ ० १
चस्यप्रस्तवणे। पुवार्त्रा१हा२३न्। ह्वोवा३ह्वायि। परा

२ १ २ २ १र २ ५र
यिस्तो१ता२३। ह्वोवा३ह्वा। रआ। सा२ता२३४औ

२ १ २१ २र १ १ १ २ र
ह्वोवा॥(१) स्वरन्तित्वोह्वायि। सुतेनरोवा। वासो.नि

२ १ ० १ २ ० १र २ १
रे। कऊक्थ्या१यिना२३:। ह्वोवा३ह्वायि। कदाचन

२र १ र २ १ २ १ २ १
न्तृषाणओ। कआगा१मा२३:। ह्वोवा३ह्वायि। इन्द्र।

० १ २ २ १ ३ ५र
स्वा१ब्दी२३। ह्वोवा३ह्वा। वव। सा२गा२३४। औ

२ १र ० १ २ र ० २ १ २
ह्वोवा॥(२) कण्वेभिर्ह्वीह्वा। षण्वाध्रुषोवा। वाजन्द

१ २ १ १ ० १
र्षि। सहस्त्रा१यिणा२३म्। ह्वोवा३ह्वायि। पिशङ्ग

२र १ २ १ १ २ १
रूपम्मघवन्। विचार्षा१णा२३यि। ह्वोवा३ह्वायि। मत्तू

२ १ २ १ १र ३ ५र र
गो१मा२३। ह्वोवा३ह्वा। तमी। मा२ह्वा२३४औहो

३ ५
वा। दी२३४प्राः(३)॥ १८ * ॥ [१]

५र १ ० १ २
॥ अभिनिधनङ्काण्वम्॥ औहोह्वोहायि। आयिह्वो।

---

* ऊ० गा० २प० १ब० १८सा०।

१ २ ३ ५ २ ३ ५ २ ३
वायाम्। घा२३४त्वा। सूतावा२३४न्ताः। आपोमा२

५ २१ १ २१ १ ३ ५ २
३४वृ। क्तावर्हिषाः। ऐहोयि। आ२३४यिह्वी। पा

२ ५ २ ३ ५ २१ २१
विआ२३४स्या। प्रास्तावा२३४णे। षूवृचहान्। ऐहोंयि।

३ ५ २ ३ ५ ३ २ ४
आ२३४यिह्वी। पारिस्तो२३४ता। रआ३सा५ता ६ ५ ६

२१ १ २ १ २ १ २ २
यि॥(१) औहोहोहायि। आयिह्वी। स्वारा। ता२

५ २ ३ ६ २ ३ ५ २१
३४यित्वा। मूतेना२३४राः। वासोना२३४यिरे। का

१ २१ १ ० ५ २ ३
उक्थिनाः। ऐहोयि। आ२३४यिह्वी। कादाम्२३४

५ २ ३ ५ २१ १२ २१ १
ताम्। तार्षाणा२३४ओ। काआगमाः। ऐहोयि।

३ ५ २ ३ ५ ३ २ ४
आ२३४यिह्वी। आयिन्द्रास्वा२३४ब्दी। ववा३ए्सा५गा

२१ १ २ १ २ १ २ ३
६५६ः॥(२) औहोहायि। आयिह्वी। काण्वे। भा२

५ २ ३ ५ २ ३ ५ २१
३४यिर्ङ्गा। ष्णावाधा२३४र्षात्। वाजन्दा२३४षी। सा

१ २ २१ १ ३ ५ २ ३
ह्स्रिणाम्। ऐहोयि। आ२३४यिह्वी। पायिभ्रङ्गा२३

५ २ २ ५ २१ १ २१ १ २
४ह। पम्माघा२३४वान्। वीचर्षणायि। ऐहोयि। आ

५ २ ३ ५ ३२ ४
२३४यिहो। माच्छ्गो२३४मा। तमाइयिमापृच्छा ६ ५ ६

२ ५
वि। आ२३४भौ(३) ॥ ८ * ॥ [२]

५ ५ २ ४ ५२ ५ ५ १२
॥ अभीवर्त्तम्† ॥ वयाइङ्गाइत्वासुतावन्तोवा। आपो

२ १ २ १ २ २ ४
नवृ। क्तबार्हीरियषा२:। पाविश्रस्याइ१२३ ४। प्रस्रव

५२ २१ २ १ २ ३ १
णे। षुवार्त्रीरिन्द्रा२न्। परायिस्तो १ ता २। रम्रा ३।

१ २ १ १ १ १ ५ ४ २ ४ ५२ ५ ५
सा२३४५। ता२३४यि ॥(१) स्वराइन्ताइयित्वासुतेनरोवा।

१२ २२ १ २ १ २ २
वासोनिरे। कऊक्थारियना२:। कादासुताइ१२३४म्।

३ २ ४ ५२ २ १ २ १ २ २ १
त्रिषाणओ। कआगारिमा२:। इन्द्रास्वा१ब्दी२। ववा

१ ३ १ १ १ ५ ५ २ ४ ५२
३। सा२३४५। गा२३४५: ॥(२) कण्वेइभाइयिधृष्णवा

४ ५ १ २ १ १
धृषोवा। वाजन्दधि। सच्चास्वा१यिणा२म्। पायिश्रङ्ग

२ ३ ४ ५ २ १ २ १ २
रु३१२३४। पम्मघवन्। विचार्षा१णा२यि। मच्छ्गो१

---

* ऊ० गा० ४प्र० १ख० ८सा०। † "अभौवर्त्त:"—इति ख० पु०।

२ १ २ १ २ १ १ १ १
मार्। तमाइयि । मा२३४५ । ह्वा२३४५यि(३) ॥ ६* ॥ [३]

१२

अथ प्रगाथरूपे तृतीयसूक्ते †—प्रथमा ।

२ २ ३ १ १ ३ २ ३ १ १ २ २
तरणिरित्सिषासतिवाजम्पुरन्ध्यायुजा ।

१ २ १ २ २ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
आवइन्द्रम्पुरुहूतन्नमेगिरानेमिन्तष्टेवसुद्रुवम् ॥ १ ‡ ॥

"तरणिरित्" युद्धादौ कर्मणि त्वरितएव पुमान् "पुरन्ध्या" महत्या धिया "युजा" सहायभूतया "वाजम्" अन्नं "सिषासति" सम्भजते, "पुरुहूतं" बहुभिराहुतम् "इन्द्रम्" "गिरा" स्तुत्या हे यजमानाः "वः" युष्मदर्थम् अहम् "आ नमे" आनतमभिमुखं कुर्वे। तत्र दृष्टान्तः—"नमिं" चक्रस्य वलयम् "सुद्रुवं" शोभनदारुं "तष्टेव" यथा वर्द्धकिः दारु-नेमिमानमयते तद्वदित्यर्थः ॥ १ ॥

---

* उ० गा० ९प्र० १अ० ६सा० ।

† 'रौरवमच्छावाकं साम'—इति वि० ।

‡ ब्र० आ० ३, १, ४, ६ (१ भा० ४९३ पृ०) = य० वे० १२, २१ = ऋ० वे० ५, ३, २०, ५ ।

अथ द्वितीया।

१२१ १२ ३१२ ३१२ २२ ३१२
नदुष्टुतिर्द्रविणोदेषुशस्यतेनसेधन्तंरयिर्नशत्।

७२३१० ३ २ २३१९ ७ १२ २२३२
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यम्मावतेदेष्णंयत्पार्यंदिवि॥ २*॥१३

"द्रविणोदेषु" धनदातृषु पुरुषेषु "दुष्टुतिः". असमीचीना स्तुतिः "न शस्यते" नाभिधीयते। किञ्च "सेधन्तं" हिंसन्तं: धनदातृविषय-स्तुत्यादि-कर्माण्यकुर्वन्तमित्यर्थः, एवम्भूतं जनं "रयिः" धनं "न नशत्" न व्याप्नोति। तथा हे "मघवन्" धनवन्निन्द्र! "पार्यं दिवि" सौम्ये दिवसे † "मावते" मत्सदृशाय स्तोत्रे "देष्णं" दातव्यं "यत्" धनमस्ति तत् "तुभ्यं" त्वत्तः सकाशात् "सुशक्तिरित्" शोभन-स्तुतिकएव स्तोता लभत इति शेषः॥

"नदुष्टुतिर्द्रविणोदेषुशस्यते"--इति छन्दोगाः, "नदुष्टुती मर्त्योविन्दतेवसु"--इति बह्वृचाः॥ २॥ १३

२ १ ५ १
॥ रौरवम्॥ तरणिरित्साइयिषासाइर्जुतीं। वाऽर्जम्यु

२ २ २ २१ १२ २
रन्ध्यायुजावइन्द्रम्पूरुहूतन्नमाइयिगिरा। ओहाइउवा।

---

* ऋ० वे० ५, ७, २१, १।

† 'पार्यं दिवि—पारणाये द्युलोके'—इति वि०।

१र र २ १र र ९ १
नेमिन्तष्टे वसू२३हाइ । नेमिन्तष्टे वसा२३उहाइ । ओ
२ २ १ ४ ५ २र र
हा३उवा । द्रुवाम् । औ२३होवा ॥(१) नेमिन्तष्टे वा
१ ५ १ र र
स्तुद्रू२३४वाम् । नायिमिन्तष्टे वस्तुद्रुवन्नदुष्टूनिर्द्रविणो
१ ३ २ २ २ १ र ५
द्रघुशा२३यतायि । ओहा३उवा । नस्ते धन्ताएरया२३
२ १ २ २ १ ४ ५
यिर्हायि । ओहा३उवा । नशात् । औ२३होवा ॥(२)
र १ ५ १ र
नस्ते धन्तएरा३यिर्न्ना२३४शात् । नाऽस्ते धन्तएरयिर्न्नशत्सु
३ २ १ २ २ १र
शक्तिरिन्मघवन्तुभ्यम्मा२३वतायि । ओहा३उवा । देष्णं
२ १ २ २ १ २
यन्नारिया२३यिहायि । ओहा३उवा । दिवा । औ३
५ ४
होवा । होपूई । डा(३) ॥ १९ * ॥ [१] १३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य चतुर्थस्याध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः † ॥ ४ ॥

---

* ऊ० गा० २प्र० १अ० १९सा० ।

† 'उक्तं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि० ।

अथ पञ्चमे खण्डे*—

प्रथमर्चे—प्रथमा।

२ २उ २ १ २ ३ १ २ २ १ २
तिस्रोवाचउदीरतेगावोमिमन्तिधेनवः।

१ २ ३ १ २
हरिरेतिकनिक्रदत्॥ १॥

"तिस्रोवाचः" ऋगादिभेदेन "उदीरते" प्रोच्चारयन्ति ऋत्विजः। "धेनवः" आशिरेण प्रीणयित्र्यो "गावः" "मिमन्ति" शब्दायन्ति दोहार्थम्, "हरिः" हरितवर्णः सोमश्च "कनिक्रदत्" शब्दं कुर्वन् "एति" गच्छति द्रोणकलशम्॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ १२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अभिब्रह्मीरनूषतयज्ञीर्ऋतस्यमातरः।

३ १ २ ३ १ २२
मर्ज्जयन्तीर्दिवःशिशुम्॥ २॥

"ब्रह्मीः" ब्राह्मण-प्रेरिताः¶ "यज्ञीः" महत्यः ['यज्ञः'—इति महन्नाम (निघ०३, ३, १३)] "ऋतस्य" यज्ञस्य "मातरः"

---

* 'इदानीं तृतीयसवनमारभते'—इति वि०। 'पाङ्क्तं साम'—इति वि०।

† ऋ० आ० ५, २, ४, ५ (२ भा० १६) = ऋ० वे० ६, ८, २२, ४।

‡ ऋ० वे० ६, ८, २२, ५।

¶ 'ब्रह्मीः—ब्राह्मणा या याः स्तुत्यर्थं ता ब्रह्मीः'—इति वि०।

निर्मांश्चयः स्तुतयः* "दिवः" द्युलोकात्† "शिशुं" शिशुस्थानीयं सोमम्‡ "मर्जयन्तीः" पावयन्तीः "अभ्यनूषत" स्तवन्ति [तृतीय-स्यामितोदिवि सोममासीदित्यादि श्रुतेः द्यु-शिशुत्व तस्य]॥

"मर्जयन्तीः" "मर्मृज्यन्ते"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

७ १ १२ ३२३ १२ ३१२

रायःसमुद्राꣳश्चतुरोस्मभ्यꣳसोमविश्वतः।

१२ ३ १२

आपवस्वसहस्रिणः॥ ३ ¶ ॥ १४

"रायः" धनस्य सम्बन्धिनश्च "चतुरः समुद्रान्" मणि-मुक्तादि-धन-पूर्णानित्यर्थः। तादृशीन् समुद्रान् "अस्मभ्यम" अर्थाय हे "सोम।" "विश्वतः" सर्वतः "आ पवस्व"। तथा "सहस्रिणः" § अपरिमितान् कामान् आपवस्व प्रयच्छ [चतुः-समुद्रस्य धन-विशेष प्राप्ते तन्मध्यगत धन भूमि-स्वामित्वमन्तरेणा सम्भवात् चतुस्समुद्र सहित-भूमण्डल स्वामित्वमेवाशास्ते यज-मानः]॥ ३ ॥ १४

---

* 'मातर —धेनव आदित्यरश्मयो वा आपो वा —इति वि०।

† 'दिव —द्युलोकात् सकाशात इति वि०।

‡ 'शिशुं प्रसवीय सोमम —इति वि०।

¶ ऋ० वे० ९ ८ २३, ६।

§ सहस्रिण —सहस्रसंख्यका' —इति वि०।

॥ पाष्ठौहम् ॥ तिस्रोवाचा२उदीरतायि। गावो
मिमन्तिधेनवः। हरिरा२३यितौ। कनौ२। ऊवायि।
हो३वा३। क्रा२दा२३४ओहोवा ॥(१) अभिब्ल्रा२यि
रनूषता। यङ्कीर्कृतस्यमातरः। मर्ज्जया२३न्तीः। दिवो
२। ऊवायि। हो३वा३। श्रा२यिश्रा२३४ओहोवा ॥(२)
रायःसम्२द्रा९श्चतुराः। अस्मभ्य९सोमविश्वताः। आ
पवा२३स्वा। सहौ२। ऊवायि। हो३वा। स्वा२यि
ण्या२३४ओहोवा। हाओवा। ओवा२३४५ ॥ २०* ॥ [१]

॥ क्षुल्लकवैष्टम्भम् ॥ तिस्रोऽ५वा। चा३उदीरतायि।
गावोमिम। तिधायिता१वा२३:। हेवा३हायि। हंरा
यिरा१यितौ२३। हेवा३हायि। कनि। क्रा२दा२३४
ओहोवा ॥(१) अभाऽ५यिब्ल्रा। ब्ल्रा३यिरनूषता। याङ्की

* क० गा० २म० १ख० २०सा०।

२ १ २ १ ६ २ १ २
र्षति। स्यमाता१रा२३:। ह्वोवाऽहायि। मर्क्षायाः

१ ९ २ १ २ ५८
म्ती२३:। ह्वोवाऽहायि। दिवः। ग्रा२यिग्रा२३४घौ

२ ४२ ३ ४ २२ ३ ५ १
ह्वोवा ॥(२) रायाऽऽयःसम्। ऊऽद्राऽश्वतुराः। आस

२ २ १ २ १ २ २ १२
भ्रऽमो। मंवायिस्वा१ता२३:। ह्वोवाऽहायि। आपा

२ १ २ २ १ ३ ५२
वा१स्वा२३। ह्वोवाऽहायि। सह। स्वा२यिणा२३४घौ

२ ३ ५
ह्वोवा। दौ२३४शाः(३) ॥ १६ * ॥ [२]

१ २ २२ १
॥ साऽछितम ॥ तिस्रोवाचउत्। आ२यिरतायि।

२२ १ २ १ १ २
गावो२। मा२३यिमा। तिधा२यिनावाः। ह्वा२३रौः।

१ ७ ८ ५
आ२यितायि। कना२३। हाउवा३। क्रा२३४दात्॥(१)

२ १ २२ १ २ १ ७
अभिब्रह्मीर। नू२षता। यङ्का२यिः। आ२३र्त्ता।

१ १ २ १ ७
स्यमा२तारा:। मा२३र्ज्जा। या२न्तायिः। दिवा२

२ ५ २१ १ २ २
३:। ह्वाउवा३। ग्रा२३४यिग्रम्॥(२) रायःसमुद्रान्।

---

* ऊ० मा० ७प्र०१ ख० १६सा०।

१ १ १ २ १ १
चा२३तुराः। अस्मा२। भ्या२३ऽसो। मवा२यिस्वा

२ १ ७ २
ताः। आ२३पा। वा२स्वा। सद्दा२३। द्दाउवा३।

५
स्वी२३४णाः(३) ॥ ७ * ॥ [३]

१ २ २१ १ २१
॥ ऐडसैन्धुक्षितम् ॥ तिस्रोवाचो। द्दायि। उद्दी.

२ १२ २ २ ७ ६ २
रा२३तायि। गावोमिमन्तिधा१यिनाऽवाः। द्दरिरतो

५ १ २ २ १ ४
२३४द्दायि। कानाऽयिद्दायि। क्रदात्। औ२३ द्दो

५ १ २ १ २१८ २ १ ८
वा ॥(१) अभिब्रह्मो। द्दायि। अनूषा२३ता। यक्षी

२ २ २ ३ ५ १ २
र्घृतस्यमा१ताऽराः। मर्ज्जयन्तो२३द्दायि। दायिवाऽ

२ १ ४ ५ २८ १
द्दायि। शिशुम्। औ२३द्दोवा ॥(२) रायःसमो। द्दा

२८ १ २ १ ८ २ २ १
यि। द्रा७श्वतू२३राः। अस्मभ्य७सोमावा१यिस्वाऽताः।

८ २ ५ १ २ २ १ २ ४
आपवस्वो२३४द्दायि। साहाऽद्दा। मृणा। औ३द्दो

वा। द्दोयुई। डा(३) ॥ १८ † ॥ [४]

---

* ज० गा० ८प्र० १ऋ० ७सा०। †ज० गा० १५प्र० १ऋ० १८सा०।

॥ गायत्रौशनम् ॥ तिस्रोवाचाः। उदीरा२३ता
यि। गावोमिम। तिधेना२३वाः। ह्वरायिरा३यिता३
यि। काना२३यिह्वा३४३यि। क्रा२३४दोर्ह्वायि ॥(१) अ
भिब्रह्मायिः। अनूषा२३ता। याङ्कीर्त। स्यमाता
२३राः। मज्जाया३न्तीः। दायिवा२३हा३४३यि। श्रा
२३४यिशोर्ह्वायि ॥(२) रायःसमू। द्रा॒ञ्श्रतू२३राः।
अस्मभ्य॒सौ। मविश्वा२३ताः। आपावा३स्वा३। साह्वा
२३हा३४३यि। म्रा२३४यिणार्ह्वायि(३) ॥ १० * ॥ [५]

॥ वैरूपम्† ॥ तिम्रोवा२३४चाः। उदायिरा३ता३यि।
गावोर्मा२३४यिमा। तायिधे१नावा२ः। ह्वरा२३यिः।
एता३४औह्वोवा। कानिक्रदा२३४५त् ॥(१) अभिब्रा२३
४ह्मीः। अनूषा३ता३। यङ्कार्यिरा२३४र्त्ता। स्थामा

---

* ऋ० गा० २०प्र० १अ० १०सा०। † "गायत्रोवैरूपम्"—इति ख० पु०।

१ २ ५ २ २ १ २
१तारा२ः। मर्ज्जा२३। यन्ता२५औहोवा। दिवःशि

३ १ १ १ १ २ १ ५ १ २ १ २ १ ०
शू२३४५म्॥(२) रायःसा२३४मू। द्रा॰श्वातू३रा३ः। अ

२ ५ १ ० १ २ २
सा२भ्या२३४॰सो। माविस्वाता२ः। आपा२३। वखा

५ २ १ २ १ १ १ १
३४औहोवा। सद्दमिणा२३४५ः(३)॥ ११ ॥ [६] १४.

अथ द्वितीयर्चि†—प्रथमा।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ १ ३ १ २
सुतासोमधुमत्तमाःसोमाइन्द्रायमन्दिनः।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवित्रवन्तोअक्षरन्देवान्गच्छन्तुवोमदाः॥ १ ॥

"मधुमत्तमाः" अतिशयेन माधुर्योपेता अतएव "मन्दिनः" मदकरा "सुतासः" अभिषुताः सोमाः "पवित्रवन्तः" पवित्रे वर्त्तमानाः सन्तः "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "अक्षरन्" पात्रेषु क्षरन्ति। अथ प्रत्यक्षकृतः—"व" युष्माकं "मदाः" मदहेतवः रसाः "देवान्" इन्द्रादीन् "गच्छन्तु" ॥ १ ॥

---

* ज० गा० २०प्र० १ख० ११सा०।

† 'नाष्टौ साम'—इति वि०।

‡ ज० आ० ६, २, १, ३ (२भा० १५५पृ०)= ऋ० वे० ७, ५, १, ४।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ २ १ २ १ १
इन्दुरिन्द्रायपवतइतिदेवासोअब्रुवन् ।

१ १ १२ ३ २ ३ १ १ ३ १ २
वाचस्पतिर्मखस्यतेविश्वस्येशानओजसः ॥ २ * ॥

"इन्दुः" सोमः "इन्द्राय" इन्द्रार्थं "पवते" कलशे क्षरति "—इति" "देवासः" स्तुतिकारिणः स्तोतारः "अब्रुवन्" वदन्ति; यदा स्तोतार एवं ब्रुवन्ति तदानीं "वाचः" स्तुतेः "पतिः" पालयिता † यद्वा शब्दस्य स्वामी अत्यन्तं शब्दायमान इत्यर्थः, तादृशः सोमः "मखस्यते" स्तुतिभिः पूजामिच्छति [लालसायां सुगागामः]। कीदृशः ? "ओजसः" बलवतः "विश्वस्य" सर्वस्य "ईशानः" प्रभुः ॥

"ओजसः"-"ओजसा"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ १ १ २ १ २ ३ २
सहस्रधारःपवतेसमुद्रोवाचमीङ्खयः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ १२ ३ १
सोमस्यतीरयीणाꣳसखेन्द्रस्यदिवेदिवे ॥ ३ ‡ ॥ १५

---

* ऋ० वे० ७, ५, १, ५ ।

† 'वाचस्पति'—ऋग्यजुः सामलक्षणा भो वाग्भ्यः पतिः'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ५, २, १ ।

"सहस्रधारः" बहुविध धारोपेतः "सोमः" "पवते" क्षरति । कीदृशः ? "समुद्रः" समुद्रवन्ति "रसा" रस-स्थानीयः "वाचमीङ्खयः" [ईङ्खतेर्णिजन्तस्य सुप्युपपदे खश् प्रत्ययः] स्तुतीनां प्रेरयिता * "रयीणां" धनानां "पतिः" प्रभुः [यद्वा "रयीणां" हविषोदातॄणां यजमानानां † "पतिः" पालयिता] "दिवे-दिवे" प्रत्यहम् "इन्द्रस्य" "सखा" मित्रभूतः सोमः पवते ॥

"सोमस्पतिः"-"सोमःपतिः"—इति पाठो ॥ २ ॥ १५

॥ गौरीवितम् ‡ ॥

५ र ३र २ ४ ५

सुता । सोमा३ । धुमन्तमाः ।

१र र र १ २ ४र

सोमाइन्द्रायमन्दिना२३: । पावित्रवा३१२३ । तोआ५श्च

१ र २ ४ ५ ४ ५

रान् । दायिवान्गच्छा३१२३ । तुवोवा । मा५दोꣳ६ह्वा

५ ३ २ ४ ५ १ र र र

यि ॥(१) इन्दुः । इन्द्रा३ । यपवतायि । इतिदेवासो

१ २ ४

अब्रुवा२३न् । वाचस्पता३१२३यिः । मखा५स्यतायि ।

१ र २ ४ ५ ४ ५

वायिस्वस्ये शा३१२३ । नओवा । जा५सो ६ हायि ॥(२)

५ २ २ ४ ५ १ र र र

सह । सधा३ । रःपवतायि । समुद्रोवाचमीङ्खया२३: ।

---

* 'वाचमीङ्खयः—शब्दं कुर्वन्त्य.' - इति वि० ।

+ 'सोमः पतिः केषाम् ? रयीणाम् रथ-पुरोडाशादि लक्षणानां धनानाम् अथवा सर्वसखानाम्'—इति वि० । ‡ "सखागौरीवितम्"—इति ख० पु० ।

सोमस्यताऽ१२३यिः । रयाऽयिणाम् । साखेन्द्रस्याऽ१२३ ।
दिवोवा । दाऽयिवोऽहायि(३) ॥ ३ * ॥ [१]

॥ वतन्त्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमा । धुमाऽत्तमाः ।
सोमाइन्द्राऽयमाऽ । ए३ । दिनआ । पवायिचवाऽन्तो
३ । ए३ । क्षरन्ना । दायिवान्गच्छाऽन्तुवाऽः । ए३ ।
मदाआ ॥(१) इन्दुरिन्द्रा । यपाऽवतायिदेवाऽसो ३ ।
ए३ । ब्रुवन्ना । वाचास्यताऽयिर्मखाऽ । ए३ । स्यत
आ । विश्वास्येशाऽनओ३ । ए३ । जसआ ॥(२) सह
स्रधा । रःपाऽवतायि । समुद्रोवाऽचमा ३ यि । ए३ ।
खयआ । सोमास्यताऽयिरयाऽयि । ए३ । णा ३ मा ।
सखेन्द्रस्याऽदिवाऽयि । ए३ । दिवआ(३) ॥ ४ † ॥ [२]

॥ आन्धीगवम् ॥ सुतासोमधुमा१त्तामाः । सोमाइ ।

---

* ऋ० गा० २प्र० २अ० १खा० । † ऋ० गा० २प्र० २अ० ४खा० ।

२ २ १ १ २१ २ २ २१
द्रायार२३मा। ऊम्मा २१।२। दिनःपविचवन्तीअक्षरार२

१११ १ २ २ १ २ १
३४५न्। दायिबा३उवा। गा २च्छा। तू२३बो। मदा।

१ ४५ २ २ २ १ २ २
औ३ह्वोवा ॥ (१) इन्दुरिन्द्रायपा१वाताय। इतिदे। वा

२ १ १ २२१ १० ३ १११
सो२३आ। ऊम्मा २१।२। ब्रुवन्वाचस्पतिर्मखस्यता२३४

१ २ २ १ २
५यि। वायिश्वा३उवा। स्या २यिश्रा। ना२३ओ। ज

१ २ ४५ २ २ २ १
सा। औ३ह्वोवा ॥ (२) सद्दस्मधारःपा१वाताय। समु

२ २ १ १ २२१ १ २१
द्रः। वाचा२३मा। ऊम्मा २१।२। खयःसोमस्यतीर

२२१ २ २ १ २
योणा१म्। साखा३उवा। द्रा २स्या। दा २ ३ यिवे।

१ २ ४५ ४
दिवा। औ३ह्वोवा। ह्वोई। डा(३) ॥ २० * ॥ [१]

१ २ २ ३ २ १
॥ स्वारत्वाष्ट्रीसाम ॥ सद्दस्मधा ३ द्वा। रःपवाता २

१ २२ २ ३ २२ १ १२ २
यि। समुद्रोवाा३द्वा। चमीङ्गाया २:। सोमस्यताा३यि

---

* ऊ० गा० ७।५७ १ ऋ० २० सा०।

२ १ १२ २ २ २ १
हायि। रयायिणा२म्। सखेन्द्रस्याइहायि। दिवाइ

१ ५ ४ ५
हो२३४। वा। दापयिवोईहायि(३) ॥ ८ *॥ [२]

१ २ २ २ २ १
॥ खारत्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमाइहा। धुमन्तांमा

१२ २ २ ३२ १ १ २
२:। सोमाइन्द्राइहा। यमन्दायिना२:। पवित्रवा३

२ ३२ २ १ १२ २ २ ३ १ १
हा। तोअत्तारा२न्। देवान्गच्छाइहा। तुवो३हो२

५ ४ ५ १ २ २ ३२
३४। वा। मापदोईहायि ॥(१) इन्दुरिन्द्राइहा। यप

१ १ २ ६ २ २१ २ १ १२
वाता२यि। इतिदेवाइंहा। सोअब्रूवा२न्। वाचस्प

२ २ ३ २ १ १ २ २ २ २
ताइयिर्हायि। मखस्यातारयि। विश्वस्येशाइहा। न

२ २ ५ ४ ५ १ २
ओइहो२३४। वा। जापसोईहायि ॥(२) सहसधा ३

२ ३ २ १ १ २ २ २ ३ २ १
हा। रःपवातारयि। समुद्रोवाइहा। चमीङ्गाया२:।

१२ २ २ १ १२ २ २
सोमस्यताइयिहायि। रयायिणा२म्। सखेन्द्रस्याइहा

२ २ १ ५ ४ ५
यि। दिवाइहो२३४। वा। दापयिवोईहाइ(३) ॥१ †॥[३]

---

* ऋ० गा० ८५० १ अ० ८ खं०। † ऋ० गा० १५५० २ अ० १ खं०।

॥ द्विरभ्यस्ताष्ट्रीसाम ॥ सुता। सोमाइ। हा इ

हा। धुमत्तामा२३४:। सोमाः। इन्द्राइ। हाइहा।

यमन्दायिना२३४:। पवि। त्रवाइ। हाइहा। तोत्व

त्वारा२३४न्। देवान्। गच्छाइ। हाइहा। तुवोइ

त्वो२३४। वा। मा५दो६त्वायि ॥(१) इन्दुः। इन्द्रा

इ। हाइहा। यपवाता२३४यि। इति। देवाइ। हा

इहा। सोमब्रूवा२३४न्। वाचः। पताइयिः। हाइ

त्वायि। मखस्याता२३४यि। विश्व। स्येशाइ। हाइ

हा। नमोइहो२३४। वा। जा५मो६त्वायि ॥(२) स

ह। मधाइ। हाइहा। रःपवाताइ३४यि। समु।

द्रोवाइ। हाइहा। चमोद्भ्नाया२३४:। सोमः। पता

इयि। हाइत्वायि। रयायिणा२३४म्। सखे। द्रुह्या

३ २ १ ५ ४
३। ह्वा३ह्वायि। ह्विवा३ह्वो२३४। वा। दा५यिवो६
१
ह्वायि(३) ॥ २ * ॥ [४]

१ १२ २२ १ २ २
॥ ऊर्ङ्त्वाष्ट्रीसाम ॥ सुतासोमधुमत्तमाः। सोमा
१ ३ २ ३ ५ २ १ २ २
२३इन्द्रा२। यमा३४५। दी२३४नाः। पवित्रवन्तोऽअ
१ १ १ १ ३२ २ १ २ १२ २
क्षरा२३४न्। देवान्गच्छा। तुवोमा२३दा ३ ४ ३:॥(१)
१ २ १ २ २ १ १२ ३२ २
इन्दुरिन्द्रायपवतायि। आयिता२यिदेवा२। सोऽआ३४
३ ५ २१ २ ३ १ १ १ १ ३
५। ब्रू२३४वान्। वाचस्पतिर्मखस्यना२३४५यि। वि
२२ १ २ १२ २ २ १ २२ १
श्वस्येशा। नऽओजा२३सा३४३: ॥(२) सहस्रधार:पवता
१२ ३ २ ४ ५ १२
यि। सामू२द्रोवा२। चमा३४५यि। खा२३४याः। सो
२ १ ३२२ ३५ २ ४ २ २ १ २ १२ २
मस्यतौरयीणा१म्। सखेन्द्रस्या। दिवेदा२३यिवा३४३
१
यि। ओ२३४५ई(३) ॥ २ † ॥ [७]

५ २ २ ४ ५ ४ ५ १२ १ २ १
॥ साध्रम् ॥ सुतासो३साऽधुमत्तमाः। सोमाइन्द्रा२।

---

* ऊ० गा० १५प्र० २अ० २सा०। † ऊ० गा० १६प्र० १अ० २सा०।

३ २ ३ ५ २ १ २ ८ २ १ १ १ १
यमा३४५। दी२३४नाः। पवित्रवन्तोअक्षरा२३४५न्।

१ २ ३ ५ १ २ ३ ५ ४
दायिवाओ२३४५वा। गाक्काओ२३४वा। तुवो५मदाः॥(१)

५ ८ ४ ५ ५ ५ २ १ २८ १ ३८ १
इन्दुरा३यिन्द्रायपवतायि। इतायिदेवा२। सोआ३४५।

३ ५ २८ १ २ ३ १ १ १ १ १ २
ब्रू२३४वान्। वाचस्पतिर्मखस्यता२३४५यि। वायिष्म

३ ५ १ २ ३ ५ ४
ओ२३४वा। स्यायिषाओ२३४वा। नओ ५ जसाः॥(२)

५ २ ४ ५ ४ ५ २ १ २८ १ ३ २
सहस्रा३धारःपवतायि। समुद्रोवा२। चमा ३ ४ ५ यि।

३ ५ १८ २ १ ८ २ ३८ २ २ ३
खा२३४याः। सोमस्यतोरयिणा१म्। साखाओ २ ३ ४

५ १ २ ३ ५ ४ ४
वा। द्रास्याओ२३४वा। दिवे५दिवायि। हो ५ ई।

३ २ २ ४ ५ २
॥ श्यावाश्वम्॥ सुता३१। सोइमाऽ। धुम। ताइ

४ ५ १ ८ ८ २ १
म। एहिया। सो। माइन्द्राया। म। दिना २ः।

१८ १ २ ४ ५ १८
एहिया २। पवित्रवान्तो३आ३। न्ना२३४रान्। ऐहा

ऊ० गा० २०प्र० १अ० १२सा०।

१२ २ २ १ २ ४ २
२यि। एह्यि२। देवान्गाच्छान्तू३वो३। मा३४५दोई

५ २ २ २ ४ऽ ५ २ ४२
ह्वायि ॥(१) इन्दू३१:। आ३यिन्द्रा। यप। वा३ते।

५ १ २ २ २ १ १२
एह्यि। आयि। तिदेवासो। अ। ब्रूवा२न्। ए

२ १ २ ४ ५ २२
ह्यि२। वाचस्पतायिर्म्मा३खा३। स्या२३४ताये। ऐ

१२ १२ २ ४ २
द्रा२यि। एह्यि२। विश्वस्येशाना३ओ३। जा३४५

५ ३ १ २ ४ऽ ५ २ ४२
सोईह्वायि ॥(२) सद्रा३१। स्रा३धा। रःपा। वा३ते।

५ १ २ २ २१ १ १२
एह्यि। साम्। उद्वोवाचाम्। ई। खया२:। ए

२ १ २ ४ ५ १२
ह्यि२। सोमस्यातीरा३। या२३४यिणाम्। ऐद्रा

१२ २ १ २ ४ २
२यि। एह्यि२। सखेद्र स्यादा३यिव३। दा३४५यि

५
वोईह्वायि(३) ॥ १३ * ॥ [८]

२ १२ २२ १ २ १ २
॥ मद्राविष्टम्भम् ॥ सुतासोमोद्वायि। धुमत्तमोवा।

१ २ २ २ १ २ १ २ २ १
सोमाइन्द्रा। यमान्दा१यिना२३:। द्वोवा३द्वायि। पवित्र

---

* ऋ० गा० २०प्र० १ष० १२सा०।

२ २ १ २ २ १ २ १ २
व। तोआच्चा१रा२३न्। होवा३ च्चायि। देवान्गा १

२ १ २ २ १ २ ५ २ ८
च्चा२३। च्चोवा३च्चा। तुवः। मा२दा२३४औहोवा ॥(१)

१ २ १ २ १ २ १ २ २ १ २
इन्दुरिन्द्रोच्चा। यपवतोवा। आयितिदेवा। सोआम्रू

१ २ २ २ १ २ १ २
१वा२३न्। च्चोवा३च्चायि। वाचस्पतिः। मखास्या१,

१ २ २ १ २ १ २
ता२३यि। च्चोवा३च्चायि। विश्वास्ये१भ्रा२३। च्चोवा३

२ १२ ३ ५ २ २ १ २ १
च्चा। नआ। जा२सा२३४औहोवा ॥(२) सच्चसुधोच्चा।

२ १ २ १ २ २ १ २ १
रःपवतोवा। सामुद्रोवा। चमायिच्च१या२३ः। हो

१ २ १२ १ २ ५ २ २
वाउच्चायि। दिवे। दा२यिवा२३४औहोवा। दी२३४

५
भ्राः(३) ॥ ११* ॥ [१०] १५

अथ तृतीयत्रचे†—प्रथमा।

३ १ २ २ १ २
पविच्चन्तेवितनम्ब्रह्मणस्पते

३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रमुर्गात्राणिपर्येषिविश्वतः।

---

० ऊ० गा० २२०प्र० २अ० ११वा०। †.'चरिष्ठं साम'—इति वि०।

१ २ १ २उ २ १ २
अतप्ततनूर्नतदामोअश्नुते
३ २ ३ १ २१ २ १ २२
शृतासद्वहन्तःसन्तदाशत ॥ १* ॥

हे "ब्रह्मणस्पते" मन्त्रस्य स्वामिन् सोम! "ते" "पवित्रं" शोधकमङ्गं "विततं" सर्वत्र विस्तृतम्। सः "प्रभुः" प्रभवितासि. "गात्राणि" पातुरङ्गानि "पर्येषि" परिगच्छसि "विश्वतः" सर्वतस्तव तत् पवित्रम् "अतप्ततनूः" पयोव्रतादिना असन्तप्तगात्रः "आमः" अपरिपक्वः "न अश्नुते" न व्याप्नोति। "शृतासः इत्" "शृताएव" परिपक्वाएव "वहन्तः" यागं निर्वहन्तः "तत्" पवित्रम् "समाशत" व्याप्नुवन्ति॥

"सन्तदाशत"--"तत्समाशत"—इति पाठौ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १
तपोष्पवित्रं विततन्दिवस्पदे
१ ३ २ ३ २क २२
शर्न्तोअस्यतन्तवोव्यस्थिरन्।

---

* छ० आ० ६, २, १, १२ (२भा० १९८ पृ०) = ऐ० ब्रा० १, २१=बृ० दे० ७, ३, ८, १।

१ २ २१ २३ १ २
अवन्त्यस्यपवितारमाशवो

२ २ २१ २२ २१२
दिवःपृष्ठमधिरोहन्तितेजसा ॥ २ * ॥

"तपोः" † शत्रूणां तापकस्य सोमस्य "पवित्र" शोधक-मङ्गं "दिवस्पदे" द्युलोकस्योत्थिते स्थाने "विततं" विस्तृतम् ["तृतीयस्यामितो दिवि सोम आसीत्"—इति ब्राह्मणम्] "अस्य" "तन्तवः" अंशवः ‡ "अर्चन्तः" दीप्यमानाः "व्यस्थिरन्" विविधं तिष्ठन्ति पृथिव्यां हविर्द्धाने वा "अस्य" सोमस्य "आशवः" शीघ्रगामिनः रसाः "पवितारं" पावयितारं यजमानम् "अवन्ति" रक्षन्ति होमद्वारा पश्चाद्भुता "दिवः" द्युलोकस्य "पृष्ठं" पृष्ठभागम् उन्नतदेशम् "तेजसा" स्वप्रकाशेन सार्द्धं "अधिरोहन्ति" आरोहणं कुर्वन्ति ॥

"अर्चन्तः"-"शोचन्तः"—इति पाठो, "अधिरोहन्तितेजसा"-"अधितिष्ठन्तिचेतसा"—इति पाठो ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७, ३, ८, २।

† 'हे तपोः'—इति वि०।

‡ 'अस्य दशापवित्रस्य तन्तवः'—इति वि०।

अथ तृतीया।

१ १ २ २ १ २ १ १
अरुरुचदुषसःपृश्निरग्रिय

२ १ २ २ १ १ २ २
उच्चामिमेतिभुवनेषुवाजयुः।

१ १ २ १ १ २ १ १
मायाविनोममिरेअस्यमायया

२ १ २ १ २ १ २ १ २
नृचक्षसःपितरोगर्भमादधुः॥ ३ * ॥ १६

"उषसः" सम्बन्धि "पृश्निः" आदित्यः ["पृश्निरादित्यो भवति प्राश्नुत एनं वर्णः"—इति निरुक्तम् (२, १४)] "अग्रियः" मुख्यः सोऽयं "अरुरुचत्" रोचयति। स "उच्चा" जलस्य सेक्ता "भुवनेषु" भूतजातेषु "मिमेति" मिनोति उदकं प्रक्षिपतीत्यर्थः। "वाजयुः" † तेषामन्नमिच्छन् "मायाविनः" माया प्रज्ञा तद्वन्तः देवा "अस्य" सोमस्य "मायया" प्रज्ञया "ममिरे" निर्मितवन्तः, सोमस्यैकैकांशपानबला अग्न्यादयः स्व-स्व-व्यापारेण जगत् सृजन्तीत्यर्थः। तथा "अस्य" मायया "नृचक्षसः" नृणां द्रष्टारः "पितरः" पालका देवाः अङ्गिरसः पितरो वा "गर्भम्" "आदधुः" धारयन्ति ओषधीषु च। अत्र सूर्यात्मकः सोमः स्तूयते। सूर्यरश्मयनुगमाधीन-

---

० ऋ० वे० ७, ३, ८, ३।

† 'वाजयुः—वाजमन्नं तदिच्छुः अथवा वाजयुः वाजप्रदः अथवा वाजयुः वेगवान्'—इति वि०।

वर्धनाच्छन्दस्य अयमुषसः पृश्निः सविता अरूरुचत् रोचते रोचयति वासवं शिष्टं समानं तत्सम्बन्धिनः नृचक्षसः नृणां द्रष्टारः पितरो जगद्रक्षका रश्मयो गर्भमादधुः हृष्टार्थम् ॥

"मिमेतिभुवनेषु"-"बिभर्त्तिभुवनानि"—इति पाठौ ॥३॥ १६

॥ स्वारसाम ॥ पवौहोवा। त्रन्ते वितंत्रा। ह्वणास्पा
ता२यि। प्रभुर्गात्राणिपरियायि। षिविश्वातां २ ३:।
आताइम्नाता। नून्नीता२३४दा। ह्वो। मोत्रास्नू२३४
नायि। ह्वोइयि। ग्नात्ताइसाईत्। वाहन्तो२३४:मा।
ह्वा। तदाइशा५नाई५६ ॥ १) तपौहोवा। पवित्रंवित
ताम्। दिवस्पादा२यि। अर्चन्तोअस्यतन्तवो। वियं
स्यायिरा२३न्। आवाइन्तीया। स्यापावी २ ३ ४ ता।
ह्वा। रमात्मा२३४वाः। ह्वोइयि। दायिवाइःपार्ष्ठाम्।
आधीरो२३४हा। ह्वा। तिताइयिजा५सा ६ ५ ६ ॥(२)
अरौहोवा। रुचदुषसःपा। श्निरयाया२:। उच्चाभि

मेतिभुवनायि। षुवाजायू२३:। मायाइवायिनो। मा
मौरे२३४आ। हो। स्यमाया२३४या। हो३यि। ना
र्षाइत्रासा:। पायितारो२३४गा। हो। भमाइदा५धू
र्ष्ट:(३)॥१ * ॥ [१]

॥ कावम्† ॥ पवोवा। चन्ते विततंब्रा। ह्मणस्पा।
ता२यि। प्रभुर्गाचाणिपरियायि। षिविस्वाता२:।
अतप्ततनूर्न्नतदा। मोअश्न ता२३यि। शार्त्ताइसाईत्।
वह्न्ता:सा२३म्। तादाइआपूता६५६॥(१) तपोवा।
पवित्रंविततम्। दिवस्पादा२यि। अर्चन्तोअस्यतन्त
वो। वियस्थायिरा२न्। अवन्त्यस्यपविता। रमाशा
वा२३:। दायिवाइ:पार्ष्ठाम्। अधिरोहा२३ तायि
ताइयिजापुसा६५६॥(१) अरोवा। रुचदुषस:पा। श्नि

---

† उ० गा० ७प्र० २अ० १सा०।

१ १ १ २ २ २ १
रम्माया२ः। उत्तामिमेतिभुवनायि। षुवाजाय्यू२ः।
१२२ २ २ २ १ १ २ ४ ५
मायाविनोममिरेआ। स्यमायाया२३। नार्च्चा३त्तासाः।
२ १ १ २ ४
पितरोगा२३। भामा३दा५धू६५६ः(३) ॥ ३ * ॥ [२]

४ २ ४ २ ४ ५
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवाऽ५यित्नम्। ता३यिवां३यिततंत्र।
१ २ २ २ २ १ २ २
ह्लाणस्यतेप्रभुर्गात्राणि। परियायि। षी३वायिस्वा३नाः।
१ १ २ २ २ २ १
अता२न्नतनून्नंतदामोअश्नु। तेग्रा२३र्त्ती। ऊम्मायि।
२ २ १ ३ २ १ २ १२
सा३ईत्। वाहन्तःमन्तदा२ग्नाउ ॥(१) ताता। पोष्य
२ २ २ २
वित्नंवितन्दिवस्पदेर्च्चन्तोअस्यतन्तवो। वा३यास्था३यि
२ १ १ २ २ २
रान्। अवा२न्त्यस्यपवितारमाशु। वोदा२३यिवाः।
१ २ २ १ ३ २
ऊम्मायि। पा३ष्ठाम्। आधिरोहन्तिता२यिजसाउ ॥(२)
१ २ १२ २ २
सास्रा। रुरुचदुषसःपृश्निरग्रियउत्तामिमेतिभुवनायि।
२ १ २ २ १२ १२ २ २ २
षू३वाजाय्यूः। मायाविनोममिरेअस्यमाय्। यानाः

* उ० मा० १२प्र० २ऋ० ३सा०।

२ १ १ २ १ २ २ १ २
श्र्वा। ऊम्माय्यि। क्षाइसाः। पायितरोगर्भमाइदधा

२ १११
उ। वाइ४५(३) ॥ १ * ॥ [३] १९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य चतुर्थस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

अथ षष्ठे खण्डे ‡ः—

प्रथममन्त्र प्रगाथे—

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
प्रमꣳहिष्ठायगायतऋतावृबृहतेशुक्रशोचिषे।

३ १ २ ३ १ २
उपस्तुतासोअग्नये ॥ १ ¶ ॥

हे "उपस्तुतासः" उपस्तोतारः। यूयं "मंहिष्ठाय" दातृतमाय "ऋतावृने" ऋतवते यज्ञवते वा "बृहते" महते "शुक्रशोचिषे" दीप्ततेजसे "अग्नये" "प्र गायत" स्तोत्रं पठत ॥ १ ॥

उ० गा० १५प्र० १ख० १मा०।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोम साम'—इति वि०।

‡ 'इदानीमुक्थानि भवन्ति'—इति वि०।

¶ ऋ० आ० २ १, २, १ (१ मा० १७४ प०) = ऋ० वे० ६, ७, १४, २।

अथ द्वितीया ।

१ १ २ १ २ ३ ४ ३ २ २ १ १ २ १ २
आव॰स्तेमघवावोरवद्यशःसमिद्धोद्युम्नयाऊतः ।

२ १ २ ३ १ २४२ २ २ २ ३ १ २
कुविन्नोअस्यसुमतिर्भवीयस्यच्छवाजेभिरागमत् ॥ २* ॥१७

"मघवा" धनवान् "द्युम्नी" अन्नवान् यशस्वी वा । [तथाच यास्कः—"द्युम्नं द्योतते र्यशोवान्नं वा (५, ५)"—इति वि. "समिद्धः" सम्यग् दीप्तः "आहुतः" आभिमुख्येन हुतः अग्निः "वोरवत्" पुत्रवत् "यशः" यशस्करम् अन्नम् "आवंसन्ते" यज़मानेभ्य आ प्रयच्छति तस्य "अस्य" अग्नेः "भवीयसी" अस्मासु अतिशयेन भवितुं योग्या "सुमतिः" अनुग्रह-बुद्धिः "नः" अस्मान् "अच्छ" प्रति "वाजेभिः" अन्नैः सह "कुवित्" बहु-सलिलम् † [कुविदिति बहु-नाम (निघ० ३, १, १२)] "आगमत्" आगच्छतु ॥

"भवीयसी"-"नवीयसी"—इति पाठो ॥ २ ॥ १७

५ २ ४२ ५२ २
॥ प्रम॰ंहिष्ठीयम् ॥ प्रम॰ंहाऽयिष्ठायगायता । ऋ॰

१ १ २ ४ ५ २ १
तावे २ । बृहतेऽऋक्षाऽग्नेऽ । चाऽऽ३४यिषायि । उपा

---

* ऋ० वे० ६, ७, १४, ४ ।

† 'कुवित्—कदाचन'—इति वि० ।

२ २ १ २ ४ २ ५
औ३ह्वो। स्तोतासो३आ३। ग्रा३४५यो ६ ह्वायि ॥(१)
५ २ ४र र ५ २र १ १ र
उपस्तृ३तासो३अग्मयायि। आव॰साता २यि। मघवाना
२ ४ ५ २ १ २ २ १ २
यिरा३वा३त्। या२३३ग्राः। समाऔ३ह्वो। धोत्यू न्नी
४ २ ५ ५ २ ४ ५र
३या३। ह्व३४५तो ६ ह्वायि ॥(२) समिद्वो३द्युम्नीयाऊता:।
२ १ १ २ ४ ५
कुवायिन्नो २। अस्यसुमनातिर्भा३वी३। या२३४साथि।
२ १ २ २ १र १ ४ २ ५
अच्छाऔ३ह्वो। वाजायिभो३रा३। गा३४५मो ६ ह्वायि(३) ॥

॥ ५ * ॥ [१] १७

अथ द्वितीयत्रचे†—प्रथमा।

२ ३ १ २ १ १ २ २ १ २ ३ २
तन्ते मदग्नॄणीमसिवृषणम्पृत्नुसासहिम्।
३ १ २ ३ १ २
उलोककृत्नुमद्रिवोहरिश्रियम् ॥ १ ॥ ‡

हे "अद्रिव:" वज्रवन् इन्द्र! "ते" त्वदीयं तं "मद" सोम-पान-जनितं हर्षं "गृणीमसि" गृणीम: प्रशंसाम: ['गृ शब्दे'

---

० ऋ० मा० ९प्र० २अ० ५सा०।

† 'द्वादिवर्तं' साम'—इति वि०।

‡ द्र० आ० ४, २, ५, ३ (१भा० ७८८ पृ०) = ऋ० वे० ६, १, १७, ४।

क्यादिः "प्वादीनां ह्रस्वः (७, ४, ८०)", "इदन्तोमसि (७, १, ४६)"—इति ममद्गागमः]। कीदृशम्? "हवणं" वर्षितारं कामानां "पृत्सु" पृतनासु सङ्ग्रामेषु "सासहिं" शत्रूणाम् अभिभवितारं "लोककृत्नु" लोकस्य स्थानस्य कर्त्तारं "हरिभ्याम्" अश्वाभ्यां "श्रययणीयं" सेव्यम् ["उ"शब्द एवः समुच्चये पादपूरणे वा]॥

"पृत्सु"-"पृत्सु"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
येनज्योतीꣳष्यायवेमनवेमनवेचविवेदिथ।

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
मन्दानोअस्यबर्हिषोविराजसि॥ २ *॥

हे इन्द्र! "येन" आत्मीयेन मदेन "आयवे" और्वशेयाय † "मनवे" विवस्वतः पुत्राय च "ज्योतींषि" सूर्यादीनि हत्वादिभिरावृतानि तदा रोधं "विवेदिथ" अलम्भय प्रज्ञापितवान् प्रकाशितवानसीत्यर्थः; तेन मदेन "मन्दानः" मोदमानस्त्वम् "अस्य बर्हिषः" हृद्यस्य यज्ञस्य "विराजसि" विशेषेण दीप्यसे [यद्वा अस्येति तृतीयार्थे षष्ठी, अनेन बर्हिषा हृद्येन मदेन हृष्यन् विराजसि विशेषेण दीप्यसे॥ २॥

---

० ऋ० वे० ६, १, १७, ५।

† 'आयवे—यजमानाय—इति वि०।

अथ तृतीया ।

१ २ १ २ २ १ १२ २१ २
तदद्याचित्तउक्थिनोनुष्टुवन्तिपूर्वथा ॥

१ २ २१ २ २१ २
वृषपत्नीरपोजयादिवेदिवे ॥ ३ * ॥ १८

हे इन्द्र ! "ते" त्वदीयं "तत्" प्रसिद्धं बलं "अद्याचित्" † अद्यापि ‡ "पूर्वथा" ¶ पूर्वस्मिन् काले इव "उक्थिनः" शस्त्रिणः स्तोतारः "अनुष्टुवन्ति" क्रमेण प्रशंसन्ति । स त्वं "वृषपत्नीः" वृषा वर्षन्तः पर्जन्याः पतिर्यासां तादृशीः "अपः" "दिवेदिवे" प्रतिदिवसं "जय" § स्वायत्तं कुरु ॥ ३ ॥ १८

१ २ २ १
॥ हारिवर्णम् ॥ तन्तेमदा२गृणीमसायि । चार्षणं
२
१ २ २ १ २ २ १ १ २
प । चुसामा३हो३म् । होवा३हायि । उलोका३कृ३ ।
१ २ २ १ २ ५२ २ २
होवा३हा । नुम । द्रा२यिवा२३४औहोवा । हरि

---

* ऋ० वे० ६, १, १८, १ ।

† "निपातस्य च (६, ३, १३६)"—इति वि० ।

‡ 'चित्—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

¶ "दिक्शब्देभ्यः (५, ३, २७)"—इति था ।

§ मन्त्रे जयति दीर्घान्तः, तत्र "ह्रस्वोऽनक्षिजः (६, ३, १३५)"—इति ह्रस्वः ।

१ १२१ १ १२ २ २
श्रिया२३४५म् ॥(१) येनज्योता२यिंषिमापवायि। मा

२२ १ २ २ १ २ २ १ २
नवेच। विवायिदी३था३। ह्वोवा३ह्वायि। मन्दानो ३

२ १ २ २ १ ३ ५२ २
आ३। ह्वोवा३ह्वा। मयव। ह्वा२यिषा२३४औह्वोवा।

२ २ १ १ १ १ १ २ १
विराजसा२ ३ ४ ५ यि ॥(२) तदद्याचा२यित्तंउक्थिनाः।

२ २ २ २ १ २ २ १ २ २
आनुष्टुव। तिपूर्वा३था३। ह्वोवा३ह्वायि। वृषापात्नी३ः।

१ २ १ १ ३ ५२ २ २ २
ह्वोवा ३ ह्वायि। अपः। जा२या२३४औह्वोवा। दिवे

२ १ १ १ १
दिवा२३४५यि(३) ॥ ६ * ॥ [१]

२ २ २ २ १ २ ३ ५ २
तन्तेमदाऔह्वोह्वायि। गार्णीयिमा२३४साय। वृ

१ ५ १ २ २ २ ३२ ४२ ५
षाणा२३४५ह्वायि। पुत्रूसासहिमुलोका३४। औह्वोवा।

१ २ ५ २ २ ५ २ १ २ १ ७ २
ह्वा२३४ह्वायि। उरुवा२३४कृ। त्नुमद्रि। वोहरिश्रा

३२ ४२ ५ १ ३ ५ ३२ २
३४। औह्वोवा। ह्वा२३४ह्वायि। औहो३१२३४।

५२ ५ २२ २ २ २ १ २
याम्। एहियाह्वा ॥(१) येनज्योता। औह्वोह्वायि।

---

० उ० मा० २प्र० २ख० ६सा०।

३ ५ २ १ ५ १ ४
षोआयाइ३४वायि। मनावाइ३४ईंहायि। चविवेदिथम

४ १ २४ ४४ ५ १ ३ ५ २ ३
न्दानाइ४। औहोवा। इहाइ३४हायि। उऊवाइ३४

५ २१ २ १ ०४१ ३४ ४४ ५ १ १
आ। स्रवर्हि। षोविराजाइ४। औहोवा। इहाइ३४

५ ३४ २ ५४ ५
हायि। औहो३१२३४। सायि। । एहियाईहा॥(२)

२ ४४ ४ १ २ ३ ५ १ १
तदद्याचाऔहोहायि। ताउच्छाइ३४ईनाः। अनूष्टइ३

५ १ ४ ४ २ ३४ ४४ ५ १ ३ ५
४हा। वन्तिपूर्वथावृषपाइ४। औहोवा। इहाइ३४हा

२ ३ ५ २१४२ १ ७४२ ३४
यि। उऊवाइ३४त्नीः। अपोज। यादिवेदाइ४। औ

४४ ५ १ ३ ५ ३४ २ ५४
होवा। इहाइ३४हायि। औहो३१२३४। वायि। ए

५
हियाईहा(३)॥ १३ ॥ [२]

५ ४ २ ४ ५४ ४ ५ १
॥ सौभरम्॥ तन्ताइयिमाइदङ्गृणीमसिवा। वृषणं

४ १ ७ १ ३ ५ १
पृश्नुसासाइहायिमुलोइ३। हो। काइ३४कू। नुमद्रि

५ २ १ ३ ५४ ४ ५४ ४
वः। हराइयिहाइयि। आइयाइ३४औहोवा॥(१) येना

० ऋ० गा० १३प्र० १अ० १३सा०।

३ ४ ५२ ४ ५ १ २ २ १ ७
इज्योइतीषिआयवोवा । मनवेचविवेदा२यिथामन्दा

१ २ ५ १ ६ २
२३। हो। नो२३४आ। स्यवर्हिषः। विराइहाइयि।

१ ३ ५२ २ ५ ४ ७ ४ ५ ४ ५
जाइसा२३४औहोवा ॥(२) तदाइद्याइचित्तउक्थिनोवा।

१ २ १ ७ १ ३ ५ १
अनुष्टुवन्तिपूर्वा२थावृषा२३। हो। पा२३४त्नीः। अ

२ २ ६ १ १ ३ ५२ ७ १
पोजया। दिवेइहाइयि। दा२यिवा२३४औहोवा। ऊ

१ १ १ १
२३४५(३) ॥ १९ × ॥ १८

अथ तृतीयतृचे*—प्रथमा।

३ १ २२ ३ २उ ३ १ २ ३ १ ४
अधीहवन्तिरश्याइन्द्रयस्त्वामपर्यति।

१ १ २ ३१ २ १ १ २ ३ १ २
सुवीर्यस्यगोमतोरायस्पृद्धिमहाऽअमि ॥ १क्ष ॥

ह इन्द्र' यः "त्वा" त्वां "मपर्यति" | मपरशब्दः कण्ड्वादिः¶ हविर्भि परिचरति। तादृशस्य "तिरश्चाः"—एतन्नामकस्य ऋषेर्मम "हवं" स्तुतिभिस्त्वद्विषयमाह्वानं "शृधि" शृणु।

* उ० गा० १९प्र० १अ० १९म०।

† "तिरश्च तृतीयमुक्थ्यम —इति वि ।

‡ ह० आ० ४, २, १, ५ (७०७ पृ०) = ऋ० वे० ६, ६, १०, ५।

¶ अत "कण्ड्वादिभ्यो यक (३, १, २७)"—इति यकि कृतमिति भाव ।

सुता च हे इन्द्र! त्वं "सुवीर्यस्य" शोभन-वीर्योपेतस्य [यद्वा, वीरे पुत्रे भवं वीर्यं, सुपुत्रवतः] "गोमतः" गवादि-पशुमतः "रायः" धनस्य दानेन अस्मान् "पूर्धि" पूरय। एतत्सामर्थ्यं कुतइत्यतआह—त्वं "महान्" गुणाधिकः श्रेष्ठश्च "असि" भवसि खलु ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ १ ३ १ २ ३ १ २८
यस्तइन्द्रनवीयसीङ्गिरस्वन्द्रमजीजनत्।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ १
चिकित्विन्मनसन्धियम्प्रत्नामृतस्यपिप्युषीम्॥ २ * ॥

हे "इन्द्र!" "यः" यजमानः "नवीयसीं" नवतरां † पुनःपुनः क्रियमाणतया "मन्द्रां" मदकरीं "गिरं" स्तुति-लक्षणां वाचं "ते" त्वदर्थम् "अजीजनत्" उदपीपदत् अकार्षीदित्यर्थः। तस्मै "स्तोत्रे" त्वं "प्रत्नां" पुरातनीम् ‡ "ऋतस्य" सत्यस्य¶ सम्बन्धि [यद्वा तृतीयार्थे षष्ठी (३, ३, ६३)] सत्येन "पिप्युषीं" प्रवृद्धां ["सिलङ्याजोश्च (६, १, २९)"—इति प्यायतेः पी-भावः] तादृशः "चिकित्वित् मनसं" ['कित ज्ञाने' असो रूपम्, आकारस्येकारश्छान्दसः] चिकित्वांसि ज्ञानानि

---

* ऋ० वे० ६, ६, २०, ६।

† 'नवीयसीं—नवतरां मृदुपदवर्णस्वरोदाहरणयुक्ताम्'—इति वि०।

‡ 'ऋग्यजुःसामलक्षणाम्'—इति वि०।

¶ 'ऋतस्य पिप्युषीं—ऋतो यज्ञः अथवा ऋतमन्नम् अथवा ऋतः प्रजापतिः अथवा ऋतं सत्यं परं ब्रह्म, तस्य पिप्युषीं पोषणसमर्थाम्'—इति वि०।

सर्वेषां हृदयानि यथेति अभयङ्क्रियमाणं यत्तव रक्षणं तत् सर्वेषां हृदयं प्रज्ञापयतीति । ततः अतीन्द्रियार्थदर्शिकं "धिय" : त्वदीयं रक्षणाख्यं कर्म तस्मै कुरु ॥

"यस्मइन्द्र"-"इन्द्रयस्मे"—इति व्यत्ययेन पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१२ २१८ २१२२ १२ १२ .
तमुष्टवामयज्ञियइन्द्रमुक्थयानिवावृधुः ।
२१२ ३१ २ १२
पुरूण्यस्यपौंस्यासिषासन्तोवनामहे ॥ २ * ॥ १८

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः ॥

ऋषयः "तम्" परस्परमाहुतं पूर्वोक्तलक्षणम् "उ"—इत्यवधारणे तमेव "इन्द्रम्" "स्तवामः" स्तुतिभिः स्तुमः "यम्" इन्द्रं "गिरः" अस्माकं स्तुतयः "उक्थ्यानि" शस्त्राणि च "वावृधुः" प्रावर्धयत् तं स्तुमः ; ततो वयम् "अस्य" इन्द्रस्य "पुरूणि" बहूनि "पौंस्यानि" वीर्याणि "सिषासन्तः" ['षण सम्भक्तौ' सनीड्भावपक्षे आत्वे कृते रूपं. "सनोतेरनः (८, ३, १०८)"—इति सांहैतिकं षत्वम्] तानि वीर्याणि सम्भक्तुमिच्छन्तः सन्तो "वनामहे" तमिन्द्रं स्तुतिभिः सम्भजामहे ॥ ३ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ६, २१, १ ।

५ २ १ ४ ५ ४ ५ २ १ २ १
॥ तैरश्वम् ॥ अुधीहाइवन्तिरश्वियाः। इन्द्रायत्वा।

२ २ ७ १ ५२ ३ २ ७ ५ १
सपर्य्यताइ३४यि। सुवी। रिया। स्याइ३४गो। मा

१ ७ २ २ ४
ताइः। रायास्यूर्ईइ। हाइहायि। महा५ँअसी ॥(१)

५ २ ४ ५ ४२ ५ २ १ २ १ २ ३२
यस्त्वाइयिन्द्रनवीयसायिम्। गिराम्मन्द्राम्। अजी

२ १ ५ ३ २ ७ ५ १
जनाइ३४त्। चिकि। त्विन्मा। नाइ३४साम्। धाया

१ २ २ २ ४
२म्। प्रत्नामार्त्ताइ। हाइहा। स्यपाऽ५यिष्पुषीम् ॥(२)

५ २ ४२ ५ ५ ५ २ १ २ १ २ ३२ २ १
तमुष्टाइवामयङ्गिराः। इन्द्रामुक्था। निवावृधूइ३४ः।

५२ ७ २ ७ ५ ७ १ २
पुरू। णिया। स्याइ३४पौ। साया२। सिषासान्ताइः।

२ २ ४ ४
हाइहायि। वनाऽ५महायि। होऽ५ईं। डाइ३) ॥ ७ *॥ [१]

१ २ २ २ १ २ ३
॥ वारवन्तीयम् ॥ अुधीहवाओहोहायि। ताईरश्वाइ३

५ २ २ १ ५ १ २ १ २
४याः। इन्द्रयत्वासपर्य्यातोइ३४हायि। सुवीर्य्यस्यगो

---

* ऋ० मा० २प्र० २अ० ७सा०।

२ ३२४३ ५ १ १ ५ २ २ ५
मा३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उङ्खवा२३४ताः।

५२ १ २२ १ ७ २ २ ३२ ४२ ५ १ १
रायस्पू। धायिमहाएआ३४। औहोवा। इहा२३४

५ ३२ २ ५२ ५ २
हायि। औहो३१२३४। सायि। एहियाईहा ॥(१) य

२ २ १ २ २ ५ २ २
स्तइन्द्राऔहोहायि। नावीया२३४सायिम्। गिरआ

२ २ १ ५ १ २ ५२
न्द्रामजीजानो२३४हायि। चिकित्विन्मनमन्धा३४। औ

४२ ५ १ १ ५ २ ७ ५ २ १२ २
होवा। इहा२३४हायि। उङ्खवा२३४याम्। प्रत्नाम्ट।

१ ७ २ ३२ ४२ ५ १ ३ ५ ३२ २
तास्यपिप्यू३४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो

५२ ५ २ २ १ २
३१२३४। षीम्। एहियाईहा ॥(२) तमुष्टवाऔहोहा

२ ५ २ २ २ १
यि। मायङ्गा२३४यिराः। इन्द्रमुक्थानिवावार्ध्वो२ ३ ४

५ १ २ २ २ २२ ४२ ५ १ ३
हायि। पुरुष्यस्यपौएसा३४। औहोवा। इहा२३

५ २ ३ ५ २ १२ २ १ ७ २ २ ३२
४हायि उङ्खवा२३४या। सिषास्। तोवनामा३४। औ

४र ५ १ २ ५ ३र २ ५र
ह्वोवा । इ ह्वा२३४ ह्वायि । औ ह्वो३१२३४ । ह्वायि । इ

५ ५
ह्वियाईहा । ह्वोपुई । डा(३) ॥ १४ * ॥ [२] १९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तराग्रन्थस्य चतुर्थाध्यायस्य
षष्ठः खण्डः † । ६ ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तराग्रन्थे चतुर्थोऽध्यायः ‡ ॥

---

* क० गा० १२प्र० १ब० १४सा० ।

† 'तृतीयखण्डः समाप्तः' इति वि० ।

‡ द्वितीयश्च प्रपाठकः समाप्तः'—इति वि० मूल-पदकारादि-सम्मतश्चेति-भ्रमः ।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे, तमहं वन्दे विद्यातीर्थं-महेश्वरम् ॥ ५ ॥

॥ अथ पञ्चमाध्यायः आरभ्यते* ॥

तत्र,

प्रथमे खण्डे प्रतम्राश्विनीरिति† तृचं प्रथमं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा—

२ ३ १ २ २ १ २
प्रतम्राश्विनीःपवमानधेनवो

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
दिव्याअसृग्रन्पयसाधरीमणि ।

१२ २२ २ १ २ ३
प्रान्तरिक्षान्त्स्थाविरीस्तेअसृक्षत

१ २ ३ १ २ २ १ २
येत्वाम्रुजन्त्यृषिषाणवेधसः ॥ १ ‡ ॥

हे "पवमान" सोम! "ते" तव "आश्विनोः" व्याप्तः ['अशू व्याप्तौ (स्वा० आ०)' तस्मादौणादिको विनिः, ततोऽङ्, व्यत्ययेनाद्युदात्तः] "धेनवः" प्रीणयित्र्यः "दिव्याः" दिवि भवाः

---

* 'अथ चतुर्थस्याऽरारभ्यते द्वितीयखिलराजः । प्रकृतच्छन्दाः प्रथमखिलराजः । अथोत्तरस्य छन्दांसि बृहत्यि जगत्यः प्रतिपदः, जगती-स्थाने त्रिष्टुभः, त्रिष्टुभां गा प्रचाराः'—इति वि० ।

† "एषा चतुर्थस्य प्रतिपत्"—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, ३, १२, ४ ।

दिवः पतन्त्यो धाराः "पयसा" युक्ताः * "धरीमणि" धारके द्रोणकलशे† "प्र असृक्षत" गच्छन्ति "ये" "वेधसः" विधातारः ऋत्विजः हे सोम ! "ऋषिषाण" ऋषिभिः सम्भक्तत्वात् "त्वा" त्वाम् "मृजन्ति" अभिषुण्वन्ति, "ते" वेधसः "स्थाविरीः" स्थविरा धारा"‡ "अन्तरिक्षात्" सकाशात् "प्र असृक्षत" पात्रं प्रति सृजन्ति ॥

"धेनवे"-"धीजुवी"—इति पाठौ, "प्रान्तरिक्षात्स्थाविरीस्तेअसृक्षत"-"प्रातर्ऋषयःस्थाविरीरसृक्षत"—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
उभयतःपवमानस्यरश्मयो

३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
ध्रुवस्यसतःपरियन्तिकेतवः ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३
यदीपवित्रेअधिमृज्यतेहरिः

२ ३ १ २ २ १ २
सत्तानियोनौकलशेषुसीदति ॥ २ ¶ ॥

"पवमानस्य" पूयमानस्य "ध्रुवस्य" स्वयमविचलितस्य "सतः" विद्यमानस्य सोमस्य "केतवः" प्रज्ञापका रश्मयः "उभयतः" इतश्चामुतश्च "परियन्ति" परितो गच्छन्ति अभिषव-

---

* 'पयसा—तृतीयैकवचनमिदं प्रथमाबहुवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् पयांसि'—इति वि० । † 'धरीमणि—यज्ञे'—इति वि० ।

‡ 'स्थाविरीः स्थिराः स्थूला वा स्थविरीर्वा गावः रश्मयः'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, ३, १२, १ ।

समये एवं भवति। "यदि" यदा "पवित्रे"* इत्यापवित्रे "हरिः" हरितवर्णोऽयं सोमः "अधि मृज्यते" तदानीं "सत्ता" सदनशीलोऽयं "योनौ"† योनिषु स्थानेषु "कलशेषु" द्रोणकलशादिषु पात्रेषु "निषीदति" निषण्णो भवति॥

"योनौ"--"योना"—इति च पाठौ॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ १ २
विश्वाधामानिविश्वचक्षऋभ्वसः

३ १ २ ३ १ २ २ २ १ २
प्रभोष्टसतःपरियन्तिकेतवः।

३ १ २ २ १ २ ३
व्यानशीपवसेसोमधर्मणा

२ ३ १ २ ३ १ २
पतिर्विश्वस्यभुवनस्यराजसि॥ ३ ॥ १

हे "विश्वचक्षः" सर्वस्य द्रष्टः! सोम! "प्रभोः" परिवृढस्य "मतः" "ते" तव "ऋभ्वसः" "[ऋभ्वा"—इति महन्नामसु महान्तः "केतवः" रश्मयः "विश्वा" विश्वानि सर्वाणि

---

* 'पवित्रे अधि—सप्तम्येकवचनमिदं प्रथमैकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, पवित्रादधि'—इति वि०।

† 'नितरां योनिर्नियोनिः, अथवा नौचैः स्थिता पवित्रस्य योनिर्नियोनिः, तस्मिन् नियोनौ'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ३, १२, ५।

¶ सायणमतेऽदः पदं निघण्टौ मह्नामसु (३, १) पाठभेदेन पठ्यते। विवरणकारस्तु 'ऋभ्वसः—प्रभुत्वस्य'—इति व्याचष्टे।

"धामानि" तेजः-स्थानानि देव-शरीराणि* "परियन्ति" परितो गच्छन्ति प्रकाशयन्तीत्यर्थः। हे "सोम!" "व्यानशी" व्यापनशीलस्त्वं "धर्मणा" धारकेण रसनिष्यन्देन "पवसे" पूयसे। किञ्च "विश्वस्य भुवनस्य" "पतिः" स्वामी त्वं "राजसि" ईश्वरो भवसि† ॥

"प्रभोष्टेसतःपरियन्ति"-"प्रभोस्तेसतःपरियन्ति"—इति पाठौ, "व्यानशी"-"व्यानशि"—इति, "धर्मणा"-"धर्मभिः" —इति च ॥ ३ ॥ १

॥ लौशाद्यम् ॥ प्रतत्रास्वि। नीःपवमा२३। नाऽधे
२ २ ३र ५ १र ४ २र
नवः। दिव्याऽसद्। ग्यन्पयसा२३। धाऽरीमणि। प्रा
२ ५ ३ २र ३ ५ १ ४ २र ३ ५ १र
न्तरिक्षात्। स्थाविरीस्ते २ ३। आऽसद्यत। येत्वाम्
२ ३ ५र १र र ४ २ ३ ५ ३र २ १
जा। तिक्तऽषिषा२३। णवाऽयिधा५स्वा६५६ः ॥(१) उभ
५ १ २ ४ २ १
यतः। पवमाना२३। स्वाऽरश्मयः। ध्रूवस्यस। तः
३ १ र ४ २ १ ५ १ १ ३ ५ १
परियाऽइ। तीऽकेतवः। यदीपवि। त्रेऽअधिमा२३।
४ २र ३ ५ ३ २र १ ५ १र

---

* 'विश्वा धामानि—विश्वानि स्थानानि जन्मानि नामानि वा'—इति वि०।

† 'राजसि—दीप्यसे सोमसे वा'—इति वि०।

४ २र ३५ २ २र ३ ५ १र २
व्या३तेद्धरिः। सत्तानियो। नौकलमा२३य। घुसा३

२ २र ३र५र १
यिदा५ता६५६यि ॥(२) विश्वाधामा। निविश्वचा २३।

४ २ ३ ५ ३ २र ३र५ १ ४ २र १ ५
वा३क्षुभ्वसः। प्रभोष्टेस। तःपरिया२३। तौ३केतवः।

२ १र ३ ५र १ र ४ २ १ ५र १ २ ३ ५
वियानशो। पवसेसो२३। मा३धर्मणा। पतिर्विश्वां।

१ २ ४
स्यभुवना२३। स्वरा३जा५सा६५६यि(३) ॥ २ * ॥ [१].

अथ द्वितीयर्चे—प्रथमा।

१ २ २ २ ३ १र २र १ २
पवमानोअजीजनद्दिवश्चित्रन्नतन्द्यातुम्।

१ २ ३ २ ३ २
ज्योतिर्वैश्वानरंबृहत् ॥ १ † ॥

"पवमानः" पूयमानः सोमः "बृहत्" महत् "वैश्वानरं" वैश्वानराख्यं "ज्योतिः" तेजः "दिवः" द्युलोकस्य "चित्र" विचित्रं "तन्यतुं न" अग्निमिव "अजीजनत्" अजनयत् ॥ १ ॥

---

* ऋ० मा० ८प्र० २अ० २सा०।

† ऋ० मा० ५, १, ५, ८ (२भा० ३८ पृ०)=ऋ० वे० ७, १, ११, १।

अथ द्वितीया ।

१ १ ३ १ ३ १ २ १ ३ ३ २
पवमानरसस्तवमदोराजन्नदुक्छुनः ।

२उ २
विवारमव्यमर्षति ॥ २ * ॥

हे "राजन्" दीप्यमान ! "पवमान" पूयमान ! सोम ! "तव" त्वदीयः "मदः" मदकरः "अदुक्छुनः"† रक्षोवर्जितः "रसः" "अव्यम्" अविमयं "वारं"‡ वालं दशापवित्रम् "विअर्षति" अभिगच्छति ॥

"पवमानरसस्तव"-"पवमानस्यतेरसः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
पवमानस्यतेरसोदक्षोविराजतिद्युमान् ।

१ ३ २ ३ २र ३ २
ज्योतिर्विश्वꣳस्वर्दृशे ॥ ३ ¶ ॥ २

हे सोम ! "पवमानस्य" "ते" त्वदीयः "रसः" "दक्षः" § "द्युमान्" दीप्तिमान्‖ "विराजति" प्रकाशते**। न केवलं

---

* ऋ० वे० ७, १, २१, २ ।

† 'दुक्छुनः दुष्टजनः, न दुक्छुनः अदुक्छुनः'—इति वि० ।

‡ 'विवारं—वि-वृञ्आवरणे ण, वारं=वालम्'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, १, २१ ३ ।

§ 'दक्षः शीघ्रगामी, अथवा दक्षरक्षणक्रियायाः कर्म'—इति वि० ।

‖ 'द्युमान् द्युलोकवान्'—इति वि० ।

** 'विविधं दीप्यते शोभते वा'—इति वि० ।

स्वयमेव प्रकाशते किन्तु "विश्वं" व्याप्तं *"स्वः" सर्वं "ज्योतिः" तेजः "दृंहे" द्रष्टं करोतीति शेषः† ॥

"पवमानस्यतेरसः"-"पवमानरसस्तव"—इति पाठौ ॥३॥२.

१ २र र १ २
॥ सꣳहितम् ॥ पवमानोऽअ। जा२यिजनात्। दि
१ २ १ १ २
वा२ः। चा२३यिचाम्। नता२न्याढम्। ज्यो२३तीः।
१ ७ २ ५
वा२यिश्वा। नरा२३म्। ह्वाउवाइ। ब२३४ह्वात् ॥(१)
१ २र १ २ १ २ १
पवमानर। सा२स्तवा। मदो२। रा२३जान्। अ
१ २ १ ७
दू२च्छू नाः। वा २ ३ यिवा। रा२मा। व्यमा २ ३।
२ ५ १ २र १०
ह्वाउवाइ। षा२३४ती ॥(२) पवमानस्य। ता२यिरसाः।
२ १ १ १ १
दक्षो२। वा२३यिरा। जता२यिद्यूमान्। ज्यो २ ३-
२ १ ७ २
तीः। वा२यिश्वाम्। सुवा२३। ह्वाउवा ३। ह२३४
५
ग्मे(३) ॥ १२ ॥ [१]

---

* 'विश्वं सर्वम्'—इति वि०।

† 'स्वर्दृंहे—स्वर्गलोकस्य गमनाय ; न केवलं स्वर्गलोकस्य, सर्वस्य जगतो दर्शनायेत्यर्थः'—इति वि०।

‡ ऋ० गा० १२म० १ऋ० १२सा०।

॥ जरावोधीयम् ॥ पवमानोवा। आजीजनात्।
दिवाश्वा२३यिचाम्। नतन्यातूम्। ज्योतायिर्वा१यि
श्वा२३ना। रम्। बृहदो३४५ई। डा ॥(१) पवमानोवा।
रास्तत्वा। मदोरा२३जान्। अदुच्छूनाः। विवारा
१मा२३व्याम्। अ। षतो३४५ई। डा ॥(२) पवमानो
वा। स्यातेरसाः। दक्षोवा२३यिरा। जतिद्यूमान्।
ज्योतायिर्वा १ यिश्वा २ ३ए॒सू३। वः। हशो ३ ४ ५ ई।
डा(३) ॥ ८ * ॥ [२]

॥ औपगवोत्तरम् ॥ पवमा३नोअजीजनात। दिवश्चि
च्चतन्यत्वम्। ज्योती२। द्यौ२। ऊवा २ ३ यि।
वा३४यिश्वा। नरम्बृहात् ॥(१) पवमा३नरस्तत्वा। मदो
राजन्नदुच्छुनाः। विवौ२। द्यौ२। ऊवा२३यि। रा

---

* ऋ० गा० १८प्र० १अ० १८सा०।

५ २ १ २ ५ ५ ४ ५२ १ २
३४मा। व्यमर्षायायि ॥(२) पवमाऽनस्यतेरसाः। दक्षो

२ २ १
विराजतिद्यु,मान्। ज्योती२। द्यौ२। ऊवा२३यि।

२ ५ २ १ २ २ १ २
वाऽ४यिस्वाम्। सुवर्दुशायि। ऐ। द्या२ए२३। हिया

५२ २ २ १२ १११
३४मौद्दोवा। ए३। उपा३१२३४५(३) ॥ ९ * ॥ [३] २

अथ प्रयद्गावइति षड्चं तृतीयं सूक्तम्,

तत्र प्रथमा।

२७ ३१ २२ २२ २२ ३ १२
प्रयद्गावोनभूर्ण्यस्त्वेषाऽअयासोऽअक्रतुः।

१२२ २३ २१२
घ्नन्तःकृष्णामपत्वचम्॥ १ †॥

"यत्" ये अभिषुताः सोमाः "गावः न" उदकानीव [तानि यथा तूर्णमधः पतन्ति तद्वत्; गाव एव वोपमीयन्ते, ता यथा स्वं गोष्ठं प्रत्याशु गच्छन्ति तद्वत्; अथवा गावः स्तुतिवचनाः यथा स्तुत्यं प्रति क्षिप्रं प्राप्नुवन्ति तद्वत्], "भूर्णयः" क्षिप्राः, "त्वेषाः" दीप्ताः "अयासः" अयाः गमनशीलाः, "कृष्णं" कृष्णवर्णम् "अपत्वचम्" अपकृष्टां त्वचं "घ्नन्तः" विनाशयन्तः, ईदृग्भूता ये सोमाः "प्र अक्रमुः" तां स्तुम इति शेषः॥

"यत्"-"ये"—इति पाठो॥ १॥

---

* उ० गा० १८प्र० १अ० ९मा०।

† ऋ० मा० ९, १, १, ४ (२मा० ४७पृ०)=सा० वे० ९, ८, २१, १

अथ द्वितीया।

२ १२ २२ ३१२१ क २८
सुवितस्यवनामहेतिसेतुन्दुराय्यम्।

२ २ २१ २ ३२
साह्वामदस्युमव्रतम्॥ २*॥

"सुवितस्य"† शोभनं प्राप्तस्य सोमस्य सम्बन्धिनम् "अति-सेतुम्"‡ रक्षोविषयं बन्धनं "वनामहे"¶ सोमकर्तृकं रक्षसां बन्धनं स्तुमइत्यर्थः। कीदृशम्? "दुराय्यम्" दुष्प्रापणीयम्§ किञ्च "अव्रतम्" यज्ञादि-कर्म-रहितं "दस्यु"॥ यत्र "साह्वाम" अभिभवेम॥

"दुराय्यं"-"दुराव्यं","साह्वाम"-"साह्वांस"—इति पाठाः॥२॥

अथ तृतीया।

२ २२१२ ३१२ २२ २ १२
शृणवेवृष्टेरिवस्वनःपवमानस्यशृण्विणः।

१२ २१२ २ २
चरन्तिविद्युतोदिवि॥ ३**॥

"शृणवे" श्रूयते। कः? "स्वनः"। किमिव? "वृष्टेः"

---

* ऋ० वे० ९, ८, २१, २। "मनामहे"—इति च तव क्वचित् पाठः।

† 'सुवितस्य—अभिषुतस्य'—इति वि०।

‡ 'अतिसेतुं—मर्य्यादां त्यक्त्वा अतिस्वच्छधानतया'—इति वि०।

¶ 'वनतिः स्तुतिकर्मा, स्तुतिं कुर्मः'—इति वि०।

§ 'दुराय्यं'—दुर्वार्यम्, अथवा दुराप्यं दुस्साध्यम्"—इति वि०।

‖ 'व्रत-वर्जितम्'—इति वि०।

** ऋ० वे० ९, ८, २१, ३।

वर्षणस्य स्वनइव [तस्य यथा महान् स्वनः श्रूयते तद्वत् प्रभूत-रस-पात-समये श्रूयते]। कस्य स्वन इति ? तत्राह—"पव-मानस्य" पूयमानस्य "शुष्मिणः" बलवतः तस्यैव "विद्युतः" दीप्तयः* "दिवि" अन्तरिक्षे चरन्ति ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी।

१ २ ३२३ ३ १ २ ३ १ २

आपवस्वमहीमिषङ्गोमदिन्दोहिरण्यवत्।

अश्ववत्सोमवीरवत् ॥ ४ † ॥

हे "इन्दो!" "सोम!" अभिषुतः त्वं "महीम् इषम्" महदन्नम् "आ पवस्व" ‡। कीदृशम् अन्नम्? "गोमद्" गोभि-र्युक्तम्, "हिरण्यवत्" सुवर्णोपेतम्, "अश्ववत्" अश्वोपेतम्, "वीरवत्" पुत्रयुक्तम् ॥

"अश्ववत्सोमवीरवत्"-"अश्वावद्गाजवत्सुतः"—इति पाठौ॥४॥

---

* 'विद्युतः—विद्युत्संयुक्तस्य'—इति वि०।

† ऋ० वे० ९, ८, ३१, ४।

‡ 'आपवस्व महीमिषम्'—आभिमुख्येन पवस्व महतीमिष वृष्टिमन्नं वा'—इति वि०।

अथ पञ्चमी।

१ २ ० २ ३ १ १२
पवस्वविश्वचर्षणआमद्द्यावापृथिवीपृण।

२ २उ ३ २ ३ १ २
उषाःसूर्योनरश्मिभिः॥ ५ *॥

हे "विश्वचर्षणे" विश्वस्य द्रष्टः सोम! स त्वं "पवस्व" क्षर रसम्। तथा कृत्वा तेन रसेन "मही"† "द्यावापृथिव्यौ "आ पृण" आ पूरय। "उषाः" उषसः [एकदेशवाचिनोषःशब्देनाहान्युपलक्ष्यन्ते तत्प्राधान्यात्] अहानि "रश्मिभिः" "सूर्योन" सूर्यइव॥

"पवस्वविश्वचर्षणे"-"पवस्वविश्वचर्षण"—इति पाठौ॥ ५॥

अथ षष्ठी।

१ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २
परिनःशर्मयन्त्याधारयासोमविश्वतः।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
सरारसेवविष्टपम्॥ ६ ‡॥ ३

हे सोम! "नः" अस्मभ्यं "शर्मयन्त्या" सुखयन्त्या धारया¶ "विश्वतः" सर्वतः "परि सरा" परिसर परिचर। "रसेव"

---

* ऋ० वे० ९, ८, २१, ५।

† 'मही—महती'—इति वि० महत्यौरित्यर्थः।

‡ ऋ० वे० ९, ८, २१, ६।

¶ 'शर्मयन्त्या—शर्म-सुखं, तद्भावयन्त्या धारया'—इति वि०।

रसेनेव "विष्टपं" भूलोकं* [यद्वा रसा नदी स्थानं सा प्रवणरूपमिव] ॥

"परिनः"-"परिणः"—इति पाठो ॥ ६ ॥ ३

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरायण्यस्य पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय खण्डे—

आशुरर्षेति षड्चं प्रथमं सूक्तम्, तत्र प्रथमा।

३ १ २ ३१२ ३१३१ २
आशुरर्षबृहन्मतेपरिप्रियेणधाम्ना।

१ २१ २उ १ १ २
यत्रदेवाइतिब्रवन्॥ १† ॥

हे "बृहन्मते"‡ महामते सोम! "प्रियेण" देवानां प्रियतमेन "धाम्ना" शरीरेण¶ "धारया" "आशुः" शीघ्रः सन्

---

* 'विष्टपं स्वर्गं लोकम्,—इति वि०।

† ऋ० वे० ९, ८, २९, १। "ब्रुवन्"—इति मु०पाठः, ऋग्वेदे च क्वचित् पाठः

‡ 'बृहन्मते—बृहद्बुद्धे'—इति वि०।

¶ 'परिप्रियेण—परि समन्तात् प्रियेण धाम्ना प्रियेण स्थानेन'—इति वि०।

"पर्यृष" परिगच्छ, "यत्र" "देवाः" इन्द्रादयः वर्त्तन्ते—"इति" "ब्रुवन्" उच्चारयन्, तं देशं गच्छामीति ब्रुवन्नित्यर्थः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ १र २र ३ १ २ २ २ १ २
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतञ्जनाययातयन्निषः।
३ २ ३ १ २र
वृष्टिन्दिवःपरिस्रव ॥ २ * ॥

*"अनिष्कृतम्" असंस्कृतम् † यजमानं स्थानं वा "परिष्कृण्वन्" संस्कुर्वन् "जनाय" "इषः" अन्नानि "यातयन्" ‡ निर्गमयन् "दिवः" अन्तरिक्षात् "वृष्टिं" ¶ "परि स्रव" ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ २ख ३ १र २र ३ १ ५ ७ २ १ २
अयꣳसयोदिवस्परिरघुयामापवित्रआ।
१ २ ३ १ २र
सिन्धोरूर्म्माव्यक्षरत् ॥ २ § ॥

"सः" "अयं" सोमः "पवित्रे आ" सिच्यमानः [—इति

* ऋ० वे० ९, ८, २९, २।

† 'अनिष्कृतम्—आभिमुख्येन निष्कृतम्'—इति वि०। इदं खेनचिन्त्यमत्र अर्थे आभिमुख्यं कृतो लभ्यतइति।

‡ 'यातयन्'—प्रापयन्—इति वि०।

¶ मुद्रित-मूले तु "वृष्टिम्"—इति पाठः ऋग्वेदेऽपि तथा।

§ ऋ० वे० ९, ८, २९, ३।

शेषः *] "सिन्धोः" जलस्य † "ऊर्मा" ‡ ऊर्मौ सङ्घाते "वि अचरन्" विविधं चरति । स इत्युक्तम्, कः ? इत्याह— "यः" "दिवस्परि" द्युलोकस्योपरि "रघुयामा" लघुगमनः ¶ देवप्रापी, सोयमिति सम्बन्धः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थी ।

३ १ २ ३ २ १ २उ ३ १ २ ३ १ २

सुतएतिपवित्रआत्विषिन्दधानओजसा ।

३ १ १ ३ १ २

विचक्षाणोविरोचयन् ॥ ४ § ॥

"सुतः" अभिषुतः सन् "पवित्रे" दशापवित्रे ["आ" —इत्यनर्थकः] "ओजसा" बलेन "शीघ्रम्" "एति" गच्छति । कौट्टशः सन् ? "त्विषिं" दीप्तिं "दधानः" धारयन्, "विचक्षाणः" सर्वं पश्यन्, ‖ "विरोचयन्" दीपयंश्च ; किम् ? देवानिति शेषः ॥ ४ ॥

---

* 'पवित्रे—अधिकरण-सप्तम्यर्था ; पवित्रे अधिकरणभूते । आ-इत्यव्ययमुपसर्गः अचरदित्याख्यातेन सम्बन्धयितव्यः ; आ अचरत्'—इति वि० ।

† 'सिन्धोः—समुद्रस्य नदीनाञ्चोदकस्य वा'—इति वि० ।

‡ 'ऊर्मयः सङ्घाताः'—इति वि० । ऊर्मा इति तृम्प्रिप्रत्ययस्य सुपां सुलुगिति सुपो डादेशे ङि-लोपे रूपम् ।

¶ 'रघुशब्दो लघुवाची'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ९, ८, २९, ४ ।

‖ 'विचक्षाणः—विविधं पश्यमानः अर्थं वा विश्वं जगत् पश्यमानः'—इति वि० ।

अथ पञ्चमी।

३ १ १ २ २ २ १ २ ३ १ २ २
आविवासन्परावतोऽथोऽअर्वावतःसुतः।

१ २ ३ १ २
इन्द्रायसिच्यतेमधु ॥ ५ * ॥

"सुतः". अभिषुतः सोमः "परावतः" [दूरनामैतत् †] दूरस्थान् "अथो" ‡ अपिच "अर्वावतः" अन्तिकस्थांश्च ¶ देवान् "आ विवासन्" रसेन परिरक्षणायेत्यर्थः। "इन्द्राय" इन्द्रार्थम् "मधु" मधुमद्रसः सोमः "सिच्यते"॥ ५॥

अथ षष्ठी।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
समीचीनाऽअनूषतहरिꣳहिन्वन्त्यद्रिभिः।

२ ३ १ २ ३ १ २
इन्दुमिन्द्रायपीतये ॥ ६ § ॥ ४

"समीचीनाः" सम्यगञ्चिताः सङ्गताः स्तोतारः ‖ "अनूषत" स्तुवन्ति किञ्च सोमं "हरिं" हरितवर्णं "हिन्वन्ति"

---

* ऋ० वे० ६, ८, २९, ५।

† "परावतः"—इति निघण्टौ तृतीय-षड्विंशे दूरनामसु पञ्चमत्वेन पाठात्।

‡ "अथ उ"—इति वि०।

¶ अन्तिक-नामसु "अर्वाके"—इति पाठात् (निघ० २, १६, ८)।

§ ऋ० वे० ६, ८, २९, ६। "योनावृतस्यसीदत"—इति मत्र तृतीयः पादः।

‖ 'समीचीनाः—आसन्नवर्त्तिनः'—इति वि०।

प्रेरयन्ति गमयन्ति "अद्रिभिः" यावभिः । किमर्थं हिन्वन्ति ? "इन्दुं" सोमम् "इन्द्राय" इन्द्रस्य "पीतये" पानाय ॥ ६ ॥ ४

अथ ह्रचात्मके द्वितीयसूक्ते—प्रथमा ।

३ २ ३ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

हिन्वन्तिसूरमुस्रयःस्वसारोजामयस्पतिम् ।

३ १ ३ २ ३ १ २

मह्यामिन्दुम्महीयुवः ॥ १ * ॥

"उस्रयः" कर्मार्थं निवसन्त्यः सर्वत्र गन्त्र्य इत्यर्थः, "जामयः" एकस्याः पाणेः उत्पन्नत्वात् परस्परं बन्धुभूताः, "स्वसारः" [अङ्गुलि-नामैतत् (निघ० २, ५, १२)। सुष्ठु कर्मसु प्रेर्यन्ते ऋत्विग्भिरिति स्वसारः] अङ्गुलयः, "महीयुवः" सोमाभिषवं कामयमानाः सन्तः "सूरं" सुवीर्यं [सोमे पीते वीर्यं भवतीति ; शोभनं वीर्यं कारणं वा, सर्वेषां कर्मणि प्रेरकं वा, तादृशम्] "पतिम्" सर्वस्य स्थावर-जङ्गम-जातस्य स्वामिनं, यस्माद् देवार्थमिज्यतेऽतएव "मह्याम्" देवेभ्यो दीय-मानत्वेन महान्तं मंहनीयं वा "इन्दुम्" ग्रहेषु स्यन्दमानं सोमं "हिन्वन्ति" प्रेरयन्ति ["हिवि प्रीति-गत्योः (स्वा० प०)"—इति धातोरेतद्रूपं स्वादि] † ॥ १ ॥

---

* ऋ० वे० ७, २, १, १ ।

† 'हिन्वन्ति सूरम् उस्रयः = सेवयन्ति सूर्यम् आदित्यरश्मयः । स्वसारः जामयः पतिम् = स्वसारः भगिन्यः जामयः आदित्यरश्मयः ; यथा परस्परं भगिन्यः एकस्यैव भर्तुः अहमहमिकया सेवां कुर्वन्ति, तद्वदादित्य-रश्मयः अहमहमिकया आदित्यं सेवन्ति । एवं, मह्यामिन्दुम्महीयुवः = महिमानमिच्छन्त्यः सोमरश्मयः उदकानि वा'—इति वि० ।

अथ द्वितीया।

१ १ २ १ १ २ १ २ १ १ २ १ २ २
पवमानरुचारुचादेवदेवेभ्यःसुतः।

२ ३ २ २ १ २
विश्वावसून्याविश ॥ २ * ॥

हे "पवमान" दशापवित्रेण पूयमान ! [यद्वा पुनान शुद्ध !] सोम ! "रुचारुचा" ["रुच दीप्तौ (भ्वा० आ०)] सर्वेण तेजसा हे "देव" दीप्यमान ! "देवेभ्यः" देवार्थं "सुतः" अभिषुतः त्वं "विश्वा" व्याप्तानि सर्वाणि बहूनि "वसूनि" धनानि "आ विश" अस्मात् प्रापय [यद्वा सर्वाणि "वसूनि" वासस्थानानि ग्रहादीनि† "आविश" समन्तात् प्रविश] ॥

"देवेभ्यस्सुतः"--"देवेभ्यस्परि"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
आपवमानसुष्टुतिंवृष्टिन्देवेभ्योदुवः।

३ १ २ ३ १ २
इषेपवस्वसंयतम ॥ २ ‡ ॥ ५

हे "पवमान" पूयमान ! पुनान ! वा सोम ! "सुष्टुतिं" ¶

---

* ऋ० वे० ७, २, १, २।

† ग्रह-चमसादीनि यज्ञौपयिकानीति यावत्।

‡ ऋ० वे० ७, २, १, २।

¶ 'सुष्टुतिं—शोभनां स्तुतिम् प्रापयमाणां'—इति वि०

शोभनस्तुति-युक्तां "दृष्टिं" "देवेभ्यः" देवानां "दुवः"* ["सुपां सुलुक् (७, १, ३९)"—इति चतुर्थ्या लुक्] दुवसे परिचरणाय† "आ पवस्व" आ गमय त्वम् [यथा मदीयया स्तुत्या दृष्टिर्भवति तथा कुर्वित्यर्थः] किञ्च अस्माकम् "इषे" अन्नार्थञ्च "संयतं"‡ सम्यगस्मान् सङ्गच्छतीति दृष्टिं कुरु [यद्वा "दुवः" परिचर्यामभिलक्ष्य क्रियमाणां "सुष्टुतिं" शोभन-स्तुति-रूपां दृष्टिं बहुशः स्तुतिमित्यर्थः, एतां देवेभ्यः प्रापय]॥ ३ ॥५॥

॥ विशोविशीयम् ॥ हिन्वाऽऽम्। ताऽयिम्। राऽइ
मूद्धाऽयाः। खसारः। जामाऽऽयाः। ऊम्मायि। पा
ऽताऽयिम्। माऽऽ४ह्वाऽऽह्वायि। ओ। ऊवायि। ई
ऽऽ४न्दूम्। ऊम्मायि। माऽन्दीऽ। यूऽऽ४वाः। एच्छा
याऽऽह्वा ॥(१) पवाऽऽम्माऽना। रुऽचारुऽचा। देवदे।
वायिभाऽऽयाः। ऊम्मायि। सूऽता ऽः। वाऽऽ४यि

---

* 'दुवः—दूरात् द्युलोकात्'—इति वि०।

† "दुवस्यति"—इति परिचरण-कर्मसु पञ्चमं नैघण्टुकम् (२, ५)।

‡ "संयतं—सम्यङ्नियतम्'—इति वि०।

स्वाहायि। ओ। ऊर्वायि। वा२३४सू। ऊम्मा। नो
इयाइ। वा२३४यिष्मा। एह्यिया६हा॥(२) आपाऽम्।
वाऽमा। नाऽसूष्टू३तीम्। वृष्टिन्दे। वायिभा२३याः।
ऊम्मायि। दू३वाऽः। आ२३४यिषेह्वायि। ओ। ऊर्वा
यि। पा२३४वा। ऊम्मा। स्वाऽसाऽम्। या २ ३ ४
ताम्। एह्यिया६हा। हो५ई। डा (३)॥ १० * ॥[१]

॥ ऐडानाऽमङ्कारम्†॥ ओहोयिऊवाऽह्वोयि। हि
न्वन्तिसू३राऽमुषयः। स्वसारोजाऽमाऽयस्पतिम्। म
ह्वामा२३४यिन्दूम्। मह्वीयुवः। इडा२३॥(१) पवमा
नाऽरुऽचारुचा। देवदे३वे३भ्यःसुतः। विश्वावा२३४सू।
नियाविश। इडा२३॥(२) आपवमाऽनाऽस्तुष्टुतिम्।
वृष्टिन्दे३वे३भ्योदुवः। ओह्वोयिऊवाऽह्वोयि। इषायि

* ऊ० गा० ५प्र० १ अ० १०सा०। † "इडामांसंचारः"—इति ख० पाठः।

२ ५ २ १ २ १ २ ४ ५ ४
प्रा२३४वा। स्वसंयतम्। इडा२३भा३। एहीडा। हो

५ई। डा(३) ॥ १० * ॥ [२]५

इति सामवेदार्चप्रकाशे उत्तरायण्यस्य पञ्चमस्याध्यायस्य

द्वितीय खण्डः † ॥ २ ॥

अथ तृतीयखण्डे, ‡ प्रथमर्चे—

प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
जनस्यगोपा अजनिष्टजागृवि

३ १ ३ १ २ ७ २ ३ १ १
रग्निःसुदक्षःसुविताय नव्यसे।

१ १ २ ३ १ २ ३ १ २
घृतप्रतीकोबृहताद्दिविस्पृशा

३ १ १ २ १ २ २ ३ १ २
द्युमद्विभातिभरतेभ्यःशुचिः ॥ १ ¶ ॥

"जनस्य" § "गोपा" गोपयिता रक्षिता, "जागृविः"

---

* ऊ० मा० १९प्र० २ख० १०सा०।

† 'उक्तम् बर्हिष्यवमामेकविंशस्तोमिकम्'—इति वि०।

‡ 'इदानीमाज्यानि वक्तव्यानि'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ४, १, ३, १=य० वे० १५, २७।

§ 'जनस्य—यजमानस्य'—इति वि०।

जागरणशीलः सदा प्रबुद्धः, "सुदक्षः" सुबलः सर्वैः श्लाघनीय-बलः, सः "अग्निः" "नव्यसे" नवतराय "सुविताय"* लोकानां कल्याणाय "अजनिष्ट" जातः। ततः "घृत-प्रतीकः"‡ घृतेन प्रज्वलिताङ्गः, बृहता" महता "दिविस्पृशा" द्युलोकं प्राप्नुवता तेजसा युक्तः, "शुचिः" शुद्धः, एवंविधोऽग्निः "भरतेभ्यः" ऋत्विग्भ्यः तत्तदर्थं† "द्युमत्" दीप्तिमत् यथा भवति तथा "भाति" ‖ प्रकाशते¶ ॥ १ ॥

---

* "सुविताय—यजमानजनाय अभिषवकर्त्रे"—इति वि०।

† 'भरताः मनुष्याः ऋत्विजो यज्ञन्ति, तेभ्यः'—इति वि०। "भरताः"—इति ऋत्विङ्नामसु प्रथमं नैघण्टुकम् (३, १८)।

‡ नाच वि-शब्दो व्याख्यातः साधणेन, विवरणकारत्वाद्—'वि=विविधम्'—इति।

¶ अत्र मद्दीधरव्याख्या यथा—"योऽग्निर्भरतेभ्यः ऋत्विग्भ्यः सकाशादजनिष्ट जातः तैर्मथितत्वात्तेभ्यो जात इत्युच्यते। भरता इति ऋत्विङ्नामसु पठितम्। किमर्थं जातः। नव्यसे नवीयसे नवतराय सुविताय सूताय प्रसूताय कर्मणे यागाय सूतरिङागम आर्षः अभिनवं नवीयस्त्वे रलोप आर्षः। सोऽग्निर्दिविस्पृशा द्युलोक-स्पर्शिना बृहता ज्वालासमूहेन यत्कार्ष्णिमयत्या तथा विभाति विविधं दीप्यते। कीदृशोऽग्निः? जनस्य यजमानस्य गोपाः। गोपायति रक्षतीति गोपाः क्विप् लोपीयोर्वलि यलोपः। जागृविः जागरणशीलः कर्मणि सावधानः। सुदक्षः शोभनो दक्ष उत्साहो यस्य अतिक्रमणो वा। घृतप्रतीकः घृतं प्रतीके मुखे यस्य। शुचिः शुद्धः बहूनि हवींषि भक्षयन्नपि उच्छिष्टो न स्यात् शोभको वा॥"—इति।

अथ द्वितीया।

१ १ २ १ २ ३ १ २ ३१८
त्वामग्ने अङ्गिरसोगुहाहित
१८ २१ २८
मन्वविन्दञ्छिश्रियाणंवनेवने।
१ २ ३ १ ५ ३ १ २ ३१८
सजायसेमथ्यमानःसहोमह
२८ १ १ २ ३ १ १
त्वामाहुःसहसस्पुत्रमङ्गिरः॥ २ *॥

हे "अग्ने!" "अङ्गिरसः"†—एतन्नामका ऋषयः "गुंहा" गुहायां "हितं" निहितं निगूढं "वनेवने" हृत्ते "शिश्रियाणम्" आश्रितम् "त्वाम्" "अन्वविन्दन्"‡ अलभन्त। "महत्" महता "सहः" सहसा बलेन युक्तः "सः" त्वं "मथ्यमानः" "जायसे" हे "अङ्गिरः"¶ अङ्गिरसां प्रकृतिभूत! त्वां "सहसस्पुत्रम्" आहुः§॥ २॥

---

* ऋ० वे० ४, १, ३, ६ = य० वे० १५, २८।

† 'अङ्गानां रसभूताः'—इति वि०।

‡ 'अन्वविन्दन्—विदृज्ञाने, विदृलाभे, विदृसत्तायाम्'—इति वि०।

¶ 'अङ्गिरा जाठरोऽग्निः'—इति वि०।

§ अत्र महीधरव्याख्या यथा—'हे अग्ने! अङ्गिरसः अङ्गिरोवंशीया वा ऋषयस्त्वा मन्वविन्दन् लेभिरे अग्निमथ्य प्रादुरित्यर्थः। किम्भूतं त्वां? गुहा गुहायां निगूढे प्रदेशे हित स्थितमप्सु प्रविष्टमित्यर्थः। अग्निर्देवेभ्य उदक्रामत्सोऽप आविशदित्यादि श्रुतेः। सुपां सुलुगिति गुहाशब्दात्सप्तमीलोपः। हे अग्ने! पुनर्महं त्वां वनेवने शिश्रिया नानावनस्पतिषु स्थितमङ्गिरसोऽन्वविन्दन्। नित्यवीप्सयोरिति वनेवनेश्र

अथ तृतीया।

३१ २३१२ ३१३१ २
यज्ञस्यकेतुम्प्रथमम्पुरोहित

३ १८ २८ ३१८ २८
मग्निन्नरस्त्रिषधस्थेसमिन्धते।

१ २ ३२३१३ २३२ ३
इन्द्रेणदेवैःसरथ्ँसबर्हिषि

२ ३ १८ २८३१ २८ २१२
सीदन्निहोतायजथायसुक्रतुः ॥ ३ * ॥ ६

"नरः" कर्मणां नेतारः ऋत्विजः "यज्ञस्य" यागस्य "केतुं" प्रज्ञापकं "पुरोहितं" यजमानैः पुरस्कृतम् "इन्द्रेण" "देवैः" "सरथं" देवानां तेषां मान्यत्वात् समान-रथम् "अग्निं" "त्रिषधस्थे"† त्रिस्थाने विहारप्रदेशे "प्रथमं" "समिन्धते" सम्यग् दीपयन्ति। ततः "सुक्रतुः" शोभन-कर्मा "होता" देवाना-माह्वाता "सः" अग्निः "बर्हिषि" बर्हिर्युक्ते तस्मिन् स्थाने

द्विलम्। अयतेः ग्रामच्छ वक्तव्यं छन्दसीति ग्रपः स्रुः द्विलं च। यं त्वामङ्गिरसो ऽङ्गभव्य स त्वं जायसेऽधुनाग्यरणिभ्य उत्पद्यसे। कीदृशः? महतस्तः महता बलेन सहसा मथ्यमानः। महतस्तः-शब्दाभ्यां तृतीयालोपः। मथ्यमानो जायस इत्यर्थः। हे अङ्गिरः अग्ने! अतएव सहसो बलस्य पुत्रं त्वामाङ्गः वह्नि मुनयः बलेन मन्थनाज्जायमानत्वाद्बलपुत्रं वह्निमित्यर्थः॥"—इति।

* ऋ० वे० ४, १, ३, २।

† 'त्रिषधस्थे—सधस्थं स्थानमुच्यते। तृभिः स्थानैः समिन्धते—गार्हपत्य-दक्षिणाग्न्याहवनीय-प्रभृतिभिः स्थानैः समिन्धते'—इति वि०।

"यजथाय" यज्ञाय * "निषीदन्" न्यसीदत् प्रतिष्ठितो भवदिति यावत् ॥

"समिन्धते"-"समीधिरे"—इति पाठौ ॥ २ ॥ ६

॥ कावम् ॥ जनोवा। स्यगोपाश्रजनायि। ष्टजागृ
वाँ२यिः। अग्निःसुदक्षःसुविता। यनव्यासाँ२यि। घृ
तप्रतीकोबृहता। दिविस्पृशा२३। द्यूमाँ३द्वायिभा। ति
भरातार्२३यि। भायाँ३:भृ५च्चा६५६यिः ॥(१) तुवोवा।
अग्ने अङ्गिरसो। गद्दाद्दायितार्२म। अन्वविन्दञ्छिश्रिया
णाम्। वनेवानार्२यि। सजायसेमथ्यमानाः। स
द्दोमाद्दार्२३त्। द्यवाँ३माद्दः। सद्दसाय्यू२३त्। चामा
३ँगा५यिरा६ ५ ६ः ॥(२) यज्ञोवा। स्थकेतुम्प्रथमाम्।
पुरोद्दायितार्२म्। पुरोद्दायितार्२म्। अग्निन्नरस्त्रिष
धस्थायि। समिन्धातार्२यि। इन्द्रेणदेवैःसरथाम्।

---

* 'यजथाय—यजन-क्रियायाः कर्मणे'—इति वि०।

२ १ १ २ ४५ ५ २२ १
सबर्हायिषा२३यि। सायिदा३न्नायिष्टो। तायजाथा२३।

१ २ ४
यासू३क्रा५तू६५६:(३)॥ १५ *॥ [१] ६

अथ द्वितीयर्चे†—

प्रथमा।

२ १ २ ३ १२ १२
अयंवामित्रावरुणासुतःसोमऋतावृधा।

२७ १ १ २ ३ १०
ममेदिहश्रुतंहवम्॥ १ ॥

हे "ऋतावृधा" ऋतस्य सत्यस्य यज्ञस्य वा वर्धकौ¶! "मित्रावरुणा" हे मित्रावरुणौ! "वां" युवाभ्याम् "अयं" "सोमः" "सुतः" अभिषुतः। यस्मादेवं तस्मात् "इह" अस्मिन् यज्ञे "ममेत्" मदीयमेव§ "हवम्" आह्वानं "श्रुतं" श्रृणुतम्॥ १॥

---

* ऋ० गा० १८५० १ च० १५ सा०।

† 'मैत्रावरुणमाध्यम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० २, ८, ७, ४।

¶ 'ऋतावृधा—ऋतो यज्ञः, तेन वर्द्धयितारौ अथवा ऋतमन्नं तेन वर्द्धेते ऋतावृधौ'—इति वि०। निघण्टौ तु ऋतमिति यज्ञनामसु (१, १२), धननामसु (२, १०), उदकनामसु (१, १२), सत्यनामसु (३, १०) च दृश्यते परं नात्रान्नामसु।

§ 'मम इत्—इत्-इति पद-पूरणः। इह मदीये यज्ञे'—इति वि०।

अथ द्वितीया।

२ २ २ २२ . ३ १८ २८ २ २
राजानावनभिद्रुहाध्रुवेसदस्युत्तमे।

३ १ २
सहस्रस्थूणआसाते॥ २ *॥

"राजानौ" ईश्वरौ दीप्यमानौ वा "अनभिद्रुहा" † अनभिद्रोग्धारौ यौ मित्रावरुणौ "ध्रुवे" स्थिरे "उत्तमे" उत्कृष्टे "सहस्रस्थूणे"‡ "सदसि"¶ स्थाने "आसाते" उपविशतः [तावागच्छतामिति शेषः]॥ २॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ १ १ १ २ ३ १८ २८३ १०
तासम्राजाघृतासुतीआदित्यादानुनस्यती।

१ २३ १ २
सचेतेअनवङ्करम्॥ २ §॥ ७

"सम्राजा" सम्राजौ आश्रयैव सर्वेषां प्रास्तारौ, "घृतासुती" घृतासू॥ ["तद्वांमहित्वंघृतास्नावस्तु"—इति मन्त्रान्तरात्,]

---

* ऋ० वे० २, ८, ७, ५। "आसाते"—इति तत्र पाठः।

† 'अद्रोधकर्मणौ'—इति वि०।

‡ 'सहस्रस्थूणे—स्थूणानां सहस्रं यस्मिन्'—इत्यादि वि०।

¶ 'सदोनामनमण्डपे' इति यावत्।

§ ऋ० वे० २, ८, ८, १।

| 'घृतासुती—घृतेन आसुतिः * * * शरीरहविर्यथोर्भवति * *'—इति वि०।

"आदित्या" अदितेः पुत्रो, "दानुमत्पती" 'दानुमः' धनस्य देवस्य वा 'पती' स्वामिनौ,* "ता" तौ मित्रावरुणौ "अनवद्यम्" अकुटिलं यजमानं† "सचेते' हविर्भक्षणार्थं सेवेते ॥ २ ॥ ७

अथ तृतीय खण्ड—प्रथमा।

१ १ ३ २ १ २ १२ २२ ४
इन्द्रोदधीचोऽस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः।
३ १ २ २।२ २२
जघाननवतीर्नव ॥ १ § ॥

[अथ शाटायनिन इतिहासमाचक्षते—"आथर्वणस्य दधीचो जीवतो दर्शनेन असुराः पराबभूवुः। अथ तस्मिन् स्वर्गते सति असुरैः पूर्णा पृथिव्यभवत्। अथेन्द्रस्तैरसुरैः सह योद्धुमयक्ष्यत्स ऋषिमन्विच्छन् स्वर्गं गत इति शुश्राव। अथ पप्रच्छ तम्—'नेह किमस्य किञ्चित् परिशिष्टमङ्गमस्ति?'—इति; तस्मा अवोचत्—'अस्त्येतदाश्वं शीर्ष, येन शिरसा अश्विभ्यां मधुविद्यां प्राब्रवीत्, तत्तु न विद्मः यत्राभवत्'—इति। पुन--

---

* 'दानुमत्पती—दान-कर्तृ च यजमानाय'—इति वि०।

† 'अनवद्यं—यज्ञम्'—इति वि०।

‡ 'ऐन्द्रमाश्वम्'—इति वि०। ¶ "अवसीर्णा"—इति ख० पु० पाठः।

§ ऋ० आ० २, २, ४, ५ (१आ० ११६ ४०) = ऋ० वे० १, ६, ७, २।

रिन्द्रोऽब्रवीत्-'तदन्विच्छत'—इति। तद्वावेषितुमुत्सृष्टपर्णा वत्यनुविद्धा जक्षुः। यर्णावद्व वै नाम कुरुक्षेत्रस्य जघनार्धं सरः स्यन्दते। तस्य शिरसोऽस्थिभिरिन्द्रोऽसुरान् जघान"—इति॥] "अप्रतिष्कुतः" परैरप्रतिगच्छितः प्रतिकूल-शब्द-रहितः इन्द्रः आथर्वणस्य "दधीचः"—एतत्संज्ञकस्य ऋषेः "पञ्चभिः" पार्श्व-शिरः-सम्बन्धिभिरस्थिभिः "नवतीर्नव" नवसङ्ख्याका नवतीः दशोत्तरा अष्टशतसङ्ख्याकाः (८१०) [तद्यथा—लोकत्रयवर्त्तिनो देवान् जतु मादावासुरी माया त्रिधा सम्भवति; त्रिविधा सा अतीतानागतवर्त्तमान-काल भेदेन तत्काल-वर्त्तिनो जेतुं पुनरपि प्रत्येकं त्रिगुणिता भवति—एवं नव सम्पद्यन्ते; पुनरपि उत्साहादि-शक्ति-त्रय-रूपेण त्रैगुण्ये सति सप्तविंशतिः सम्पद्यते; पुनः सात्विकादि-गुणत्रयभेदेन त्रैगुण्ये सति एकोत्तरा अशीतिः सम्पद्यते;—एवं चतुर्भिश्चिकैर्गुणि-ताया मायाया दशसु दिक्षु प्रत्येकमवस्थाने सति नवनवतयः सम्पद्यन्ते। एवंविधमायारूपाणि] "वृत्राणि" आवरकाण्यसुर जातानि "जघान" हतवान्] दधीचः—दधि अञ्चतीति दध्यङ्, अञ्चतेः ऋत्विगित्यादिना (३, २, ५९) क्विन्, अनिदिता-मिति (६, ४, २४) न-लोपः, षष्ठ्येकवचने "अचः (६, ४ १३८)"—इत्यकारलोपे यावित्ति (६, २, १३८) दीर्घत्वम्, उदात्तनिवृत्तिस्वरेण विभक्त्युदात्तत्व-विधानेन तद्धाध्यते।

अक्षभिः—"छन्दस्यपि दृश्यते (७, १, ७६)" —इति अन- आदावपि अक्षि-शब्दस्यानङादेशः मध्योदात्तः] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२१ २८२२उ २ १२३ १२
इक्षन्नश्वस्यय च्छिरःपर्वतेष्वपश्रितम्।

१२ ३१ २
तद्विदच्छर्यणावति ॥ २ * ॥

"पर्वतेषु" पर्ववत्सु गिरिषु अपश्रितम् अप गत्य स्थितम् "अश्वस्य" अश्व-सम्बन्धिनो दधीचः "यत्" "शिरः" "इक्षन्" इन्द्रो वर्त्तते, "शर्यणावति" एतत्सञ्ज्ञके सरसि† "तत्" शिरः "विदत्" अलाभीत्। 'ज्ञात्वा, तदाहृत्य, तदीयैः अक्षिभिः हयानि जघान'—इति पूर्वस्यामृचि सम्बन्धः॥ इक्षन्—इषु इच्छायां तुदादित्वाच्छप्रत्ययः। विदत्— वेत्तेर्लुङि व्यत्ययेन च्लेरङादेशः। शर्यणावति—शर्यणा नामानो देशास्तेषामदूर-भवः सरः शर्यणावत्; मध्वादिषु शर्यणाशब्दस्य पाठात् "मध्वादिभ्यश्च (४, २, ८६)"—इति चातुरर्थिको मतुप्, "सञ्ज्ञायाम् (८, २, ११)"—इति मतुपो वत्वम्, मतो बह्वचोऽनजिरादीनाम् (६, ३, ११९)"—इति दीर्घः॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० १, ९, ७, ४।

† 'शर्यणावति—यज्ञे कर्मवति'—इति वि०।

अथ तृतीया।

२उ २ १ १ २ १ २ १ २ ३क २८
अचाहगोरमन्वतनामत्वष्टुरपीच्यम्।

२ ३ ३ १ १ ३ २
इत्थाचन्द्रमसोगृहे ॥ ३ * ॥ ८

"अचाह" अस्मिन्नेव "गोः" गन्तुः "चन्द्रमसः" "गृहे" मण्डले "त्वष्टुः" दीप्तस्य आदित्यस्य सम्बन्धि "अपीच्य"-रात्रावन्तर्हितं स्वकीयं यत् "नाम" तदादित्यरश्मयः "इत्था" इत्थमनेन प्रकारेण "अमन्वत" अजानन् [उदकमये स्वच्छे चन्द्रविम्बे सूर्य-किरणाः प्रतिफलन्ति, तत्र प्रतिफलिताः किरणाः सूर्ये यादृशीं सञ्ज्ञां लभन्ते तादृशीं चन्द्रेऽपि वर्त्तमानां लभन्त इत्यर्थः। एतदुक्तभवति—यद्रात्रावन्तर्हितं सौरं तेजस्तच्चन्द्र-मण्डलं प्रविश्य अहनीव नैशं तमो निवार्य सर्वं प्रकाशयति; ईदृगभूत-तेजसा युक्तः सूर्यश्चेन्द्रएव, द्वादशस्वादित्येषु इन्द्रस्यापि परिगणितत्वात्। अतोऽहोरात्रयोः प्रकाशक इन्द्रएवेति इन्द्र-स्तुतेः प्रतीयमानत्वादिन्द्रोदेवतेत्येतदुपपन्नं भवति। अथं निरुक्तम्—'अथाप्यस्यैको रश्मिश्चन्द्रमसं प्रति दीप्यते तदेतेनोपे-क्षितव्यमादित्यतोऽस्य दीप्तिर्भवतीति; 'सुषुम्णः सूर्यरश्मि-श्चन्द्रमा गन्धर्वः'—इत्यपि निगमो भवति; सोऽपि गौरुच्यते—

---

* ऋ० प्रा० २, २, १, ३ (१भा० ३५२ ४०) = ऋ० वे० १, ८, ७, ५।

"अत्राहगोरमन्वत"—इति (२, ६,)। "अथा ह गोः समसं-सतादित्यरश्मयः खनामापौच्यमदगतमपचितमपिहितमन्तर्हितं वा (४, २५)"—इति॥ अमन्वत—'मनु अवबोधने (त०, आ०)। अपौच्यम्—अपपूर्वाच्चिनाते र्निपातनाद् यत्, अतएवाभिमतरूपसिद्धिः; यद्वा अपिपूर्वादञ्चतेः "ऋत्विग् (३, २, ५९)"—इत्यादिना क्विन्, "अनिदिताम् (६, ४, २४)"—इति न-लोपः, अपिगते निर्गते भवमपौच्यम् "भवे छन्दसि (४, ४, ११०)"—इति यत्, "अचः (६, ४, ११८)"—इत्य-कारलोपे "चौ (६, ३, १३८)"—इति दीर्घत्वम्; 'अपौच्यो प्रकाश्यः'—इति भट्टभास्करमिश्रः। इत्था—इदम्-शब्दाच्च "था हेतौ च छन्दसि (५, ३, २६)"—इति प्रकारवचने था-प्रत्ययः; यदि तत्रेदं-शब्दोनानुवर्त्तते तदानीम् "इदमस्थमुः (५, ३, २४)"—इति थमुः प्रत्यय; "अव्ययादाप्-सुपः (२, ४, ८२)"—इति सुब्लुकं बाधित्वा "सुपां सु-लुक् (७, १, ३९)"—इत्यादिना डादेशः। चन्द्रमसः—चन्द्रमाह्लादनं मिमीते निर्मिमीते—इति चन्द्रमाः "चन्द्रेमोऽडित् (उ०, ४, २२७)"—इत्यसि-प्रत्ययः; दासीभारादिषु पठितत्वात् पूर्व-पदप्रकृतिस्वरत्वम्; पूर्वपदस्य च "स्फायितञ्चि (, ,)"—इत्या-दिना रक्-प्रत्ययान्तत्वादन्तोदात्तम्॥ २॥ ८

अथ चतुर्थऋचे—प्रथमा ।

२ १ २ २ १ २ १ ३ १ २
इयंवामस्यमन्मनइन्द्राग्नीपूर्व्यस्तुतिः ।

३ २ १ १ २
अभ्राद्वृष्टिरिवाजनि ॥ १ * ॥

हे "इन्द्राग्नी ! "इयं" "पूर्व्यस्तुतिः" पूर्व्या स्तुतिः† संख्या स्तुतिः†, कस्य सम्बन्धिनी ? "मन्मनः"‡ स्तोतुः अत्रात्. वसिष्ठात् "वां" युवाभ्यां युवयोरर्थम् "अभ्रात्" मेघात् "वृष्टिरिव" वृष्टी सती "अजनि" प्रादुर्भूता¶, तां शृणुतमित्युत्तरत्र सम्बन्धः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ १ ३ ३ २ ३ १ २ १ २ १ २ १
इमंस्तोमंजरितुर्ह्वमिन्द्राग्नीवनतङ्गिरः ।

३ १ २ ३ १ २
इमानापिप्यतन्धियः ॥ २ § ॥

हे "इन्द्राग्नी !" "जरितुः" स्तोतुः "हवम्" आह्वानं युवां

---

* ऋ० वे० ५, ६, १७, २ ।

† 'पूर्व्यस्तुतिः—पूर्व्या प्रथमतरा स्तुतिः सर्वेषां स्तुत्यानां प्रथमतरे इन्द्राग्नी-स्तुत्यौ —इति वि० ।

‡ 'मन्मनः प्रकाशस्य बलात्'—इति वि० ।

¶ 'यथा अभ्रात् उदकात् वृष्टिरुत्पद्यते, तद्वदिन्द्राग्नीभ्यां उदकात् वृष्टिरुत्पद्यते —इति वि० ।

§ ऋ० वे० ५, ६, १७, २ ।

शृणुतम्। श्रुत्वा च "गिरः" तदीयाः स्तुतीः "वनतं" सम्भजतम्। तथा "ईशाना" ईश्वरौ युवां "धियः" अनुष्ठितानि कर्माणि "पिप्यतं" तैस्तैः फलैः पूरयताम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ १ २ २१ ३ ४१ १८
मापापत्वायनोनरेन्द्राग्नीमाभिशस्तये।

१ २ २ २
मानोरीरधतन्निदे ॥ ३ * ॥ ९

हे "नरा" नेतारौ! इन्द्राग्नी! "नः" अस्मान् "पापत्वाय"† हीनभावाय "मा रीधतम्"‡ मा वशं नयतम्, तथा "अभिशस्तये" शत्रुभिः कृतायाभिशंसनाय मा रीरधतम्, तथा "निदे"¶ निन्दकाय मा रीरधतं मा वशीकुरुतम् ॥ ३ ॥ ९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चग्रन्थस्य पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः§ ॥ ३ ॥

---

* ऋ० वे० ५, ६, १७, ३।

† 'पापत्वाय—पापबुद्धये'—इति वि०।

‡ 'मा रीधतम्—मा हिंसायाम्; मा हिंसताम्'—इति वि०।

¶ 'निदे—निन्दां दीयते यस्मिन् यस्मै निदे'—इति वि०।

§ 'खण्ड' प्रान्तः-समाप्तम्'—इति वि०।

अथ चतुर्थखण्डं * प्रथमट्चम्—

प्रथमा ।

१२ ३१२ २१२ ३१२
पवस्वदक्षसाधनोदेवेभ्यःपीतयेऽहरे ।
२१ २ २२१२
मरुद्भ्योवायवेमदः ॥ १ ॥

हे "हरे" हरितवर्ण ! पापहर्त्तः वा सोम ! "दक्षसाधनः" दक्षो बलं तस्य साधनो "मदः" मदकरश्च त्वं "पवस्व" क्षर । किमर्थम् ? "देवेभ्यः" इन्द्रादिभ्यः "पीतये" पानाय, तथा "मरुद्भ्यः" "वायवे" च पीतये पवस्व ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२३१२ २१२ ३२उ ३१२१२
सन्देवैःशोभतेवृषाकविर्योनावधिप्रियः ।
१२ ३१२
पवमानोअदाभ्यः ॥ २ ¶ ॥

"अयं" सोमः "सं शोभते" "देवैः" सह । कीदृशः सोमः ? "वृषा" वर्षकः, "कविः" क्रान्तदर्शी, "योनौ" स्थाने स्वीये "अधि" अधिष्ठितः§ "प्रियः" प्रियोभूतः सर्वेषां [यद्वा प्रीणयिता]

---

* 'इदानीं माध्यन्दिनसवनमुच्यते'—इति वि० ।

† "देवेभ्यष्पीतये"—इति क० पु० पाठः ।

‡ ऋ० मा० ५, २, ४, ८(२ भा० २४ ४०) = ऋ० वे० ९, ८, १५, १ ।

¶ ऋ० वे० ९, ८, १५, २ । "पवमानोअदाभ्यः"—इति स्थले "इन्द्राहेवयोसम"—इति ऋ०-पाठः ।

§ 'योनौ अधि—सप्तम्येकवचनमिदं द्वितीयैकवचने द्रष्टव्यम् । योनिम् अधि'—इति वि० ।

"पवमानः" सरन् "अदाभ्यः" केनाप्यहिंसितश्च भवति अतएव सोमः सं शोभते ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१२ ३२ ३२ २उ ३१ २
पवमानधियाहितोऽभियोनिङ्कनिक्रदत्।
१२ ३१ २र
धर्मणावायुमारुहः॥ २ * ॥ १०

हे "पवमान" सोम! "धिया" कर्म्मणा अङ्गुल्यापारेण अङ्गुल्या वा † "हितः" धृतः सन् "कनिक्रदत्" शब्दं कुर्वन् "योनिं" स्थानं "द्रोणकलशं" च "अभि आरुहः" आभिमुख्येन आरोहणं कुरु प्रविशेत्यर्थः। तदेवाह—"धर्म्मणा" कर्म्मणा "वायुं" वायुसम्बन्धिपात्रमित्यर्थः, तदारुहः प्रविश॥

"आरुहः"-"आविश"—इति पाठो॥ ३॥ १०

१ २१ २१र
॥ निधनकामम्॥ पवस्वदा२क्तसाधनाः। देवेभ्यः
२ २ २१२ ० ३२ २
पीतयेहरायि। मरुद्भ्योवा। पवा२३४यि। हाहोयि।
१२ १ १ १
मदाः। होयि। २। मदः। होयि। २। मदः। होयि।

---

* ऋ० वे० ९, ८, १५, २।

† 'धिया यज्ञा'—इति वि०।

२ । औहोग्रौहोवा२३४५ह्वाउ ॥(१) सन्देवैःग्रो२भतेवृ

षा । कविर्योनावधिप्रियाः । पवमानाः । अदा२३४ ।

ह्वाहोयि । भियाः । होयि । होयि । भिय । होयि ।

२ । भियः । होयि । २ । औहोग्रौहोवा२३४५ह्वाउ ॥(२)

पवमाना२धियाक्षिताः । अभियोनिङ्कनिक्रदात् । धर्म्म

णावा । युमा २ ३ ४ । ह्वाहोयि । रुहाः । होयि ।

होयि । रुह । होयि । २ । औहोग्रौहोवा २ ३ ४ ५

ह्वाउ । वा(३) ॥ ८ * ॥ [१]

॥ सप्तास्राहौयम् ॥ पवा३४ । स्वदन्तसाधनः । ग्रो

३वा । देवेभ्यःपीतयेह्वा२रायि । मा२रु । ग्रो२३वा ।

यवौ३ह्वो । वाह्वा३४३यि । मा२३४दो३ह्वायि ॥(१) सन्दे

३४ । वैःग्रोभतेवृषा । ग्रो३वा । कविर्योनावधिप्रा२

* ऋ० गा० १५० २ अ० ८ सा० ।

१ १ १ १ ३ १२ १२१
याः। पा२वा। मा२३नाः। अदौ३ह्हो। वाह्वा३४३

१ ५ ५ २२ २ २
यि। भा२३४योइ्ह्वायि ॥(२) पवा३४। मानधियाह्वि

५ ५ १ २ १ १
तः। ओइ्वा। अभियोनिङ्कनिक्रा२दात्। धा२र्मा।

५ १ ३ १२ २ १ ५ ५
णा२३वा। युमौ३ह्हो। वाह्वा३४३यि। रु२३४ह्वोइ्ह्वा

यि(३) ॥ ९ * ॥ [२]

२ १ १
॥ त्वाष्ट्रीसाम ॥ पवस्वदा। त्वसा२धाना२:। दा

२ २ २ १ २ १ २ १
यिवेभ्यःपी। तयायिह्वा१रा२यि। मरुद्भ्यो२३वा। यवे

१ २ २ २ १
मदा३१उवा२३ ॥(१) सन्देवैःशो। भता२यिवार्षा२।

१ २२ २ १ २ १ १
काविर्यौनौ। अधायिप्रा१या२:। पवमा२३नाः। अदा

२ २ २ १
भिया३१उवा२३ ॥(२) पवमाना। धिया२ह्वायिता२:।

१ २२ १ २ १ २
आभियोनिम्। कनायिक्रा१दा२त्। धर्म्मणा२ ३ वा।

१ १ २
युमारुह्वा३१उवा२३। वृधे१(३) ॥ १ † ॥ [३] १०

---

* ज० मा० १५प्र० २अ० ९खा०। † ज० मा० १६प्र० २अ० १खा०।

अथ प्रगाथरूपे द्वितीयसूक्ते—

प्रथमा ।

२१ १ २ २२२ २१ २
तवाङ्ग॒सोमरारणसख्यइन्दोदिवेदिवे ।

२१ २ २ १ २ २१८ २८ ३ ३७ २ १ २
पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमामवपरिधी॒रतिताइ॒हि ॥ १* ॥

हे "इन्दो" स्यन्दमान-सोम ! "तव" "सख्ये" सखि-कर्मणि "अहं" "दिवेदिवे" अन्वहं "रारण" रमे [रणेर्लिटि उत्तमे णलि रूपम्]। हे "बभ्रो" बभ्रुवर्ण-सोम "पुरूणि" बहूनि रक्षांसि "मां" तव सख्ये स्थितं "नि अव चरन्ति" नीचैनं चरन्ति बाधन्ते। ये मां बाधन्ते तान् "परिधीन्" "अति इहि" अतीत्य गच्छ जहीति यावत् ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

१ २ १ २८ ३ १ १ ३ १ १ २ १ १ १
तवाहन्नक्तमुतसोमतेदि॒वादु॒हानोबभ्रऊधनि ।

२ १ २८ ३ २ ३ १ १ २ ३ १ २ २ १ २
घृणातपन्तमतिसूर्य्यपरः॒शकुनाइ॒वपप्तिम ॥ २ † ॥ ११

हे "बभ्रो" बभ्रुवर्ण-सोम ! "उत" अपिच "नक्तम" "उत" अपिच "दिवा" अहोरात्रयोः "सख्याय" सख्यार्थं ॐ "तव"

---

* ऋ॰ प्रा॰ ६, १, २, ६ (२भा॰ ८१४०) = ऋ॰ व॰ ७, ५, १५, ४ ।

† ऋ॰ वे॰ ७, ५, १५. ४ ।

‡ सख्यायेति ऋग्वेदीयपाठमवलम्ब्यैवं व्याख्यातं यस्मात् सामवेदीय-पाठस्तु "दुहान." —इति ।

"उधनि" समीपे * "अहं" रमे—इति शेषः। "ते" वयं "हृणा" हीत्वा "तपन्त" ज्वलन्त "परः" परस्थानस्थितं "सूर्य" तदात्मकं त्वाम् † "अति पप्तिम" तत्र स्थितं त्वां प्राप्नुमतिपतेम। कथमिव? अकुनाइव यथा सुपर्णादयः पक्षिणः सूर्यमति-गच्छन्ति तद्वत् ‡ [पत्लृगतौ, अस्माच्छान्दसो क्विटि "तनि-पत्येकेऽन्दसि (६, ४, ९९)"—इत्युपधालोपः॥

"दुहानः"--"सख्याय"—इति पाठो॥ २॥ ११

॥ आष्टादशृष्ट्रौत्तरम्॥ तवाहꣳसोमरारणऐयादौ।

ह्वोइवा। सख्यइन्दोदिवे। दायिवे २ ३। ऐयाइ२३त्।

औइ२३ह्वोवा। पुरूणिबभ्रोनिचरन्तिमाम्। आवाइ२३।

ऐयाइ२३त्। औइ२३ह्वोवा। परिधीꣳरतितान्। आयि

यारइ२३यि। ऐयाइ२३त्। औइ२३ह्वोवाइ४३॥(१) परिधीꣳ

रतिताꣳइहिऐयादौ। ह्वोइवा। परिधीꣳरतितान्।

---

* 'उधनि—दग्धापविवान् द्रोणकलशे'—इति वि०।

† 'परःसूर्यम्—सूर्यादपि परतः'—इति वि०।

‡ 'एतदुक्तं भवति—सखे वयं स्थिताः पुरुषि यजमानकुलानि वा सुपथराजः, एव सुपथरमाणाः अकुनाइव पप्तिम'—इति वि०।

१ १२ १ २ २ १२१
आविष्टाइश्वि। ऐयाइश्त्। औइश्वोवा। तवाश्व

२१२ १२ १ १२ १ २
क्मुतसोमते। दायिवाइ३। ऐयाइ३त्। औ२३श्वो

१ २१२ २ २ १ १२ १ २
वा। दुह्वानोवभ्रज्ञ। धानीइ३। ऐयाइ३त्। औइ३

२ १ २१२ १२१२ १२१२१२ १ १
श्वोवा३४३ ॥(२) दुह्वानोवभ्रज्ञधनिऐयादौ। श्वो३वा।

२ १२ १ २ १ १२ १ २ २
दुह्वानोवभ्रज्ञ। धानीइ३। ऐयाइ३त्। औइ३श्वोवा।

१२ २ १२१२ १ १२ १
घृणातपन्तमतिष्ठरियम्। पाराइ३:। ऐयाइ३त्। औ

२ १ १२ २ १ १२
२३श्वोवा। शकुनाइवप। तामिमाइ३। ऐयाइ३त्।

१ २ १ १ १
औइ३श्वोवा३४३। ओइ३४५ई। उ ॥ ९ * ॥ [१]

२ २ २
॥ आभीशवोत्तरम् ॥ तवाह्यस्रोमरारण्ए। ए। स

२ ऽ १ २ २ ३ ५ २ २ १
ख्यन्दोइदायिवे१दिवायि। पूइ३४ह। हाइहा। यि

२ २ २ ३ ५ २ २
बभ्रोनिचरन्तायिमा१मवा। पाइ३४री। पा३ हायि।

१ १ १ ५ ४ ५ १ २
धायिऽरतितोइ२४वा। आ५यिश्वोऽहायि॥(१) परिधीऽ

* अ० मा० २प्र० २ब० ९पा०।

र र १ २ २
रन्तिताऽइद्धिए। ए। परिधीऽराऽतायितो१ऽइद्धायि।

२ ५ २ २ १ र २ २
ता२३४वा। द्धा३द्धायि। अद्धन्नक्तमुतसोमातेऽदिवा।

७ ५ २ २ १ २ १ ५ ४
दू२३४द्धा। द्धा३द्धायि। नोवभ्रओ२३४वा। धा५नोई

५ २ र र र र र १ २
द्धायि॥(२) दुहानोवभ्रऊधनिए। ए। दुहानोवाऽध्वाऽरे

२ ३ ५ २ २ १ र ७
धनायि। घा२३४र्णा। द्धा३द्धा। तपन्तमतिसूराय

२ ३ ५ ७ २ १ २ १ ५
म्यारः। शा२३४क। द्धा३द्धायि। नायिवपो२३४वा।

४ ५
प्रा५यिमो६द्धायि(३)॥१०*॥[२]

१ १ २ ३र ४ र ४
॥स्वःपृष्ठम्†॥ तवा२द्धऽसो३४। ओद्धो५मरारणा।

१ २ २ ३र ४ र ४ १ १२
सख्या२इन्दो३४। ओद्धो५दिवेदिवायि। पुरू२णिवा३

४ ३र ४ र ४ १ ३ ५र र २
४ओद्धो५ओनिचरा। ओ। तार२यिमा२३४ओद्धोवा। आ

५ २ ५ ३ ५ ३ २र १
२३४वा। ऊ२३४पा। ऊ२३४पा। परिधीऽरा २ ३।

१ १ ५र र २ ५ १ ३र
तार२यिताऽ२३४ओद्धोवा। ई२३३द्धो॥(१) परा२यिधीऽ

---

* ऊ० गा० २प्र० २अ० १०खं०। † "पृष्ठम"—इति वि०।

२ ३र ४ र ४ १ ३र २
रा३४। औहोयुतिताएइडायि। परा२यिधीएरा३४।
३र ४ र ४ १ २ ३र ४
औहोयुतिताएइडायि। तवा२डम्रा३४। औहोयुक्षमु
४ १ २ ५र र ३ ५ २
तसो। ओ। मा२ता२३४औहोवा। दो२३४वा। ऊ
५ ३ ५ ३ र २र १ १ ५र
२३४पा। ऊ२३४पा। दुडानोवा२३। धा२ऊ२३४घो
र ३ ५ १ ३र २ ३र ४
डोवा। धा२३४नी ॥(२) दुडा२नोवा३४। औहोयुभ्र
र ४ १ ३र२ ३र ४ र ४ १
ऊधनायि। दुडा२नोवा३४। औहोयुभ्रऊधनायि। घृ
३ २ ३र ४ ४ १ ३
णा२तपा३४। औहोयुक्तमतिसू। ओ। रा२या२३४
५र र ३ ५ ३ ५ ३ ५ २
औहोवा। पा२३४राः। ऊ२३४पा। ऊ२३४पा। प्रकु
२र १ १ ३ ५र र ३
नाआ२३यि। वा२पा२३४औहोवा। घी२३४.
५
मा(३) ॥ ११ * ॥ [३]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५
॥ अभीवर्त्तम् ॥ परा३यिधा३यिएराऽतिताएइडोवा।
१ २र १ २ १ र १
परिधीएर। तिताएआ१यिहा२यि। तावाडम्रा३१२३४।

---

* ऋ० मा० १म० १अ० ११वा०।

१ ४ ५२ २ १ २ १ २ २
क्रामुतसो । मतायिदाऽयिवा२ । दुहानोऽवा२ । अज

१ २ १ १ १ १
३ । धा२३४५ । ना२३४यि२) ॥ १८ * ॥ [४]

३ ४२ ३ ४२ ५ २ २ १ १
॥ उत्सेधम् ॥ तवाहꣳसोमरारण । सख्ये । इन्दा

३२ ४२ ५ १ १२ २
३४ओहोवा । दिवेदिवाऽऽयि । हाउवा२३ । ज३

५ ३ २ ४ ५२ ४ ५ १ २ १
४ पा । पुरु ३ णिवा । ओहोवाहायि । भोनिचरा ।

१ २ १ २ २ ५ २ १ ४२
निमामाव । हाउवा२३ । ज३४पा । पराऽयिधौꣳ

५२ ४ ५ ३ २ ४
र । ओहोवाहायि । निताऽꣳआपूयिहा६५६यि ॥(२)

४ ३२ ४ ३२ ४ ५ ३२ २ ३२ ४२ ५
परिधौꣳरनिताꣳइन्द्र । परि । धौꣳरा ३ ४ ओहोवा ।

१ १२ २ ५ २ ३ १
तिताꣳइन्द्राऽऽयि । हाउवा२३ । ज३४पा । तवा३

४ ५२ ४ ५ १ २ १ २ २ १ २२
न्द्रा । ओहोवाहायि । क्रामुतसो । मतेदायिवा ।

२ ५ ३ २ ४२ ५२ ४ ५
हाउवा२३ । ज३४पा । दुहा३नोव । ओहोवाहायि ।

३ २ ४ ४ २ ३२ ४ ३२ ४ ५ २
भ्रजऽधापूनाई५६यि ॥(२) दुहानाबभ्रऊधनि । दुहा ।

---

* ऋ० गा० ८म० १ष० १८सा० ।

२ २ ४ ५ १ २ २ २

वा। औहोइ४वाहायि। प। राविधाइ३वि॒राइ॥
ह्वोवाइहायि। तिना॒आरइ३यिहाइ४३यि॥(१) परिधी॒
रतिना॒इहायि। परिधी॒राऽतिना॒इहायि। तवा
ह्वाइ३वा। क्तामुतसो। मतायिदायिवा। औहोइ४
वाहायि। दु। ह्वानोइ३बाइ। ह्वोवाइह्वा। भ्रऊधा
इ३नाइ४३यि॥(२) दुह्वानोबभ्रऊधनायि। दुह्वानोबाऽ
भ्रऊधनायि। घृणानाइ३पा। तामतिह्व। रियाम्पा
रा। औहोइ४वाहायि। ग्र। कूनाइ३आइयि। ह्वो
वाइह्वायि। वपन्नाइ३यिमाइ४३। ओइ३४५ई। ओइ३
४५ई। डा(३)॥ १ * ॥ [७]

॥ यौधाजयम्॥ तवाइ१। ह्वाइ॒सो। म। रा
राइ३४णा। साख्याइयि। इन्दोइ। दिवाइ४५यि।

---

* क० गा० १३प्र० २अ० १खा०।

२ ५ २ १ २ १ २र १ ३ २
दी२३४वे। पुरुहूतवा। श्रो। निचरा२। तिमा३४५म्।

२ ५ २ १ ३ २
स्था२३४वा। परा२यि। धायिए्रा२। तिता ए३४५।

२ ५ २ २ २ ४ ५ ३
र्दू२३४ही॥(१) परा३१यि। धा३यिए्र। नि। तृाएं

२ ५ १ ३ १र ३ ५
धा२३४यिद्दायि। पारी३। धीए्रा२। तिता ए३४५।

३ ५ २ १ २ १ ३ २
ई२३४द्दी। तवाद्दन्ना। क्तम्। उतसो२। मता३४

३ ५ ३ १र २ २
५यि। दी२३४वा। दुहा२। नोबा२। भ्रऊ३४५।

२ ५ ३ २ २ ४ ५र २ ३
धा२३४नी॥(२) दुवा३१। नो३ब। श्रो। ऊधा२३४

५ १ २ १र २ २ ३ ५
नायि। दूहा३। नोबा२। भ्रऊ३४५। धा२३४नी।

२ १ २ १ २ १ ३ २ ३
घृणातपा। तम्। अतिसू२। रिया३४५म्। पा२३

५ ५ १ ३ २ ३
४राः। शकू२। नाआर२यि। वपा३४५। प्री२३४

५
मा(३)॥ २ *॥ [८]

५ र १ ४र ५ ४र ५ १
॥ पौरुहन्मनम्॥ तवाद्दा३ए्सोमरारणा। साख्य

* ऋ० मा० १९प्र० २अ० २सा०।

इन्दो। दिवायिदा१यिवा२यि। दायिवा२यिपूषणि

व। ओ। निचरा३। निचरा३। तायिमामा२३४या।

पारिधीएरा। तायितांएआ२३४यिहायि। तितांएयइ

हायि ॥(१) परिधा३यिएरातितांएइहायि। पारिधीए

रातितांएआ१यिहा२यि। आयिहा२यि। तावाइच।

क्षाम्। उतसो३। उतसो३। मातायिदा२३४यिवा।

दूहानोवा। भ्राऊधा२३४नायि। भ्रऊ ५ धनायि ॥(२)

दुहानो३वभ्रऊधनायि। दूहानोव। भ्रऊ१धा२यि।

धानार्२यि। घार्णातप। नाम। अतिसू३। अतिसू

३। रायस्पा२३४राः। शाकुनाआयि। वापप्रा२३४यि

मा। वपाप्रिमा। होप्रई। डा३) ॥ १५ * ॥ [८]

॥ द्वैगतम् ॥ तवाहा३ंसोमरारणा। साख्यइन्दो।

---

० ऊ० मा० १६प्र० २अ० १५सा०।

१ २ ३ २ ३ २ १
दिवायिदा१यिवा२यि। पुरू३। ह्वौ३ह्वो३वा। णिव

२ २ १ १ २
ष्ठोनिश्चरन्त्यायिमा१मवा२। परा२३यि। धा२यिएरा२

५२ २ १ १ ३ १ १ १ १ ५
३ठऔोहोवा। ए३। निता२एइहा२३४५यि ॥(१) मरि

२ ४ ५४२ ५ १ २२ १ २
धा३यिएराऽतिताएइहायि। पारिधीएर। तिताएऋा

३ २ ३ २ १ २
यिच्छा२यि। तवा३। ह्वौ३ह्वो३वा। अहन्नक्तमुतसो

१ १ १ २ ५२ २ २
मातेरदिवा२। दुहा२३। नो२वा२३४औहोवा। ए३।

१ २ १ १ १ १ ४२ २ ४ ५ ४२ ५ १
भ्रज२धनाा२३४५यि ॥(२) दुहानोऽवभ्रजधनायि। दू

२ १२ १ २ २ २ ऽ २ २
हानोव। भ्रजधा१ना२यि। घृणा३। ह्वौ३ह्वो ३ वा।

१ २ ७ १ १ ३ ५२
तपन्तमनिसूरायम्मारा२:। भ्रकू२३। ना२आ२३४औ

२ २ १ २ १ १ १ १
ह्वोवा। ए३। वपा२ग्निमा२३४५(३) ॥ १६ * ॥ [१०]

५ २ २ ४२ ५ ५२ ५ १
॥ गौङ्गवम् ॥ तवाच्छा३एसोमरारणा। साख्या२

२ २ १ ४ ५ २ १२ २
यि। इन्दोदिवे३। दायिवायि। पुरूणिवभोनिचा२३

---

* ऋ० मा० १८म० २अ० १८सा०।

१ २२ १ ५ २१२ २ २२ ४
रा२। तिमाइमावा। पुहूणिवभ्रोनिचर। तिमाइमा

४ १ १२ १ २ २ १ ५
वा। पारिधौन्। आ। औइहो। तितो२३४वा।

४ ५ ५ ४५४२ ५
आ५यिहोई६हायि॥(१) परिधाइयिंरातिताँइहायि।

१ १२ ३२ ४ ५ २१५
पारी२। धीँरतिताइँ। आयिहायि। तवाहन्न

१ ३२ ४ ५ २१२ २
क्तमुता२३सो२। मताइयिदायिवा। तवाहन्नक्तमुतसो।

२१ ४ ५ १२१ २ १ २ २ १
मताइयिदायिवा। दूहानः। वा। औइहो। भ्रमो

५ ५ ५ ५२२४५४२ ५
२३४वा। धा५नोई६हायि॥(२) दुहानोइवभ्रऊधनायि।

१ १२ ३ १ ४ ५ २१२
दूहा२। नोवभ्रऊइ। धानायि। घृणातपन्तमता२३

१ २२ ४ ५ २१२ २ ३२ ४५
यिसू२। रियाइपाराः। घृणातपन्तिसू। रियाइपाराः।

१ २२ १ २ २ १ ५ ४
शाकुनाः। आ। औइहो। वपो२३४वा। प्रा५यिमो

५
ईहायि३)॥ १७॥ [११]

---

* ऋ० गा० १६प्र० २अ० १२वा०।

॥ द्विनिधनमायास्यम् ॥ तवाहꣳसोमरारण। इ३।

औ३ह्वोपुवाऽऽ। साख्याइयि। इन्दो२। दिवा३४५यि।

दा३यिवा२३४५यि। पूहणिवा। भ्रोनिचरा। तांयि

मा३आ। औ३ह्वो३। आ२३४वा। पराऔ३ह्वो।

धायिꣳरा२। तिताꣳ३४५। आ३यिह्वा२३४५यि ॥(१)

परिधीꣳरतिताꣳइहि। ए३। औ३ह्वोपुवाऽऽ। पारी

३। धीꣳरा२। तिनाꣳ३४५। आ३यिह्वा२३४५यिं।

तावाहन्ना। कामुतसो। माता३आ। औ३ह्वो३।

दीर२३४वा। दुहाऔ३ह्वो। नोवा२। भ्रज३४५।

धा३ना२३४५यि ॥(२) दुहानोवभ्रजधनि। ए३। औ३

ह्वोपुवाऽऽ। दूहा३। नोवा२। भ्रज२३४५यि। धा

र्णातपा। तामतिमू। राया३आ। औ३ह्वो३। पा

५ २ १ २ २ १ २ १ २
२३४रा:। अकूऽयी३ह्वो। नाऽआरेयि। वपा३४५। मा

१ १ १ १ १
इयिमा२३४५(३) ॥ १८ * ॥ [१२]

२ १ ४र २ ५ २ १ १८
॥ पृश्नि ॥ तवाहा२३ऽसोमरारणहाउ। सख्यइन्दो

१८ १ २ १ १ २ १५ १
दिवेदिवे। पुरूणा१यिबा२३। ह्वोवा३ह्वा। भोनिचर। नि

१ २ १ १ २ १ २
मामा१वा२३। ह्वोवा३ह्वायि। परायिधा१यिऽरा२३।

१ २ २ १ र २ १
ह्वोवा३ह्वायि। तायिताऽइहि। इडा२३भा३४३। ओ

२३४५ई। डा(१) ॥ १ ॥ [१३]

१ १र १ १र र १
॥ अर्कपुष्पाद्यम् ॥ तवाहाऽसोमरारण। ऊवे२३।

२ १ १र १र २र १ १र २ र १ १
सख्यइन्दोदिवेदिवे। ऊवे२३। पुरूणाबभोनिचरन्ति

१र २ १ २ १र २ १र २ १
मामव। ऊवे२३। परिधीऽरतिताऽइहि। ऊवे२३ ॥(१)

१ १र २ १र १ १ २ १र १ १र १
परिधीऽरतिताऽइहि। ऊवे२३। परिधीऽरतिताऽइ

१ १ १र १ २ १ र १ र १ १र १
हि। ऊवे२३। तवाहन्नक्तमुतसोमतेदिवा। ऊवे२३।

---

* ऊ० मा० १ प्र० २ अ० १ खं०। † ऊ० मा० १ प्र० २ अ० १ खं०।

१ २ १२ २ १२१ १ १ २ १२ १ १२१
दुहानोवभ्रऊधनि। ऊवे२३ ॥(२) दुहानोवभ्रऊधनि।

१ २ २ १२ २१२१ १ २१२ २ १ १
ऊवे२३। दुहानोवभ्रऊधनि। ऊवे२३। घृणातपन्तमति

१२ २ १ २ १२ २ १
सूर्य्यम्यरः। ऊवे२३। शकुनाइवपप्तिम। ऊवे २३।

१ १ १ २ २ ५२ २ २१२
ऊवे२३। होवाइहा३। हा३४। औहोवा। अर्वो

२ २ १२ ३ १ १ १ १
देवानाम्। परमेवियोमा२३४५म्(३) ॥ १४ * ॥[१४]

१ २२ १ २२ १२
॥ बार्हदुक्थ्यम् ॥ तवाहंसोम। रा२रणा। सख्य

२ २ १२ ० १ २ १ ७
इन्दोदिवेदा२३यिवार्य। पृ१णायिबा२। श्रोनिचरा

१२ २ १२
२। तिमामवा। परिधा२३यंरा। तिताम्आ२३यि

२ २ १२ २ १
हा३४३यि ॥(१) परिधौंरति। ता२ंइहायि। परिं

२ २ १२ २ १ २ १ ७
धौंरतिताम्आ२३यिहायि। तावा१हाम्ना२। क्तामु

१२ २ २ १२ २
तासो२। मतेदिवा। दुहानो२३वा। भ्रऊधा२३ना

२ २ ५२ २ २ १ २ २
३४३यि ॥(२) दुहानोवभ्रो। ऊ२धनायि। दुहानोव

* ऋ० गा० २०प्र० १ऋ० १४सा०।

२ १२ २ १ २ १ ७*
भ्रजधा २ ३ नायि । घाणा१तापा२ । तामताियसू२ ।
१ २ १ २ २
रियम्मराः । अकुना२३आयि। वपन्ना२३यिमा३४३ । ओ

२३४५६ । डा(३) ॥ १५ * ॥ [१५]

२ ४ २ २ १ १ १ २
॥ माण्डवम् ॥ तवाह्यसोमरारााणा । सख्यइन्दो
१२ २२ १ १ १ २ १ १
दिवेदिवे । पुरूणा१यिवा२ । भ्रोनिचर। तिमामा१वा
१ २ १२ ३ ५२
२ । परिधा२३यिरा । तितान्। आरयिहा२३४औ
२ २ ४ २ १ २ १२ २
होवा ॥(१) परिधीयरतिनाआयिहायि। परिधीयरति
१२ २ १ २ १ २ १ १
ताइहि। तवाहा१न्ना२ । क्तामुतसो। मतायिदा
१२ २ १२ ३ ५२ २
१यिवा२ । दुहानो२३बा । भ्रज। धा२ना२३४औहो
२ २ ४ २ १ २ २ १२ २ १२२
वा ॥(२) दुहानोबभ्रजधानायि। दुहानोबभ्रजधनि।
१ १ १ २२ १ १
घृणाता१पा२ । तामतिसू। रियाम्मा१रा२ः । अकुना

---

* ऋ० मा० २प्र० १अ० १५ सा०।

२ १ ३ ५२ २ २ १ २
२३आयि। वप। प्रार्यिमार२३४औहोवा। विदावसू

१ १ १ १
.२३४५(३) ॥ १६ * ॥ [१६] ११

अथ तृतीय-ऋचे—

प्रथमा।

३ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः।

३ २ ३ १ २ ३ १ २
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥ १ ॥

"पुनानः" पूयमानः "विचर्षणिः" विद्रष्टा सोमः "विश्वा" सर्वान् "मृधः" हिंसकान् शत्रून् "अभि अक्रमीत्" अतिक्रान्तवान्, तं "विप्रं" मेधाविनं "धीतिभिः" कर्मभिरभिषवादिभिः स्तुतिभिर्वा "शुम्भन्ति" दीपयन्ति अलङ्कुर्वन्ति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २२ ३ १ १ ३ २ २ ३ १ २ ३ २ २
आयोनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रो वृषा सुतम।

३ १ २२
ध्रुवे सदसि सीदतु ॥ २ ॥

अयम् "अरुणः" अरुणवर्णः सोमः "योनिं" स्थानं द्रोणकलशम् "आरुहत्" आरोहति, ततो "वृषा" कामानां वर्षकः

ऊ० गा० २०५० १अ० १६ सा०।

† ऋ० सा० ६, १, १, २ (२ भा० ४९ पृ०) = ऋ० वे० ६, ८, ३०, १।

‡ ऋ० वे० ६, ८, ३०, २।

"इन्द्रः" "सुतम्" अभिषुतं सोमं "गमद्" मच्छति, गत्वा "ध्रुवे सदसि" स्थिरे स्थाने द्युलोकस्थे "सीदति"* निवसति ॥

"इन्द्रोह्यासुतम्"-"इन्द्रं ह्यासुतः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ १ २ १ १
नू नोरयिम्महामिन्दोस्मभ्यꣳसोमविश्वतः ।
१ २ ३ १ २
आपवस्वसहस्रिणम् ॥ ३ † ॥ १२

हे "सोम !" अभिषुतस्त्वं हे "इन्दो !" "नः" अस्मभ्यम् "नु" क्षिप्रं "महां" महान्तं "सहस्रिणम्" ‡ असङ्ख्यातं "रयिं" धनं "विश्वतः" "आ पवस्व" सर्वतः परिस्रव ॥ ३ ॥ १२

३ २ र र
॥ सचासाह्वीयम् ॥ पुना ३ ४ । नोअक्रमीदभि ।
५ ५ १ र र १ १
ओ३ इवा । विश्वामृधोविचर्षा २णायिः । मृ २भा । ता
२ १ ऽ ३र २ १ ५
२३यिवौ । प्रन्धौ३ह्वो । वाह्वा३४३यि । ता२३४यिमो३
५ ३र २ र ५ ५ १
ह्वायि ॥(१) आयो३४ । निमरुणोरुहत् । ओ३ इवा । गम
र र १ १ २ १ ऽ
दिन्द्रोवृषाम्ू २ताम् । ध्रू २वे । सा२३दा । सिसौ ३

* "सीदति"—इति ऋग्वेदीय पाठः, मूलपाठस्तु "सीदतु"—इति ।

† ऋ० वे० ६, ८, २०, २ ।

‡ 'सहस्रिणं सहस्रसङ्ख्यातम्'—इति वि० ।

१२ १२ २ १ ५ १२ २
घो। वाहा३४३यि। दा२३४तो६ह्वायि॥(२) नूनो३४।

२ ५ ५ १ २
३४। रयिम्महामिन्द। ओ६्वा। अस्मभ्यꣳसोमविश्वा

१ १ २ १ ऽ १२ १२ २
ऽताः। आ२पा। वा२३स्वा। सहौ३हो। वाहाइ

१ ५ ५
४३यि। स्वा२३४यिणो६्ह्वायि(३) ॥ १२ * ॥ [१]

१ ७ ३ २ ३ ५ १
॥ याममम् ॥ पुनानोआ२। क्रमीदा२३४भौ। वि

२ २ २ ५ १
स्वाम्मधो२। विचर्षा२३४णायिः। प्रुष्मतिवा२३यि। प्र

२ ५ १२ ७ २ २ २
न्धा३यिता५यियिभा६५६यिः ॥(१) आयोनिमा२। रुणोरु

५ १ २ २ ३ ५ १२
२३४ह्वात्। गमदिन्द्रो२। वृषासू२३४ताम्। ध्रुवेस

१ ४ १२ ७
दा२३। सिसा३यिदा५ताई५६उ ॥(२) नूनोरया३यि

२ २ २ ५ १ २ २ २
म्। महामा२३४यिन्दो। अस्मभ्यꣳसो२। मविस्वा२३

५ १२ २ ४
४ ताः। आपवस्वा २ ३। सहा ३ स्वा ५ यि णा ६ ५

६ म्(३) ॥ ११ ॥ [२]

---

* ऊ० गा० २म० १ऋ० ११सा०। † ऊ० गा० २२म० १ऋ० ११सा०।

४ र ३र ४ ३र ४ ५ ३र २ ४
॥ यामोत्तरम् ॥ पुनानोअक्रमीदभि । ओहाइओ

५ ३ ४र र ३ ४ ५ ३र २ ४ ५ २ १
हा । विश्वामृधोविचर्षणिः । ओहाइओहा । घृतम्भ

१ ३ २ ४ ३र ४र
रिताइयिवि । प्रन्वाइयिताउयिभाइ५ईयिः ॥(१) आयो

३ ४ ३र ४ ५ ३र २ ४ ५ ३ ४ ३ ४र ३र ४ ५
निमरुणोरुहत् । ओहाइओहा । गमदिन्द्रोवृषासुतम् ।

३र २ ४ ५ २ १र २ ३ २ ४
ओहाइओहा । ध्रुवेसाइरदे । मिसाइयिदाउताइ५

३र ४र ३ ४ ३र ४ ५ ३र २ ४ ५ ३
ईउ ॥(२) नूनोरयिंमहामिन्द । ओहाइओहा । अस्म

२ ३ ४ ५ ३र २ ४ ५ २र १ २
भ्यꣳसोमविश्वतः । ओहाइओहा । आपावा २ ३ स्व ।

१ १ ४
सहाइस्राउयिणाईउइम् ३) ॥ १२ * ॥ [३]

२र २ १ २ १
॥ गौराङ्गिरसस्य साम ॥ आहायिहइवा२इयि । उव

२ २ २ ४ २र ३ ५ ३ २ १ ३ ५
ए । पुनानोआइक्राइमीदभि । विश्वामृधोइचर्षणिः ।

२ ३ २ ४ १र २
घृतम्भतिवि । प्रन्वाइयिताउयिभाइ५ईयिः ॥(१) आयो

४ २र ३ ५ २ ४ २र ३ ५ १ २
निमाइरुइणोरुहत् । गमदिन्द्रोइवाइर्षासुतम् । ध्रुवे

* ऊ० मा० १६प्र० २अ० १२सा०

सद्। सिषाऽयिदा५ताऽ३ऽउ ॥(२) नूनोरयाऽयिमाऽ
ऽ२ ऽ ऽ५ ऽ ऽ ऽ ऽ२ ऽ
ऽद्यामिन्दो। असमभ्यꣳसोऽमाऽविश्वतः। ओचोयि। ह
१ ऽ२ऽ ऽ ऽ२ ऽ४
ऽवाऽयि। ऽवण। आपवस्व। सदाऽस्मा५यिषा,ई५
ई म्(३) ॥ १२ * ॥ [४] १२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य पञ्चमस्याध्यायस्य चतुर्थं खण्डः† ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डेः प्रथमर्चे—

प्रथमा।

२ ३ १ २ ३ १ ३ १ २ ३ १ २ १ १ २
पिबा सोममिन्द्रमन्दतुत्वायन्ते सुषावहर्यश्वाद्रिः।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सोतुर्बाऽभ्याꣳसुयतोनार्वा ॥ १ ॥

हे "इन्द्र!" "सोमं" "पिब", स सोमः "त्वा" त्वाम् "मन्दतु" मादयतु, हे "हर्यश्व" हरिसञ्ज्ञकाश्ववन्! इन्द्र!

---

* ऋ० गा० ६३प्र० २० १३ऋा०।
'उक्षो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि०।
† 'इदानीं पृष्ठान्युच्यन्ते विराजं पृष्ठं भवति। अन्नाग्निमन्थनम्॥'—इतिवि०।
‡ ऋ० आ० ५, १, १, ८ (१मा० ८१४ ऋ०) = ०५, ४, ५, १।

"ते" त्वदर्थं "सोतुः" अभिषवकर्त्तुः "बाहुभ्याम्" "अर्वा" रश्मिभ्यामश्वइव "सुयतः" सुष्ठु परिगृहीतः "अद्रिः" ग्रावा "यं" सोमं "सुषाय" अभिषवं करोषि, स मन्दत्विति पूर्वेण सम्बन्धः ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३ १ १ २ ३ २ ३ १ १ २ १ १ २ १ २
यस्तेमदोयुज्यश्चाकरस्तियेनवृत्राणिहर्यश्वहंसि।
१र २र
सत्वामिन्द्रप्रभूवसोममत्तु ॥ २ * ॥

हे "हर्यश्व!" "इन्द्र!" "ते" तव "युज्यः" योग्यः "चारुः" समीचीनः "मदः" मदकरः "यः" सोमः "अस्ति" विद्यते "येन" च पीतेन सोमेन "वृत्राणि" आवरकादीनि राक्षसादीनि "हंसि", हे "प्रभूवसो" प्रभूतधन इन्द्र! "त्वा" त्वां "सः" सोमः "मदतु" मादयतु ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ २ ० १उ २ १ १ १ १ १ १
बोधास्तुमेमघवन्वाचमेमांयान्तेवसिष्ठोअर्चतिप्रशस्तिम्।
३ १र २र ३ १ २
इमाब्रह्मसधमादेजुषस्व ॥ ३ † ॥ १३

हे "मघवन्" इन्द्र! "ते" तव "प्रशस्तिं" स्तुतिरूपां "यां" वाचं "वसिष्ठः" नामर्षिः "अर्चति" वहति, "इमां" वसिष्ठस्य

---

* ऋ० वे० ५, २, ५, २। † ऋ० वे० ५, २, ५, २।

सम्बन्धिनीं वाचं "सु आ बोध" सुष्ठु अभिबुध्यस्व किञ्च "इमा" इमानि "ब्रह्म" ब्रह्माणि हवीरूपाख्यानि * "सधमादे" यज्ञे "जुषस्व" सेवस्व ॥ २ ॥ १३

॥ दैर्घतमसम् ॥ ह्राउपिबा । सोममिन्द्र । भ्रा ।
दतुवा । यन्तेसुषाबहरिया । स्वा१द्री२: । स्वाद्री२: ।
सोतुर्बाऽभ्याम् । सुयता३: । सुयताः । नार्वा२ ३
४औहोवा ॥(१) ह्राउयास्तायि । मादोयुजियः । चा ।
रुरस्ता३यि । रुरस्तायि । येनवृत्राणिहर्य्यश्वा । ह्रा१
ण्सा२यि । ह्राण्सा२यि । सत्वामिन्द्रा । प्रभूवसा३
उ । भूवसा३उ । ममार२स्तू२३४औहोवा ॥(२) ह्राउवो
धा । सूमेमघवन् । वा । चमेमा३म् । चमेमाम् ।
यान्तेवसिष्ठअर्चंतिप्रा । शा१स्ता२यिम । शास्ता

---

* 'अथवा ब्रह्माणि बृंहितवचनानि'—इति वि० ।

१र र १ १ र १
२यिम। इमाब्रह्मा। सधमादाइयि। धमादाइयिः।
१ ० ५र र
जुषा२स्वा२३४ओहोवा(३) ॥ १ * ॥ [१]

१र र र १ १ र १
॥ मरायम् ॥ ह्वा उहाउहाउ। पायिबा। सोमाम्।
२ र र र १ १ १
इन्द्र। मन्दतुत्वा। त्वा। त्वा। यान्तायि। सुषा।
२ र १ १ र १ २र
वर्हर्य्यस्वाद्रिः। द्रिः। द्रिः। सोढ्वः। बाह्व। भ्या२
र र र र र १ २ १
सुयतोनार्वा। र्वा। र्वा ॥(१) यास्तायि। मदो। यु
२ र १ २ १
जियस्वारुरस्ति। स्ति। स्ति। यायिना। बृत्रा। णि
२ १ २ १ २र
र्हर्य्यस्वहर्ंसि। सि। सि। सात्वाम्। इन्द्रा। भूप्र
र १ १ १ २१
वसोममत्तु। तु तु ॥(२) बोधा। सुमायि। मघवन्।
१र र र र र १ २ १
वाचमेमाम्। माम्। माम्। यान्तायि। वसायि।
र २ १ २
ष्ठोअर्ष्वंतिप्रशस्तिम्। स्तिम्। स्तिम्। अयिमा। ब्र
१ २१ र २र
ह्मा। सधमा। देजुषस्व। स्व। स्व(३) ॥ २ † ॥ [२] १३

* ऊ० गा० २२म० २ख० १खा०। † ऊ० गा० २१म० २ख० २खा०

अथ द्वितीयखण्डे—*प्रथमा ।

२ २ १ १ २ १ १ २ १ २
विश्वाःपृतनाअभिभूतरन्नरः
२१ २ २ २ २१ १ २ १ २
सजूस्ततक्षुरिन्द्रञ्जजनुश्चराजसे ।
२ ३ १ २ २ २ १ २ ३ १
क्रत्वेवरेष्ठेमन्यामुरीमुतोग्र
२४ ३ १ २ २ १ २
मोजिष्ठन्तरसन्तरस्विनम् ॥ १ † ॥

"विश्वाः" सर्वाः व्याप्ता वा "पृतनाः" [पृङ् व्यायामे (तु०, आ०); व्याप्रियन्ते इति पृतनाः] सेनाः परस्परं सङ्गताः सत्यः "अभिभूतरम्" [शत्रूणामित्यर्थः] अभिभवितारम् "इन्द्रम्" "ततक्षुः" आयुधादिभिः तीक्ष्णीचक्रुः आयुधवन्तम् श्रवन्तञ्च चक्रुरित्यर्थः [यद्वा पृतना इति सङ्ग्राम नाम (निघ० २, १७, १८); व्याप्रियन्ते अत्रेति पृतनाः सङ्ग्रामाः, सर्वानेव सङ्ग्रामानभिभावुकमिन्द्रं "नरः" नेतारः स्तोतारः अन्योन्यं सङ्गताः स्तुतिभिः तीक्ष्णमकुर्वन्, सुतोऽतिबलवान् भवतीति। यद्वा यष्टारो हविः-प्रदानेन वीर्यवन्तं कुर्वन्तीति] किञ्च स्तोतारः "राजसे" [राजतेः तुमर्थे असे प्रत्ययः (३, ४, ९)] आत्मनो विराजनार्थं प्रकाशनार्थं सूर्यात्मानमिन्द्रं "जजनुः" जनयामासुः स्तोत्र-शस्त्रैः स्व-यज्ञे प्रादुरभावयन्नि-

---

* 'वामदेव्यम्। मैत्रावरुणं साम। विश्वेकं ब्रह्मसाम'—इति वि०।

† ऋ० भा० ४, २, ४, १, (१भा० ७५४पृ०) = ऋ० वे० ६, २, २७, ५।

ल्यर्थः। किञ्च "क्रत्वा" ईदृशमिन्द्रम् "आमुरीम्" शत्रूणामाभिमुख्येन मारयितारम् "उग्रम्" उद्गूर्णबलम् अतएव "ओजिष्ठम्" ओजस्वितमं "तरसं" प्रवृद्धं "तरस्विनं" सङ्ग्रामे शत्रुबधार्थं वेगवन्तं बलवन्तं वा एवम्भूतमिन्द्रं धनार्थं स्तुवन्ति॥

'क्रत्वेश्वरेस्थेमनि"-"क्रत्वावरिष्ठंवरे"—इति पाठो॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ ३ ३ १ २८ २ १
नेमिन्नमन्तिचक्षसामेषंविप्राअभिस्वरे।

३ १ २ ३ १उ ३ १ २ ३ २ ३ १ १८
सुदीतयोवोअद्रुहोपिकर्णेतरस्विनःसम्नक्षभिः॥ २ *॥

"नेमिम्" [अरान् यथा नेमिर्व्याप्नोति तद्वदिन्द्रं सर्वं व्याप्नुते तादृशं] नमनशीलमिन्द्रं "चक्षसा" दर्शनमात्रेणैव† "विप्राः" मेधाविनः ‡ "अभिस्वरे" ¶ अभिस्वरेण गीताय स्तोत्राय इन्द्रविषयं स्तोत्रं कर्त्तुमित्यर्थः "नमन्ति" नमस्कुर्वन्ति। कीदृशम्? "मेषम्" इन्द्रो मेषोभूत्वा मेधातिथिं स्वर्गमनयत् तस्मात् मेधातिथेर्मेषभूतमिति यावत्। इदानीं यजमानः स्तोतॄनाह—अपिच हे स्तोतारः! "सुदीतयः" शोभनदीप्तयः

---

* ऋ० वे० ६, १, २८, १।

† 'चक्षुषा दृष्टसूत्रेण'—इति वि०।

‡ 'विप्राः ब्राह्मणाः'—इति वि०।

¶ 'अभिस्वरे—अभिस्वरो यज्ञस्तस्मिन् अभिस्वरे यज्ञे'—इति वि०।

"अङ्गिरः" कश्चाप्यङ्गिराः "वः" यूयं [छान्दसो वसादेशः] "तरस्विनः" कर्मसु स्तोत्रेषु वा त्वरायुक्ताः सन्तः इन्द्रस्य "कर्णे" श्रोत्र-समीपे "ऋक्वभिः" अर्चनयुक्तैर्मन्त्रैः * [यद्वा ऋचो बह्वृचो येषु सन्ति तैः स्तोत्रादिभिः] संस्तुतः इन्द्रा यथा युष्मदीयानि स्तोत्रादीनि शृणोति तथा सम्यगभिष्टुतेत्यर्थः ॥

"अभिस्वरे"-"अभिस्वरा"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ० २ ३ १ २ ३ १ २
समु रेभासो अस्वरन्निंद्रꣳ सोमस्य पीतये ।
१८ ३ १ ० ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
स्वःपतिर्यदीवृधे धृतव्रतो ह्योजसास्मृतिभिः ॥ ३ † ॥ १४

"रेभासः" [रेभृ शब्दे (भ्वा० आ०) शब्दयितारः स्तोतारः [यद्वा, "रेभासः" कश्यप-पुत्रा रेभाः एतन्नामका ऋषयः] "इन्द्रम् उ" इन्द्रमेव "समस्वरन्" ‡ सम्यगशब्दयन् [स्तुतवन्तः]। किमर्थम् ? "सोमस्य पीतये" सोमपानाय "यद्" [यदा] "स्वःपतिः" स्वर्गस्य पालयिता धनस्य स्वामी वा इन्द्रः "वृधे" यजमानादिवर्द्धनाय भवति, तदा "धृतव्रतः" धृत-कर्मेन्द्रः

---

* 'ऋक्वभिः—ऋग्यजु सामभिः'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ६, १, ३८, १ । "यद्दोम्"—इति च ऋ०-पाठ ।

‡ 'अस्वरन्—सामभिर्गायन्ति'—इति वि० ।

"ओजसा" बलेन "ऊतिभिः" मरुद्भिः पालनैश्च वा सह सङ्गच्छते ; स्तुतिभिर्बलं मरुद्भिः पालनैश्चेन्द्रस्य भवतीत्यर्थः* ॥

"सम्"-"समोम्"—इति पाठो, "स्वष्टिः"-"स्वर्पतिम्"—इति च ॥ ३ ॥ १४

२ १ २ १ २ २ १ २ २ २
॥ वैशोकम् ॥ विश्वोहायि। पृतनाअभिभू। तरत्न
१ २ १ २ २ १ २ १ २ १ ५
राः। सजूस्ततक्षुरायिन्द्र ऋजनूः। चराजासो२३४हा
२ १ २ २ २ २ ३ ५
यि। क्रत्वौहोयि। वरौहोयि। स्थेमन्या२मू२३४रीम्।
२ १ २ १ ५ २ ३ ५
उतोहायि। उग्रमो२३४जो। ष्टन्तारा२३४साम्। हो
३ २ ५ ५ २ २ १
यि। तरा३४। स्विनम्। ओईवा ॥(१) नेमोहायि।
२ ३ २ १ २ १ २ २ ५
नाम। तिचक्लसा। मेषंविप्राः। अभिस्वरो२३४हा
१ २ २ ३ ५ १
यि। सौहोयि। दौहोयि। तयो२वो२३४आ। द्रु
१ २ १ ५ २ ३ ५ २
होहायि। अपायिका२३४र्णे। तारस्वो२३४नाः। हो
३ १ ५ ५ २ १
यि। समृ३४। क्तभिः। ओईवा ॥(२) समोहायि।

* अत्र 'सम् उ—इति पदपूरणः'—इति वि० ।

रायिभा। सोअस्वरान्। इन्द्रꣳसोम। स्वपीतायो२३
४च्छायि। सोच्छोयि। वीच्छोयि। पतारंयिर्य्या२३४दी।
वृधोच्छायि। धृतव्रा२३४ताः। हियेजा२३४सा। 'च्छो
यि। सम्३४। तिभिः। ओ३ऽवा। ओयिदो २ ३ ४
वा (३) ॥ १ ३ * ॥ [१] १४

अथ प्रगाथरूपे तृतीयसूक्ते †—

प्रथमा ।

येराजाचर्षणीनांयातारथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासान्तरुतापृतनानाञ्जेयष्ठंयोवृत्रहागृणे ॥ १ ‡ ॥

"यः" इन्द्रः "चर्षणीनां मनुष्याणां "राजा" स्वामी, "रथेभिः" रथैः "याता" आगन्ता च, "अध्रिगुः" अधृतगमनोऽन्यैः, "विश्वासां" "पृतनानां" सेनानां "तरुता" तारकः, "यः" च "वृत्रहा" वृत्रं हतवान्, "ज्येष्ठं" गुणैर्ज्यायांसं तं महाभागमिन्द्रं "गृणे" स्तौमि ॥ १ ॥

---

* ज० गा० २३प्र० २अ० १३सा० ।

† 'भरद्वाजस्य पृश्राच्छावाकं साम'—इति वि० ।

‡ ऋ० आ० ३, २, ४, १ (१ भा० ५६३ पृ०) = ऋ० वे० ६, ५, ८, १ ।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २ १ २ १ २ ३ १ २ १ २
इन्द्रन्तꣳशुम्भपुरुहन्मन्नवसेयस्यद्विताविधर्त्तरि ।

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २ ३ २ ३ १ २
हस्तेनवज्रःप्रतिधायिदर्शतोमहान्देवोनसूर्य्यः ॥ २* ॥ १५

हे "पुरुहन्मन्" ऋषे ! † त्वं "तम्" "इन्द्र" "शुम्भ" ‡ हविःप्रदानादिना अलङ्कुरु । किमर्थम् ? "अवसे" रक्षणाय ¶ । एवमात्मा स्वात्मानं सम्बोध्य ब्रवीति—"यस्य" तव "विधर्त्तरि" विधारके इन्द्रे "हिता" § हितम् अस्ति, —औग्र्यमनौग्र्यम् [तव यत् ऊन् हन्तुमुग्रत्व, तदनुग्रहाय अनुग्रहेति हैतमर्थम्] ; तच्चौग्र्यं दर्शयति—"दर्शतः" दर्शनीयः "महान्" प्रभूतः "वज्रः" "देवो न सूर्य्यः" द्योतमानः सूर्य इव स्थितः, "हस्तेन" करेण "प्रति धायि" प्रतिनिहतो भवति ‖ ॥

---

* ऋ० वे० ६, ५, ८, २ ।

† पुरुहन्मन्—पुरुहन्मा नामर्षिः अस्य तृचस्य सज्ज्ञानं परोक्षत्वं ब्रवीति' —इति वि० ।

‡ 'शुभ—शुभं बलवन्नाम'— इति वि० ।

¶ 'रक्षणे वाक्यशेषः'—इति वि० ।

§ 'चितः, हितः, एकतः—इति ऋषयः ; तेषां मध्ये हिताः'—इति वि० ।

‖ 'हस्तेन वज्रः प्रतिधायि—हस्तेन गृहीत्वा वज्रः प्रति धेट् पाने सर्वप्राणिनां वीर्यं रसं शोणितादि पिबते'—इति वि० ।

"हस्तेन"-"हस्ताय"—इति पाठौ, "महान्देव"--"महोदेवः" —इति च * ॥ २ ॥ १५

॥ पृश्नि ॥ येराजा२३चर्षणीना॰ंहाउ। यातारथे
२ १ २ १ २ भिरध्रिगुः। विश्वासा१न्ता२३। हेवाइहायि। रुता।
१ २ १ २ १ २ प्रताना१ना२३म्। हेवाइहायि। ज्येष्ठांयो१वा २ ३।
१ २ २ १ २ २ १ २१ २ ४ हेवाइहा। त्राहागृणे। इडा२३ ॥(१) ज्येष्ठांयो२३वृ
२ २ ५ १२ २ १२ २ १२ २२ १ २ त्रहागृणेहाउ। ज्येष्ठंयोवृत्रहागृणे। इन्द्रान्ता१॰म्भू२
१ २ २ १ २ १ २ ३। हेवाइहा। भपुरुह। न्नावा१मा२३यि। हो
२ २ १ २ १ २ १ २ वाइहायि। यस्यादा१यिता२३। हेवाइहायि। वायि
२ १ २ १ ४२ ५ धर्त्तरि। इडा २ ३ ॥(२) यस्यद्वी२३ताविधर्त्तरिहाउ।
१ २ १२ १ २ २ १ २ १ २ २ यस्यद्वितावधर्त्तरि। हस्तायिना१वा२३। हेवाइहा।
१ २ २ १ २ २ १ २ ३ ज्रःप्रतिधा। यिदार्शा१ता२३ः। हेवाइहायि। मह्ना

"महोदिवे"—इति च ऋ० पाठः

१ १ २ २ १ २ २ १
न्दा१यिवा२३:। ह्वोवा३च्चायि। नासूरियः। इडा २ ३

१ १
भा३४३। ओ२३४५ई। डा(३) ॥ १४ * ॥ [१]

५ ४ २ ४ ५ ४ ५ १ २
॥ अभीवर्त्तम्† ॥ योरा३जा३चर्षणीनोवा। यातार

१ २ १ २ २ ५५२
थे। भिराध्वा१यिगू२:। वायिश्वासा३१२३४म्। तरुता।

२ १ २ २ १ २ ३ २ १
पृतानाा१ना२म्। ज्येष्ठांयो१वा२। च्चहा३। गा२३४

२ १ १ १ ५ ४ २ ४ ५ ४ ५
५। णा२३४५यि ॥(१) ज्येष्ठा३यो३वृच्चहागुणोवा।

१ २ १ २ १ २
ज्यायिष्ठयोवृ। च्चहा१गा१र्णा२यि। आयिन्द्रन्तꣳशू३१

३ ४ ५ २ १ २ १ २
२३४। भपुरुच्च। न्नावा१सा२यि। यस्याद्वा१यिता

३ २ १ ३ १ १ १ ५ ४ २
२। विधा३। ता२३४५। रा२३४यि ॥(२) यस्या३द्वा३यि

४ ५ ४ ५ १ २ २ १ २ १
ताविधर्त्तरोवा। यास्यद्विता। विधार्त्ता१रा२यि। च्चा

२ २ २ ४ ५२ २ १ २ १
स्तेनवा३१२३४। ऋ:प्रतिधा। यिन्द्रार्शा१ता२:। मच्चा

---

* ऋ० गा० २प्र० २ख० १४सा०। † "अभीवर्त्त:"—इति ख० पु० पाठ:।

२ २१ १ ८१११
न्दा१श्विवा२: । नमू३ । रा२३४५ । या२३४५: (३)

॥ ७ * ॥ [२]

५२ २ ० ४ ५ ४ ५ २१
॥ जनित्वाय्यम ॥ योराजा३चर्षणायिनाम । ह्वे.

१२ २ २ १ २ १
ह्वो २यि । यातारथेभिराधा१यिग्वं २: । विश्वासान्त्स.

३ २ ३ ५ १२ २ १ २ २
ता२ । पृतानाा२३४नाम् । ज्येष्ठा३ण्ह्वोयि । योवा३

१ २ २ १ २ १२ ३ ५२ २
ण्ह्वोयि । योवा३ह्वो । त्वहा । गा२र्णा २ ३ ४ औह्वो

१२ २ ४ ५ ४ ५ २ १
वा ॥(१) ज्येष्ठंयो ३ वृत्रहागृणायि । ह्वेह्वो २यि ।

१२ २ २ १
ज्येष्ठंयोवृत्रहागा १ र्णा २यि । इन्द्रन्त्ण्ह्वुम्भपुरुहा२ ।

३ २ ३ ५ १ २ १ २ १
न्मन्नावा२३४साायि । यस्या ३ ह्वोयि । द्विता ३ ह्वोयि ।

२ १ २ ५२ २ ५ २४२ ५ ४ ५
विध । ता२रा२३४ओह्वोवा ॥(२) यस्यह्वी३ताविधर्त्तरा

२ १ १ २ २ १
यि । ह्वेह्वो २यि । यस्यद्विताविधार्त्ता१रा २यि । हस्ते

३ २ ३ ५ १ २ १
नवज्रःप्रतिधा२ । यिदाशा२३४ताः । महा३न्ह्वोयि ।

---

* ऋ० मा० ७अ० २ख० ७सा० ।

र२ १ २।र २ ५र र १ ११
देवाइहो। नम्। रा२र्या२३४औहोवा ॥(३) जनिचा२
११
४५म् ॥ १२ * ॥ [३] १५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायण्यस्य पञ्चमस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

अथ षष्टे खण्डे ‡, प्रथमर्चेण—

प्रथमा।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३क २र ३ १
परिप्रियादिवःकविर्वयाꣳसिनप्रयोर्हितः।
३ १ २ ३ १ २
स्वानैर्याति कविक्रतुः ॥ १ § ॥

"कविः" मेधावी "कविक्रतुः" क्रान्त-प्रज्ञः क्रान्त-कर्मा "नप्त्योः" अधिषवणफलकयोः "हितः" निहितः सोमः "दिवः" द्युलोकस्य "परि प्रिया" अति प्रियाणि "वयांसि" गावः ॥

"स्वानैः"-"सुवानः"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* ऊ० गा० १८प्र० २अ० १३सा०। † 'उक्तं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि०।
‡ 'इदानीमार्भवमुच्यते'—इति वि०। ¶ 'यौर्णायवं साम'—इति वि०।
§ ऋ० आ० ५, २, ४, १० (२मा० २९) = ऋ० वे० ९, ७, २२, १।

अथ द्वितीया।

१ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ १ २
ससूनुर्मातराशुचिर्ज्जातोजातेअरोचयत्।
३ १ ३ १ २ १ २
महान्महीऋतावृधा ॥ २ * ॥

"जातः" उत्पन्नः "शुचिः" † विशुद्धः महान् हविरुत्तमः "सः" सोमाख्यः "सूनुः" पुत्रः "मही" महत्यौ "ऋतावृधा" ‡ यज्ञस्य वर्द्धयित्र्यौ "जाते" विश्वस्य जनयित्र्यौ "मातरा" आत्मनो मातरौ द्यावापृथिव्यौ "अरोचयत्" रोचयति दीपयति ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रप्रक्षयायपन्यसेजनायजुष्टोअद्रुहः।
१क २ २ ३ १ २
वीत्यर्षपनिष्टये ॥ ३ ¶ ॥ १६

हे सोम! "प्र प्र" अत्यन्तं "क्षयाय" तव निवास-भूताय-"अद्रुहः" अद्रुहे अद्रोग्धे "पन्यसे" स्तुत्ये "जनाय" मनुष्याय

---

* ऋ० वे० ९, ७, ३२, २। † 'शुचिः दीप्तः'—इति वि०।

‡ 'ऋतावृधा—ऋतो यज्ञः तेन वर्द्धतः ऋतावृधौ अथवा ऋतमन्नं तेन वर्द्धते'-इति वि०। ¶ ऋ० वे० ९, ५, ३२, २।

"वीति" वीत्यै भक्षणाय "जुष्टः" पर्याप्तः त्वं "पनिष्टये"* स्तुतये "अर्ष" अङ्गं प्रति गच्छ ॥

"अद्रुहः"-"अद्रुहे"—इति पाठौ, "पनिष्टये"-"चनिष्टया"—इति च ॥ ३ ॥ १६

॥ और्णायवोत्तरम् ॥ परिप्रिया२दिवःकवायिः। व

र २१ र र २ १ र र २
या२होवाꣳसिनप्रयोवोर्हिताः। स्वानैर्या२३तो। ऊ

१ २ १ २ १ ऽ २ ३ २
वा। होवा। होवा। ऊवा२यि। ई३यां। कविक्र

१ ३ ५र र १ र र १
तो२। या२३४ओहोवा ॥(१) समूनुर्मा२तराप्रुचायिः।

र र २र १र र र २ १ र ३
जाता२होवाजातेअरोवोचयात्। महान्मा२३हो। ऊ

१ १ २ १ ऽ २ ३ र २ १
वा। होवा। २। ऊवा२यि। ई३यां। क्रतावृधो२।

३ ५र र १ १
या२३४ओहोवा ॥(२) प्रप्रक्षया२यपन्यमायि। जना२हो

र २१ र र २ १ र २ १ १ २
१वायजुष्टोवोअद्रुहाः। वीतिया२३र्षा। ऊवा। होवा।

---

* 'पनतिः स्तुतिकर्मा (निघ० ३, १४, १६),—इति वि०

१ ऽ २ ३ २१ १ ५२ २
२। ऊवा२यि। ई३या। पनिष्टयो२। या२३४औहो

२ १११११
वा। ई३या२३४५म्(३) ॥ १५ * ॥ [१]

२ २ १ २ १ २.
॥ और्णायवाद्यम् ॥ परिप्रियादिवःकावीः। वयाँ॒ऽ

२ २ २ १ १
सिनप्रयोर्ह्विताः। स्वानैर्य्या२३ती। आया२। इया

ऽ १ ३ २१ ३ ५२ २ २२
२ई३या। कविक्रतो२। या२३४औहोवा ॥(१) सस्तु

२ २१ २ १२२ २ २ २ २
र्म्मातराप्सूचीः। जातोजातेअरोचयात्। महान्मा २ ३

२ १ १ ऽ २ ३ २ २१ ३
ह्वी। आया२। इया२ई३या। ऋतावृधो२। या२.

५२ २ २ २ १ २ १ २ २
३४औह्वोवा ॥(२) प्रप्रक्षयायपन्यासायि। जनायजुष्टो

१२ २ १ १ ऽ २
अद्रुहाः। वीतिया२३र्षा। आया२। इया२ई३या।

३ २१ ३ ५२ २ २ ११११
पनिष्टयो२। या२३४औह्वोवा। ई२३४५(३) ॥८ † ॥[२]

२ १
॥ बृहद्भारद्वाजम् ॥ परिप्रिया। दिवःकवायिः।

२ २ १२ २ २ २
वयाँ॒सा२३यिना। म्नियोर्ह्विताः। स्वानैर्या२३तायि।

---

* ऋ० गा० २म० २सू० १५सा०। † ऋ० गा० ७म० २सू० ८सा०।

१ २ ३ २ १ १ १ २ ३
आ। औ३होवा। काविक्रतुः। इडा२३ ॥(१) ससूनु

१३ ३ ३ २ १३
र्मा। तराघ्नुचाविः। जातोजा२३ते। अरोचयात्।

३ १ १ १ ३ १ ३ २ १
मथान्मा२३ही। आ। औ३होवा। आर्त्नावृध। इडा२

३ ॥(२) प्रप्रश्रया। यपन्यसायि। जनाया२३जू। ष्टो

१ ३ २ १ २ ३ १ १
अद्रुहाः। वीतिया२३र्षा। आ। औ३होवा। पानि

२३ १ २ १
ष्टये। इडा२३भा३४३। ओ२३४५ई। डा(३) ॥ १० * ॥[३]

॥ गौषूक्तम् ॥ १ २१३ २१३ ३ २
परिप्रियादिवौ। होहोवाहावि।

१ ३ २ १
कवायिः। वयाꣳसिनप्तियौ२। ऊवायि। ऊवा२यि।

१३ ३ ३ २ १
हायिता२ः। स्वानैर्यानिकवौ२। ऊवायि। ऊवा२

१ १ २ ५३ ३ २१ ३ २ २
मि। क्रात्व२३ः। हो२वा२३४औहोवा। अग्निराऊता

२३४५ः(१) ॥ ११ † ॥[४]

॥ ई निधनम्मागीयवम् ॥ १ ३ २
परिप्रियादिवःकवा३यिरे।

---

* ऊ० गा० १५प्र० २अ० १०सा०। † ऊ० गा० १६प्र० १अ० ११सा०।

१ २ २ २ २
वयाएसिनप्रयोर्हिताः। स्वानैर्य्या२३तायि। ऐ२ह्वो१आ

२ १ ३ ५२ २ २
२३यिह्वी। कवि। क्रा२ढ२३४औह्वोवा ॥(१) ससून्

२ २ २ १ २ २ २ २ २
र्मातरापुचा३ए। जातोजातेअरोचयात्। महान्मा२३ं

२ २ १२ ३ ५२ २
ह्वी। ऐ२ह्वो१आ२३यिह्वी। क्रता। वा२र्द्धा२३४औह्वो-

२ २ २ १ २ २
वा ॥(१) प्रप्रक्षयायपन्यसा ३ ए। जनायजुष्टोअद्रुहाः।

२ २ १ ३
वीतिया२३र्षा। ऐ२ह्वो१आ२३यिह्वी। पनि। ष्टा२या

५२ २ ३ १ १ १ १
२३४औह्वोवा। ई२३४५(३) ॥ १७ * ॥ [५] १६

अथ प्रगाथे द्वितीयसूक्ते †—

प्रथमा।

२ ऽ १ १ ३ १ २ २ १ २ २ १ १
त्वंह्यां३ङ्गदैव्यपवमानजनिमानिद्युमत्तमः।

२ १ २ ३ १ २
अमृतत्वायघोषयन्॥ १ ॥

हे "पवमान" पूयमान! "दैव्य" देवसम्बन्धि सोम! "द्युम-

---

* ऋ० गा० २०प्र० १अ० १७सा०।

† 'वामदेव्यं बृहत्कं साम'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ६, २, ४, ६ (२ मा० २३५ पृ०) = ऋ० वे० ७, ५, १७, ३।

त्तमः" अतिशयेन दीप्तिमान् "त्वं हि" त्वमेव "अङ्ग" क्षिप्रं "घोषयन्" शब्दयन् शब्दं कुर्वन् "जनिमानि" देवसम्बन्धीनि जन्मान्यभिलक्ष्य "अमृतत्वाय" अमरणाय आगच्छेति शेषः ॥

"दैव्य"-"दैव्या"—इति पाठौ, "घोषयन्"-"घोषः"—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ ७ १ १ २ १ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ २
येनानवग्वादध्यङ्पोर्णु*तेयेनाविप्रासआपिरे ।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
देवानाꣳसुम्ने अमृतस्यचारुणोयेनश्रवाꣳस्याशत ॥२†॥१७

"नवग्वा"ः नवनीय-गतिः यद्वा नवभिर्मासैः सवस्यानुष्ठानात् "दध्यङ्"—एतन्नामकः अङ्गिराः "येन" सोमेन पणिभिरपहृतानां "वारम्" "अपोर्णुते" अपच्छादयति विवृतमकार्षीत् "विप्रासः" तत् मुख्याः सर्वे मेधाविनोऽङ्गिरसः "येन" च सोमेन "आपिरे" तैरपहृता गाः आप्नुवन् किञ्च "देवानाम्" इन्द्रादीनां "सुम्ने" सुखे यज्ञेन सञ्जाते सति "चारुणः" कल्याणस्य "अमृतस्य" उदकस्य सम्बन्धीनि "श्रवांसि" अन्नानि

---

* "र्णु"—इति क० पु० पाठः । † ऋ० वे० ७, ५, १७, २ ।

‡ 'नवग्वा—नवा गावो यस्य असौ नवग्वा'—इति वि० ।

"येन" च सोमेन यजमानाः "आप्नत" व्याप्नुवत् अलभन्त ; स त्वं देवानाममरणायागच्छेति पूर्वेण सम्बन्धः ॥

"नवग्वा"-"नवग्वो"—इति पाठौ, "आप्नत"-"आनशुः" —इति च ॥ २ ॥ १७

१ २ १ ९ १२ २ १
॥ बृहत्कम् ॥ तुवꣳष्ट्वी। अङ्गदैवा२ ३ या। पाक.

२र १ २र १ ७ १ २ २ ४.
मानजनिमानि। द्यूमत्तामा२:। अमार्त्ताꣳत्वा३। य

५ ४ ५ १ २ १ २र १र
घोवा। षापꣳयोꣳहायि ॥(१) अमृता। त्वायघोषा२३

२ १ २र१ २र १ २ १र
यान्। यायिनानवग्वादध्यङ्। आपो१र्णूता२यि। येन

२ २ ४ ५ ४ ५ १र २ १
वा३यिप्रा३। सश्चोवा। पाꣳयिरोꣳहायि ॥(२) येनवी।

२र १र २ १ र २र १र ९ १ २ १
प्रासश्चापा२३यिरायि। दायिवानाꣳसुम्ने अमृत। स्या

२ १र २ २ ४ ५ ४ ५
चा१रुणा२:। येनाश्वा३वा। सियोवा। शाꣳतोꣳहा

यि(३) ॥ १६ * ॥[१]

---

* उ० गा० २प्र० २अ० १६ सा०।

॥ स्वारसौम् ॥ त्वꣳह्यङ्गदैवाꣳइया। पवमानज
निमानिद्युमा। ऊम्। ताꣳइमाः। आमाꣳउवा।
तांत्वा। यद्योꣳइवा। पाꣳयोꣳहायि ॥(१) अमृत
त्वायघोषाꣳइयान्। येनानवग्वादध्यङ्ङपो। ऊम्। णू
ꣳइतायि। यायिनाꣳउवा। विप्रा। सञ्योꣳइवा।
पाꣳयिरोꣳहायि ॥(२) येनविप्रासञ्चापाꣳइयिरायि। दे
वानांसुम्ने अमृतस्यचा। ऊम्। रुꣳइणाः। यायिना
ꣳउवा। अवा। सियोꣳइवा। शाꣳयोꣳहायि(३)॥१६*॥[२]

॥ शाङ्कुम् † ॥ तुवꣳहिया। एꣳइ। गदा। विया।
पवमानजनिमानिमानिद्युमत्ताꣳइमाः। आमाꣳइत्तात्वा
ꣳइ। यघोꣳइवा। पाꣳयोꣳहायि ॥(१) अमृतत्वा।
एꣳइ। यघो। षयान्। येनानवग्वादध्यङ्ङपोर्णूꣳइतायि।

---

* ऊ० गा० ५प्र० २अ० १६ सा०। † "शङ्क"—इति ऋ० पु० पाठः।

१ १ २ १ ५ ४ ५
यायिना २वायिप्रा२३। सम्रो२३४वा। पापूयिरो ६ ह्वा

१र २ १र १ र र र
यि ॥(२) येनविप्रा। ए २। सम्रा। पिरायि। देवा

र र २ १र १ १ १ २
नाꣳसुम्ने अमृतस्यचारु२३णाः। यायिना २स्मावा२३। सि

१ ५ ४ ५
यो२३४वा। ष्मापूतो ६ ह्वायि(३) ॥ १८ * ॥ [३]

२ २ र ५
॥ सम्रासाह्वीयम् ॥ तुवा३४म्। ह्वियङ्गदैविय। ओ

५ १ र र १ १
६वा। पवमानजनिमानिद्यमक्ता २माः। आ २मा। ता

२ १ ऽ २र ३र २ १ ५ ५
२३त्वा। यद्यौ३ह्वो। वाहा३४३यि। षा२३४ यो ६ ह्वा

३ २ र र र ५ ५ १र र
यि ॥(१) अमा३४। तात्वायघोषयन्। ओ६वा। येना

र र १ १ २
नवम्वादध्यङ्ङपोर्णू २तायि। या २यिना। वा२३यिप्रा।

१ ऽ २र ३र २ २ ५ ५
सम्रौ३ह्वो। वाहा३४३यि। पा२३४यिरो६ह्वायि ॥(२)

३र २ र र र ५ ५ १र र र
येना३४। विप्रासआपिरे। ओ६वा। देवानाꣳसुम्ने

---

* ऋ० मा० ११प्र० २अ० १८सा०।

र १ १ २ १ ६
अम्॒तस्य॒चारु॒२णाः । या॒२यिना । आ२३वा । सि॒यो३

२र ३र २ १ ५ ५
हो । वाहा३४३यि । शा२३४तो६हायि(३) ॥ १२ * ॥[४]१७

अथ तृतीयतृचे†—प्रथमा ।

१ २ ३ २ ७ २३ ३ २ ३ १ २
सोमःपुनानऊर्म्मिणाव्यंवारंविधावति ।

१ २ ३ १ २र ३ १ २
अग्रेवाचःपवमानःकनिक्रदत् ॥ १ ‡ ॥

"पुनानः" पूयमानः "सोमः" "ऊर्मिणा" स्वीयया धारया "अव्यम्" अवेः सम्बन्धिनं "वारं" पवित्रं "वि धावति" विविधं गच्छति । कीदृशः सोमः ? "पवमानः" पूतः "वाचः" स्तोत्रस्य "अग्रे" "कनिक्रदत्" पुनः पुनः शब्दं कुर्वन् विधावति ॥

"अव्यम्"-"अग्रे"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १ २ २ २ ७ २३ १ १ ३ १ २
धीभिर्म्मृजन्तिवाजिनंवनेक्रीडन्तमत्यविम् ।

३ १ २ ३ २ ३१ २ १२
अभित्रिपृष्ठम्मतयःसमस्वरन् ॥ २ ¶ ॥

"वाजिनं" बलवन्तं वा "नवनीये" वसतीवर्याख्ये उदके

---

* ऊ० गा० १९प्र० १ष० १२सा० । † 'आतोषादीयं सामं'—इति वि० ।

‡ ऋ० मा० ६, २, २, ७ (२ भा० २१४ पृ०) = ऋ० वे० ५, ५, १०, ५ ।

¶ ऋ० वे० ५, ५, ११, १

"क्रीडन्तं" सङ्क्रीडमानम् "अत्यविम्" [अविशब्देन तद्रोमकृतं पवित्रमभिधीयते] अतिक्रान्त-पवित्रं सोमस् ऋत्विजः "धीभिः" स्तुतिभिः * "मृजन्ति" शोधयन्ति [यद्वा, धीभिः—वर्णलोप-श्छान्दसः, धीतिभिः अङ्गुलीभिः मृजन्ति] किञ्च "त्रिपृष्ठं" [त्रीणि पवित्राणि द्रोणकलशाधवनीयपूतभृदात्मकानि पात्राणि स्पृशतीति त्रीणि सवनानि वा स्पृशतीति स तथोक्तः, तम्] सोमं "मतयः" स्तुतयः "अभि समस्वरन्" अभितः संस्तु-वन्तीति ॥

"मृजन्ति"-"हिन्वन्ति"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३१ २ २ ० ३ २उ ३ १ २ ३ २

असर्जि कलशा॒ अभि मौढ्वां॑त्सप्तिर्न वाजयुः ।

३ १ २८ ३ १ २

पुनानो वाचं॒ जनयन्नसिष्यदत् ॥ ३† ॥ १८

"वाजयुः" यजमानानामन्नमिच्छन् "मौढ्वान्" सेक्ता ‡ सः सोमः "कलशान्" "अभि" लक्ष्य, कलशेषु "असर्जि" अस्र-ज्यत । तत्र दृष्टान्तः—"सप्तिर्न" यथा सर्पणशीलोऽश्वः ¶ सङ्ग्रामे सृज्यते तद्वत् । ततः "पुनानः" पूयमानः सोमं

---

* 'धीभिः बुद्धिभिः'—इति वि० । † ऋ० वे० ५, ५, ११, २ ।

‡ 'मौढ्वान् बलवान्'—इति वि० ।

¶ 'सप्तिर्न—सप्तिरश्वोऽभिधीयते'—इति वि० । "सप्तिः"—इति निघण्टावश्व-नामसु पञ्चमं पदम् (१, १४,) ।

"वाचं" शब्दं "जनयन्" उत्पादयन् "असिष्यदत्" पात्रेषु स्यन्दते ॥

"मीढ्वान्"--"मेल्हा"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ १८

॥ आतीषादीयम् ॥ सोमःपुना । हो । नऊर्मिणा

ईए । अव्यंवारंविधा१वा३तो । अग्रेवा२३४५ । चा २

३४५ः । पवमा२३नाइः । कार्ना२३४औहोवा । क्रद

दे२३४५ ॥(१) धीभिर्मृजा । हो । तिवाजिनाईमे ।

वनेक्रीडन्तमा१त्या३वायिम् । अभित्रा२३४५यि । पार२

३४५ । ष्टन्मता२३याइः । सार्मा२३४औहोवा । स्वर

नै२३४५ ॥(२) असर्ज्जिका । हो । लशाएअभीईए ।

मीढ्वान्सप्तिर्न्नवा१जा३युः । पुनानो२३४५वा२३४५ । च

ञ्जना२३या३न् । आर्सा २ ३ ४ औहोवा । व्यदद्दे २ ३

४ ५ (३)॥ १७ * ॥ [१]

---

* ऊ० गा० २प्र० २अ० १७सा० ।

२र र १ २ १
॥ शुम्भानम् ॥ सोमःपुना। नऊर्म्मिणा। अव्यवा
र १ २ र १ १
रा२म्। विधावताय्यि। अग्रेवाचा२ः। पव। मा२
२ ५र र १ २ २र
ना२३४औह्होवा। कनिक्रदद्दे३ ॥(१) धौभिर्मृजा। नि.
र १ ५ र १ १ २
वाजिनाम्। वनेक्रायिडा२। तमत्यवायिम्। अभि.
१ १ २ ५र र १ २
त्रायिपा२। ष्ठम्म। ता२या२३४औह्होवा। समंस्वरन्ते
२ र १ २र र १
३ ॥(२) असर्ज्जिका। लशाएअभायि। मीढान्त्साप्ता२
र १ २ र १ १ ३
यिः। नवाजयूः। पुनानोवा२। चम्म। ना२या२३
५र र १ २ १ ११ ११
४औह्होवा। असिष्यदद्दे३उपा२३४५ (३)॥ ९ * ॥ [२]

१र र १ र १
॥ शुध्यम् ॥ सोमःपुना२नः। ऊर्म्मिणोवा। अव्यं
२र १ २ २र २ १ र २र १ २र १
वारम्। विधावताय्यि। अग्रेवाचःपवमानःक। ना२
२ १र १र
३यि। क्रदाउवा। ऊधिया२ ॥(१) धीभिर्मृजा२न्ति।
र १ २ १र १र १ २ ३ २ १ २ १ २ १
वाजिनोवा। वनेक्रीडा। तमत्यवायिम्। अभिचिपृष्ठ

* ऊ० मा० ७प्र० २ब० ९सा०।

२ १ २ १ २ २ १२
म्मतयःसम् । आ२३ । स्वराउवा । अूधिया२ ॥(२)

१ २ १ २१२ १ १
असर्ज्जिका२ल । ग्राऽअभोवा । मीठात्सप्तायिः । न

२२ २ १ २ २ १२ २ २ १ २ १
वांजयूः । पुनानोवाचञ्जनयन्न । सा २ ३यि । ष्यदाउ

१२ १ २ १
वा । अूधिया२ । ए२३हिया३४३ । ओ २ ३ ४ ५ ई ।

डा (३)॥ ४ * ॥ [३]

२२ १ २ २ १
॥ क्रोशम् ॥ सोमाः । पुनानानऊर्म्मि । णा । हो

१ २२ १ २ १
ई२ । हो । वाहोयि । अव्यंचारंविधावतायि । अग्रा

२ २ १२ २ १ २
यिवा१चा२३ः । पा३वामा३नाः । कना२३श्चिक्रदा३४३

२२ १ २ २ १
त् ॥(१) धीभीः । मृजन्तिवाजि । नम् । होई२ ।

१ २२ १ २ २ २ १ २
हो । वाहोयि । वनेक्रीडन्तमत्यायिम् । अभायिन्रा

२ १ १ २ २ १ २
यिपा२३ । ष्टा३म्माता३याः । समा२३स्वरा३४३न् ॥(२)

२ १ २ २ १ २२
असा । जिकलग्राऽअ । भि । होई२ । हो । वा

* ऋ० गा० ८प्र० २अ० ४वा० ।

१ २ २ २ २१ २ २
द्योयि। मौद्वात्सप्रिर्न्नवाजयूः। पुनानोश्वार२३। चाऽ३
१ २ २ १ १२ १
ज्ञानाऽयान्। असार२३यिष्यदाँ३४३त्। ओ२३४५ई।

डा (३)॥ ११ *॥ [४] १८

अथ चतुर्थ्यृचेऽ—प्रथमा।

१ २ ३१२३ १
सोमःपवतेजनितामतीना
२ ३२ ७१ २ ७२२ ३ २
जनितादिवोजनितापृथिव्याः।
३ १ २र ३ २र
जनिताग्नेर्जनितासूर्य्यस्य
३१ २ ७१ २र
जनितेन्द्रस्यजनितोतविष्णोः॥ १ ॥

"सोमः" अभिषूयमाणः "पवते" पात्रेषु क्षरति। कीदृशः? "मतीनां" बुद्धीनां [यद्वा, मननीयानां] "जनिता" जनयिता, ["जनिता मन्त्रे (६, ४, ५३)"—इति निपातनान्निलोपः] किञ्च "दिवः" द्युलोकस्य "जनिता" प्रादुर्भावयिता, तथा

---

* ऋ० गा० १५प्र० २अ० ११सा०।

† 'वात्सप्रं साम सोमस्यायं स्तुतिः'—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ६, १, ४, ५ (२ भा० ११७४०) = ऋ० वे० ७, ४, ६, ५।

"पृथिव्याः" "जनिता", "अग्नेः" 'जनिता" प्रकाशयिता, "सूर्यस्य" सर्वस्य प्रेरकस्यादित्यस्य "जनिता", "इन्द्रस्य" "जनिता" तेन मदस्य जनयिता "उत" अपिच "विष्णोः" व्यापकस्य "जनिता" जनयिता;—एतत्सर्वं सोमेऽभि षूयमाणे भवतीति ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

३ २ ३ १ १ ३ २ ३ २
ब्रह्मादेवानामदवीःकवीना*

३ १ २ ३ २ ३ १ २
मृषिर्विप्राणाम्महिषोमृगाणाम्।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
श्येनोगृधाणाꣳस्वधितिर्वनानाꣳ

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सोमःपवित्रमत्येतिरेभन्॥ २ †॥

"सोमः" एवंरूपो भवति—"देवानां" स्तोत्रकारिणामृत्विजां "ब्रह्मा" ब्रह्माख्यर्त्विक्स्थानीयो भवति [यद्वा, "देवानां" द्योतमानानामिन्द्रादीनां "ब्रह्मा" राजा भवति] तथा "कवीनां" क्रान्त-प्रज्ञानां "पदवीः" [स्खलन्ति पदानि साधुत्वेन यो योजयति स पदवीः, वी गत्यादिषु (अदा०, उभ०)—इत्येतस्मात् क्विपि

* "द्यवीष्कवीना"—इति क० पु० पाठः। † ऋ० वे० ७, ४, ७, २

रूपम्], तथा "विप्राणां" मेधाविनां मध्ये "ऋषिः" भवति [यः परोक्षं पश्यति स ऋषिः "ऋषिर्दर्शनात् (निरु० २, १-१)"—इति,] "मृगाणां" "महिषो" भवति महिषाख्यो बलवान् राजा भवति तथा "गृध्राणां" पक्षिविशेषाणां "श्येनः" शंसनीयः पक्षिराजो भवति, "वनानां" [वनतिर्हिंसाकर्मा] हिंसकानां छेदकानां मध्ये "स्वधितिः"—एतन्नामकश्छेदको-ऽसि। एवम्भावः सोमः "रेभन्" शब्दायमानः सन् "पवित्रम्" ऊर्णास्तुकेन कृतम् "अत्येति" अतिगच्छति * ॥ २ ॥

---

* अत्राह यास्कः—"ब्रह्मादेवानामित्येष हि ब्रह्मा भवति देवाना देवनकर्मणा-मादित्यरश्मीनां पदवीः कवीनामित्येष हि पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानाना मादित्य-रश्मीना मृषिर्विप्राणामित्येष हि ऋषिणो भवति विप्राणां व्यापनकर्मणामादित्य-रश्मीनां महिषो मृगाणामित्येष हि महान् भवति मृगाणां मार्गणकर्मणामादित्य-रश्मीनां श्येनो गृध्राणामिति श्येन आदित्यो भवति शंसतेर्मतिकर्मणो गृध्र आदित्यो भवति गृध्यते ज्ञानकर्मणो यत एतस्मिंस्तिष्ठति स्वधितिर्वनानामित्येष हि स्वयं कर्मा-णादित्यो भवति वनानां वननकर्मणामादित्यरश्मीनां सोमः पवित्रमत्येतिरेभदित्येषच्छि पवित्रं रश्मीनामत्येति स्तूयमान एष एवैतत्सर्वमन्तरमित्यधिदैवमथाऽध्यात्मं ब्रह्मा देवा-नामित्ययमपि ब्रह्मा भवति देवानां देवनकर्मणामिन्द्रियाणां पदवीः कवीनामित्ययमपि पदं वेत्ति कवीनां कवीयमानानामिन्द्रियाणामृषिर्विप्राणामित्ययमप्यृषिणो भवति विप्राणां व्यापनकर्मणामिन्द्रियाणां महिषो मृगाणामित्ययमपि महान् भवति मृगाणां मार्गण-कर्मणामिन्द्रियाणां श्येनो गृध्राणामिति श्येन आत्मा भवति शंसतेर्ज्ञान-कर्मणो गृध्राणीन्द्रियाणि गृध्यतेर्ज्ञान-कर्मणो यत एतस्मिंस्तिष्ठन्ति स्वधितिर्वनानामित्ययमपि स्वयंकर्माण्यात्मनि धत्ते वनानां वननकर्मणामिन्द्रियाणां सोमः पवित्रमत्येति रेभ इत्यय-मपि पवित्रमिन्द्रियाण्यत्येति स्तूयमानोऽयमेवैतत्सर्वमनुभवत्यात्मगतिमाचष्टे ॥"—इति निरु० अ० २, १२।

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ ३ २ ३
प्रावीविपद्वाचऊर्मिं नसिन्धु
२३ २ १ १ २ ३ ३ २
र्गिरस्तोमान्पवमानोमनीषाः।
३ १ २८ ३ २ ३ १ २ ३ १
अन्तःपश्यन्वृजनमावराण्या
२ ३ १ २८ ३ २
तिष्ठतिवृषभोगोषुजानन्॥ ३ * ॥ १९

"पवमानः" सोमः "मनीषाः" मनसेङ्गिता हृदयङ्गमान् "प्रावीविपत्" प्रकर्षेण विपर्यति † प्रेरयति "सिन्धुर्न" स्यन्दमान-नदीव "वाचः" शब्दस्य "ऊर्मिं न" सङ्घं यथा प्रेरयति तद्वत्। किञ्च "वृषभः" कामानामुदकानां वा वर्षकः सोमः "अन्तः" अन्तर्हितं वस्तुजातं ‡ "पश्यन्" "अवराणि" दूर्वलैः वारयितुमशक्यानि "वृजना" ¶ वृजानि बलानि "आतिष्ठति" आसीदति। किं कुर्वन्? "गोषु जानन्" § गोषु जयाय जानानः सन् परबलानि प्रविशति॥

"स्तोमान्"-"स्तोमः"—इति पाठौ॥ ३॥ १९

---

* ऋ० वे० ७, ४, ७, २। † 'वेपयति'—इति वि०।

‡ 'अन्तः हृदये'—इति वि०।

¶ 'वृजना वृजनानि छिद्राणि शरीरावस्थितानि'—इति वि०।

§ 'गोषु जानन्—गोशब्देन रश्मयः ता एव नाड्यो गृह्यन्ते; वृषभो वर्षिता; गोषु अप्सु नाडीषु जानन्'—इति वि०।

॥ मरुद्वात्सप्रम् ॥ हाउहाउहाउ । ओ । होहो

व्म । ओ । होहोवा । सोमःपवा । तेऽजनि । ताऽ

मतीनाम् । मतीनाम् । मतीनाम् । जनितादायि ।

वोऽजनि । ताऽपृथिव्याः । पृथिव्याः । पृथिव्याः । ज-

नितास्रायिः । जनिता । सूऽरियस्या । रियस्या । २ ।

जनितेद्रा । स्याऽजनि । तोऽतविष्णोः । तविष्णोः । २ ।

ब्रह्मादेवा । नाम्यद । वीःकवीनाम् । कवीनाम् ।

कवीनाम् । कविर्विप्रा । णाम्महि । षोऽमृगाणाम् ।

मृगाणाम् । २ । श्येनोगृध्रा । णाऽस्वधि । तिर्वना

नाम् । वनानाम् । २ । सोमःपवायि । चाऽमनि । एऽ

तिरेभन् । तिरेभन् । २ । प्रावीविपात् । वाऽचऊ ।

मित्रसिधुः । नसिन्धुः । नसिन्धः । गिरःस्तोमान् ।

२१ २ २ २ १
पवमा। नोऽमनीषाः। मनीषाः। २। अन्तःपश्यान्।
२ १ २ २ २ २ १
बृजने। माऽवराणी। वराणी। २। आतिष्ठतायि।
२ १ २ २ २ १ २
वृषभः। गोऽषुजानन्। षुजानन्। २। हाउ। ३।
१ २ १ ३
ओ। होहोवा। २। ओ। हो। हो२। वा२३४
५ २ ३ १ १ १ १
ओहोवा। ई२३४५ (३)॥ १९ * ॥ [१]

२ १ २ १ १
॥ जनित्राग्नम् ॥ हाउजनत्। सोमःपवा। ते३
१ २ ३ २ ५ २ १२ २ १ १
जेनि। तामतीनाम्। जनितादायि। वो३जनि। ता
३ ४ ५ २ १२ २ १ २ २ ३ ४ ५
पृथिव्याः। जनिताग्नायिः। जनिता। ह्वरियस्या।
२ १ २ २ १ २ २ ४
जनितेद्रा। स्या३जनि। तो३४३। ता३वा५यिष्णो६५
२ १ २ २ २ १ २ ३ ४ ५ २
६ः ॥(१) ब्रह्मादेवा। ना३पद। वीःकवीनाम्। च
१ २ १ २ २ ४ ५ २ १ २
षिर्विप्रा। णा३न्मर्हि। षोम्नृगाणाम्। श्येनोगृध्रा। णा
१ २ ३ ४ ५ २ १ २ १
३७स्वधि। तिवनानाम्। सोमःपवायि। चा३मति।

---

* ऊ० गा० २प्र० २अ० १९सा० ।

२ २ २१ २
आ३४३यि। ती३रा५यिभाई५६न्॥(२) प्रावीविपात्।

२ १ र २ ३ ४ ५ २ १ र २ १ र
वा३चऊ। मित्रसिधूः। गिरस्तोमान्। पवमा।

२ ३ ४ ५ २ १ २ १ र २ ३ ४ ५ २ र
नोमनीषाः। अन्तःपश्यान्। वृजने। मावराणी। ह्वा

१ २ १ २१ २ ३
उजनत्। आतिष्टतायि। वृषभः। गो३४३। पू३

४
जा५नाई५६न्(३)॥ १ *॥ [२]

४ र ३ ४ २ ४
॥ यज्ञायज्ञीयम्॥ सोमाऽ५ःप। वा३ता२यिजनि

५ १ र र र र २ १ २
ता। मन्तीनाञ्जनितादिवोजनायि। ता३पार्था ३ यि

२ १ १र र र ३ १
व्याः। जना २यिताग्नेर्जनि। तासू२३री। ऊम्मायि।

२ २ १ र र २ -२ १
या३स्या। जानितेन्द्रस्यजनितोता२विष्णाउ॥(१) षो

२ १र र र र र र र र २
ब्रा। ह्मादेवानांपदवीःकवीनामृषिर्विप्राणाम्महायि। षो

१ २ २ १र १ र र र
३मार्मा३णाम्। श्येनो २गृध्राणाए्स्वधिविवीनाना२३ए

२ १ २ २ १ र ३र २
सो। ऊम्मायि। मा३ःपा। वायिचमत्येता २ यिरेभा

---

* ऋ० गा० ८म० २अ० १सा०।

१ २ १र र र र र
भान्प्रा। वीविपद्वाचऊर्मिं न्नसिन्धुर्गिरस्तोमान्यवमा।

२ १ २ र १ १ र र र
नोऽमानाऽयिषाः। अन्ता२:पश्यन्वृजनेमाव। राणा

२ १ २ २ १ र र
२३ग्मा। ङम्मायि। ताऽयिष्ठा। तायिवृषभोगोषू२

३र २ १ १ १
जानाउ। वा३४५(३)॥ १०*॥ [३]

१र २ १ २र १ र
॥ ग्न्यावास्वम्॥ सोमःपवा। तेजनितामता२यि

१ १ र र र १
नाउया२। जनितादिवोजनिताष्टथा२यिव्याउवा२३४।

३ २ ३र २ १ र र २ १ १ २र १
जना३४यिताग्नेः। जनितासूरियास्या२। जानितेन्द्रा।

२ १ ४ ५ ४ ५ १ १र
स्याजनिता२३। तोवा। वा५यिष्णोऽ६ह्वायि॥(१) ब्रह्मा

र १ २र १ र १ १ र र
दवा। नाम्यदवीःकवा२यिनाउवा२। ऋषिर्विप्राणां

र १ ३र २ २ २ १र
महिषोमृगा२णाउवा२३४। श्येनो३४गृध्रा। णाऽस्व

२ १ १ २ १ २ १
धितिर्वनाना२म्। सोमःपवायि। त्रामतिया२३यि।

४ ५ ४ ५ १र २र १ २र १
तोवा। रा५यिभोऽ६ह्वायि॥(२) प्रावीविपात्। वाच

---

* उ० गा० २१प्र० १अ० १०खा०।

र १ १ र र र र
जर्मिनसा२यिन्धाउवा२। गिरस्तोमान्यवमानीमना

१ २ २ ३ २ १ र र २ १
२यिषाउवा२३४। अन्ता३४:पश्यान्। वृजनेमावराजा

१ २ १ २र १ ४ ५ ४
२यि। आतिष्ठतायि। वार्षभोगो२३। पोवा। जाम्

५
नो६ह्वायि (३)॥ १६ * ॥ [४] १९

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य पञ्चमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः† ॥ ६ ॥

अथ ऋचतयात्मके सप्तमे खण्डे‡,

प्रथमऋचेन¶—प्रथमा।

३ १र २ २ २ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निं वोवृधन्तमध्वराणाम्पुरुतमम्।

२ ३ २ २ १ २
अच्छानप्रं सहस्वते॥ १§ ॥

---

० ऋ० मा० २३प्र० १ऋ० १६सा०।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोमीयं साम'—इति वि०।

‡ 'इदानीमुक्थानि'—इति वि०।

¶ 'सौरभं ब्रह्मसाम वसिष्ठस्य प्रियतम मच्छावाकसाम'—इति वि०।

§ ऋ० आ० १, १, ३, १ (भा० १२७ ४०) = ऋ० वे० ७, ७, १०, ३।

"अध्वराणाम्" अहिंस्यानां बलिनां "नमे" बन्धुं "सहस्वते" बलवन्तं [विभक्तिव्यत्ययः (३, १, ८५)] "दधन्त" ज्वालाभिर्वर्द्धमानं "पुरुतमम्" अतिशयेन बहुमग्निं हे ऋत्विजः ! "वः" यूयम् "अच्छ" अभिगच्छत । उपसर्गश्रुतेर्योग्यक्रियाध्याहारः ॥१॥

अथ द्वितीया ।

३ १२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अयंयथानआभुवत्त्वष्टारूपेवतच्या ।

३ २उ ३ १ २
अस्यक्रत्वायशस्वतः ॥ २* ॥

"अयम्" अग्निः "नः" अस्मान् "तच्या" विकर्त्तव्यानि "रूपेव त्वष्टा" रूपाणि वर्द्धकिरिव "यथा" येन प्रकारेण "आ भुवत्" आ भवति प्राप्नोति, तथैनमग्निमभिगच्छतेत्यर्थः । किञ्च वयम् "अस्य" अग्नेः "क्रत्वा" † प्रज्ञानेन युक्ताः "यशस्वतः" यशस्वन्तो ‡ भवामेति शेषः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

३ १ १२ ३ २उ ३ २३ १ २
अयंविश्वाअभिश्रियोग्निर्हवेषुपत्यते ।

२उ ३ १ २
आवाजैरुपनोगमत् ॥ ३¶ ॥ २०

---

० ऋ० वे० ७, ७, १०, ३ ।

† 'क्रत्वा—तृतीयैषा षष्ठी-स्थाने द्रष्टव्या क्रतोः'—इति वि० ।

‡ 'यशस्वतो यशसा सम्पन्नस्य'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ७, ७, १०, ४ ।

मनुष्याणां "विश्वाः" सर्वाः "स्रियः" सम्पदः * "देवेषु" देवानां मध्ये यः "अयम् अग्निः"† "अभिगच्छति, सः अग्निः "नः" अस्मानपि "वाजैः" अन्नैः "उपागमत्" उपागच्छतु॥३॥२०

॥ स्वारसैन्धुक्षितम् ॥ अग्निं वोवृधान्ताम्। आध्वं
२ र १ २ १
राणाम्। पुरुतामौ। हौवाइहायि। आक्का२नाम्२३।
२१ ५ ४ ५ २ र र१२
सद्दो२३४वा। स्वा५तो६हायि॥(१) अयंयथानआभूवात्।
१ र१र र १ २र र २ १ १
त्वाष्टारूपे। वताद्दायौ। हौवाइहायि। आस्वा२क्का
२१ ५ ४ ५ २
त्वा२३। यशो२३४वा। स्वा५तो६हायि॥(२) अयंवि
र १ २ २र र १ २र र २
श्वाअभिश्रायाः। आग्निर्ध्वे। षुपात्यातौ। हौवाइहा
१ १ २१ ५ ४ ५
यि। आवा२जायिरू२३। पनो२३४वा। गा५मो६हा
यि (३)॥ २० ॥ [१]

---

* 'अभिश्रियः—अभिश्रयणमालम्बनं सर्वाण्यालम्बनानि'—इति वि०।

† 'अग्निः देवेषु भवति यदा अरणिभ्यां पत्यते। पत्यत इति छान्दसः प्रयोगो न दोषः'—इति वि०।

‡ ऊ० गा० २प्र० २अ० २०सा०।

॥ सचासाहियम् ॥ अग्रा ३ ४ यिम्। वोवृधन्तम्।

ओ३ वा। अध्वराणाम्पुरुता २माम्। आ २च्छा। गा

२ ३ ग्नि। सहो३ हो। वाहा३४३यि। स्वा२३४तो३ हा

यि ॥(१) अया ३ ४ म्। यथानआभुवत्। ओ३ वा।

त्वष्टारूपेवतक्षा २या। आ २स्या। क्रा २ ३ त्वा। यशो३

ह्हो। वाहा३४३यि। स्वा२३४तो३ हायि ॥(२) अया

३ ४म्। विश्वाअभिश्रियः। ओ३ वा। अग्निर्देवेषुपत्या

२तायि। आ २वा। जा २ ३ यिरू। पनो ३ ह्हो। वा

ह्हा३४३यि। गा२३४मो३ हायि(३) ॥ ११ * ॥ [२] २०

---

* ऊ० गा० ६प्र० २अ० ११सा०।

अथ द्वितीयर्चे—प्रथमा ।

२१ २ २१२१ ३२१२ ३१२
इममिन्द्रसुतंपिबज्येष्ठममर्त्यंमदम् ।

२ १ २ २क २१ १ १ २ १ २ १ २
शुक्रस्यत्वाभ्यक्षरन्धाराऋतस्यसादने ॥ १ * ॥

हे "इन्द्र ।" "सुतम्" अभिषुतम् "इमं" सोमं "पिब" कौह-यम् ? "ज्येष्ठम्" अतिशयेन प्रशस्यं "मदं" मदकरम् "अमर्त्यम्" अमारकम् [सोमपान-जन्यो मदो मदान्तरवत् मारको न भव-तीत्यर्थः] तथा "ऋतस्य" यज्ञस्य सम्बन्धिनि "सादने" गृहे वर्त्त-मानाः "शुक्रस्य" दीप्तस्यास्य सोमस्य "धाराः" "त्वाम्" "अभ्य-क्षरन्" आभिमुख्येन सञ्चलन्ति त्वां प्राप्तुं स्वयमेवा-गच्छन्तीत्यर्थः [ज्येष्ठ—प्रशस्य-शब्दादियसुनि "ज्य च (५,३,६१)"—इतिं ज्यादेशः । अक्षरन्—क्षर सञ्चलने (भ्वा०, प०) छान्दसो लङ् (३ ४, ६) ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

२ २ २३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३१ २
नकिष्टद्रथीतरोहरीयदिन्द्रयच्छसे ।

२ ३१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
नकिष्टानुमज्मनानकिःस्वश्वआनशे ॥ २ † ॥

---

* ऋ० श्या० ४, २, १, २ (१ मा० ७०२ ४०)=ऋ० वे० १, ६, ४, ४ ।

† ऋ० वे० १, ६,६, २ ।

हे "इन्द्र!" "यद्" यस्मात् त्वं "हरी"—एतन्नाम्नावश्वौ* "यच्छसे" रथे योजयसि, तस्मात् "त्वत्" त्वत्तोऽन्यः कश्चित् "रथीतरः" अतिशयेन रथवान् "नकिः" नास्ति [अन्येषामीदृगश्वयुक्तरथाभावात्] "त्वा" त्वाम् "अनु" लक्ष्य "मज्मना" [बलनामैतत् (निघ० २, ९, २२)] बलेन सदृशोऽपि "न किः" नह्यस्ति "सुखः" शोभनाश्वो "न किः आनशे" न प्राप [इन्द्रश्च बलाश्वयोरसाधारणत्वात् इन्द्रसदृशो बलवान् अश्ववान्] लोके कश्चिदपि नास्तीत्यर्थः [न किंश्चित्—"युष्मत्तत्ततङ्ङुभ्वस्तः पादम् (८, ३, ११३)"—इति षत्वम्। रथीतरः—अतिशयेन रथी; तरपि "ईद्रथिनः"—इति ईकारान्तादेशः। यच्छसे—यमेर्व्यत्ययेनात्मनेपदम्। सुखः—बहुव्रीहावाद्युदात्तं दसौत्युत्तर-पदाद्युदात्तञ्च। आनशे—"अश्नोतेश्च (७,४,७२)"—इति अभ्यासादुत्तरस्य नुट्॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १ २ ३ ६ २
इन्द्रायनूनमर्चतोक्थानिचब्रवीतन।

३ १ २ ३ १ २ ७ १ २ ३ १ २
सुताअमत्सुरिन्दवोज्येष्ठमस्यतासहः॥ ३ †॥२१

---

* "हरी इन्द्रस्य"—इति नैघण्टुकम् १,१५,१।

† ऋ० वे०१,६,४,५।

हे ऋत्विजः! "इन्द्राय"* "नूनं" क्षिप्रम्† "अर्चत" पूजनं कुरुत। एतदेव स्पष्टीक्रियते—"उक्थानि" अप्रगीत-मन्त्र-साध्यानि शस्त्राणि स्तोत्राणि च "ब्रवीतन" ब्रूत। "सुताः" अभिषुताः "इन्दवः" सोमाः त्वाम् "अमत्सु" आगत मिन्द्रं मत्तं कुर्वन्तु, अनन्तरं "ज्येष्ठं" प्रशस्यतमं "सहः" सहस्विनं बलव-न्तम् तमिन्द्रं नमस्यत नमस्कुरुत [ब्रवीतन—ब्रवीते र्लोटि "तसनमनघनाश्च (७,१,४५)"—इति तनबादेशः। अमत्सु—मदी हर्षे(भ्वा०,आ०)छान्दसः प्रार्थनायां लुङ्, आगमानुशासनस्या-नित्यत्वादिड़भावः। नमस्यत—"नमोवरिवश्चित्रङः (३,१,१९)" —इति क्यच्। सहः—"युगकारेकाररेफाश्च वक्तव्याः—इति मत्वर्थीयस्य लुक्॥ ३॥ २१

॥ वसिष्ठप्रियम्॥ इममी२३। द्रसुतम्पिब। ज्येष्ठा
म्। अमाऽर्त्तायम्मादा२म्। शुक्रास्यत्वा३। भिया२
ह्वा२३४रान्। धाराओ२३४वा। आर्त्ताओ२३४वा।
स्मसा५दनायि॥१) नकिष्टू२३। वद्रथीतरः। हारी।
यदीऽन्द्रायच्छासा२यि। नकायिष्टूवा३। नुमा२ज्मा२३४

---

* 'इन्द्रायेति चतुर्थी द्वितीयार्थे द्रष्टव्या, इन्द्रम्'—इति वि०।

† 'नूनं निश्चितम्'—इति वि०।

५ १ १ १ ५ १ १ १ ५ ४
ना। नाकाओ२३४वा। सूवाओ२३४वा। स्वश्चायुनश्चा

१ १८ ४८ ५ ४ ५ २ १२
यि ॥(२) इन्द्रायाऽइ। नूनमर्च। तोक्या। निचाइब्रावी१

१ २ १ २ ५ १
ताना२। सुताञ्चमाइ। सुरीऽन्दा२३४वाः। ज्यायि

२ १ ५ १ २ १ ५ ४ ५
ष्ठाओ२३४वा। नामाओ२३४वा। स्यताऽसद्दाः। द्यो

५ई। डा(३) ॥ १ * ॥ [१]

१ २ १ ८
॥ आसिताद्यम् ॥ इमामिन्द्रसुताम्। पिबा। ज्येष्ठम

१ १ १ १
मर्त्तियम्मा२३दाम्। भृक्ता२स्यात्वा२। भियद्धरान्।

१ १ १ ५ ४ ५
धारा२आर्त्ता२। स्यमोवाऽओ२३४वा। दाऽनोऽद्धा

१ २ १ १ ८ २
यि ॥(२) नकिष्ट्वाद्रथायि। तरो। हरीयदिद्रयक्षा२३सा

१ १ १ १
यि। नाका२यिष्टूवा२। नुमज्मना। नाका२यिसूवा

१ २ १ ५ ४ ५ १ ८
२। स्वश्चोवाऽओ२३४वा। नाऽशोऽहायि ॥ इन्द्रा

२ ८ १ ८ ८ १ १
यनूनमा। चता। उक्थानिचब्रवीता२३ना। सूता२

---

* ऊ० गा० २प्र० १अ० १सा०।

आमा२। त्वरिन्दवाः। ज्यायिष्ठा२न्नामा२। स्यतो
वा३ओ२३४वा। मापुहोई३हायि(३) ॥ १७ * ॥ [२]

॥ गौरीवितम् ॥ इमम्। इन्द्रा३। सुतम्पिबा।
ज्येष्ठममर्त्तियम्मदा२३म्। शूक्रस्यत्वा३१२३। भियापुषं.
रान्। धाराकृता३१२३। स्यसोवा। दापुनोईहायि ॥(१)
नाकः। तुवा३त्। रथीतराः। हरीयदिन्द्रयक्कसा
२३यि। नाकिष्टुवा३१२३। नुमापुज्मना। नाकिस्तुवां
३१२३। स्वमोवा। नापुशोईहायि ॥(२) इन्द्रा। यनू३।
नमर्चता। उक्थानिब्रवीतना२३। सूताअमा३१२३।
त्वरीपुदवाः। ज्यायिष्ठन्नमा३१२३। स्यतोवा। सापु
होईहायि(३) ॥ ३ † ॥ [३] २१

---

* ऋ० मा० २२प्र० २अ० १७सा०।

† ऋ० मा० २२प्र० १अ० २सा०।

अथ तृतीयतृचे*—प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

इन्द्रजुषस्व प्रवहायाहि पूर्वरहरिह।

१ २ ३ १ २ ३ १ १ २ ३ ४ १ २

पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारुर्मदाय ॥ १ ॥

यानि मया हवींषि दत्तानि तानि "प्र वह" "आ याहि" आगच्छ "शूर" वीर्यवन्! उपसर्गाक्षराणि—"हरिह" [अथवा हरितवर्णा हया यस्य स हरिहयः, तस्य सम्बोधनं क्रियते—हे हरिह! छान्दसो यकारलोपः]"पिबा"† "सुतस्य" सोमस्य उपसर्गाक्षराणि—"मतिर्नमधोश्चकानः", "चारुः" शोभनः "मदाय" भक्षणाय ॥ १ ॥

---

* 'इदानीं चतुर्थेऽहनि षोडशी भवति। तस्य षोडशिनः महान् विचारः इन्द्रस्य हवस्य समभवता मित्यारभ्य महान् विचारो निदानसूतेत्युक्तः चतुस्त्रिंशदक्षराणि सूता भवन्ति। तमुपसृत्य प्रवहादीनि उपसर्गाक्षराणि निरूप्यन्ते। तथा सति चादिष्वर्थाणां पादानां त्रीणि त्रीणि उपसर्गाक्षराणि पादान्तेषु भवन्ति'—इति वि० रचना—

प्रथमर्चि—"प्रवह","हरिह","मतिर्न"—इति नव,

द्वितीयर्चि—"नश्चय","दिवोन" "सुश्र्न" इति नव,

तृतीयर्चि—"मित्रोन","यतिर्न","भृगुर्न"—इति नव,

किञ्च प्रथमर्चि चतुर्थपदादौ च "मधोश्चकान"—इति सप्त, तस्मित्थं सङ्कलनया चतुस्त्रिंशदुपसर्गाक्षराणि सम्पद्यन्ते। अत्र च "सुश्र्न","मधोश्"—इत्युभयत्र विसर्गस्य द्व्यक्षरत्वेन पदद्वयं सप्तविचारेण सम्पादितम्॥

† "द्व्यचोऽतस्तिङ" (६, ३, १३५)"—इति दीर्घः।

अथ द्वितीया।

१ २ ३ २३२ ३ २१ २१ १ २ ३ २
इन्द्रजठरन्नव्यन्नपृणस्वमधोर्दिवोन।

३ २ ३ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अस्यसुतस्यस्वाऽइऽन्नोपत्वामदास्तुवाचोअस्युः॥ २॥

हे "इन्द्र!" "जठरम्" उदरं "नव्यं न" नवतरं "पृणस्व" पूरयस्व "मधोः" मधुरस्य "दिवो न" "अस्य" सोमस्य "सुतस्य" अभिषुतस्य "स्वर्ण" स्वर्गस्येव "उप त्वा" उप समीपे त्वाम् "मदाः" "सुवाचः" शोभनवाचः "अस्युः" स्थितवन्तः॥ २॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २उ ३ २
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रोनजघानवृत्रंयतिर्न।

३ १ २ ३ २उ २ १ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
विभेदबलम्भृगुर्नसप्ताहेग्नन्मदेसोमस्य॥ ३॥ २२

"इन्द्रः "तुराषाट्" [तुरि सीदति यः सः तुराषाट्] "मित्रो न" मित्र इव "जघान" "वृत्रं" मेघं "यतिर्न"—उपसर्गाश्चराणि "बिभेद" भिन्दस्व "बलं" बलोनाम दानवस्तं बलं "भृगुर्न" त्रीणि त्रीणि पदान्तेषु उपसर्गाश्चराणि भवन्ति "ससाह" सहितवान् "अग्नून्" "मदे" भक्षणे कृते सोमस्य तथाच निविदापदे विहृतस्य षोड़शिनः। अस्य मदे अरित इत्यारभ्य बह्वनि वीर्ययुक्तानि कर्माणि*॥ ३॥ २२

---

* एतन्मूलस्य व्याख्यानं विवरणकृत्कृतानुकृतमेवेति नास्मयोर्विप्रेषः।

॥ गौरीवितम्* ॥ इन्द्र । जुषा३ । स्वप्रवद्दा । आ
याहिम्गुरहरिद्दा२३ । पायिबासुता३१२३ । स्वमतिर्न्ना
५मधोः । चाकानश्चा३१२३ । रुम्मीवा । दा५योहद्दा
यि ॥(१) इन्द्र । जठा३ । रत्नव्यन्ना । पृणस्वमधोर्हि
वीन्ना२३ । आस्यसुता३१२३ । स्वस्वर्न्ना५उपा । त्वाम
दाःसू३१२३ । वाचोवा । आ५स्थोहद्दायि ॥(२) इन्द्रः ।
तुरा३ । पाण्मिनोमा । जघानवृत्रंयतिर्न्ना२३ । बायि
भेदवा३१२३ । लंभृगुर्न्ना५ससा । केशवून्मा३१२३ । दे
वोवा । मा५स्योहद्दायि(३) ॥ २ † ॥ [१] २२

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य पञ्चमस्याध्यायस्य
सप्तमः खण्डः ॥ ७ ॥

---

* "गौरीवीतम्"—इति ख० पु० पाठः ।

† ऋ० गा० ३प्र० १ऋ० २सा० ।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः॥ ५॥

॥ इति तृतीयस्यार्द्धः-प्रपाठकः*॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्गप्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तरग्रन्थे पञ्चमोऽध्यायः॥

---

* 'इति तृतीय-प्रपाठकस्य प्रथमार्द्धः। चतुर्थमन्त्रः परिसमाप्तः'—इति वि०।

यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत् ।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थ-महेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ अथ षष्ठोऽध्याय आरभ्यते* ॥

तत्र,

गोवित्यवस्वेति प्रथमे खण्डे —

प्रथमा ।

२ १ २ २ १ २ २ १
गोवित्यवस्ववसुविद्धिरण्यवि

२ २ १ २ २ १ २ ३ १ २
द्रेतोधाइन्दोभुवनेष्वर्पितः ।

२ २ १ २ १ २उ
त्वꣳसुवीरोअसिसोमविश्वविच्च-

२ २ १ २ २ १ २ २र
न्त्वानरउपगिरेमआसते ॥ १ † ॥

हे "इन्दो" सोम ! त्वं "पवस्व" क्षरꣳ । कीदृशस्त्वं ?
"गोवित्" गवां लम्भकः, "वसुवित्" § धनस्य लम्भकः, "हिरण्य-

---

* 'इदानीं षष्ठमनवद्यमारभ्यते'—इति वि० ।

† ऋ० वे० ७, २, १९, ४ ।

‡ 'पवस्व पूयस्व'—इति वि० ।
'गोवित्—गावो यस्य विद्यन्ते स गोवित्'—इति वि० ।

§ 'वसुवित्—वसु धनं तेन लब्धा'—इति वि० ।

वित्"*हिरण्यस्य लम्भकः, "रेतोधाः" रेतश्चन्द्रकं तस्य धातोः-षधीनां यद्वा रेतः प्रजनन-सामर्थ्यं तस्य धारयिता "भुवनेषु" उदकेषु "अर्पितः"; भो सोम! कीदृशस्त्वं? "सुवीरोऽसि"† शोभनवीर्योऽसि भवसीति, "विश्ववित्" सर्वस्य वेत्तासि। यस्मादेवं तस्मात् तादृशं "त्वा" त्वाम् "इमे" "नरः"‡ नेतारः "गिरा" स्तुत्या "उपासते"¶॥

"नरः"-विप्राः"—"इति पाठो॥ १॥

अथ द्वितीया।

२ २ १ २ ३ १ २
त्वन्नृचक्षाअसिसोमविश्वतः

१ २ ३ १८ १८
पवमानवृषभताविधावसि।

१ २ ३ १ १ २ १ २ ३ १
मनःपवस्ववसुमद्धिरण्यवद्वयꣳ

२ २ १ १ १ २ १ २
स्यामभुवनेषुजीवसे॥ २ §॥

---

* 'हिरण्यवित्--हिरण्यविशिष्टं वसु'—इति वि०।

† 'सुवीरः—शोभनवीरः'—इति वि०।

‡ 'नरः—ऋत्विजः'—इति वि०।

¶ 'उपासते—उप समीपे स्थित्वा आसते, सभीपे उपविश्य गिरा स्तुतिसाधनया वाचा इमे आसते स्तुतिं कुर्वाणाः'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ७, ९, १९, ४,।

भो "सोम!" त्वं "विश्वतः" सर्वतः सर्वेषु "भुवनेषु"* "वृषद्वा† असि" नृणां द्रष्टा भवसि। हे "पवमान" पुनान सोम! "वृषभ" अपां वर्षक! "वाः" अपः "वि धावसि" विविधं गच्छसि, स त्वं "नः"‡ अस्माकं "पवस्व" क्षर क्षिप्र "वसुमत्" बहुभिर्वसुभिर्वासकैर्गवादि-द्रव्यैर्युक्तं, तथा "हिरण्यवत्" बहुभिः हिरण्यैर्युक्तं धनं। वयञ्च वसुभिर्हिरण्यैश्च युक्ताः "भुवनेषु" लोकेषु "जीवसे" जीवितुं प्रभवः "स्याम" भवेम॥ २॥

अथ तृतीया।

३ २ १ २ ३ १ २
ईशानइमाभुवनानिईयस

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
युजानइन्दोहरितःसुपर्ण्यः॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३
तास्तेक्षरन्तुमधुमद्घृतम्पय

१ २ ३ १ २ ३ १ २
स्तवव्रतेसोमतिष्ठन्तुकृष्टयः॥ ३॥ १॥

हे "इन्दो" सोम! "ईशानः" सर्वस्य स्वामी त्वम् "इमा" इमानि "भुवनानि"§ भूतजातानि "ईयसे" गच्छसि [ईङ्

* 'भुवनेषु—भुवनानि चतुर्थ्य'—इति वि०।

† 'वृषद्वाः—नृणां चक्षुभूतः'—इति वि०।

‡ 'नः—अस्मभ्यम्'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० ७, २, १९, २।

§ 'भुवनानि—चतुर्थ्य—इति वि०।

गतौ (दि० आ०), "दिवादिभ्यः श्यन् (३,१,६९)"—इति श्यन्]। किङ्कुर्वन्? "हरितः" हरितवर्णाः "सुपर्णैः" सुपतनात्मिका रथे "युजानः" योजयन्, "ताः" सुपर्णैः "ते" तव सम्बन्धिन्यः "मधुमत्" माधुर्योपेतं "घृतं" दीप्तं "पयः" उदकं "क्षरन्तु"। हे सोम! तव "व्रते" कर्मणि तिष्ठन्तु "क्षुष्टयः"* मनुष्याः सर्वे॥

"ईयसे"-"वीयसे"—इति पाठौ॥ ३ ॥ १.

॥ द्विरभ्यस्तं सौम्योत्तरम ॥

४र ३ ४ १ ४ र०
गोवित्यवस्ववसुविद्धिर।

२ २ २ १ १ १ १ ३र २ ४र ३
एयवायित्। एयवा२३४५यित्। रेतो३१२३४। धाइन्दो

र १ २ १ २ ३ २ २ र र
भुवनेष्ठ। पिताःपिताः। तुवा३१२३४म्। सुवीरोऽसि

र १ २ १ २ १ २ २ र
सोमवि। श्ववायिच्छूवायित्। तन्त्वा३१२३४। नरउँप

र ३ २ ४ १ ४ १ ५र २ ४र
गिरे। मआइसा५ता६५६यि॥(१) त्वन्नश्चित्राअसिसो

५ २ २ २ १ १ १ १ ३ २ २र
मवि। श्वताः। श्वता२३४५ः। पवा३१२३४। मानवृष

र र १ २ १ २ २ १ र
भताविधा। वसायिवसायि। सना३१२३४ः। पवस्व

१ २ १ २ २ १ २र र
सुमद्विर। एयवाएयवात्। वया३१२३४म्। स्यामभुवने।

२ २ ४ ४र र ३ ४ ३र ४ ५र र
षुजा३यिवा५सा६५६यि॥(२) ईशानइमाभुवनानिई।

---

* 'क्षुष्टयः—कवयः पण्डिताः मेधाविनः'—इति वि०।

२ १ २ १ १ १ १ २ १ २ २ २ २
यस्तायि। यस्ता२३४५यि। युजा३१२३४। नदन्दोधरितः

१ २ १ २ ३२ १ २
सुप। णियाणियाः। तास्ता२१२३४यि। क्षरन्तु धु

१ २ १ २ २ २ २ २
मन्तम्। पयाःपयाः। तवा३१२३४। व्रतेसोमतिष्ठ।

३ २ ४
तुकाइष्टीमूयाइमूइः(३) ॥ ७ * ॥ [१]

२२ १ २ १ १ १ २
॥ श्येनम्॥ गोवित्पवस्ववसुवायित्। हा२३यिरा।

१ २२ १ २२ ३ १ २ १ २
ण्याविद्रेतो३आउवा२३। धाइया। दोभुवनेषुवार्पायि

२ १ ३ २ १ २ १ २२ १
ताः। त्वꣳसौ३हो। वायिरोअसा३१उवा२३। सोम

२ १ २ १ ३ २ १ २ १
आ। विश्ववित्तन्त्वाना१रा२ः। उयौ३हो। गायिरेम

२ २ १ १ १ २ १
आ३१उवा२३। ए३। सनआ३२ ॥(१) त्वन्नृचक्षाअसि

१ २ १ २ १२ १ २
सो। मा२३वायि। स्वातःपवा३१उवा२३। मानआ।

१२ ३ २ १ ३ २ १ २
वृषभताविधावासायि। सनौ३हो। पावस्ववा३१उवा

२ २ २ १ २ १ ३ २
२३। सुमदा। हिरण्यवद्वयाꣳस्या१मा२। भवौ३हो।

---

* ज० मा० ८प्र० १अ० ७खा०।

१ १ २ १ १ १ २ १ १ १ १
नायिषुजा३१उवा२३। ए३। वसआ३२ ॥(२) इंग्रानइमा

२ १ १ १ २ १ २ १ २
भुवना। ना२३ई। यासेयुजा३१उवा२३। नाइया।

१ १ १ १ ऽ ऽ १ २
दोहरितःसुपार्णायाः। तास्तौ३हो। ह्वारन्तुमा३१उवा

२ १ १ १ २ १ ऽ २
२३। धूमदा। घृतम्ययस्तवाब्रा१ता२यि। सोमौ३ह्वौ।

१ १ १ २ १ १
तायिष्ठन्तुक्षा३१उवा२३। ए३। ष्टयआ३२(३)॥१८*॥ [२]१

अथ द्वितीयर्चे—

प्रथमा।

१ १ २ १ २ १ १
पवमानस्यविश्ववित्प्रतेसर्गाअसृक्षत।

१ १ २ १ १ १ १
सूर्यस्येवनरश्मयः॥ १ †॥

हे "विश्ववित्" विश्वस्य द्रष्टः सोम! "पवमानस्य" क्षरतः "ते" तव "सर्गाः"‡ सृज्यमाना धाराः "सूर्यस्येव रश्मयः" सूर्यस्य किरणा इव प्रकाश्यमानाः "न"—इति सम्प्रत्यर्थे। इदानीं "प्रासृक्षत" प्रासृज्यन्त॥ १॥

---

* ऋ० मा० २३प्र० १अ० १८खा०।

† ऋ० वे० ७, १, २७, २।

‡ 'सर्गाः—सृष्टयः उदकसङ्घाताः'—इति वि०।

अथ द्वितीया।

२ १ २ २ २१ॐ २ १ २ २१ २
केतुङ्कृण्वन्दिवस्परिविश्वारूपाभ्यर्षसि।

२ १ २
समुद्रःसोमपिन्वसे ॥ २ * ॥

हे "सोम!" "समुद्रः" † समुद् द्रवन्ति यस्माद्रसाः स समुद्रः स त्वं "केतुं" ‡ प्रज्ञानं "कृण्वन्" कुर्वन् अस्माकं "विश्वा रूपा" विश्वानि रूपाणि "दिवः" ¶ अन्तरिक्षात् "अभ्यर्षसि" § अभि पवसे "पिन्वसे" नानाविधानि च धनानि अस्मभ्यं प्रयच्छसि ॥२॥

अथ तृतीया।

२ १२ २२ २१२ ३ १ २
जज्ञानोवाचमिष्यसिपवमानविधर्मणि।

१ २ ३ १२ २२
क्रन्दन्देवोनसूर्यः ॥ ३ ॥ २

हे "पवमान" सोम! "देवः न सूर्यः" द्योतमानः सूर्यइव "जज्ञानः" प्रादुर्भूतस्त्वं "विधर्मणि" विधारके** दशापवित्रे "क्रन्दन्" ध्वनन् "वाचम्" शब्दम् "इषसि" प्रेरयसि ॥

---

* ऋ० वे० ७, १, २७, २।

† 'समुद्रः—समुद्रभूतस्त्वम्'—इति वि०।

‡ 'केतुर्ध्वजः नम्'—इति वि०।

¶ 'दिवस्परि—द्युलोकस्योपरि—इति वि०।

§ 'अभ्यर्षसि—आभिमुख्येन रक्षसि'—इति वि०।

‖ ऋ० वे० ७, १, २७, ४।

** 'विधर्मणि—विविधे कर्मणि'—इति वि०।

"जग्मानः"-"हिन्वानः" —इति पाठौ, "क्रन्दन्" "अक्रान्" —इति च ॥ २ ॥ २

प्रसोमासइति सप्तर्चं तृतीयं सूक्तम् ;

तत्र, प्रथमा ।

१२ २२ २ १ १ २ १ १

प्रसोमासोअधन्विषुःपवमानासइन्दवः ।

१ २ ३ १ २

श्रीणानाअप्सुवृञ्जते ॥ १ * ॥

"पवमानासः" पूयमानाः "इन्दवः" दीप्ताः "सोमासः" सोमाः "प्राधन्विषुः" [धन्वति गतिकर्मा (निघ० २,१४,१४)†] प्रगच्छन्ति किञ्च "श्रीणानाः"† गोभिः श्रयमाणाः "अप्सु" वसतीवरीषु‡ "वृजन्ते" गच्छन्ति [व्रज व्रजी गतौ (भ्वा०,प०)] सम्पृच्छा भवन्तीत्यर्थः ॥

"वृजन्ते"-"मृजन्त"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १२ २२ २ १ ३ १ ३ १ २ ३ २

अभिगावोअधन्विषुरापोनप्रवतायतीः ।

३ १२ २२

पुनानाइन्द्रमाशत ॥ २ ¶ ॥

---

* ऋ० वे० ९, ८, १४, १ ।

† 'श्रीणानाः—श्रीणनं मिश्रणं, मिश्रायमाणाः'—इति वि० ।

‡ 'अप्सु—सप्तम्या वञ्चवचनमिदं तृतीया-वञ्चवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, अद्भिः—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ९, ८, १४, २ ।

"गावः" गमनशीलाः* "इन्दवः" सोमाः "अभि अध्वन्विषुः" दशापवित्रमभिगच्छन्ति। किमिव ? "प्रवता" प्रवणवता देशेन "यतीः" गच्छन्त्यः "आपः नः" आपइव †, पश्चात् "पुनाना" "इन्द्र" प्रणीयितुम् आयत व्याप्नुवन् ॥२॥

अथ तृतीया।

१ २ ३ १र २र ३ १ १
प्रपवमानधन्वसिसोमेन्द्रायमादनः।

१ २ ३ १र २र
नृभिर्यतोविनीयसे ॥ ३ ॥

हे "पवमान" सोम! "उन्द्राय" इन्द्रस्य "मादनः" मादयिता त्वं "प्रधन्वसि" प्रगच्छसि पवित्रम्। तदेवाह—"नृभिः" नेतृभिः ऋत्विग्भिः "यतः" गृहीतः‖ "विनीयसे"§ हविर्द्धानात्‖ ॥

"मादनः--"पातवे"—इति पाठौ ॥३॥

* 'गावः—आदित्यरश्मयः उदकानि सोमरसा गावश्च'—इति वि०।

† 'आपोन—न-शब्द उपमार्थीयः आपइव "प्रवता यतीः" यथा प्रवणेन आपो गच्छन्ति तद्वत् सोमेन अभिषूयमाणेन गावो धन-धान्य-देवताश्च प्रवणा भवन्ति, अतएवं पुनाना इन्द्रमायत'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ६, ८, १४, २।

¶ 'यतः—नियतः संयत इति यावत्, अथवा यमु बन्धने ऋत्विग्भिर्बद्धः सोमवद्धेन'—इति वि०।

§ 'विनीयसे—विविधं नीयसे'—इति वि०।

‖ 'अथवा पवमान प्रधन्वसि पावं प्रतीन्द्रपानाय तदर्थं हविर्धानात् विनीयसे' —इति ऋग्वेदेऽधिका व्याख्या।

अथ चतुर्थी।

२ २ १८ २८ २ २ २ १ २ १ २
इन्दोयदद्रिभिःसुतःपवित्रम्परिदीयसे।

२ २ १ २ २ १ २
अरमिन्द्रस्यधाम्ने ॥ ४ * ॥

हे "इन्दो" त्वं "यद्" यदा "अद्रिभिः" ग्रावभिः "सुतः" अभिषुतः "पवित्रं" दशापवित्रं† "परिदीयसे" परिगच्छसीत्यर्थः। तदा "इन्द्रस्य" "धाम्ने" स्थानाय धारकायोदराय वा "अरं" पर्याप्तोऽभि ॥

"परिदीयसे"--"परिधावसि"—इति पाठो ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमी।

१ २ ७१ २ ३ १२ ३ १ २
त्वꣳसोमनृमादनःपवस्वचर्षणीधृतिः।

२ २ १ २ ३ १ २
सस्निर्योअनुमाद्यः ॥ ५ ‡ ॥

* हे "सोम!" "नृमादनः नृणां मादयिता "चर्षणीधृतिः" चर्षणीभिः ऋत्विग्भिः प्रजाभिः धृतस्त्वं "पवस्व"। "यः" त्वं "सस्निः" शुद्धः "अनुमाद्यः" स्तुत्यः¶ स पवस्वेति समन्वयः ॥

"चर्षणीधृतिः"-"चर्षणीसहे"—इति पाठो ॥ ५ ॥

---

* ऋ० वे० ९, ८, १४, ४।

† 'पवित्रं परिदीयसे—द्वितीयैकवचनमिदं षष्ठ्येकवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम् पवित्रस्योपरि दीयसे'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ९, ८, १४, ५।

¶ 'अनुमाद्यः—यस्य पश्चात् देवता माद्यन्ति स अनुमाद्यः'—इति वि०।

अथ षष्ठी।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्वशूचहन्तमउक्थेभिरनुमाद्यः।

१ २ ३ १ २ ३ २
शुचिःपावकोअद्भुतः॥ ६* ॥

हे सोम! "हच्चहन्तमः" शत्रूणामतिशयेन हन्ता त्वं "पवस्व" क्षर। कीदृशस्त्वम्? "उक्थेभिः" शस्त्रैः "अनुमाद्यः" स्तुत्यः "शुचिः" शुद्धः† "पावकः" अन्यस्य शोधकः‡ "अद्भुतः" महान्¶, एवं महानुभावः पवस्व॥

"हच्चहन्तमः"--"हच्चहन्तम"—इति पाठौ॥ ६॥

अथ सप्तमी।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
शुचिःपावकउच्यतेसोमःसुतःसमधुमान्।

३ १ २ ३ २
देवावीरघशꣳसहा॥ ७ §॥ ३

"सुतः" अभिषुतः"मधुमान्"माधुर्योपेतः "सः"सोमः "शुचिः" स्वयं शुद्धः "पावकः" शोधकश्च उच्यते तथा "देवावीः" देवाना-

---

* ऋ० वे० ६, ८, १४, ६।

† 'शुचिः—दीप्तः'—इति वि०।

‡ 'पावकः—पावन स्वभावः'—इति वि०।

¶ 'अद्भुतः—अपूर्वः नान्यो द्वितीयः'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ६ ८, १४, ७।

मविता तर्पयिता* "अघसंसहा" अघं पापं शंसतीत्यघशंसा असुरास्तेषां हन्तेति चोच्यते ॥

"सुतःसमधुमान्"-"सुतस्यमध्वः"—इति पाठौ ॥ ७ ॥ ३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य

प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय-खण्डे—

प्रकविरिति सप्तर्चं प्रथमं सूक्तम्;

तत्र, प्रथमा ।

२ २ २ १ २ १ २ ३ १ २

प्रकविर्देववीतयेव्यावारेभिरव्यत ।

३ १ २र ३ १र २र

साङ्कान्विश्वाअभिस्पृधः ॥ १ † ॥

*"कविः" मेधावी सोमः "देववीतये" देवानां पानाय "अव्या वारेभिः" अविसम्बन्धिभिः वालैः दशापवित्रेण "अव्यत" अव्यते प्राप्यते, "साङ्कान्" शत्रूणां साढाङ्ग सोमः "विश्वाः स्पृधः" सर्वान् सङ्ग्रामान् हिंसकान् वा अभिभवतीति शेषः ॥

"अव्यावारेभिरव्यत"-"अव्योवारेभिरर्षति"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'देववीतेः—देवानां भक्षयितुः'—इति वि० ।

† ऋ० वं० ६, ८, १०, २।

‡ 'साङ्कान्—साधन-स्वभावः'—इति वि० ।

अथ द्वितीया।

१२ १२ २ १ ३ २उ २ १ २ १ १
सच्चिष्वाजरितृभ्यआवाजङ्गोमन्तमिन्वति।

१ २ ३ १ २
पवमानःसच्चस्रिणम्॥ २ *॥

"स हि षां" स खलु "पवमानः" सोमः "जरितृभ्यः" स्तोतृभ्यः "गोमन्तं" "बहुभिर्गोभिर्युक्तं "सहस्रिणं" सहस्र-सङ्ख्याकं† "वाजम्" अन्नम् "आ" आभिमुख्येन "इन्वति" व्याप्नोति प्रयच्छतीत्यर्थः॥ २॥

अथ तृतीया।

२१ १ २ ३ १ २ ३ २ १ १ २ १ १
परिविश्वानिचेतसामृज्यसेपवसेमती।

१ २ ३ १ २
सनःसोमःअवोविदः॥ २ ‡॥

हे "सोम!" त्वं "चेतसा" स्वीयेनास्मदनुकूलेन चित्तेन "विश्वानि" सर्वाणि धनानि "मती" मत्या अस्मत्स्तुत्या "मृज्यसे" दशापवित्रेण शोध्यसे। ततः "पवसे" रसं क्षरसि।

---

* ऋ० वे० ९, ८, १०, २।

† 'सच्चिणं—सहस्र-पोषण-समर्थम्'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ९, ८, १०, ३।

एवम्भूतः "सः" त्वं "नः" अस्मभ्यं "अवः" अन्नं* "विदः"† देहीति शेषः॥

"मृज्यसे"-मृग्यसे"—इति पाठौ॥ ३॥

अथ चतुर्थी।

३क २८ ३११ २८ २ १ १ ३ १ ३ २

अभ्यर्ष बृहद्यशोमघवञ्छ्रोध्रु वश्रयिम्।

१२ ३ २३ १ २

इषꣳस्तोतभ्यआभर॥ ४ ‡॥

हे"सोम!" त्वं "बृहद् यशः"महतीं कीर्त्तिम् "अभ्यर्ष" अभिगमय, "मघवन्नः" हविष्मन्नः¶ अस्मभ्यं "ध्रुवं"§ रयिं "धनं" च अभ्यर्ष। किञ्च "इषम्" अन्नं‖ "स्तोतभ्यः" अस्मभ्यम्** "आभर"आहर॥ ४॥

अथ पञ्चमी।

१ ३र ७१र २र२१ १

त्वꣳराजेवसुव्रतोगिरःसोमाविवेशिथ।

३ १ २

पुनानोवक्षिअद्भुत॥ ५ ††॥

---

* 'अवः—अन्नं यशो वा'—इति वि०।

† 'विदः—विद ज्ञाने, विद्लृलाभे, विद सत्तायाम्। अन्नलाभकरः'-इति वि०।

‡ ऋ० वे० ९, ८, १०, ४।

¶ 'मघवन्नो यजमानेभ्यः—इति वि०।

§ 'ध्रुवं स्थिरं'—इति वि०।

‖ 'इषम् अन्नं इष्टिं वा'—इति वि०।

** 'स्तोतभ्यः यज्ञभ्यः'—इति वि०। †† ऋ० वे० ९, ८, १०, ५।

हे "वक्षे" यज्ञादेर्वोढः! "अद्रुत!"* "सोम!" "सुव्रतः" सुकर्मा "पुनानः" त्वं "राजा इव" "गिरः" अस्मदीयाः "स्तुतीः "आविवेशिथ" आविशसि ॥ ५ ॥

अथ षष्ठी।

१र २र १ २ ३१२ ३ १ २ ३ १ २
सर्वन्हरण्यदुष्टरोमृज्यमानोगभस्त्योः।

१ २ ३१२
सोमश्चमूषुसीदति ॥ ६ † ॥

"सः" सोमः "वक्षिः" यज्ञादेर्वोढा "अप्सु" अन्तरिक्षे वर्त्तमानः "दुष्टरः" दुःखेन अन्यैस्तरणीयः "मृज्यमानः" शोध्यमानः "गभस्त्योः" हस्तयोः‡ एवम्भूतः सन् "चमूषु" पात्रेषु "सीदति"¶ ॥ ६ ॥

अथ सप्तमी।

३ २ ३१र २र ३ २ १ २
क्रीडुर्मखोनमꣳहयुःपवित्रꣳसोमगच्छसि।

१ २ १ २ ३ १ २
दधत्स्तोत्रेसुवीर्यम्॥ ७ §॥ ४

---

* 'अद्रुतचमूनपूर्व'—इति वि०।

† ऋ० वे० ९, ८, १०, ६।

‡ 'गभस्त्योः—बाहुभ्योः'—इति वि०।

¶ 'चमूषु सीदति—भक्षणीयेषु तिष्ठति'—इति वि०।

§ ऋ० वे० ९, ८, १०, ७।

हे "सोम!" "क्रीङ् क्रीड़न-शीलत्वं "मंहयुः"* [मंहति-दानकर्मा (निघ०३,२०,१०) दानेच्छुः "मखो न" दानमिव "पवित्र" "गच्छसि"। किं कुर्वन्? "स्तोत्रे" स्तुतिकर्त्रे "सुवीर्यं" शोभन-वीर्यं "दधत्" प्रयच्छन् ॥ ७॥ ४

अथ यवंयवमिति चतुर्ऋचं द्वितीयं सूक्तं;

तत्र, प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

यवंयवन्नोऽन्धसापुष्टम्पुष्टम्परिस्रव।

१ २ ३ १ २

विश्वाचसोमसौभगा ॥ १† ॥

हे "सोम"। त्व "नः" अस्मभ्यम् "पुष्टंपुष्टम्"‡ अत्यन्तं बहुलं "यवंयवं"¶ पुनःपुनर्युतं रसम् "अन्धसा" अन्नरूपया धारया "परिस्रव" क्षर [तच्च प्रार्थयितुस्तृष्णयात्यन्तं पीड़ितत्वात् "आबाधे च (८,१,१०)"—इति द्विर्भावः। आबाधनमाबाधः पीड़ा प्रयोक्तृधर्मो नाभिधेयधर्म इत्युक्तम्]। अपिच "विश्वा" विश्वानि "सौभगा"§ सौभगानि धनानि परिस्रव अस्मभ्यं प्रयच्छेत्यर्थः ॥ १ ॥

---

* 'मंहयु—पूजेयुः अथवा मंहयुः पूजाकारः—इति वि०।

† ऋ० वे० ७ १, १२, १।

‡ 'परिस्रवसामान्या पुष्टिः धनधान्यादिना वर्धिष्णुः पुष्टिर्यज्ञनिष्पादिका'—इति वि०।

¶ 'यव—अभ्यासे भूयानर्थः प्रतीयते। यवं धान्यविशेषं वरपुरोडाशेभ्यो हेतुभूतम्'—इति वि०

§ "सुपांसुलुक् (७, १, ३९)"—इत्यादिरूपम्।

अथ द्वितीया।

१ १ १ १

अथ चतुर्थी ।

२ २ २ २।२ २।२।२ २ २।२ २

योजिनातिवजीयतेहन्तिशत्रूमभीत्य ।

१ १

सपवस्वसहस्रजित् ॥ ४ * ॥ ५

हे "सहस्रजित्" असङ्ख्यात-शत्रूणां जेतः ! † सोम ! "यः" भवान् "जिनाति" शत्रून् जयति स्वयं शत्रुभिः "न जीयते"। प्रकाशान्तरेण तदेवाह—"शत्रुमभीत्य" स्वयमेव शत्रुमागत्य "हन्ति" किन्तु तेन न हन्यते इति शेषः। एवम्भूतः स त्वं धारया आ पवस्व ॥ ४ ॥ ५

अथ ऋचात्मके तृतीयसूक्ते—

प्रथमा ।

२ २ १ २ २।२ २ २ २।२

यास्तेधारामधुश्चुतोऽसृग्रमिन्दऊतये ।

१ २ २ २।२।२

ताभिःपवित्रमासदः ॥ १ ‡ ॥

भो "इन्दो" सोम ! "ते" तव "मधुश्चुतः" मधुर-रसस्य स्रोतः यिनः "याः" "धाराः" "ऊतये" रक्षणाय "असृग्र" सृज्यन्ते "ताभिः" धाराभिः त्वं "पवित्रम्" ¶ "आसदः" आसीद ॥ १ ॥

---

* ऋ० वे० ७, १, १२, ४ ।

† 'स पवस्व सहस्रजित् सहस्राणां जेता'—इति वि० ।

‡ ऋ० वे० ७, १, २५, २ ।

¶ 'पवित्र'—इत्यादिपवित्रम्'—इति वि० ।

अथ द्वितीया।

२ २१२ २१२३१२ २२ २ १ २
सोअर्षेन्द्रायपीतयेतिरोवाराण्यव्यया।

१२३२ ३२ ३२
सीदन्नृतस्ययोनिमा ॥ २ * ॥

हे सोम। "सः" अभिषुतः त्वम् "अव्यया" अविमयानि "वाराणि" वालानि "तिरः" तिरस्कुर्वन् "ऋतस्य" यज्ञस्य "योनिं" कारणभूतं दशापवित्रम् "आसीदन्" आभिमुख्येन उपविशन् "इन्द्राय" इन्दस्य "पीतये" पानाय "अर्षं" क्षर ॥

"ऋतस्ययोनिमासीदन्"--"योमावनेषु"—इति पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ २१२ ३१ २ ३ १ २
त्वꣳसोमपरिस्रवस्वादिष्टोअङ्गिरोभ्यः।

३ २१ १२ २२
वरिवोवित्तनम्पयः ॥ ३ † ॥ ६

हे "सोम!" "स्वादिष्टः" स्वादुतमः "वरिवोवित्"‡ अस्मदभिलषितस्य धनस्य लम्भकश्च त्वम् "अङ्गिरोभ्यः" अङ्गिरसा-

---

* ऋ० वे० ७, १, २५, २।

† ऋ० व० ७, १, २५, ४।

‡ 'वरिवोवित्—वरिव०=वरिष्ठः, वित्=भव०'—इति वि०।

मर्थाय* "घृतं"दीप्तं† "पयः" क्षीरवत् सारभूतं रसं "परिस्रव" परिक्षर ॥

"त्व सोम"-"त्वमिन्दो" —इति पाठौ ॥ ३ ॥ ६ ॥

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः‡ ॥ २ ॥

अथ तृतीय-खण्डे¶—

प्रथम-ऋचे, प्रथमा ।

१२ १ २ ३क १८ २ २ १
तवश्रियोवर्ष्यस्येवविद्युतो

१८ २ २ १ २ २ १ २
अग्नेश्चिकित्रउषसामिवेतयः ।

१८ २८ २ १ १ २ १ १ २
यदोषधीरभिसृष्टोवनानिच

१ १ २ १ २ ३ १८ २८ ३ १ २
परिस्वयञ्चिनुषेअन्नमास्यनि ॥ १ §॥

"अग्नेः" अङ्गनादि-गुण-युक्तस्य "तव" "श्रियः" रश्मि-लक्षणा विभूतयः"चिकित्रे"प्रज्ञायन्ते । तत्र दृष्टान्तः—"वर्ष्यस्येव॥

* 'अङ्गिरोभ्यः—अङ्गिरो नाम देवास्तेभ्योऽर्थे'—इति वि० ।

† "घृतमाज्यम्"—इति सर्वं द्वीयव्याख्या ।

‡ 'उक्थं वक्ष्यमाणं । त्रिणवं सौमिकञ्च तत् । पञ्चमस्यः'—इति वि० ।

¶ 'दर्शपौर्णमास्यानि; आग्नेयस्थमसाज्यम्'—इति वि० ।

§ ऋ० वे० ८, ४, २०, ५ ।

मूले तु "वर्ष्यस्येव „ —इति स-वकारः श्रूयते ।

विद्युतः" यथा वर्षितुर्मेघस्य सम्बन्धिन्यो विद्युतः, "उषसामिवेतयः" यथा चोषसाम् 'एतयः' गमनशीलाः व्याप्ताः प्रकाशाः प्रज्ञायन्ते, तद्वदित्यर्थः। कदेत्यत्राह—"यद्" "यदा" त्वम् "ओषधीः" व्रीहियवाद्याः "वनानि" अरण्यानि च अभिलक्ष्टो लष्टः द्रष्टुं विलष्टः सन् "स्वयम्" आत्मना "आसन्" आस्ये मुखे "अन्नम्" अदनीयं स्थावर-लक्षणं "परि चिनुषे" परिक्षिपसीत्यर्थः॥

"विद्युतोग्नेः"-"विद्युतश्चित्रा"—इति, "उषसामकेतवः"-"उषसामिवेतयः"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ २ १उ २ १ २
वातोपजूतइषितोवशाꣳअनु
२ १उ २ १ २ ३ १ २
त्वष्टुयद्वन्नावेविषदितिष्ठसे।
१ २ २ २ २१ २१
आतेयतन्तेरथ्योऽइऽयथापृथक्
१ २ २ १ १ १ २
सर्वाꣳस्त्वग्नेअजरस्यधक्षतः॥ २*॥

हे "अग्ने!" त्वं "यद्" यदा "वातोपजूतः" वायुना कम्पितः† "वशान्" कान्तान् वनस्पतीन् "अनु" प्रति "त्वष्टु" क्षिप्रम्

---

* ऋ० वे० ८, ४, २१, २।

† 'वातोपजूतः—वायुप्रेरितः'—इति वि०।

"इषितः" प्रेषितश्च* सन् "यज्ञा" यज्ञानि यष्टव्यानि यजनसाधनानि द्रव्याणि "वेविषत्" व्याप्नुवन् "विदिष्ठवे" इतस्ततो गच्छति; तदानीम् "अजरस्य" जरा-रहितस्य "धक्षतः" दहतः "ते" तव "अर्धांसि"† तेजांसि "यथा" "रथः" रथिनः तद्वत् "आ पृथक्" पृथगायन्त गच्छन्ति ॥

"अजरस्य"-"अजराणि"—इति पाठो ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

३ २-३१२ ३१२
मेधाकारंविदथस्यप्रसाधन

३१८ २८ . ३१२ ३२
मग्निꣳहोतारम्परिभूतरम्मतिम्।

१८ २८ ३१२ ३२७
त्वामर्भस्यहविषःसमानमित्त्वां

३१२ ३१
महोवृणतेमान्यन्त्वत्॥ २‡ ॥ ७

"मेधाकारं" प्रज्ञायाः कर्त्तारं "विदथस्य" यज्ञस्य "प्रसाधनम्" प्रकर्षेण साधकं "होतारं" देवानामाह्वातारं "परिभूतरम्" अतिशयेन सर्वेषा मभिभवितारं "मति" मन्तारं "त्वां" "त्वाम्" "अग्निम्" वयमृत्विजः वृणीमहे—इति शेषः।

हे अग्ने! "त्वामित्" त्वामेव "अर्भस्य" अल्पस्यास्य "हविषः"

---

* 'इषितः—इषु इच्छायाम्, इच्छासंयुक्तः'—इति वि०।

† 'अर्धांसि—बलानि'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ८, ४, २१, २।

पुरोडाशादिकस्य भक्षणार्थमिति शेषः। "समानमित्" सदैव ऋत्विजः "हवते" प्रार्थयन्ते "महः" महतः सोमात्मकस्य हविषः भक्षणार्थं त्वामेव हवते "त्वत्" त्वत्तः "अन्यम्" अतिरिक्तं देवं "न" हवते ॥

"परिभूतरं"-"परिभूतमम्"—इति छन्दोगब्राह्मणानां पाठौ, "त्वामर्भस्य हविषः"-"तमिदर्भं हविषि"—इति, "इत्त्वाऽमहो"-"तमिन्महो"—इति च ॥ ३ ॥ ७

अथ द्वितीय-ऋचे—प्रथमा।

३ १ २ ३ १२ १२ ३ १ १
पुरुरुणाचिध्यस्यवोनूनंवांवरुण।

२ ३१ २ ३ २
मित्रवꣳसिवाꣳसुमतिम्॥ १ *॥

हे मित्रावरुणौ! "वां" युवयोः "पुरुरुणा" [प्रथमार्थे तृतीया (३,१,८५)† पुरोरपि बहु उरु बहुतरम् अथवा पुरु च तदुरु च पुरुरु] अत्यन्तं बहुतरमित्यर्थः, तादृक् "अवः" रक्षणं "नूनं" निश्चयेन "अस्ति हि" [हि प्रसिद्धौ; चिदिति पूरणः] हे "वरुण!" हे "मित्र!" "वां" युवयोः "सुमतिम्" अनुग्रहबुद्धिम् "वंसि"‡ सम्भजेयम्॥ १॥

---

* ऋ० वे० ४, ४, ८, १।

† "अत्र सोः सुपांसुलुगित्याकारः"—इति ऋ०-भाष्ये।

‡ 'वंसि—वासयसि'—इति वि०।

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ २ १ २ १ २
तावाꣳसम्यगद्रुक्षाणेषमध्यामधामच।

२ १ २
वयंवाम्मित्रावरुणा ॥ २* ॥

हे "अद्रुहाणा" हे अद्रोग्धारौ! "ता" तौ प्रसिद्धौ "वां" युवां सम्यक् स्तुमइति शेषः। स्तोतारः "वयम्" "इषम्" अन्नं "धाम च" आधारम् "अश्याम" प्राप्नुयाम। हे "मित्रा" मित्रावरुणौ! "वां" स्तोतारौ वयं "स्याम" भवेम समृद्धा इति शेषः, युवाभ्यां स्वभूता वा स्याम॥

"धामच"-"धायसे"—इति पाठौ, "मित्रा"-"रुद्रा"—इति च॥ २॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
पातन्नोमित्रापायुभिरुतत्रायेथाꣳसुत्रात्रा।

३ २ ३ १ २ ३ १ २
साच्छामदस्यून्तनूभिः॥ ३† ॥ ८

हे "मित्रा" मित्रावरुणौ देवौ! युवां "नः" अस्मान् "पायुभिः" रक्षणैः "पातं" रक्षतम्। "उत" अपिच "सुत्रात्रा" शोभनेन

---

* ऋ० वे० ४, ४, ८, २।

† ऋ० वे० ४, ४, ८, ३।

त्राणेन "त्रायेथां" पालयेथाम् [इष्टप्राप्तानिष्ट-परिहार-भेदेन भेदः —स्तोत्रादि-वैकल्याच्छत्रोर्वा त्रायेथाम् अभिमत-प्रापणेन रक्षत-मित्यर्थः]। वयञ्च "तनूभिः" * पुत्रादिभिः सहिताः स्वीयै-रङ्गैर्वा "दस्यून्" शत्रून् "सह्याम" अभिभवेम ॥

"मिभा"-"रुद्रा"—इति पाठौ, "त्रायेथां"-"त्रायेताम्" —इति, "सह्याम"-"तुर्याम"—इति च ॥ ३ ॥ ८

अथ तृतीय-तृचे †—

प्रथमा ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र २र

उत्तिष्ठन्नोजसासहपीत्वाशिप्रे अवेपयः ।

१ १ २ १ ३ २

सोममिन्द्रचमूसुतम् ॥ १ ‡ ॥

हे "रुद्र !" त्वं "पीत्वा" "ओजसा" बलेन "सह" "उत्तिष्ठन्" ¶ "शिप्रे" हनू "अवेपयः" अकम्पयः मदावेशादिति भावः । किं पीत्वा ? "चमू" चम्वोरधिषवण-फलकयोः "सुतम्" अभिषुतम् "सोमम्" ॥

"पीत्वा"-"पीत्वी"—इति पाठौ ॥ १ ॥

---

* 'तनूभिः—चिभिः युष्मभिः शरीरैरभिष्टुतैरिति वाक्यशेषः'—इति वि० ।

† 'ऐन्द्रमाज्यम्'—इति वि० ।

‡ य० वे० ८, ३९ = ऋ० वे० ६, ४, २८, ४ ।

¶ 'उत्तिष्ठन्—ओजसा सह वीर्येण उत्थानं कुरु । सोमं पिब । पीत्वा शिप्रे वनूनासिके च मनः सन् अवेपयः'—इति वि० ।

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ ३।२ १२
अनुत्वारोदसीउभेस्पर्द्धमानमदेताम्।

१ ३ १२ ३ १ १
इन्द्रयद्दस्युहाभवः॥ २*॥

हे "स्पर्द्धमान" शत्रुभिः सह स्पर्द्धां कुर्वाण इन्द्र! "त्वा" त्वाम् "अनु" लक्ष्य "उभे रोदसी" उभे अपि द्यावापृथिव्यौ "मदेतां" हृष्येताम् "यद्" यदा "दस्युहा भवः" शत्रूणां हन्ता भवसि, तदा मदेतामिति सम्बन्धः॥

"स्पर्द्धमानमदेतां"-"हृष्यमाणमक्षपेताम्"—इति पाठौ॥२॥

अथ तृतीया।

१ १३१ २ ३।२ १२ ३ १ १
वाचमष्टापदीमहन्नवस्रक्तिमृतावृधम्।

१ ३ १ २ ३क १२
इन्द्रात्परितन्वम्ममे॥ ३†॥ ९

"अष्टापदीम्" अष्टाभिर्दिग्भिर्विदिग्भिश्चाष्टापदीं,‡ "नवस्रक्तिम्" उपरिस्थितेनादित्येन नवस्रक्तिम् आसु दिक्षु व्याप्तामि-

---

* ऋ० वे० ६, ५, २८, ५।

† ऋ० वे० ६, ५, २९, ३।

‡ 'अष्टापदीम्—चत्वारो वेदाः साङ्गानि च अष्टापदानि'—इति वि०

त्यर्थः*, "ऋताह्वधं" यज्ञस्य वृद्धिं कुर्वन्तीं,† "वाचं" स्तुतिमयीं, परिपूर्णात्‡ "तन्वं तनूं न्यूनां सतीम् ¶ "अहम्" "परि ममे" न्यूनेयत्तां करोमीत्यर्थः§। कात्स्न्र्येन स्वरूपं स्तुत्या विषयीकर्तुमशक्यत्वादितिभावः॥

"ऋताह्वधम्"-"ऋतास्पृग्रम्"—इति पाठो॥ २॥ ९

अथ चतुर्थ-ऋचे ॥—

प्रथमा।

१२ २२ ३२ १८ २८

इन्द्राग्नीयुवामिमेऽभिस्तोमाअनूषत।

१२ ३२

पिबतꣳशम्भुवासुतम्॥ १** ॥

हे "इन्द्राग्नी!" "युवाम्" "इमे" "स्तोमाः" स्तोतारः†† "अभ्यनूषत" अभिष्टुवन्ति। हे "शम्भुवा" सुखस्य भावयितारा विन्द्राग्नी "सुतम्" अभिषुतम् अस्मदीयं सोमं "पिबतम्" ॥ १ ॥

---

* 'नवखन्नि'—नव खन्नयः कोणाः नाः नविष्यवमानाः ऋचो नव अथवा नवखन्नि चिह्नत्स्तौमिकम्'—इति वि०।

† 'ऋताह्वधम्—ऋतो यज्ञः अथवा ऋत मन्नं तं वर्द्धयतीति ऋताह्वधम्'-इति वि०।

‡ 'इन्द्रान् परि—उपरि'—इति वि०।

¶ 'तनुं—शरीरम्'—इति वि०।

§ 'ममे—मिनोति'—इति वि०।

॥ 'ऐन्द्राग्नमाज्यम्'—इति वि०।

** ऋ० वे० ४, ८, २४, २।

†† 'स्तोमाश्चिह्नत्यच्छदग्रादय.'—इति वि०।

अथ द्वितीया ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
यावाꣳसन्तिपुरुस्पृद्योनियुतोदाशुषेनरा ।

१ २ ३ २ २ १ २
इन्द्राग्नीताभिरागतम् ॥ २* ॥

हे "नरा" नेतारौ ! "इन्द्राग्नी !" "वां" युवयोः स्वभूताः "पुरुस्पृहा" पुरुभिर्बहुभिः स्पृहणीयाः† "दाशुषे" हवींषि-दत्तवते यजमानार्थम् उत्पन्नाः "नियुतः" अश्वाः "सन्ति"‡ हे इन्द्राग्नी ! "ताभिः" "नियुद्भिः" सह "आगतम्" आग-च्छतम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ २ ३ २
ताभिरागच्छतन्नरोपेदꣳसवनꣳसुतम ।

१ २ ३ १ २
इन्द्राग्नीसोमपीतये ॥ ३¶ ॥ १०

हे "नरा" नेताराविन्द्राग्नी ! [सूयतेऽभिसूयतइति सवनः सोमः] "इदं सवनम्"§ इमं सोमं "सुतम्" अभिषुतम् "उप"

---

* ऋ० वे० ४, ८, २४, २ ।

† 'पुरुस्पृहा—पुरुस्पृहौ बहुभिः स्पृहणीयौ'—इति वि० ।

‡ 'सन्ति—बहुवचनमिदं द्विवचनस्य स्थाने द्रष्टव्यम्, सतः'—इति वि० ।

¶ ऋ० वे० ४, ८, २४, ४ ।

§ 'इदं प्रातःसवनं सुतं सोमम्'—इति वि० ।

प्रति* [यद्वा, इदं प्रातःसवनम् उप अस्मिन् सवने सुतमभिषुतं सोमं प्रति] "ताभिः" नियुद्भिः† आगच्छतम् । किमर्थम् ? "सामपीतये" अस्य सोमस्य पानार्थम् ॥ ३ ॥ १०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरार्चस्य षष्ठस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः‡ ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ-खण्डे¶, प्रथम-ऋचे—

प्रथमा ।

१ १ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २
अर्षा सोम द्युमत्तमोभि द्रोणा नि रोरुवत् ।

२ ३ १ ३ १ ३ २
सीद न्योनौ वने ष्वा ॥ १§ ॥

हे "सोम" पवमान ! "द्युमत्तमः" अतिशयेन दीप्तिमान् "वनेषु" अरण्येषु मध्ये॥ "योनौ" स्वकारण-भूते पर्वतादि-

---

* 'उप—समीपे'—इति वि० ।

† 'ताभिः—तृतीया-बहुवचनमिदं, लौकिकं व्यत्ययेन तैः पालनैः'—इति वि० । "नियुतो वायोः"—इति च निघ० १, १५, १० ।

‡ 'उक्तं प्रातःसवनम्'—इति वि० ।

¶ 'इदानीं माध्यन्दिनं सवन मभिधीयते'—इति वि० ।

§ ऋ० आ० ६, १, २, ७ (२भा० ६२ ५०) = ऋ० वे० ७, २, ४, ४ ।

॥ 'वसु—उदकेषु'—इति वि० ।

स्थाने * "आसीदन्" सर्वतो गच्छंस्त्वं "द्रोणानि" [प्रयोग-बाहुल्यापेक्षमेतत् बहुवचनम्] द्रोणकलशान्† "अभि" लक्ष्य "रोरुवत्" पुनः पुनः भृशं वा शब्दं कुर्वन् "अर्षा" ‡ आगच्छ दशापवित्रमध्यान्निर्गतः सोमः अविच्छिन्न-धारया द्रोणकलशं पतन् शब्दं करोति खलु ॥

"योनौवनेष्वा' -"श्येनोमयोनिमा"—इति पाठे ॥ १ ॥

अथ द्वितीया ।

३ १र २र ६ २३१९ ६ १ ९

अस्माइन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यः ।

१ २ ३ १ १

सोमाअषन्तुविष्णवे ॥ २¶ ॥

"अस्मा" वसतीवरी-नामधेयानामपां सम्भक्तारः [वनुषग सम्भक्तौ (भ्वा, प०) ; "जनसनेति (३,२,६७,) विट्, आत्वं विड्-वनोरिति (६,४,४१,) तादृगाः] "सोमाः" "अर्षन्तु" द्रोण-कलशमागच्छन्तु । किमर्थम् ? "इन्द्राय" सर्वदेवानां प्रथमत एव इन्द्रः सोमान् पिबति, तस्मात् तदनु वायुरुक्तः तस्मै च "वायवे", तदनन्तरं वरुणः सोमान् पिबति तस्मै च "वरुणाय", ततो "मरुद्भ्यः" एतन्नामकेभ्यो देवेभ्यः, "विष्णवे" सर्वजगद्-

---

* 'योनौ—द्रोणकलशे'—इति वि० ।

† 'द्रोणानि—द्रोणकलशसम्बन्धानि पात्राणि'—इति वि०

‡ "द्व्यचोऽतस्तिङ: (६,१,१३५)"—इति दीर्घ: ।

¶ ऋ० वे० ७, २, ५, १ ।

व्यपिने एतन्नामकाय देवाय च,—एतेभ्यः सर्वेभ्यः सोमा आगच्छन्त्वित्यर्थः ॥

"सोमा अर्षन्तु"-"सोमो अर्षति"—इति पाठौ ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ ६ १ १ ३ १ २ ३ १ २ २ १ २

इषन्तोकायनोदधदस्मभ्यꣳसोमविश्वतः ।

१ २ ३ १ २

आपवस्वसहस्रिणम् ॥ ३* ॥ ११

हे "सोम!" त्वं "नः" अस्माकं "तोकाय" † पुत्राय "इषम्" अन्नं "दधद्" विदधत् प्रयच्छन् "सहस्रिणं" सहस्रसङ्ख्याकं धनं "विश्वतः" सर्वतः "अस्मभ्य" च "आपवस्व" आप्रापयं अस्मभ्यं पुत्राय च अन्न-धनादिकं प्रयच्छेत्यर्थः ॥ ३ ॥ ११

१ २ २ १ २ १ २ २ १ २

॥ शाकलम् ॥ अर्षासोमा२द्युमत्तमाः। अभिद्रोणा

२ १ २ २ १ १ २ २ १

निरोहꣳ२३वात्। सायिदा२न्। योनौवना २ ३ यि।

१ २ ५ १ २ २ १

ऊम्। षू३४५वोऽहाधि ॥(१) अस्माइन्द्रा२यवायवायि।

२ २ १ २ १ १ २ १

वरुणायमरुद्भा२३याः। सोमा२ः। आर्षन्तुवा२३यि।

---

* ऋ० वे० ७,२,५,१, ।

† 'पुत्राय पौत्राय'—इति वि० ।

१ २ ५ १ २ २ १
ऊम्। ष्णा ३ ४ ५ वो६ ह्वायि ॥(२) इषन्तोका २यनोद

२ १ २ १ २ १ २ १ १
धात्। अस्मभ्य २ सोमविश्वा २३ताः। आपा २। वास्व

२ १ १ २ ५
सद्वा २३। ऊम्। स्वा ३४५ यिणो६ ह्वायि (३) ॥ ३* ॥ [१]

२ २ २ १ ७ ३ १ २
॥ वार्शम् ॥ अर्षासोमा। द्युमात्ता ३ माः। अभि

२ १ ७ ३ ५ १ २ २
द्रो। णा। निरो २ ह्व २ ३४ वात्। सायिदन्यानाऽउ।

ऽ २ १२ १ ३ ५ २ २ २ २
ई ३ या। वने। षू २ वा २ ३४ औह्वोवा ॥(१) अस्माइन्द्रा।

१ २ १ १ १ २ १ ७ ३ ५
यवाया ३ वायि। वरुणा। या। मरू २ ङ्गा २ ३४ याः। सो

२ ऽ २ १ ३ ५ २ २
मार्अर्षा ३। ई ३ या। तुवि। ष्णा २ वा २ ३४ औह्वोवा ॥(२)

२ २ १ २ २ १ १ ७
इषन्तोका। यनोदा ३ धात्। अस्मभ्यम्। सो। मवा

३ ५ १ २ ऽ २ १
२ यिस्वा २ ३४ ताः। आपवस्वा ३। ई ३ या। सद्व। स्वा

३ ५ २ २ ९ ४
२ यिणा २ ३४ औह्वोवा। ऊ ३ २ ३४ पा (३) ॥ ४† ॥ [२]

१ २ ५ १
॥ सन्तनि ॥ अर्षाहाउ। सोमद्युमा ३ १ उवा २ ३।

---

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० ३सा०।

† ऊ० गा० ७प्र० १अ० ५सा०।

५ १ २ २ १ ३ ११११ २ १
ता२३४माः । अभिद्रोणानिरोरुवा२३४५त् । सीदाग्ना
१ २ २ ५ १ १२
उ । योनौवना३१उवा२३यि । षू२३४षा ॥(१) अस्मा
२ १ २ १२१ २ १ २ ३ १ १ १ १ १२ २
इन्द्रायवायवेवरुणायमरुद्भिया२ ३ ४ ५: । सोमाश्चाउ ।
१ २ ५ १ १२ १२
आर्षन्तुवा३१उवा२३यि । ष्णा२३४वे ॥(२) दूषन्तोका
२२१ २ १ २२ १ १ १ १ १ १ १२ २ १
यनोदधदस्मभ्यꣳसोमविश्वता२३४५: । आपाश्चाउ । वा
२ ५
स्वसद्धा३१उवा२३ । स्त्री२३४णाम्(३) ॥ १३* ॥ [३]
१ २ २ १२ २ २ १
॥ प्राक्तरवर्णम् ॥ आयिषाम् । नोकायनोदधात् ।
१ १ २ १ २ २
अस्मभ्यम् । सोमवा२यि । स्वता३१उवा२३ । ऊ ३ ४
५ २१ १ २ १ १ २
पा । आपवा२३स्वा । सद्धस्तिणा३माउवा२३ । ऊ३२
५
३४पा(३) ॥ १९ ॥ [४]
२ २ १ २ १२ २ १ २ १
॥ जरावोधीयोत्तरम् ॥ दूषन्तोकोवा । यानोदधात् । अस्मा

---

* ऊ० गा० ७प्र० २अ० १२सा० ।

† ऊ० गा० १ ०प्र० १अ० १९सा० ।

र १ र १ ४ ५
भ्या२३ऽसो । मविस्वाताः । आपाघा१स्वा२३सा । ह ।

३ २
स्विणो३४५ई । डा(३) ॥ १५* ॥ [५]

॥ मार्गीयवम् ॥ १ र १ १ १
अप्सौहोवा । आयिन्द्रा२ । य

१ २ ५ १ २र १ २ १र र
वाया२३४यायि । वरुणाय । मरुद्भ्या१या२: । सोमाः ।

१ २ ३ ५ १ ३ ५र र
पा । औ३त्तोयि । आ२३४र्षा । ह्व२वा२३४औहोवं ।

२ १ १ १ १ १
ए३ । ष्ण्वा२३४५यि(२) ॥ २† ॥ [६] ११

अथ प्रमाथरूपे द्वितीयसूक्ते—

प्रथमा ।

१ २ १ १ ३ २ २ १ ३ २ २ १ २
सोमऽउधाणःसोतृभिरधिष्णुभिरवीनाम् ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ १ १ २ ३ १ २
अश्वयैवहरितायातिधारयामन्द्रयायातिधारया ॥ १‡ ॥

---

* ऋ० गा० ११प्र० १अ० १५सा० ।

† ऋ० मा० १८प्र० २अ० २सा० ।

‡ ऋ० आ० ६, १, २, ५ (२भा० ८८पृ०)=ऋ० वे० ७, ५, १३, ६ ।

"सोतृभिः" अभिषुण्वद्भिः ऋत्विग्भिः "स्वानः"* अभिषूयमाणः "सोमः" "अवीनां" "स्नुभिः"† ["मांसृत्स्नूनामुपसंख्यानम् (६,१,६३)"—इति सानु-शब्दस्य स्नु-भावः] समुच्छितैर्वालैः पवित्रैः "अधि याति" अधिकं गच्छति। "उ"—इति प्रसिद्धौ। "अश्वया इव" वडवया इव "हरिता" हरित-वर्णया धारया "याति" "मन्द्रया" मदकारिण्या द्रोणकलशमधिगच्छति॥

"उष्वाणः"-उषुवाणः"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अनूपे गोमान्गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः।

३ २उ ३ १ २ २ १र २र
समुद्रन्नंवरणान्यग्मन्मन्दीमदायतोशते॥ २ ॥ १२

"गोमान्" गोयुक्तः सोमः "अनूपे" निम्ने देशे‡ कलशे "गोभिः" गोर्विकारैः क्षीरादिभिः§ सह "अक्षाः" क्षरन्ति।

---

* क्वचित् तु "ष्वाणः"—इति मूर्द्धण्य-षकार-णकारोपेतः श्रूयते। तत्र "पूर्वपदात् (८, ३, १०६)"—इति षत्वम् सुतरां णत्वञ्च।

† "स्नुभिः"—इति मूर्द्धण्यपाठौ क्वचित्, "पूर्वपदात् (८, ३, १०६)"—इति च तत्र दीर्घः।

‡ 'अनूपे—उच्चैः प्रदेशे'—इति वि०।

§ 'गोभिः—चन्द्रक-मज्जानं गोभिर्वा'—इति वि०।

तदेवोच्यते—"सः" सोमः आत्मनोभिस्रवणार्थं "दुग्धाभिः गोभिः" सह "अक्वाः" चरति [चरतेर्लुङि रूपम्]। किञ्च "समुद्रं न" यथा समुद्रमुदकानि गच्छन्ति तद्वत् "संवरणानि" सम्भजनीयानि रसरूपाणि अन्नानि* द्रोणकलशम् "अग्मन्" गच्छन्ति [गमेर्लुङि च्लेर्लुगि रूपम्] किञ्च "मन्दी" मदकरः सोमः "मदाय" मदार्थं "तोशते"† हन्यते अभिषूयते [तोशतिर्बधकर्मा (निघ० २,१९,२९)] ॥ २ ॥१२

॥ मानवोत्तरम् ॥ ह्वोवायि। सोमउष्वाणःसोत्वभिः।
ह्वोवायि। आधिष्णुभिरवीनाम्। आश्वयेव। हारिता
याऽ१। तिधाऽरा२३४या। मन्द्रायाऽ२३४याऽ३। ताऽ२
यिधाऽरा२३४औह्वोवा। राऽ२३४या। ह्वोवायि। मन्द्रया
यातिधारया। ह्वोवायि। मन्द्रयायातिधारया। आ
नूपे। गोमान्गोऽ१। भाऽरयिराऽ२३४क्षाः। सोमोदूऽ२३
ग्धाऽ३। भाऽरयिराऽ२३४औह्वोवा। आ २ ३ ४ क्षाः॥(२)

---

* 'संवरणानि—उदकानि'—इति वि०।

† 'तोशते—तुष्टि व्याप्तौ व्यापयति'—इति वि०।

१ २ २ २१२ १ २ १ २
ह्वोवायि। सोमोदुग्धाभिरद्भाः। ह्वोवायि। सोमोदु

२ २ ७ १ १ ७ १ ७ ३
ग्धाभिरद्भाः। सामुद्रन्न। सांवरणा३१। नियार्२आ२३

५ १ १ २ १ ३ ५२ २
४गमान्। मन्दायिमा२३दा३। या२तो२३४औहोवा।

१ ५
ओ२३४ते(३) ॥ ५* ॥[१]

१ १ १२ २ १ २
॥ आनूपन्ध्वश्वम् ॥ सोमाःसोमाः। उष्वाणा३ःसोतृ

१ २ १ २ १
भी२ः। आधिष्णुभिः। आवा१यिना२म्। आस्वा

१ १ २ २ २१२ २ १ २ २
२येवा२। हरितायातिधारा२३या। मन्द्रायाइया३।

१ ४ २ ५ १ २ १ २ २
ता२३इधा३। रा३४५योर्हाय ॥(१) मन्द्रामन्द्रा। या

२ १ १ १ २२ २ १ २
यातो३धारा१या२। मान्द्रयाया। तिधारा१या२।

१ १ १२ २ २ १ २ १२ २ २
आनू२पेगो२। मान्गोभिरा२३द्भाः। सोमोदूइध्वा३।

१ ४ २ ५ १२ २ १२ २
भा२३यि३। रान्आ२३४५त्तोर्हायि ॥(२) सोमाःसोमाः।

२ १ २ १ १२ २ २ १ २
दुग्धा३भायिरा१द्भा२ः। सोमोदुग्धा। भायिरा१द्भा

---

* ऊ० गा० ३ प्र० १ अ० ५ सा०

१ १ १ २ १ १ २ १
२ः। साम्२द्रान्ना२। संवरणानियार३म्मान्। मन्दा

१ ४ १ ४ २ ५
ग्रिमाइदाइ। याइतोइ। आ३४५ तो ६ द्वायि(३)

॥ ६* ॥ [२]

२२ १ २ ५२ १ १
॥ वाम्रम् ॥ सोमउष्वाणःसो। ह्वाइह्वाइयि। तर

४ ५ १ १
३४। भिस्तृभीवा। अधाह्वो२यि। ष्णुभायिह्वौ२।

१ २ १ २२ १ २ १ १
आवा१यिना२म्। आश्वथेव। हरायितायो। तिधा

१ ४ १ १ १ १
उवाइ। ज२३४पा। रया२। मान्द्रा२याया२।

१२ १ ५२ २ ४ ३ ४२ ५२ २
तिधा। रा२या२३४ औह्होवा ॥(१) मन्द्रयायातिधा।

१ २ १ २ ५ १
ह्वाइह्वाइयि। रा२३४। यारयोवा। मान्द्राह्वो२यि।

१२ १ २ १ २२२२ १ १
यायाह्वो२। तायिधा१राया२। आनूपेगो। मान्गो।

१ १ १ ५ १ १ १
भिराउवाइ। ज३४पा। अश्वा२ः। सोमो२दूग्धा२भि

१ ३ ५२ २ ३२ ४२ १२ ४ ५२ १
रा२। ह्वा२३४ औह्होवा ॥(२) सोमोदुग्धाभिरा। ह्वाइ

ज०गा० ३प्र० १च० ६सा०।

२ १ २ ५ १२
ह्वाइयि। आ२३४। त्ताःत्तोवा। सोमोहो२यि।
१ १ १ १ २ १
दुग्धाह्वो२। भायिरा१त्ता२:। सामुद्रञ्च। संवारा
२ ३ २ २ ५ १ १
णा। नियाउवा३। ऊ३४पा। अगमा२न्। मान्दी
१ १२ ३ ५२ २ २
२माद्वा२। यतो। ष्ठा२ता२३४औह्वोवा। *ऊ३२३४
५
पा(३)॥ ७*॥ [३]

२२ ३ ५
॥ अग्नेस्तिग्मधनम्॥ सोमउष्वा। णःसोतृ२३४भीः।
२ १ २ ५ २ २
अधायिष्णुभिरा३१उवा२३। वी२३४नाम्। आश्वाये२
५ २ १ २ २ १ ५ २
३४वा। हरितायातिधा३१उवा२३। रा२३४या। मा
२ ३ ५ २ ५
न्द्रायाय३४या। तिधा३१उवा२३। रा २ ३ ४ या॥(१)
२ २ ३ ५ २ १ २ २
मन्द्रयाया। तायिधारा२३४या। मन्द्रयायातिधा३१उ
५ २ ३ ५ १ २ २
वा२३। रा२३४या। आनूपे२३४गो। मान्गोभिरा३१
५ २ ३ ५ २
उवा२३। आ२३४त्ताः। सोमोदू२३४ग्धा। भिरा३१

---

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० ७सा०।

५ २र र १
उवा२३। आ२३४त्ना: ॥(२) सोमोदुग्धा। भायिरा२

५ २र १र र २ ५
३ऽत्ना:। सोमोदुग्धाभिरा३१उवा२३। आ२३४त्ना:।

२ ३ ५ २ १ २
सामूद्रा२३४न्ना। संवरणानिया३१उवा२३। आ २ ३ ४

५ २ ३ ५ २ १
ग्मान्। मान्दीमा२३४दा। यतो३आउवा२३। आं

५
२३४ते३) ॥ ८* ॥ [४]

५ ४ २ ४ ५र ४ ५ १
॥ अभीवर्त्तः ॥ मन्द्रा३याइयाऽतिधारयोवा। मान्द्र

१र र १ २ १ र र ५र
याया। तिधारा१या२। आनूपेगो३१२३४। मान्गो।

१ २ र १ २ ७ २ १
भायिरा१त्ना२:। सोमोदू१ग्धा२। भिरा३। आ२३४

३ १ १ १ १
५। त्ना२३४५:(२) ॥ ३† ॥ [५]

५र र २ ४र ५ ४ ५ २र १ २ १
॥ कालेयम् ‡ ॥ सोमोदू३ग्धाभिरत्ना:। सोमोदुग्धा।

२ १ २ ३ २ १ २४र ५
भिरत्ना२३:। समुद्रन्ना३। सा२३४म्। वरणानि।

---

* ऊ० गा० ३प्र० १ऋ० ८सा०।

† ऊ० गा० ८प्र० २ऋ० ३सा०।

‡ "मद्राकालेयम्"—इति ख० पु० पाठः

आ३ग्मान्। मन्दायिमद्दौ। वा३४३ओ३४वा। यतो५
शतायि। च्छो५ई। डा(२) ॥ ४* ॥ [६]

॥ मानवाद्यम् ॥ मन्द्रयाया। तिधारा२३४या।
तायिधारा २ ३ ४ या। मान्द्रयाया। तिधारा१या २।
अ। नू। पे। गोमान्गो३। भा२यिरा२३४च्चाः। सोमो
दुग्धा२३। भा२यिरा२३४ओच्छोवा। आ२३४च्चाः(२)।
॥ १३† ॥ [७]

॥ आग्नेस्त्विष्णिधनम् ॥ अनूपेगो। मान्गोभायिरा
२३४च्चाः। सोमोदुग्धाभिरा३१उवा२३। आ२३४च्चाः।
सामूद्रा२३४न्ना। संवरणानिया३१उवा२३। आ २ ३ ४
गमान्। मान्दीमा२३४दा। यतो३आउवा२३। आ२
३४ते(२) ॥ ३ङ्क ॥ [८]

---

* ऋ० गा० ८प्र० २ अ० ४सा०।
† ऋ० गा० ९प्र० २ अ० १३सा०।
‡ ऋ० गा० १९प्र० २ अ० ३सा०।

॥ वैष्णवाद्यम् ॥ सोमउष्वा। ऽउःसो २तृभायिः। तृ
भिः। अधिष्ण,भिरा २वीनाम्। वीनाम्। अश्वयेवद्ध
रितायातिधा २रया। रया। मन्द्रयायातिधा २रया २३।
रा २। या २३४। औहोवा ॥(१) मन्द्रयाया। तिधा २ः
रया। रया। मन्द्रयायातिधा २रया। रया। अनूपे
गोमान्गोभिरा २क्षाः। क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा २क्षा २३ः।
आ २। क्षा २३४। औहोवा। सोमोदुग्धा। भि
रा २क्षाः। क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा २क्षा २३ः। आ २।
क्षा २३४। औहोवा ॥(२) सोमोदुग्धा। भिरा २क्षाः।
क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा २क्षाः। क्षाः। समुद्रन्नसवर
णानियंग्मान्। ग्मन्। मन्दीमदायतो २श्नता २३यि।
श्रा २। ता २४३। औहोवा। ऊ ३ २३४पा(३) ॥१८*॥ ९]

---

* ऊ० गा० २०प्र० १अ० १८ सा०।

॥ वैष्णवोक्तरम् ॥ सोमः। सोमाः। उष्वाणःसोतृ
भिः। अधायिष्णू३भायिः। आआऔ३हो। वायिना२
म्। अस्वयेवहरितायातिधा१रा३या। मन्द्राऔ३हो।
याायातिधो२३४वा। रा५योर्ह्वायि(१) ॥ २०* ॥ [१०]

॥ यौक्तस्रुचम् ॥ सोमउष्वाणःसो। तृभायिः। अ-
धिष्णुभिरवा२३यिनाम्। आस्वा२। येवहरितायाति
धारा२३या। मान्द्रा२। याायातिधो२३४वा। रा२३४
या ॥(१) मन्द्रयायातिधा। रया। मन्द्रयायातिधारा
२३या। आनू२। पेगोमान्गोभिरा२३क्षाः। सोमा
२:। दूग्धाभिरो२३४वा। आ२३४क्षाः ॥(२) सोमोदु
ग्धाभिरा। क्षाः। सोमोदुग्धाभिरा२३क्षाः। सामू२।
द्रप्नसंवरणानिया२३ग्मान्। मान्दी२। मादायतो२३४
वा। शा२३४ते(३) ॥ १† ॥ [११] १२

---

* ऋ० गा० २०प्र० १अ० २०सा०।

† ऋ० गा० २०प्र० २अ० १सा०।

अथ तृतीय-ऋचे—

प्रथमा।

१ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १ १ १
यत्सोमचित्रमुक्थ्यन्दिव्यम्पार्थिवंवसु।

१ १ २ १२ १२
तन्नःपुनानआभर॥ १*॥

हे "सोम!" "यत्" "चित्र"" चायनीयम् "उक्थ्यम्"† स्तुत्यं "दिव्यं" दिवि भवं "पार्थिवं" पृथिवी-सम्बन्धञ्च यत् "वसु" धनमस्ति "तत्" "नः" अस्मभ्यम् "पुनानः" पूयमानः सन् "आभर" आहर॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ १ २ १२ १२ २ २ २ १ १ २ १ १
वृषापुनानआयूंषिस्तनयन्नधिबर्हिषि।

२ २ २ उ १ १ १
हरिःसन्योनिमासदः॥ २‡॥

हे सोम! "आयूंषि" यजमानादीनामृत्विजां जीवितकालान् "पुनानः" शुद्धान् कुर्वन् "वृषा" कामानां वर्षकस्त्वं "स्तनयन्"‥ शब्दं कुर्वन् "अधि बर्हिषि" [अधीति सप्तम्यर्थानुवादी] आस्तीर्णे दर्भे "हरिः सन्" हरितवर्णः सन् "योनिं" स्वकीयं स्थानम्¶ "आसदः" आसीद॥

---

* ऋ० वे० ९, ८, ९, १।
† 'चक्थ्यं—नामरूपम्'—इति वि०।
‡ ऋ० वे० ९, ८, ९, २।
¶ 'योनिं—द्रोणकलशम्'—इति वि०।

"आयूंषि"-"आयुःषु"—इति पाठौ, "आसदः"-"आसदत्"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१२ २२ ३१ १ २११
युवꣳहिस्थःस्वःपतीइन्द्रश्चसोमगोपतौ ।
२ १२ ३१२
ईशानापिप्यतन्धियः ॥ ३* ॥ १३

हे "सोम !" त्वम् "इन्द्रश्च" युवं हि" युवां खलु "स्वःपती" सर्वस्य स्वामिनौ "स्थः" भवथः । तथा "गोपतौ" गवां पालकौ† "ईशाना" ईश्वरौ सन्तौ "धियः" अस्मदीयानि कर्माणि‡ "पिप्यतम्" प्याययत¶ ॥

"युवंहिस्थःस्वःपती"-"युवंहिस्वःस्थपंती"-इति पाठौ ॥ ३ ॥ १३

२२ १२ १२
॥ शैशवम् ॥ यत्सोमचित्रमुक्थायाम् । दिव्यम्पार्थिं
२१ ५ २१ ४ २२
वंवसू । तन्नःपू२३४ना । नस्वाꣳभाꣳरा६५६ ॥(१) वृषा
२२ १२ १ २ १ २१
पुनानस्वायूꣳषी । स्तनयन्नधिबर्हिषायि । हरिःसा२३
५ २२ ४ २ १
४न्यो । निमाꣳसाꣳदा६५६ः ॥(२) युवꣳहिस्थःस्वःपा

---

* ऋ० वे० ६, ८, ९, २ ।

† 'गोपती—गवां पती, उदकानामादित्यरश्मीनां वा'—इति वि० ।

‡ 'धियः—बुद्धयः'—इति वि० ।

¶ 'पिप्यतं—पालयतम्'—इति वि० ।

१ १ २ २ १२१२ ५ ३ २
तौ । इन्द्रश्चसोमगोपतायि । ईशानाऽ३४पौ । प्यता

४
न्धाप्यायाऽ५६ः(३) ॥ ८* ॥ [१] १३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरायन्यस्य षष्ठस्याध्यायस्य
चतुर्थः खण्डः† ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम-खण्डे‡ प्रथम-ऋचे—

प्रथमा ।

१ १ १ २ ३ १ २ ३ १२ २
इन्द्रोमदायवावृधेशवसेवृत्रहानृभिः ।

२४ १ २ ३ १ ३ १२ २ ३
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भेहवामहे

१२ २२ १ १
सवाजेषुप्रनोविषत् ॥ १¶ ॥

---

* ऋ० गा० १प्र० १अ० ६सा० ।

† 'उक्थो माध्यन्दिनः पवमानः'—इति वि० ।

अतोऽनन्तरं विवरणतया इदैव शक्वरीः प्रस्तुत्य ता एव व्याख्याताः । तथाहि—'इदानीं इष्टानि भवन्ति, तत्र पञ्चमेऽहनि शक्वर्यः इष्टं भवति ता उच्यन्ते ; —छन्दो-दैवत-ब्राह्मणानि परिभाषासिद्धानि "विदा मघवन्" सर्वज्ञः त्वं मघवन्'—इत्यादि । एवञ्चैतन्नये उत्तरायन्योयमेव षष्ठानाम्नार्चिकः न तु ग्रन्थान्तरच्छन्दआर्चिकपरिशिष्ट-भूतः, परमेतदतीव चिरं मूलपुस्तकदर्शनेन तथात्वे व्याघातात् ।

‡ 'बार्हद्गिरं ब्रह्मसाम'—इति वि० ।

¶ ऋ० आ० ५, १, ३, २ (१भा० ८३६पृ०) = ऋ० वे० १, ६ १, १ ।

"वृत्रहा" वृत्रस्यावरकस्य वृष्टि-निरोधकस्य मेघस्यासुरस्य वा हन्ता । यद्वा, आवरकाणां शत्रूणां हन्ता, "इन्द्रः" "मदाय" हर्षार्थं "शवसे" [बलनामैतत् (निघ०२,९,३) बलार्थश्च "नृभिः" यज्ञस्य नेतृभिः ऋत्विग्भिः "वृधे" स्तोत्र-शस्त्र-रूपाभिः स्तुतिभिः प्रवर्द्धितो बभूव । स्तुत्या हि देवता प्राप्त-बला सती प्रवर्द्धते । "तम् इत्" तमेवेन्द्रम् "महत्सु" प्रभूतेषु "आजिषु" सङ्ग्रामेषु "ऊतये" रक्षां कुर्वन्तमितिशेषः "हवामहे" अस्माकं रक्षणाय आह्वयामहे । ["उत" अपिच "ईम्" एनम् एवम्भूतमिन्द्रम्*] "अर्भे" अल्पे सङ्ग्रामे हवामहे अस्माभिराहुतः सन्निन्द्रः "वाजेषु" सङ्ग्रामेषु "नः" अस्मान् "अविषत्" प्रावतु प्रकर्षेण रक्षतु ॥ ["ऊतिमर्भे"--"उतेमर्भे"—इति पाठौ ॥ वावृधे—वृधेः कर्मणि लिट् तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घत्वम्† । नृभिः—"सावेकाच (६,१,१६८)"—इति प्राप्तस्य विभक्त्युदात्तत्वस्य "नृचान्यतरस्यां (६,१,१८४)"—इति प्रतिषेधः । हवामहे—ह्वयतेर्लटि "ह्वः (६,१,३२)"—इत्यनुवृत्तौ "बहुलञ्छन्दसि (६, १, ३४)"—इति सम्प्रसारणम् , अपि गुणावादेशौ । अविषत्—अवरक्षणे (भ्वा०,प०) लेटअड़ागमः, "इतश्च लोपः (३, ४, ९)—इति इकारलोपः, "सिब्बहुलं लेटि (३,१,३४)—इति सिप् , तस्यार्द्धधातुकत्वात् वलादिलक्षण इट्] ॥ १ ॥

---

* ऋग्वेदीय-पाठमनुसृत्येदं व्याख्यानम् ।

† परं चिन्त्यमेतत्—"संहितायामभ्यासस्य अन्येषामपि दृश्यतइति दीर्घत्वम् । तुजादिलेऽपि तूतुजान इति वत् पदकाले दीर्घः स्यूयेत"—इति ऋग्वेद-व्याख्यावसरेऽयमेव सायणः ।

अथ द्वितीया ।

२ १ १ २ ३ १ उ ३ १ २ ७ २
असिहिवीरसेन्योसिभूरिपराददिः ।

१ २ ७ १ १ ३ १ र २ र
असिदभ्रस्यचिद्वधोयजमानाय

३ १ र १ र २ १ १
शिक्षसिसुन्वतेभूरितेवसु ॥ २* ॥

हे "वीर !" शत्रु-क्षेपण-कुशलेन्द्र ! त्वं "सेन्यः असि" सेनार्हो भवसि†, त्वमेकोऽपि सेना सदृशो भवसीत्यर्थः । "हि"‡ यस्मादेवं तस्मात् प्रभूतं शत्रूणां धनं "पराददिः" परादाता शत्रूणां पराङ्मुखं यथा भवति तथा आदाता "असि" भवसि "दभ्रस्य चित्" अल्पस्य नामैतत्¶ अल्पस्यापि तव स्तोतुः§ "वृधः" वर्द्धयितासि, तथा "यजमानाय" यागं कुर्वते "सुन्वते" सोमाभिषवं कुर्वते पुरुषाय "शिक्षसि" अर्पयितं धनं ददासि [शिक्षतिर्दानकर्मा (निघ० ३, २०, ८)] यस्मात् "ते" तव "वसु"

---

* ऋ० वे० १, ६, १, २ ।

† विवरण-नथे 'वीरसेन्य'—इत्येकं पदम्, अतएवैवं व्याख्यातम्—वीरसेन्यः—वीराः सेन्या यस्य सौ वीरसेन्यः'—इति । परन्तत् पदद्वयं विरुद्धम्, तत्र "वीर सेन्यः"—इति छेद-स्वरयोर्दर्शनात् ।

‡ 'हीति पदपूरणः'—इति वि० ।

¶ "दभ्रम्"—इति निघण्टौ तृतीयस्य 'तृतीये ह्रस्वनामसु चष्टमभिति दर्शनात् ।

§ 'दभ्रस्य—ध्वंसकस्य'—इति वि० ।

धनं "भूरि" बहुलं अक्षयं धनं विद्यते तस्मात् ददासीति भावः ॥ [परादादिः—डुदाञ् दाने (जुहो०उ०) "आदृगमहन जन (३,२,१७१)"—इति कि-प्रत्ययः; लिङ्वद्भावाद् द्विर्वचने कुत्वम्, "आतो लोप इटि च (६,४,६४)"—इत्याकारलोपः । दधः—दधेरन्तर्भावितण्यर्थादिगुपध-लक्षणः कः । सुन्वते—"शतुरनुमः (६,१,१७३)"—इति विभक्तेरुदात्तत्वम् ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

२ २ १ १ २ १ २ ३ १ १ ३ १ २
यदुदीरताजयोधृष्णवेधीयतेधनम् ।
३ १ १ २ २ २ ३ २ ३ ३ १ १
युङ्क्ष्वामदच्युताहरीकृष्णःकंवसौ
३ १ २ ३ १ २
दधोऽस्माऽइन्द्रवसौदधः ॥ ३* ॥ १४

[अत्रेदमाख्यानम्—'रहूगण-पुत्रो गोतमः कुरु-सृञ्जयानां† राज्ञां पुरोहित आसीत्, तेषां राज्ञां परैः सह युद्धे सति स ऋषिः अनेन सूक्तेन इन्द्रं स्तुत्वा स्वकीयानां जयं प्रार्थयामास'—इति । तस्य च तत्पुरोहितत्वं वाजसनेयिभिराम्नातम्—"गोतमोऽह वै राहूगण उभयेषां कुरु-सृञ्जयानांः पुरोहित आसीत्"—इति ।] "यत्" यदा "आजयः" सङ्ग्रामाः "उदीरते" उद्गच्छन्ति उत्पद्यन्ते तदानीं "धना" धनं "धृष्णवे" यो धृष्णुः धर्षयिता

* ऋ० सा० ४, १, १, ९ (१भा० ८४४पृ०) = ऋ० सं० १, ६, १, ३ ।

†, ‡ "सञ्जयानां"—इति रा० सा० पु० पाठः ।

शत्रूणां जेता भवति तस्मै "धीयते" निधीयते, जयतो धनं भवतीत्यर्थः। हे इन्द्र! त्वं तादृशेषु युद्धेषु प्रवृत्तेषु "मदच्युता" शत्रूणां मदस्य गर्वस्य च्यावयितारौ "हरी" त्वदीयावश्वौ "युङ्क्ष्व" स्व-रथे योजय, योजयित्वा च कञ्चिद्राजानं तव परिचरणम-कुर्वन्तं "हनः" हन्याः कञ्चन त्वां परिचरन्तं "वसौ" वसुनि धने "दधः" स्थापय॥ [उद्हरेते—ईरगतौ (आ०) आदा-दिकः, "अनुदात्तेत्त्वाल्लसार्वधातुकानुदात्तत्वे (६,१,१८६) धातु-स्वरएव शिष्यते, "यङ्लुगन्नित्यम् (८,१,६६)"—इति निघात-प्रतिषेधः। धना—"सुपां सुलुक् (७,१,३५)"—इति डादेशः। युङ्क्ष्व—युजिर् योगे (रु० उभ०), अन्तर्भावित-ण्यर्थाल्लोटि "बहुलञ्छन्दसि (२,४,७३)—इति विकरणस्य लुक्, "हश्चो-ऽतस्तिङः (६,३,१३५)"—इति संहितायां दीर्घत्वम्। हनः—हन्तेर्लेटि सिप्यडागमः, हनश्च दधश्च चार्थप्रतीतेः "चादिलोपे विभाषा (८,१,६३)"—इति प्रथमायास्तिङ्विभक्तेर्निघात-प्रतिषेधः। वसौ—लिङ्ग-व्यत्ययः। दधः—दध धारणे (भ्वा०आ०) लेटि व्यत्ययेन परस्मैपदम्॥ २॥ १४

॥ सप्तनि॥ इन्द्रोदाउ। मादायवा३१उवा२३।
वा२३४ङ्क्षै। शवसेवृत्रहानृभिस्तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भेहे
वामंहा२३ऽम्भूयि। सत्राहाउ। जायिषुप्रनो३आउवा२३।

५ १ २ १ २ १ १ २ २ २ १ २ २ १ २ १
वा२३४यिषात् ॥(१) असिद्विवीरसेन्योसिभूरिपरादद्रि

२ १ २ १ २ २ २ २ १ १ १ १ १ २
सिदभ्रस्यचिद्वृधोयजमानायशिक्षसा२३४५यि। स्तुन्वाद्दा

१ २ २ ५
उ। तायिभूरिता३१उवा२३यि। वा२३४म्॥(२) यदु

१ २ २ १ २ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १ २ १
दीरतआजयोधृष्णवेधीयतेधनंयुङ्क्षामदच्युताहरीक्ष्

२ १ २ ३ १ १ १ १ १ २ १ २
नःकंवसौदधा२३४५ः। अस्मान्हाउ। आयिन्द्रवसा३१उ

५
वा२३। दा२३४धाः(३) ॥ ४* ॥ [१] १४

अथ द्वितीय-ऋचे† —

प्रथमा।

२ १ ३ १ २ ३ १ २
स्वादोरित्याविषूवतो

१ २ ३ ४ २
मधोःपिबन्तिगौर्यः।

१ २ ३ १ २ ३
यादिन्द्रेणसयावरी

२ ३ १ २ ३ २ ३
वृष्णामदन्तिशोभथा

२ ३ १ २ ३ १ २
वस्वीरनुस्वराज्यम् ॥ १ ॥

---

* ऋ० मा० १९प्र० २ऋ० ४मा०।

† 'रायोवाजीयमच्छावाकसाम',—इति वि०।

‡ ऋ० आ० ५, १, ३, ३(१भा० ८२२ऋ०) = ऋ० वे० १, ६, ६, ५

"स्वादोः" स्वादुभूतस्य रसयुक्तस्य "इत्था विषूवतः" इत्थमनेन प्रकारेण सर्वयज्ञेषु व्याप्तियुक्तस्यं "मध्वः" मधोः मधुररसस्य सोमस्य "क्रियाग्रहणं कर्त्तव्यम् (१,४,३२ वा०)"—इति कर्मणः सम्प्रदानत्वात् चतुर्थ्यर्थे षष्ठी। एवंविधं सोमं "गौर्यः" गौरवर्णा गावः पिबन्ति। या गावः "शोभथाः" [वचन-व्यत्ययः] इन्द्रेण सह शोभन्ते "वृषणा" कामाभिवर्षकेन्द्रेण "सयावरीः" सह यान्त्यो गच्छन्त्यः सत्यः "मदन्ति" हृष्टा भवन्ति। ता इन्द्रपीतस्य सोमस्य शेषं पिबन्तीत्यर्थः। "वस्वीः" पयःप्रदानेन निवासकारिण्यः ता गावः "स्वराज्ये" स्वस्येन्द्रस्य यत् "राज्यं" राजत्वं तदनु लक्ष्यावस्थिताइति शेषः ॥ [विषूवतः—विष्लृ व्याप्तौ (जु०उभ०) अस्मादौणादिकः कुप्रत्ययः ततो मतुप् क्नस्यनुड्भ्यां मतुप् (६,१,१७६)"—इति मतुप उदात्तत्वम्, "अन्येषामपि दृश्यते (६,३,१३७)"—इति संहितायां दीर्घः, व्यत्ययेन मतोर्वत्वम्। मूध्वः—"जसादिषु छन्दसि वा वचनम् (१,४,७)"—इति "घेर्ङिति (७,३,१११)"—इति गुणाभावे यणादेशः। गौर्यः—"षिद्गौरादिभ्यश्च (४,१,४१)"—इति ङीष्, जसि यणादेशे "उदात्तस्वरितयोर्यणः (८,२,४)"—इति परस्यानुदात्तस्य स्वरितत्वम्। सयावरीः—या प्रापणे (अदा०प०) "आतोमनिन् (३,२,७४)"—इति वनिप्, "वनोरच (४,१,७)"—इति ङीब्रेफौ। मदन्ति—मदी हर्षे (दि०प०), श्यनि प्राप्ते व्यत्ययेन (३,१,८५) शप्। वस्वीः—"वस निवासे (भ्वा०प०) शॄस्वृस्निहि (उ०,१,१०)"—इत्यादिना वसे रुप्रत्ययः, "धान्ये नित् (उ०१,८)"—इत्यनुवृत्तेराद्युदात्तत्वम, "वोतो

गुणवचनात् (४४,४,१)"—इत्यत्र "गुणवचनात् ङीषाद्युदात्तत्वम् (४, १, ४५ भा०)"—इतिवचनात् वसुग्रहणात् ङीषि यणादेशः, जसि "वाच्छन्दसि (६,१,१०६)"—इति पूर्वसवर्णदीर्घत्वम् । स्वराज्यं—"अकर्मधारये राज्यम् (६,२,३०)"—इत्युत्तरपदाद्युदात्तत्वम्] ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ १ १ १ २ १ १ २ १ १
ताअस्यपृशनायुवःसोमꣳश्रीणन्तिपृश्नयः।

२ १ २ २ १ १ २ १ २ १ १ २ १ १ २
प्रियाइन्द्रस्यधेनवोवज्रꣳहिन्वन्तिसायकं

२ १ १ २ २ १ २
वस्वीरनुस्वराज्यम् ॥ २* ॥

"ताः" पूर्वोक्ताः† "अस्य" इन्द्रस्य "पृश्नायुवः" स्वर्गनकामाः पृश्नयः नानावर्णाः‡ गावः इन्द्रेण पातव्यं "सोमं" पयसा "श्रीणन्ति" मिश्रीकुर्वन्ति, "इन्द्रस्य" "प्रियाः" प्रीतिहेतुभूताः "ताः" "धेनवः" "सायकं" शत्रूणामन्तकारकं¶ "वज्रं" आयुधं "हिन्वन्ति" शत्रुषु प्रेरयन्ति इन्द्रो यथा शत्रुषु वज्रं प्रेरयति तथेन्द्रस्य मदमुत्पादयन्तीत्यर्थः। अन्यत् पूर्ववत् ॥ [हिन्वन्ति

---

* ऋ० वे० १, ६, ७, १।

† 'ताः—धेनव.'—इति वि०।

‡ 'पृश्नयः—गावः' - इति वि०।

¶ 'सायकं—शरभूतं क्षेपणीयम्' - इति वि०।

हिवि प्रीणनार्थः (भ्वा० प०), हविष्वन्तम् । सायकं—षो अन्त-कर्मणि (दि० प०), ष्वष्क्यात्वे युगागमः ॥ २ ॥

अथ तृतीया ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ ३
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।

३ २ १ २ १ २ ३ १
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पुरूणि पूर्वचित्तये वसोरनु स्वराज्यम् ॥ ३ * ॥ १५

"प्रचेतसः" प्रकृष्टाज्ञानाः "ताः" गतः "अस्य" इन्द्रस्य "सहः" बलं "नमसा" स्वकीयेन पयोरूपेणान्नेन "सपर्यन्ति" परिचरन्ति "पुरूणि" बहूनि "अस्य" इन्द्रस्य "व्रतानि" शत्रु-बधादि-रूपाणि वीर्य-कर्माणि "सश्चिरे" सेविरे ज्ञातव्यतया इत्यर्थः । किमर्थम् ? "पूर्वचित्तये" युयुत्सूनां शत्रूणां पूर्वमेव प्रज्ञापनाय† [अनेन युध्यमाना हवादयः सर्वे मरणं प्राप्ताः किमर्थं भवद्भिः प्राणास्त्यजन्त इति तेषां बोधनायेत्यर्थः । अन्य-त्पूर्ववत् ॥ पूर्वचित्तये—चिती सञ्ज्ञाने (भ्वा० प०), भावे क्तिन्, मरुद्वधादित्वात् पूर्वपदान्तोदात्तत्वम् ॥ ३ ॥ १५

---

* ऋ० वे० १, ६, ७, २ ।

† 'पूर्व-चित्तये—पूः-प्रसादनाय'—इति वि० ।

४र ३र ४ ३र ४ ५र ३ २ १र ४र ४
॥ श्यैतम् ॥ स्वादोरित्थाविषू । वता३४ओहोवा ।

१ र २ १ ७ ५ ५ १र र १
माधोःपिब । तिगौरिया२३४: । ओ३ह्वा । याइन्द्रेण

१र २र १ २ १ ३ ५
सयावरीर्वृ । षणोमा२३दा । तिग्मो२ । भा२३४था ॥(१)

३र ४ ३ ४.५र ३ २ ३र ४र ५ १ १र
ग्नाअस्यपृश्नना । युवा३४ओहोवा । सोमꣳश्रीण । ति

१ ७ ५ ५ ०१र २ र १ १र १
पार्श्वया२३४: । ओ३ह्वा । प्रियाइन्द्रस्यधेनवोव । आꣳ

२ १ ३ ५ ३र ४ ३
ह्वा२३यिन्वा । तिसा२ । या२३४काम् ॥(२) ताअस्यन

४ ५र ३ २ ३र ५र ५ १ १ १ ७
मसा । सह्वा३४ओहोवा । सापर्य्यन्ति । प्रचायितसा

५ ५ २१र २ र १ २
२३४: । ओ३ह्वा । व्रतान्यस्यसश्चिरे पू । हूणा२३यिपू ।

३ ५ १ र २ २ १
वर्चा२यि । ता२३४यायि । वस्वीरनुस्वा३रा । ऊम्मायि ।

३ ५र र ३ ५
जा२या२३४ओहोवा । वा२३४मू(३) ॥ ४ * ॥ [१] १५

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चग्रन्थस्य षष्ठस्याध्यायस्य

पञ्चमः खण्डः † ॥ ५ ॥

---

* ऊ० मा० १०प्र० १ऋ० ४ सा० ।

† 'उक्तं माध्यन्दिनं सवनम्'—इति वि० ।

अथ षष्ठे खण्डे,* प्रथमर्चे—

प्रथमा।

१ २ ३ १र २र२ १र २र ३ १
असाव्यꣳशुर्मदायाप्सुदक्षोगिरिष्ठाः।

३ २उ ३ १ २
श्येनोनयोनिमासदत्॥ १ †॥

"गिरिष्ठाः" पर्वत-जातः "अंशुः" सोमः "मदाय" मदार्थम् "असावि" अभिषुतः "अप्सु" वसतीवरीषु "दक्षः" प्रवृद्धश्च भवति। किञ्च "श्येनो न" यथा श्येनः पक्षी वेगेनागत्य स्थानमासीदति तद्वदयं सोमः "योनिं" स्वकीयं स्थानम् "आसदत्" आसीदति॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १र २र १ २
शुभ्रमन्धोदेववातमप्सुधौतन्नृभिःसुतम्।

१ २ ३ १ ३ १ २
स्वदन्तिगावःपयोभिः॥ २ ‡॥

यत् "देववातं" देवैः प्रार्थितं¶ "शुभ्रं" शोभनम् "अन्धः" अन्नस्वरूपं "नृभिः" नेतृभिः "सुतम्" अभिषुतम् "अप्सु"

---

* 'इदानीं तृतीय-सवनमुच्यते'—इति वि०।

† ऋ० प्रा० ५, २, ४, ७ (१भा० २२५०)=ऋ० वे० ७, १, २४, ४।

‡ ऋ० वे० ७, १, २४, ५।

¶ 'देववातं—देवानां भक्षणीयम्'—इति वि०।

वसतीवरीषु "धौतं" शोधितं सोमं "गावः" पशवः "पयोभिः" आशिरैः "स्वदन्ति" स्वादयन्ति ॥

"धौतंसुतं"-"धूतःसुतः"—इति पाठौ ॥ १ ॥

अथ तृतीया।

२ ३ २ ३१ २ ३१ २ ३ १ २

आदीमश्वन्नहेतारमृग्मिन्नभन्नमृताय।

२ ३ १ २ ३ १ ३

मधोरसꣳसधमादे ॥ ३ * ॥ १६

"आत्"† अनन्तरं "हेतारं" प्रेरकम्‡ "ईम्"¶ एनं "मधोः" मधुरस्य सोमस्य "रसं" "सधमादे" यज्ञे "अमृताय" अमरणाय "अशूशुभन् ऋत्विजः शोभयन्ति। तत्र दृष्टान्तः—"अश्वं न" यथा प्रेरका अश्वं सङ्ग्रामे शोभयन्ति तद्वत् ॥

"हेतारं"-"हेतारः"—इति पाठौ, "मधोः"-"मध्वः"—इति च ॥ ३ ॥ १६

१ २

॥ सन्तनि ॥ अमाहाउ। वायाꣳग्मुर्मा३१उवा२३।

५ २ १ २ १ ३ १ २ २ १

दा२३४या। अप्स्वदꣳयोगिरिष्ठाः। ग्मेनोहाउ। ना

२ २ ५ २ १

योनिमा ३ १ उवा २ ३। सा २ ३ ४ दात् ॥(१) ग्मुभ्रम

---

* ऋ० वे० ७, १, २४, १।

†, ¶ "आत्"—"ईम्"—इत्येतावुपसर्गौ—इति वि०।

‡ 'हेतारं—शीघ्रगामिनम्'—इति वि०।

मन्धोदेववातमप्सुधौतन्नृभीःसुता१म्। स्वदाहाउ। ता
यिगावःपा३१उवा२३। यो२३४भीः ॥(२) आदीमश्वन्न
क्षेतारमग्निमुभन्नमृतायाऽ३४५। मधोर्हाउ। रास१
मदाधा३१उवा२३। मा२३४दे३) ॥ १० * ॥ [१]

॥ गौषूक्तम् ॥ अमाव्य१मुस्रौं। हौहोवाहायिं।
दाया। अमुद्द्योगिरो२। ऊवायि। ऊवा२यि। छा२:।
प्येनोनयोनिमी२। ऊवायि। ऊवा२यि। सादा२३त्।
क्षो२वा२३४औहोवा ॥(१) मुभ्रमन्धोदेवौ। हौहोवाहा
यि। वाताम्। अप्सुधोतन्नृभी२। ऊवायि। ऊवा
२यि। सूता२म्। स्वदन्तिगावःपौ२। ऊवायि। ऊ
वा२यि। योभा२३यिः। हो२वा२३४औहोवा ॥(२)
आदीमश्वन्नहौ। हौहोवाहायि। ताराम्। अमृमु

* ऊ० गा० ७म० १च० १० सा०

भन्नमी२। ऊवायि। ऊवा२यि। तायाऽ२। मधोर
सऽ्सधी२। ऊवायि। ऊवा२यि। मादा२३थि।
हो२वा२३४ओहोवा। अग्निराऊता२३४५:(३)॥ १८*॥[२]

॥ ऐड न्ध क्षितम्॥ असाव्यऽ्शो। ह्वायि। मदा
२३या। अप्सइक्षोगाऽ्यिराऽ्यिष्ठाः। अ्ये नोनयो२३४
ह्वायि। नायिमाऽ्ह्वायि। सदात्। औ२३होवा॥(१)
प्रुभ्रमन्थो। ह्वायि। देववा२३ताम्। अप्सुधीतन्नृभा
१यि:सू३ताम्। स्वन्तिगो२३४ह्वायि। वा:पाऽ्ह्वायि।
योभायि:। औ२३होवा॥(२) आदीमस्थो। ह्वायि। न
ह्वेना२३राम्। अ्ग्नऽ्प्रुभन्नमा१र्त्ताऽ्या। मधोरसो२३
४ह्वायि। साधाऽ्ह्वायि। मादा। औ३ह्वोवा।
ह्वोप्रुई। डा(३)॥ ४†॥[३]

---

* ऊ० गा० ७प्र० २अ० १९सा०।

† ऊ० गा० १६प्र० १अ० ४सा०।

॥ अध्यर्धेडण्सोमसाम ॥ असाव्यण्शुर्मदाया३ए।

अप्सुदक्षोगिरिष्ठाः। प्रयेनोनया२३। हायि। नायि

माउवा। सादाउवा३ ॥(१) शुभ्रमन्थोदेववाता३मे।

अप्सुधौतन्नृभिःसुताम्। स्वदन्तिगा२३। हायि। वाः।

पाउवा। योभाउवा३ ॥(२) आदीमश्वन्नहेतारा३मे।

अशूशुभन्नमृताया। मधोरसा२३म्। हायि। साधा

उवा। मादाउवा३। ऊ३२३४पा(३) ॥ २ * ॥ [४].१६

अथ प्रगाथरूपे द्वितीय-सूक्ते*—

प्रथमा।

अभिद्युम्नम्बृहद्यशइषस्पतेदिदीहिदेवदेवयम्।

विकोशम्मध्यमंयुव ॥ १ ‡ ॥

हे "इषस्पते" अन्नस्य पते! "देव!" स्तोतव्य सोम! "द्युम्न" द्योतमानं "बृहत्" प्रभूतं "यशः" अन्नरूपं "देवयु"

---

* ऊ० गा० २०प्र० २अ० २सा०।

† 'द्यावन्नं साम'—इति वि०।

‡ ऋ० मा० ६, २, ४, १ (२मा० १२६प्र०)=ऋ० वे० ७, ५, १८, ४।

देवान् कामयमानं हविर्लक्षणं त्वदीयं रसम् "अभि दोदिहि" अस्मभ्यमाभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः। [यद्वा, हे सोम! यज्ञोऽत्र देवयुं देवानिच्छन्तं यजमानमभिलक्ष्य प्रकाशय। आमन्त्रितस्याविद्यमानवत्त्वेन (८,१,१९) पादादित्वादनिघातः। किञ्च "मयसम्" अन्तरिक्ष-स्थितं "कोशं" मेघं "वियव" हृष्यर्थं त्रिगमय विस्रंसय॥

"देवयु"-"देवयः"—इति पाठौ॥ १॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ ३ २४ ८ २ ३ २उ ७ २ ७ १ २
आव च्यस्व सुदक्षचम्वोःसुतोविशांवह्निर्नविश्पतिः।

३ २ ३१२ ३ ७ ३ २उ ३ १ ७ ३ १२
वृष्टिन्दिवःपवस्वरीतिमपोजिन्वन्गविष्टयेधियः॥ २*॥ १७

हे "सुदक्ष" शोभन-बल। "चम्वोः" अधिषवण-फलकयोः "सुतः" अभिषुतः त्वं "वह्निः न विश्पतिः" सर्वासां प्रजानां वोढा राजेव "विशां" प्रजानां वोढा सन् "आ वच्यस्व" आगच्छ कलशमापवस्व [वचेर्गत्यर्थस्य व्यत्ययेन श्यनि रूपम्! किञ्च त्वम् "अपः" अपाम् उदकादीनां "रीतिं" व्याप्तां गतिं वृष्टिं "दिवः" द्युलोकात् "परस्व" कुरु। किं कुर्वन्? "गविष्टये" गामात्मन इच्छते यजमानाय "धियः" कर्माणि "जिन्वन्" प्रेरयन्॥

"अपोजिन्वन्"-अपाञ्जिन्व"—इति पाठौ॥ २॥ १७

---

* ऋ० वे० ७, ५, १८, ५।

॥ च्यावनम् ॥ अभा२३४यि । द्युम्नम् । बृहा२३४
द्यशा६: । हाउ । आयिषस्या२३४ताये । दिदीहिदेव
देवायू२३४ष्टाये । वायिकोशा३म्मा३ । ध्यामा२३ष्
हा३४३यि । यू२३४वोऽहायि ॥ १ ॥ विकी२३४ । ग्मन् ।
ध्यमा२३४यवाऽ । हाउ । आवच्या२३४खा । मुदस्व
चमुवो.हूतो२३४हायि । वायिशांवा३क्षा३यिः । नावा२३
हा३४३यि । ग्या २ ३ ४ तोऽहायि ॥ (२) विश्वा२३४म् ।
वक्षिः । नवा३४यिशपतीऽः । हाउ । वाष्टिन्दा२३४यि
वाः । पवस्वरीतिमापो२३४हायि । जायिन्वाग्गा३वा३यि ।
ष्टाया२३हा३४३यि । धा२३४योऽहायि ३) ॥ ११ * ॥ [१]

॥ ऐषिरम् ॥ अभिद्युम्नम्बृहद्या३शाः । आयिषस्य
ते । दायिदी१हायिदे२ । वादा१यिवायू२म् । वायि

* ऊ० गा० ३प्र० १अ० ११सा ०।

६ ४ ५ ४ ५ २ ३
को१श्राम्मा२३ । ध्यमोवा । यू५वो६ह्वायि ॥(१) विको

२ १ २ १७ १ २
श्रम्मध्यमंयू३वा । आवच्यस्व । सूदह्वाचा२ । मूवो१:

१ २ ४ ५ ४ ५
सुता२: । वायिश्रा१वाङ्का२३यिः । नवोवा । ष्या५तो

५ १ २ २ १ २
६ह्वायि ॥(२) विश्रांवक्रिर्न्नविश्पा३तीः । वाष्टिन्दिवः ।

१७ १ २ १ २
पावस्वारी२ । तायिमा१पा२: । जायिन्वा१न्गावा२३

४ ५ ४ ५
यि । ष्टयोवा । धा५यो६ह्वायि(३) ॥ १ * ॥ [२]

१ १ २ ४ ५ २ ३ ५ २ १
॥ सफम् ॥ अभिद्यू३म्नम्बृ । ह्वद्या२३४श्राः । इष

१ १ २१ १ २ २ २ ५ १
स्यतायिदी२ । दीह्विदायिवा३दा३यि । वा३२३४यूम् ।

१ १ २ २ ३ ५
विको । श्रम्माध्या३मा३म् । यू३४५वो६ह्वायि(१)॥ १ २ †॥[३]

३ ४ ५ ३ ४ ५
॥ वाचःसाम ॥ अभिद्युम्नाम् । ह्वोयि । बृहद्यशा

५ १ २ १ २ १ १ २
ई६ । आयिषस्पति । दायिदी१ह्वायिदे२ । वादेवयुम् ।

---

* ऊ० गा० ५प्र० १अ० १सा० ।

† ऊ० गा० ९प्र० १अ० १३सा० ।

१ २ १ ४ १ ५
वायिकोइशाम्माइ३। ध्याइ३माइम्। यू३४५वो६ह्वा

७ ४र ५ ७ ३ ४ ५ ५ १ २
यि॥(१) विकोशम्मा। ह्वो। ध्यमंयुवा६ए। आवच्य

१० १र २ १ २०
स्व। स्तुदत्तावा२। मूवोःसुतः। वायिशा१वाङ्का २ ३

१ ४ २ ५ ३ ४र
यिः। नाइ३वाइयि। म्याइ४५तो६ह्वायि॥(२) विशो

५ २ ३ ४ ५ ५ १ २ १ ७
वक्षीः। ह्वोयि। नविश्पताह्वए। वार्ष्टिन्दिवः। पाव

१ २ १ २
स्वारी२। तायिमपः। जायिन्वा१न्गावा२३यि। ष्टार

४ ५ ५
३याइ। धाइ४५योह्वायि(३)॥१४ *॥ [४] १७

अथ तृतीय-तृचे*—

प्रथमा।

३ १र २र३ १ २ ३ २३१३ १ २
प्राणाग्निभ्रुर्मंह्वीनाꣳह्विन्वन्नृतस्यदीधितिम्।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विश्वापरिप्रियाभुवदध्वितारा॥१॥

---

* ऋ० मा० १४प्र० २अ० १४सा०।

• 'क्रौञ्चं साम'—इति वि०।

† ऋ० आ० ६, २, ३, ५ (२भा० २१२५०) = ऋ० वे० ७, ५, ४, १।

"प्राणा" ते [अनिते : यानचि "बहुलञ्छन्दसि (२,४,७३)" —इति विकरणस्य लुक्, "सुपां सुलुग् (७,१,३९)"—इति सुप-आकारादेशः] यज्ञस्य प्रापयिता चेष्टयिता "महीनां" महतीनां मंहनीयानां वा अपां "शिशुः" पुत्र-स्थानीयः सोमः "ऋतस्य" यज्ञस्य "दीधितिं" प्रकाशकं धारकं वा स्वीयं रसं "हिन्वन्" प्रेरयन् "विश्वा" सर्वाणि "प्रिया" प्रियाणि हवींषि "परिभुवत्" परिभवति व्याप्नोति। "अध" अपिच "हिता" द्विधा भवति दिवि च पृथिव्याञ्च वर्त्ततइत्यर्थः ॥

"प्राणा"-"क्राणा"--इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ ८ २ ३ १ १ २ ३ १ २ २ ३ २

उपचितस्यपाघ्योऽ३ऽरभक्तयङ्कृधापदम्।

३ १ १ ५ १ २ २ ३ १ २ ३ २

यज्ञस्यसप्तधामभिरधप्रियम् ॥ २* ॥

"चितस्य एतन्नामकस्य ऋषेस्तोतुर्मम यज्ञे "गुहा" गुहायां हृविर्द्धाने वर्त्तमानयोः "पाघ्योः" पोषणवद्दृढयोः अधिषवण-फलकयोः "पदं"स्थानं सोमः "यत्" यदा "उप अभक्त" सम-भजत। "अध" अनन्तरं "यज्ञस्य" "धामभिः" च धारकैः "सप्त" सप्तभिश्छन्दोभिः गायत्र्यादिभिः "प्रियम्" प्रीणयितारं सोमम् "अभि"ष्टुवन्ति ऋत्विजः [अपि वा सप्त सर्पणशीलैर्वसतीवर्या-दिभिरुदकैः सोममभिषुण्वन्ति ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ७, ४, ४, ३।

अथ तृतीया ।

१ १ २ १ २ १ १ २ १ २ २ १ २
त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद्रयिम् ।

२ २ २ १ १ २ २ २ १ १
मिमीते अस्य योजना विमुक्रतुः ॥ ३* ॥ १८

सोमः "त्रितस्य" मम यज्ञस्य स्वभूतानि "त्रीणि" सवनानि धारया आत्मीयया "वि धारया" । किञ्च पृष्ठेषु" सामसु "रयिं" दातारमिन्द्रम् "ऐरयत्" आयमतु "सुक्रतुः" शोभन यज्ञः स्तोता "अस्य" इन्द्रस्य "योजना" संयोजनादीनि स्तोत्राणि "वि मिमीते" करोति† यस्मादेवं तस्मादिन्द्रं सामसु प्रेरयत्वित्यर्थः ॥

"ऐरयत्"—"एरया"—इति पाठो ॥ ३ ॥ १८

२ १ २ १ २ २ १
॥ क्रोशम् ॥ प्राणा । शिशुर्म्महो । नाम् । हो

१ २ १ २ १
ई२ । हो । वाहोयि । हिन्वन्नृतस्य दीधितायिम् ।

२ १ २ २ १ २ १ १ २
विश्वापा१रा२३यि । प्रो३याभू३वात् । अधा २ ३ द्विता

२ १ २ १ २ १ १
३४३ ॥(१) उपा । त्रितस्यपा । घ्योः । होई२ । हो ।

---

* ऋ० वे० ७, ५, ४, ३ ।

† 'विमिमीते--मा माने, मानं करोति'—इति वि०

२र १ र १ १ २
वाह्वोयि। अभक्तयज्ञुहापदाम्। यज्ञास्या१सा २ ३।

२ १ २ २ १ २ १र १
:ग्ना३धामा३भायि। अधा२३प्रिया३४३म् ॥(२) त्रीणी।

र २र १ १ २र २ र
त्रितस्यधार। या। द्वोई२। ह्वो। वाह्वोयि। पृष्ठे

२ १ २ २ १ २ २
ष्वैरयद्रयायिम्। मिमायिते१आ२३। स्या३योजा३ना।

१ २ १
विसू२३क्रत्व३४३:। ओ२३४५ई। डा(३) ॥ १२*॥ [१]

२र र १ १ १
॥ त्रैतम्॥ प्राणाग्निग्नुर्मह्वायिनाम्। ह्विन्वन्नृतस्य

र २ र र ऽ१ ५ १
दीधितायिम्। विश्वापरिप्रिया३भूवो२३४ह्वायि। आ२

३ ५र र २ १ २ १ १ १ १ २
धा२३४औह्वोवा। ए३। द्विता२३४५ ॥(१) उपत्रितस्य

र १ २ १ र २ १ ऽ १
पाषायोः अभक्तयज्ञुह्वापदाम्। यज्ञस्यसन्नाधा३माभो

५ १ २ ५र र १ २ १ १ १ १
२३४ह्वायि। आ२धा२३४औह्वोवा। ए३। प्रिया२३४५

२र र १ १ १ र र
म् ॥(२) त्रीणित्रितस्यधारायाः। पृष्ठेष्वैरयद्रयायिम्।

---

* ज० गा० ३प्र० १अ० ११खं०।

२ २ २ २ १ ५ १ २ ५२ २
मिमीतेअस्यये।३जानो२३४हायि। वा२यिस्२३४औहो

२ १ ३ १ १ १ १
वा। ए३। क्रतू२३४५:३) ॥ २* ॥ [२]

२२ २ १२ २
॥ सुज्ञानम् ॥ प्राणाशिशूः। महीनाम्। हिन्व

१ २ २ २ १ १२
न्नार्त्ता२। स्यदीधितायिम्। विस्वापारा२यि। प्रिया३

३ ५२ २ १ २ १ २
भू२वा२३४औहोवा। अधद्वितए३ ॥ १) उपत्रिता। स्य

१ १ २ १ २ १ २ १
पार्षियोः। अभक्तायार२त्। गृहापदाम्। यज्ञस्यामा

१२ ३ ५२ २ १ १
२। प्रधा। मार२भा२३४औहोवा। अधप्रियमे३ ॥ २)

२२ २ १ २ २ १ १
चीणित्रिता। स्यधारया। पृष्ठेषूवा२यि। रयद्रया

२ २ १ १२ ३ ५२ २
यिम्। मिमीतेआ२। स्ययो। जा२ना२३४औहो

१ २ १ १ १ १ १
वा। विसुक्रतुरे३उपा२३४५(३) ॥ २०† ॥ ३]

२२ २ ३ १ ५
॥ दैवोदासम् ॥ प्राणा३१। शिशू३१२३४:। म।

१ २ ३ १ ३ १ ५२
ह्वा३यिनाम्। हिन्वा३१न्। कृता३१२३४। स्यदी।

---

* ऋ० गा० ४प्र० १च० २सा०।

† ऋ० गा० ७प्र० २च० २०सा०।

२ २ ३ २ ३ २ ५र
धाइयितायिम्। विश्वाइ१। पराइ१२३४यि। प्रिया।

२ र ३ ० ३ २ १ ५ ३ २
भूइवात्। अधाइ१। द्विताइ। ओ२३४वा ॥(१) उपा

३ २ ५र २ २ ३ २
३१। चिताइ१२३४। स्यपा। पाइर्योः। अभाइ१।

३ २ ५र २ २ ३ २
क्तयाइ१२३४त्। गुहा। पाइदाम्। यज्ञाइ१। स्य

२ ५र २ २ ३ २ ३ २
साइ१२३४। न्नधा। माइभायिः। अधाइ१। प्रियाइ

१ ५ ३र २ ३ २
म्। ओ२३४वा ॥(२) चीणीइ१। चिताइ१२३४। स्य

५र २ २ ३ २ २२ ५
धा। राइया। पृष्ठाइ१यि। ध्रुवाइ१२३४यि। रयत्।

२ २ ३ २ ३र २ ५ र
राइयायिम्। मिमाइ१यि। तेजाइ१२३४। स्ययो।

२ ३ ३२ ३ २ १ ५ ३
जाइनाँ। विसू३१। क्रतूइः। ओ२३४वा। ऊ२३४

५
पाँ(३) ॥ २१* ॥ [४]

१र र र २ ११
॥ शुध्यम् ॥ प्राणाग्निशू२र्मं। क्षीनोवा। क्षिन्वन्नृ

१ २ ३र २ १ २र १ २१र २ १
ता। स्यदीधितायिम्। विश्वापरिप्रियाभुवद्। धा२

---

* ऋ० गा० ७प्र० २अ० २१सा०।

२ १२ १ २ १
३। हिताउवा। शूधिया२। ए२३हिया३४३। ओ२
३४५ई। डा(१) ॥ १४* ॥ [५]

२२१२ ५ २ ३ ५
॥ पौष्कलम् ॥ प्राणाशा३यिशुः। माहा२३४यिनाम्।

२ १ २ १ २ ३ ५ २ १
हिन्वानृता। स्यादायिधौ२३४तोम। विश्वापरायि।

७ ३ २ १ ३ १ १ ११ २ १ २
प्रिया२भ२३४५वा६५६त्। अधद्विना२३४५ ॥(१) उपत्नीः

४५ २ ३ ५ २ १ २ १ २ ३
तस्य। पाषा२३४योः। अभाक्तयात्। गूह्यापा२३४

५ २ १ ७ ३ २
दाम्। यज्ञास्यमा। ग्नधा२मा२३४५भा६५६यिः। अ

१ ७ १ १ १ १ २२ १ २ ४५ २ ३ ५
धप्रिया२३४५म् ॥(२) त्रीणित्री३तस्य। धारा२३४या।

२ १ २ १ २ ३ ५ २ १ २
पृष्ठायिषुवायि। रायद्रा२३४यायिम्। मिमायितेआ।

७ ३ २ १३ १ १ १ १
स्यये२जा२३४५ना६५६। विमुक्तू२३४५:(३) ॥ २*॥ [६]

२२ २ २ १ २ १ २
॥ शुध्यम् ॥ प्राणाशिशू२र्म्म। हीनोवा। हिन्वन्नृ
१ २ ३२ २ १ २२ १ २१२ २ १
ता। स्यदीधितायिम्। विश्वापरिप्रियाभुवद्। धा२३।

---

* ऋ० गा० ६प्र० १च० १४सा०।

† ऋ० गा० ६प्र० ३च० २सा०।

२ १२ १ २ १
ह्विनाउवा । अूधिया२ ॥(१) उपत्विता२स्य । पाषियो

२१ २ १ २ १२१ २ १ २१ २१२ २
वा । अभक्तयात् । गुहापदाम् । यज्ञस्य सप्तधामभि

१ २ १२ १२
र२ । धा२३ । प्रियाउवा । अूधिया२ ॥(२) त्रीणित्रि

२ १ २१२१ २ २१ १
ता२स्य । धारयोवा । पृष्ठेषुवायि । रयद्रयायिम् ।

२ १२ २ १२२ १ २ १२
मिमीतिअश्वयोजनावि । मू२३ । क्रताउवा । अूधि

१ २ १
या२ । ए२३ह्याया३४३ । ओ२३४५ई । डा(३) ॥ ५*॥ [७]

२२ २ २ २ १ २
॥ वारवन्तीयोत्तरम् ॥ प्राणाग्निग्नाऔहोहायि । मा

३ ५ २ १ ५ १ २ २
हा२३४यिनाम् । हिन्वाना२३४हा । तस्यदोधितिंविश्वा

२ ३२ ४२ ५ १ ३ ५ २ ३ ५
पा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि । उरुवा२३४रायि ।

२ १२ १ १ ७ २ ६२ ५२ ५ १ ३ ५
प्रियाभु । वादधद्वा३४ । औहोवा । इहा२३४हायि ।

३२ १ ५२ ५ २ २ ५
औहोउ३१२३४ । ता । एहियाहा ॥(१) उपत्विताऔ

१ २ ३ ३ ५ १ १ ५ १ २
होहायि । स्थापाषा२३४योः । अभाक्ता२३४हा । यद्रुहा

* ज० गा० १२प्र० १अ० ५खा० ।

२ ३र ४र ५ १ ७ ५ २ १
पदंयज्ञस्या३४। औहोवा। इहा२३४हायि। उरुवा२

५ २ १र १ १ ७ २ ३र ४र ५ १ ३
३४सा। प्रधाम। भायिरधप्रा३४। औहोवा। इहा

५ ३र २ ५र ५
२३४हायि। औहो३१२३४। याम्। एहियाइहा ॥(२)

२र र र १ २ ३ ५ २ १
चीणित्रिताऔहोहायि। स्याधारा२३४या। पृष्ठायिषू

५ १र र २ ३र ४र ५ १ ३
२३४हायि। ऐरयद्रयिम्मिमीता३४। औहोवा। इहा

५ १ ३ ५ १ १र २ १ ७ २
२३४हायि। उरुवा२३४आ। स्ययोज। नाविस्तुक्रा३

३र ४र ५ १ ३ ५ ३र २
४। औहोवा। इहा२३४हायि। औहो३१२३४। तूः।

५ १ ५ ४
एहियायाईहा। हो५ई। डा(३) ॥ ८* ॥ [८]

२र र १ १ २ १
॥ वार्शम् ॥ प्राणाशिशूः। माहा ३ यिनाम्। हि

र ७ १ ५ र
न्वन्नृतस्यदीधि। तायिम्। विश्वा२पा२३४रायि। प्रि

र २ २ १ ३ ५र र
याभुवा३त्। ई३या। अध। द्वा२यिता२३४औहोवा ॥(१)

२ १ ३ २ १ र
उपचिता। स्यपाषा३योः। अभक्तयद्रुहाप। दाम्।

---

* ऋ० गा० १५ प्र० २ अ० ८ सा०।

३ १ ५ १ २ २ ३ २ १
यज्ञा२स्या२३४सा। प्राधामभा३यिः। ई३या। अध।

१ ५२ २ २२ १ २ १
प्रा२या२३४औहोवा ॥(२) त्रीणिचिता। स्यधारा३या।

१ २ २ ७ ३ ५ १ २
घृष्ठिंषैरयद्र। यायिम्। मिमा२यिते२३४आ। स्यायो

२ ३ २ १ ३ ५२ २ २
र्जना३। ई३या। विसु। क्रा२तू२३४औहोवा। ज

५
३२३४पा(३) ॥ ८* ॥ [९] १८

अथ चतुर्थ-ऋचे†—

प्रथमा।

१ २ ३ १ २ ७ २ ३ १ २ ३ १
पवस्ववाजसातये पवित्रेधारयासुतः।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
इन्द्रायसोमविष्णवेदेवेभ्योमधुमत्तरः ॥ १ ‡ ॥

हे "सोम!" "सुतः" अभिषुतः त्वम् "इन्द्राय" "विष्णवे" च अन्येभ्यो मित्रादिभ्यः "देवेभ्यः" "मधुमत्तरः" अतिशयेन माधुर्य्योपेतः सन् "वाजसातये" अन्न-लाभाय "पवित्रे" "धारया" "पवस्व" क्षर॥

---

* ऊ० गा० १६प्र० २ऋ० ८सा०।

† "गौरीवितं साम"—इति वि०

‡ ऋ० वे० ७, ४, २८, १।

"वाजसातये"-"वाजसातमः"—इति पाठौ, "मधुमत्तरः"-"मधुमत्तमः"—इति च ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

१ २ ३ १ २ १ १ ३ १ २ ३ १ २
त्वाꣳरिहन्तिधीतयोहरिम्पवित्रे अद्रुहः।
१ २ ३ २७ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
वत्सञ्जातन्नमातरःपवमानविधर्मणि ॥ २* ॥

हे "पवमान" पूयमान सोम ! "वि धर्मणि" विविधं हविषां धारके† यज्ञे "अद्रुहः" द्रोह-वर्जिताः "धीतयः" अङ्गुलयः [धीतय इति अङ्गुलिनाम (निघ० २,५,७)] "हरिं" हरित-वर्णं "पवित्रे" स्थितं "त्वां" "रिहन्ति" लिहन्ति निष्पीड़नार्थं स्पृशन्तीत्यर्थः। तत्र दृष्टान्तः—"वत्सं जातं न मातरः"; 'मातरः' मातृ-भूता गावः उत्पन्नं 'वत्सं' यथा 'लिहन्ति' तद्वत् ॥

"धीतयः"-"मातरः"—इति पाठौ, "मातरः"-"धेनवः"—इति च ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

१ २ २ ३ १ २ २
त्वन्द्याच्चमहिव्रतपृथिवीच्चातिजभ्रिषे।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १
प्रतिद्रापिममुञ्चथाःपवमानमहित्वना ॥ ३‡ ॥ १९

---

* ऋ० वे० ७, ४, २८, २।

† 'विविधे कर्मणि'—इति वि०।

‡ ऋ० वे० ७, ५, २८, ४।

हे "महिव्रत" महाकर्मन् सोम! "द्यां" द्युलकं "पृथिवीं च" "अति जभ्रिषे" अत्यन्तं बिभर्षि [डुभृञ् धारण पोषणयोः (त०उ०), तस्य छान्दसे लिटि (३,४,६) सर्वविधीनां छन्दसि वैकल्पिकत्वात् अत्र इडागमः। अन्तरिक्षे सोमात्मना,-पृथिव्यां लता-रूपेणेति एवं लोकद्वयवर्त्तित्वम्]। हे "पवमान' क्षरन्! त्वं "महित्वना" महत्त्वेन युक्तः सन् "द्रापिं" कवचं "प्रति अमुञ्चथाः" प्रतिमुञ्चसि संवृणोसि ॥ २ ॥ १९

॥ गौरीवितम् ॥ पव। स्वा३। जसातयायि।

पवित्रे धारयासुता२३:। आयिन्द्रायसो३१२३। मत्सा

यंयिष्णवायि। दायिवेभ्योमा३१२३। धुमोत्वा। ताय

रोहच्छायि ॥(१) तुत्वाम्। रिच्छा३। तिधीतयाः। छ

रिम्पवित्रेअक्षुहाः। वात्सच्छाता३१२३म्। नमायुतराः।

पावमाना३१२३। विधोवा। मायुणोहच्छायि ॥(२) तु

वम्। द्याच्चा३। महिव्रता। पृथिवीच्चातिजभ्रिषा२३

---

* 'द्रापिं'—दातव्यम् ** कंषां? यजमानानाम्'—इति वि०।

१ ८ २ २ १ ८ २
यि। प्रातिद्रापा३१२३यिम्। अमू५चथाः। पावमाना
४ ५ ४ ५
३१२३। मद्दोवा। त्वा५नो६द्दायि(३) ॥ १३ ॥ [१]

॥ पार्थम् ॥ २ १ २ १ ३
ओ३द्दो३द्दोयि। पव। स्ववा२। ज
२ ३ ५ २ १८ २ २ ३ ५
सातार२३४यायि। पवि। त्रेधा२। रयामूर२३४ताः।
२८ १ ३२ ३ ५१ ८८ १
इन्द्रा। यसो२। मवायिष्णा२३४वायि। देव। भ्यो
३ ४ २८ १
मा२३। धुमा३न्ता५रा६५६ः ॥(१) तुवाम्। रिहा२।
३१ ३ ५ २ १ २ ८ २ ३
तिधायिता२३४याः। हरिम्। पवा२यि। त्रे अद्रू२३
५ २ १८ ३१ ३ ५ २
४द्दाः। वत्सम्। जाता२म्। नमाता२३४राः। पव।
१८ २ ४ २ १८
माना२३। विधा३र्म्मा५णा६५६यि ॥(२) तुवम्। द्या
३ २१ ५ २ १८ ३ २ ३
च्चा२। मद्दिम्रा२३४ता। पृथि। वीच्चा२। तिज़्भी
५ २ १८ ३ २ ३ ५
२३४षायि। प्रति। द्रापा२यिम्। अमुचा२३४थाः।
२ २ २ १८ २
ओ३द्दो३द्दोयि। पव। माना२३। मद्दा३यित्वा५ना
६५६(३) ॥ १४† ॥ [२]

---

* ऊ० गा० ३प्र० १च० १३सा०।

† ऊ० गा० ३प्र० १च० १४सा०।

॥ रयिष्ठम् ॥ पवस्वा । जसाताऽयायि । औऽहो

ऽवा । इन्द्रायसोमविष्णवा२ ३ ४ ५ यि । इन्द्रायसो ।

मवायिष्णाऽवायि । औऽहोऽवा । देवेभ्योमधुमत्तरा२

ऽ४५ः । देवेभ्योमा । धुमात्ताऽराः । औऽहोऽवा ॥(१)

तुवाऽरिह्वा । तिधायिताऽयाः । औऽहोऽवा । हरि

म्यविचेअद्रूह्वा२३४५ः । हरिम्यवायि । चेआद्रूऽह्वाः ।

औऽहोऽवा । वत्सञ्जातन्नमातरा २ ३ ४ ५ः । वत्सञ्जा

ताम् । नमाताऽराः । औऽहोऽवा । पवमानविधर्म्म

णी२३४५ । पवमाना । विधर्म्माऽणायि । औ ३ हो ३

वा ॥(२) तुवन्द्याच्चा । मह्वायिव्राऽता । औ ३ हो ३

वा । पृथिवीच्चातिजभ्रिषा२३४५यि । पृथिवीच्चा । ति

जाभ्रीऽषायि । औऽहोऽवा । प्रतिद्रायिममुच्चथा२ ३

४५ः । प्रतिद्रापायिम् । अमूच्चाऽथाः । औऽहोऽवा ।

१ २र १ २३ १११ १ २र ३२ २१
पवमानमन्धित्वना२३४५। पवमानमन्धित्वना१। पवमाना।

१ २ २ ऽ २ २ ऽ २ २ ऽ २
महायित्वाइना। औहोइवा। औइहोइवा। ईइया।

ऽ २ ५ २ १ ५
ईइया ३ ४। हा। हाउवाइ। ऊ३२३४पा(४) ॥१*॥ [३]

५ ३ २ २ १
॥ द्विरभ्यस्तत्वाष्ट्रीसाम ॥ पव। स्ववाइ। हाइहा।

३ २र १ ५ १र २ २ २ १ २र
जसाताया२३४यि। पवि। त्रधाइ। हाइहा। रया

१ ५र ३१ २ २ ३ २ १
सूता२३४:। इन्द्रा। यसोइ। हाइहा। मविष्णा२

र ५र ३र २ १ २ ३ २ १
३४यि। देवे। भ्योमाइ। हाइहा। धूमाइहो२३

५ ४ ५ ५ र ३ १
४। वा। ता ५ रो ६ हायि ॥(१) तुवाम्। रिहा ३।

२ २ ३ २र १ ५ ३१ २
हाइहा। तिधीताया२३४:। हरिम्। यवाइयि। हा

२ ३२२ १ ५ ३र २ २
इहायि। त्रम्रद्रूहा२३४:। वत्सम्। जाताइम्। हा

२ ३ २र १ ५ ३र २ २ २
इहायि। नमातारा२३४:। पव। मानाइ। हाइहा

३ २ १ ५ ४ ५ ५
यि। विधाइहो२३४। वा। माप्रणोर्ग्यायि ॥(२) तुव

---

* ऊ० गा० ८प्र० १च० १सा०।

२र १ १ २ ३ १ १ ५
म्। द्याच्चा३। हाइहा। महिव्राता२३४। घृथि।

१र १ २ ३ ३ २ १ ५ १र
वौच्चा३। हाइहा। तिजभ्रीषा२३४यि। प्रति। द्रा

१ २ २ ३ २ १ ५ २र
प्राइयिम्। हाइहायि। अमुच्चाथा२३४:। पव। मा

२ २. ३ ३ २ १ ५ ४
नाइ। हाइहायि। मद्दा३हो२३४। वा। त्वा५नो६

५
हायि(३) ॥ ६* ॥ [४]

२ २ १ ४र ५र २
॥ श्यावाश्वम् ॥ पवा ३१। स्वाइवा। जसा। ता

४र ५ १ र र १र १
३ये। एद्दिया। पा। विन्द्रे धारा। या। सुताइः।

१र र १ र २ ४ ५ १र
एद्दिया२। इन्द्रायसोमाइवाइयि। त्रा२३४वायि। ऐ

१र र र १र १ ४ २
हा२यि। एद्दिया२। देवेभ्योमाधूइमाइ। ता३४४रो

५ २ १ १ ४ ५र २
६हायि ॥(१) तुवा३१म्। राइयिद्ध। निधी। ताइइः।

५ १ २ १
एहिया। हा। रिम्यविन्द्रे। अ। द्रुहा२:। एद्दि

१र १ ४ ५ २र
या२। वत्सज्जातान्नोइमाइ। ता२३४राः। ऐहा२

---

* ऊ० गा० ८प्र० २अ० ६मा०

१र १र २ ४ २
यि। एंहिया२। पवमानावा३यिधा३। मा३४५णो६

५ ३२ १ ४ ५ २ ४
च्चायि ॥(२) तुवा३१म्। द्या३च्च। मच्चि। त्रा३त।

५ १ र र २ १
एच्चिया। पा। र्थिवीच्चातायि। ज। भ्रिषा२यि।

१र १र २ ४ ५ १र
एच्चिया२। प्रतिद्रापायिमा३सू३। चा२३४थाः। ऐ

२र १र २ ४ १
च्चा२यि। एच्चिया२। पवमानामा३हा३यि। त्वा३४५

५
नोर्च्चायि(३) ॥ १८* ॥ [५]

२ र १ १
॥ आन्धीगवम् ॥ पवस्ववाजसा१तायायि। पवित्रे।

र २ १ १ र २ र १ ३ १
धारा२३या। ऊम्मा२१ऽ२। सुतइन्द्रायसोमविष्णवा२

१ १ १ १ २ २ २ २
३४५यि। दायिवा३उवा। भ्यो२मा। धू२३मा। त

१ २ ४ ५ २र २ १
रा। ओ३होवा ॥(१) त्वाऽरिहन्तिधा१यितायाः। च्च

२ १ १ र १ १ र १
रिष्य। वित्र२३आ। ऊम्मा२१ऽ२। द्रुहोवत्मच्चातन्न

२र १ ३ १ १ १ १ २ २ १
मातरा२३४५:। पावा३उवा। मा२ना। वा २ ३ यि

---

* ऊ० गा० १५प्र० २अ० १९सा०।

२ १ २ ४ ५ १
धा । मणा । औ३ह्वोवा ॥(२) त्वन्द्याच्चमद्दा १ यित्रा

२ १ २ २ २ १ २
ता । पृथिवीम् । चाता२३यिजा । ऊम्मा२१।२ । भ्रि

२ २२ १ २ ३ १११ १ २ २ १
षेप्रतिद्रापिममुच्चथा२३४५ः । पावा३उवा । मा२ना ।

२ १ २ ४ ५ ४
मा२३ह्वायि । त्वना । औ३ह्वोवा । ह्वो५ई । डा(३) ।

॥ २०* ॥ [६]

२ १ ४२ ५ २२ ३ ४
॥ आकूपारे ॥ पवस्वा२३वाज । सांता२३४याय ।

१ १२ २२ १ २ २ २ १
पवा२यिस्वधा । रयासुताः । इन्द्रायासो२ । मविष्ण

१२ २ १२ १ ४ २ १
वायि । देवेभ्योमा२३ । धू२३मा३ । ता३४५ रो ६ ह्वा

२ १२ ४ ५ २२ ३ ५ १
यि ॥(१) तुवाँरा२३यिहन्ति । धीता२३४याः । ह्वरा

१ २२ १ २ १ २ १
२यिम्पवायि । त्रे अद्रुह्वाः । वत्सञ्जाता२म् । नमात

२ १ १ ४ २ ५
राः । पवमाना२३ । वा२३यिधा३ । मा३४५णो६ह्वा

२ १ ४ ५ २ ३ ५ १
यि ॥(२) तुवन्द्या२३च्चम । ह्विवा२३४ता । पृथा२यि

---

* ऋ० मा० १५प्र० २अ० २०सा०

१र २ १ २ १
वौच्चा। तिजभिषायि। प्रतिद्रापा२यिम्। अमुच्च

२ १ १ ४ २ ४
थाः। पवमाना२३। मा२३च्चा३यि। त्वा३४५नोऽच्चा

यि(३) ॥ २१* ॥ [७]

२ १र २ १
॥ आच्चेयम्॥ पवस्ववा। जसाता२३यायि। पा

२र १र २ १र र र
विच्चेधा। रयासू२३ताः। इन्द्रायसो। माविष्णावा२ं

१र १ २ ४ ५ ५
यि। देवेभ्योऽमाऽ। धुमोवा। ताऽरोऽच्चायि ॥(१)

२ र १र १ १ २ १ २र १
तुवाँरिच्चा। तिधीता२३याः। च्चारिपवि। च्चेऽद्र

२ १ र ७५ १ २ २
२३च्चाः। वत्सञ्जातम्। नामातारा२ः। पवामाऽना२।

४ ५ ४ ५ २ र १
विधोवा। माऽणोऽच्चायि ॥(२) तुवन्द्याच्चा। मच्चित्रा

२ १ १र १ १ २ १ ८
२३ता। पार्थिवीच्चा। तिजभ्री२३षायि। प्रतिद्रापिम्।

७ १ २ २ ४ ५ ४
आमुच्चाथा२ः। पवामाऽनाऽ। मच्चोवा। त्वाऽनो

५
ऽच्चायि(३) ॥ १०† ॥ [८]

---

* ऊ० गा० १५प्र० २च० २१सा०।

† ऊ० गा० १६प्र० १च० १९सा०।

४३ ४ ३ ४२
॥ यज्ञायज्ञीयम् ॥ पवाऽ५स्व। वा३जा३सा३साता

५ १ २ २ १ २ २ १ १ २
यायि। पावित्रेधा। रा३याम्३ताः। इन्द्रा२य। सो

२ १ २ २ १ २२
मा२३वा। ऊम्मायि। ष्णा३वायि। दायिवेभ्योमधुमा

ऽ२ २ १ २ १२ २ २
२त्तराउ ॥(१) राख्ष। वाꣳरिक्षन्तिधीतयोहरिम्यवायि।

२ १ २ २ १ २ १ २ १
त्रे३आद्र३हाः। वत्सा२जा। तन्ना२३मा। ऊम्मायि।

२ १ १ २ ऽ ३ १ २ १
ताऽराः। पावमानविधा २ म्माणाउ ॥(२) णायिष्ठ। व

८ २ २ २ २ १
न्द्याच्चमच्चिव्रतपृथिवीच्चा। तीऽजाभ्रीऽषायि। प्रातार

१२ २ १ २ २ १ २
यिद्रा। पिमा२३मू। ऊम्मायि। चाऽथाः। पावमान

ऽ ३ २ ऽ १ १ १
मह्या२यित्वनाउ। वा३४५(३) ॥ ९ ॥ [९]

१ ५ २२ १२
॥ त्रासदस्यवम् ॥ पा२३४। व। स्ववा। जासात

१ २ ५ २२ १२
या२३यि। पा२३४। वि। त्रेधा। रायासुता२३ः।

१ २ ५ २२ १ १
आ२३४यि। द्रभयसो। माविष्णवा२३यि। दा२३४यि।

---

* ऋ० गा० १६प्र० २अ० ९सा०।

र र ५ २१ २ १ र
वे। भ्योमा। धुमत्तरा३१उ ॥(१) तू२३४। वाम्।

५ २र १ १ ५
रिच्छा। तीधीतया२३:। च्छा२३४। रिम्। पवायि।

२र १ १ र ५ २र १
त्रे अद्रू च्छा२३:। वा२३४। त्सम्। जाताम्। नाम्मा

१ र ५ २र १ २.
तरा२३:। पा२३४। व। माना। वोधम्म णा३१उ ॥(२)

१ र ५ २र १ १
तू२३४। वम्। द्याच्छा। माच्छिव्रता२३। पा२३४।

र ५ २र १ १
र्थि। वीच्छा। तौजम्रिषा२३यि। प्रा२३४। ति।

र ५ २र १ १ र ५
द्रापायिम्। आमुच्छथा२३:। पा२३४। व। माना।

२र १ २ १ १ १ १
माच्छित्वना३१उ। वा२३४५(३) ॥ ३* ॥ [१०]

३ ५ र ६र ४ ५र २
॥ वषट्कारनिधनम्॥ पवस्व वाजसातये। पवस्वा

४र ५ ४र ५ २ र ७ १ ७ १ २
३वाजसातयायि। पवित्रे धारा३यासुता२:। रयासू१

१र ऽ २ र १ ७
ता२३:। ओमो३वा। इन्द्रायसोमा३वायिष्णवा२यि।

१ २ १र ऽ २ र र र १ ७
मवायिष्णा१वा२३यि। ओमो३वा। देवेभ्योमध३मात्त

---

* ऋ० गा० २० प्र० २ ऋ० ३ सा०।

रा२:। धुमात्ता१रा२३:। ओम्। ओ२। वा२३४।
ओहोवा। ऊ२३०पा(१) ॥ २* ॥ [११]

॥ प्रुड्वाप्रुड्वीयाद्यम्॥ त्वन्द्याच्चमहित्रता। पृथिवी
ष्वातिजभ्री२३षाषि। प्रतिद्रापिममुच्चा२३थाः। पवमा
ना३। मा२। हित्वा३४ ओहोवा। ना२३
४५ (३) ॥ १२† ॥ [१२] १९

अथ पञ्चम-ऋचेः—

प्रथमा।

इन्दुर्वाजीपवतेगोन्योघा
इन्द्रेसोमःसहइन्वन्मदाय।
हन्तिरक्षोबाधतेपर्यरातिं
वरिवस्कृण्वन्वृजनस्यराजा ॥ १‡ ॥

---

* ऊ० गा० २३प्र० ३अ० २सा०।

† ऊ० गा० २३प्र० १अ० १२सा०।

‡ 'दाश्वत्यं साम'—इति वि०।

¶ ऋ० आ० ६, १, ४, ८ (२मा० १३९४०)=ऋ०वे० ७, ४, १२, ५।

"इन्द्रः" चरण-शीलः "सोमः" "वाजी" बलवान् "गोन्योघा" गमनशील-नीचीनाग्र-रस-सङ्घातः "इन्द्रे" "सहः" बलकरं रसम् "इन्वन्" प्रेरयन् सोमः "मदाय" अस्य मदार्थं "पवते" चरति। किञ्च "रक्षः" राक्षस-कुलं हन्ति" हिनस्ति। किञ्च "अरातिं" शत्रुं "परि बाधते" परितः संहरति। कीदृशः? "वरिवः" वरणीयं धनं "कृणवन्" स्तोतॄणां कुर्वन् "इजनस्य" बलस्य "राजा" ईशिता सोमइति ॥

"अरातिम्"-अरातीः"—इति पाठो ॥ १ ॥

अथ द्वितीया।

२ ३१ २ ३१ २ ३१
अधधारयामध्वापृचान

३ १२ २२ ३ २ १
स्तिरोरोमपवतेअद्रिदुग्धः।

२३ १ २ ३ १ २ ३ २
इन्दुरिन्द्रस्यसख्यञ्जषाणो

३२ ३१ २ ३ १२ २२
देवोदेवस्यमत्सरोमदाय ॥ २* ॥

"अध" अथ अनन्तरं "अद्रि दुग्धः" ग्रावभिर्दुग्धोऽभिषुतः सोमः "मध्वा" मदकारिण्या "धारया "पृचानः" देवान् सम्पर्चयन्† "रोम"‡ अवि-रोमभिः कृतं पवित्रं "तिरः"

---

* ऋ० वे० ७, ४, १३, १।

† 'पृचानः—निष्पाद्यमानः'—इति वि०।

‡ 'रोम—रोमाणि चर्ममयानि, दशापवित्रस्येत्यर्थः'—इति वि०।

तिरस्कृत्य व्यवधायकं कृत्वा "पवते" कलशेषु क्षरति। किञ्च "इन्द्रस्य" "सख्यं" सखिभावं कर्म वा "जुषाणः" सेवमानो "देवः" द्योतमानः "मत्सरः" मदकरः* "इन्दुः" सोमः "देवस्य" इन्द्रस्य "मदाय" मदार्थं "पवते" क्षरति ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ २ २१ १ ३ १
अभिव्रतानिपवतेपुनानो

१ २ ३ १उ १ १ २ ३र १
देवोदेवांत्स्वेनरसेनपृञ्चन्।

२ १ १ १ २१र २र १
इन्दुर्धर्माण्यृतुथावसानो

२३ १ २ ३ २ १ २
दशक्षिपोअव्यतसानोअव्ये ॥ ३१ ॥ २०

"धर्माणि" धारकाणि "व्रतानि" कर्माणि "ऋतुथा" ऋतोः काले "वसानः" आच्छादयन् "इन्दुः" सोमः "पुनानः" पूयमानः सन् "अभि पवते" कलशानभिलक्ष्य क्षरति। कीदृशः? "देवः" सङ्क्रीड़न-शीलः‡ 'स्वेन आत्मीयेन "रसेन" इन्द्रादीन् "पृञ्चन्" सम्पर्चयन् संयोजयन्¶। तमिमं सोमं

---

* 'मत्सरः—मदनीयः भक्षणीयो वा"—इति वि०।

† ऋ० वे० ७, ४, १२, २।

‡ 'देवः—सोमः दानादि-गुण-युक्तः'—इति वि०।

¶ 'पृचन्—सर्पयन् प्रीणयन् वा'—इति वि०।

"दश" दशसङ्ख्याकाः "क्षिपः"* [अङ्गुलि-नामैतत् (निघ० २,५,२)] कर्मार्थं प्रेर्यत इति तत्सङ्ख्याका अङ्गुलयः "सातौ" समुक्षितेः† "अव्ये" अवि-भवे पवित्रे "अव्यत" गमयन्ति [यद्वा, तत्र पवित्रे पूयमानं सोमम् अव्यत गच्छन्ति। वी गत्यादिषु (अदा०प०) लङि व्यत्ययेनात्मनेपदम् ॥

"व्रतानि"-"प्रियाणि"—इति पाठौ ॥ ३ ॥ २०

॥ दाशस्यत्यम् ॥ इन्दुरौ३ह्वोवाह्वाईया। वाजाउ।
वा३। ह्वाउवा। पवतेगोनियोघाउ। वा३। ह्वाउ
वा। इन्द्रायिसोमः। साह्वइन्वाउ। वा३। ह्वाउवा
३। मा३दा२३४औह्वोवा। या२३४५। ह्वन्तायिरत्नो।
बाधातायिषाउ। वा३। ह्वाउवा३। मा२दा२३४औ
ह्वोवा। तो२३४५म्। वरायिवस्कृ। एवन्वृजनाउ।
वा३। ह्वाउवा३। स्या२रा२३४औह्वोवा। जा २ ३

---

* 'क्षिपः—क्षिप्यन्त इति क्षिपः अङ्गुल्यः,—इति वि०

† 'उक्षे प्रदेशे'—इति वि०।

१ १ २ ३ ३ ३ ३ १ २ ३ १
४५ ॥(१) अधौ३ह्वोवाह्वा३र्द्यया । धाराउ । वा३ । ह्वाउ

३ ३ १ २ २ १
वा । यामधुवापृचामाउ । वा३ । ह्वाउवा । तिरोरो

२० ९ २ १ १ १
म । पवाताआउ । वा३ । ह्वाउवा३ । द्रा२इदू२३४

५३ ३ ३ १ १ १ १ १ १ १
म्यौह्वोवा । ग्धा२३४५: । इन्दूरायिन्द्रा । स्यसाखीया

२ १ ३ ५३ ३ २ ११
उ । वा३ । ह्वाउवा३ । जू२षा२३४औह्वोवा । णा२३

११ २३१ १ १ १ २
४५: । देवोदायिवा । स्यमात्माराउ । वा३ । ह्वाउ

१ ३ ५३ ३ १ १ १ १ १२ ३
वा३ । मा२दा२३४औह्वोवा । या२३४५ ॥(२) अभौह्वो

३ ३ १ २ १ ३ १
वाह्वाईया । व्रताउ । वा३ । ह्वाउवा । निपवतेपु

२ २ १ १ ३ १
नानाउ । वा३ । ह्वाउवा । देवोदायिवान् । स्वेना

२ १ १ ५३ ३
रास्माउ । वा३ । ह्वाउवा३ । ना२पा२३४औह्वोवा ।

१ १ १ १ १ १ १ १ १
चा२३४५न् । इन्दूर्द्वार्म्मा । णियार्त्तथाउ । वा३ । ह्वा

१ ३ ५३ ३ २ १ १ १ १ १
उवा३ । वा२सा२३४औह्वोवा । ना२३४५: । दशाह्वा

२ १ २ २ १ १
यिपो। अव्यातासाउ। वाइ। ह्वाउवाइ। नोरआ

५८ २ २ १ १ १ १
२३४औहोवा। व्या२३४५यि(३) ॥ १५* ॥ [१]

॥ सम्मावैयश्वम् ॥ ओ३ह्वायि। ओ३ह्वा। ओह्वा।

१ ऽ १ २ १ २ २१२ . १ १ ४
इया२। ओ३हा३ए। इन्दुर्वाजी। पवते। गोनियो.

५ २१२२ २१ १ २ ३ ४ ५ १ १
घाः। इन्द्रेसोमाः। सह्इ। न्वन्मदाया। ह्वन्तिर

२ १२ २३४५ २ १ ३
ह्वो। बाइधते। पर्य्यरातीम्। वरिवस्का। एवा३

१ २ २ ४ २ १ २
न्वृज। नाइ४३। स्याइरा५जा६५६ ॥(१) अधधारा।

२ १ २ ३ ४ ५ २१२२ २१२ २
याइमधु। बापृचानाः। तिरोरोमा। पवते। अद्रि

४ ५ २ १ १ २ ३ ४ ५
दुग्धाः। इन्दुरिन्द्रा। स्या३ सखि। यञ्जषाणाः।

२२१२२ २ १ १ २ ४
देवोदेवा। स्यमत्स। रो३४३। माइदा५या६५६ ॥(२)

२ १ २ १ २ ३ ४ ५ २२२२ २
अभिव्रता। नोइपव। तेपुनानाः। देवोदेवान्। स्व

१ २ ३ ४ ५ ५ १ २ १ २ ३
इनर। सेनप्रचान्। इन्दुर्ब्रह्मा। णोइच्छतु। थाव

---

* ऋ० मा० ६प्र० १ख० १५सा० ।

४ ५ २ १ २ २ १ १
सानाः। ओ३हायि। ओ३हा। ओहा। इया२।

ऽ २ २ १ १ १ २ २ ४
ओ३च्चाइए। दशक्षियो। अव्यत। सा३४३। नो३आ

५व्याई५६यि(३)॥ ५*॥ [२] २०

इति सामवेदार्थ-प्रकाशे उत्तरार्चस्य षष्ठस्याध्यायस्य

षष्ठः खण्डः†॥ ६॥

अथ सप्तमे खण्डे,‡ प्रथम-सूक्तम्¶—

प्रथमा।

१ २ २१ २ २ १२
आतेअग्नइधीमहिद्युमन्तन्देवाजरम्।

२३ २ ३१२ २ २ ३ १२ ३१८
यद्धस्यतेपनीयसीसमिद्दीदयतिद्यवी

२८ ३ २ ३ १ २
षण्णक्तोषध्यआभर॥ १॥

---

* ऊ० गा० ८प्र० २अ० ५सा०।

† 'यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोम साम'—इति वि०।

‡ 'इदानीमुक्थसामानि'—इति वि०।

¶ 'सप्तमं साम'—इति वि०।

§ ऋ० आ० ५, १, ४, १ (१मा० ८५४मृ०) = ऋ० वे० ३, ८, २२, ४

हे "अग्ने!" "द्युमन्तं" दीप्तिमन्तम् "अजरम्" अजीर्णम् "ते" त्वाम् "आ" सर्वतः "इधीमहि" दीपयामः । "यत् ह" यदा खलु "ते" तव "स्या" सा "पनीयसी" स्तुत्या "समित्" दीप्तिं "दिवि" द्युलोके "दीदयति" दीप्यते तदा हे अग्ने! "स्तोतृभ्यः" अस्मभ्यम् "इषम्" अन्नम् "आभर" आहर ॥१॥

अथ द्वितीया ।

१ २ २ २ २ २ २ १ २
आतेअग्नऋचाहविःशुक्रस्यज्योतिषस्पते ।

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुश्चन्द्रदस्मविश्पतेहव्यवाट्तुभ्यꣳहूयत

३ १ १ २ २ ३ १ २
इषꣳस्तोतृभ्यआभर ॥ २* ॥

हे "ज्योतिषस्पते" दीप्तेः स्वामिन् अग्ने! "शुक्रस्य" दीप्तस्य "ते" तुभ्यम् "ऋचा" मन्त्रेण सह† "हविः"‡ "आ" आभिमुख्येन "हूयते"। हे "सुश्चन्द्र" सुष्ठाह्लादक! शोभन-हिरण्य! वा, हे "दस्म" शत्रूणामुपक्षपयितः!। श्विष्ट गतम् ॥

"ज्योतिषः"--"शोचिषः"—इति पाठौ ॥ २ ॥

---

* ऋ० वे० ३, ८, २२, ५।

† 'याज्यानुवाक्या-लक्षणया'—इति वि०।

‡ 'हविः—चरु-पुरोडाशादि-लक्षणम्—इति वि०।

अथ तृतीया।

१र २ १ २ २ १ १
ओभेसुष्वन्द्रविश्पतेदर्वीश्रीणीषआसनि।

२ २ २।१ २ २ १ २ २
उतोनउत्पुपूर्याउक्थेषुशवसस्पत

१ १ २ २ २ १ २
इषण्स्तोतृभ्य आभर ॥ ३* ॥ २१*

हे "सुष्वन्द्र" शोभनाह्लादक! शोभन-हिरण्य! वा, अग्ने! "उभे" "दर्वी" दर्व्यौ हविः-पूर्णे जुह्वप्रभृती "आसनि" आस्ये "आ श्रीणीषे" आश्रयसि पचसि वा "उतो"† अपिच "नः" अस्मान् "उक्थेषु" यागेषु‡ "उत्पुपूर्याः उत्पूरयसि फलैः। हे "शवसस्पते" बलस्य पालयितः!। इषमित्यादि गतम् ॥३॥२१

१र ४र ५ र २ ४ ५
॥ सञ्जयस् ॥ आतेअग्नऽधी। माऽह्वायि। द्युम

२ ४र५ ४ ५ ३ ४ ३र ४र ३ ४र ५ र ४ ३ ४र ३ ४ ५
न्ताऽइन्देवऽअजरम्। यद्ध्यातेपनीयसी। समिद्दीदयता

१ ६ ६ २ २ ५ ३र ४र ५ र
यि। ऊं३। ऊम्। द्या२३४वी ॥(१) आतेअग्नऽऋचा।

२ ४ ५ २ ४र ५ ४ ५ ३ ४ ३ ४
हाऽवायिः। शुक्रस्याऽज्योतिषस्पतायि। सुष्वन्द्रदस्म

---

* ऋ० वे० ७, ८, २३, ४।

†, ¶ 'उत उ—इति पदपूरणः'—इति वि०।

‡ 'उक्थेषु—सामसु'—इति वि०।

२ ४ र २ ५ र २ ४ ५ ऽ १र २ ५
विश्व तेऽद्व्यवाट्तुभ्य॰ऽइ। ऊऽइ। ऊम्। या२३४ता

२र ४र ५ २ ४ ५ र २ ४
यि॥(२) ओभेसुष्वन्द्रवि। ष्याइतायि। दवीआइयि

र्र ५ ४५ ५ ३र ४ २ ४ र र ३र ४ ५ ऽ
णीषआसनायि। उतोनउत्युपूर्य्याउक्थ्युषुग्रवसा। ऊं३

२ ५ १ र २ २ ऽ
३ऊम्। पा२३४तायि। इषण्स्तोनृभ्याइआ। ऊं३।

२ २ ५
ऊम्३४म्। भाइ४५रोईद्दायि(३)॥ १६ *॥ [१०]

१ र ५ र ४ ५
॥ सौभगतम्॥ आ२३४। तेअग्नइधी। माद्दायि।

२ र १ २ २ १ २ २
द्युमन्तन्देवाइ। आ२३। जरमा। यद्वास्याइताइयि।

१ २ ५ २ १ १ २ ३
पानी२या२३४सी। समिद्धी२दय। ता२३यि। द्यवि

२ १ र ५ र ४ ५ २
या॥(१) आ२३४। तेअग्नक्रत्वा। हावायिः। भुक्र

र १ २ २ २ १ २ २
स्यज्योतीइ। षा२३:। पतआ। सुष्वान्द्राइदाइ।

१ २ ५ २ १ १
स्रवा२यिअपा२३४तायि। द्रव्यवा२ट्तुभ्यम्। ऊ२३।

२ २ २ १ र ५ ४ ५
यतआ॥(२) ओ२३४। भेसुष्वन्द्रवि। ष्पातायि।

• ऊ० मा० १अ० १ख० १६मा०।

१ र र र ३र १ २ ३ २ १ ० २
दवीश्रीणीषे३ । आ२३ । सनिया । उतोना३ऊ३त् ।

१ ३ ५ २ १र १ २ ३ २
पुपू२रा२३४याः । उक्थेषू२शव । सा२३: । पतआ ।

१ २ २ १ ४ २ ५
इषाण्स्तो३त्तृ३ । भ्या२३आ३ । भा३४ ५ रो ६ ह्वायि ।

॥ ६ * ॥ [१२] २१

अथ द्वितीयऽर्धर्चे—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्रायसामगायतविप्रायबृहतेबृहत् ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
ब्रह्मकृतेविपश्चितेपनस्यवे ॥ १ ॥

हे उद्गातारः ! "इन्द्राय" "बृहत्" एतन्नामकं साम "गायत" उच्चरत । कीदृशाय ? "विप्राय" मेधाविने "बृहते" महते "ब्रह्मकृते" हविर्लक्षणस्यान्नस्य कर्त्रे "विपश्चिते" विदुषे "पनस्यवे" स्तुतिमिच्छते ॥

"ब्रह्मकृते"-"धर्मकृते"—इति पाठो ॥ १ ॥

---

* ऋ० गा० १७प्र० १च० ६सा० ।

† ऋ० आ० ४, २, ४, ८ (१भा० ७६९ पृ०)=ऋ० वे० ६, ७, १, १ ।

‡ 'महावैश्वामित्रं साम'—इति वि० ।

अथ द्वितीया ।

१र २र ३१२ १ १र २र
त्वमिन्द्राभिभूरसित्वꣳसूर्य्यमरोचयः ।

१ १२ ३१२ ३१ २
विश्वकर्म्माविश्वदेवोमह्वाꣳअसि ॥ २ * ॥

हे "इन्द्र!" "त्वम्" "अभिभूः" शत्रूणाम् अभिभविता "असि" भवसि" किञ्च "त्वम्" "सूर्यम्" आदित्यम् "अरोचयः" तेजोभिरदीपय,† किञ्च "विश्वकर्मा" विश्वस्य कर्त्तासि "विश्वदेवः" सर्वदेवश्चासि [तथाच यजुर्ब्राह्मणम्—"अग्निं वा अन्वन्या देवता इन्द्रमन्वन्या" इति] अतो "महान्" सर्वाधिकोऽसि ॥२॥

अथ तृतीया ।

३ २ ३ १ १३ २ ११ ३ २ ३ १
विभ्राजज्ज्योतिषास्वाऽ३ऽरगच्छोरोचनन्दिवः ।

३ १ २ ३ २ १
देवास्तइन्द्रसख्याययेमिरे ॥ ३ ‡ ॥ २२

हे "इन्द्र!" त्वं "ज्योतिषा" तेजसा "दिवः" आदित्यस्य "रोचनं" प्रकाशकं अधिकरणत्वेन "स्वः" स्वर्गं "विभ्राजत्" प्रकाशयन् "अगच्छः" अप्राप्नोः, किञ्च "देवाः" सर्वाः "ते" तव

---

* ऋ० वे० ६, ७, १, २ ।

† 'त्वं सूर्यमपि दीपयसे'—इति वि०

‡ ऋ० वे० ६, ७, १, ३ ।

"सख्याय" मित्रत्वाय "येमिरे" स्वं स्वमात्मानं नियमितवन्तः* अस्माकम् इन्द्रः सखा यथा स्यादिति सर्वे देवाः प्रयत्नमकार्षुरित्यर्थः ॥ ३ ॥ २२

२ २ १ २ ४ २
॥ सौमित्रम् ॥ औह्होहोयि । औ३ह्होह्३यि । ओ

१ २ १२ २ ३ १ १ १ १ १
३२३४५वा६५६ । इन्द्रा२यसामगायता२३४५ । विप्रा२

२ २ १ १ १ १ १ १ २ १
यबृहा१त् । ब्रह्मकृते२विपश्चिते२३४५ । ए३ । पनस्य

१ १ १ १ १ १ २ १ २ १ १ १ १ १ १ २ २
वे२३४५ ॥(१) त्वमिन्द्राभिभूरसी२३४५ । त्वꣳसूर्य्यमरो

१ १ १ १ १ २ १ २ १ २ ३ १ १ १ १ २ २
चया२३४५: । विश्वकर्म्मा विश्वदेवा२३४५: । ए३ । म

१ २ १ १ १ १ २ १ २ २ १ २ १ १ १ १
हाꣳअसा२३४५यि ॥(२) विभ्राजज्ज्योतिषासुवा२३४५: ।

१ २ २ १ २ २ १ २ २ १ २ १ १ १ १
अगच्छोरोचनन्दिवा१: । देवास्त इन्द्रसख्याया२३४५ ।

२ २ १ २ ४ २ २
औंहौह्होयि । औ३ह्होह्३यि । ओ३२३४५वा६५६ । ए३ ।

२ १ १ १ १ १
येमिरा२३४५यि(३) ॥ १७ † ॥ [१] २२

---

* 'एतद्रूपं भवति—त्वदीयाय सख्याय चात्मानं नियेमिरे'—इति वि० ।

† ऊ० गा० ३प्र० १अ० १७सा० ।

अथ तृतीय-तृचे*—

प्रथमा ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

असाविसोमइन्द्रतेशविष्ठधृष्णवागहि ।

१ २ १ २उ ३ २ ३ २३ १ २

आत्वापृणक्तिन्द्रियꣳरजःसूर्योनरश्मिभिः ॥ १ † ॥

हे "इन्द्र!" "ते" त्वदर्थं "सोमः" "असावि" अभिषुतोऽभूत् । हे "शविष्ठ" अतिशयेन बलवन्! अतएव "धृष्णो" शत्रूणां धर्षयितः! इन्द्र! "आगहि" देवयजनदेशमागच्छ, आगतश्च "त्वा" त्वाम् "इन्द्रियं" सोमपानेनोत्पन्नं प्रभूतं सामर्थ्यम् "आ पृणक्तु" आपूरयतु । "रजः" अन्तरिक्षं "रश्मिभिः" किरणैः "सूर्यो न" यथा सूर्यः पूरयति तद्वत् । शविष्ठ--शवस्विन्-शब्दादिष्ठनि विन्मतोर्लुक्, "टेः (६,४,१५५)"—इति टि-लोपः, पादादित्वान्निघाताभावः (८,१,१९) । गहि—गमेर्लेटि "बहुलंछन्दसि (२,४,७३) "—इति शपो लुक्, "अनुदात्तोपदेश (६,४,३७)"—इत्यादिना अनुनासिक-लोपः, तस्य असिद्धवदत्राभात् (६,४,२२)"—इत्यसिद्धत्वाद्धेर्लुगभावः ॥ १ ॥

---

* 'महावैश्वामित्रं साम'—इति वि० ।

† ऋ० आ० ४, २, १, ६ (१भा० ७०८५०)=ऋ० वे० १, ६, ५, १ ।

अथ द्वितीया।

१ २ ३१२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आतिष्ठवृत्रहन्रथंयुक्तातेब्रह्मणाहरी।
३ २ २ २३ २३ १ २ ३ १ १
अर्वाचीनꣳसुतेमनोग्रावाकृणोतुवग्नुना ॥ २ * ॥

हे "वृत्रहन्" मघवन् हन्तः इन्द्र! "रथम्"† "आ तिष्ठ" आरोह। यस्मात् "ते हरी" त्वदीयावश्वौ "ब्रह्मणा" स्तोत्र-लक्षणेन मन्त्रेण‡ "युक्ता" रथेऽस्माभिर्योजितौ ["सुपां सुलुग् (७,१,३९)"—इत्याकारः] तस्मात् त्वं रथमातिष्ठ। "ते मनः" त्वदीयं मनश्च "ग्रावा" अभिषवार्थं प्रवृत्तः पाषाणः "वग्नुना" वक्तव्येनाभिषवशब्देन ["वचेर्गश्च (उ० ३, ३२)"—इति नु-प्रत्ययो गकारश्चान्तादेशः] "अर्वाचीनम्"—अस्मदभिमुखं "सुकृणोतु" सुष्ठु करोतु ॥ २ ॥

अथ तृतीया।

२ ३१२ २२ २ १ २
इन्द्रमिद्वरीवृतोप्रतिधृष्टशवसम्।
१ २ ३१२ २२३२३ १ २
ऋघीणाꣳसुष्टुतीरुपयज्ञꣳहमानुषाणाम् ॥ ३ ¶॥ २३

॥ इति तृतीयः प्रपाठकः ॥

---

* ऋ० वे० १, ६, ५, ३=य० वे० ८, ३३।

† 'रथं—रंहणीयं वेगवन्तम्'—इति वि०।

‡ 'ब्रह्मणा—वैदिक-लक्षणेन अथवा ब्रह्मणा अन्नेन। अथवा ब्रह्मणा हिरण्यगर्भेण'—इति वि०।

¶ ऋ० वे० १, ६, ५, २=य० वे० ८, ३४।

"अप्रतिधृष्णवसं" केनाप्यधर्षितबलमहिंसितबलमित्यर्थः "इन्द्रमित्"*इन्द्रमेव "ऋषीणां" वसिष्ठादीनां† "मानषाणाम्" अन्येषां मनुष्याणाञ्च "सुष्टुतीः" शोभनाः स्तुतीः "वज्रञ्च" "हरी" अश्वौ "उप वहतः" समीपं प्रापयतः। यत्र यत्र स्तुवन्ति यत्र यत्र यजन्ते तत्र सर्वत्रेन्द्रमश्वौ प्रापयत इत्यर्थः। [मानुषाणाम् "मनोर्जातौ (४,१,१६१)"—इति मनु-शब्दादञ् षुगागमश्च] ॥

"ऋषीणां सुष्टुतीः"-"ऋषीणाञ्चस्तुतीः"—इति पाठौ ॥३॥ २ ॥

॥ मद्दावैश्वामित्रम् ॥ ह्वयायि। ह्वया३। ओ३ह्वां ओह्वा। (एवन्त्रिः) असाविसो। मइन्द्रातार्यि। शविष्ठधा। षणुवागाद्दी२। आत्वापृणा। क्तुइन्द्रायार्म्। रजःसूर्य्यी। नरश्मायिभार्यिः ॥(१) आतिष्ठवा। तृद्दन्नाथार्म्। युक्तातेब्रा। ह्मणाद्दारी२। अर्वाचीनाम्। सुतेमानार्यः। ग्रावाक्षणो। तुवग्मनार्यो ॥(२) इन्द्रमिद्धा। रीवद्दातार्यः। अप्रतिधा। ष्टशु

---

* 'इत्—इति पदपूरणः'—इति वि०।

† 'ऋषीणां—दर्शन-समर्थानाम्'—इति वि०।

१ २ २ ३ २१
वामा२म्। ऋषीणाꣳसू। ष्टूतीरुपा२। यज्ञच्चमा।
१ २१ १
नुषाणा२म्। यज्ञच्चा। मानुषाणा२म्। हयायि।
४ ५ ४ ५ ३ ५ ३
हयाꣳ३। ओहाओहा। ३। हो४इडा। २। हो२३४५ई।
डा(३) ॥ १८ * ॥ [१]

१ २ २ ३ २ १
॥ त्वष्ट्रीसाम † ॥ असाविसो३हा। मइन्द्रातार२यि।
१ २ २ ३ २ १ १ २ २ २
प्रनिष्ठधा३हा। प्णुवागाहो२। आत्वापृणा३हा। क्तु
२ १ १ २ २ ३ २ १ ५
इन्द्राया२म्। रजःसूर्य्या३हा। नरा३हो२३४। वा।
५ ५ १ २ २ ३ २ १
ग्माप्रयिभोईहायि ॥(१) आनिष्ठवा३हा। तूहन्नाथा२
१ २ २ २ ३ २ १ १ २ २
म्। युक्तातेब्रा३हा। ह्मणाहारी२। अर्वाचीना३ꣳ
२ ३ २ १ १ २ २ ३ २ १
हायि। सुतेमाना२:। ग्रावाक्षणो३हा। तुवा३हो२
३ ५ ४ ५ १ २ २ २
३४। वा। ग्नेप्रनोईहायि ॥(२) इन्द्रमिद्वा३हा। री
२ १ २ २ ३ २ १ १ २
वहाना२:। अप्रतिधा३हा। ष्टग्रवासा२म्। ऋषी

---

* उ० गा० ३प्र० १अ० १८सा०।

† 'खारत्वाष्ट्री'—इति ख० पु० पाठः।

ण्ाएसू३च्हा। ष्टुतौरूपा२। यज्ञच्चा३हायि। मानू३
ष्ट्टो२३४। वा। षाप्णोए्हायि(३) ॥ १८ * ॥ [२]

॥ गौरीवितम् ॥ अमा। विसो३। मइन्द्रतायि। प्र
विष्ठधृष्णुवागच्हा२३यि। आत्वापृणा३१२३। क्तुईप्द्रि
याम्। राजःसूर्य्यो३१२३। नरोवा। ग्मापृयिभोए्ह्रा-
यि ॥(१) आति। ष्ठवा३। त्रिहन्थाम्। युक्तातब्रह्म
णाच्हरा२३यि। आर्वाचीना३१२३म्। सुतेप्मनाः। या
वाक्षणो३१२३। तुवोवा। ग्रूप्नोए्हायि ॥(२) इन्द्रम्
इड्वा३। रीवहताः अप्रतिधृष्टशवसा२३म्। आर्षी-
ण्ाएम्ू३१२३। ष्टुतीप्रूपा। याज्ञच्चा३१२३। मानो
वा। षाप्णोए्हायि(३) ॥ ४ † ॥ [३] २३

इति सामवेदार्थप्रकाशे उत्तरार्चस्य षष्ठस्याध्यायस्य
सप्तमः खण्डः ॥ ७ ‡ ॥

---

* ऊ० गा० २२प्र० २ऋ० १८सा०।

† ऊ० गा० २३प्र० १ऋ० ४सा०।

‡ 'द्वादशाहस्य पञ्चमगदः परिसमाप्तम्'—इति वि०।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थ-महेश्वरः॥ ६॥

इति श्रीमद्राजाधिराज-परमेश्वर-वैदिकमार्ग-प्रवर्त्तक-
श्रीवीर-बुक्क-भूपाल-साम्राज्य-धुरन्धरेण सायणा-
चार्य्येण विरचिते माधवीये सामवेदार्थ-
प्रकाशे उत्तरार्चग्रन्थे षष्ठोऽध्यायः* ॥

---

* 'तृतीयः प्रपाठकः परिसमाप्तः'—इति वि० मूलग्रन्थसम्मतश्च।